# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक

# सम्पादकीय

खण्ड १३

## गोहि सभक बीच

## जलसमाधि



**सम्पूर्ण त्रयीक साहित्यिक समीक्षा**

३०१ अध्याय आ परिशिष्टसभक विवेचन

**मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर**

**सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार**

**विदेह**

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

## खण्ड १३

# गोहि सभक बीच जलसमाधि

सम्पूर्ण त्रयीक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२६

# प्रकाशकीय विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय · खण्ड १३

गोहि सभक बीच जलसमाधि — सम्पूर्ण त्रयीक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

भाषा : मैथिली | प्रकाशन-सम्बन्ध : विदेह

प्रथम संस्करण : २०२६ | पुस्तकाकार : ६ × ९ इंच

© गजेन्द्र ठाकुर/ प्रीति ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

ई मूल उपन्यासक पुनर्मुद्रण नहि, सम्पूर्ण त्रयीक आलोचनात्मक अध्ययन अछि। उपन्यासमे व्यक्त कथन, स्वप्न, लोकश्रुति अथवा पात्रक आरोपकेँ ऐतिहासिक प्रमाण वा विधिक दोषसिद्धि मानल नहि गेल अछि।

# भूमिका

गोहि सभक बीच जलसमाधि — सम्पूर्ण त्रयी तीन खण्डमे विस्तृत मैथिली उपन्यास अछि। पूर्वकथाक अध्याय −१०० सँ −१, पहिल मुख्य खण्डक अध्याय ० सँ १०० आ उत्तरवर्ती खण्डक अध्याय १०१ सँ २०० मिलि कुल ३०१ अध्याय बनैत अछि। ई ग्रन्थ एहि सभ अध्यायक पृथक आलोचनाक संग तिनकर समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन प्रस्तुत करैत अछि।

कथाक केन्द्रमे पानि, श्रम, जाति, बाढ़ि, मृतकक नाम, अभिलेख, वित्तीय शोषण, डिजिटल जाल, देहक निजता, सामुदायिक स्मृति आ न्यायसँ जुड़ल अनुभव अछि। चन्ना गाछी, गढ़ नारिकेल, गोहि, पाथर, कागज, मुहर आ लोकगीत बारम्बार नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। प्रत्येक अध्यायक आलोचनामे दृश्य, कथा-काल, पात्र, प्रतीक, भाषा आ रचनात्मक सीमाक परख कएल गेल अछि।

भारतीय रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य; पाश्चात्य आख्यानशास्त्र; नव्य न्यायक प्रमाण-विवेक तथा विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एहि अध्ययनक व्याख्यात्मक आधार छथि। कोनो विचार-पद्धति साहित्यिक दृश्यक स्थानापन्न नहि बनैत। लोकश्रुति आ इतिहास, कल्पना आ दस्तावेज, अपराधक संकेत आ आरोपक न्यायिक परीक्षण अलग-अलग स्तर मानल गेल अछि।

मूल ३०१ अध्यायक अतिरिक्त खण्ड-०क फकरा-अनुक्रम, गढ़ नारिकेल लोककोश, अनाम ग्रहक मूल गीत, न्याय-दर्शनक अन्तःकथा आ तेसर परिशिष्टक उत्तरवर्ती नाट्य-प्रारूपक आलोचना सेहो समाविष्ट अछि। एहि स्रोतसामग्रीकेँ ३०२ आदि नव अध्याय मानि कृत्रिम क्रमाङ्क नहि देल गेल अछि। एहि ग्रन्थक समापन कथाक सौन्दर्य, ज्ञानात्मक योगदान आ असम्पूर्ण प्रश्न सभक संतुलित मूल्याङ्कन करैत अछि।

# सम्पूर्ण अनुक्रमणिका

अध्यायवार समीक्षा

खण्ड-० : पूर्वकथा • अध्याय –१०० सँ –१

अध्याय –१०० — शंख आ रजत.....१८
अध्याय –९९ — आत्मसिद्धि-वाद.....२१
अध्याय –९८ — के ऽ बनौलक ई जगत?.....२४
अध्याय –९७ — चिंतामणि रत्न.....२७
अध्याय –९६ — स्मृति-रक्षा.....३०
अध्याय –९५ — जलमग्न पाण्डुलिपि.....३४
अध्याय –९४ — चारि मुखक मौन.....३६
अध्याय –९३ — शंखक अन्तिम प्रश्न.....३८
अध्याय –९२ — जल-घड़ीक कै दी.....४०
अध्याय –९१ — चर्मकार टोलाक उजास.....४२
अध्याय –९० — बुधुआक जलसमाधि.....४५
अध्याय –८९ — पहिल राति, पहिल बाढ़ि.....४८
अध्याय –८८ — डाइनक आरोप.....५१
अध्याय –८७ — टोलाक द्वारपर.....५४
अध्याय –८६ — समयक गोहि.....५७
अध्याय –८५ — आमिलक आदेश.....६५
अध्याय –८४ — जंगलक मौन.....६८
अध्याय –८३ — सोनमा माझिन.....७०
अध्याय –८२ — पहिल कबड्डी.....७२
अध्याय –८१ — आक्रमणक छाया.....७४
अध्याय –८० — गीतक पहिल पाँति.....७७

अध्याय –७९ — क्षमाक पारी.....७९
अध्याय –७८ — पंजीक बाहर.....८१
अध्याय –७७ — बूढ़बाक मौन.....८३
अध्याय –७६ — नारिके ल पातक पहिल पाठ.....८५
अध्याय –७५ — तर्क क पहिल विद्रोह.....८८
अध्याय –७४ — गाछक रोग.....९०
अध्याय –७३ — मोहनक धुन.....९२
अध्याय –७२ — विवाहक साक्षी.....९४
अध्याय –७१ — महामारीक राति.....९६
अध्याय –७० — चन्ना गाछीक रोपाई.....९९
अध्याय –६९ — गज-ग्राहक कथा.....१०२
अध्याय –६८ — अदालतक पहिल तारीख.....१०५
अध्याय –६७ — परदेशक पुकार.....१०८
अध्याय –६६ — स्त्री सभक राति-सभा.....१११
अध्याय –६५ — नकली भूतक जुलूस.....११४
अध्याय –६४ — सुखदेवक बदला.....११६
अध्याय –६३ — छापाखानाक पहिल पन्ना.....११८
अध्याय –६२ — राहतक प्रतीक्षा.....१२०
अध्याय –६१ — आकाशक पुच्छलतारा.....१२२
अध्याय –६० — अगिनक राति.....१२५
अध्याय –५९ — दोसर बाढ़ि.....१२७
अध्याय –५८ — तेसर बिपत्ति.....१२९
अध्याय –५७ — साहेबक नोटबुक.....१३१
अध्याय –५६ — स्वाधीनताक पुकार.....१३३
अध्याय –५५ — स्वतंत्रताक भोर.....१३६
अध्याय –५४ — जमींदारीक अन्त.....१३९

अध्याय –५३ — बिजलीक पहिल दीप.....१४२
अध्याय –५२ — सीमाक पुकार.....१४५
अध्याय –५१ — हरित क्रान्तिक बीया.....१४८
अध्याय –५० — आपातकालक अन्हार.....१५१
अध्याय –४९ — सूखाक बरख.....१५४
अध्याय –४८ — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज.....१५७
अध्याय –४७ — खाड़ी देशक बजार.....१५९
अध्याय –४६ — सद्भावक परीक्षा.....१६१
अध्याय –४५ — उदारीकरणक हवा.....१६४
अध्याय –४४ — पहिल कम्प्यूटर.....१६७
अध्याय –४३ — सुखल होइत धार.....१६९
अध्याय –४२ — हाथक फोनक चमत्कार.....१७१
अध्याय –४१ — शहरक बजार.....१७३
अध्याय –४० — सूचनाक अधिकार.....१७६
अध्याय –३९ — काजक गारंटी.....१७८
अध्याय –३८ — इंटरनेटक जाल.....१८०
अध्याय –३७ — स्क्रीनक पहिल छाया.....१८२
अध्याय –३६ — अनदेखल ठगक पहिल आहट.....१८४
अध्याय –३५ — देहक बजार खुजैत अछि.....१८७
अध्याय –३४ — उज्ज्वलक स्वप्न.....१९०
अध्याय –३३ — वकीलक कोटक छाया.....१९२
अध्याय –३२ — समुद्रपारक साये.....१९४
अध्याय –३१ — सत्यव्रतक मौन.....१९६
अध्याय –३० — गोप कुमारक दस्तावेज.....१९९
अध्याय –२९ — चन्द्रपालक सपना.....२०१
अध्याय –२८ — राघवक कोड.....२०३

अध्याय –२७ — आरुणिक निर्माण.....२०५
अध्याय –२६ — देविकाक गीत.....२०७
अध्याय –२५ — मीराक निजता.....२१०
अध्याय –२४ — निशांतक बैंक.....२१२
अध्याय –२३ — नन्दक जन्म.....२१४
अध्याय –२२ — बारह सयक निकट.....२१६
अध्याय –२१ — अनन्याक प्रश्न.....२१८
अध्याय –२० — छपाकक पहिल हिसाब.....२२१
अध्याय –१९ — सत्यव्रतक निर्णय.....२२३
अध्याय –१८ — अनन्या आ नन्दक भेंट.....२२५
अध्याय –१७ — शीशाक मीनारक जाल.....२२७
अध्याय –१६ — बटुकनाथक अंतिम मोड़.....२२९
अध्याय –१५ — चन्द्रपालक खाता.....२३२
अध्याय –१४ — पुलक निर्माण.....२३५
अध्याय –१३ — गोप कुमारक संकलन.....२३८
अध्याय –१२ — चन्ना गाछीक कँ पकँ पी.....२४१
अध्याय –११ — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद.....२४४
अध्याय –१० — पुलपर पहिल छपाक.....२४७
अध्याय –९ — जाँचक आरम्भ.....२५०
अध्याय –८ — प्रमाणक बाहर आएब.....२५३
अध्याय –७ — आधा-भूतक अनुभव.....२५६
अध्याय –६ — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना.....२५९
अध्याय –५ — जालक उजागर होएब.....२६२
अध्याय –४ — नामक अन्तिम सूची.....२६४
अध्याय –३ — बारह सय बरखक पूर्णता.....२६६
अध्याय –२ — अगिला पीढ़ीक वचन.....२६८

अध्याय –१ — अन्तिम साक्षी.....२७०

खण्ड-१ : मुख्य कथा • अध्याय ० सँ १००

अध्याय ० — गढ़ नारिके ल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना.....२७८

अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी.....२८२

अध्याय २ — दहिन कातक गाम.....२८५

अध्याय ३ — छपाकक हिसाब.....२८८

अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश.....२९१

अध्याय ५ — तारीखक गोहि.....२९५

अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स.....२९८

अध्याय ७ — श्वासक भाव.....३०१

अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि.....३०३

अध्याय ९ — देहक बाजार.....३०६

अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल.....३०९

अध्याय ११ — धनक कारी नदी.....३१२

अध्याय १२ — डार्क -जालपर नारिके ल पात.....३१५

अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण.....३१८

अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता.....३२१

अध्याय १५ — नामक जल.....३२५

अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत.....३२८

अध्याय १७ — जीतक शोक.....३३०

अध्याय १८ — खाली अदालत.....३३२

अध्याय १९ — नामक अभिलेख.....३३४

अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला.....३३७

अध्याय २१ — निजताक शपथ.....३४०

अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण.....३४३

अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज.....३४६
अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू.....३४९
अध्याय २५ — मोन टांगल.....३५४
अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा.....३५७
अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन.....३६०
अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी.....३६३
अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना.....३६६
अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत.....३७१
अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज.....३७६
अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी.....३८१
अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा.....३८५
अध्याय ३४ — सुनैत नदी.....३८९
अध्याय ३५ — नामक देहरी.....३९९
अध्याय ३६ — घर, भय, सपना.....४०५
अध्याय ३७ — तीन कंकड़.....४११
अध्याय ३८ — नामक उच्चारण.....४१७
अध्याय ३९ — बीजक शान्ति.....४२३
अध्याय ४० — ओसक अक्षर.....४३५
अध्याय ४१ — नामक नाव.....४४१
अध्याय ४२ — भारक वृत्त.....४४७
अध्याय ४३ — चलैत भार.....४५४
अध्याय ४४ — पोतीक कापी.....४६०
अध्याय ४५ — भीतरक हवा.....४७३
अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार.....४७९
अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान.....४८४
अध्याय ४८ — पुकार.....४८९

अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख..... ४९४
अध्याय ५० — देहक बादक नाम..... ५०७
अध्याय ५१ — साक्षीक भार..... ५१०
अध्याय ५२ — अगिला आवाज..... ५१३
अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान..... ५१६
अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात..... ५१९
अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र..... ५२५
अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा..... ५२९
अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न..... ५३३
अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग..... ५३६
अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड..... ५४०
अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन..... ५४८
अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव..... ५५१
अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु..... ५५४
अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना..... ५५७
अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा..... ५६०
अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन..... ५६८
अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल..... ५७१
अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार..... ५७४
अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग..... ५७७
अध्याय ६९ — नामक चोरी..... ५८०
अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही..... ५८६
अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस..... ५८९
अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी..... ५९१
अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार..... ५९३
अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार..... ५९६

अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क..... ६०२
अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा..... ६०४
अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि..... ६०६
अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद..... ६०८
अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र..... ६१०
अध्याय ८० — हरिहरनक संतान..... ६१५
अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम..... ६१८
अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह..... ६२०
अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला..... ६२२
अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित..... ६२४
अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा..... ६२९
अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव..... ६३१
अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास..... ६३३
अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ..... ६३५
अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई..... ६३७
अध्याय ९० — नामक संविधान..... ६४२
अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति..... ६४४
अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह..... ६४६
अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि..... ६४८
अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी..... ६५०
अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा..... ६५५
अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा..... ६५७
अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट..... ६५९
अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश..... ६६१
अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही..... ६६३
अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ..... ६६८

खण्ड-२ : उत्तरवर्ती कथा • अध्याय १०१ सँ २००

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण.....६७१
अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी.....६७३
अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ.....६७५
अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि.....६७७
अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा.....६८२
अध्याय १०६ — बीजक गवाही.....६८४
अध्याय १०७ — बीजक चोरी.....६८६
अध्याय १०८ — माटिक मुँह.....६८८
अध्याय १०९ — जलक स्मृति.....६९०
अध्याय ११० — आगिक साक्षी.....६९५
अध्याय १११ — वायुक प्रश्न.....६९७
अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति.....६९९
अध्याय ११३ — शब्दक देह.....७०१
अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा.....७०३
अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा.....७०८
अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार.....७१०
अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण.....७१२
अध्याय ११८ — देहक अधिकार.....७१४
अध्याय ११९ — श्रमक देह.....७१६
अध्याय १२० — न्यायक देह.....७२१
अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा.....७२३
अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति.....७२५
अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात.....७२७
अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि.....७२९

अध्याय १२५ — माटिक निर्णय.....७३३
अध्याय १२६ — अन्नक न्याय.....७३५
अध्याय १२७ — भूखक नाम.....७३७
अध्याय १२८ — प्यासक नाम.....७३९
अध्याय १२९ — नूनक शपथ.....७४१
अध्याय १३० — स्वादक न्याय.....७४५
अध्याय १३१ — साझा थारी.....७४७
अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य.....७४९
अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट.....७५१
अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ.....७५३
अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन.....७५७
अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा.....७५९
अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही.....७६१
अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस.....७६३
अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच.....७६५
अध्याय १४० — चल चौपाल.....७६९
अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला.....७७१
अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार.....७७३
अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही.....७७५
अध्याय १४४ — नामक यात्रा.....७७७
अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार.....७८१
अध्याय १४६ — मुहरक दाग.....७८४
अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक.....७८६
अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान.....७८८
अध्याय १४९ — जालक नक्शा.....७९०
अध्याय १५० — मुहरक छाया.....७९४

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ.....७९६
अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत.....७९८
अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम.....८००
अध्याय १५४ — बाबाक वचन.....८०२
अध्याय १५५ — सेवाक खाता.....८०६
अध्याय १५६ — दानक ऋण.....८०९
अध्याय १५७ — लोहेक संदूक.....८१२
अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान.....८१५
अध्याय १५९ — मृतकक सहमति.....८१८
अध्याय १६० — गोदामक छाया.....८२३
अध्याय १६१ — फोनक कैद.....८२५
अध्याय १६२ — आवाजक मोहर.....८२७
अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान.....८२९
अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट.....८३१
अध्याय १६५ — छायाक देह.....८३५
अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार.....८३७
अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज.....८३९
अध्याय १६८ — शहरक गला.....८४१
अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा.....८४३
अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल.....८४७
अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत.....८४९
अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ.....८५१
अध्याय १७३ — पंजीक पहरा.....८५३
अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट.....८५५
अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम.....८५९
अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार.....८६१

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज.....८६३
अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी.....८६५
अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह.....८६७
अध्याय १८० — शहरक खाता.....८७२
अध्याय १८१ — सिमक छाया.....८७४
अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा.....८७६
अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा.....८७८
अध्याय १८४ — आवाजक नकाब.....८८०
अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा.....८८४
अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम.....८८६
अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी.....८८८
अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर.....८९०
अध्याय १८९ — लोहेक पेटी.....८९२
अध्याय १९० — नील पंजी.....८९६
अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी.....८९८
अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर.....९००
अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा.....९०२
अध्याय १९४ — साँसक समन.....९०४
अध्याय १९५ — रोकल खाता.....९०८
अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ.....९१०
अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम.....९१२
अध्याय १९८ — अपराधीक धरती.....९१४
अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान.....९१६
अध्याय २०० — नामक पहरुआ.....९२०
समेकित आलोचना आ परिशिष्ट

सम्पूर्ण त्रयीक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन.....९२३
परिशिष्टसभक मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा.....९२८
परिशिष्ट १ — गढ़ नारिकेल लोककोश : सामाजिक स्मृति, श्रम आ जीवित परम्पराक आलोचना.....९२९
परिशिष्ट २ — अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत : स्वप्न, नाम आ पृथ्वी चुनबाक काव्य....९३३
परिशिष्ट ३ — न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा : तर्कशास्त्रक कथात्मक प्रयोग.....९३६
खण्ड-०क परिशिष्ट — गढ़ नारिकेलक फकरा-अनुक्रम : पूर्वकथाक सूक्तिमय पुनर्पाठ .....९४०
तेसर परिशिष्टक पश्चात् नाट्यांश — विदेह नाट्य उत्सव : दोसर प्रारूप (अपूर्ण).....९४२
परिशिष्टसमेत समग्र मूल्याङ्कन : पाँच माध्यम, एक नैतिक प्रश्न.....९४४

## अध्याय –१०० — शंख आ रजत

# मूल कथास्थिति आ घटनात्मक विन्यास

आरम्भक अध्याय पाठककेँ सीधे कोनो अपराध-घटना अथवा एकल नायकक जीवनमे नहि प्रवेश करबैत अछि। गढ़ नारिकेलक पीपर, चन्ना गाछी, बूढ़बाक दीर्घ साक्षित्व आ बारह सय बरखक स्मृति पहिने उपस्थित होइत अछि। तकर बाद कथा एकटा वाद-शालामे सिमटैत अछि, जतय डोरीकेँ साँप आ शंखकेँ चानी बुझबाक दू दृष्टान्त दार्शनिक विवादक सामग्री बनैत अछि। वाचस्पति मिश्र, आक्षेपक, नैयायिक आ प्राभाकरक संवादमे प्रश्न ई नहि जे दृष्टिभ्रम भेल कि नहि; प्रश्न अछि जे भ्रमक समय ज्ञाता कोन वस्तु जनैत अछि। आरम्भिक ग्रामीण फ्रेम आ आन्तरिक नाट्य-वादक बीचक ई आवाजाही गामक भविष्यक नैतिक संकट केँ ज्ञानक सामान्य समस्यासँ जोड़ैत अछि।

अध्याय चारि अंकक तर्क गत आरोहमे व्यवस्थित अछि। पहिल अंकमे ‘हम’क प्रत्यक्ष अनुभव आ देह-इन्द्रियसँ ओकर भेदक प्रश्न उठैत अछि; दोसरमे अन्यथाख्यातिक प्रतिपादन जाँचल जाइत अछि; तेसरमे प्राभाकरक अख्याति आ भेद-अग्रहक परीक्षण अछि; चारिममे अनिर्वचनीयताक अद्वैतवादी विवेचन आबैत अछि। उपसंहार शंखकेँ फेर दीपक इजोतमे रखैत अछि। प्रारम्भमे उपकरण रहल वस्तु अन्तमे रूपकक अवशेष बनैत अछि। पश्चात् जोड़ल ‘भामती’ सम्बन्धी कथा-दृष्टान्त आ उद्धरण-संग्रह रचनाक कथात्मक स्तरसँ अलग एकटा व्याख्यात्मक स्तर खोलैत अछि।

# आख्यान-स्तर, कथावाचक आ दृष्टिबिन्दु

जेरार जेनेत (Gérard Genette)क आख्यान-स्तरक शब्दावलीमे आरम्भक ग्रामकथा एकटा व्यापक कथात्मक चौखटा अछि, जकर भीतर सूत्रधार मंचीय वादक कथन-द्वार खोलैत छथि। बूढ़बा सभ घटना देखनिहार दीर्घकालिक साक्षीक रूपमे प्रस्तुत छथि, मुदा एहि अध्यायक मध्यभागमे हुनक प्रत्यक्ष कथन लगभग अनुपस्थित अछि। पाठक बूढ़बाक दृष्टिबिन्दुसँ नाट्य-विवादमे प्रवेश करैत अछि, मुदा वादक भीतर अलग-अलग वक्ता अपन-

अपन तर्क स्थापित करैत छथि। एतय कोनो एक पात्रक भीतरी चेतना निरन्तर केन्द्र नहि बनैत; मंचीय दृश्य आ संवाद पाठककेँ बहुवक्ता ज्ञानप्रक्रियाक सोझाँ राखैत अछि।

सम्पूर्ण त्रयीमे खण्ड-०क ऋण-सङ्ख्या मुख्य कथा सँ पूर्वक कालक संकेत करैत अछि। एहि अर्थमे –१०० एकटा विस्तृत पूर्वकथा-क्रमक आरम्भ अछि, मुदा मात्र ‘फेर स्मरण’ नहि: एकर अन्तिम वाक्य-समूह भविष्यक स्क्रीनक जाल धरि शंख-रजत भ्रमक विस्तार घोषित करैत अछि। ई भविष्याभास आरम्भे पाठककेँ सिखबैत अछि जे प्राचीन शास्त्रार्थ केँ आगाँक प्राविधिक, राजनीतिक आ सामाजिक दृश्यसँ मिला कऽ पढ़ब आवश्यक होयत। जोखिम सेहो एतहि अछि—प्रारम्भिक कथावाचक भविष्यक विषय एतेक स्पष्ट करैत अछि जे पाठकक स्वतन्त्र अर्थ-खोज किछु सीमित भऽ सकैत अछि।

## विमर्श, बहुस्वरता आ नाटकीय शक्ति

मिखाइल बाख्तिन (Mikhail Bakhtin)क बहुस्वरताक दृष्टिसँ नैयायिक, प्राभाकर, आक्षेपक आ वाचस्पति अलग वैचारिक भाषामे बजैत छथि। शंख एके अछि, मुदा ‘वास्तविक’, ‘स्मृति’, ‘भेद’ आ ‘अनुभव’क अर्थ परस्पर बदलैत अछि। विशेष आकर्षण ई जे वाचस्पति विरोधीक तर्ककेँ केवल मूर्खता कहि खारिज नहि करैत छथि; पहिने ओकर व्यवस्थित बल स्वीकार करैत छथि, तकर बाद प्रश्नक क्रमसँ परीक्षा करैत छथि। एहि कारण संवादमे वैचारिक संघर्षक वास्तविक प्रक्रिया देखाइत अछि।

तथापि बहुवक्ता उपस्थिति अपने-आप पूर्ण बहुध्वन्यता नहि अछि। वाद-शालाक अनुक्रम, हास्य-मिश्रित परिषद् आ वाचस्पतिक अन्तिम दीर्घ प्रतिपादन मिलि कऽ विचारक अधिकार प्राय: एके केन्द्रमे समेटि दैत अछि। विरोधी मतसभ कथात्मक रूपसँ ओतेक स्वतंत्र भविष्य नहि पबैत अछि जतेक एकटा खुला बहुस्वरीय उपन्यासमे अपेक्षित होइत। ई नाटकीय शिक्षणक स्पष्ट साधन अछि, मुदा एकर सीमा सेहो: पाठककेँ प्रतिपक्षक जटिलता सुनाइत अछि, ओकर जीवनगत अनुभव नहि।

## बिम्ब, अन्तर्पाठीयता आ अर्थ-निर्माण

डोरी, शंख, दीप आ द्वारक मंच-सज्जा अमूर्त सिद्धान्तकेँ देखबाक योग्य वस्तुमे बदलैत अछि। डोरी-साँप आ शंख-चानीक उदाहरण भारतीय दार्शनिक परम्परासँ लैत काल लेखक

ओकरा लोकगीतक पुनरुक्तिमे अनैत छथि। लोकगीतक पाँति ‘चमकैत सभटा चानी नहि’ भ्रमक परिभाषा मात्र नहि, सामाजिक अविश्वासक प्रारम्भिक सूत्र बनैत अछि। शास्त्रीय दृष्टान्त, लोककण्ठ आ वर्तमानक डिजिटल रूपकक एहि संयोगकेँ अन्तर्पाठीयता (intertextuality)क आधारपर पढ़ल जा सकैत अछि। एक परम्पराक ज्ञान दोसर भाषिक परम्परामे नव सामाजिक काम करैत अछि।

आधुनिक चिह्न-विज्ञानक दृष्टिसँ शंखक ‘चानी’ बनि जाएब वस्तुक परिवर्तन नहि, वस्तु आ ओकर अर्थक बीचक असमञ्जस अछि। एहि भेदसँ गामक नक्शा आ गामक अनुभवक अन्तरक सूचना भेटैत अछि। तथापि ई समानता पूर्ण तार्किक समरूपता नहि: दृष्टिभ्रम, प्रशासनिक मानचित्र आ डिजिटल प्रस्तुति भिन्न प्रकारक ज्ञानगत प्रक्रिया अछि। रचनाक रूपक प्रभावकारी होइत अछि जखन पाठक एहि भेदकेँ सुरक्षित रखैत अछि; जखन सभकेँ एके भूल मानल जाए तखन प्रतीक विश्लेषणक बदला घोषणामात्र बनि सकैत अछि।

## काल, पाठक आ शिल्पगत मूल्याङ्कन

मंचक एकटा साँझ अनेक दार्शनिक प्रश्नमे विस्तार पबैत अछि। जेनेतक कथन-अवधिक भेदमे ई दृश्यप्रधान, मन्द गति अछि; कथाक इतिहासक लगभग बारह सय बरख ओकर सोझाँ केवल आरम्भिक कथावाचकीय संक्षेपमे उपस्थित अछि। पॉल रिकर (Paul Ricœur)क आख्यान-समयक प्रश्न एतय उपयोगी अछि: शास्त्रार्थक समय घड़ीक समय नहि, बोधक समय अछि। जखन एकटा शंखक अर्थपर बहस चलैत अछि, पाठक सभ्यता आ सामाजिक ज्ञानक लम्ब यात्रा देखैत अछि।

अध्यायक प्रमुख उपलब्धि दार्शनिक भेदकेँ जीवित कथन-संघर्ष बनायब आ ओकरा गामक नैतिक भविष्यसँ जोड़ब अछि। मुदा शास्त्रीय वादक बाद दोसर स्रोत-विवरणक दीर्घ अनुक्रम साहित्यिक गति रोकैत अछि; मूल नाटक आ अध्ययन-पूरक सामग्री केँ स्पष्ट अलग रखल जाए तँ पाठकीय अनुभव बेसी सघन होयत। वाचस्पतिक विजयक नाटकीय आकारकेँ ऐतिहासिक दार्शनिक मतभेदक अन्तिम समाधान बुझब अनुचित अछि। रचनाक मूल्य विचारक अन्तिम प्रमाणमे नहि, प्रमाण खोजबाक नाट्यरूपमे अछि।

# अध्याय –९९ — आत्मसिद्धि-वाद

## घटनाक्रम आ विचारक चारि मोड़

एहि अध्यायमे उदयनाचार्य आ क्षणभद्र नामक बौद्ध पूर्वपक्षी वाद-शालामे सोझाँ-सोझी होइत छथि। भूमिका स्पष्ट कहैत अछि जे क्षणभद्र भिन्न बौद्ध मतसभक प्रतिनिधित्व करबाक लेल रचल संयुक्त काल्पनिक पात्र छथि। ई सूचना महत्त्वपूर्ण अछि: साहित्यिक पात्रक संवादकेँ वास्तविक ऐतिहासिक शास्त्रार्थक शब्दशः अभिलेख नहि मानल जाए। प्रथम अंकमे सर्वस्व-क्षणभंगवाद आ सामर्थ्य-असामर्थ्यक तर्क; दोसरमे स्वप्न आ बाह्यार्थक प्रश्न; तेसरमे ‘हम’क ज्ञान, स्मृति आ आत्मा; चारिममे मुक्ति आ नैतिक उत्तरदायित्व केन्द्र बनैत अछि।

मुख्य संघर्षक क्रम विषयगत रूपसँ सुसंगत अछि। वस्तु टिकैत अछि कि नहि, बाहरी जगत अस्तित्वमे अछि कि नहि, अनुभवक स्वामी के अछि, आ अन्तमे दुःखसँ मुक्ति के पाबि सकैत अछि—ई चारि प्रश्न क्रमशः एक-दोसराक शर्त बनैत अछि। नाटकक अन्तमे क्षणभद्र सीधा पराजित नहि, अपन पहिल निश्चिततापर प्रश्न करएबला विचारशील पात्र बनैत छथि। एकर बाद ‘आत्मतत्त्वविवेक’सँ जुड़ल दृष्टान्त आ उद्धरणक संग्रह मुख्य नाट्यक अध्ययन-सहचर रूपमे उपस्थित अछि।

## घटिका-यन्त्र आ काल-संरचना

एहि अध्यायक विशिष्ट नाट्य-उपकरण जल-घड़ी अछि। सूत्रधार वादक आरम्भे दुनू पक्षकेँ बराबर समय देबाक आग्रह करैत छथि। जल खसैत अछि, प्रश्न बढ़ैत अछि, आ अन्तिम अंकमे जल लगभग समाप्त भऽ जाइत अछि। एहिमे कथाक घड़ी आ तर्कक घड़ी एके दृश्य-अनुभवमे जुड़ैत अछि। जेनेतक दृष्टिसँ दृश्यगत समय लगभग वादक समयसँ मिलैत देखाइत अछि, मुदा संवादक घनत्वक कारण पाठकीय अनुभूत अवधि बढ़ि जाइत अछि। जल-घड़ी समयक केवल सजावटी चिह्न नहि; ओ विवादक नैतिक मर्यादा राखैत अछि।

संगहि ई उपकरण आत्माक निरन्तरता विरुद्ध क्षणिक अनुभवक प्रश्नकेँ दृश्य रूप दैत अछि। बूनि-बूनि खसैत पानि क्षणसभक क्रम देखबैत अछि; पात्रसभ एहि प्रवाहक बीच ‘एकटा स्थायी ज्ञाता’ सम्भव अछि कि नहि, से पुछैत छथि। काल आ विषयक एहि सादृश्यक कारण मंच-सामग्री स्वयं तर्कक एकटा मौन सहभागी बनैत अछि। मुदा जल-घड़ीक समरूप लय वैज्ञानिक प्रमाण नहि—ओ एकटा रचनात्मक रूपक अछि, आ ओकर साहित्यिक मूल्य एही भेदमे अछि।

## दृष्टिबिन्दु, प्रतिपक्षक आवाज आ समता

कथा समग्रतः बाह्य मंचीय दृष्टिबिन्दुसँ कहल गेल अछि। पाठक उदयन अथवा क्षणभद्रक अन्तर्मनमे सीधा प्रवेश नहि करैत; ओकरा सभक विश्वास, अस्थिरता आ सम्मान संवाद, विराम आ अभिनय-सूचनासँ बुझैत अछि। एही नाट्य-पद्धतिमे तेसर अंकक एकटा सूक्ष्म घटना विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: उदयन अपन आसन छोड़ि क्षणभद्रक बराबरीमे आबैत छथि। कथावाचक बतबैत अछि जे आब अधिकार नहि, प्रमाणक आधारपर वाद होयत। शारीरिक स्थान-परिवर्तन संवादक शक्ति-सन्तुलनकेँ दृश्य रूप दैत अछि।

बाख्तिनक बहुध्वन्यताक आधारपर क्षणभद्रक स्वरकेँ पढ़ला पर ओकरा केवल पुतला कहल नहि जा सकैत। ओ स्वप्न आ जागृतिक समान प्रतीतिसँ बाह्यार्थपर प्रश्न उठबैत छथि, स्मृतिक निरन्तरताक उत्तरमे आलय-विज्ञानक सम्भावना आनैत छथि, आ चारिम अंकमे मुक्ति-कथा पर अलग दबाव दैत छथि। मुदा उदयनक उत्तर प्रायः संवादक अन्तिम सीमारेखा निर्धारित करैत अछि। अतः रचना प्रतिपक्षकेँ आदर दैत अछि, तथापि सिद्धान्तगत समता आ कथात्मक समता एके नहि।

## स्व-अनुभव आ आधुनिक व्यक्तित्व-विमर्श

अध्यायक भीतरी प्रश्न ‘हम’क एकत्व अछि। क्षणभंगुर अनुभूति, स्मृति, देह आ इन्द्रियक समुच्चय सँ व्यक्तिक पहचान बनैत अछि कि ओहिसँ भिन्न ज्ञाता चाही—ई संघर्ष आधुनिक स्वत्व-विमर्श (selfhood)क संग तुलना योग्य अछि। मुदा आधुनिक मनोविज्ञान अथवा चेतना-विज्ञानक निष्कर्ष एहि नाट्यविवादसँ स्वतः सिद्ध नहि होइत। पाठक लेल

उपयोगी बात ई अछि जे व्यक्तित्वक निरन्तरता एकटा अनुभवजन्य प्रश्नसँ नैतिक प्रश्नमे विकसित होइत अछि: दुःखक धारक आ मुक्तिक अभिलाषी के अछि?

अन्तिम अंकमे क्षणभद्रक संशय बचल रहैत अछि; नाटक उत्तरसँ बेसी प्रश्नक परिष्करणपर समाप्त होइत अछि। ई अंश विशेष रचनात्मक उपलब्धि अछि, कारण कथन-विजयक सम्भावित कठोरता एतय मानवीय सम्बोधनसँ नरम होइत अछि। वाद एक-दोसरा कैं चुप करबाक संस्था नहि, अधिक स्पष्ट विचारक सार्वजनिक अभ्यास बनैत अछि। एहि रूपमे ज्ञान-पद्धति आगाँक उपन्यासमे साक्षी आ न्यायपर आबयवाला विवादक पूर्वभूमि बनैत अछि।

## आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमा

ई अध्याय एके वादमे तर्कक क्रम, मंचक समय आ व्यक्ति-सम्बन्ध कैं जोड़ैत अछि। उदयनक आसनसँ उतरब, जल-घड़ीक घटब आ विरोधीक अन्तिम सम्मान—तीनू लघु अभिनय-घटना दार्शनिक भाषणकैं दृश्यगत गति दैत अछि। विशेष रूपसँ शिष्यक प्रश्न तर्कक बन्द व्यवस्थामे नव प्रवेश-द्वार खोलैत अछि; गुरु आ पूर्वपक्षीक अपेक्षा शिष्य पाठकक अपूर्ण ज्ञानक निकट छथि।

सीमा ई जे अत्यन्त व्यवस्थित तर्कक कारण पात्रक जीवन-स्थिति आ सामुदायिक संघर्ष कम देखाइत अछि। क्षणभद्रक ‘संयुक्त काल्पनिक पात्र’क सूचना ईमानदार अछि, मुदा एकरे कारण अलग-अलग बौद्ध तर्क परम्पराक आन्तरिक भेद कथामे एक आवाजमे सिमटि जाइत अछि। साहित्यिक रूपमे ई संक्षेप उपयोगी, दार्शनिक इतिहासक पूर्ण प्रतिनिधित्वक रूपमे अपर्याप्त अछि। अध्यायक सही मूल्याङ्कन नाट्य-विचारक शक्तिमे अछि, कोनो सम्प्रदायक स्थायी विजयमे नहि।

## अध्याय –९८ — के ऽ बनौलक ई जगत?

### लोकमंचक परिवर्तन आ कथात्मक उद्देश्य

पहिल दू अध्यायक विद्वत् वाद-शाला छोड़ि ई अध्याय गामक चौक, कुम्हारिनक चाक, अनाजक कोठी आ पाण्डुलिपि पढ़निहार लेखनी दीदीक घर धरि पहुँचैत अछि। मूल पाठ एकरा विद्यालयक बच्चा आ गामक दर्शक लेल रचल मंचन रूपमे चिन्हैत अछि। चार्वाक, मोधू, आचार्य, कुम्हारिन, बूढ़ काका आ लेखनी दीदी अपन-अपन सामाजिक कार्यसँ तर्ककेँ ठोस वस्तु देबैत छथि। प्रश्न ‘जगत के बनौलक’ अछि, मुदा उत्तरक संघर्ष रसोइ, कारीगरी, निर्माण आ भाषाक व्यवहारमे चलैत अछि।

कुम्हारिन अपन बासन बनेबाक स्थितिमे हाथ, चाक आ मनमे पहिने सँ रहल आकारक सम्बन्ध देखबैत छथि। एतय श्रम करएबला स्त्री केवल उदाहरणक वस्तु नहि; ओ ज्ञानक प्रत्यक्ष स्रोत बनैत छथि। मोधू अनाजक कोठीक ईंटक व्यवस्था देखबैत छथि। बूढ़ काका ‘तिनकोली’ नाम देबैत छथि। लेखनी दीदी विश्वासयोग्य कथनक प्रश्न उठबैत छथि। एहिसँ दार्शनिक प्रश्न एकटा समुदाय-व्यापी शिक्षण-कथा बनैत अछि।

### पाठक-सहभागिता, मंचीय कथावाचक आ शिक्षण

सूत्रधार दर्शककेँ सोझ सम्बोधित करैत छथि, कोरस बार-बार धुन दोहरबैत अछि, आ चार्वाक दर्शकक सोझाँ अपन संशय स्पष्ट करैत छथि। ई नाटकीय प्रत्यक्ष सम्बोधन पाठक वा दर्शककेँ निष्क्रिय श्रोता नहि रखैत। कथनक बाहरी स्तर आ मंचक भीतरक वादक दूरी घटैत अछि; दर्शकक मानसिक उत्तर आ पात्रक उच्चारित प्रश्न एक दोसरा लग पहुँचैत अछि। कथन-विज्ञानमे एकरा प्रत्यक्ष श्रोता-संरचना रूपमे पढ़ब उचित अछि, मुदा पूर्ण कथास्तर-भङ्ग कहल जाए एहन ठोस घटना अनिवार्य नहि।

हँसीक उपयोग दोधारी अछि। चाकपर चार्वाकक असफल प्रयत्न बच्चा सभ लेल दृश्यगत सहजता आनैत अछि, मुदा दर्शक जे मान्यता पबैत छथि ओ ‘बासनकेँ कुम्हार चाही’, सम्पूर्ण जगतकेँ ईश्वर चाही नहि। चार्वाक स्वयं एहि अनुमानगत फाँककेँ उद्घाटित करैत छथि। एहि कारण हँसीक बाद ओकर प्रतिप्रश्न बचि रहब नाटकक आलोचनात्मक

सन्तुलनक हेतु आवश्यक अछि। जँ केवल हँसीपर वाद समाप्त होइत तँ शिक्षण संवाद नहि, सार्वजनिक उपहास बनि जाइत।

## उपमा, अनुमान आ तर्कक सीमा

बासनसँ जगत, ईंटक देवालसँ प्रकृतिक क्रम, नामकरणसँ शब्दार्थ आ आप्तवाक्यसँ अदृश्य सत्य धरि चारि अलग अनुमानगत सीढ़ी रचल गेल अछि। पहिल सीढ़ी कारीगरीक अनुभवपर टिकल अछि। मुदा चार्वाक स्पष्ट कहैत छथि जे बासनसँ कुम्हार सिद्ध भेल, जगतसँ ईश्वर नहि। ई विरोध रचनामे रहि जाएब महत्त्वपूर्ण अछि; पाठकक सोझाँ सादृश्यक सीमा स्वयं संवादद्वारा प्रमाणित होइत अछि।

बूढ़ काकाक ‘तिनकोली’ नामकरण भाषा आ समाजक सम्बन्धकेँ नव प्रश्न बनबैत अछि। ओ प्रारम्भिक नाम देनिहारक कल्पना प्रस्तुत करैत छथि, मुदा चार्वाक क्रमिक सामाजिक सहमतिक विकल्प रखैत छथि। नामक उद्भव एकटामात्र ऐतिहासिक घटना होइ जरूरी नहि; नाटकक वैचारिक आकर्षण एहि टकरावमे अछि। लेखनी दीदीक संवाद शब्द-प्रमाणक विश्वासनीयता दिस बढ़ैत अछि। पाठककेँ एतय दूटा बात अलग रखबाक अछि—कथा भीतर पात्रक विश्वास आ बाहरी संसारमे सिद्ध मान्य तथ्य। ई अन्तर शास्त्रीय तर्कक न्यायपूर्ण आलोचना लेल अनिवार्य अछि।

## स्त्री-श्रम, ज्ञानक अधिकार आ विमर्श

कुम्हारिन आ लेखनी दीदीक भूमिकामे महत्त्वपूर्ण स्त्रीवादी सम्भावना अछि। कुम्हारिन बिना अपन कामक सिद्धान्तक अमूर्त व्याख्यान देने शरीर, सामग्री आ औजारक त्रिसम्बन्ध देखबैत छथि। लेखनी दीदीक लम्बा लेखन-अनुभव लोकक ज्ञानक अभिलेखीय आयाम खोलैत अछि। पुरुष आचार्यक तर्क एखन केवल राजसभाक अधिकार पर निर्भर नहि; गामक स्त्रीक अभ्यास आ वाणी सेहो ओकर साधन अछि। एहि दृष्टिसँ ज्ञानक उत्पादन श्रेणीगत रूपसँ विस्तार पबैत अछि।

मुदा एहि विस्तारक सीमा सेहो देखायब आवश्यक अछि। दुनू स्त्रीक ज्ञान अन्ततः सृष्टिकर्ताक पक्षमे पुरुष आचार्यक व्यापक अनुमानक सामग्री बनैत अछि। ओ अपना वैचारिक निष्कर्षक एकदम स्वतन्त्र दिशा कतेक धरि रखैत छथि, ई प्रश्न खुला अछि।

स्त्रीवादी पाठ एहि पात्रसभकेँ केवल प्रगतिशील उपस्थिति कहि सन्तुष्ट नहि होयत; ओकरा ईहो देखबाक अछि जे लोकक श्रमक ज्ञान आखिर ककरा तर्कक सेवा करैत अछि आ ककरा निर्णयाधिकार भेटैत अछि।

## दृश्यक्रम, परिशिष्ट आ सम्पादकीय प्रश्न

मुख्य मंचनमे समापन, कोरसक प्रणाम आ ‘नाटक समाप्त’क स्पष्ट बिन्दु अछि। मुदा अध्यायक पूर्वभागमे अङ्कित ‘दृश्य तीन-ख’ आ ‘दृश्य तीन-ग’ पछिला प्रदर्शन-अनुक्रमसँ अलग स्थानपर रखल भेटैत अछि, आ तकर बाद ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’क कथा, दृष्टान्त आ उद्धरण-संग्रह अबैत अछि। एहि व्यवस्थाक कारण पाठककेँ मूल प्रदर्शन, बादमे जोड़ल दृश्य आ शास्त्रीय अध्ययन-पूरक सामग्रीक सीमारेखा स्वयं खोजय पड़ैत अछि। ई जानि-बूझि बनाओल बहुपरतीय पाठ हो सकैत अछि, मुदा मंचनक क्रमक दृष्टिसँ दृश्य-सूचीक स्पष्टता जरूरी अछि।

अध्यायक उपलब्धि ई अछि जे शास्त्रीय अनुमानक जटिलता लोकभाषी मंचीय वस्तुसँ जुड़ैत अछि आ संशयवादीकेँ सम्पूर्ण चुप नहि करैत। सीमा ई अछि जे सामाजिक उदाहरणसँ ब्रह्माण्डीय निष्कर्ष दिस छलाङ अनिवार्य तर्क -सिद्धि नहि; विरोधीक प्रश्न रचनात्मक सन्तुलन बनबैत अछि। एही बिन्दुपर अध्यायक शिक्षणशीलता साहित्यिक अर्थ पबैत अछि: प्रश्नक संस्कार, उत्तरक अन्ध स्वीकृति नहि।

# अध्याय –९७ — चिंतामणि रत्न

## नव तर्क -युगक रचना आ मुख्य संघर्ष

गंगेश उपाध्यायक केन्द्रवला एहि अध्यायमे वाद-शाला फेर लौटैत अछि, मुदा आरम्भिक प्रतीक शंखसँ एक डे ग आगाँ—ज्ञानक कथनकेँ परिभाषित आ परिष्कृत करबाक प्रक्रियापर —जोर दैत अछि। मंगलाचरणक कारणिक फल, प्रामाण्यक परिभाषा, धुआँ-अगिनक व्याप्ति आ ईश्वर-अनुमान चारि अंकक वैचारिक क्रम बनैत अछि। बौद्ध प्रतिपक्षी आ मीमांसकक आपत्ति गंगेशकेँ प्रश्नक धार बढ़ेबाक अवसर दैत अछि। एतय ‘जीत’ पहिने देल वाक्यक अडिग रक्षा नहि; कमजोर परिभाषा त्यागिकऽ बेसी सटीक परिभाषा तक पहुँचनाइ अछि।

अध्यायक शीर्षक ‘चिंतामणि रत्न’ आ लोकगीतक ढे ला-हीरा रूपक बाहरी वस्तुक मूल्यसँ अधिक ज्ञाताक बोधक प्रश्न उठबैत अछि। आरम्भमे कथावाचक राजमिस्त्रीक गाराक तुलना तर्कक नींहसँ करैत छथि। ई उपमा तकनीकी नव्य-न्यायकेँ एकटा कारीगरक अनुभवमे परिवर्तित करैत अछि। तर्क शुद्ध अमूर्त काज नहि; परीक्षण, त्रुटि आ सुधारसँ बननिहार रचना रूपमे उपस्थित अछि।

## कथन-गति आ दोहरावक नव अर्थ

–१००मे एकटा भ्रमक व्याख्यापर मतभेद छल। –९७मे ओही शंख-चानी फेर अबैत अछि, मुदा आब प्रश्न प्रमाणित ज्ञानक परिभाषाक अंश बनैत अछि। जेनेतक आवृत्तिक दृष्टिसँ ई एके घटना दोहराएब नहि, एके दृष्टान्तक बदलेल प्रयोजनसहित पुनरागमन अछि। पहिल अध्याय भ्रमक सत्ता-स्थिति पूछैत छल, एहि अध्यायमे ज्ञानक निश्चित विषय, भाग आ कालक शर्त पर जोर अछि। ई अन्तर सम्पूर्ण त्रयीक पुनरावृत्तिक पद्धति बुझबाक कुंजी अछि।

वाद-शालाक दृश्य विस्तृत अछि, मुदा अनुभव-समय अपेक्षाकृत छोट—एक साँझ। प्रत्येक असफल परिभाषा कथनकेँ फेर प्रारम्भ जकाँ बनबैत अछि; मुदा पुनः आरम्भ वास्तवमे बौद्धिक प्रगति अछि, कारण नव प्रश्न पहिल उत्तरक त्रुटि दिखा चुकल अछि। कथा

जँ केवल अन्तिम सूत्र दैत तँ क्रमक नाटकीय अर्थ समाप्त भऽ जाइत। एहि दृष्टिसँ ‘दोहराव’ शैलीगत बोझ नहि, ज्ञान-निर्माणक पद्धति अछि।

## प्रतिपक्ष, ज्ञानगत विनम्रता आ संवाद

बाख्तिनक संवादधर्मिताक उपयोग एतय विशेष सटीक अछि। बौद्धक प्रश्न गंगेशक वाक्यकेँ बदलैत अछि; तर्कक अन्तिम रूप केवल एक आचार्यक भीतरसँ स्वयमेव नहि निकलैत। शिष्यक प्रश्न सेहो बीच-बीचमे कथनक गति बदलैत अछि। गंगेश अपन लापरवाह प्रमाणकेँ स्वयं खण्डित कएल बात स्वीकार करैत छथि। ई संवादक नैतिक केन्द्र अछि—विवादक प्रतिष्ठा आत्मरक्षासँ नहि, संशोधनक सामर्थ्यसँ बनैत अछि।

तथापि मूल मंचनक वैचारिक भार असमान अछि। बौद्ध प्रतिपक्षी तर्ककेँ कठोर बनबैत छथि, मुदा कथा अधिकांश बेर गंगेशक अन्तिम परिष्करणमे निष्कर्ष पबैत अछि। विमर्श-विश्लेषणक दृष्टिसँ ई देखबाक योग्य अछि जे कोन वक्ता प्रश्न उठाय सकैत छथि, कोन वक्ता नियम बनबैत छथि, आ कोन वक्ताक विराम अन्तिम अर्थ बनैत अछि। एहि शक्ति-वितरणकेँ बिना देखल ‘सभ स्वर समान’ कहब अपूर्ण मूल्याङ्कन होयत।

## ज्ञानक विषय, स्थान आ काल

शंख-चानीक पुनर्विवेचनमे एकटा महत्त्वपूर्ण सूत्र प्रकट होइत अछि: कोनो वस्तुक गुण कोन भागमे आ कोन समयमे अछि, ई निर्दिष्ट कएने बिना सामान्य कथन भ्रामक होइत अछि। गाछक माथपर चिड़ै क संयोग आ जड़िमे ओकर अभाव, आ पकलाक पहिने-पाछाँ घैलक बदलैत रं ग, उदाहरण रूपमे अबैत अछि। कथन-विज्ञानक स्तरपर सेहो ई सटीकता लागू होइत अछि। कथावाचक जे जनैत छथि, पात्र जे अनुमान करैत छथि, आ पाठक जे पछि जनताह—ई तीनूकेँ एके सत्य-सन्दर्भ मानल नहि जा सकैत।

व्याप्तिक चर्चामे धुआँ-अगिनक सम्बन्ध तर्कक क्रमिक परीक्षणक दृश्य बनैत अछि। नव्य-न्यायमे उपाधि, अवच्छे द आ विशेषणक महत्त्वक साहित्यिक रूप एहिमे अछि जे लेखक प्रश्नकेँ अस्थिर छापसँ बचाकऽ वस्तुक निश्चित सन्दर्भमे रखैत छथि। आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिक संग ई तुलना उपयोगी हो सकैत अछि, मुदा समरूपता नहि: शास्त्रीय अनुमान, प्रयोगात्मक विज्ञान आ साहित्यिक कथन अलग प्रमाण-व्यवस्था रखैत अछि।

## ईश्वर-अनुमान आ आलोचनात्मक दूरी

चारिम अंकमे कार्यसँ कर्ताक अनुमान प्रस्तुत होइत अछि, मुदा शिष्य आ बौद्ध विरोधी ‘कर्ता’क अर्थकेँ स्पष्ट करबाक माँग करैत छथि। अंकु र, घैल आ देहधारी शिल्पकारक उदाहरण अनुमानक व्याप्तिक सीमा दिखबैत अछि। गंगेश अपन प्रारम्भिक लापरवाही सुधारै त छथि। एहि नाट्यरूपमे ज्ञानक प्रश्न विश्वासक अधिकारसँ ऊपर उठि शब्दक अर्थक निर्णायक परीक्षा बनैत अछि।

दर्शनक इतिहासमे ई तर्क सभक स्वतंत्र प्रामाणिकता जाँचबाक विषय अलग अछि। उपन्यासक पात्रक मुँहसँ उच्चरित निष्कर्षकेँ रचनाकारक प्रमाणित दार्शनिक इतिहासक दावा मानब नहि चाही। साहित्यिक उपलब्धि कारण-सम्बन्धक तर्ककेँ संरचनागत घटना बनायब अछि; सीमा ई जे अमूर्त चरण अधिक भेलासँ पात्रसभक सामाजिक व्यक्तित्व कम खुलैत अछि। शास्त्रीय अध्ययन-पूरक खण्ड मुख्य नाट्यसँ पृथक रखलापर ई नाट्यगत उपलब्धि अधिक स्पष्ट होयत।

## अध्याय –९६ — स्मृति-रक्ष ।

## मृत्यु, आरोप आ ‘कारण अज्ञात’क संघर्ष

आरम्भक चारि दार्शनिक अध्यायसँ भिन्न एहि अध्यायमे एकटा निर्दिष्ट मानवीय क्षति कथा आरम्भ करैत अछि। युवा प्रतिलिपिकार हुलासा इनारमे मृत भेटैत छथि। कर्णपूर आ मुखिया रत्नेश शीघ्र ‘आत्महत्या’क निष्कर्ष दिस बढ़ैत छथि, जखन कि बुधुआ आ वाचस्पति बिना प्रत्यक्ष प्रमाण मृत्युकारण निश्चित करबाक विरोध करैत छथि। कर्णपूरक आशङ्का वाद-शालाक प्रतिष्ठासँ जुड़ल अछि, आ स्त्रीक लेखन-अधिकारक सामाजिक बाधा जल्दी उद्घाटित होइत अछि। एहि कथामे तर्कक प्रश्न आब जीवन-मरणक नैतिक निर्णय भऽ गेल अछि।

बीचक दृश्यसभमे हुलासाक भीजल ताड़पत्र, टूटल दीप आ अधूरल ‘हम...’ उपस्थित अछि। वाचस्पति प्रमाणक अभावमे कल्पित कथा गढ़बाक अधिकार अस्वीकार करैत छथि। अन्तिम विधान शिलापर लिखब निश्चित होइत अछि—‘कारण अज्ञात, मुदा नाम हुलासा, आ न्याय बाकी।’ एहि पाँतिक महत्व ई जे मृत्युकारणक अनिश्चितता मृतकक नाम अथवा न्याय-प्रश्न कैं विलुप्त नहि करैत। कथाक अन्तमे बुधुआ दीर्घकालीन स्मृति-साक्षीक प्रतिज्ञा लैत छथि, जे सम्पूर्ण त्रयीक बूढ़बा-रूपक दिशामे अर्थपूर्ण संकेत अछि।

## अनुपस्थित केन्द्र आ दृष्टिबिन्दुक राजनीति

हुलासा एहि अध्यायक मुख्य पात्र छथि, मुदा हुनकर जीवनक अन्तिम घटना सीधे हुनकर दृष्टिबिन्दुसँ नहि कहल गेल अछि। पाठक हुनका बुधुआक शोक, कर्णपूरक अपराधबोध, वाचस्पतिक प्रश्न, शिष्यक शंका आ अधूरल ताड़पत्रसँ जानैत अछि। जेरार जेनेतक दृष्टिबिन्दु-विभाजनमे ई बहुवक्ता बाह्य पुनर्निर्माण अछि, मृतकक चेतनाक सर्वज्ञ घोषणा नहि। एहि चयनक साहित्यिक बल ई अछि जे पाठक स्वयं सूचना आ अनुमिति अलग करबाक बाध्य होइत अछि। मृतकक अनुपस्थिति पाठक लेल ज्ञानक सीमा बनि रहैत अछि।

यदि कथावाचक हुलासाक अन्तिम क्षणक भीतर प्रवेश कऽ निश्चित कारण कहि देने रहितथि तँ विवाद समाप्त भऽ जाइत। मुदा मूल पाठ मृत्युक कारण खुला रखैत अछि। ई

अनिश्चितता रहस्य बनायबाक सहज उपाय मात्र नहि; विश्वसनीय कथनक नैतिक अनुशासन अछि। पाठक बुझैत अछि जे भावनात्मक रूपसँ सम्भावित कथा सेहो प्रमाणित घटना नहि। कथावाचकक संयम रचनाक न्याय-चिन्तनसँ सीधा जुड़ैत अछि।

## अधूरल वाक्य, ज्ञानगत अन्याय आ स्त्रीवादी पाठ

हुलासाक ‘हम...’ एहि अध्यायक सबसँ गम्भीर भाषिक घटना अछि। वाक्यक अधूरल रूप ओहि स्त्रीक आत्म-कथनक सीमा बनैत अछि जकर लेखकीय नाम हुनका जीवनमे नहि भेटल। कर्णपूर स्वीकार करैत छथि जे हुलासा अपन नामसँ टीका लिखय चाहैत छलीह, मुदा हुनका ‘स्त्रीक नाम शास्त्रपर नहि शोभैत’ कहि रोकल गेल छल। ई केवल व्यक्तिक असभ्य व्यवहार नहि; लेखनक स्वामित्व, विश्वसनीयता आ संस्था द्वारा ज्ञानक मान्यता नियंत्रित करबाक प्रश्न अछि। आधुनिक स्त्रीवादी ज्ञानमीमांसा एकरा ज्ञानगत अन्याय (epistemic injustice)क दृष्टिसँ पढ़ि सकैत अछि।

वाचस्पति हुलासाक अपूर्ण वाक्य पूरा करब अस्वीकार करैत छथि। एकर अर्थ नहि जे किछु कहल नहि जा सकैत; अर्थ ई जे हुलासाक अभिप्रायपर पुरुष विद्वान अपन मनसँ अन्तिम शब्द आरोपित नहि करताह। ई नकार स्त्रीक अनुपस्थित स्वरक सम्मान करबाक विरल कथा-निर्णय अछि। तथापि कृति स्त्रीक प्रत्यक्ष स्वकथन कम दैत अछि। हुलासाक जीवन आ इच्छा पुरुष पात्रसभक उत्तरक माध्यमसँ अधिक खुलैत अछि; आलोचना एहि प्रतिनिधित्वक सीमाकेँ सेहो देखैत अछि।

## अभावसँ कर्तृत्वक छलाङ आ प्रमाणक अनुशासन

कर्णपूरक प्रारम्भिक ‘आत्महत्या’क तर्क इनारक एकान्त आ प्रत्यक्ष साक्षीक अनुपस्थितिपर आधारित अछि। वाचस्पति एहि आधारसँ कर्तृत्व सिद्ध करबाक तार्किक अशुद्धि चिन्हैत छथि। प्रमाणक अभाव तथा अभावक प्रमाण भिन्न वस्तु अछि, आ अभावसँ आत्महत्याक निश्चित कारण निष्पन्न नहि होइत। एहि प्रसंगमे पहिल दार्शनिक अध्यायसभक ज्ञान-परख सामाजिक घटनाक कसौटीपर आबैत अछि। पाठक देखैत अछि जे सत्यक प्रति उत्तरदायित्व अदालत वा शास्त्रक भाषा मात्र नहि, मृतकक नामक रक्षा सेहो अछि।

कर्णपूरक अन्तःस्वीकारोक्ति नैतिक प्रश्नकेँ जटिल बनबैत अछि। हुलासाक लेखकीय अधिकार नकारब दुष्कर्म छल, मुदा एहिसँ हुनकर मृत्युकारण स्वतः प्रमाणित नहि होइत। सामाजिक अन्याय आ मृत्यु-संबन्धी विशेष आरोपकेँ एकटा कारण-शृंखलामे मिला देब प्रमाणहीन होयत। कथा एतय उत्कृ ष्ट अछि, कारण ओ स्त्रीविरोधी संस्थागत व्यवहारक निन्दा करैत अछि, तइयो मृत्युक प्रत्यक्ष रहस्यक उत्तर गढ़ैत नहि।

## स्थान, वस्तु आ स्मृतिक काल

इनार, दीप, ताड़पत्र आ शिलालेख दृश्यात्मक वस्तु मात्र नहि। इनार घटना-स्थल अछि, जकर भीतरक तथ्य अनुपलब्ध अछि; ताड़पत्र स्वलिखित कण्ठक टूटल साक्षी अछि; दीप आलोचनात्मक देखबाक अवसर अछि; शिलालेख सामुदायिक अभिलेख बनेबाक आरम्भ। पॉल रिकरक स्मृति आ आख्यानक सन्दर्भमे घटना सँ अभिलेख धरि ई परिवर्तन देखब योग्य अछि। एक मनुष्यक जीवन समाप्त होइत अछि, मुदा समुदाय ओहि असमाप्त न्यायकेँ आगामी कालक उत्तरदायित्व बनाबैत अछि।

बुधुआक प्रतिज्ञा देहक आयुसँ पैघ साक्षित्वक कल्पना करैत अछि। –१००क आरम्भमे बूढ़बाक ‘बारह सय बरख’क साक्ष्य जे मिथकीय समस्या बुझाइत छल, –९६मे ओकर नैतिक कारणक संकेत भेटैत अछि। ई सीधा यथार्थवादी जैविक विवरण नहि; सामूहिक स्मृति केँ व्यक्तिमय करबाक रूपकात्मक तन्त्र अछि। पहिल अध्यायक ‘नाम’क सामान्य सूत्र आब हुलासा नामक निर्दिष्ट लेखिकासँ जुड़ि ठोस सामाजिक अर्थ पबैत अछि।

## रचनात्मक उपलब्धि आ अपूर्ण प्रश्न

एहि अध्यायक सर्वाधिक प्रभावशाली शिल्पगत निर्णय तथ्यक रिक्त स्थानकेँ झूठे पूरा नहि करब अछि। शोक, अपराधबोध, संस्था-रक्षा आ न्याय एतय परस्पर मिलैत अछि, मुदा एक-दोसराक प्रमाण नहि बनैत। ‘कारण अज्ञात’क सार्वजनिक स्वीकृति उपन्यासक ज्ञान-नैतिकताक केन्द्रीय उद्घोष बनैत अछि। हुलासाक अधूरल वाक्य पाठकक स्मृतिमे जतेक देर रहैत अछि, ओतेक देर कोनो तैयार उत्तर नहि रहि सकैत।

हुलासाक जीवनक स्वतंत्र विस्तार कम अछि; हुनकर लेखकीय श्रम, विषय-चयन आ निजी संसार अधिक खुलि सकित छल। तथापि अधूरल वाक्य केँ नहि गढ़बाक निर्णय

कथन-नैतिकता लेल महत्त्वपूर्ण अछि। अध्याय दर्शन कैं स्मृति, स्त्रीक लेखकीय अधिकार आ सामाजिक न्यायक क्षेत्रमे आनैत अछि।

## अध्याय –९५ — जलमग्न पाण्डुलिपि

### घटना, संकट आ नैतिक द्वन्द्व

पूर्व अध्यायक हुलासाक अधूरल ताड़पत्र आ बुधुआक स्मृति-रक्षाक प्रतिज्ञा एहि अध्यायक प्रारम्भमे पुनः उपस्थित अछि। स्थान उदयनाचार्यक मठ। ‘किरणावली’क हस्तलेख आ प्रतिलिपिसभ आगिक संकटमे पड़ैत अछि; जीवन्ती नामक शिष्या पोथीक गट्ठर बचबय दौड़ै त छथि। पानिमे उतरला पर हुनकर के श अटकि जाइत अछि, भीतर किछु हिलैत अछि, आ अन्ततः गट्ठर बचि जाइत अछि मुदा जीवन्ती नहि घुरैत छथि। कथा पोखरिमे पुरान गोहिक भयक उल्लेख करैत अछि, मुदा जीवन्तीक अन्तिम क्षणक निश्चित कारण प्रत्यक्ष रूपसँ स्थापित नहि करैत। एहि भेदकेँ सुरक्षित रखब आवश्यक अछि।

भोरुक सभामे मठाधीश पोथी बचबाक महत्त्वपर जोर दैत छथि, आ उदयनाचार्य प्रतिप्रश्न करैत छथि जे ग्रन्थक सुरक्षा के कर जीवनक मूल्यपर भेल। जीवन्तीक नामक अभिलेखनक निर्णय एहि संकटकेँ रचनाक केन्द्रीय प्रश्न बनबैत अछि। शास्त्रीय वाणी आ प्रतिलिपिकारक श्रमक बीच जे असमानता –९६मे छल, ओ आब दोसर संस्था आ दोसर स्त्रीक माध्यमसँ दोहराइत अछि। अध्यायक अन्तिम दृश्य जल, स्मृति आ अधूरल वाक्यकेँ जोड़ैत अछि।

### पुनरावृत्ति, पूर्वस्मृति आ कथात्मक समय

जेरार जेनेतक आवृत्तिक दृष्टिसँ ‘हम...’ आ टूटैत स्त्री-वाणी –९६ सँ –९५मे दोसर घटनाक रूपमे लौटैत अछि। जीवन्तीक ‘पोथीक साक्षी बनब सेहो...’ कथन अधूरल रहि जाइत अछि। एहि पुनरावृत्तिक अर्थ एकहि मृत्यु-दृश्यक नकल नहि; संस्थाक इतिहासमे अलग-अलग स्त्रीक असमाप्त वाणी द्वारा ज्ञानक रक्षा कएल जाएबाक असमान मूल्य अछि। बुधुआक स्मृतिमे दू घटना एक-दोसराक साक्षी बनैत अछि।

मठक आगि आ पोखरिक पानि दृश्यगत विरोध रचैत अछि: एक तत्त्व पोथी नष्ट करैत अछि, दोसर ओकरा बचबैत काल प्राणक संकट बनैत अछि। जलसमाधिक मुख्य रूपक एतय बहुअर्थी होइत अछि। जल न शुद्ध रक्षक अछि, न केवल मृत्यु; ओ अपनहि भीतर

संरक्षण आ हानि दूनू राखैत अछि। पॉल रिकरक स्मृति-कथनक सन्दर्भमे जीवन्तीक नाम शिलापर लिखब घटना कैँ बीतल कालसँ निकालि सामूहिक भविष्यक कर्तव्य बनबैत अछि।

## श्रमक अदृश्यता आ स्त्रीवादी आलोचना

जीवन्ती ग्रन्थक रचयिता नहि, ओकर रक्षिका छथि। संस्था सामान्यतः ज्ञानक निर्माताक नाम रखैत अछि; प्रतिलिपि, संरक्षण, पहुँच आ भौतिक देखभाल कएनिहारक श्रम इतिहासमे कम दखल पबैत अछि। जीवन्तीक मृत्यु एहि अदृश्य श्रमकेँ दृश्य रूप दैत अछि। शिष्य सोमेश्वरक प्रश्न—रचना ‘निर्विघ्न’ समाप्त कहिया कहल जाए—रचनात्मक सफलताक सामाजिक मूल्यांकन बदलैत अछि। ‘पूर्ण’ पाण्डुलिपि आ ‘पूर्ण’ नैतिक उत्तरदायित्व एक समान नहि।

स्त्रीवादी ज्ञानमीमांसामे जीवन्ती केवल बलिदानी प्रतीक बनि जाएबाक जोखिम अछि। ओ अपन जोखिम पर निर्णय लैत छथि, बुधुआक निषेधक बावजूद आगाँ बढ़ैत छथि। एहि इच्छाशक्ति कैँ स्वीकार करब आवश्यक अछि, मुदा संस्थागत व्यवस्था किएक एहन संकट पैदा के लक जाहिमे जीवनक बदला पोथी चुनबाक दुविधा उठल—ई प्रश्न सेहो समान महत्त्वपूर्ण अछि। उपन्यासक आलोचनात्मक बल पुनर्निर्माणक नामकरणमे अछि; सीमा ई जे जीवन्तीक अध्ययन, निजी स्वप्न आ स्वतंत्र विचार छोट दायरामे रहि जाइत अछि।

## कथनक नैतिकता आ संरचनागत मूल्याङ्कन

चारि अंकमे संकट, निर्णय आ स्मृतिक गति अछि। सूत्रधारक अन्तिम कथन इतिहासक कठोर तथ्य नहि, किंवदन्ती आ सामुदायिक स्मृतिक मिश्रित स्तर अछि। स्मारक नष्ट भऽ सकैत अछि, कथा नहि; ताहि लेल स्रोतक ज्ञानसीमा आ लोकक स्मरणक अर्थ अलग चिन्हब जरूरी अछि।

–९६क ‘कारण अज्ञात’ आ –९५क ‘रक्षकक नाम’ एक भिन्न प्रश्न जोड़ैत अछि: साँचक अवशेष के बचबैत अछि? अधूरल स्त्री-वाक्यक पुनरावृत्ति भावात्मक सूत्र दोहराओल बुझाइ सकैत अछि। मुदा जीवन्तीक पोथी-रक्षाक भौतिक जोखिम हुलासाक घटनासँ आवश्यक भेद राखैत अछि।

## अध्याय ९४ — चारि मुखक मौन

### अकालक कथा आ दार्शनिक सभा

मठक विद्वत्सभामे सांख्य आचार्य विश्वम्भर, चार्वाक रुद्रदत्त, बौद्ध शीलभद्र आ मीमांसक हरिनाथ अपन-अपन दार्शनिक दृष्टि रखैत छथि। फाटकक बाहर अकालसँ पीड़ित लोक अन्नक प्रतीक्षामे अछि। सूत्रधारक स्थापना सँ पाठक जानैत अछि जे दार्शनिक वाद आ सामुदायिक संकट एकहि समयमे घटि रहल अछि। बुधुआक कथन जे भूख शास्त्रार्थ समाप्त होएबाक प्रतीक्षा नहि करैत, एहि अध्यायक कथात्मक मोड़ अछि। सोहन नामक भूखल ग्रामीण अन्ततः पीपरक जड़िमे खसि पड़ैत छथि आ मरि जाइत छथि।

अध्याय चारि अंकमे शब्द, प्रतिप्रश्न, मृत्यु आ मौनक क्रम बनबैत अछि। उदयनाचार्य वादक विषय फाटकक भीड़ दिस मोड़ै त छथि, मुदा चारू पक्षक उत्तरक बीच संकट समाप्त नहि होइत। बादमे अन्न बाँटल जाइत अछि, आ विद्वानसभ सभा आरम्भ करबाक पहिने फाटकक हाल पूछबाक नियम स्वीकार करैत छथि। एतय दार्शनिक अवधारणा अन्तिम सत्यक प्रतियोगिता नहि, व्यावहारिक उत्तरदायित्वक परीक्षा बनि जाइत अछि।

### बहुस्वरता आ असमान परिणाम

बाख्तिनक बहुध्वन्यता एहि अध्यायक विश्लेषण लेल अत्यन्त उपयुक्त अछि। चार्वाक प्रत्यक्ष भूखकेँ प्राथमिकता दैत छथि; बौद्ध करुणाक भाषा आनैत छथि मुदा तकर व्याख्या दीर्घ करैत छथि; मीमांसक विधि-वाक्यक अनुशासन पर अड़ै त छथि; सांख्य दुःखक स्वरूपपर विचार करैत छथि। ई स्वरसभ केवल दार्शनिक नामक सूची नहि, विलम्बक भिन्न भाषिक कारण बनैत अछि। मुदा फाटकक लोकक वाणी अपेक्षाकृत न्यून अछि; संकटक वास्तविक भार सोहनक देह वहन करैत अछि।

एहि असमानतामे सामाजिक शक्ति अछि। जे लोक बोलि सकैत छथि, ओ निर्णय टारि सकैत छथि; जे लोक भूखसँ निर्बल छथि, हुनका उत्तर देबाक समय नहि भेटैत। सोहनक मौन दार्शनिक मौन सँ भिन्न अछि: विद्वानक मौन आत्मनिरीक्षण हो सकैत अछि, गरीबक

मौन जीविते बोलबाक अवसर नष्ट होएब। एहि अन्तरसँ अध्यायक शीर्षक ‘चारि मुखक मौन’ बहुअर्थी बनैत अछि।

## आख्यानक अवधि आ नैतिक तात्कालिकता

मंचक समय आ भूखक समय बीच संघर्ष अछि। वादक प्रश्न क्रम माँगैत अछि, मुदा भूख शरीरक भीतर निर्णयक प्रतीक्षा नहि करैत। −९९क जल-घड़ी बौद्धिक समता सुनिश्चित करबाक उपकरण छल; एहि अध्यायमे कोनो विधि-मूलक बराबरी स्वयं पर्याप्त नहि, जखन भूखक शारीरिक समय तेजी सँ समाप्त होइत अछि। पॉल रिकरक कथाकालक दृष्टिसँ ई मात्र अवधि-भेद नहि; समयक मानवीय अनुभवक असमानता अछि।

सोहनक खसि पड़ब दृश्यगत विराम अछि। ओहि क्षण विद्वानक शब्दक गति रुकैत अछि, मुदा घटनाक परिणाम घुराओल नहि जा सकैत। कथा पाठककेँ एकटा असुविधाजनक प्रश्न दैत अछि: ज्ञानक विश्लेषण स्वयं कखन कर्मक अवरोध बनि जाइत अछि? एतय दार्शनिक विचार निषिद्ध नहि, ओकर उचित समय आ उत्तरदायित्व परखल गेल अछि।

## वृक्षक साक्षी, स्मृति आ शिल्पगत सीमा

बुधुआक प्रस्तावपर चारू विद्वान पीपरक छालपर हाथ राखैत छथि। ओ गाछ शास्त्रार्थक निपटाराक न्यायाधीश नहि, सामाजिक विफलताक स्मारक बनैत अछि। एहि दृश्य केँ पर्यावरणीय स्मृति-पाठक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि—मानव संस्थाक लघु समयक विपरीत गाछ दीर्घ स्मरणक प्रतीक बनैत अछि। मुदा ई वृक्षक वास्तविक संवेदनशीलता सिद्ध करबाक दावा नहि, कृतिक रूपकात्मक व्यवस्था अछि।

अध्यायक शक्ति दार्शनिक बहसक जीवन-मूल्य परखबामे अछि। सीमा ई जे सोहनक जीवनक जानकारी कम अछि; मृतक कखनो केवल तर्कक शिक्षा बनि जाएबाक जोखिम रखैत अछि। जँ सोहनक कुटुम्ब, श्रम आ भूखक इतिहास अधिक खुलैत, तखन कथा केवल विद्वानक नैतिक परिवर्तन नहि, पीड़ितक सम्पूर्ण जीवन देखबैत। एहि आरक्षणक बावजूद एहि अध्यायमे ‘उत्तर’क महत्त्व ‘समयपर उत्तर’मे बदलि जाइत अछि।

## अध्याय –९३ — शंखक अन्तिम प्रश्न

### पुरान विवादक मृत्यु-समीप पुनरागमन

अध्याय –१००क शंखक विवाद एहि अध्यायमे वृद्ध आक्षेपकक अन्तिम प्रश्नक रूपमे फेर उठैत अछि। साठि बरख प्रश्न करैत बितौने आक्षेपक मृत्यु नजदीक बुझि उदयनाचार्यक मठमे घुरैत छथि। हुनकर प्रश्न आब शंखमे चानीक भ्रान्ति कोना होइत अछि, एतबामात्र नहि; जँ मनुष्यक समूचा जीवन भ्रम हो तँ मृत्यु के हन सत्य अथवा अन्तिम संशोधन अछि? एहन प्रश्न कथाक पूर्व दार्शनिक वादकेँ जीवनक अन्तिम अनुभवक सोझाँ रखैत अछि।

उदयनाचार्य न्याय, प्राभाकर आ अद्वैतक भ्रमसम्बन्धी मतभेद स्पष्ट करैत छथि; आक्षेपक असहमतिक अवशेष राखैत छथि। अन्ततः बुधुआ उत्तर देबाक अनुमति पबैत छथि आ ज्ञानसँ अलग इच्छा, स्मृति, प्रेम आ साक्षीक प्रश्न उठबैत छथि। आक्षेपक मरि जाइत छथि; अन्तिम इजोतमे चानी सन चमकक दृश्य अबैत अछि, जकरा गामक लोककथा पछाति ‘राकश’सँ जोड़ैत अछि। ई अन्तिम दृश्य बाह्य सत्यापित अलौकिक घटना रूपमे नहि, कथाक मिथकीय-रूपकात्मक स्तरमे पढ़ल जायत।

### वृत्ताकार काल आ नैतिक पुनर्पाठ

–१००क अन्तमे द्वार लग छोड़ल शंख –९३मे वृद्ध मनुष्यक अन्तिम आत्मप्रश्न बनि जाइत अछि। कथा गोलाकार गति रचैत अछि: पहिल प्रश्नक पुनरावृत्ति अछि, मुदा प्रश्न पूछनिहारक जीवनी बदलि गेल अछि। जेरार जेनेतक आवृत्तिक दृष्टिसँ ई पहिल दृश्य फेर मंचित करब नहि; एके चिह्नकेँ अलग अनुभूत समयमे पढ़ब अछि। साठि बरखक संक्षेपक विरुद्ध मृत्युशय्याक क्षण विस्तृत संवादमे बदलि जाइत अछि।

पॉल रिकरक समय-विमर्श अनुसार जीवनक अन्तिम मोड़ पर स्मृतिमे रहल पुरान विवाद नब अर्थ पबैत अछि। आक्षेपक केवल सिद्धान्तगत संशयवादी नहि रहि जाइत; ओ दीर्घ अनुभवक भार लऽ कऽ प्रश्न करैत छथि। एतय दर्शनक कथन जतेक, प्रश्नकर्ताक कालिक परिवर्तन सेहो कथाक विषय अछि।

## साक्षीक अधिकार आ संवादक नव केन्द्र

अध्याय –१००मे वाचस्पति तर्कक केन्द्र छलाह; –९३मे वृद्ध बुधुआ, जे पहिने सेवकक स्थानमे छलाह, अन्तिम प्रश्नक नैतिक केन्द्र बनैत छथि। उदयनाचार्य स्वयं हुनका बाजबाक अवसर दैत छथि। विमर्श-विश्लेषणक दृष्टिसँ ई महत्त्वपूर्ण आसन-परिवर्तन अछि: ज्ञानक अधिकार पाण्डित्यक स्थिर पदसँ हटि जीवनभरि सुनने साक्षीक अनुभव दिस बढ़ैत अछि।

बाख्तिनक संवादधर्मिताक अनुप्रयोगमे एतय तर्क -माध्यम आ अनुभव-माध्यम दूनू वैध प्रश्नकर्ताक आवाज बनैत अछि। तथापि इच्छा, स्मृति आ प्रेम प्रमाणक तकनीकी समस्या हल करैत अछि—एहन दावा मूल पाठ स्वयं स्पष्ट नहि करैत। बल्कि ओ ज्ञानक प्रश्नक कातमे एकटा दोसर मानवीय आवश्यकता राखैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई भेद रचनाक उपलब्धिक अंग अछि; सिद्धान्तक स्थान पर भावना लगेनाइ मात्र एकर मूल्य नहि।

## इजोत, भूत-रूपक आ कथावाचकीय सीमा

आक्षेपकक मृत्यु बाद चमकक दृश्य रहस्य आ शोकक मध्यवर्ती संकेत अछि। कथावाचक जखन ‘कहल जाइत अछि’क माध्यमसँ लोकक विश्वास दर्ज करैत छथि, तखन साक्षात् कथन आ जनश्रुतिक स्तर अलग भऽ जाइत अछि। गामक लोक इजोतक नव नाम दैत अछि। लोक-स्मृति मृत्युकेँ अनुभवक अनाम अवशेषसँ कथात्मक पात्रमे बदलैत अछि।

अध्यायक सबलता पुरान शास्त्रीय वस्तुकेँ जीवनी, काल आ मृत्यु-संवेगक भीतर फेर अर्थ देबामे अछि। सीमा ई जे अन्तिम अलौकिक इजोत पाठकक लेल दार्शनिक सूक्ष्म प्रश्नक बहुत सहज दृश्य-उत्तर बनि सकैत अछि। एहि जोखिमकेँ सँभालबाक उपाय ई अछि जे ओकरा निश्चित पारलौकिक प्रमाण नहि, कथाक प्रतीकात्मक अनिश्चितता रूपमे पढ़ल जाए।

## अध्याय –९२ — जल-घड़ीक कै दी

## नाट्यसँ उपन्यासगद्य दिस निर्णायक बदलाव

–९३ धरि नाट्य-रचनाक प्राबल्यक बाद –९२ स्पष्ट रूपसँ गद्य-उपन्यासक अंश बनैत अछि। जोड़ी पोखरिक गहिरा-उथला भाग, नाहर, खेत, माछ, पशु, गामक भूगोल आ आचार्य के शवक न्यायसभा विस्तारसँ देखाओल गेल अछि। के शवक जल-घड़ी वादमे बराबर वक्तृ-समय सुनिश्चित करबाक पुरान उपकरण अछि; मुदा गामक भूमि-जल विवादमे ई औपचारिक समताक पर्दा बनैत अछि, जकर भीतर वास्तविक सामाजिक असमानता सुरक्षित रहि जाइत अछि।

उग्रसेन ठाकुरक प्रभाव आ हुनकर वकीलक तकनीकी प्रश्न सुनवाई लम्बबैत अछि। सुखदेव अपन खेत लेल पानिक अधिकार खोजैत छथि, मुदा बारी पर बारी टरै त जाइत अछि। अन्ततः ओ न्यायसभामे खसि पड़ैत छथि; हुनकर अन्तिम वाक्य ‘हमर बेटी...’ अधूरल रहि जाइत अछि। बादमे प्रतीक्षाक सीमा तय करबाक ‘सुखदेव-नियम’ बनैत अछि, मुदा सुखदेवक भूमि हुनकर कुटुम्बसँ हेराइ जाइत अछि। प्रक्रिया सुधरलो पर पहिने भेल क्षति घुरि नहि अबैत।

## काल-व्यवस्था आ संरचनात्मक हिंसा

एहि अध्यायक केन्द्र केवल विलम्ब नहि, समयक असमान वितरण अछि। उग्रसेनक कात पर्याप्त संसाधन, वकील आ समय अछि; सुखदेवक खेत सूखि रहल अछि आ देह क्षीण भऽ रहल अछि। जल-घड़ी सभ वक्ताकेँ समान क्षण देबाक दावा करैत अछि, मुदा विवाद समाप्त होएब धरि जियत रहबाक समान सामर्थ्य नहि। आधुनिक सामाजिक आलोचनामे एकरा संस्थागत वा संरचनात्मक हिंसाक पठनद्वारा बुझल जा सकैत अछि: कोनो एक व्यक्ति तुरन्त चोट नहि पहुँचबैत, तथापि प्रक्रिया कमजोर पक्षपर घातक भार रखैत अछि।

जेरार जेनेतक आख्यान-अवधिक भेदमे सुखदेवक सप्ताहक पुनरावर्ती प्रतीक्षा संक्षेपित अछि, जखन कि निधनक क्षण विस्तार पबैत अछि। ई अवधि-वितरण पाठककेँ संख्यात्मक दिनसँ बेसी देहगत लागत देखबैत अछि। –९९मे जल-घड़ी न्यायपूर्ण शास्त्रार्थक चिन्ह छल;

एहि अध्यायमे ओकर सामाजिक पुनर्व्यवहार व्यंग्यात्मक आलोचना बनैत अछि। वस्तुक पुनरागमन विचारक स्वतः प्रगति नहि, संस्थागत विकृतियो देखबैत अछि।

## पर्यावरण, सम्पत्ति आ न्याय

नाहरक पानि एहि कथामे तटस्थ प्राकृतिक पदार्थ नहि। नाहर खोलब-बन्न करब भूमि-अधिकार, ऋण, पेशागत शक्ति आ अन्नक भविष्य निर्धारित करैत अछि। पर्यावरणीय आलोचना एकरा मानव-प्रकृति सम्बन्धक ठोस व्यवस्थाक रूपमे पढ़ि सकैत अछि: नदीक धार गामक जीवन-दाता अछि, मुदा पानिक पहुँच सामाजिक शक्ति द्वारा नियंत्रित होइत अछि। एतय ‘प्रकृति’क संकट मानव संस्थाक संकटसँ अलग नहि।

सुखदेवक पातर होइत शरीर आ सुखैत धानक तुलना वातावरण आ पात्रक देहक साझा क्षय देखबैत अछि। ई रूपक संवेदनात्मक प्रभाव रखैत अछि, मुदा उपन्यासक भीतर वास्तविक भूमि-विवादक जटिलता सेहो सुरक्षित अछि। बादक नियम-संशोधन सुधारक संकेत अछि, मुदा जखन मूल सत्ता-संसाधन सम्बन्ध अपरिवर्तित रहैत अछि, तखन कानूनी प्रगति सीमित बुझाइत अछि।

## अधूरल वाणी आ कथावाचकीय न्याय

हुलासाक ‘हम...’ आ जीवन्तीक ‘पोथीक साक्षी बनब सेहो...’क बाद सुखदेवक ‘हमर बेटी...’ एकटा तेसर अधूरल वाक्य अछि। पहिल दू स्त्रीक साक्षी आ नामक प्रश्न उठबैत छल, तेसर गरीब कृ षकक कुटुम्बक भविष्यक चिन्ता अछि। तीनू वाक्य समान नहि, मुदा तीनू मृतकक अप्राप्त बोलबाक समय दर्शबैत अछि। एहि आवर्ती संरचनाकेँ गामक स्मृतिक भाषिक चिह्न कहल जा सकैत अछि।

अध्यायक शक्ति यथार्थवादी भूगोल, सामाजिक व्यवस्था आ कालिक अन्यायकेँ एक कथामे जोड़ब अछि। सीमा ई जे गद्यक अन्तिम नियम बदलनाइ कु छ सहज सुधारवादी समाधान बुझाइ सकैत अछि, जखन कि भूमि-हानि कथैमे स्थायी रहैत अछि। ई विसंगति दरअसल आलोचनात्मक अर्थ पैदा करैत अछि: न्यायसभाक नियम सुधरब आ न्याय मिलब एके घटना नहि।

## अध्याय –९१ — चर्मकार टोलाक उजास

## स्थानिक दृष्टिबिन्दुक परिवर्तन

एहि अध्यायक पहिल वाक्य पाठककेँ सभा-भवनसँ हटाकऽ गामक पछबरिया चर्मकार टोला दिस लऽ जाइत अछि। सूखल ‘मरल-गंग’, बबूर, खजूर, चामक काज आ ग्रामीण घरक सामग्री अलग सामाजिक भूगोल रचैत अछि। पहिने –९७मे गंगेश मुख्यतः तर्क शास्त्रीक रूपमे छलाह; आब रोगग्रस्त युवकक रूपमे रत्नाक देखभालपर निर्भर छथि। पाठकक दृष्टिबिन्दु शास्त्रीय प्रतिष्ठासँ हटि ओहि लोकक काज पर केन्द्रित होइत अछि जिनका विद्वानसभक इतिहास प्रायः किनार करैत अछि।

रत्ना गंगेशकेँ आश्रय दैत छथि; हुनकर बेटी मालती ढोल बनाबयवाला अनुभवसँ शब्दक विश्वसनीयताक प्रश्न उठबैत छथि। गंगेश स्वस्थ भेलाक बाद सेहो टोलामे अबैत रहैत छथि; हुनका आ मालतीक विवाहक बात सामाजिक विरोध उठबैत अछि। कथा विवाहक सम्पन्नता आ ब्राह्मण-टोलाक बहिष्कार दर्ज करैत अछि। मुदा एहिमे गंगेशक वास्तविक ऐतिहासिक जीवनी प्रमाणित भेल—एहन निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत। ई उपन्यासक कल्पनाशील वैकल्पिक इतिहास-विधान अछि।

## जाति, ज्ञान आ प्रतिपरम्पराक लेखन

–९१क केन्द्र ज्ञानक अधिकार अछि। मालती स्वयं शास्त्रार्थक पदाधिकारी नहि छथि, मुदा ढोलक चाम ठीक तनल रहने ध्वनि विश्वसनीय होएबाक अनुभवसँ ज्ञानक करणपर प्रश्न करैत छथि। ई उदाहरण नव्य-न्यायक प्रामाण्य समस्यासँ गहिर रूपमे जुड़ैत अछि। सामाजिक श्रेणीमे ‘नीच’ कहल गेल कारीगरक अनुभव विद्वानक प्रश्नपर प्रकाश दैत अछि; पाठ परम्परागत ज्ञान-सोपानकेँ उलटैत अछि।

उत्तरऔपनिवेशिक आ दलित साहित्यिक आलोचनाक दृष्टिसँ जाति-आधारित श्रम-अदृश्यताक प्रश्न उठैत अछि। मुदा चर्मकार लोककेँ केवल महान विद्वानक ज्ञान-उन्नतिक साधन बनाबयब सेहो जोखिम अछि। रत्नाक उपचार-ज्ञान, मालतीक विचार आ टोलाक

सामुदायिक जीवन अपन महत्त्व रखैत अछि, चाहे गंगेशक ग्रंथ लिखल जाए वा नहि। एहि स्वतंत्र अस्तित्वक मान्यता आलोचनाक जरूरी कसौटी अछि।

## इतिहास, जनश्रुति आ कथा-विश्वसनीयता

मूल पाठ गंगेशक जन्म आ बाल्यकालसँ जुड़ल परस्पर विरोधी जनश्रुति दर्ज करैत अछि; कथावाचक स्वयं सन्देहक सीमा स्वीकार करैत अछि। तकर बाद रत्ना-मालतीक प्रसंग एकटा वैकल्पिक सम्बन्धक कथा बनबैत अछि, जकर ऐतिहासिक सत्यापन पाठकक काज नहि, बाहरी शोधक विषय अछि। लिंडा हचियनक इतिहास-सापेक्ष काल्पनिक लेखनक अवधारणासँ तुलना करैत ई देखल जा सकैत अछि जे विख्यात ग्रन्थक पाछाँक अनाम श्रमक प्रश्न कथा कोना पुनर्लेखित करैत अछि। एहि तुलना सँ उपन्यास स्वयं ऐतिहासिक तथ्य बनि नहि जाइत।

बुधुआ गंगेशकेँ चेतबैत छथि जे ग्रन्थ पूजल जाएत, मुदा मालतीक ढोलक कथा लोक बिसरि जेताह। उपन्यासक पछिला कथन एहि भयसँ सुमेल खाइत अछि। एहि संरचनामे पूर्वाभास आ बादक स्मृति-हानि एक दोसरा केँ अर्थ दैत अछि। मुख्य बात प्रसिद्धि आ ऐतिहासिक श्रेयक असमान वितरण अछि; ककर विचार ग्रन्थक नाम बनैत अछि आ ककर श्रम लोक-गीतक परिधिमे बचैत अछि, ई आलोचनाक मूल प्रश्न अछि।

## वस्तु-बिम्ब, स्त्री-स्मृति आ समग्र मूल्याङ्कन

ढोलक चाम, ताड़पत्र, औषधि, मरल नाहर आ पीपर एक-दोसरा सँ जुड़ल बिम्ब अछि। –९२मे पानि रोकल जाएबाक कारण कृ षकक देह क्षीण भेल छल; –९१मे सूखल धारक कात अभिजनक छू टल अंशक भीतर ज्ञानक पुनर्जीवन सम्भव होइत अछि। एहि पर्यावरणीय आ सामाजिक स्थल-संयोजनमे उपन्यास दैनिक श्रमक गरिमा पुनः स्थापित करबाक प्रयास करैत अछि। रत्नाक चिकित्सा-काज आ मालतीक उपमा ज्ञानक भिन्न परम्परा अछि, दोसरक ‘लोक-सजावट’ नहि।

अध्यायक उपलब्धि प्रतिष्ठित दार्शनिकक जीवनकेँ विस्मृत समुदायसँ जोड़ि इतिहासक चयन-प्रक्रियापर प्रश्न करब अछि। सीमा ई जे मालतीक आवाज अन्ततः गंगेशक भविष्यक ग्रन्थ-सफलताक सम्बन्धमे बेसी सुनाइत अछि; हुनकर स्वयं के हन रचनात्मक परियोजना

छल, से कम खुलैत अछि। एहि आरक्षणक बावजूद ‘चर्मकार टोलाक उजास’ ज्ञानक स्रोत, जातीय शक्ति आ स्मृति-लेखनक प्रश्नकेँ उपन्यासक सामाजिक आधारमे उतारै त अछि।

## अध्याय –९० — बुधुआक जलसमाधि

### साक्षीक अन्त आ स्मृतिक नव शरीर

एहि अध्यायमे कथा शास्त्रार्थक दीर्घ आरम्भसँ हटि बुधुआक देहक अन्तिम अवस्थापर केन्द्रित होइत अछि। सभा-भवन दू बेर टूटि फेर बनल अछि, रत्नाक परिवारक चारि पीढ़ी चर्मकार टोलामे बसल अछि, मुदा बुधुआक साक्षित्व अखनहु जीवित अछि। एहि कालान्तरक संक्षेपक बाद कथावाचक जाड़क एकटा साँझ चुनैत अछि, जखन रघुनाथ हुनकर उमिर पुछैत छथि। वृद्ध साक्षीक उत्तर वर्षक हिसाब नहि दैत अछि; ओ अपन देहक अपेक्षा स्मृतिक भितर रहनिहार समयक बात कहैत छथि। इतिहासकेँ लोकक अनुभवमे बदलनिहार ई आरम्भ अध्यायक भाव-भूमि बनबैत अछि।

कथाक निर्णायक संकट ई नहि जे बुधुआ मरबाक समीप छथि; ई अछि जे हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव आ रत्नाक असुरक्षित नाम हुनकर स्मृतिसँ संगहि हेरा सकैत अछि। शिलालेख आ पोथीक अनुपस्थिति पात्रक निजी क्षयकेँ सामूहिक विस्मरणक भयमे बदलैत अछि। शंख आ डोरी—आरम्भक दार्शनिक अध्याय –१००क वस्तु—अन्तिम यात्रामे फेर उपस्थित अछि। वस्तुक पुनरागमनसँ त्रयीक दीर्घ कथानकमे एकटा अर्थ-श्रृंखला निर्मित होइत अछि: भ्रम पर विचार करबाक साधन आब सत्यक रक्षा करबाक चिह्न बनैत अछि।

### कथनकाल, अवधि आ दृश्य-प्रवेश

जेरार जेनेतक कथन-अवधिक भेदसँ पढ़ला पर आरम्भक अनेक पीढ़ी आ भवनक पुनर्निर्माण संक्षेपमे समायल अछि; रघुनाथक संग संवाद आ पोखरिक कात बुधुआक एकान्त वाणी अत्यन्त मन्द गतिसँ उभरैत अछि। एतय कथनक विस्तार जीवनक अन्तिम घड़ीकेँ अनुभवक दृष्टिसँ दीर्घ बना दैत अछि। वर्षोंक अव्यक्त अनुभव किछु नामक उच्चारणमे केन्द्रित होइत अछि। हुलासाक अधूरल “हम...” आ जीवन्तीक टूटल प्रतिज्ञाकेँ लेखक पुनः उद्धृत करैत छथि, मुदा बुधुआ ओकरा अपन सुविधाक अनुसार पूरा नहि करैत छथि। ई विराम मृत पात्रक वाणीक अधिकार सुरक्षित रखैत अछि।

कथावाचक बाह्य वर्णन करैत अछि, मुदा किछु महत्त्वपूर्ण अनुच्छे द बुधुआक भीतरी चिन्ता लग आबि जाइत अछि। पाठक पानिमे उतरबाक निर्णय कैँ दूरसँ देखबो करैत अछि आ ओकर नैतिक दबाव सेहो बुझैत अछि। बादमे धीवरसभक दृष्टिसँ केवल शंख, डोरी आ अनुपस्थित देह भेटैत अछि। एहि संक्रमणमे पात्रक अनुभव, बाहरी साक्ष्य आ लोकक व्याख्या अलग-अलग रहैत अछि; अलौकिक रूपान्तरणक दावा कोणो बाह्य अभिलेखसँ सिद्ध तथ्य नहि, कथा-जगतक मिथकीय निष्कर्ष बनैत अछि।

## सामूहिक स्मृति आ नामक उत्तराधिकार

मॉरिस हाल्बवाक्सक सामूहिक स्मृतिक अवधारणासँ अध्यायकेँ पढ़ब उपयोगी अछि। बुधुआक स्मृति पूर्णतः निजी नहि: ओ गामक स्त्रीसभ, कृ षक, श्रमिक आ बहिष्कृत समुदायसँ सम्बन्ध रखैत अछि। जकर नाम आधिकारिक अभिलेखमे नहि रहल, ओकर स्मरण एकटा देहपर निर्भर अछि। एहि अर्थमे बुधुआ जीवित अभिलेख छथि। मुदा जीवित अभिलेखक असुरक्षा सेहो एतहि उद्घाटित होइत अछि—जखन साक्षी मरि जाए, सामाजिक संरचना जँ सुधरल नहि अछि तँ नाम फेर लुप्त भऽ सकैत अछि।

पानिक तले प्रवेशकेँ कथा नामक गाममे पुनर्वासक प्रतीक बनबैत अछि। पानि, जे पहिने पाण्डुलिपि डुबोने छल, आब स्मृति सुरक्षित करबाक कल्पित माध्यम बनैत अछि। ई उलटब केवल रूपकक सौन्दर्य नहि; ई पूछैत अछि जे समाज किएक अपन नामसभकेँ बचयबाक लेल एकटा वृद्ध मनुष्यक असाधारण अन्तक प्रतीक्षा करैत अछि। प्रश्नक ई कटुता अध्यायक उदात्त आख्यानकेँ आलोचनात्मक गहिराइ दैत अछि।

## अद्भुतक स्वरूप आ नैतिक कथन

बुधुआक प्रवेशक समय पोखरिक चानी सन चमक, पीपरक जड़िक झुकब आ अगिला भिनसर गाछक हरियर देखाएब अलौकिक संकेतक रूपमे वर्णित अछि। मुदा वर्णनमे “जेना”क पुनरावृत्ति ध्यान देने योग्य अछि: दृश्य कल्पना, उपमा आ लोकविश्वासक सीमा पूरी तरह मेटल नहि अछि। त्स्वेतान तोदोरोवक विस्मयात्मक-अनिश्चितताक कसौटीपर, पाठक किछु देर प्राकृतिक आ अलौकिक व्याख्याक बीच रहि सकैत अछि; कथा शीघ्र

बूढ़बाक भूत-उपस्थितिकेँ स्वीकार कऽ ओहि अनिश्चितताकेँ स्थिर लोकसत्यमे बदलि दैत अछि।

नैतिक दृष्टिसँ प्रश्न कठिन अछि। पाठ बुधुआक जलसमाधि केँ स्मृतिरक्षाक सर्वोच्च प्रतिज्ञा जकाँ रचैत अछि; मुदा स्वयंकेँ समाप्त करब न्याय-प्रतिष्ठाक अनिवार्य उपाय नहि होइत। साहित्यिक आलोचना लेल एहि दृश्यक भावात्मक सफलता स्वीकार करितो ई पूछब आवश्यक अछि जे किएक गाम सामूहिक लेखन, प्रत्यक्ष साक्ष्य आ संस्थागत नाम-सुरक्षाक उपाय विकसित नहि करैत। पात्रक बलिदान समाजक दायित्व ढाकि नहि दे— एहि आरक्षणसहित दृश्य अधिक प्रबल बनैत अछि।

## पाठ-साक्ष्य आ स्वतन्त्र मूल्याङ्कन

मूल पाठमे रघुनाथक उमिर-प्रश्न, बुधुआक मृतकसभसँ क्रमिक सम्बोधन, हुलासाक अधूरल वाक्यकेँ पूरा नहि करबाक स्पष्ट अस्वीकार, पोखरिक कात छोड़ल शंख-डोरी आ वर्धमानक अन्तिम व्याख्या—ई पाँच ठोस घटनात्मक आधार अछि। कथा “शंख आ रजत”क वस्तु-स्मृतिकेँ “गोहि सभक बीच जलसमाधि”क नाम-नैतिकतामे बदलि दैत अछि। ई रचनात्मक एकसूत्रता उल्लेखनीय अछि।

शिल्पगत सीमा दीर्घकालक असाधारण जीवनक व्याख्या आ जलसमाधि-भूतरूपान्तरणक लगभग निर्विवाद स्वीकारमे अछि। कथावाचक जँ किछु क्षण लोकक परस्पर भिन्न प्रतिक्रिया अधिक खुलल छोड़ितथि तँ बहुस्वरता बढ़ैत। तथापि एहि अध्यायक मूल उपलब्धि ई अछि जे ओकर केन्द्रीय नायक कोनो शक्ति-संपन्न विजेता नहि, बल्कि नाम बिसरबाक भय सँ व्याकुल साक्षी अछि।

## अध्याय -८९ — पहिल राति, पहिल बाढ़ि

### आपदाक कथा नहि, असमान सुरक्षाक कथा

बुधुआक जलसमाधिक एक बरख बाद बाढ़िक राति आरम्भ होइत अछि। आरम्भिक दृश्य हवाक फटकार, बिजुरीक आवृत्ति आ कमला-बलानक गर्जनसँ बनल अछि। तथापि कथाक केन्द्रीय संकट केवल पानिक तीव्रता नहि। बान्हक सबसँ कमजोर हिस्सा चर्मकार टोलाक दिस अछि, जतय लोक माटिक ढे रसँ अपना कैं बचबैत रहल अछि। नदी प्राकृतिक जोखिम उत्पन्न करैत अछि; सामाजिक व्यवस्था ओकर परिणाम असमान करैत अछि। एहि भेदकेँ अनदेखा कएलापर कथा एकटा सामान्य बाढ़ि-वर्णन बनि जाएत।

बूढ़बा आब गामक प्रत्येक घरक के वाड़ी छू बि नहि सकैत छथि। अपन साक्षित्व आ बचाबाक शक्तिक बीचक अन्तर हुनका दुःखी करैत अछि। सात बरखक गौरीक सपनामे चेतावनी पहुँचब कथा-पद्धतिक महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। दादी पहिने सपना बुझि टारबाक प्रयास करैत छथि; बाहरी पानिक आवाज आ कु कु रक भुकब पर ओ निर्णय बदलैत छथि। एहिमे अलौकिक चेतावनी आ इन्द्रियसिद्ध संकेत संयुक्त भऽ संकटबोध बनबैत अछि।

### कथन-अवधि आ भयक तीव्रता

जेरार जेनेतक काल-अवधिक हिसाबसँ आधा रातिक घटना अनेक छोट क्रियामे विस्तार पबैत अछि: हवा, बिजुरी, बरखा, बान्हक टूटब, गौरीक जागब आ लोकक भागब। “उठ”क स्वप्न-संकेतक आवृत्ति कथा-गतिमे ध्वन्यात्मक दबाव उत्पन्न करैत अछि। विस्तारक ई पद्धति बाढ़िक समयकेँ गणनात्मक घड़ी नहि, भय-संकुचित अनुभवक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

आख्यानक दृष्टिबिन्दु बूढ़बाक असहायता सँ गौरीक स्वप्न, दादीक देखब आ बहैत परिवारसभक अनुभव दिस सरकै त अछि। कथावाचक सर्वज्ञ प्रवृत्तिक छथि, मुदा स्तरीकृत दृष्टि पाठककेँ गामक अलग सामाजिक स्थानपर रखैत अछि। सुभागीक बहि जाएब आ सात मृत्यु एकटा सामूहिक संख्या बनि सकैत छल; “गौरी बाँचल की?” सन अन्तिम प्रश्न ओकरा

व्यक्तिगत दुःखक रूप दैत अछि। संख्या आ नामक ई तनाव समूचा उपन्यासक मूल वाद अछि।

## असुरक्षाक सामाजिक निर्माण

पर्यावरणीय न्याय आ रॉब निक्सनक धीम हिंसाक अवधारणासँ बान्हक उपेक्षाक अर्थ खुलैत अछि। बाढ़िक धक्का अचानक अछि, मुदा कमजोर सुरक्षा वर्षोंक संचयी सामाजिक निर्णयक परिणाम अछि। जँ शक्तिशाली टोलाक रक्षा पहिने होइत अछि आ चर्मकार टोलाक माटि स्वयं ओकर जिम्मेदारी बनैत अछि, तँ प्राकृतिक आपदाक भीतर संस्थागत हिंसा पहिनेसँ उपस्थित अछि। ई सामाजिक कारण लेखक स्पष्ट करैत छथि; एकरा प्राकृतिक नियति बुझब पाठकक भूल होयत।

आपदाक बाद राज-कर्मचारी ब्राह्मण-टोलाक धान आ मवेशीक हानिक हिसाब पहिने लिखैत छथि, जखन कि मृत छह व्यक्तिक नाम अभिलेखमे ठीकसँ नहि चढ़ै त अछि। एतय मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक चर्चा उपयोगी अछि: कतहु साक्षीकेँ अविश्वसनीय मानल जाइत अछि, कतहु ओकर अनुभव दर्ज करबाक श्रेणी नहि भेटैत अछि। हानिक गणना सेहो सत्ता-सम्बन्धक उत्पाद बनि जाइत अछि। पाठक सात मृत्यु जनैत अछि, मुदा गामक आधिकारिक लेखा ओहि ज्ञानक बराबरी नहि करैत।

## स्वप्न, आधा-भूत आ कार्यकारणक तनाव

बूढ़बा पानिक धार एक क्षण लेल मोड़ि गौरीक परिवार बचबैत छथि। एहि दृश्यसँ अलौकिक उपस्थितिक काज साक्षीभावसँ सक्रिय संरक्षण दिस विस्तार पबैत अछि। मुदा गौरीक परिवार बचल, सुभागी नहि बचलीह। कथा अनिवार्य प्रश्न छोड़ैत अछि—जँ बूढ़बा पानिकेँ मोड़ि सकैत छथि तँ सीमित शक्ति किएक? लेखक उत्तर मे सम्पूर्ण तर्क नहि दैत छथि; बूढ़बाक पश्चात्ताप सँ सीमाक भावात्मक व्याख्या करैत छथि। ई अनिर्णीतता कथाक नैतिक शक्तिक स्रोत सेहो अछि आ जादुई कार्यकारणक शिल्पगत दुर्बलता सेहो।

गौरीक “आधा-भूत” होएबाक सम्भावना मृत आ जीवितक सरल द्विभाजनकेँ चुनौती दैत अछि। एहि बिम्बकेँ वास्तविक चिकित्सकीय वा ऐतिहासिक तथ्य नहि मानि कथाजगतक प्रतीक रूपमे पढ़ब चाही। एकरा माध्यमसँ कथा कहैत अछि जे साक्षी होएबक अर्थ मात्र

घटना देखब नहि, दोसराक पीड़ा सुनबाक क्षमता विकसित करब अछि। मुदा ई भाव जँ सामूहिक संस्था बनय तँ गाम भूतक चमत्कारपर कम निर्भर रहत।

## स्थाननामक निर्माण आ घटनाक परिणाम

पहिल बाढ़िक बाद “नारिकेल-घाट” सँ “गढ़ नारिकेल” नामक परिवर्तन कथा-जगतमे नव बान्हक स्मृतिसँ जोड़ल गेल अछि। ई कथा-भीतरक नाम-व्युत्पत्ति अछि, बाह्य प्रमाणित इतिहास नहि। महत्त्व ई अछि जे सात मृत्यु सार्वजनिक संरचनाक आधार बनैत अछि, आ चर्मकार टोला दिस बान्ह पहिने मजगूत कएल जाइत अछि। स्मृति एतय केवल गीत नहि, निर्माणक प्राथमिकता बदलबाक कारण अछि।

अध्यायक उपलब्धि चेतावनी, बचाव, शोक, अभिलेखीय उपेक्षा आ पुनर्निर्माणकेँ एक रात्रिक नाट्यमे समेटब अछि। सीमा ई जे सामूहिक निर्णयक वास्तविक मतभेद, माटिक व्यवस्था आ दीर्घ परिणाम त्वरित निष्कर्षमे सिमटि जाइत अछि। तथापि कथा एक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक बात स्थापित करैत अछि: आपदा-वृत्तान्तक नैतिकता ओकर भावुक वर्णनमे नहि, ई प्रश्नमे अछि जे किनका पहिने बचाओल गेल आ ककर नाम बादमे गनल गेल।

## अध्याय –८८ — डाइनक आरोप

### अपराधक निर्माण आ क्रमबद्ध षड्यन्त्र

बाढ़िक बीस बरख बाद गौरी सत्ताइस बरखक, दू बच्चाक माए आ जड़ी-बूटीक ज्ञाता छथि। चर्मकार टोला आब सुरक्षित आ आर्थिक रूपसँ अपेक्षाकृत सुदृढ़ अछि। एही सामाजिक परिवर्तनसँ प्रतापसेन आ यशपतिक असहजता जन्मैत अछि। हवेलीक भीतरी वार्तामे यशपति स्वयं कहैत छथि जे प्रमाण “बनाओल जाइत अछि”, माँगल नहि। एहि स्पष्ट घोषणासँ पाठक आरम्भहि बुझि जाइत अछि जे आरोप अनुसन्धानक परिणाम नहि, भूमि-अधिकार बदलबाक युक्ति अछि।

विश्वनाथक बुखार, कमला देवीक गौरीकेँ बजाएब, राति भरिक उपचार आ भिनसर रोग घटब—ई घटनाक्रम आरम्भमे गौरीक सेवा सिद्ध करैत अछि। यशपति ताहि घटनाकेँ उलटा अर्थ दैत छथि: रोग बढ़ल, गौरी आयलीह, फेर रोग घटल; तेँ गौरी रोगक कारण सेहो भऽ सकैत छथि। कथामे ई कार्यकारणक जानि-बूझि कऽ कएल विकृति अछि। जकरा बचाब कहल जाएबाक चाही, ओकरा अपराधक पूर्वयोजना घोषित कएल जाइत अछि।

### दृष्टिबिन्दु आ पाठकक अग्रिम ज्ञान

आख्यानक बाह्य कथावाचक पहिने हवेलीक षड्यन्त्र पाठककेँ देखबैत छथि, मुदा गौरी ओहि योजनासँ अनजान रहैत छथि। ई ज्ञानक असमानता कथात्मक विडम्बना उत्पन्न करैत अछि: पाठक आरोपक असत्यता जनैत अछि, मुदा ओकर सामाजिक प्रभाव रोकि नहि सकैत अछि। जेनेतक दृष्टिबिन्दु सम्बन्धी विश्लेषणमे ई शुद्ध सीमित कथन नहि; कथावाचक अनेक पात्रक कारण, आशा आ अभिप्रायकेँ उपलब्ध करबैत छथि। गौरीक अन्तिम भय पाठकक पहिनेसँ उपलब्ध ज्ञानकेँ नैतिक तात्कालिकता दैत अछि।

कथाक नाटकीय संरचना तीन स्थानमे बनैत अछि—हवेली, रोगीक शय्या आ सभा-भवन; अन्तमे चर्मकार टोलाक मातृत्व-दृश्य। एहि स्थानान्तरमे लेखक सत्ता-संस्था आ देखभालक श्रमक अन्तर तीव्र करैत छथि। गौरी जे समय विश्वनाथक सेवा करैत छथि,

पुरुष-पात्र हुनकर अर्थनिर्धारण करबाक अधिकार अपना हाथमे रखैत छथि। “डाइन” आरोप मूलतः कथन-अधिकार हथियाएबाक प्रयत्न बनि जाइत अछि।

## विमर्श, ज्ञानगत अन्याय आ जाति

मिशेल फू कोक विमर्श आ सत्ताक सम्बन्धक आलोकमे यशपति वैद्यकीय परिणामकेँ धार्मिक अपराधक भाषामे पुनर्लेखित करैत छथि। “शुद्धिकरण”, “जाँच” आ “अनिष्ट” सन शब्द सार्वजनिक अधिकारक मुद्रा ग्रहण करैत अछि। ई शब्द मात्र विश्वास नहि बदलैत; भूमि पर पुनर्विचारक वैधता रचबाक प्रयास करैत अछि। एहि अर्थमे आरोप स्त्रीक देह, जातिगत प्रतिष्ठा आ संपत्तिक एक संयुक्त नियन्त्रण-प्रक्रिया अछि।

मिरान्डा फ्रिकरक साक्ष्यगत अन्यायक अवधारणामे गौरीक प्रत्यक्ष उपचार-अनुभव मान्यता नहि पबैत अछि। कमला देवी आ अन्य मायसभ हुनकर काज देखलनि, मुदा कथाक सार्वजनिक मञ्चपर उक्ति करबाक अधिकार प्रतापसेन आ यशपतिक अछि। गौरीक ज्ञान पोथी वा पदाधिकारीक पदक माध्यमसँ स्वीकृत नहि; ओकर मान्यताक अभावकेँ ही आरोपक आधार बनाओल जाइत अछि। जाति आ लैंगिकता एहि असमानताक स्वतंत्र किन्तु परस्पर जुड़ल पक्ष अछि।

## भीड़, संवाद आ स्त्रीक भीतरी संसार

प्रतापसेन आरम्भमे गौरीक ज्ञान स्वीकार करैत छथि, मुदा जातिगत अहंकार हुनका अपन बेटाक उपचारसँ रोकैत अछि। एहि आत्मविरोधकेँ कथा सशक्त रूपसँ पकड़ै त अछि। कमला देवी मातृत्वक आवश्यकता आ पतिक आदेशक बीच निर्णय लैत छथि; अन्ततः पति-आज्ञाक विरुद्ध गौरीकेँ बजबैत छथि। स्त्रीसभक एहि पूर्व क्रियाशीलताक कारण अगिला अध्यायक प्रतिरोध अचानक उत्पन्न नहि होइत।

गौरी जे समय अपन बेटीकेँ दूध पियबैत छथि तखन आरोपक समाचार पहुँचैत अछि। मातृत्वक ई दृश्य अभिजनक षड्यन्त्रसँ तीव्र विरोध रचैत अछि: ककरो बच्चा बचेनिहार स्त्री अपन बच्चाकेँ स्तनपान करबैत अवस्था मे दण्डित घोषित होइत अछि। तथापि पात्रक नैतिक निर्दोषता केँ केवल मातृत्वसँ सिद्ध करब उचित नहि; गौरीक ज्ञान, श्रम आ भूमि-

अधिकार अपने-आप न्यायसंगत विचारक विषय अछि। कथा एहि व्यापक पक्षक संकेत करैत अछि, यद्यपि भावात्मक जोर मातृत्वपर बेसी अछि।

## शिल्पगत उपलब्धि आ सीमा

यशपतिक “प्रमाण बनाओल जाइत अछि” वाक्य आ उपचारक परिणामक उलटा प्रयोग अध्यायक दू प्रमुख पाठ-साक्ष्य अछि। पहिल अपराधक योजना प्रकट करैत अछि; दोसर दिखबैत अछि जे तथ्यक अर्थ बदलि सामाजिक भय उत्पन्न कएल जा सकैत अछि। मशालक भीड़ दिस आगाँ बढ़ब अध्याय अन्तमे असम्पूर्ण क्रियाक रूप लैत अछि, जाहिसँ अगिला अध्यायक तनाव बनि रहैत अछि।

सीमा ई अछि जे यशपति अपन स्वार्थ अत्यन्त स्पष्ट आ लगभग आत्मस्वीकारोक्तिक ढंगसँ बाजैत छथि; गूढ़ वैचारिक दुविधा अपेक्षाकृत कम रहि जाइत अछि। प्रतापसेनक अंतर्द्वन्द्व आ भीड़मे भयक बहुविध कारण अधिक विकसित भऽ सकैत छल। तथापि आरोपक भाषाक दुरुपयोग आ प्रत्यक्ष तथ्यक उलटा अर्थनिर्माण उपन्यासक “शंख आ रजत” प्रश्नकेँ सामाजिक जीवनमे अत्यन्त ठोस रूपसँ घुरबैत अछि।

## अध्याय –८७ — टोलाक द्वारपर

### साक्षीक सार्वजनिक जन्म

अध्याय –८८क मशालधारी भीड़ एहि अध्यायमे चर्मकार टोलाक देहरीपर आबि पहुँचैत अछि। कथा पहिने गौरीक एकान्त प्रार्थना रखैत अछि। बूढ़बा स्वीकार करैत छथि जे ओ मशाल बुताबि वा हाथ पकड़ि भीड़ रोकि नहि सकैत छथि; सत्यकेँ अनेक मुँह चाही। एहि कथनक तात्पर्य अछि जे निजी अलौकिक साक्षित्व पर्याप्त नहि, सार्वजनिक बोलनिहार समुदाय आवश्यक अछि। एहि पूर्वभूमिकाक कारण फु लेसरीक आगाँ आबब आकस्मिक उद्धार नहि, विचारक क्रमिक रूपान्तरण बनैत अछि।

फु लेसरीक पाछू स्त्रीसभ दीप आ बच्चासहित ठाढ़ होइत छथि। दीप हथियारक विरुद्ध रक्षात्मक उजास अछि; उपस्थित बच्चा चिकित्सा-ज्ञानक जीवित साक्षी अछि। ई दृश्य पुरान वाद-शालाक पुरुष-प्रधान तर्क -विन्याससँ अलग लोक-अदालत रचैत अछि। सभाक सत्य केवल पदवाला व्यक्तिक वचनसँ नहि, अनेक जीवन-अनुभवक मिलानसँ बनैत अछि।

### बहुस्वरता आ सामूहिक कथन

मिखाइल बाख्तिनक बहुस्वरता विचारमे वास्तविक कसौटी केवल कतेको आवाजक उपस्थिति नहि, हुनक अर्थनिर्माणक स्वतंत्रता सेहो अछि। एतय ब्राह्मण, कायस्थ, किसान आ चर्मकार पृष्ठभूमिक स्त्रीसभ अलग-अलग उपचार-अनुभव सुनबैत छथि। ओ सभ एकटा नैतिक सहमति दिस अबैत छथि, मुदा हुनकर विवरण समान नहि: जन्ममे संकट, साँप-दंश, वृद्धक देखभाल। ई भिन्नता निजी अनुभवकेँ सामूहिक प्रत्यक्षताक रूपमे जोड़ैत अछि।

कमला देवी अपन पतिक पुरुषाधिकारक घोषणा नकारि “ई पुरुषक विषय नहि, ई सत्यक विषय अछि” कहैत छथि। एहि प्रत्युत्तरमे न्यायिक मञ्चक सदस्यता बदलैत अछि। तथापि गौरीक रक्षा करबाक आधारमे ओकर रोग-निवारणक उपयोगिता प्रबल अछि। आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे जँ गौरी ककरो जीवन नहि बचौने रहितथि तँ की हुनकर जिंदा रहबाक अधिकार ओतबे अटूट मानल जाएत? कथा ई प्रश्न प्रत्यक्ष नहि उठबैत, मुदा ओकर नैतिक विस्तार एहि दिस आवश्यक अछि।

## लैंगिक सत्ता, साक्ष्य आ देहरीक राजनीति

स्त्रीवादी दृष्टिसँ देहरी महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। चर्मकार टोला आ बाहरी शक्तिक बीच ठाढ़ स्त्रीसभ हिंसाक दिशा रोकैत छथि। निजी घरेलू श्रम सार्वजनिक साक्ष्यमे बदलैत अछि: बच्चा जन्मबाबय, औषधि देब, घाओ देखब आ वृद्धक सेवा करब—ई सभ काज सार्वजनिक विश्वसनीयताक स्रोत बनैत अछि। निजी जीवन सार्वजनिक सत्यक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि।

कमला देवीक प्रतिरोध सामाजिक स्थानक उपयोग कऽ सम्भव होइत अछि; ठाकुरक पत्नी होएबाक कारण हुनकर आवाज भीड़ तत्काल सुनैत अछि। एहि अर्थमे कथा स्त्री-एकजुटताक संग स्त्रीसभक बीच स्थितिगत शक्ति-अन्तर सेहो दर्शबैत अछि। चर्मकार टोलाक स्त्रीसभ पहिने ठाढ़ छथि, मुदा निर्णायक सार्वजनिक वैधता कमला देवीक साक्ष्यसँ तीव्र बनैत अछि। ई विरोधाभास उपन्यासक वास्तविक सामाजिक सूक्ष्मता अछि, एकरा केवल सरल विजयमे समेटब नहि चाही।

## अलौकिक हस्तक्षेपक नैतिक जोखिम

यशपतिक मशाल बिनु हवा-पानि स्वयं बुताइ जाइत अछि। दृश्य प्रतीकात्मक रूपसँ सशक्त अछि—जे अग्नि हिंसाक साधन छल से निर्दोषक विरुद्ध काज करब छोड़ि दैत अछि। मुदा घटनाक ठीक पहिने स्त्रीसभ अपन प्रत्यक्ष गवाहीसँ भीड़क नैतिक आधार हिलाओलनि। जँ पाठक मशाल बुझबाक चमत्कारकेँ एकमात्र निर्णायक कारण मानि लेत तँ स्त्रीसभक कष्टसाध्य सार्वजनिक प्रतिरोध पाछाँ पड़ि जाएत। लेखकक ई द्वैध व्यवस्था आलोचनाक योग्य अछि।

बूढ़बाक कथित असमर्थता आ मशालक अलौकिक बुताएबक बीचो आन्तरिक तनाव अछि। −८९मे पानिक धार मोड़बाक क्षणिक शक्ति आ एतय अगिन रोकबाक क्षमता हुनकर सीमा कैँ विस्तार दैत अछि, मुदा कथा नियमानुसार तकर स्पष्ट व्याख्या नहि करैत। लोककथा-सुलभ अद्भुतता ओहि अभावकेँ सहन करैत अछि, कारण-सम्बन्धपर आधारित यथार्थवादी उपन्यासक कसौटीपर प्रश्न बचि रहैत अछि।

## अधूरल विजयक संरचना आ निष्कर्ष

अगिला दिन भूमि चर्मकार टोलाक नामपर फेर दर्ज होइत अछि; यशपति पदसँ हटैत छथि। मुदा यशपतिक अन्तिम मौन नव षड्यन्त्रक सम्भावना खोलैत अछि, प्रतापसेनक ग्लानि सेहो प्रतिशोधक संकेत दैत अछि। एक रात्रिक संकट समाधान पबैत अछि, मुदा सत्ता-सम्बन्ध समाप्त नहि होइत। एहि खुलल अन्तसँ पाठक अगिला चरण दिस बढ़ैत अछि।

अध्यायक उपलब्धि ई अछि जे वाचस्पतिक वाद-शालाक साक्ष्य-संकल्पना साधारण स्त्रीसभक समवेत अनुभवमे जनतान्त्रिक रूप पबैत अछि। सीमा ई अछि जे तुरन्त भूमि-पुनर्पञ्जीकरण आ चमत्कारी मशाल कथाक सामाजिक प्रक्रियाकेँ किछु सरल बनबैत अछि। तथापि फु लेसरी आ कमला देवीक स्पष्ट, परस्पर भिन्न नेतृत्व एहि अध्यायकेँ त्रयीक आरम्भिक भागक सबसँ सशक्त प्रतिरोध-दृश्यसभमे राखैत अछि।

## अध्याय –८६ — समयक गोहि

### वर्तमानक भीतर भविष्यक प्रवेश

यशपति दरभंगाक राजदरबार दिस गेल छथि, मुदा गौरी ओकरा वास्तविक पराजय नहि मानैत छथि। एहि राजनैतिक चिन्ताक बीच बूढ़बाक आकृति अस्थिर होइत अछि, जेना ओ एकहि समयमे अलग-अलग ठाम उपस्थित छथि। कथा आब गामक निरन्तर घटनाक्रमक भीतर तीन झलक रखैत अछि—समुद्रपारक श्रमिक-यात्रा, सुखल खेतक किसान आन्दोलन आ चन्ना गाछीक भूत-कबड्डी। एहि क्रममे गामक सीमित भूगोल विस्तृत इतिहास आ भविष्यक कल्पित दृश्यसँ जुड़ैत अछि।

झलकसभक बीच बूढ़बाक भ्रम पाठकक प्रश्न बनैत अछि: समय के एकटा सीधा बहैत नदी मात्र मानल जा सकैत अछि? कथा गामक स्वयं अतीतमे रहल बूढ़बाक सोझाँ हुनकेँ अगिला समयक गाछपर देखबैत अछि। ई आत्म-दर्शन केवल अद्भुत दृश्य नहि; कथनकर्ता, पात्र आ स्मृति-वाहकक समयगत अलगाव एक क्षण लेल एक-दोसरामे उलझि जाइत अछि।

### क्रमभंग, भविष्याभास आ कथनक स्तर

जेरार जेनेतक आख्यान-क्रमक अवधारणामे १८८५क जहाज, अगिला सामाजिक आन्दोलन आ दूर भविष्यक कबड्डीक दृश्य वर्तमान कथा-रेखासँ आगेक सूचना होयबाक कारण भविष्याभासक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। मुदा ई साधारण कथावाचकद्वारा देल पूर्वसूचना नहि। पात्र स्वयं ओहि भविष्यक झलक अनुभव करैत छथि; तेँ भविष्याभास कथा-जगतक घटनामे बदलि जाइत अछि। कथावाचक पाठककेँ “पछिला समय” बतबैत छथि, बूढ़बा स्वयं ओ समयक प्रत्यक्ष अनुभवक असम्भवता सँ काँपि उठैत छथि।

पॉल रिकरक आख्यान-समयक दृष्टिसँ पूर्व अनुभव, वर्तमान प्रश्न आ भावी अर्थ एक कथा-विन्यासमे परस्पर जुड़ैत अछि। सुखदेवक पुरान बटवारा-पत्र भविष्यक किसान आन्दोलनक धूरिमे फेर देखाएब वस्तुक यथार्थ पुनरागमन नहि, अन्यायक आकारक पुनरावृत्ति अछि—बूढ़बा गौरीकेँ ई भेद स्पष्ट करैत छथि। कथा रै खिक कालक्रम तोड़ैत अछि, मुदा समयक पुनरागमन नैतिक समानताक बिना पूरा नहि बुझाइत।

## स्थानान्तर, विस्थापन आ सामाजिक उत्तरजीवन

पहिल झलकमे बन्दरगाहपर आढ़तियाक मीठ वादा आ अपठनीय करारपर औंठा लगबैत युवक अछि। ई दृश्य श्रम, निरक्षरता आ विदेशी आशाक गठजोड़ देखबैत अछि। दोसरमे भूमिक अधिकार माँगनिहार भीड़ आ लाठीसहित पुलिस अछि; सुखदेवक पत्र सन कागज पएरतर कु चलाइत अछि। दुनू झलकमे कमजोर व्यक्तिक नाम आ अधिकार लिखित दस्तावेजक औपचारिक शक्तिसँ टकराइत अछि। एहि कारणेँ भविष्यक दृश्य प्राचीन गामक कथासँ विच्छिन्न नहि अछि।

दृश्यसभ अलग-अलग ऐतिहासिक परिस्थिति संकेत करैत अछि, मुदा उपन्यास ओहि माध्यमसँ कोनो बाह्य वृत्तचित्र प्रस्तुत नहि करैत अछि। “ई १८८५ अछि की?” बूढ़बाक भ्रमित प्रश्न अछि, शोधकर्ताक प्रमाणित काल-निर्धारण नहि। बाह्य ऐतिहासिक दावाक स्थानपर कथा-भीतरक काल-संकेत जकाँ एकरा पढ़ब अधिक यथोचित अछि। भविष्यक पीड़ा पहिनुक पीड़ासँ समान अछि, मुदा एके नहि; लेखक सेहो बुधुआक मुखसँ सुखदेवक पुरान पत्र आ नव पत्रक अन्तर कहलाबैत छथि।

## अद्भुत, स्वप्न आ स्वयं-दर्शन

चन्ना गाछीक कबड्डीमे बूढ़बा अपन भविष्य-आकृति देखैत छथि। संगमे आधा-मुँह, चारि मुख, भीजल के श आ हाथविहीन स्त्रीक बिम्ब उपस्थित अछि। ई भूत-खेल लोकविश्वासक प्रतीक मात्र नहि, पाठककेँ भविष्यक खण्ड-१क कथा-मञ्चक पूर्वझलक सेहो दैत अछि। कथाक एक खण्ड अपना पाठककेँ दोसर खण्डक सम्भावित दृश्य पढबाक चाबी दैत अछि।

अलौकिकता एहि अध्यायमे चमत्कारक निश्चित नियम नहि बनैत अछि; बूढ़बा स्वयं अस्थिर आ भयभीत छथि। ई अस्थिरता पाठकीय अनुभवकेँ घन करैत अछि। मुदा अन्ततः बूढ़बा समयकेँ गोहि कहि एकटा लगभग पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करैत छथि। जे प्रश्न कथा आरम्भमे अनिर्णीत छल, ओ रूपकक घोषणामे पर्याप्त शीघ्र सिमटि जाइत अछि। अनिश्चितताक साहित्यिक शक्ति बढ़ेबाक लेल भविष्य-दर्शनक अलग पात्रगत व्याख्या सेहो सम्भव छल।

## स्मृति, पुनरावृत्ति आ कथन-नैतिकता

बूढ़बा गौरीकेँ आश्वासन नहि दैत छथि जे एके गौरी भविष्यक सभ आपदामे फेर जन्म लेतीह। ओ केवल एकटा एहन आँखि देखबाक बात कहैत छथि जे गौरी सन दृढ़ आ भयभीत अछि। एहि वाक्यक महत्त्व अछि: कथा नैतिक उत्तराधिकारकेँ जैविक एकरूपता नहि बनबैत, बल्कि समान प्रतिरोधक विभिन्न व्यक्ति मे पुनरावृत्ति मानैत अछि। नाम बाँचबक अर्थ एक मनुष्यक देह स्थायी बनब नहि, ओकर अनुभव सँ दोसराक सामाजिक जागरूकता उगब अछि।

लोकगीतमे “समय सेहो एकटा गोहि”क पुनरुक्ति घटनाक विवरणकेँ सार्वजनिक स्मरणक सूत्र बनबैत अछि। नदी, गोहि आ नाम—तीन शब्द पहिने अलग-अलग वस्तु रहल, आब इतिहासक एक दर्शन रचैत अछि। मुदा विस्तृत उपन्यासमे लोकगीतक एहन निष्कर्ष बेर-बेर अर्थक संभावना बन्द सेहो कऽ सकैत अछि: पाठककेँ रूपक बुझबाक अवसर कम बचैत अछि। एहि अध्यायक मूल्यांकन तेँ द्विपक्षीय होयत—समय-विन्यासक व्यापक आविष्कार तथा कखनो-कखनो अधिक स्पष्ट अर्थ-घोषणा।

## पूर्वकथाक नव चरण आ मूल्याङ्कन

अध्याय –९० मे स्मृति देहक बाद जीवित रहल; –८९ मे साक्षी स्थानीय आपदामे परखल गेल; –८८–८७ मे सत्यक सार्वजनिक गवाही संस्थागत आरोपक विरोधी बनल। –८६ एहि अनुभवकेँ अनेक कालखंडमे विस्तारित करैत अछि। नदी आब भूगोलिक वस्तु सँ बेसी इतिहासक रूपक अछि। एहि परिवर्तनसँ उपन्यासक त्रयी-रचनाक दीर्घ परिप्रेक्ष्य पहिल बेर एक पात्रक प्रत्यक्ष अनुभवमे प्रवेश करैत अछि।

शिल्पगत बल तीन झलकक भिन्न सामाजिक परिस्थितिक बावजूद साझा नाम-न्यायक सूत्र बनायब अछि। सीमा समयक गोहि रूपकक दीर्घ आत्मव्याख्या आ भविष्यक दृश्यसभक अत्यधिक स्पष्ट सङ् के तमे अछि, जकर कारण आगाँक अध्यायक रहस्य किछु घटि सकैत अछि। तथापि बूढ़बाक “हम एक संग दुइ ठाम कोना छी?” प्रश्न कथा-भाषाकेँ समयक साधारण क्रमसँ बाहर काढ़बाक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक क्षण अछि। अन्तराध्यायिक तुलनात्मक आलोचना भ्रमसँ प्रमाण, प्रमाणसँ न्याय

–१००मे शंख-चानीक भूल ज्ञानक स्वरूपक प्रश्न उठबैत अछि। –९९मे ज्ञाताक निरन्तरता आ मुक्तिक सम्भावना तक वाद बढ़ैत अछि। –९८मे ई दार्शनिक पद्धति गामक चाक, देवाल, नामकरण आ पाण्डुलिपिक लोकमंचमे प्रवेश करैत अछि। –९७मे परिभाषा, समय, स्थान आ व्याप्तिक क्रमिक परिष्कार देखाइत अछि। –९६मे अखेर ई प्रश्न एकटा मृत स्त्रीक नाम आ मृत्युकारणक उत्तरदायित्व पर लागू होइत अछि। एहि पाँच अध्यायक गति अमूर्त ज्ञानसँ सार्वजनिक न्याय दिस अछि; ई विषयक क्रम पात्रक केवल बाहरी यात्रा नहि, सत्य बतयबाक अधिकारक सीमा बदलैत अछि।

समान प्रश्नक पुनरागमन एके उत्तर दोहराएब नहि। –१००क भ्रमक उदाहरण –९७मे प्रामाण्यक परिभाषा बनैत अछि, आ –९६मे ‘आत्महत्या’क असिद्ध निश्चितता ओकर सामाजिक समानान्तर रचैत अछि। मुदा ई तीनू प्रसंग भिन्न: प्रत्यक्षक भ्रम, दार्शनिक परिभाषाक परीक्षा आ मृत्युकारणक विवाद। तुलनात्मक आलोचनामे एहि भेदसँ कथा बेसी स्पष्ट होइत अछि।

## दृष्टिबिन्दुक परिवर्तन आ मौनक शक्ति

पहिल चारि अध्यायमे सूत्रधार शास्त्रीय वाद या लोकमंचक प्रवेश-द्वार खोलैत छथि। पात्र अपन तर्क स्वयं प्रस्तुत करैत छथि, मुदा कथाक अन्तिम अधिकार प्रायः विद्वान-आचार्यक स्वरमे केन्द्रित अछि। पाँचम अध्यायमे ज्ञानक केन्द्र हुलासा छथि, जे स्वयं बजबाक स्थितिमे नहि छथि। एतय ज्ञानक उपलब्धता घटल अछि, मुदा साहित्यिक नैतिकताक घनत्व बढ़ल अछि। कथनक ई परिवर्तन पाठककेँ ‘जानब’ आ ‘बिना जाने निर्णय देब’क फर्क बुझबैत अछि।

–९९क जल-घड़ी आ –९६क इनार दुनू पानि-संबन्धी वस्तु अछि, मुदा पहिलमे पानि समयक नियामक अछि, दोसरमे पानि अनिश्चित मृत्युस्थल। बारह सय बरखक बूढ़बा-रूपक –१००मे पूर्वस्मृतिरूपेँ आबैत अछि, –९६मे बुधुआक साक्षी-व्रत ओहि दीर्घताक सम्भावित नैतिक आधार देखबैत अछि। ई रूपकीय सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि; ओकरा पात्रक भौतिक अमरत्वक प्रमाण नहि मानल जाए।

## रंगमंच, बहुस्वरता आ ज्ञानक सामाजिक अधिकार

–१००, –९९ आ –९७क विद्वत्-वादमे सामाजिक भूमिका सीमित अछि, जखन कि –९८क कुम्हारिन, बूढ़ काका आ लेखनी दीदी ज्ञानक उत्पादनकेँ व्यावहारिक श्रम आ लोकक स्मृतिसँ जोड़ैत छथि। –९६ एही प्रश्नकेँ उलटि दैत अछि: जँ स्त्री लिखैत छथि, तँ हुनकर नाम शास्त्रपर किएक नहि? –९८मे स्त्रीक श्रम तर्कक साधन बनैत अछि, –९६मे स्त्रीक लेखकीय स्वत्व न्याय-विवादक केन्द्र अछि। ई परिवर्तन स्त्रीवादी आलोचनाक दृष्टिसँ पाँचू अध्यायक सर्वाधिक स्पष्ट अन्तरसम्बन्ध अछि।

सभ पात्रक बोलबाक अवसर एक नहि। आचार्य तर्कक मानक तय करैत छथि; कुम्हारिन काजक अनुभव दैत छथि; क्षणभद्र प्रतिपक्ष रखैत छथि; हुलासा अनुपस्थित रहि कऽ सभसँ कठिन प्रश्न उठबैत छथि। बाख्तिनक संवादधर्मिता आ ज्ञानगत अन्यायक अध्ययन एक संग रखला पर देखाइत अछि जे बहुस्वरता आवाजक गिनती नहि, सुनबाक अधिकार आ उत्तर देबाक सम्भावनाक वितरण अछि।

## दोसर पाँच अध्यायक ज्ञान-नैतिक विस्तार

–९५मे जीवन्तीक प्राण आ पोथीक बीचक असमान मूल्य, –९४मे सोहनक भूख आ शास्त्रार्थक विलम्ब, –९३मे वृद्ध आक्षेपकक आत्मप्रश्न, –९२मे सुखदेवक भूमि-न्यायक प्रतीक्षा आ –९१मे मालतीक श्रम-जनित विचार—ई पाँच प्रसंग प्रमाण, समय आ अधिकारकेँ नई सामाजिक परिस्थिति मे परखैत अछि। पहिल पाँच अध्यायक अमूर्त तर्कक बाद ज्ञानक परीक्षाक मूल्य स्पष्टत: देह, स्मृति आ संसाधन बनैत अछि।

–९९मे समताक प्रतीक रहल जल-घड़ी –९२मे सामाजिक समय-अन्यायक उपकरण बनैत अछि। –९६क हुलासा आ –९५क जीवन्ती ज्ञानक संस्थामे स्त्रीक नाम दबबाक समस्या खोलैत छथि; –९१क रत्ना आ मालती संस्थाक बाहर रहल श्रमक ज्ञानकेँ उजागर करैत छथि। एहि अनुक्रममे बाख्तिनक बहुवक्ता-विचार पर्याप्त नहि: ककर आवाज सामाजिक मान्यता पबैत अछि आ ककर देह असमान व्यवस्था सहैत अछि, सेहो देखब आवश्यक अछि।

सोहनक मौन, सुखदेवक अधूरल वाणी आ आक्षेपकक अन्तिम प्रश्न—तीनू भिन्न अनुभव अछि। इनकर तुलना कथा-समय, अभिलेख आ सामाजिक न्याय पर नवीन दृष्टि दैत अछि।

## समग्र साहित्यिक निष्कर्ष

–१०० सँ –९१ धरि उपन्यास अपन विशिष्ट निर्माण-पद्धति उद्घाटित करैत अछि: भारतीय शास्त्रीय प्रश्न, लोकगीत, मंचीय वाद, गामक श्रम, सामाजिक प्रतिष्ठा आ अभिलेखीय स्मृति अलग विधा रहि कऽ सेहो परस्पर अर्थ दैत अछि। एकर आलोचनात्मक पाठ लेल पाश्चात्य आख्यानशास्त्र उपयुक्त अछि, कारण ई प्रश्न केवल ‘की कहल गेल’क नहि, ‘के कहैत अछि, ककरा, कोन स्तरपर, कतबा जानकारीसँ आ कतबा अधिकारसँ’क सेहो अछि।

आरम्भक दार्शनिक अध्यायसभक सीमा लम्ब व्याख्यान आ आचार्यक निर्णायक अधिकारसँ जुड़ल अछि। पछिला अध्यायसभमे स्त्रीक श्रम, कृ षकक देह आ जातिक प्रश्न अधिक ठोस बनैत अछि। तथापि हुलासाक अधूरल वाक्य आ वाचस्पतिक ओकरा नहि पूरा करबाक निर्णय आरम्भक दार्शनिक पद्धतिक सर्वाधिक प्रभावशाली सामाजिक परीक्षा बनैत अछि। एहि कारण पाँचम अध्याय केवल एक नव घटना नहि, पहिल चारि अध्यायक पुनर्पाठ करबाक कारण अछि।

आगाँक अध्यायसभक अध्ययनमे एहि प्रारम्भिक सूत सभक निरन्तरता जाँचब जरूरी होयत—सत्य बनाम प्रस्तुति, नाम बनाम देह, ज्ञान बनाम अधिकार, पानि बनाम स्मृति, आ साक्ष्य बनाम प्रतिष्ठा। मुदा आगाँक घटनाक आधार एहि पहिल दस अध्यायक भीतर कल्पित नहि कएल गेल अछि; ई प्रस्तावित तुलनात्मक प्रश्न अछि, पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष नहि। नव पाँच अध्यायक अन्तराध्यायिक तुलना: –९० सँ –८६ साक्षीक शक्ति आ ओकर सीमा

–९० मे बुधुआ अपन स्मृतिक अभिलेख रहबाक जोखिम सँ देह छोड़ैत छथि। –८९ मे ओ गामक रक्षा करय चाहैत छथि, मुदा सात जीवन नहि बचा सकैत। –८७ मे ओ गौरीकेँ स्पष्ट कहैत छथि जे सत्यकेँ अनेक मुँह चाही। एहि क्रममे साक्षीभाव निजी संकल्प सँ सामूहिक वचन दिस बढ़ैत अछि। –८६ मे बूढ़बा भविष्य देखैत छथि, मुदा घटनाकेँ बदलि सकबाक आश्वासन नहि दैत छथि। “जानब” आ “बचाएब”क दूरी पाँचू अध्यायक नैतिक द्वन्द्व अछि।

–९०क स्मृति-संकट आ –८९क अभिलेखमे मृतकक नाम नहि चढ़ब एक-दोसरा सँ जुड़ैत अछि। सामाजिक संरचना जँ नाम सुरक्षित नहि राखय तँ बूढ़बाक अनन्त स्मरण सेहो अपर्याप्त भऽ सकैत अछि। –८७क समवेत गवाही एहि अभावक प्रत्यक्ष सामाजिक उत्तर अछि, भलेँ ओकर विजय अस्थायी हो।

## शंख, पानि, मशाल आ देहरी

–९०क शंख-डोरी परम्परागत दार्शनिक प्रमाणक वस्तु रहि कऽ विस्मृत जीवनसभक साक्ष्य बनैत अछि। –८९क पानि प्राकृतिक शक्ति आ सामाजिक अन्यायक मिश्रित संकट अछि। –८८मे उपचार आ चिकित्सकीय ज्ञानकेँ आरोपक माध्यम बनाओल जाइत अछि, –८७मे मशाल दमनक वस्तु बनि उलटा बुताइ जाइत अछि। –८६मे पानि आ गोहि समयक व्यापक उपमामे बदलैत अछि। एहि बिम्ब-परिवर्तनसँ दीर्घ कथा-विन्यासक अन्तरिक सम्बन्ध स्थापित होइत अछि।

देहरी सेहो काज बदलैत अछि। –८९मे बूढ़बा के वाड़ी छू बि नहि सकैत छथि; –८७मे स्त्रीसभ स्वयं टोलाक देहरीपर ठाढ़ भऽ अधिकारक सीमा निर्धारित करैत छथि। भूतक असमर्थ हाथक स्थान जीवित स्त्रीसभक दृढ़ उपस्थिति लैत अछि। एहि बिम्बीय समानान्तरमे कथा अपन सर्वाधिक सुसंगत नैतिक विन्यास रचैत अछि।

## कथन-दृष्टि, समय आ सार्वजनिक ज्ञान

–९०क कथा दीर्घ वर्षक संक्षेपसँ एक रात्रिक मन्द दृश्य दिस जाइत अछि। –८९ एक रातिक भय विस्तृत घटनाक्रममे बदलैत अछि। –८८क हवेली आ गौरीक बीच पाठकक अग्रिम ज्ञान नाटकीय विडम्बना उत्पन्न करैत अछि। –८७क सामूहिक गवाही एकल कथन-अधिकार बदलैत अछि, जखन कि –८६मे भविष्य-दर्शन सम्पूर्ण क्रम भंग करैत अछि। एहि क्रममे आख्यानक पद्धति पात्रक निजी स्मृतिसँ समुदाय आ कालखण्डक व्यापक संरचना दिस बढ़ैत अछि।

आख्यानशास्त्रक पदसभ केवल वर्गीकरण लेल नहि। –८८मे दृष्टिबिन्दुक असमानता आरोपक छल पाठककेँ पहिनहि बुझबैत अछि; –८७मे वक्ताक बहुलता सार्वजनिक सत्यक

निर्माण देखबैत अछि; –८६मे भविष्याभास ऐतिहासिक अन्यायक पुनरावृत्ति देखबैत अछि। तकनीक आ नैतिक विचार एक-दोसरापर काज करैत अछि।

## आलोचनात्मक आरक्षण

पाँचू अध्यायमे लोकगीत आ नैतिक सूत्र दृश्यक अन्तमे घटनाक अभिप्राय स्पष्ट करैत अछि। ई लोक-आख्यानक स्मरणीयता बढ़बैत अछि, मुदा किछु बेर अर्थनिर्धारणक पर्याप्त स्वतन्त्रता नहि छोड़ैत। बूढ़बाक अलौकिक शक्तिक सीमा –८९ आ –८७ मे अलग-अलग अछि, जकर अन्तरिक नियम अधिक स्पष्ट भऽ सकैत छल।

–८८क यशपति एकटा सरल स्वार्थी खलपात्र सन बाजैत छथि, आ –८७मे चमत्कारी मशाल लोकक प्रतिरोध पर हावी होबाक जोखिम रखैत अछि। शिल्पगत एहि सीमासभक बावजूद पाँचू अध्यायक सामूहिक उपलब्धि—नाम, साक्षी, असमान सुरक्षा आ जन-अधिकारक बीछल सम्बन्ध—उपन्यासकेँ सामाजिक आख्यान आ दार्शनिक समय-कथाक संगमपर राखैत अछि।

## पन्द्रह अध्यायक अद्यतन मूल्याङ्कन

प्रारम्भक दस अध्यायमे ज्ञान-प्रमाणक दार्शनिक प्रश्न क्रमशः स्त्रीक अधूरल वाणी, कृषकक मरण आ जातिगत ज्ञान-अधिकार धरि पहुँचल छल। नव पाँच अध्याय ओहि प्रश्नकेँ देह-परिवर्तन, बाढ़ि, भूमि-दमन, लोक-गवाही आ कालक्रम-भंगक कथामे विस्तारित करैत अछि। एहि विस्तारमे “साक्षी” पात्रक विशेष गुण मात्र नहि, सामाजिक संस्थाक अपूर्ण कार्य बनि जाइत अछि।

सम्पूर्ण पन्द्रह अध्यायक कथा-शिल्प एखन धरि एकटा भिन्नरूपीय गद्य-विन्यास रचैत अछि—शास्त्रार्थ, लोकगीत, मृत्यु-कथा, बाढ़ि-आख्यान, आरोप-नाटक आ भविष्य-दर्शन एक दोसरासँ प्रश्नोत्तर करैत अछि। कथनकर्ता कखनो अर्थ अधिक स्पष्ट करैत छथि; अलौकिक घटनाक नियम सेहो सर्वदा समान नहि। तथापि पाठककेँ लगातार ई परखबाक अवसर भेटैत अछि जे नाम बचायबक दावाक पाछाँ वास्तविक मनुष्यक अनुभव सुरक्षित अछि कि केवल रूपक। एहिए विरोध सँ उपन्यासक आलोचनात्मक ऊर्जा पैदा होइत अछि।

## अध्याय –८५ — आमिलक आदेश

### राजकीय आदेश आ घटनाक कारण-शृंखला

राजदरबारसँ घुरल यशपति आमिल जयसिंह, दस सिपाही आ वृक्ष-उन्मूलनक राजकीय घोषणाक संग गाममे प्रवेश करैत छथि। ई अध्याय –८८क गौरी-विरोधी आरोप आ –८७क स्त्री-प्रतिरोधक सीधा राजनीतिक विस्तार अछि। जकरा पहिने अंधविश्वासक नामपर सामाजिक बहिष्कारक लक्ष्य बनाओल गेल छल, आब ओहि पीपर आ ओकर भूमि राज्यक निरीक्षणक विषय बनैत अछि। प्रस्तावित अन्न-भंडार एकटा महत्त्वपूर्ण वस्तुगत विवरण अछि: स्मृतिक सामुदायिक स्थलकेँ प्रशासनिक उपयोगिताक भाषामे बदलबाक प्रयत्न एतय भूमिक नियन्त्रणसँ अलग नहि अछि।

घटनाक क्रम घोषणापत्र, गौरीक प्रत्युत्तर, कुल्हाड़ीक पहिल चोट, बूढ़बाक प्रत्यक्ष हस्तक्षेप, आमिलक निर्णय आ यशपतिक जंगल-दिस पलायनमे बँटल अछि। एकटा सार्वजनिक परीक्षणक तैयारी पाठकक अपेक्षा निर्माण करैत अछि; मुदा मूल संकट गाछमे अलौकिक शक्ति अछि कि नहि, एतबे नहि, परीक्षणक नियम के निर्धारित करैत अछि, से अछि। फु लेसरीक प्रश्न — हारलहुँ तँ गाछ कटत, जीतलहुँ तँ प्रमाणक भार हमरहि ऊपर — एहि असमान परीक्षण-व्यवस्थाक सर्वाधिक तीक्ष्ण व्याख्या अछि।

### कथन-दृष्टि, संवाद आ कथास्तर

आख्यान मुख्यतः बाह्य घटनाक विस्तृत वर्णन करैत अछि, मुदा गौरीक मातृत्व, सावित्रीक असाधारण सुनब आ जयसिंहक नव अनिश्चितता अलग-अलग पात्रक अनुभवक दुआरे खुलैत अछि। जेनेतक शब्दावलीमे एकरा परिवर्तित आन्तरिक दृष्टिस्थान (variable internal focalization) दिस झुकल कथन कहल जा सकैत अछि। जयसिंह प्रारम्भमे यशपतिक वाणी द्वारा परिस्थिति बुझैत छथि; बूढ़बाक उपस्थिति आ भूमि हड़पबाक उद्देश्य बुझलाक बाद हुनक दृष्टि बदलैत अछि। ई परिवर्तन कथामे नैतिक निर्णयक संरचना सेहो बदलैत अछि।

बूढ़बा अपन परिचय देवता वा दानवक रूपमे नहि, “साक्षी” रूपमे दैत छथि। ओ हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती आ सुभागीक नाम लैत राज्यक अभिलेखक चयनात्मक मौनपर प्रश्न उठबैत छथि। सूची अभिलेखीय प्रतिवचन अछि; एतय मृतकसभ कथावाचकक भीतरी स्मृतिमात्र नहि, सार्वजनिक सुनबक योग्य ऐतिहासिक उपस्थिति बनैत छथि। एतय डाक्यूमेण्ट आ मौखिक नामोच्चारण दू समान स्तरक सत्य-उत्पादन नहि: राजादेश विधिक बल राखैत अछि, मुदा लोक-वचन सामूहिक प्रत्युत्तरक नैतिक बल।

## आधुनिक आलोचनात्मक परीक्षण

मिशेल फू कोक सत्ता-ज्ञान सम्बन्धक दृष्टिसँ “विज्ञान आ राज्यक शक्ति” यशपतिक वाक्यमे स्वार्थक औचित्य सिद्ध करबाक भाषा बनैत अछि। मुदा उपन्यास सम्पूर्ण वैज्ञानिक जिज्ञासाकेँ दोषी नहि ठहरबैत: जयसिंहक जिज्ञासा छलसँ करुणापूर्ण सावधानतामे बदलैत अछि। विरोध विज्ञान बनाम परम्परा नहि, सत्ताक असमान प्रमाण-प्रक्रिया बनाम समान सुनवाई अछि। मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक विचार एहि ठाम उपयोगी अछि, जतय गौरीक अनुभवकेँ सामाजिक स्थितिक कारण कम विश्वसनीय बुझल जाइत अछि।

अद्भुत रसक निर्णायक दृश्य — कुल्हाड़ी पड़िते अनेक कण्ठक समवेत “रुकू ”, धुआँ आ इजोतक काँपैत आकृति — त्स्वेतान तोदोरोवक अद्भुत-विचारक संग रखल जा सकैत अछि, मुदा एहि पाठमे पाठककेँ दीर्घकालीन संशयमे नहि राखल गेल अछि। वृक्षक साक्षी स्वीकृत आख्यान-जगतक नियम अछि। अत: एकर प्रभाव साधारण भय-कथासँ बेसी सामूहिक स्मृतिक मूर्त रूप देबामे अछि।

## शिल्पगत सीमा आ अन्तराध्यायिक सम्बन्ध

आमिलक निर्णय बहुत जल्दी बदलैत अछि: राजकीय आदेशक संरचनागत बल एकटा अलौकिक प्रकटताक बाद लगभग तत्काल रोकल जाइत अछि। एहि कारण कानूनी संघर्षक कठिन, दीर्घ सामाजिक प्रक्रिया छोट भऽ जाएबाक खतरा अछि। यशपतिक पलायन आ बूढ़बाक भविष्य-दृष्टिक रुकावट, तथापि, अध्यायक सहज विजयकेँ अस्थिर बना दैत अछि; ओहि अनुत्तरित अन्धकारपर अगिला अध्याय –८४ टिकैत अछि। फकरामे “साहेबक आदेश

कागचपर” आ “गामक न्याय पातपर”क समानान्तर संरचना लिखित सत्ता आ जैविक स्मृतिक विरोधकेँ स्मरणीय बनबैत अछि।

## अध्याय −८४ — जंगलक मौन

### अनिश्चित लोपक जाँच आ साक्ष्यक स्तर

यशपतिक पलायनक तेसर दिन मुखिया, युवक आ दू सिपाही जंगलमे प्रवेश करैत छथि। फाटल रे शमी वस्त्र, अस्पष्ट पड़ैत पएरक चिह्न, कीचड़मे धँसल जूता आ असामान्य गोहिक निशान — ई सभ वस्तु-साक्ष्य प्रस्तुत कएल गेल अछि; मुदा पाठ कोनो दृश्य शिनाख्त वा मृत्यु-दर्शन नहि दैत अछि। खोज-दलक रिपोर्टमे यशपति “सम्भवत:” गोहिक शिकार भेलाह। कथावाचक प्रमाण आ निष्कर्षक दूरी राखैत अछि। वास्तविक घटनाक अभावकेँ समूह अपन अनुमानसँ भरैत अछि; कथा ओहि प्रक्रियाकेँ आलोचनाक विषय बनबैत अछि।

ई अध्याय पहिनुक सार्वजनीन चमत्कारक बाद तुरन्त एकटा नकारात्मक जाँच स्थापित करैत अछि। −८५मे बूढ़बा लोकसभक सोझाँ प्रकट भेलाह; −८४मे हुनक समय-पार दृष्टि जंगलक एक भागमे पहुँचि रुकि जाइत अछि। एहन क्रम कथाक अलौकिक साक्षीकेँ सर्वज्ञता सँ अलग करैत अछि। यशपतिक नियति अनिश्चित रहितो ओकर कर्मक नैतिक प्रश्न खुलल रहैत अछि।

### आख्यान-रिक्ति आ दृष्टिबिन्दुक राजनीति

जेनेतक कथन-सूचना सम्बन्धी अवधारणामे ई सीमित ज्ञानक जानि-बुझि रचल व्यवस्था अछि। अन्तिम अनुच्छे दमे नदीक ओ पार कोनो अज्ञात वस्तुक आँखि खुजब पाठककेँ पात्रसभसँ एक कदम बेसी जनबैत अछि, मुदा ओहि वस्तुक पहिचान नहि बतबैत। पाठकक स्थिति एहि कारण दोहर असमंजसमे पड़ैत अछि: बूढ़बा नहि देखैत छथि, गौरी नहि जनैत अछि, आ कथावाचक संकेत देइतहुँ पहिचान स्थगित करैत अछि। ई नियंत्रित सूचना-वितरण आगाँक रहस्य हेतु कथात्मक प्रतिज्ञा थिक, समाधान नहि।

जंगलक सीमा स्थलमात्र नहि, ज्ञानक सीमा अछि। गामक नामित आ स्मरणीय क्षेत्रसँ अलग अनाम नदी आ अथाह कारी पानि एहन भौगोलिक क्षेत्र निर्मित करैत अछि जतय सामाजिक अभिलेखक पकड़ कम होइत अछि। मौनक लोकगीत जँ “जंगल गवाह” कहैत

अछि, तँ उपन्यास साक्षी बनबाक अर्थ बदलि दैत अछि: गवाही आब केवल स्पष्ट उच्चारण नहि, अनुपस्थित कड़ी पढ़बाक धैर्य सेहो अछि।

## नैतिक स्मृति आ चयनक प्रश्न

गामक किछु स्त्रीसभ यशपतिक पुरान सामाजिक रूपकेँ मोन पाड़ि रोइत छथि। गौरीक भीतर दुःख, राहत आ शून्यता एकसंग उपस्थित अछि। एतय खलनायक एकरेखीय पहचानसँ बाहर अबैत अछि। बूढ़बाक स्वीकार जे हुनका यशपतिक हेतु प्रेम नहि, केवल दुःख अछि, साक्षी-पद्धतिक अपन सीमा उद्घाटित करैत अछि। यदि स्मृति-रक्षा केवल प्रेमपर निर्भर हो, तँ अत्याचारीक नाम नैतिक हिसाबसँ हेराएबाक जोखिममे पड़त।

गौरीक प्रश्न — नाम के बचबैत अछि आ के बिसारल जाइत अछि — सटीक आलोचनात्मक प्रश्न अछि। स्मृति-विचारक हाल्बवाक्सक सामूहिक स्मृति अवधारणा संग एहि दृश्यक तुलना कएल जाए तँ स्पष्ट होइत अछि जे स्मरण सदिखन समूहक भावनात्मक चयनसँ प्रभावित अछि। मुदा न्यायिक स्मरण लेल अप्रिय नामो सुरक्षित रहबाक चाही। अध्याय स्वयं अपन साक्षी-नीतिक अन्तर्निहित विरोधकेँ उजागर करैत अछि।

## उपलब्धि आ आरक्षण

रहस्यक विलम्बित समाधान, वस्तुगत निशानक क्रम, गौरीक अन्तर्द्वन्द्व आ बूढ़बाक अज्ञान एकसंग रहनाइ शिल्पगत उपलब्धि अछि। मुदा नदीक कारी अन्हार आ अपरिमित गोहिक निशान भयक स्थापित संकेतसभपर निर्भर करैत अछि; ओहि प्रतीकक आगूक रूपान्तरण आवश्यक होयत। −८३ मे सोनमा माझिनक प्रवेश एहि रिक्तिक मात्र समाधान नहि, मूल गोहिक अर्थकेँ बदलबाक वैचारिक अवसर दैत अछि।

## अध्याय -८३ — सोनमा माझिन

### लोकस्मृति, पर्यावरण आ नव वाचिका

यशपतिक अन्तर्धानक एक मास बाद पशुधनक लोप शुरू होइत अछि। बूढ़बाक साक्षी-दृष्टि जंगलमे रुकैत अछि; ओ गौरीकेँ सोनमा माझिन लग पठबैत छथि। नदीक कातक जीर्ण झोपड़ी, अन्हार आँखिवाली वृद्ध स्त्री आ साँससँ पीपरक गन्ध चिन्हबाक क्षमता एकटा नब ज्ञान-संरचनाक घोषणा करैत अछि। पूर्व अध्यायमे राज्यक घोषणा आ न्यायिक साक्ष्य प्रमुख छल; एतय नदी पर आश्रित जीविकाक स्मृति स्वकीय भाषा प्राप्त करैत अछि।

सोनमा अपन पुरखाक ओहि नदीक पहिनुक नाम, भेंट-प्रथा आ “मूल गोहि”क कथा सुनबैत छथि। हुनक कथनमे मूल गोहि सामान्य हिंसक पशु मात्र नहि, बिसरबाक भूखक मूर्त रूप अछि। नाम बचाएब आ नामक विलयक बीच सरल नैतिक विरोध समाप्त भऽ जाइत अछि। फूल, फल आ दूधक भेंट हिंसा नहि, समयसँ धैर्य माँगबाक व्यवहार बनैत अछि।

### कथाभीतर कथा आ बहुस्वरता

गौरीक यात्रा मुख्य कथानक अछि; सोनमाक पुरखा-वृत्तान्त ओकर भीतर अवस्थित द्वितीय कथास्तर। जेनेतक कथास्तरक भेदमे सोनमाक कथन पूर्वकालीन संसारक एकटा अन्तःकथा बनबैत अछि। कहानीक आधिकारिक स्वर बूढ़बासँ सोनमा लग अस्थायी रूपसँ स्थानान्तरित होइत अछि। एतय एकटा अनुभवी वृद्धा केवल सूचना-देनिहार पात्र नहि, मूल गोहिक अर्थ निश्चित करबाक अधिकार रखैत छथि।

बाख्तिनक बहुस्वरताक दृष्टिसँ बूढ़बाक पूर्ण-स्मरणक प्रतिज्ञा आ सोनमाक सीमित, धैर्यशील स्मृतिवाद एक-दोसरासँ वाद करैत अछि। सोनमा बूढ़बाक श्रद्धा खण्डित नहि करैत छथि; ओ ओकर एकाधिकारकेँ परिमित करैत छथि। “साक्षी बनब आ भुलाइकेँ नकारब” दू अलग काज कहि ओ कथाक केन्द्रमे एकटा बाहरी आवाज नहि, वैचारिक प्रतिपक्ष स्थापित करैत छथि। मुदा हुनक आख्यान अन्ततः बूढ़बा द्वारा तुरन्त स्वीकार कएल जाइत अछि; असहमतिक दीर्घ नाटकीयता किछु कम भऽ जाइत अछि।

## जाति, ज्ञान-अधिकार आ बिसरबाक राजनीति

पुरखाक जातीय वर्गीकरणसँ बाहर रहबाक दावा सामाजिक पहचानक हिंस्र अभिलेख-प्रणालीपर प्रश्न अछि। सोनमाक कथानुसार नव आबि बसल धार्मिक समूह हुनकर पुरखाक विधिकेँ कु प्रथा मानि रोकि देलक। ई उपन्यासक भीतर अभिव्यक्त ऐतिहासिक स्मृति अछि; एकरा बाहरी इतिहासक सिद्ध तथ्य मानि लेब अनुचित होयत। उत्तरऔपनिवेशिक ज्ञानचर्चा एतय केवल औपनिवेशिक शासनक सम्बन्धमे नहि, ज्ञानक पुरातन आन्तरिक पदानुक्रम बुझबाक साधन अछि।

पर्यावरणीय आलोचनाक दृष्टिसँ नदी आर निरपेक्ष पृष्ठभूमि नहि: जल-जीव, जीविका, भय, पूजा, क्षय आ पुनरुत्पादनक सम्बन्ध-जाल अछि। सोनमा मनुष्यक स्मृतिसँ बाहर प्रकृतिक अपन कालावधि स्वीकार करैत छथि। हुनक दृष्टि बूढ़बाक अमरता-आकांक्षाकेँ चुनौती देइत अछि। “भुलाइक पहिने” सभकेँ उचित सम्मान देबाक प्रस्ताव स्मरणक अनन्त नियन्त्रणक बदला सीमित जीवनक नैतिकता स्थापित करैत अछि।

## शिल्पगत निर्णय

अध्यायक महत्त्व नव मिथकीय चरित्र जोड़बामे नहि, उपन्यासक शीर्षकक गोहि-प्रतीककेँ दोसर वैचारिक अर्थ देबामे अछि। तइयो सोनमाक अतिदीर्घ आयु आ मूल गोहिक जागबाक कारण कथा-लोकक विश्वासपर निर्भर अछि; अलग प्रमाण नहि दैत। एहि अनिश्चितताकेँ पाठकक हेतु रचनात्मक अस्पष्टता मानल जा सकैत अछि। अगिला –८२मे सावित्री एहि दू स्मृति-दर्शनकेँ खेलक व्यवहारमे बदलैत छथि।

## अध्याय –८२ — पहिल कबड्डी

### अनुष्ठानक जन्म आ संकटसँ सृजन

तीन बरखक अन्तरालक बाद गाममे पशुधनक लोप मानव-लोप धरि बढ़ि गेल अछि। सावित्री अपन सपनामे बच्चाक दौड़, सीमापार करब आ दोहराओल शब्द देखैत छथि; एहि अस्पष्ट छविक अर्थ बूढ़बा वा गौरी नहि, सावित्री स्वयं खोजैत छथि। ओ मृतकक नाम-रक्षा आ मूल गोहिक भेंट-परम्पराकेँ एकटा नव कबड्डी-अनुष्ठानमे जोड़ैत छथि। एहि क्षण उपन्यास मे पीढ़ीगत नवाचारक वास्तविक कर्ता वृद्ध साक्षी नहि, युवा स्त्री बनैत अछि।

पहिल पारीमे सुभागीक नाम उच्चरित होइत अछि; दोसर बेर यशपतिक नाम लैत सावित्री माता आ बूढ़बाक भावनात्मक चयनसँ आगाँ बढ़ैत छथि। –८४क गौरीक अनिर्णीत प्रश्न एहि क्रियामे उत्तर पबैत अछि: अपराधीक इतिहास सेहो सामुदायिक विस्मरणमे नहि छोड़े बाक अछि। नाम लऽ सीमा पार करब स्मृतिसँ क्रिया दिस, आ क्रियासँ सार्वजनिक अनुबन्ध दिस गमन अछि।

### खेलक नियम आ नाटकीय समय

अमावस्याक राति, साँस रोकि “कबड्डी-कबड्डी” बजैत जलक धार धरि पहुँचब दृश्यात्मक समयकेँ संकुचित करैत अछि। दीर्घ तीन-बरखीय कथासंक्षेपक बाद पारीक क्षण कथा मन्द होइत अछि। जेनेतक अवधि-विभाजनमे एकरा संक्षेपसँ दृश्य-दिस परिवर्तन कहल जा सकैत अछि। नामक प्रत्येक उच्चारणसँ पानिक नव प्रतिक्रिया कथा आगाँ बढ़बैत अछि; खेलक नियम केवल रूपक नहि, कथाक गति नियन्त्रित करैत अछि।

कबड्डीक पारी सामान्यत: कब्जा आ प्रतिरोधक खेल थिक; एतय सावित्री “नाम छू बू, देह नहि पकड़ू ”क नैतिक पाठ प्रस्तुत करैत छथि। सीमापार करब आ घुरि आएब मृतकक सन्देश जीवित समाजमे पहुँचबैत अछि। साँस सीमित अछि; स्मृति दीर्घकालीन। एहि असमान काल-मापनक संग खेलब अध्यायक सर्जनात्मक उपलब्धि अछि।

## अनुष्ठान, बहुस्वरता आ आधुनिक अर्थ

सोनमाक भेंट-चिन्तन, बूढ़बाक स्मरण आ गामक बाल-खेल — तीन परम्परा नव एकात्मक विधिमे प्रवेश करैत अछि। बाख्तिनक अर्थमे मात्र अनेक आवाज उपस्थित होएब पर्याप्त नहि; हुनका सभक पारस्परिक परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि। सावित्री ओहि कामकेँ सम्भव करैत छथि। ओ मूल गोहिसँ युद्ध नहि, “चोरी नहि करब, भेंट स्वीकार करब”क अनुबन्ध प्रस्तावित करैत छथि। एहि वाणीमे अमानवीय शक्ति केँ सेहो सम्बोधित पक्ष मानल गेल अछि।

अध्यायक भविष्य-दिस संकेत — एहि खेलक चन्ना गाछीमे कालातीत विस्तार होएब — कथा-समयमे भविष्याभास अछि। पूर्व-कथाकालक भीतर एहन पूर्वसूचना मुख्य खण्डक परिचित परम्पराकेँ उत्पत्तिक अर्थ देइत अछि। मुदा “कहल जाइत अछि” कहि कथावाचक अनुष्ठानक चमत्कारी सफलताकेँ लोकक मान्यता रूपमे रखैत अछि; ई कथनक सूक्ष्म सीमांकन उपन्यासक पौराणिक स्वर संग उपयुक्त अछि।

## सीमा आ तुलनात्मक महत्त्व

गोहि पानिमे शान्त होइत अछि, मुदा कोनो प्रत्यक्ष वचन नहि दैत। परिणामकेँ पूर्ण पारस्परिक सहमति कहब स्रोतसँ बेसी दावा होयत। अनुष्ठानक सफलताक सामान्यीकरण किछु जल्दी अछि: एक रातिक घटना सदियाधरिक संस्थाक मूल बनैत अछि, सामाजिक विवाद वा वैकल्पिक अनुष्ठानक प्रतिरोध देखाओल नहि गेल। तथापि –८२क जटिलताकेँ –८१क युद्ध-संकट तुरन्त परखैत अछि, जतय स्मृतिक खेल गोहिसँ अलग मनुष्यक हिंसाक सम्मुख पड़ैत अछि।

## अध्याय –८१ — आक्रमणक छाय ।

## मानवीय हिंसा आ कथात्मक कालान्तर

बीस बरख बीतलाक बाद सावित्री अपन बेटी इन्दुमतीकेँ नाम-कबड्डीक नियम सिखबैत छथि। अध्यायक आरम्भमे स्थापित शान्ति दीर्घकालीन संक्षेपमे प्रस्तुत होइत अछि; धूरि उठब, शरणार्थीक आगमन आ टूटल सैनिकक रातिक आहट कथाकेँ अचानक संकट-दृश्यमे प्रवेश करबैत अछि। मूल गोहिक भयक बाद राज्य-सैन्य हिंसा आबैत अछि। ई बदलाव कथाक संकट-क्रममे महत्त्वपूर्ण: प्राकृतिक अथवा मिथकीय भूखक शान्ति राजनीतिक हिंसाक समाप्ति नहि अछि।

चर्मकार टोला बच्चा आ वृद्धसभकेँ माटिक तर अनाजक कोठलीमे नुकाबैत अछि। ई ठोस श्रमगत व्यवस्था आ गौरीक औषधीय सहायता वास्तविक रक्षाक आधार बनैत अछि। कबड्डीक रातिक दृश्य तकर अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक रणनीति अछि: लुटेरा सैनिक निर्भीक खेल देखिकऽ गाममे धन नहि होएबाक अनुमान लगबैत छथि। कथा ई नहि कहैत जे खेलकेँ देखिते सेना अलौकिक रूपसँ पराजित भेल; सैनिकक अपन निर्णय कथात्मक कारण-शृंखलाक अंग अछि।

## दृष्टिबिन्दु आ गलत अनुमानक पुनरावृत्ति

–१००क शंखकेँ रजत बुझबाक भ्रम एतय सैनिकक सामाजिक भ्रममे नव रूप लैत अछि। सैनिक खेलैत बच्चासभकेँ “गाम खाली अछि”क साक्ष्य मानैत छथि; दृश्यसँ अर्थक ई छलाँग वास्तवमे संकटग्रस्त समाजक सुव्यवस्थित रणनीतिकेँ नहि देखैत। पाठक, जकरा माटिक तरक शरणस्थल आ अनुष्ठानक पृष्ठभूमि पहिने बुझाओल गेल, सैनिकक तुलनामे अधिक जानकारी रखैत अछि। ई नाटकीय विडम्बना (dramatic irony) बनबैत अछि, नहि कि हर पात्रक समान सर्वज्ञता।

बूढ़बाक साक्षी-दृष्टि स्वयं युद्धक भविष्य स्पष्ट नहि देखैत। अलौकिक शक्ति आ सामाजिक विवेकक सम्बन्ध एहि कारण सीमित अछि। कथाक केन्द्रीय नैतिक दावा जे नाम बचबैत व्यवहार जीवित लोकनिकेँ सेहो बचा सकैत अछि, रूपकात्मक अछि; एहि विशिष्ट

रातिक रक्षाक कारणमे सैनिकक थकान, लुटबाक अपेक्षा आ सामुदायिक संयम संयुक्त रूपसँ उपस्थित अछि।

## इतिहास, समुदाय आ बहुविध स्वर

उपन्यास सिमरावगढ़क पतन आ नव शासनक आगमनक समाचारक आधारपर मिथिलाक ऐतिहासिक मोड़ रचैत अछि। ई कथाजगतमे प्रयुक्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अछि; घटनाक बाहरी कालक्रम अलग ऐतिहासिक परीक्षणक विषय रहत। गामक लोक एकसंग नहि सोचैत: किछु भागय चाहैत छथि, किछु भूमि नहि छोड़य चाहैत, किछु वृद्ध-बीमारक रक्षा करैत अछि। सामूहिकता एहि असहमतिक बीच व्यवहारसँ बनैत अछि।

बाख्तिनक बहुस्वरताक पूर्ण उदाहरण एहि अध्यायमे सीमित अछि, कारण निर्णायक उत्तर बूढ़बाक व्याख्यामे केन्द्रित रहैत अछि। तथापि शरणार्थीक भय, इन्दुमतीक तत्परता, सावित्रीक विश्वास आ सेनापतिक थाकल विवेक एकसंग सुनाइ पड़ैत अछि। युद्धक विपुल हिंसा गामक बाहरक समाचारमे रहैत अछि, जाहिसँ स्थानीय दृश्य तीक्ष्ण होइत अछि, मुदा व्यापक राजनीतिक संघर्षक मानवीय जटिलता कु छु संक्षिप्त रहि जाइत अछि।

## समग्र मूल्याङ्कन

–८२ मे अनुष्ठान लोकस्मृतिक उत्पत्ति बनल छल; –८१ मे ओ नागरिक जीवनक अपन पहिचान बचायबामे सहायक व्यवहार बनैत अछि। “छाया”क फकरा बाहरी शत्रुसँ बेसी भयक अनुपातक भाषा अछि। अध्यायक उपलब्धि एहि बातमे अछि जे सामूहिक प्रतिरोधकेँ हथियार-विजय नहि, देखबाक गलत अपेक्षाकेँ मोड़ि देबाक कौशल बनाओल गेल अछि; सीमा एहि बातमे जे बहुत व्यापक सैन्य संकट अपेक्षाकृत सहज गुजरि जाइत अछि। अध्याय –८५ सँ –८१: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन प्रमाणक चारि विन्यास

–८५क आमिलक घोषणापत्र राजकीय बलसँ प्रमाणक नियम बनबैत अछि; –८४क जंगलमे वस्त्र, जूता आ निशान दृश्य-साक्ष्य अछि मुदा निर्णय अनिर्णीत; –८३मे सोनमाक मौखिक वंश-स्मृति ज्ञानक नव स्रोत बनैत अछि; –८२मे सावित्रीक नाम-पारी सामूहिक प्रयोग अछि; –८१मे सैनिक स्वयं खेलक दृश्यसँ गलत अनुमान लैत छथि। एहि क्रममे

उपन्यास प्रमाणकेँ तटस्थ वस्तु नहि, परिस्थितिगत व्याख्याक सामाजिक क्रिया रूपमे देखबैत अछि।

## साक्षी-शक्तिक लोकतन्त्रीकरण

बूढ़बाक निर्णायक साक्षित्व –८५मे राजकीय अधिकारकेँ रोकैत अछि; –८४मे हुनक अज्ञान उद्घाटित होइत अछि; –८३मे सोनमाक अलग ज्ञान हुनका सुधारै त अछि; –८२मे सावित्री नव विधि बनबैत छथि; –८१मे चर्मकार टोलाक आश्रय-निर्माण आ बच्चासभक खेल जीवित लोकनिकेँ बचबैत अछि। एक अलौकिक साक्षी सँ अनेक सामाजिक कर्ता दिस केन्द्र ससरै त अछि। एही प्रक्रियाक महत्व शास्त्रीय उपदेशक पुनरावृत्ति नहि, अलग पात्रसभक निर्णय अछि।

## समीक्षात्मक आरक्षण

पाँचू अध्याय कतेको बेर अन्तक फकरासँ घटनाक नैतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि; एहि कारण पाठकक स्वतन्त्र व्याख्याक गुंजाइश संकुचित भऽ सकैत अछि। मुदा जंगलक अनिर्णीत लोप आ –८२क गोहिक मौन एहन खुलल स्थान बचा रखैत अछि जतय एकटा अधिक जटिल व्याख्या सम्भव अछि।

## अध्याय ८० — गीतक पहिल पाँति

### मौखिक परम्परासँ लिखित कृतित्व दिस

आक्रमण आ शासन-परिवर्तनक बादक सांस्कृतिक वातावरणमे भ्रमणशील कवि हरिपति गढ़ नारिकेल अबैत छथि। ओ इन्दुमती सँ पीपर, बूढ़बा, मूल गोहि आ अमावस्याक कबड्डीक कथा सुनैत छथि आ एकरा पोथीमे उतारय चाहैत छथि। उत्तरादायित्वक पहिल प्रश्न इन्दुमती पुछैत छथि: गामक जीबैत कथा राजदरबारक अलङ् कृत रचना बनि कऽ ककर स्वामित्वमे पहुँचत? ई प्रश्न घटनाक मुख्य नाटकीय द्वन्द्व अछि; कविक उत्साह अकेले पर्याप्त नैतिक प्रमाण नहि।

बूढ़बाक आग्रह जे हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालतीक कथा सामान्य जनक भाषामे लिखल जाए, प्रतिनिधित्वक राजनीति उद्घाटित करैत अछि। हरिपति तीन मास धरि लोकनिकेँ सुनैत, लिखैत, मेटैत आ फेर लिखैत छथि। लिखनाइ एतय तात्कालिक प्रेरणाक नहि, जाँच आ प्रत्युत्तर स्वीकार करबाक प्रक्रिया अछि। उपन्यास स्वयं जे विस्तृत लिखित रूपमे उपस्थित अछि, ओहि रूपक उत्पत्तिपर ई अध्याय आत्मपरक चिन्तन करैत अछि।

### लेखकक अधिकार आ कथनक आन्तरिक स्तर

कथावाचक हरिपतिक भविष्यक पाण्डुलिपिसँ बहुत बादक कम्प्यूटर-स्क्रीन धरि संबंध जोड़ैत अछि। एहि दृश्यक भविष्याभासक कारण पाठक बुझैत अछि जे अलग युगक माध्यम बदलितो कथाक आधार गामक आवाज रहत। एकरा आत्मप्रतिबिम्बी आख्यान (metafiction) कहल जा सकैत अछि: रचना अपन रचनाक सम्भावना स्वयं कथाक भीतर रखैत अछि। मुदा हरिपति उपन्यासक वास्तविक रचनाकारक दस्तावेजी पहचान नहि, उपन्यासक कल्पित कवि-पात्र छथि।

ग्रामकथा, बूढ़बाक मौखिक साक्ष्य, इन्दुमतीक निगरानी आ हरिपतिक लेखन तीन प्रकारक कथनाधिकार बनबैत अछि। बाख्तिनक संवादधर्मिताक कसौटीपर साहित्यिक रूपान्तरण तखनहि नैतिक अछि जखन लिखनिहार लोकभाषाकेँ अपन अलङ् कारसँ दबबैत नहि। गीतक “लेखक एक नहि” वाक्य कृतित्वकेँ सामूहिक श्रममे रखैत अछि। मुदा

हरिपतिक लेखकत्व सम्पूर्ण अस्वीकार नहि होइत: चयन आ पुनर्लेखन हुनकर व्यक्तिगत सम्पादकीय निर्णय रहैत अछि।

## पाठ, अभिलेख आ स्थगित प्रकाशन

हरिपति पोथीकेँ दरबारमे नहि देखबैत छथि; ओ भविष्यक एहन पाठकक प्रतीक्षा करबाक बात कहैत छथि जे कथा सुनि आ बुझि सकय। ई निर्णय पाठकक ऐतिहासिक निर्माणक प्रश्न उठबैत अछि: कोनो कृति लिखलापर स्वत: लोकपाठ नहि बनि जाइत। पाण्डुलिपिक भौतिक लोप, शिष्यक उत्तराधिकार आ भावी पुनर्लेखनक अनिश्चितता एक-दोसरासँ जुड़ल अछि।

अध्यायक आरम्भमे ओइनवार राजकीय आश्रय आ मैथिली साहित्यक उत्कर्षक वर्णन उपन्यासक कथाजगतक ऐतिहासिक विन्यास अछि; हरिपतिक विशिष्ट जीवनक ऐतिहासिक प्रमाण एतय नहि देल गेल अछि। एकरा ऐतिहासिक तथ्यक पुनर्रचना नहि, साहित्यिक पृष्ठभूमिसँ उत्पन्न कल्पित भेट रूपमे पढ़ब उचित अछि। −७८क व्यक्तिगत पंजी आ −७६क आत्मसाक्षरता एहि लिखित-अभिलेखक परियोजनाकेँ आगाँ बढ़ायत।

## सर्जनात्मक उपलब्धि आ जोखिम

एहि अध्यायक विशिष्ट उपलब्धि मौखिक बनाम लिखितक सरल विरोधक स्थानपर लिखबाक जिम्मेदारीक प्रश्न उठेबाक अछि। मुदा “लेखक एक नहि”क समापनसूत्र रचनात्मक चयनक असमान शक्ति पूर्णत: नहि सुलझबैत। ओही असमानताक वास्तविक परिणाम एतय अभी कथाक भीतर खुलल अछि।

# अध्याय –७९ — क्षमाक पारी

## पूर्वजक अन्याय आ जीवित वंशजक प्रश्न

पैंतालीस बरखक कथासंक्षेपक बाद प्रतापसेन ठाकुरक पौत्र रघुवीर वसुन्धरा लग अबैत छथि। हुनक स्वीकार अछि जे परिवारक सम्पत्तिक किछु भाग पुरान अन्यायपर ठाढ़ अछि। हुनक क्षमा-याचना सरल दया माँगब नहि, लाभक स्रोतक स्वीकार सँ आरम्भ होइत अछि। अपराधी आ अपराधसँ लाभ पाबनिहार वंशजक नैतिक दायित्व अलग अछि; कथा एहि भेदकेँ लोप नहि करैत।

रघुवीर अपन जमीनक एक भाग लौटेबाक प्रस्ताव सार्वजनिक रूपसँ करैत छथि; अगिला दिन भूमिक बँटवारा-पत्र वसुन्धराकेँ सौंपैत छथि। न्याय एतय केवल भावुक मिलन नहि, सम्पत्तिक वास्तविक पुनर्वितरणक क्रियासँ जुड़ैत अछि। फेर सेहो रघुवीर स्वयं कहैत छथि जे एहि उपायसँ क्षमा खरीदल नहि जा सकैत। एहि स्वीकारक कारण कथा प्रायश्चितकेँ ऋणक तत्काल समाप्ति नहि बनबैत।

## अनुष्ठानमे जीवित नामक प्रवेश

अमावस्याक पारीमे वसुन्धरा रघुवीरकेँ मृतकक नाम उच्चरित करबाक बदला स्वयं नाम बनबाक प्रस्ताव दैत छथि। –८२मे नाम-कबड्डी मुख्यतः मरल आ बिसरल लोकनिक स्मरण-साधन छल; –७९मे जीवित मनुष्यक बदलेल आत्मपरिचय सार्वजनिक रूपसँ स्वीकारल जाइत अछि। “रघुवीर, जे घुरलाह” नाम के बल वस्तुनिष्ठ वंश-परिचय नहि; कएल गेल परिवर्तनक सामाजिक मूल्याङ्कन अछि।

जेनेतक आवृत्तिक दृष्टिसँ एक रातिक अनुष्ठान भविष्यक कहबीतक स्रोत बनैत अछि। घटनाक एकवार घटब, लोकक बारम्बार ओकरा दोहरे ब आ अन्ततः “घुरब”क मुहावरा बनब — ई तीन कालिक स्तर अछि। लोक-स्मृति एकल सुधारक कृत्यकेँ सामुदायिक कथामे रूपान्तरित करैत अछि।

## क्षमा, न्याय आ प्रतिनिधित्व

पॉल रिकरक आत्मपरिचय आ कथा सम्बन्धी विचारक आलोकमे रघुवीर अपन परिवारक पहिने सँ लिखल काथाकेँ नव ढंगसँ स्वीकार करैत छथि। कथा हुनका निर्दोष घोषित नहि करैत, मुदा केवल वंशक अपराधक समानार्थी सेहो नहि बनबैत। सामूहिक स्वीकारताक केन्द्र वसुन्धरा छथि; ओ रघुवीरक भविष्यक नामक सार्वजनिक सहलेखिका बनैत छथि।

एहि दृश्यक सीमा ई अछि जे सम्पत्तिक वापसीक वास्तविक परिमाण, पूर्व शोषणक व्यापकता आ सर्व पीड़ितक सहमति पाठमे विस्तारसँ नहि अबैत। एकटा सार्वजनिक भावनात्मक दृश्य संरचनागत सुधारक कठिनाई पूरा नहि सुलझा सकैत। मुदा पाठ एहि असमानताकेँ अप्रत्यक्ष रूपसँ स्वीकार करैत अछि, कारण भूमि देब सेहो “एकटा डे ग” कहल गेल अछि, अन्तिम न्याय नहि।

## पूर्वापर सम्बन्ध

–८४मे गौरी पुछने छलीह जे यशपतिक नाम बचाओल जाय कि नहि; –८२मे सावित्री ओहि नामक उच्चारण कऽ आक्रोशक बदला स्मृतिक विकल्प चुनलनि। –७९ एहि नैतिक सूत्रकेँ सामाजिक पुनर्वितरणक संग जोड़ैत अछि। अन्तक फकरा “बदला” आ “क्षमा”क पारी अलग करैत अछि, मुदा –७८ मे अगिला प्रश्न अछि: परम्परा किनका पंजीमे नाम देइत अछि आ किनका बाहर राखैत अछि?

## अध्याय –७८ — पंजीक बाहर

# वंश-पंजी आ स्मृति-सत्ताक सामाजिक सीमा

यादवानन्द झा अपन पंजी-अभिलेखनक कामपर विश्वास राखैत गढ़ नारिकेलमे रुकैत छथि। वसुन्धरा अतिथिसत्कार लेल दूध आ फल पठबैत छथि; दूधक स्रोत “चर्मकार टोला” बुझिते यादवानन्दक क्षणिक असहजता लेखा-व्यवस्थाक भीतर उपस्थित जातिगत संस्कारकेँ देह-स्तरपर प्रकट करैत अछि। घोड़ा बीमार पड़ब, अतिथि बनि रुकब, दूधक स्वाद आ स्त्रोतक उद्घाटन — ई सभ मिलि निष्कर्षक पहिने बुनियादी सामाजिक सम्पर्क क स्थिति रचैत अछि।

उपन्यास पंजीक कुल, गोत्र आ विवाह-अभिलेखक उपयोग स्वीकार करैत अछि, मुदा ओकर सीमान्तक नामसभक अभावकेँ केन्द्रीय प्रश्न बनबैत अछि। नाम लिखल जाएब जीवनक सामाजिक मान्यता बनि सकैत अछि; नाम नहि लिखल जाएब स्वयमेव व्यक्तिक अस्तित्वक अभाव नहि सिद्ध करैत। अध्यायक लोकगीत एहि भेदकेँ “कागच” आ “माटि”क विरोधद्वारा पठनीय करैत अछि।

# दृष्टिबिन्दुक परिवर्तन आ ज्ञानगत अन्याय

अमावस्याक खेल देखिते यादवानन्द पहिल बेर अपन पंजीमे अनुपस्थित लोकसभक जीवनी सुनैत छथि। हुनक प्रश्न “ई नाम सभ के कर अछि?” केवल सूचना माँगब नहि, अपन संस्थागत दृष्टिक सीमा पहचानबाक क्षण अछि। फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक दृष्टिसँ वसुन्धराक वाणी पहिने प्रशासनिक वंश-अभिलेखमे मान्य स्रोत नहि छल; एकर कमी केवल व्यक्तिक पूर्वाग्रह नहि, मान्यता देबाक संस्थागत नियममे अछि।

बूढ़बा यादवानन्दक हेतु अपन आवाज खोलैत छथि। मुदा परिवर्तनक केन्द्र एकटा अलौकिक आदेश मात्र नहि: वसुन्धराक तीन घंटा धरि पीढ़ी-पीढ़ीक नाम, सम्बन्ध आ कथा सुनाएब आ यादवानन्दक ओकरा लिखब मानवीय परिश्रम अछि। श्रव्य अनुभव लिखित प्रविष्टिमे रूपान्तरित होइत अछि। एक संस्था-अनुकूल पंजीकार अपन पदक बाहर व्यक्तिगत लेखनक आरम्भ करैत छथि।

## छाया-अभिलेखक सम्भावना आ सीमा

यादवानन्द स्पष्ट कहैत छथि जे हुनक नव पोथी आधिकारिक पंजी नहि होयत। ई भेद साहित्यिक सत्यनिष्ठाक प्रमाण अछि: नब लिखित अभिलेख पुरान विधिसत्ताकेँ तत्काल नहि बदलैत। ओ आधिकारिक पंजीक समान आदरक वचन दैत छथि, मुदा ओहिना सार्वजनिक वैधता प्राप्त करैत नहि। एहि सीमामे कथाक प्रभाव अछि, कारण परिवर्तनक आकांक्षा आ संस्थागत अवरोध एकसंग उपस्थित रहैत अछि।

अभिलेख-अध्ययनक दृष्टिसँ ई छाया-पंजी ज्ञान-संग्रहक नब प्रति-पथ अछि। हलांकि ओकर स्वामी एकटा पंजीकारे छथि, ताहि कारण भविष्यक उपलब्धता आ पाठक-पहुँच फेर हुनक निजी निर्णयपर निर्भर रहत। –८०मे हरिपतिक ताड़पत्र पोथीक स्थगित प्रकाशन जे समस्या उठौने छल, से एतय नव रूपमे घुरैत अछि।

## शिल्पगत निर्णय

दूध पीबैत सामाजिक निकटता सँ अनुष्ठानक श्रवण आ पंजीकारक लेखनी उठे बा धरि घटनाक क्रम सहज अछि। मुदा यादवानन्दक परिवर्तन अत्यन्त सघन एक रातिमे सम्पन्न होइत देखाइ पड़ैत अछि; संस्थागत प्रतिरोधक दृश्यमान विस्तार कम अछि। अगिला –७६मे स्वयं अभिलेख पढ़बाक अधिकार बुनियादी प्रश्न बनत: नाम दोसर लिखि देब आ अपन नाम अपने पढ़ब एक नहि।

## अध्याय –७७ — बूढ़बाक मौन

### साक्षी बननिहारक क्षय आ कथानक संकट

दस बरखक अन्तरालक बाद कौशल्याक अमावस्या-अनुष्ठानमे बूढ़बा निर्णायक रूपमे उपस्थित नहि होइत छथि। हुनक कण्ठ मन्द, नामस्मृति अस्थिर, आ हुलासा/हुलासी तथा सुखदेव/सुरे न्द्रक बीच संशय प्रकट होइत अछि। ई ठोस नाम-भ्रान्ति अध्यायक नाटकीय केन्द्र अछि, किएक तँ जे पात्र सभक नामक स्थिर संरक्षक छलाह, ओ स्वयं पहिचानक अनिश्चिततामे पड़ैत छथि।

पाठ आरम्भमे स्मरण-क्षयक रोगसदृश आभास दैत अछि; समाधानमे बूढ़बा कहैत छथि जे ओ भुला नहि रहल छलाह, थाकल छलाह। एतय कथनक आरम्भिक संकेत आ पछिल स्पष्टीकरणक बीच परिवर्तन अछि। एकरा मनोवैज्ञानिक निदान नहि मानबाक चाही; कृति साक्षीक एकतरफा श्रमक रूपकमे थकानक अवधारणा विकसित करैत अछि।

### गोदावरीक प्रश्न आ देखभालक उलट सम्बन्ध

सोनमा माझिनक वंशज गोदावरी पुछैत छथि जे गाम कहियो बुधुआक अपन नाम ओहि आदरसँ उच्चरित के ने अछि कि नहि जतेक ओ आनक नाम लैत आयल छथि। ई प्रश्न पात्रसभक सुविधा-आधारित अपेक्षाकेँ पलटैत अछि। साक्षी सर्वकालिक सेवा-यन्त्र नहि, अपन कथा सहित एकटा नैतिक व्यक्ति बनैत छथि।

गोदावरीक प्रस्तावपर सामूहिक बूढ़बा-स्मरण होइत अछि। बुधुआक सेवाक तीस बरख, जलसमाधि, बाढ़ि आ यशपतिक प्रति दुःख सार्वजनिक रूपमे कहल जाइत अछि। ई स्मरण सूचीमात्र नहि; बूढ़बाक जीवनक आपसी रूपसँ साझा व्याख्या अछि। समुदाय अपन साक्षीकेँ स्वयं कथा-विषय बनबैत अछि।

### प्रत्यावर्ती कथन आ परस्पर साक्षित्व

–९०मे बुधुआक जलसमाधि साक्षीक रूपान्तरणक आरम्भ छल; –७७मे ओहि मूलकथा केँ जीवित समाज फेर सँ बाजैत अछि। एहि अर्थमे उपन्यास अपन पूर्व-अध्यायकेँ

उत्तरकालीन कथा-दृश्य बनबैत अछि। आवर्तित स्मरण (recurrent narration) घटना नव बनबैत नहि, मुदा पुरान घटनाक सामाजिक कार्य बदलैत अछि।

कथाविज्ञानक दृष्टिसँ सामूहिक वक्ता बूढ़बाक एकल अधिकार कम करैत अछि। गोदावरी, कौशल्या, वृद्ध, बच्चा — सभक अलग आवाज अछि, जद्यपि अंतिम कथित अर्थ बूढ़बाक वाणीमे संकलित होइत अछि। बाख्तिनक बहुस्वरताक पूर्ण स्वायत्तता नहि, मुदा आवाजक पारस्परिक स्वीकार देखि पड़ैत अछि।

## नैतिक परिणाम आ शिल्पगत आरक्षण

स्मरणक नैतिकता एकदिशा सँ द्विदिशा होइत अछि: गाम मृतकक नाम बचबैत अछि आ साक्षीक नाम सेहो। एकर ठोस संस्थागत रूप फागुनक पूर्णिमाक “बूढ़बा-स्मरण” अछि। शिल्पगत सीमा ई जे सामूहिक श्रवणक रातिक अन्तमे बूढ़बाक शक्ति बहुत जल्दी पुनर्स्थापित होइत अछि; दीर्घ थकानक कठोर सामाजिक परिणाम खुलि नहि पबैत।

तथापि अध्यायक विशेष उपलब्धि अमर अलौकिक पात्रकेँ असुरक्षित बनाओल आ हुनक रक्षाक भार समाजपर रखबाक अछि। −८३क सोनमा अपन सीमाक स्वीकार करब सिखौने छलीह; −७७मे ओहि परम्पराक वंशज साक्षीकेँ प्रेम प्राप्त करबाक अधिकार सिखबैत छथि।

## अध्याय ७६ — नारिके ल पातक पहिल पाठ

## लेखकीय अधिकारसँ पाठकीय अधिकार दिस

मंदाकिनी अपन परिवारक इतिहास हरिपतिक पोथी आ यादवानन्दक व्यक्तिगत पंजीमे सुरक्षित हेबाक बात जनैत छथि, मुदा अपन टोलाक लोक ओ लिखल अक्षर पढ़ि नहि सकैत। कथाक मूल समस्या केवल इतिहास बचल अछि कि नहि, से नहि; इतिहास पढ़बाक चाभी ककर हाथ अछि, से अछि। अनपढ़क नाम लिखि देब अभिलेखीय संरक्षण होइत अछि, मुदा आत्मव्याख्याक अधिकार नहि।

ब्राह्मण टोलाक पाठशाला उच्च-जातिक बालक लेल सीमित अछि; महग कागच आ ताड़पत्र दोसर अवरोध अछि। मंदाकिनी सूखल नारिकेल पातपर रेखा खींचि सस्ती लेखन-सामग्री खोजैत छथि। एकटा पातक भौतिक गुण सामाजिक नवाचारक आधार बनैत अछि। ओ अपन सहेलीसभक संग स्त्री-पुरुष, जाति-बन्धनसँ बाहर बच्चासभकेँ सिखेबाक आरम्भ करैत छथि।

## सामग्री, देह आ लेखनक सम्बन्ध

आधुनिक माध्यम-अध्ययन (media studies) मे माध्यमकेँ शून्य वाहक नहि, ज्ञानक उपलब्धता निर्धारित करएबला सामाजिक वस्तु मानल जाइत अछि। नारिकेल पात एहि अध्यायमे मात्र मिथिलाक सौन्दर्यक प्रतीक नहि; अक्षरक व्यय, अपन साधनपर अधिकार आ विद्यालयक स्थानीय स्थापत्यक प्रश्न जुड़ैत अछि। जे जगह ढोल-मृदंग सुखेबाक लेल प्रयुक्त छल, से शिक्षाक साझा स्थल बनैत अछि। सांस्कृतिक श्रमक पुरान स्थान नब पाठकीय अधिकार पबैत अछि।

अध्यायक समय-व्यवस्था स्पष्ट अछि: एक दिनक स्वतःस्फू र्त खोज, अगिला सप्ताहक पहिल पाठ, फेर अनेक वर्षक संस्थागत विकास। एहि तीव्र काल-संक्षेपक कारण नवाचारक उत्पत्ति स्पष्ट, मुदा ओकरा स्थायी संस्थामे बदलबाक संघर्ष अल्प-वर्णित अछि। अभिजन पाठशालाक विरोध, शिक्षक-तैयारी आ संसाधनक नियमित व्यवस्था पाठमे विस्तार नहि पबैत।

## स्त्रीवादी आलोचना आ ज्ञानगत न्याय

मंदाकिनी अक्षरक खोज करैत छथि मात्र अपन परिवारक प्रतिष्ठा बढ़े बा लेल नहि; ओ देखैत छथि जे स्त्रीसभ अपना कथाक अर्थ दोसराक लेखनीपर निर्भर अछि। ज्ञानगत अन्यायक दृष्टिसँ पढ़नाइ व्यक्ति कैं अपन अनुभवक व्याख्याकार बनबाक साधन दैत अछि। विद्यालय बालिकासभक प्रवेश खोलैत अछि, जाहिसँ पितृसत्तात्मक सीमा जातिगत सीमाक संग चुनौती पबैत अछि।

बूढ़बा लिखित अभिलेख आ जीवित स्मृतिक अलग कार्य बतबैत छथि: लिखल कागच जरि सकैत अछि, बिसरल जा सकैत अछि; मौखिक स्मरणो कमजोर पड़ि सकैत। एहि कारण पाठशाला कबड्डीक प्रतिस्थापन नहि, दोसर रक्षा-मार्ग अछि। –८०क हरिपतिक लेखन आ –७८क पंजीकारक सूची तखनहि न्यायोचित रूपसँ सम्पूर्ण होयत जखन समुदाय अपन कथा स्वयं पढ़ि आ लिखि सकय।

## शिल्पगत निष्कर्ष

पाठशालाक नाम “नारिकेल पात” भौतिक वस्तु, गामक सांस्कृतिक चिह्न आ ऐतिहासिक दीर्घता तीनू जोड़ैत अछि। उपन्यासक आगाँक खण्डमे एहि संस्थाक महत्त्वक हेतु ई एकटा उत्पत्तिकथा अछि। एकर सीमित पक्ष आरम्भक अति-सहज सफलता अछि; मुदा पात्रक ठोस खोज, उपलब्ध सामग्री आ प्रयोगशील काज एकरा कोरा उपदेश बनबाक सँ बचबैत अछि। अध्याय –८० सँ –७६: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन नामक तीन अभिलेखीय स्तर

–८०मे हरिपति लोकक कथा लिखैत छथि; –७८मे यादवानन्द आधिकारिक पंजीक बाहर व्यक्तिगत अभिलेख बनबैत छथि; –७६मे मंदाकिनी समुदायकैं स्वयं लिखबाक क्षमता प्रदान करैत छथि। ई क्रम प्रतिनिधित्वक तीन स्तर — सुनाओल कथा, अन्यक हाथक अभिलेख आ अपन लेखन — स्पष्ट करैत अछि। तीनूकैं समान मानब गलत, कारण अधिकारक नियन्त्रण अलग अछि।

## रचनात्मक उत्तराधिकार

–७९मे वसुन्धरा प्रायश्चितक हेतु कबड्डीक नियम बदलेलनि, –७७मे गोदावरी बूढ़बाकेँ स्वयं स्मरणक केन्द्र बनौलनि, आ –७६मे मंदाकिनी नारिकेल पात पाठशाला शुरू करैत छथि। एहि तीनू रूपान्तरणमे स्त्री-पात्र केवल प्रथाक रक्षिका नहि, नियमक सर्जिका छथि। एहि अनुक्रममे उपन्यास परम्पराकेँ निष्क्रिय संरक्षण नहि, संशोधनशील सामुदायिक अनुबन्ध बनबैत अछि।

## कथाक सीमा

हरिपति, यादवानन्द, रघुवीर आ मंदाकिनीक योजनासभ अपेक्षाकृत कम प्रतिरोधमे स्वीकृत भऽ जाइत अछि। सामाजिक परिवर्तनक दीर्घ संघर्ष विस्तारसँ नहि दर्शाओल गेल; तथापि अलग-अलग परिवर्तनक वास्तविक साधन — ताड़पत्र, भूमि-वापसी, पंजी आ पात — उपन्यासक नैतिक चिन्तनकेँ ठोस बनबैत अछि।

## अध्याय –७५ — तर्क क पहिल विद्रोह

### शिक्षाक फलस्वरूप उत्पन्न असहमति

मंदाकिनीक पाठशाला तीन पीढ़ी धरि चललाक बाद विश्वनाथ नगरक शिक्षासँ घुरि बूढ़बा आ कबड्डीक मान्यता पर संशय करैत अछि। एहि अध्यायक नाटकीय प्रारम्भ अनुष्ठानक विफलतासँ नहि, ओकरा मानबाक कारणपर प्रश्नसँ होइत अछि। –७६मे अक्षर-साक्षरता सामुदायिक अधिकार छल; –७५मे वएह साक्षरता परम्परागत अधिकारकेँ प्रश्न करबाक क्षमता दैत अछि। एहि कारण पाठशालाक उपलब्धि अपन संस्थापक आशाक विरुद्ध नहि, ओकर वास्तविक विस्तार अछि।

दादीक अनुभव-परम्परा आ विश्वनाथक प्रत्यक्ष-जाँचक आग्रह अलग स्रोतक विश्वसनीयताक प्रश्न अछि। दादी वंशक देखल-सुनल साक्ष्य रखैत छथि; विश्वनाथ लोककथाक परिवर्तनीयता बतबैत अछि। दुनू वाणी निष्क्रिय अंधश्रद्धा वा निष्क्रिय विज्ञानक प्रतिनिधि नहि, परस्पर असमान अनुभवक रूप अछि।

### कथन-दृष्टि आ प्रमाणक अस्थिरता

गाममे सहभागिता घटिते पशुधनक लोप फेर आरम्भ होइत अछि। विश्वनाथ साधारण कारण खोजबाक लेल जंगल जाइत अछि, जतय असामान्य निशान देखैत अछि। ई अनुभव ओकर पूर्ण निषेधकेँ शिथिल करैत अछि, मुदा ओकरा मूल गोहिक अस्तित्वक सम्पूर्ण वैज्ञानिक प्रमाण कहब अधिक दावा होयत। निशानक अज्ञात कारण, परम्पराक घटल सहभागिता आ पशुधनक हानि सहघटनासभ अछि; कथा हुनका एक अर्थक सम्बन्धमे रखैत अछि।

विश्वनाथक निर्णायक वाणी “सम्मानसँ जारी राखब, जाबे धरि ... बेहतर उत्तर नहि भेटैत” एकटा अस्थायी ज्ञान-अवस्था अछि। बूढ़बा स्वयं प्रश्नक अधिकार स्वीकार करैत छथि। जेनेतक ज्ञान-सूचना रूपमे पाठक पहिने मूल गोहिक कथित अस्तित्वक सम्बन्धमे बहुत किछु देख चुकल अछि; विश्वनाथक हेतु ओतबा सूचना उपलब्ध नहि। एहि पाठकीय असमानताक कारण ओकर संशय मूर्खता नहि, वैयक्तिक ज्ञानक सीमा बुझाइ पड़ैत अछि।

## संवादधर्मिता आ परम्पराक आधुनिकता

बाख्तिनक अर्थमे कथा तखन संवादधर्मी होइत अछि जखन विरोधी वक्ताक उत्तर भविष्यक अर्थ निर्माण करैत अछि। विश्वनाथ पूर्ण आस्तिक नहि बनैत; ओ विवेकक भाषा बनौने रखैत सहभागिता पुनः ग्रहण करैत अछि। बूढ़बाक कथन “आस्था आ सम्मान एकहि वस्तु नहि” समूहक सह-अस्तित्व लेल वैचारिक सम्भावना खोलैत अछि।

मुदा अनुष्ठान कम होइते अलौकिक संकट लौटि आएब कथाक स्तरपर संशयवादी पात्रक स्थिति कमजोर करैत अछि। यदि प्रश्नक स्वतंत्रता मूल्यवान अछि तँ कथा एकटा एहन संशय सेहो देखाबि सकित छल जकरा तुरन्त विपत्ति पुष्टि-प्रधान शिक्षा नहि दैत। एहि सीमा संग सेहो विश्वनाथक अधूरल विश्वास आलोचनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि।

## पूर्वापर सम्बन्ध

–१००क शंख-रजत विवाद गलत पहिचानक परीक्षा छल; –७५मे प्रश्न ओहि परीक्षाकेँ समुदायपर लागू करैत अछि। –८५क आमिल “विज्ञान” केँ दमनक ढाल बनौने छल; विश्वनाथ अपन तर्क परम्पराक विरुद्ध प्रयोग करैत अछि, मुदा राज्यक हथियारक रूपमे नहि। एहि भेदक कारण उपन्यास तर्क शास्त्रकेँ दमनक पर्याय नहि बनबैत।

## अध्याय ७४ — गाछक रोग

## अमर साक्षीक भौतिक निर्भरता

पीपरक उत्तरी शाखाक पीयर पात आ छालक कारी, भीजल दाग पहली बेर बूढ़बाक साक्षी-जीवनकेँ वृक्षक जैविक स्वास्थ्यसँ जोड़ैत अछि। जकरा ८५मे राजकीय कुल्हाड़ी सँ बचाओल गेल, ओकरा एखन भीतरक रोगसँ बचायबाक अछि। संकटक कारण मानव-शत्रु नहि, वृक्षक नश्वरता अछि। बूढ़बाक “हमहूँ ... एकटा देहसँ बान्हल छी — ई गाछ” स्वीकार ओकर असाधारण काल-अवधिक सीमा दैत अछि।

के दार नगरसँ वृक्ष-वैद्य आनैत अछि; छाल आ पातक जाँच, कीड़ाक पहचान आ क्रमिक उपचार कथाक ठोस घटना-शृंखला अछि। सोनमाक वंशज माटि आ जड़ी-बूटीक स्थानीय जानकारी दैत छथि; नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा दैनिक स्वास्थ्य-लेखा रखैत अछि। ई प्रयोग तीन पृथक ज्ञान-रूप — विशेषज्ञ जाँच, स्थानीय अनुभव आ सामुदायिक अभिलेखन — केँ व्यवहारमे सहकारी बनबैत अछि।

## पर्यावरणीय आलोचना आ स्मृतिक आधार

पर्यावरणीय आलोचनामे गाछकेँ केवल प्रतीक पढ़ब अधूरा होयत, कारण ई देह वास्तविक कीड़ा, ऋतु, माटि आ उपचार पर निर्भर अछि। पुस्तकक स्मृति-रक्षा पानिक संग-संग जैविक अवयवक रक्षापर टिकैत अछि। वृक्ष जँ नष्ट भऽ जायत तँ सामूहिक अभिलेखक एकटा महत्त्वपूर्ण स्थल हेराएत। एहि कथामे जीवित स्मारकक रक्षा सामान्य भावुकता नहि, नियमित काज अछि।

बूढ़बाक अमरताक सीमांकन उपन्यासक शीर्षकमे अन्तर्निहित “जलसमाधि”क जटिलता बढ़बैत अछि। देह छोड़लाक बादो साक्षी एखन एक नव देहक देखभाल बिना नहि बचि सकैत छथि। सांसारिक वस्तु आ अद्भुत अस्तित्वक एहन पारस्परिकता उपन्यासक अद्भुत तत्त्वकेँ भौतिक श्रमक संग जोड़ैत अछि।

## कथात्मक समय आ सामाजिक श्रम

एक बरखक उपचारकेँ संक्षेपमे कहि कथा लम्ब कालगत परिश्रमक अनुभूति दैत अछि। बूढ़बाक कमजोरी आ गामक लोकसभक उपचार-निरन्तरता एतय –७७क थकानक प्रश्नक भिन्न रूप अछि। ओतय साक्षीकेँ सामाजिक स्मरण चाही छल, एतय जीवित आधारकेँ व्यवहारिक चिकित्सा।

फकराक एक पातसँ सम्पूर्ण गाछ धरि रोग पसरणक बिम्ब सामाजिक उपेक्षाक रूपक बनैत अछि। मुदा रूपक आ रोगक वास्तविक कारण अलग राखब आवश्यक: कीड़ा-विज्ञानक विवरण पाठमे कथित अंश अछि, कोनो बाहरी प्रमाणित वृक्ष-रोग निदान नहि।

## शिल्पगत आरक्षण

वृक्ष-वैद्यक उपचार, परम्परागत ज्ञान आ बच्चासभक निगरानी सहज सहयोगमे परिवर्तित होइत अछि; भिन्न पद्धतिक बीच सम्भावित मतभेद विस्तारसँ नहि देखाओल गेल। तथापि –७४क विशिष्टता एहि बातमे अछि जे न्यायिक प्रतीकक रक्षा जमीन, माटि, पात आ कीड़ाक स्तरपर उतरि अबैत अछि। अमरता व्यवहारिक देखभालक ऋणी बनैत अछि।

## अध्याय –७३ — मोहनक धुन

### शोकक श्रव्य रूप आ पात्रक अनुभव

मोहनक चारि बरखक बेटी राधिका जाड़क बुखारमे मरि जाइत छथि। ओकर बाद मोहन किछु सप्ताह ढोल नहि छु बैत छथि; कथा शोककेँ पहिने अनुउच्चारण आ निस्तब्धता रूपमे रचैत अछि। अमावस्यासँ पहिने पीपरक तर ढोलपर पहिल अनियमित थाप धीरे -धीरे लय पबैत अछि। ई गति शोकक आवेगसँ रचनात्मक आयोजन दिस संक्रमणक दृश्यात्मक आ श्रव्य संकेत अछि।

मोहन राधिकाक नाम केवल शब्द नहि, सुनल जा सकनिहार अनुभूति बनायब चाहैत छथि। शीलावती एहि वैयक्तिक धुनकेँ नाम-कबड्डीक सामुदायिक विधिमे जोड़बाक प्रस्ताव करैत छथि। एहिसँ कृति स्मृतिक माध्यम बदलैत अछि: –८०क लेखनी, –७६क नारिकेल पातक बाद –७३मे संगीत भिन्न प्रकारक अभिलेख बनैत अछि।

### शब्दक बाहर स्मृति आ अन्तरमाध्यमीय रूपान्तरण

हुलासाक धुन कोमल आ बीचमे टूटैत, सुखदेवक धुन प्रतीक्षापूर्ण, रत्नाक धुन मातृत्वपूर्ण बताओल गेल अछि। एहन वर्णन व्यक्तिक जीवनक अलग भाव-संकेत निर्मित करैत अछि। मुदा ओहि धुनक स्वर, ताल अथवा वास्तविक संगीत-लेखन पाठमे उपलब्ध नहि, तेँ आलोचना केवल गद्य-वर्णित संगीत-प्रभाव धरि विश्वसनीय रहि सकैत अछि।

अध्यायारम्भमे लोकगीत, तकर बाद मोहनक उत्पत्तिकथा, तकर बाद भविष्यमे “अध्यायारम्भ लोकगीत”क परम्पराक स्पष्ट संकेत — ई आत्मप्रतिबिम्बी रचना अछि। पाठ स्वयं अपन कथात्मक उपकरणक काल्पनिक उत्पत्ति बतबैत अछि। आधुनिक अन्तरमाध्यमीय अध्ययनक दृष्टिसँ काव्य, वादन आ गद्य एक दोसराक अर्थ निर्मित करैत अछि, मुदा एकर ध्वनि वास्तविक पाठकक अनुभवमे कल्पनाद्वारा पूर्ण होइत अछि।

## शोक, सामूहिकता आ नैतिक जोखिम

मोहनक प्रश्न — अपन बेटीकेँ धुनमे रूपान्तरित करब अनादर तँ नहि — स्मृति-सौन्दर्यीकरणक नैतिक दुविधा अछि। व्यक्तिगत क्षतिक कलात्मक रूप सदिखन सार्वजनिक उत्सवक सामग्री नहि बनबाक चाही। बूढ़बाक उत्तर रूपान्तरणकेँ अनादरक विपरीत मानैत अछि; मुदा एहि निष्कर्षमे मोहनक स्वयं शोकक निजी सीमा कतेक सुरक्षित रहत, से प्रश्न खुलल रहैत अछि।

राधिकाक धुन अनुष्ठानक आरम्भक मंगलाचरण बनैत अछि। बालिकाक अल्पजीवन आ सामूहिक दीर्घजीवन एकहि धुनमे भेटैत अछि। –७२मे विवाहक नव उत्सवपूर्ण धुन देखाबैत अछि जे संगीत-परम्परा शोकक कैद नहि, भावनासभक विस्तार बनल अछि।

## शिल्पगत निर्णय

–७३मे आरम्भक लोकगीतक दीर्घता मुख्य कथा सँ पहिने अर्थक घोषणा कऽ दैत अछि, जाहिसँ पाठकक अन्वेषण कु छु कम होइत अछि। मुदा मोहनक निस्तब्ध सप्ताह आ पहिल असमान थाप कथा-गद्यक वास्तविक संवेदनशील दृश्य अछि। एकर सर्जनात्मक शक्ति अमूर्त स्मृति-विचारकेँ देहक उँ गरी आ वाद्यक थापमे रूपान्तरित करबामे अछि।

## अध्याय -७२ — विवाहक साक्षी

## दीर्घ सामाजिक परिवर्तनक सार्वजनिक दृश्य

अनुराधा आ गोपीनाथ नारिकेल पात पाठशालामे संग पढ़ैत छथि; बचपनक मित्रता प्रेममे बदलैत अछि। जातिगत सीमा पार करब केवल युगल सम्बन्धक इच्छा नहि, विद्यालयक साझा दिनचर्यासँ उत्पन्न सामाजिक सम्भावना अछि। अनुराधाक माए आ गोपीनाथक पिता पुरान भयक स्वर दैत छथि; युगल पहिने सँ साझा शिक्षा आ स्मृतिक आधारपर निर्णय लैत अछि।

बूढ़बा गोपीनाथक पितासँ गंगेश आ मालतीक विवाहक बिसराओल कथाक चर्चा करैत छथि। एहि पूर्वकथाक स्मरण वर्तमान विवाहक हेतु नैतिक साक्ष्य बनैत अछि। पंडितक असहमति तुरन्त नष्ट नहि; ओ “लोक की कहत”क भय स्वीकार करैत छथि। एहि भयक सामाजिक वस्तुस्थिति कथा स्पष्ट करैत अछि, मुदा ओकर सम्भावित दीर्घ परिणाम पर कम ठहरै त अछि।

## अन्तर्पाठीय स्मृति आ परिवर्तनक समय

प्राचीन गंगेश-मालती प्रसंगक उल्लेख वर्तमान अनुराधा-गोपीनाथक सम्बन्धक संग कथा-भीतरक अन्तर्पाठीयता बनबैत अछि। वएह जातिगत सीमारेखा नव पीढ़ीक सोझाँ फेर उपस्थित होइत अछि, मुदा परिणाम बदलैत अछि। कथाविज्ञानक दृष्टिसँ अतीतक स्मरण वर्तमानक अर्थ-वितरण करैत अछि; बूढ़बाक प्रत्यक्ष साक्षित्व आ कथित पूर्व-साक्षित्वक भेद महत्वपूर्ण अछि। ओ स्वयं कहैत छथि जे पहिल विवाहक कथा बादमे बुझल छल, वर्तमान विवाहकेँ प्रत्यक्ष देखि रहल छथि।

लोकगीतक “गामक आँखि कागच” बिम्ब लिखित अभिलेख आ सामुदायिक स्वीकृतिक बीच नब रूपक अछि। जे विवाह पहिने लोकस्मृतिसँ दबि गेल छल, एहि बेर सार्वजनिक मंचपर स्वीकारल जाइत अछि। साक्षी-गाछ दुखक नामक साथ आनन्दक नाम सेहो राखब स्वीकार करैत अछि; स्मृतिक क्षेत्र केवल पीड़ाक संग्रह नहि।

## जाति-विमर्श आ स्त्रीक निर्णय-अधिकार

अनुराधा अपन विवाहक अर्थ पहिने सँ कहि दैत छथि; ओ प्रतीकात्मक पीड़िता मात्र नहि। हुनक इच्छाक स्थान कथामे सुरक्षित अछि। तैँ विवाह केवल समुदाय द्वारा प्रदत्त अनुग्रह नहि, स्त्री आ पुरुषक निजी निर्णयक सार्वजनिक मान्यता अछि।

मुदा सामूहिक सहमति जतेक निर्बाध देखाओल गेल अछि, ताहिसँ सामाजिक भेदभावक वास्तविक हिंसा अपेक्षाकृत हलुक बुझाइ पड़ि सकैत अछि। अध्यायक आशावाद कथाचक्रक दीर्घ प्रयत्नक फल रूपमे उचित अछि, मुदा पाठमे विवाहक पाछाँक सामाजिक जीवन अथवा अड़चनक दृश्य अनुपस्थित अछि।

## नैतिक आ शिल्पगत उपलब्धि

–९१क मालतीक ज्ञान-अधिकार, –७६क पाठशाला आ –७३क धुन-परम्परा — तीनू –७२क विवाह-दृश्यमे भेटैत अछि। मोहनक वंशज उत्सवपूर्ण धुन बजबैत छथि; स्मृति आ संगीत आब सार्वजनिक आनन्दक रक्षक बनैत अछि। अध्यायक उपलब्धि अतीतक अन्यायकेँ केवल शोकमे जमा नहि राखि बदलल सामुदायिक व्यवहारमे देखेबाक अछि।

## अध्याय ७१ — महामारीक राति

### आकस्मिक सामूहिक मृत्यु आ कथात्मक अनुपात

अनुराधा आ गोपीनाथक विवाहक दस बरख बाद अज्ञात रोग अफवाह, यात्रिक समाचार आ अन्ततः गामक प्रत्यक्ष अनुभवक क्रमसँ पहुँचैत अछि। उत्तरी छोरक पाँच लोकक मृत्यु, सात दिनमे सत्रह मृतक आ तीन मासमे जनसंख्याक एक-तिहाई क्षति — एहि संख्यात्मक विवरणसँ संकटक विस्तार रचल गेल अछि। मुदा रोगक सटीक नाम वा ऐतिहासिक पहचान पाठमे नहि देल गेल; एकरा कोनो निश्चित बाहरी महामारीक प्रमाण मानब उचित नहि।

विमलाक प्रश्न व्यावहारिक अछि: अमावस्याक एक-एक नामक विशद स्मरणसँ दैनिक मृत्युकेँ कोना सम्हारल जाए? बूढ़बा पहिल बेर स्वीकार करैत छथि जे पुरान विधि संकट-परिमाण लेल अपर्याप्त अछि। एहि क्षण अनुष्ठानक मूल मूल्य नहि, ओकर गति आ आकार बदलबाक आवश्यकता स्पष्ट होइत अछि।

### व्यक्तिगत नाम आ सामूहिक उच्चारण

विमला “सामूहिक स्मरण”क विधि अपनबैत छथि: हर भोर मृतकक नाम एक स्वरमे पुकारब, विस्तृत व्यक्तिगत कथा सीमित करब, मुदा आदर सुरक्षित राखब। जेनेतक अवधि आ आवृत्तिक आधारपर ई नव विधि एकक अनुष्ठानक दीर्घ दृश्यसँ दैनिक पुनरावृत्तिपर आधारित लघु घटना-क्रम दिस बदलाव अछि। स्मरणक समय संकटसँ तालमेल करैत अछि।

बूढ़बाक संख्या नहि गनबाक कथन एकटा वैचारिक तनाव निर्माण करैत अछि: गिनती अतिरे क भेलासँ व्यक्तिगत नाम हरायब सकैत अछि, मुदा मृत्यु-संख्या सामाजिक क्षतिक सार्वजनिक परिमाण सेहो बतबैत अछि। कथा एक दिस एक-तिहाई जनसंख्याक क्षतिक गणना दैत अछि, दोसर दिस नामकेँ अंकमे सिमटाएबाक विरोध करैत अछि। एहि विरोधकेँ स्मरणक दू आवश्यकता — सामूहिक पैमाना आ व्यक्तिक विशिष्टता — रूपमे पढ़ब उचित अछि।

## रोग-नियन्त्रण आ स्मृति-संरक्षणक भिन्न काम

वैद्य रोगी अलग राखब, पानि उबालब आ मृतकक वस्त्र नष्ट करबाक उपाय बतबैत छथि। कथा ई सेहो कहैत अछि जे उपाय अपनओनिहार परिवारमे रोग घटल, मुदा मृत्यु जारी रहल। एतय लोक-अनुष्ठान चिकित्सा-विधिक विकल्प नहि; ओ मृतकक नाम आ जीवित लोकनिक सामूहिक शोककेँ सम्हारबाक प्रणाली अछि। एहि दू कामक भेद आलोचनात्मक रूपसँ महत्वपूर्ण अछि।

पर्यावरणीय आ सामाजिक बिपत्ति-आलोचनाक दृष्टिसँ रोगक प्रसार गामक सम्बन्ध-जालमे भय आ सहयोग दुनू रचैत अछि। “जे मरल, तकर नाम राखल; जे बाँचल, सम्हारल” लोकगीतक युग्म उपचार आ स्मरणक दायित्व समानान्तर रूपमे रखैत अछि। कथा चिकित्साक सफलताक अतिरञ्जित दावा नहि करैत, यद्यपि रोगक सामाजिक कारण, भिन्न टोलाक संसाधन-विषमता आ लम्ब पुनर्वासक विवरण सीमित अछि।

## समग्र मूल्याङ्कन

–७२क विवाहक उत्सवसँ –७१क सामूहिक शोक दिस अचानक गमन कृतिक भावात्मक व्याप्ति बढ़बैत अछि। मोहनक धुनक व्यक्तिगत शोक सँ सामूहिक नामोच्चारण धरि परम्परा निरन्तर रूप बदलैत अछि। अध्यायक सर्जनात्मक उपलब्धि एहि बातमे अछि जे गाम परम्पराकेँ अटल विधान नहि बनबैत: संकट बदलिते विधि बदलैत अछि, मूल्य नहि। अध्याय –७५ सँ –७१: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन दृश्यक परिवर्तन आ सामुदायिकता

–७५मे विश्वनाथक प्रश्न परम्पराक ज्ञानगत आधार चुनौती दैत अछि; –७४मे वृक्षक भौतिक रोग परम्पराक जीवित आधारकेँ संकटमे रखैत अछि; –७३मे मोहनक धुन स्मरणक माध्यम बदलैत अछि; –७२मे अन्तरजातीय विवाह स्मृतिक सामाजिक व्यवहारक नब रूप अछि; –७१मे महामारी स्मरणक गति आ मापन बदलैत अछि। पाँचू अध्यायमे परम्पराक मूल शक्ति अपनाकेँ बदलबाक क्षमता बनि कऽ उभरैत अछि।

## पाठक, श्रोता, दर्शक

–७५क विश्वनाथ जाँचनिहार पाठक अछि, –७४क बच्चे वृक्षक स्वास्थ्य-लेखक, –७३क श्रोता धुनक साक्षी, –७२क विवाह-समुदाय प्रत्यक्ष गवाह आ –७१क जीवित लोक सामूहिक

नामोच्चारणक सहभागी। एकटा साक्षीक अपन स्मृतिकेँ सँभारबाक एकतरफा कर्म धीरे -धीरे लोकक अलग-अलग ज्ञान आ श्रम रूपमे ससरै त अछि।

## आरक्षण

एहि पाँच अध्यायमे अनेक कठिन सामाजिक प्रश्न अपेक्षाकृत शीघ्र निष्कर्ष पबैत अछि। विश्वनाथक संशयक बाद भयावह निशान, वृक्षक उपचारक सहज समन्वय, विवाहक त्वरित स्वीकृति आ महामारीक अनुष्ठानिक पुनर्गठन — सभक सामाजिक मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा संघर्षक बहुस्तरीय दीर्घता चित्रित होइतँ कथा अधिक जटिल होइत। मोहनक निस्तब्ध शोक आ महामारीक अपर्याप्त व्यक्तिगत विधि एहि नैतिक संक्षेपक भीतर वास्तविक असहजता बचा रखैत अछि।

# अध्याय –७० — चन्ना गाछीक रोपाई

## महामारीक बादक रचनात्मक समय

–७१क महामारीमे व्यक्तिगत नामसँ सामूहिक नामोच्चारण दिस भेल बदलावकेँ –७० भौतिक भूगोलमे उतारै त अछि। विमला महामारीमे मरल परिवारसभक लेल गाछ रोपबाक प्रस्ताव रखैत छथि; हुनक सूचीमे हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, गंगेश-मालती आ अनुराधा-गोपीनाथ सेहो अबैत छथि। एहि क्रममे नव रोपनी केवल मृत्यु-स्मारक नहि रहि सुख आ अन्याय दुनूक स्मृतिस्थल बनैत अछि। कथाक घटना पाठककेँ बतबैत अछि जे स्मृति कण्ठसँ माटि धरि कोना पहुँचैत अछि।

पाठकक दृष्टिसँ ई स्थल आरम्भिक प्रास्ताविक कथनक उत्तर अछि: पहिने चन्ना गाछीक नाम उपन्यासक स्थापित भूगोल जकाँ आयल छल, आब ओकर उत्पत्तिकथा भेटैत अछि। जेरार जेनेतक आख्यान-क्रमक अर्थमे वर्तमान अध्याय कथाक भीतर अतीतक एहन भरपाई अछि जे पहिने परिचित वस्तुक कारणक उद्घाटन करैत अछि। मुदा एहि उत्पत्तिक स्पष्ट कथनक कारण पाठककेँ गाछीक रहस्य स्वतंत्र रूपसँ अनुमान करबाक अवसर अपेक्षाकृत कम रहैत अछि।

## स्थान, नाम आ सामूहिक स्मृतिक सम्बन्ध

पहिल चन्नाक गाछ महामारीमे मृत परिवारसभक सम्मिलित स्मृतिमे, दोसर हुलासाक लेल इनार दिस, तेसर जीवन्तीक लेल पोखरि दिस रोपल जाइत अछि। स्थानक ई चयन व्यक्तिक स्मृतिकेँ गामक व्यावहारिक दिशाबोधमे जोड़ैत अछि। मौरिस हाल्बवाक्सक सामूहिक स्मृतिक दृष्टिसँ गाम सामाजिक समूहक स्मरण लेल एकटा भौतिक आधार बनबैत अछि; गाछक ठाम इतिहासक तारीख मात्र नहि, परस्पर सम्बन्धक सङ् के त अछि।

यशपतिक गाछ सबसँ छोट आ किनारमे रोपल गेल अछि। एकरा सामान्य समतावादी स्मारकक निर्विवाद प्रमाण नहि मानल जा सकैत अछि: स्मरणक अधिकार मिलितो ओकर स्थान अलग अछि। ई असुविधाजनक विवरण उपन्यासक भीतर स्मृतिक राजनीति खोलैत

अछि। गाम ककरा केन्द्रीय स्थान देत आ ककरा किनार, से प्रश्न गाछ रोपबाक करुणामय संस्कारक भीतर जिउँ त रहैत अछि।

## बहुशरीर साक्षी आ पर्यावरणीय आख्यान

बूढ़बा कहैत छथि जे ओ आब पीपर मात्र नहि, गाछीक “हर एक गाछमे” उपस्थित छथि। –७४मे कीड़ाक रोगसँ पीपरक देह संकटग्रस्त भेल छल; एहि अध्यायमे अनेक जड़ि साक्षीक सम्भावित सुरक्षाक माध्यम बनैत अछि। नव देहक विस्तार अमरत्वक शाब्दिक दावासँ बेसी परस्पर निर्भर जीवनक रूपक रचैत अछि। पर्यावरणीय आलोचनाक दृष्टिसँ मनुष्यक नाम जीवित गाछ, माटि, पानि आ पालनक काजपर निर्भर अछि।

वृद्ध किसानक “चन्ना” गाछ सम्बन्धी कथन उपन्यासक आन्तरिक वनस्पति-विवरण अछि; एकरा बाहरी वैज्ञानिक प्रजाति-निर्धारणक प्रमाण मानब अनुचित होयत। रोपनीक प्रत्यक्ष श्रम, दीर्घ देखभाल आ प्राकृतिक मृत्यु-कटका सँ गाछीक रक्षा कोना होयत, तकर विस्तृत दृश्य नहि भेटैत। तथापि गाछक जड़ि आ स्मृतिक जोड़ कथाक अमूर्त नैतिकताकेँ धरतीक सतहपर टिकबैत अछि।

## कथनक आवृत्ति आ काल-विस्तार

पहिल रोपनी एकटा दृश्य अछि, तकर बाद “बरख-दर-बरख”क आवृत्तिपरक कथनमे अनेक पीढ़ीक रोपनी एकसंग कहि देल जाइत अछि। जेनेतक अवधिक शब्दावलीमे ई क्षणसँ दीर्घ कालक सारकथन दिस गमन अछि। एहि गति बिना बारह सय बरखक कथाविस्तार सम्भव नहि, मुदा चयनित नामसभक बारम्बार उपस्थिति समयकेँ केवल संख्या नहि रहय दैत।

–७३मे संगीत आ –७६मे नारिकेल पातपर लेखन स्मृति बचयबाक माध्यम छल; आब गाछी अक्षरविहीन “जीवित पुस्तकालय” कहल जाइत अछि। ई उपमा बहुमाध्यमीय स्मरणक विस्तार करैत अछि, मुदा “केवल श्रद्धा आ स्मृति”सँ गाछी पढ़ल जाएबक कथन व्याख्याक सामाजिक शिक्षा आ विवादक स्थानकेँ उपेक्षित कऽ सकैत अछि।

## सर्जनात्मक निर्णय

अध्यायक मूल उपलब्धि –७१क मृत्यु-गणना आ –७४क वृक्ष-रोगक बीच एकटा ठोस उत्तर गढ़ब अछि: एकटा गाछ जोखिममे अछि, अनेक गाछक संग जड़ि फैलैत अछि। विमलाक प्रस्ताव बूढ़बाक सर्वज्ञ शक्तिसँ नहि, सामान्य लोकक आयोजनसँ जन्मैत अछि। ई कथाकेँ चमत्कारक आश्रय सँ सामुदायिक कर्म दिस मोड़ै त अछि।

सीमा ई जे स्मृति-रोपनीक दीर्घ सफलता घोषणा आ सारकथनसँ अधिक सिद्ध होइत अछि; असफल रोपनी, गाछक मृत्यु, भूमि-अधिकार वा श्रम-बँटवाराक विरोध कम दृश्य होइत अछि। यशपतिक किनारक गाछ एहि उत्सवक भीतर असमान स्मरणक एकटा सटीक, जाँचबाक योग्य संकेत बनल रहैत अछि।

## अध्याय –६९ — गज-ग्राहक कथ ।

## मूल कथा आ स्थानीय घटनाक सम्बन्ध

सूर्यनाथक समयमे गजराज नामक हाथी जोड़ी पोखरिमे पानि पीबाक लेल उतरैत अछि आ विशाल गोहिक पकड़मे फँ सि जाइत अछि। वृद्ध पंडित एतय गजेन्द्र-मोक्षक पुरान कथा स्मरण करबैत छथि। मुदा पात्रसभ केवल पौराणिक घटनाक अभिनय नहि करैत: सूर्यनाथक नेतृत्वमे एक दल सामूहिक प्रार्थना करैत अछि आ दोसर रस्सा-बाँस लऽ भौतिक बचावक प्रयास करैत अछि। मूल पाठक इएह समवर्ती क्रिया एहि अध्यायक निर्णायक घटना अछि।

पूर्ववर्ती –१००मे शंखक गलत पहिचान ज्ञानक प्रश्न छल; एतय जलक गोहि प्रत्यक्ष देहगत संकट अछि। शीर्षकक गज-ग्राह रूप पुरातन धार्मिक स्मरण आ वर्तमान स्थानीय गोहिक पकड़केँ एक-दोसरामे पढ़बाक साधन बनैत अछि। ई अन्तर्पाठीयता शाब्दिक अनुकृति नहि, कथा-परम्पराक नब सामाजिक विनियोग अछि।

## दू कथास्तर आ अर्थक प्रतिस्पर्धा

पुराणक गजेन्द्र कथा पंडितक मुखसँ कथित कथा भीतरक कथा अछि; वर्तमान गजराजक घटना प्रधान कथास्तरपर घटैत अछि। जेरार जेनेतक कथास्तर-सिद्धान्तमे ई अन्तर्निहित वाचन वर्तमान कार्यक एकटा व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि। मुदा बूढ़बाक “प्रार्थना अकेले पर्याप्त नहि” कथन पुरातन धार्मिक प्रतिमानकेँ बदलैत अछि: मदद मानवीय श्रमसँ सेहो अबैत अछि।

अन्तमे बूढ़बा पौराणिक कथा आ स्थानीय परम्पराकेँ “एकहि सत्यक भिन्न रूप” कहैत छथि। ई अर्थनिर्धारण पात्रसभक भिन्न सम्भावित व्याख्याकेँ समेटैत अछि, तथापि पाठक लेल प्रश्न बचैत अछि: गोहि प्रार्थनाक प्रभावसँ पकड़ छोड़लक अथवा रस्सा-बाँसक दबावसँ? पाठ एकर निर्णायक वैज्ञानिक कारण नहि दैत, तेँ आलोचनाकेँ अद्भुत कथन आ प्रत्यक्ष बचावक बीचक अन्तर सुरक्षित राखबाक चाही।

## जल, गोहि आ पशुक सक्रिय उपस्थिति

गोहि –९०क जलसमाधि आ पहिनुक संकटक कथा सँ अलग एतय मारक पकड़क रूपमे सक्रिय अछि। पानिक भीतरक दू प्राणीक संघर्ष मानव-समुदायक नियन्त्रणबाहिर शुरू होइत अछि। पर्यावरणीय अध्ययनमे एहि दृश्यकेँ मनुष्यकेन्द्रित उद्धारक कथा मात्र नहि मानि पशु-आचरण आ मनुष्यक हस्तक्षेपक अनिश्चित सीमा रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

कथा गोहिक जकड़न ढील देबाकेँ “जेना ओकरा स्वयं बुझायल” रूपमे कहैत अछि, जकरा गोहिक वास्तविक मनोविज्ञानक प्रमाण नहि मानल जा सकैत अछि। कथावाचकक “जेना” उपमा अभिप्राय रचैत अछि, निश्चित ज्ञान नहि। पशुक संवेदना आ अधिकारपर अलग बहस नहि खुलैत; तथापि गोहिकेँ मारि देबाक प्रस्तावक स्थानपर क्षतिहीन बचावक प्रयास नैतिक महत्त्व रखैत अछि।

## समय, तनाव आ समुदायक सामूहिक कर्तृत्व

घटनाक आरम्भ तीव्र अछि: हाथीक पुकार, भीड़क असमर्थता, पंडितक स्मरण, सूर्यनाथक दौड़ आ दू मोर्चापर काज। “बहुत काल संघर्षक बाद” कथन उद्धारक सटीक अवधि नहि बतबैत, मुदा संकट-कालक दबावक सङ् के त दैत अछि। लोकगीतमे युग-युगक गज-संघर्षक रूपक दृश्यगत समयकेँ पौराणिक विस्तृततताक संग जोड़ैत अछि।

मानवीय कर्तृत्व एक नायकक भीतर सीमित नहि। पंडित कथाक स्मृति दैत छथि, सूर्यनाथ आयोजन, युवकसभ रस्सा-बाँसक काज, स्त्री-पुरुष प्रार्थना। बाख्तिनक संवादधर्मिताक अर्थमे पूर्ण बहुस्वरता होएबाक लेल ई पात्रसभक अर्थगत स्वायत्तता सेहो चाही; एतय अन्तिम व्याख्या बूढ़बाक केन्द्रित कथनमे रहैत अछि।

## मूल्याङ्कन आ प्रश्न

अध्याय पुरान धार्मिक आख्यानकेँ निष्क्रिय प्रतीक्षा सँ सामूहिक व्यवहारक प्रेरणा बनबैत अछि। एकर सर्जनात्मक सफलता एहि समसामयिक जोड़ीमे अछि जे शाब्दिक उद्धारक आश्वासन जीवनरक्षाक व्यवहारिक श्रमकेँ नकारैत नहि।

मुदा विशेष भेंटक वचन आ ओकर निर्वाह स्थानीय पारिस्थितिक सम्बन्धक जटिलता खोलबाक अपेक्षा तुरन्त अनुष्ठानिक समाधान बनैत अछि। गजराजक जीवित रहब महत्त्वपूर्ण

अछि, मुदा गोहि फेर किएक जकड़लक, भेंटक पर्यावरणीय स्वरूप की छल, आ जोखिम फेर होइत तँ कोन उपाय छल—ई प्रश्न अनुत्तरित अछि।

## अध्याय –६८ — अदालतक पहिल तारीख

### न्यायक वचन आ जीवनक भिन्न समय

कमलिनीक समयमे औपचारिक अदालत पुरान वाद-शालाक स्थान लैत अछि। लिखित कानूनक घोषित समता गामक लोककेँ आकर्षित करैत अछि; मुदा गरीब किसान भोला पड़ोसीक पशुसँ खेत उजड़बाक क्षतिपूर्ति माँगैत पाँच बरख धरि न्यायिक प्रक्रियामे अटकि जाइत अछि। तेसर बरखो ओकरा “अगिला तारीख” भेटैत अछि। अन्तिम निर्णय भोलाक पक्षमे होइत अछि, मुदा ओहि समय धरि खेतक उत्पादन आ बालकसभक जीवन-समय क्षतिग्रस्त भऽ चुकल अछि।

ई घटनाक नैतिक केन्द्र निर्णयक सत्य-असत्य नहि, निर्णयक समय अछि। जेनेतक आख्यान-अवधिक दृष्टिसँ पाँच बरखक विलम्ब किछु अनुच्छे दमे समेटल गेल अछि, मुदा अदालतक बरामदापर भोलाक थाकल देह ओहि सारकथनक पीड़ा दृश्य रूपमे प्रकट करैत अछि। संक्षिप्त कथन आ दीर्घ प्रतीक्षा एक-दोसराक विपरीत प्रभाव उत्पन्न करैत अछि।

### संस्थागत हिंसा आ समयक हरण

वृद्ध वकील अदालतक विलम्बकेँ एहन “भूख” कहैत अछि जे मनुष्यक समय आ जीवन खा जाइत अछि। बूढ़बा एहि रूपककेँ भविष्यक “प्रेत”क रूपमे विकसित करैत छथि; ओ स्पष्ट करैत छथि जे ई कोनो व्यक्तिगत दुष्टचरित्र नहि, सम्पूर्ण व्यवस्थाक शिथिलता अछि। आधुनिक सत्ता-विमर्शक दृष्टिसँ प्रतीक्षा प्रशासनक तटस्थ बाहरी परिघटना नहि, संसाधनहीन व्यक्तिपर लागत थोपबाक प्रक्रिया अछि।

–९२मे सुखदेव जल-घड़ीक क्रमक कारण मृत होइत छथि; –६८मे भोला जीवित रहितो अपन श्रम-समय गमबैत अछि। ई अन्तर लोककथा आ संस्था, प्राणहानि आ आजीविका-हानि, दूनूकेँ समयक अन्यायक एके शृंखलामे जोड़ैत अछि। मुदा दुनू घटना एके नहि; भोला न्यायिक रूपसँ जीतैत अछि। कथा एहि विरोधाभासक बलपर टिकैत अछि जे जीत आ क्षति एकसंग सम्भव अछि।

## अदालतक प्रेत: रूपक कि अद्भुत सत्ता

अध्यायारम्भ “अदालतक प्रेत”क आगमन सूचित करैत अछि, मुदा एहि अध्यायमे प्रेतक वास्तविक अलौकिक प्रकटाव नहि भेटैत। वकीलक भूखक कथन आ बूढ़बाक भविष्यक भय रूपक-निर्माण अछि। तोदोरोवक अद्भुतता-सिद्धान्त लागू करैत एतय प्रमाणित अलौकिक घटना घोषित करब समयसँ पहिने होयत; पाठक असामान्य भाषामे संस्थाक साधारण क्रू रता देखैत अछि।

लोकगीतक “अदालत देह पुछै, गाम नाम राखै” पाँति आधिकारिक संस्था आ स्मृति-अभिलेखक भेद बनबैत अछि। मुदा लोक-स्मरण स्वयं कानूनी निर्णय देबाक विकल्प नहि; कमलिनी प्रभावित लोकक लेल सहायता, सलाह आ संग देबाक व्यवस्था प्रस्तावित करैत छथि। ई यथार्थवादी सीमा कथा बचा रखैत अछि।

## दृष्टिबिन्दु, वर्ग आ पात्रक मौन

भोला संग पाठक अदालत जाइत अछि, मुदा निर्णायक विवरणक अधिकांश भाग कमलिनी आ बूढ़बाक संवादसँ अर्थ पबैत अछि। गरीब किसानक प्रत्यक्ष अनुभव थाकल देह, काजक नष्ट दिन आ बच्चासभक भूख रूपमे उपस्थित अछि; ओकर अन्तर्मनक अलग, दीर्घ एकालाप नहि। ज्ञानगत अन्यायक आलोचनामे एहि दूरीकेँ देखब जरूरी अछि।

औपचारिक अदालतक समान अधिकारक दावा स्वीकार कएल गेल अछि, मुदा वकीलक शुल्क, जातिगत शक्ति, गवाहक असमानता अथवा प्रशासनिक कारणक विशिष्ट विवरण नहि भेटैत। अत: पाठक न्यायिक विलम्बक संरचनात्मक क्षतिक स्पष्ट रूपक पबैत अछि, ओकर पूर्ण संस्थागत अनुसन्धान नहि।

## मूल्याङ्कन

एहि अध्यायक उपलब्धि न्यायकेँ परिणामक जगह समयक सम्बन्धमे परखब अछि। पाँच बरख बाद अनुकूल निर्णय उपन्यासक सबसँ कठोर व्यङ्ग्य बनैत अछि: कागचपर सुधार जीवनक क्षति उलटा नहि सकैत। “प्रतीक्षाक साक्षी” बनबाक बूढ़बाक संकल्प स्मृति-परम्पराकेँ मृतकसँ जीवित पीड़ित धरि विस्तारित करैत अछि।

सीमा ई जे अदालतक आरम्भ, विवाद आ अन्तिम आदेश सभ तीव्र सारकथनमे निपटैत अछि; भोलाक प्रक्रिया-जीवनक कतेको सूक्ष्म दृश्य अनुपस्थित अछि। मुदा लोकन्याय आ लिखित समता बीचक अनिर्णीत तनाव आगूक अध्याय लेल उत्पादक प्रश्न बनल रहैत अछि।

## अध्याय –६७ — परदेशक पुकार

### परदेशक करार आ अपठित अधिकार

जानकीक जमानामे मीठ बोलीवला आढ़तिया दूर देशक तीन बरखक काजक प्रलोभन दैत अछि। भोला परिवारक रामसेवक करार पूरा पढ़ने वा पढ़ा सकने बिना औंठा लगा दैत अछि। एतय प्रवास केवल साहसिक गमन वा धन-संचय नहि, कर्ज, कम भूमि आ लिखित समझौताक असमान पहुँचक परिणाम अछि। उपन्यासक पूर्ववर्ती नारिकेल पात पाठशालाक साक्षरता-आन्दोलनक पृष्ठभूमिमे ई अपठित करार सामाजिक विकासक असमान फैलाव देखबैत अछि।

रामसेवकक प्रस्थान दिस कथा संक्षेपमे चलैत अछि, मुदा ओकर माए विदाइक राति पीपर लग जे प्रश्न करैत छथि, से दृश्य भावात्मक केन्द्र बनैत अछि। पाछाँ रामसेवकक कथा ओकर अनुपस्थितिसँ कही जाइत अछि: ओ नहि घुरैत अछि, कोनो पत्र नहि अबैत अछि, आ ओकर जीवन-मरण अनिर्णीत रहैत अछि। कथा ओकर परदेशक अनुभव नहि गढ़ैत; ई अनुपस्थिति अपन आपमे संरचनात्मक घटना अछि।

### नकारात्मक साक्षी आ कथावाचकक ज्ञान-सीमा

बूढ़बा स्पष्ट स्वीकार करैत छथि जे गामक बाहिर हुनक साक्षी-शक्ति कतेक दूर पहुँचैत अछि, से हुनका नहि बुझल। ओ रामसेवक जीवित छथि कि मृत, से सेहो नहि कहि सकैत छथि। एहन आत्मसीमांकन सर्वज्ञ-साक्षीक साधारण रूपकेँ प्रश्नांकित करैत अछि। कथन-विज्ञानमे ई शून्य-जानकारी मात्र नहि, ज्ञानक अधिकारक स्पष्ट सीमांकन अछि।

रामसेवकक माए बरख-दर-बरख चिन्ह छु बैत छथि, आ बूढ़बाक उत्तर सत्यक बदला सान्त्वना नहि गढ़ैत। मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत न्यायसँ सम्बन्धित दृष्टिमे पीड़ितक प्रश्नकेँ असत्य निश्चिततासँ नहि ढकब नैतिक काज अछि। मुदा मृतकक नाम-आधारित प्रथामे जीवित वा मृत अनिश्चित व्यक्तिक उपस्थिति एक अलग शोक-समस्या उपस्थित करैत अछि।

## अनुपस्थितिक स्मृति आ समयक विस्तार

जानकी गाम छोड़ि गेल व्यक्तिक लेल पीपरक जड़िमे पत्थर वा धागा राखबाक आ अमावस्याक नाम-पुकार करबाक प्रस्ताव दैत छथि। एहि चिन्हमे भौगोलिक दूरी आ सामाजिक सम्बन्ध एक ठाम उपस्थित होइत अछि। हाल्बवाक्सक सामूहिक स्मृतिक विश्लेषणसँ ई परिवारक व्यक्तिगत शोककेँ एकटा आवृत्त सामुदायिक विधिमे बदलैत अछि।

प्रवासी चाहे जीवित छथि वा नहि, नामक चिन्ह “प्रतीक्षामे” रहैत अछि। एकरा अनुपस्थितिक अधूरल शोक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; निर्णयक अभाव स्मरणकेँ बन्द नहि करैत, बल्कि दरमियानी अवस्थामे रखैत अछि। कथाक पुनरावृत्तिपरक समय—अमावस्यासँ अमावस्या—माएक अविराम अनिश्चितताकेँ औपचारिक रूप दैत अछि।

## उत्तरऔपनिवेशिक श्रम-विमर्श आ सीमा

आढ़तिया दूर देशक बेहतर वेतनक स्वप्न बेचैत अछि, मुदा करारक भाषा रामसेवकक पहुँचसँ बाहर अछि। श्रम-विमर्शक दृष्टिसँ देहक गमन आ दस्तावेजक अधिकार अलग शक्ति-सम्बन्ध अछि। तथापि मूल अध्याय कोन देश, कोन उपनिवेश वा कोन ऐतिहासिक श्रम-प्रणाली छल, से निश्चित नहि करैत; तेँ एकरा विशिष्ट देश-इतिहासक तथ्य घोषित करब उचित नहि।

परदेशक लोक के वळ “नाम” बनि रहि गेलासँ ओकर श्रम, सम्भावित शोषण आ अधिकारक प्रत्यक्ष कथा अनकहल रहैत अछि। एकर सौन्दर्यात्मक प्रभाव गम्भीर अछि, मुदा सामाजिक विश्लेषणक सीमा सेहो: पाठक रामसेवकक विदेशक अनुभव नहि, गामक प्रतीक्षाक अनुभव मात्र जनैत अछि।

## मूल्याङ्कन

–६८क भोला न्यायिक समयमे अटकल छल; –६७क रामसेवक भौगोलिक दूरी आ समाचार-विराममे अटकल अछि। दुनू स्थितिमे बूढ़बा सटीक समाधान नहि, नाम आ प्रतीक्षाक साक्षित्व दैत छथि। ई सीमित ज्ञानक स्वीकृति कथाकेँ नैतिक विश्वसनीयता प्रदान करैत अछि।

अध्यायक महत्त्व “परदेशक पुकार” नामक नव विधिक उत्पत्तिमे अछि; मुदा सान्त्वना आ श्रमिक संरक्षण एक नहि। भविष्यक कथा जँ करारक असमानताकेँ जाँचत तँ एहिठाम उठल प्रश्न अधिक सामाजिक विस्तार पायत।

## अध्याय –६६ — स्त्री सभक राति-सभ ।

### घरक हिंसासँ सार्वजनिक गवाही धरि

सुलोचनाक समयमे पद्मा पतिक दीर्घ मारपीटक विरुद्ध अदालत जाइत छथि; न्यायाधीश ओकरा “घरेलू विषय” कहि बाहर सुलझेबाक सलाह दैत छथि। एहि एक कथनसँ राज्यक सार्वजनिक न्याय आ स्त्रीक निजी देहक अनुभवक सीमा उजागर होइत अछि। पद्माक आहत देह पर पारिवारिक निजताक आवरण चढ़ाओल जाइत अछि, जकर विरुद्ध सुलोचना स्पष्ट कहैत छथि जे ई अन्याय अछि।

रत्ना, गौरी आ फु लेसरीक पुरान छौंकी-परम्पराकेँ सुलोचना औपचारिक “स्त्री सभक राति-सभा” बनबैत छथि। एहि परिवर्तनक केन्द्र व्यक्तिगत पीड़ाक सामूहिक सुनवाइ अछि। न्याय पहिने पद्माक निजी गप बुझल गेल, आब सभाक सार्वजनिक मुद्दा होइत अछि। स्त्रीवादी आलोचनाक दृष्टिसँ निजी जीवनमे शक्तिक असमानता सामाजिक न्यायसँ अलग नहि।

### गवाहीक बहुस्वरता आ ज्ञानगत मान्यता

राति-सभामे अनेक स्त्री पद्माक चोटक निशान देखबाक आ ओकर रोदन सुनबाक प्रत्यक्ष गवाही दैत छथि। बाख्तिनक संवादधर्मिताक ठाम एतय केवल एकटा सामूहिक घोषणाक एकस्वरता नहि, अनेक अनुभवक संगति देखब जरूरी अछि। अलग गवाही एक आरोपक सार्वजनिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि; मुदा अन्तिम सामूहिक स्वर व्यक्तिगत भिन्नताकेँ ढाँकि सेहो सकैत अछि।

मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक अवधारणासँ अदालतक आरम्भिक व्यवहारकेँ पढ़ि सकैत छी: पद्माक कथन विश्वसनीय ज्ञानक रूपमे ग्रहण नहि कएल जाइत। राति-सभा कियो “सुनल” नहि मात्र, बल्कि गवाही सुनबाक नियम बदलैत अछि। तथापि निर्णयक कानूनी बाध्यता नहि अछि; सामुदायिक दबाव आ राज्यक संस्थागत संरक्षण भिन्न अछि।

## न्यायक शर्त, सुरक्षा आ अन्तर्निहित सीमा

राति-सभा पतिक व्यवहार सुधरबाक निर्देश दैत अछि आ फेर हिंसा भेलासँ पद्मा अपन मैहर जाएबाक लेल स्वतंत्र होयत, गाम ओकरा आ बच्चाकेँ सहायता देत। ई सहायता महत्त्वपूर्ण अछि, कारण स्त्रीक सुरक्षित निर्गमनक सामुदायिक दायित्व स्वीकृत भेल। मुदा निर्णयक संरचना तखनहु प्रश्न उठबैत अछि: हिंसा पहिनहि भऽ चुकल, तैयो तत्काल स्वतन्त्र सुरक्षित आवास, आर्थिक अधिकार वा दण्डात्मक न्यायक प्रबन्ध स्पष्ट नहि।

पतिक परिवार सभाक आरम्भमे इन्कार करैत अछि, फेर गामक स्त्री-समाजक एकतासँ झुकै त अछि। कथाक समाधान त्वरित अछि; हिंसाक पुनरावृत्ति, सत्ता-संतुलन आ पद्माक बादुक इच्छा पर विस्तार नहि। एहि कारण उपलब्धि संस्थाक निर्माणमे बेसी अछि, व्यक्तिगत पीड़िताक पूर्ण उपचारक यथार्थवादी चित्रणमे कम।

## नव संस्था आ कथास्तरक दीर्घ सम्बन्ध

–८७क टोलाक द्वारपर फु लेसरी आ कमला देवीक साझा प्रतिरोध तथा –८८क गौरीक विरुद्ध आरोप—दूनूक स्मृति एहि अध्यायमे संस्थागत रूप पबैत अछि। मूल कथामे बूढ़बा पुरान स्त्रीसभक नाम उच्चारि एहि वंशावलीकेँ जोड़ैत छथि। ई पुनरागमन अध्यायसभकेँ स्वतन्त्र घटनासंग्रह नहि रहय दैत, बल्कि विगत अनुभवसँ नव नियम बनेबाक दीर्घ प्रक्रिया बनबैत अछि।

भविष्यक खण्ड-१मे राति-सभाक रूप बदलबाक कथावाचकीय सूचना दूरगामी पूर्वाभास अछि। जेरार जेनेतक दृष्टिसँ ई भविष्यसूचक कथन पाठककेँ संस्थाक दीर्घ यात्रा बुझबैत अछि; मुदा पाठककेँ आगूक स्वायत्त खोजक बदला पहिले सँ दिशा सेहो दैत अछि।

## सर्जनात्मक निर्णय

अध्यायक सर्जनात्मक शक्ति पद्माक एकटा नकारल गवाहीकेँ संस्थाक जन्म-बिन्दु बनाबैत अछि। न्यायाधीशक “घरेलू विषय” आ सुलोचनाक “ई अन्याय”क विरोध रचनाक नैतिक संरचना स्पष्ट करैत अछि। स्त्रीक अनुभवक मान्यता एकटा सामाजिक माध्यम प्राप्त करैत अछि, केवल उपदेश नहि।

मुदा समुदाय स्वयं सभ परिस्थिति मे न्यायसंगत रहत, ई मानि लेब खतरनाक होयत। राति-सभाक सामाजिक बल ककरा विरुद्ध आ कोना प्रयोग होयत, पीड़िताक गोपनीयता के ना सुरक्षित रहत, आ कानूनी उपचारसँ ओकर सम्बन्ध की होयत—ई प्रश्न उपन्यासक सम्भावित आलोचनात्मक तनाव बचा रखैत अछि। अध्याय –७० सँ –६६: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन स्मृतिक माध्यमसँ संस्थागत अभिलेख धरि

–७०मे गाछी देहधारी स्मृति अछि; –६९मे पौराणिक कथाक स्थानीय पुनःप्रयोग; –६८मे अदालतक कागच आ लम्ब प्रतीक्षा; –६७मे पीपरक जड़िमे परदेशी लोकक चिन्ह; –६६मे स्त्रीसभक श्रुत गवाही। पाँचू अध्याय स्मरणक अधिकारकेँ अलग माध्यममे खोजैत अछि। स्मृति मात्र पुरान बात रखब नहि, वर्तमान काजक आधार गढ़ब बनैत अछि।

## साक्षीक सीमा आ श्रमक आवश्यकता

गाछीक रोपनीमे विमलाक प्रस्ताव, गजराजक बचावमे युवकसभक रस्सा-बाँस, भोलाक संग रहबाक कमलिनीक व्यवस्था, रामसेवक लेल जानकीक चिन्ह आ पद्माक लेल सुलोचनाक सभा—सर्वत्र बूढ़बाक साक्षित्व आवश्यक मुदा पर्याप्त नहि। उपन्यासक नायकत्व चमत्कारी अकेल साक्षीसँ बहुजनक संगठित श्रम दिस ससरै त अछि।

## संस्थाक उपलब्धि आ संरचनात्मक आरक्षण

–७०मे गाछी स्मृतिक असमान स्थान सेहो देखबैत अछि; –६९मे प्रार्थना आ भौतिक बचावक कारण अलग नहि; –६८मे अनुकूल न्यायो विलम्बक क्षति नहि मेटबैत; –६७मे नामक रक्षा श्रमिकक जीवनक खबर नहि दैत; –६६मे राति-सभा कानूनी सुरक्षा नहि बनि जाइत। पाठकक आलोचनात्मक काज ई अन्तरसभक जाँच अछि, न कि सभ समाधानकेँ समान सफल कहि देब।

## अध्याय -६५ — नकली भूतक जुलूस

### साक्षीक नामक दुरुपयोग

हरिनन्दनक समयमे कालीचरण स्वयंकेँ “बूढ़बाक असली आत्मा” कहि गरीब परिवारसभसँ पैसा वसूलैत अछि। किराएक भूत, वस्त्र आ दीपसँ तैयार रातिक जुलूस डरक व्यापार अछि। एक पीड़ित परिवार अपन जमा-पूँजी गमा कऽ गढ़ नारिकेल पहुँचैत अछि; एहि कारण छलक कथा धार्मिक विचित्रता नहि, आर्थिक अन्याय बनैत अछि।

एतय मुख्य वस्तु भूतक अस्तित्व नहि, “बूढ़बा” नामक अधिकारक नकल अछि। नाम जे पहिने स्मरणक रक्षा छल, आब शोषणक व्यावसायिक चिह्न बनि सकैत अछि। -१००क शंख-रजत भ्रमक नव सामाजिक विन्यास ई अछि जे चमकक स्थानपर पवित्र प्रतिष्ठा गलत पहिचान पैदा करैत अछि।

### अनुष्ठानक नाटकीयता आ खुलासा

कालीचरणक सहायकसभ किराएक भूतक रूप धारण करैत छथि; लोकगीत “के छह?” प्रश्नकेँ डर तोड़बाक औजार बनबैत अछि। प्रदर्शन, वेश, ध्वनि आ सार्वजनिक दर्शक—नाटकक सभ उपकरण—ठगीक सेवा करैत अछि। संकेतन-विज्ञानक अर्थमे दृश्य प्रामाणिकता पैदा करैत अछि, मुदा दृश्य सँ सत्य अनिवार्य नहि निकलैत।

बूढ़बाक कसौटी साफ अछि: सच्चा साक्षी भय बेचि पैसा नहि माँगैत। ई लोक-शिक्षा उपयोगी अछि, मुदा सत्यापनक व्यापक नियम नहि; शोषण नि:शुल्क दावाक रूपमे सेहो आबि सकैत अछि। अध्याय जोखिम-विश्लेषणक समग्र ढाँचा नहि, एकटा नैतिक लक्षण-परख प्रस्तुत करैत अछि।

### बाख्तिन आ सामाजिक स्वीकृति

कालीचरणक स्वर बूढ़बाक प्रामाणिक स्वरक अनुकरण करैत अछि; कथामे दुई “बूढ़बा” दावाक प्रतियोगिता बनैत अछि। बाख्तिनक द्विस्वरीय वाणी अवधारणा एतय उपयोगी अछि,

कारण नकली दावा अर्थ लेल पुरान प्रतिष्ठापर परजीवी अछि। ओ स्वतन्त्र उपदेश नहि, दोसराक नामसँ अपन अर्थ खींचैत अछि।

तथापि कालीचरणक मनोविज्ञान, ठगाइल परिवारक पुनर्वास आ नियमनक प्रक्रिया विस्तारसँ नहि भेटैत। प्रचार सफल होइतहि ठग बिलाइत अछि। ई तीव्र समाधान शिक्षापरक आख्यानक लक्षण अछि आ कथामे दण्ड वा क्षतिपूर्तिक दीर्घ जटिलता कम करैत अछि।

## डरक राजनीतिक अर्थ

भयकेँ आर्थिक लाभक साधन बनेबाक चित्रण फू कोक सत्ता-ज्ञान सम्बन्धसँ पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा एतय जटिल संस्थागत अनुशासनक स्थानपर अवसरवादीक प्रत्यक्ष ठगी अछि। लोकक विश्वासक सामाजिक पूँजीक दुरुपयोग दृश्य रूपमे उपस्थित होइत अछि।

गरीब परिवारक ठगायल रहबकेँ केवल अन्धविश्वासक व्यक्तिगत त्रुटि कहि देब उचित नहि। सूचना-असमानता, पवित्र नामक सामाजिक प्रतिष्ठा आ भयक सार्वजनिक प्रदर्शन ठगीक शर्त बनेने अछि।

## समीक्षात्मक निष्कर्ष

अध्यायक सफल बिन्दु लोकप्रश्न “के छह?” अछि: प्रश्न पवित्र नामपर दावा करएबलाक उत्तरदायित्व माँगैत अछि। परम्परा स्वयं आलोचनात्मक विवेकक शिक्षा दैत अछि।

मुदा “सच्चा साक्षी पैसा नहि माँगैत”क एकमात्र कसौटी सम्भावित नव छलसभ लेल पर्याप्त नहि। उपन्यास अपन परम्पराक व्याख्याक नियन्त्रणक प्रश्न खोलैत अछि, जे आगूक माध्यमसभमे आर तीक्ष्ण होयत।

## अध्याय –६४ — सुखदेवक बदल ।

## शीर्षकक प्रतिशोध सँ न्याय दिस मोड़

चर्मकार टोलाक भूमि पर रघुबीर सिंहक दावा नव राजस्व सर्वेक्षणक अवसरमे उठैत अछि। चम्पावती भय वा हिंसाक बदला यादवानन्दक छाया-पंजी, हरिपतिक पुरान पोथी, पाठशालाक शिक्षित वकील आ स्त्रीसभक राति-सभाक समर्थन जुटबैत छथि। रघुबीरक दावा अदालतमे प्रमाणहीन सिद्ध होइत अछि।

“सुखदेवक बदला” शीर्षक प्रतिशोधक अपेक्षा जगबैत अछि; अन्तमे बूढ़बा ओकर अर्थ न्यायिक जीत कहैत छथि। कथा शीर्षकक सम्भावित हिंसाकेँ ऐतिहासिक प्रतिकारक शान्त प्रक्रियामे बदलैत अछि। मुदा लोकगीतमे सुखदेव अपन हाथे आगि नहि लगबबाक प्रसंग आरम्भ होइत अछि, जखन मुख्य कथामे चम्पावतीक प्रमाण-युद्ध अधिक प्रमुख अछि।

## दीर्घ कालक संचयन आ कथा-कारण

–७८क छाया-पंजी, –८०क लेखन, –७६क पाठशाला आ –६६क राति-सभा एकहि प्रकरणमे एकत्र होइत अछि। पॉल रिकरक कथात्मक विन्यासक दृष्टिसँ अलग समयमे घटल कार्यसभ पछिलु निर्णयक कारण बनैत अछि। दीर्घ कृतिमे पुनरावर्तन आब केवल स्मरण नहि, कथाक परिणाम पैदा करएबला साक्ष्य अछि।

–६८मे पाँच बरख बाद भोला जीति कऽ सेहो हानि उठबैत छल; एहि बेर अदालतक निर्णय आशावादी अछि। ई विरोध सामुदायिक तयारीक महत्त्व देखबैत अछि, मुदा एकरे बलपर समूचा न्यायिक व्यवस्था भरोसेमन्द सिद्ध भेल, एहन निष्कर्ष नहि निकलैत।

## जाति, भूमि आ अभिलेखीय अधिकार

विवाद चर्मकार टोलाक जमिनपर अछि; तेँ ई केवल दू व्यक्तिक सम्पत्ति-प्रश्न नहि, ऐतिहासिक सामाजिक शक्ति-सन्तुलनक प्रश्न अछि। छाया-पंजी आधिकारिक अभिलेखक अस्पष्टताक विरुद्ध वैकल्पिक प्रमाण बनैत अछि। ज्ञानगत न्याय एतय सभासदक बात सुनबमात्र नहि, निम्नस्थित समुदायसँ जुड़ल लिखित साक्ष्य स्वीकार करबमे अछि।

तथापि चर्मकार टोलाक लोकक अपन प्रत्यक्ष संवाद अथवा भूमिपर श्रमक जीवन-स्थिति कम देखाओल गेल अछि। मुख्य प्रयत्न चम्पावती आ वकीलसभक नेतृत्वमे केन्द्रित अछि। एहि संरचनामे अधिकारक रक्षा सफल अछि, मुदा अधिकारधारी समुदाय स्वयं कथाक केन्द्र कतेक अछि, से प्रश्न उठैत अछि।

## न्यायक सामाजिक संस्थासभ

चम्पावतीक काज एक नायकक चमत्कार नहि: अभिलेखागार, वकील, पाठशाला, स्त्री-सभा आ अदालत आपसमे जुड़ैत अछि। फू कोक सत्ता-विमर्शक सहायतासँ प्रमाणक संस्थागत निर्माण पर ध्यान जाएत; तथापि पाठ ओ संस्थासभक जटिल प्रतियोगिता विस्तारसँ नहि रचैत।

न्यायाधीश गामक सुसंगत अभिलेखक प्रशंसा करैत छथि। एहि कथनक एकटा जोखिम अछि: जे समुदायक लग लगातार प्रमाण बचेलाक संसाधन नहि, ओकर अधिकार की होयत? उपन्यास एक सफल आदर्श रखैत अछि, सर्वसाधारण न्याय-सुनिश्चितता नहि।

## मूल्याङ्कन

शीर्षकक प्रतिशोधक रूपान्तर, अनेक पूर्व-अध्यायक संस्थाक फल आ जातिगत भूमि-अधिकारक रक्षा—एहि अध्यायक तीन उपलब्धि अछि। अनुष्ठानक स्मृति अन्ततः सार्वजनिक परिणाम दैत अछि।

मुदा विरोधीक दावा सरल प्रमाणहीन रहब आ अदालतक शीघ्र स्पष्ट निर्णय संघर्षकेँ सुभीता देबैत अछि। “सुखदेवक बदला” भावुक समापनसँ अधिक प्रभावी तखन होइत जखन चर्मकार परिवारक प्रत्यक्ष स्वरक स्थान बेसी बनित।

## अध्याय –६३ — छापाखानाक पहिल पन्ना

## तकनीकक आगमन आ कथाक अपूर्णता

देवकीनन्दनक समयमे नगरमे छापाखाना खुलैत अछि। हरिपति गंगाधर अपन पुरखाक बूढ़बा-कथा सैकड़ों प्रतिमे छपेबाक प्रस्ताव लैत छथि। मुदा बूढ़बा प्रश्न उठबैत छथि जे जे कथा एखनहुँ सुभागी, यशपति, पद्मा, रामसेवक जकाँ नाम जोड़ि रहल अछि, ओकरा अन्तिम रूपमे छापब उचित होयत कि नहि।

एतय “पहिल पन्ना” शीर्षकक आशाक विरुद्ध उपन्यासक मूल कथाक छपाइ रोकल जाइत अछि। मुदा पाठशालाक पाठ्यक्रम, राति-सभाक नियमावली आ कृषि-ज्ञान छपैत अछि। ई चयन मुद्रणक पूर्ण निषेध नहि, जिउँ त इतिहासक बन्द अन्तिम रूप सँ बचबाक निर्णय अछि।

## आत्मप्रतिबिम्बी कथन आ पाठकक स्थान

उपन्यास अपन कथाक भविष्यक प्रकाशनपर भीतरसँ विमर्श करैत अछि; ई आत्मप्रतिबिम्बी आख्यान अछि। पाठक जकर त्रयी पढ़ि रहल अछि, ओही कथा भीतरक पात्र “अखनहु अधूरल” कहैत छथि। कथास्तरक ई तनाव साहित्यिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि: पाठकक हाथमे बन्द पुस्तक आ पात्रक दृष्टिमे अनन्त बढ़ैत कथा एक-दोसराकेँ चुनौती दैत अछि।

आधुनिक पाठ-सिद्धान्तक दृष्टिसँ “पूर्ण” कृति कखन बनैत अछि, से केवल लेखकक निर्णय नहि, अभिलेख, पाठक आ ऐतिहासिक प्रसङ्ग क प्रश्न सेहो। बूढ़बाक प्रतीक्षा कथाकेँ बन्द ग्रन्थ नहि, निरन्तर संशोधित स्मरण कहैत अछि। मुदा ई पूर्णताक निर्णयक अधिकार बूढ़बाक लग एकत्र होइत अछि, जकरा आलोचनात्मक रूपसँ परखब उचित।

## हस्तलिखितसँ मुद्रित सामाजिक प्रसार

ताड़पत्रक एकटा विरासत-प्रति मुद्रणक अनेक प्रतिमे बदलि सकैत अछि। माध्यम बदलिते पाठकक संख्या, पहुँच आ परिवर्तनीयता सेहो बदलैत अछि। –८०क हरिपतिक

पाण्डुलिपि-विधान आ –७६क पाठशाला आब छापाखानाक सहायतासँ अलग सामाजिक फल प्राप्त करैत अछि।

लोकगीतमे छपल पन्नाकेँ आगि-पानि सँ अमर कहल गेल अछि, मुदा ई काव्यात्मक अतिशयोक्ति अछि, भौतिक सत्य नहि। मूल घटनामे पुस्तक छपलापर नष्ट नहि भऽ सकबाक कोनो प्रमाण नहि। कविता आ कथनक यथार्थक भेद बचाउ।

## अभिलेखीय शक्ति आ मौन

बूढ़बाक आपत्ति ई अछि जे निश्चित मुद्रित पाठ भविष्यक नामसभकेँ बाहर राखि सकैत अछि। एतय अभिलेख “बचाउ”क माध्यम होइतहुँ बहिष्कारक साधन बनबाक सम्भावना राखैत अछि। निवर्तमान इतिहासक प्रति उत्तरदायित्व कृतिक मुख्य तर्क अछि।

मुदा आंशिक संस्करण, लगातार संशोधित छपाइ वा परिशिष्टक सम्भावना पात्रसभ नहि खोलैत। ई विकल्पसभ मूल कथामे अनुपस्थित अछि; ओकर उल्लेख आलोचनात्मक सम्भावना मात्र अछि। एतेक कहब जरूरी अछि जे बूढ़बाक निर्णय मुद्रणक अनिवार्य तर्क नहि, पात्रक नैतिक चुनाव अछि।

## सर्जनात्मक मूल्य

अध्याय तकनीकक आगमनकेँ विजय-गीतपर समाप्त नहि करैत; प्रकाशनक नैतिक समय पूछैत अछि। ई प्रश्न दीर्घ आख्यानक स्वभावसँ संगत अछि, कारण हजार वर्षक स्मृति कोनो एक बिन्दुपर पूर्ण नहि।

सीमा ई जे छपाइ रोकबाक निर्णय सहज स्वीकारल जाइत अछि; गंगाधरक स्वायत्त तर्क अल्प विकसित अछि। तथापि उपयोगी पुस्तिकासभक वास्तविक छपाइ लोकज्ञानक लोकतन्त्रीकरणक संकेत राखैत अछि।

## अध्याय -६२ — राहतक प्रतीक्ष ।

## भूख आ प्रशासनिक दूरी

अंग्रेजी शासनक कालमे वर्षाक असफलता सँ अकाल पड़ैत अछि। सरकार राहत-योजना घोषित करैत अछि, मुदा केन्द्र बीस कोस दूर अछि आ पंजीकरणक जटिलता भूखल परिवारसभकेँ बाहर रखैत अछि। मूल घटनाक विरोध स्पष्ट अछि: नीति कागचपर अछि, जरूरत आइ देहमे उपस्थित अछि।

-६८क न्यायिक तारीख आ -६७क अनिश्चित वापसी एतय राहतक प्रतीक्षामे बदलि जाइत अछि। बूढ़बा सुखदेव आ भोलाक स्मरण करैत छथि, मुदा निर्णय सावित्रीदेवीक हाथमे रहैत अछि। एखन स्मृति अतीतक नाम लेब नहि, वर्तमान भुखमरीक बीच निर्णयक संसाधन अछि।

## वितरणक सामुदायिक शिल्प

सावित्रीदेवी स्त्रीसभक राति-सभाक अनुभवसँ सामूहिक अन्न-भंडार आ रसोइ बनबैत छथि। पाठशालाक युवा घर-घर जरूरतक हिसाब राखैत अछि; सोनमाक वंशज जल-ज्ञान आ रत्नाक वंशज खाद्य जड़ी-कन्दक पहचान दैत अछि। एहि क्रमानुसार भिन्न ज्ञान-परम्परा तत्काल जीवनरक्षाक काजमे बदलैत अछि।

पर्यावरणीय न्याय आ अन्न-वितरणक दृष्टिसँ भूख प्राकृतिक वर्षाभावक मात्र फल नहि; दूर केन्द्र आ कागजी बाधा सामाजिक असमानता बढ़बैत अछि। सामुदायिक क्षमता एहि बाधाक प्रतिरोध करैत अछि, मुदा राज्यक दायित्व समाप्त नहि करैत।

## कथनक नैतिक आशा आ सांख्यिक दावा

तीन मास बाद सरकारी राहत पहुँचैत अछि आ कथावाचक कहैत अछि जे गाममे अकालसँ एकोटा प्राण नहि गेल। ई मूल कथाक अन्तर्गत सफलता अछि; बाहरी औपनिवेशिक अकालक प्रामाणिक आँकड़ा नहि। पाठककेँ एहि चमत्कारसदृश सामूहिक सफलताकेँ साहित्यिक आदर्शक रूपमे पढ़बाक चाही।

कथाक कम समयमे संगठन, समान वितरण आ पूर्ण प्राणरक्षा देखाओल गेल अछि। मुदा अन्नक मात्रा, कतेक परिवार, कृषिक दीर्घकालिक क्षति आ कमजोर लोकनिक अलग स्थिति नहि खुलैत। नैतिक आदर्श स्पष्ट अछि, भौतिक कठिनाइक सूक्ष्म यथार्थ अपेक्षाकृत संक्षिप्त।

## नारी नेतृत्व आ विकासक स्वायत्तता

सावित्रीदेवी सरकारी सहायताकेँ अस्वीकार नहि करैत छथि; ओ सहायता अबैत धरि निर्भर बैसल नहि रहैत छथि। स्त्री नेतृत्वकेँ भावनात्मक सेवा नहि, संसाधन-व्यवस्था, सार्वजनिक गणना आ दैनन्दिन कार्यक केन्द्रमे राखल गेल अछि।

–६६क राति-सभा घरेलू हिंसाक सुनवाइ करैत छल; एतय वएह संस्थागत अनुभव अन्नक सार्वजनिक जीवनरक्षामे उपयोगी होइत अछि। पात्रक निरन्तरता परिणाम पैदा करैत अछि, एहि कारण दीर्घ त्रयीमे संस्था रचनात्मक कड़ी बनैत अछि।

## निष्कर्ष

अध्यायक सबसँ सशक्त प्रतिपादन प्रतीक्षा आ कर्मक भेद अछि। बूढ़बाक साक्षी बनब आ सावित्रीदेवीक राहत-संगठन अलग काज अछि; दुनू एक-दोसराक आवश्यकता स्वीकार करैत अछि।

तथापि सरकारी लापरवाहीक दायित्व कतेक, आ सामुदायिक सफलताक अनिवार्य सीमा कतय—एहि प्रश्नसभकेँ अध्याय पूर्ण रूपसँ नहि खोलैत। एतय उपन्यास नीति-विवरणक बदला नैतिक उदाहरण रचैत अछि।

## अध्याय -६१ — आकाशक पुच्छलतार I

### आकाशक दृश्य आ भयक सामाजिक रचना

रुद्रनाथक समयमे तीन सप्ताह धरि पुच्छलतारा आकाशमे देखाइत अछि। वृद्ध ज्योतिषी ओकरा युद्ध, अकाल वा महामारीक अशुभ संकेत मानैत छथि। मुदा बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे तारा स्वयं विपत्ति नहि अनैत; पानि, अगिन वा रोगजकाँ कारण धरतीपर होयत। दृश्य एकटा खगोलीय घटना सँ सामुदायिक तैयारीक नैतिक कथा बनैत अछि।

-१००क शंखक भ्रम आ -७५क तर्क शील विद्रोहक संग तुलना कएलासँ देखाइत अछि जे अपूर्व घटना आ ओकर अनिष्टार्थक निष्कर्ष एक नहि। बूढ़बा सम्भावित भय स्वीकार करैत छथि, मुदा कारणताक सम्बन्ध अनिर्णीत कहैत छथि। ई कथन ज्ञानगत सावधानीक पाठ अछि।

### पूर्वाभास, समय आ पाठकक अपेक्षा

तीन सप्ताहक दृश्य एक वाक्यसमूहमे संक्षिप्त होइत अछि, फेर वातावरणक घनत्व बढ़ैत अछि। “अदृश्य बादर, अदृश्य आगि, आ अदृश्य पानि”क त्रियुग्म आगूक बहुबिपत्तिक पूर्वाभास रचैत अछि। जेरार जेनेतक अग्रसूचक कथनक अवधारणा एतय लागू होइत अछि, कारण भविष्यक घटना साफ न कहितो पाठकक अपेक्षा निर्देशित होइत अछि।

तथापि पाठककेँ आगूक घटनाकेँ ताराक अनिवार्य फल नहि मानबाक चाही। पूर्वाभास साहित्यिक उपकरण अछि, वैज्ञानिक कारणता नहि। बूढ़बाक अस्पष्ट भविष्य-अनुभव सेहो कथावाचकक सीमा प्रदर्शन करैत अछि।

### विज्ञान, भविष्यवाणी आ अर्थाधिकार

रुद्रनाथ अन्न-भंडार सुरक्षित रखबाक, पानिक स्रोत साफ करबाक आ रोगक लक्षण देखलापर खबर देबाक निर्देश दैत छथि। भयक उत्तर अनुष्ठानिक दोषारोपण नहि, व्यवहारिक सावधानी अछि।

मुदा बूढ़बाक “अस्पष्ट भय” आ बादमे भारी होइत हवा पाठमे अद्भुत संवेदनाक वातावरण बनबैत अछि। तोदोरोवक अद्भुतता-विमर्शमे पाठक असाधारण दृष्टिक ज्ञानक सीमा पर ठहरि सकैत अछि; निस्सन्देह अलौकिक कारण घोषित करब मूल पाठसँ आगू जाएब होयत।

## पर्यावरणीय काल आ उत्तराधिकार

गामक दीर्घ कालक तुलनामे पुच्छलतारा क्षणिक देखाइत अछि; लोकगीत स्थिर माटि आ बदलैत आकाशक विरोध रचैत अछि। पर्यावरणीय आलोचना ई विरोध प्रश्नांकित करैत अछि, कारण माटि स्वयं नदी, बाढ़ि, रोग आ कृषिक परिवर्तनसँ बदलैत अछि। कविता काव्यगत स्थायित्व कहैत अछि, कथा भौतिक अस्थिरता संकेत करैत अछि।

बूढ़बाक मूल गोहिकेँ चुप संवाद आ चन्ना गाछीक जड़िसँ जुड़ल अनुभूति अनेक कालगत जीवसभक सह-अस्तित्व रचैत अछि। मुदा अध्यायमें गोहिक प्रत्यक्ष उत्तर नहि, केवल बूढ़बाक स्वतन्त्र प्रश्न अछि।

## मूल्याङ्कन

अध्याय सफलतासँ कारण आ सङ् के त अलग करैत अछि; अनिश्चित भविष्यक भयकेँ जनकल्याणक तैयारीमे बदलब एकर उपलब्धि अछि।

सीमा ई जे बिपत्तिक पूर्वसूचना धुंधली रहबाक कारण घटनात्मक तनाव अधूरल अछि; इएह आगामी क्रमक कथा-उद्देश्य सेहो अछि। आब पाठक देखत जे तैयार गाम पर जे संकट अबैत अछि ओकर वास्तविक सामाजिक कीमत की अछि। अध्याय −६५ सँ −६१: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन नामक प्रामाणिकता सँ जीबनक प्रबन्ध धरि

−६५मे कालीचरणक नकली आत्मा पवित्र नामक दुरुपयोग करैत अछि; −६४मे संचित अभिलेख भूमि-अधिकार बचबैत अछि; −६३मे छापाखाना स्मृतिक रूप बदलैत अछि; −६२मे स्त्रीनेतृत्व अकालमे अन्न वितरण करैत अछि; −६१मे आकाशक अनिष्टार्थक गलत कारणता बिपत्तिक तैयारीमे बदलैत अछि। पाँचू अध्यायमे कथाक मूल्य नामक रक्षा सँ व्यवहारिक जाँच आ आयोजन दिस बढ़ैत अछि।

## अनुपात आ सौन्दर्यात्मक सीमा

भूत-ठगीक पटाक्षेप, अदालतक भूमि-निर्णय आ अकालमे शत-प्रतिशत प्राणरक्षा अपेक्षाकृत शीघ्र होइत अछि; छपाइक निर्णय तथा पुच्छलताराक प्रश्न अधूरल रहैत अछि। एहि असमान परिणतिक कारण त्रयीक शिक्षापरक नैतिकता आ दीर्घ आख्यानक खुलल सम्भावना साथ-साथ चलैत अछि।

## संस्थागत स्मृतिक सम्यक परीक्षा

–६४मे प्रमाण बचबाक कारण न्याय भेटैत अछि, मुदा ज्योतिषीय भय अथवा नकली साक्षीक प्रतिष्ठा सेहो सामुदायिक परम्परामे प्रविष्ट भऽ सकैत अछि। –६३क मुद्रण-प्रश्न एहि सभक एकत्र परिणाम अछि: अभिलेख बनब पर्याप्त नहि, ओकर सत्यापन, संशोधन आ बहिष्कृत स्वरक पुनःप्रवेश सेहो चाही।

## अध्याय –६० — अगिनक राति

# आकस्मिक विनाश आ देहधारी स्मृति

जेठक राति धान-भंडार लगक दीप तेज हवामे खसि सुखल पयरालमे आगि लगा दैत अछि। आगि ब्राह्मण टोलाक दस आ कायस्थ टोलाक पाँच घरसहित मन्दिरक एक भाग जरबैत चन्ना गाछी दिस बढ़ैत अछि। प्रारम्भमे घटनाक कारण दीप, हवा आ सुखल सामग्री स्पष्ट अछि; एतय –६१क पुच्छलतारा आगिक वैज्ञानिक कारण नहि। एहने विभाजनक कारण उपन्यास भयक पूर्वाभास आ भौतिक कारणक बीचक तनाव कायम रखैत अछि।

–७०मे गाछी सामूहिक स्मृतिक अनेक देह बनल छल। आगि जखन गाछी धरि पहुँचैत अछि, तखन स्मृति अपन भौतिक नश्वरताक संग फेर भेटैत अछि। किनारक गाछ सभ जरै त-अधजरै त अछि, मुदा पीपर सुरक्षित रहैत अछि। “स्मृति सुरक्षित”क विजय-वाक्य एहि आंशिक हानिक बिना अधूरा अछि।

# साक्षी आ कर्ताक विभाजन

इन्द्राणी दौड़ि-दौड़ि लोककेँ जागबैत छथि; बूढ़बा स्वीकार करैत छथि जे हुनक शक्ति स्मृतिक अछि, अगिन रोकबाक नहि। ओ जोड़ी पोखरिक पानि दिस संकेत करैत छथि, मुदा आगि बुझयबाक काज स्त्रीसभक राति-सभाक मानव-शृंखला आ लोकक बाल्टी-दर-बाल्टी श्रम करैत अछि। कथनक नैतिक केन्द्र अलौकिक उद्धार नहि, अनुभवी आयोजन अछि।

इन्द्राणीकेँ गाछक पात लपटकेँ “भ्रमित” करैत बुझाएब वस्तुगत कथन नहि, पात्रक अनुभूतिपर आधारित दृष्टिबिन्दु अछि। जेरार जेनेतक शब्दावलीमे कथावाचक एहि क्षण इन्द्राणीक ग्रहणशीलताक सीमा भीतर रहैत अछि। बूढ़बा बादमे स्वयं आगि रोकबाक दावा अस्वीकार करैत छथि। एहि दू विवरणकेँ संग राखला पर कथामे चमत्कारक निश्चितता नहि, अद्भुत अनुभूतिसँ यथार्थ श्रम धरि गमन भेटैत अछि।

## पर्यावरणीय आलोचना आ आपदा-प्रबन्ध

गामक भौतिक व्यवस्था आगिक फैलाव बढ़बैत अछि: सुखल पयराल, तेज हवा, परस्पर निकट घर। बिपत्ति प्राकृतिक शक्ति आ मानवीय असावधानी दुनूक संयुक्त फल अछि। बादमे दीपक निश्चित स्थान, आपातकालीन पानि-भंडार आ सुरक्षा-नियम बनाओल जाइत अछि। क्षतिक स्मृति एतय नियममे बदलैत अछि।

एक-चौथाई घरक हानि कहल गेल अछि, मुदा बेघर भेल परिवारसभक दीर्घ पुनर्वास, क्षतिक वर्गीय बँटवारा, आ किन टोलामे संसाधन कम छल से विस्तारसँ नहि खुलैत। पर्यावरणीय न्यायकेँ पूर्ण रूपसँ परखबाक लेल ई भेद आवश्यक रहित। अध्याय संगठनक सफल प्रतिरूप अछि, सर्वाङ् ग आपदा-अध्ययन नहि।

## काल-गति आ सौन्दर्यगत समीक्षा

क्षणमे आगिक फैलाव, रातिभरि प्रतिरोध आ भोरक शान्ति—एहि त्रिकेँ कथा क्रमबद्ध करैत अछि। त्वरित दृश्य आ परिणामक सारकथन मिलि तनाव रचैत अछि। लोकगीत आरम्भमे राखसँ नव चूल्हिक आशा बता दैत अछि, जाहिसँ पाठक आगूसँ अन्तक नैतिक दिशा जनैत अछि।

सृजनात्मक उपलब्धि इन्द्राणीक स्पष्ट कर्तृत्व आ बूढ़बाक शक्तिक स्वीकारल सीमा अछि। मुदा मानव-शृंखलाक सामर्थ्य, जल-दूरी आ भीषण अगिनक परिमाण सम्बन्धी विवरण कम अछि; कहानी अनुभवक नैतिक संयोजनपर बेसी निर्भर अछि।

## अध्याय –५९ — दोसर बाढ़ि

### बाढ़िक पुनरावृत्ति आ अर्जित स्मरण

अगिनक तीन मास बाद बरखा अविराम होइत अछि, कमला-बलान उफनैत अछि आ पुरान बान्ह चर्मकार टोलाक दक्षिण दिस टूटि जाइत अछि। इन्द्राणी वृद्ध आ बच्चासभकेँ पहिनहि ऊँच स्थानपर पठबैत छथि, बालूक बोरा-लकड़ी सँ बान्ह जोगेबाक काज करबैत छथि, नाव-रस्साक व्यवस्था करैत छथि। कथाक मुख्य अन्तर एहि बेर पानि कम शक्तिशाली अछि, से नहि; गामक चेतावनी आ तैयारी पहिनहिसँ उपलब्ध अछि, से अछि।

–८९क पहिल बाढ़िमे सात प्राण गेल छल; वर्तमान बाढ़िमे घर बहैत अछि मुदा मृत्यु नहि होइत। पाठक दीर्घ-कालिक परिवर्तनकेँ एके नदीक दोसर आगमनपर मापैत अछि। जेनेतक आवृत्तिक दृष्टिसँ घटना पुनरावृत्त होइतो प्रत्येक बेर समान कथा नहि: नब घटना पहिलुक स्मरणक फल प्रकट करैत अछि।

### धुनक संकेत-प्रणाली

मोहनक वंशज द्वारा बजाओल तेज, दोहराइत “खतराक धुन” गामक घर-घर पहुँचैत अछि। –७३मे राधिकाक स्मरणसँ जन्मल संगीत आब जीवनरक्षक सङ् के त बनल अछि। संगीत केवल शोकक भावप्रदर्शन नहि, सामाजिक संदेशक तेज माध्यम अछि। एहि रूपान्तरणमे कथाक उपकरण स्वयं अगिला घटनाक कारण बनैत अछि।

धुनक पहिने सँ सिखाओल अर्थ महत्वपूर्ण अछि; केवल ढोल बजब पर्याप्त नहि, श्रोता संकेत पहिचानय चाही। बाख्तिनक सामाजिक भाषाक विस्तृत अर्थमे ई सांस्कृतिक सहमति अछि, मुदा बहुस्वरताक सीधा प्रमाण नहि। संगीतक अर्थ समुदायक अभ्याससँ उपजैत अछि।

### जल, जातीय भूगोल आ पर्यावरणीय न्याय

टूटल बान्हक ठाम चर्मकार टोलाक दक्षिण अछि। ई स्थान-निर्देश संकेत दैत अछि जे आपदा-संसाधनक जोखिम समूचा गाममे समान नहि होइत। मुदा कोन परिवारसभक घर

बहल, कतेक खेतक क्षति भेल, बान्हक प्राथमिकता कोना निर्धारित भेल—ई प्रश्न अनुत्तरित अछि। एकरा सामाजिक असमानताक सम्भावित शोध-बिन्दु मानब उचित, निर्णायक आरोप नहि।

बूढ़बा जलक बढ़ती जड़िसँ अनुभव करैत छथि; प्राकृतिक जलगत सम्बन्ध आ स्मृतिक मानवीय आयोजन मिलैत अछि। तथापि अनुभवसँ बनल अग्रचेतावनीकेँ वास्तविक ढोल, नाव, सुरक्षित भूमि आ अभ्यास समर्थित करैत अछि। एहि भेदमे उपन्यासक व्यवहारिक विश्वसनीयता अछि।

## विजयक भाषा आ आलोचनात्मक आरक्षण

इन्द्राणी “गौरीक ऋण” चुकबबाक बात कहैत छथि। ई नैतिक प्रतीक अछि: पहिल बाढ़िमे हानि देखनिहार पीढ़ीक ज्ञान दोसर पीढ़ीक हाथे फल दैत अछि। बूढ़बा नाम बचबैत-बचबैत प्राण बचबबाक क्षमता विकसित होएब पर सन्तोष व्यक्त करैत छथि।

मुदा शून्य मृत्यु उपन्यासक अन्तर्गत दावा अछि, बाहरी आपदा-अभिलेख नहि। दीर्घ पुनर्वासक विवरण सीमित आ बान्ह टूटलाक आर्थिक क्षति गौण अछि। क्षतिक उपेक्षा बिनु उपलब्धिक महत्त्व मानब आलोचनाक उपयुक्त सन्तुलन होयत।

## अध्याय −५८ — तेसर बिपत्ति

### विपत्तिक क्रम: अगिन, बाढ़ि, रोग

−६०क अगिन आ −५९क बाढ़िक बाद बाढ़िसँ बचल ठहरल सड़ल पानि रोगक परिवेश बनैत अछि। बच्चा आ वृद्धक पेट-दर्द, दस्त आ निर्जलीकरणक लक्षण सँ तेसर संकट शुरू होइत अछि। पूर्वक दू बिपत्ति जकाँ ई एकटा अलग आकस्मिक दृश्य नहि; बाढ़िक बादुक पर्यावरणीय दशासँ जुड़ल क्रमागत संकट अछि। उपन्यास तीन घटनाकेँ एक वर्षक साझा इतिहासमे जोड़ैत अछि।

इन्द्राणी “पुच्छलतारा सही छल” कहैत छथि, मुदा बूढ़बाक पहिल कथन स्मरणीय अछि जे तारा विपत्तिक कारण नहि। भविष्याभास साहित्यिक अर्थमे घटनासभक संरचना बनबैत अछि; जलजनित रोगक कथित कारण भौतिक पानिक दूषित अवस्था अछि। एहिमे अनुमान, उपमा आ कारणताकेँ अलग पढ़ब जरूरी।

### चिकित्सा, लोकज्ञान आ सामाजिक प्रबन्ध

नगरक चिकित्सा-विद्यालयसँ पढ़ल वैद्य पानि उबालब आ नमक-चीनीक घोलक उपयोग सिखबैत छथि। सोनमा आ रत्नाक वंशज सुरक्षित जलस्रोत तथा परम्परागत जड़ी-कन्दक ज्ञान दैत छथि; स्त्रीसभक राति-सभा स्वच्छताक नियम पहुँचबैत अछि। तीनू क्षेत्रक योगदान भिन्न अछि—चिकित्सकीय उपचार, स्थानीय भू-ज्ञान आ सामुदायिक पालन। एकरा एकहि अप्रमाणित उपचार-प्रणाली मानि मिलाओल नहि जाय।

मूल अध्याय तीन सप्ताहमे रोग नियन्त्रणक कथन करैत अछि आ किछु मृत्यु सेहो स्वीकार करैत अछि। बालक आ वृद्ध अधिक प्रभावित छथि, तेँ −५९क शून्य मृत्यु सँ विपरीत ई सफलता अपूर्ण अछि। ई असुविधाजनक तथ्य उपन्यासक स्मृति-नैतिकताकेँ अर्थ दैत अछि: समूह बचल, मुदा प्रत्येक देह नहि।

## स्मृतिक नैतिकता आ सामूहिक शोक

तीन बिपत्तिक बरख नामसहित स्मरण होइत अछि; मृतक लोकनिक उच्चारणक संग “ओ बिपत्तिमे मरल, मुदा गाम नहि मरल” वाक्य जुड़ैत अछि। सामूहिक अस्तित्वक ई दावा आशाक सङ् के त अछि, मुदा व्यक्ति-विशेषक हानि समूहक विजयमे दबि जाएबाक खतरा सेहो अछि।

–७१मे विमलाक सामूहिक स्मरण मृत्यु-सङ्ख्याक कारण विकसित भेल; –५८मे ओही प्रथा फेर प्रासंगिक होइत अछि। पॉल रिकरक कथात्मक समयक दृष्टिसँ नामोच्चारण अतीतक क्षतिकेँ वर्तमान नैतिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ैत अछि। तथापि शोकक अद्वितीयता सामूहिक सूत्रमे पूर्णतः समा नहि जाइत।

## सर्जनात्मक मूल्य आ सीमा

–६१क संकेत, –६०क आगि, –५९क बाढ़ि आ –५८क रोग मिलि एकटा चारि-अध्यायिक दीर्घ संकट-विन्यास बनैत अछि। प्रकृति आ संगठनक एकर सरकै त सम्बन्ध मूल कृतिक दीर्घ संरचनाक महत्त्वपूर्ण सफलता अछि।

रोगक चिकित्सकीय नाम आ ऐतिहासिक महामारीक पहचान पाठमे निश्चित नहि; आलोचना एकरा बाहरी निदानक रूप नहि देत। लोकज्ञान आ आधुनिक विज्ञानक सहयोग जेना बिना मतभेद वर्णित अछि, तकर सामाजिक जटिलता कम चित्रित भेल। आ “तीन बिपत्ति”क दृढ़ लोकगीत आरम्भहिसँ परिणामक आश्वासन दैत तनाव हलुक करैत अछि।

## अध्याय –५७ — साहेबक नोटबुकेँ

### आगत शोधकर्ताक नजरि आ भाषिक सत्ता

अंग्रेज विद्वान हेनरी थॉम्पसन गाममे किछु सप्ताह रहि बूढ़बा, कबड्डी आ चन्ना गाछीक कथा नोटबुकमे दर्ज करैत छथि। बरख बाद पहुँचले हुनक प्रकाशित पोथीमे बूढ़बा “आदिम अन्धविश्वास”, गाछी “भूत-पूजा” आ स्त्रीसभक राति-सभा “अनियंत्रित सामाजिक व्यवहार” कहल गेल अछि। अन्तर केवल विदेशी शब्दक नहि, लोकक सामाजिक क्रियाकेँ बाहरी श्रेणीमे बदलि देबाक अछि।

स्रोतमे थॉम्पसनक शोध-प्रक्रियाक विस्तृत प्रश्नावली, तर्क -विन्यास अथवा समूचा प्रकाशित पुस्तक नहि भेटैत। अतः आलोचना एहि काल्पनिक पात्रक कथित पूर्वग्रहपर टिकैत अछि, समूचे विदेशी शोधपर सार्वत्रिक निर्णय नहि।

### उत्तरऔपनिवेशिक आलोचना आ प्रतिनिधित्व

एडवर्ड सईदक प्रतिनिधित्व-सिद्धान्तक आलोकमे बाहरी वर्णन शक्ति-सम्बन्धसँ मुक्त नहि: जे संस्था स्थानीय श्रम, स्मरण आ स्त्रीक सार्वजनिक न्यायकेँ “बर्बर” कहैत अछि, से अध्ययनक विषयपर अपन सांस्कृतिक मापदण्ड थोपैत अछि। थॉम्पसनक पुस्तक गामक अनुभवकेँ स्वयं बाजबासँ पहिने वर्गीकृत करैत अछि।

मुदा कथा बाहरी शोधकर्ता आ गामक लोकक असमान वाणीपर टिकैत अछि; थॉम्पसनक आलोचनात्मक सम्भावना अथवा स्व-संशोधनक अवसर नगण्य अछि। एहि रचनात्मक एकरेखीयतासँ उपन्यासक तर्क स्पष्ट होइत अछि, मुदा बहुस्वरताक सूक्ष्मता सीमित।

### प्रतिलेखन, प्रत्युत्तर आ अभिलेखीय अधिकार

नन्दकिशोर थॉम्पसनकेँ दृढ़ मुदा शालीन पत्र लिखैत छथि; ओकर उत्तर नहि अबैत। साथहि ओ अपन मातृभाषामे गामक इतिहास अधिक सावधानीसँ संकलित करब शुरू करैत

छथि। ई एकटा व्यावहारिक प्रतिआख्यान अछि: बाहरी पुस्तकक विरोध मात्र नहि, स्वयं स्रोत बनब। –६३क छपाइ-विलम्ब आ –८०क मूल लेखन एहि नव मोड़मे फेर लौटैत अछि।

बूढ़बा “हमरहि भाषामे, हमरहि दृष्टिकोणसँ” कथा रखबाक आग्रह करैत छथि। ई निर्देश लेखकीय स्वायत्तताक दावा अछि, मुदा गामक भीतर जाति, स्त्री आ भिन्न अनुभवक आवाज अलग-अलग अछि। “हमर” दृष्टि एके एकरस समुदाय मानि लेब तकर अपना बहिष्कारक खतरा रहत।

## कथन-विश्वसनीयता आ ज्ञानगत अन्याय

कथावाचक थॉम्पसनक लिखित अर्थसभ गामक लोकक प्रतिक्रियासँ देखबैत अछि; पाठक गामक दृष्टिबिन्दुसँ अपमान अनुभूत करैत अछि। ज्ञानगत अन्यायक अवधारणा एहि प्रसङ् गमे सटीक अछि जे स्थानीय अनुभूतिक व्याख्यात्मक शब्दावलीकेँ अवमूल्यित करि देल जाइत अछि।

तथापि गामक अपन अनुष्ठान सभ सर्वथा त्रुटिरहित अछि, से सिद्ध नहि। –६५क नकली भूत आ –७५क संशयवादी विश्वनाथ स्मरण करबैत छथि जे आन्तरिक समाजमे सेहो आलोचना आवश्यक अछि। बाहरी पूर्वग्रहक प्रतिरोधक अर्थ आत्मालोचनाक निषेध नहि।

## समग्र निर्णय

अध्यायक उपलब्धि प्रमाणक सङ् ग्रह आ अर्थक अधिकारक भेद उघाड़ब अछि। थॉम्पसन बहुत गप लिखैत छथि, मुदा लिखल वस्तुक व्याख्या स्थानीय कार्यक सामाजिक अर्थसँ कटि जाइत अछि।

सीमा ई जे थॉम्पसनक पात्र लगभग पूर्ण पूर्वग्रहक प्रतीक बनि जाइत अछि। परस्पर अनुवादक कठिनाई, भाषिक मध्यस्थ आ आन्तरिक मतभेद विस्तारसँ होइत तँ उत्तरऔपनिवेशिक विमर्श आर कठिन, मुदा बेसी फलदायी होइत।

# अध्याय –५६ — स्वाधीनताक पुकारे

## ग्रामीण परम्परा आ सार्वजनिक आन्दोलन

रामाश्रय गाममे स्वदेशी, विदेशी वस्त्रक बहिष्कार आ स्वाधीनता आन्दोलनक आह्वान करैत छथि। लक्ष्मीदेवी आरम्भमे औपनिवेशिक दमनक भय स्वीकार करैत छथि; बूढ़बाक उत्तर भविष्यक विजयक गारंटी नहि, आत्मसम्मानक प्रयासकेँ स्मरणीय मानबाक आग्रह अछि। एहि कारण अध्यायक आरम्भ अनिवार्य ऐतिहासिक सफलता नहि, अनिश्चित जोखिमक नैतिक चुनाव बनैत अछि।

नमक-सत्याग्रह, असहयोग आ बहिष्कारक समाचार कथामे एकत्र आयल अछि; मूल अध्याय एकटा निश्चित तारीख वा बहुवर्षीय कालक्रम नहि दैत। ऐतिहासिक आन्दोलनसभक वास्तविक क्रम मिलायब अलग शोधक विषय होयत, स्रोत-पाठमे उपस्थित संकेतकेँ एके दिनक घटना मानब गलत।

## स्त्री नेतृत्व आ श्रमक राजनीतिक अर्थ

लक्ष्मीदेवी स्त्रीसभक राति-सभाक सहयोगसँ स्त्रीसभकेँ संगठित करैत छथि; युवा सूत कातब आ खादी बुनबाक अभ्यास करैत छथि। –६२क अन्न-व्यवस्था आ –६६क सार्वजनिक गवाहीक संस्था आब राष्ट्रव्यापी संघर्षमे भाग लैत अछि। स्त्री नेतृत्व निजी शोक आ घरेलू राहत तक सीमित नहि, राजनीतिक कर्तृत्व बनैत अछि।

मुदा विदेशी वस्त्र जरायब आ घर-घर सूचना पहुँचाबयक आयोजनमे वर्गीय खर्च, श्रमक दबाव वा मतभेदक कथानक कम अछि। गामक लगभग एकस्वर सहमति राष्ट्रवादी आदर्श प्रस्तुत करैत अछि, बहुविरोधी ग्रामराजनीतिक यथार्थ कम।

## सत्याग्रहक नाटकीय तनाव

प्रशासन सिपाही पठा रामाश्रय आ किछु युवा गिरफ्तार करबैत अछि; गाम शान्तिपूर्ण प्रतिरोध जारी रखैत अछि। कतेको मासक बाद गिरफ्तारीसँ वापसी होइत अछि। कथनमे

गिरफ्तारी दृश्यक रूपमे सीमित आ दीर्घ कारावास सारकथन रूपमे अछि। जेनेतक अवधिक भेदमे समाजक लम्ब संघर्ष किछु अनुच्छे दमे समायमान होइत अछि।

बूढ़बा एहि आन्दोलनकेँ “नव प्रकारक कबड्डी” कहैत छथि, जतय विपक्षी अदृश्य अछि। रूपक सामुदायिक अनुशासन, साझा जोखिम आ नामक रक्षाकेँ जोड़ैत अछि। तथापि औपनिवेशिक शासन मूर्त संस्था अछि; ओकरा केवल अदृश्य विपक्षी मानला पर राजनीतिक शक्ति-संरचना धुंधली भऽ सकैत अछि।

## बहुस्वरता आ उत्तरऔपनिवेशिक काल-बोध

–५७क साहेबक नोटबुकमे बाहरी प्रतिनिधित्वक प्रश्न छल; –५६मे गाम अपन सार्वजनिक राजनीतिक वाणी बनबैत अछि। ई क्रम प्रतिनिधित्वक दावासँ अधिकारक आन्दोलन दिस संक्रमण अछि। लोकगीत “पुकार एक कण्ठक नहि” सामूहिक स्वरक प्रतीक अछि।

मुदा बहुस्वरता मात्र संयुक्त गीत नहि: असहमति, जातिगत हित आ आन्दोलनक भिन्न रणनीतिक स्वर उपन्यासमे सीमित अछि। बाख्तिनक अवधारणाक कठोर प्रयोग एतय एकसाथ आयोजनक सफलता आ वैचारिक बहुरूपताक अभाव दुनू देखैत अछि।

## नैतिक उपलब्धि आ सीमा

आत्मसम्मानक संघर्षमे पराजयक सम्भावना स्वीकार कएल गेल अछि; एतय बूढ़बा भविष्यवेत्ता नहि, स्मरणक नैतिक सहचर छथि। लक्ष्मीदेवीक सार्वजनिक निर्णय दीर्घ स्त्री-नेतृत्व परम्पराक फल अछि।

अध्याय ऐतिहासिक राजनीतिक आन्दोलनक जटिलता संक्षेपमे समेटैत अछि। मुदा त्रयीकेँ ग्रामक सीमाबद्ध स्मृतिसँ सार्वजनिक इतिहासक सम्बन्धमे लऽ जाएबाक ई महत्त्वपूर्ण सेतु अछि; आगूक अध्याय देखायत जे राजकीय परिवर्तन सामाजिक जीवनमे के हन बदलाव अनैत अछि। अध्याय –६० सँ –५६: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन तीन बिपत्ति आ इतिहासक नव प्रवेश

–६० सँ –५८ धरि अगिन, बाढ़ि आ रोग एकहि वर्षक संयुक्त संकट बनबैत अछि; –५७मे एहि संकटपर बाहरी विद्वानक पुस्तकक अनुचित अधिकारक प्रश्न उठैत अछि;

–५६मे गाम राजनीतिक आन्दोलनक स्वायत्त कर्ता बनैत अछि। प्रकृतिक संकट सँ अभिलेखीय प्रतिनिधित्व आ सार्वजनिक स्वाधीनता धरि एहि क्रममे कथाक क्षेत्र विस्तृत होइत अछि।

## दृष्टिबिन्दु आ घटनाक कारण

आगिमे इन्द्राणीक पात-भ्रमित करबाक अनुभूति, बाढ़िमे व्यवहारिक ढोल-सङ् के त, रोगमे दूषित पानिक कथित कारण, थॉम्पसनक बाहरी श्रेणी आ स्वाधीनताक सामूहिक प्रतिरोध—पाँचू प्रसङ् गक ज्ञानक आधार अलग अछि। समान रूपमे चमत्कार वा समान रूपमे ऐतिहासिक दस्तावेज कहब समीक्षात्मक भूल होयत।

## मूल्याङ्कनक संगति

अगिनक बाद सुरक्षा-नियम, बाढ़िक बाद मृत्यु-रहित बचाव, रोगमे सीमित उपचार, प्रतिनिधित्वक विरुद्ध मातृभाषाक प्रतिलेखन आ आन्दोलनमे स्त्री नेतृत्व—सभमे पुरान संस्था नव काम करैत अछि। मुदा पूर्ण सफलताक दावे, विरोधक तीव्र समाधान आ लोकगीतक पूर्वनिश्चित नैतिक निष्कर्ष कथानकक सामाजिक जटिलता कु छ घटबैत अछि।

## अध्याय –५५ — स्वतंत्रताक भोर

## राष्ट्रक इतिहास आ गामक कथासमय

अध्याय पन्द्रह अगस्तक भिनसरमे गढ़ नारिकेलक सामूहिक उत्सव सँ आरम्भ होइत अछि। विश्वम्भरनाथ नाम-अनुष्ठानक उत्तराधिकारी छथि, रामाश्रय स्वाधीनता-आन्दोलनक कारण जेल गेल व्यक्ति छथि, आ नारिकेल पात पाठशालाक बालकसभ चौपालपर राष्ट्रगीत गबैत अछि। एहि चयनसँ पैघ राष्ट्रिय घटना एकटा स्थानीय देखबाक ठाम पबैत अछि। घटनाक तिथि बाहरी इतिहासक संकेत अछि; पात्रसभक उत्सव उपन्यासक भीतरक कथा-सत्य। दूनू स्तरकेँ गड्डमड्ड कएने बिना पढ़ब आवश्यक अछि।

जेरार जेनेतक आख्यान-समयक दृष्टिसँ लेखक अनेक शताब्दीक काल-यात्राकेँ एकटा भिनसर आ एकटा साँझक दृश्य पर केन्द्रित करैत छथि। –५६क स्वाधीनता-सङ् घर्ष एतय घटनात्मक परिणाम पबैत अछि, मुदा कथा तकरा सम्पूर्ण अन्त नहि बनबैत। कथानक राजनीतिक उपलब्धि सँ नैतिक अपूर्णता दिस घुमैत अछि: देश स्वतंत्र भेल अछि, मुदा इतिहासक पीड़ितसभक प्रश्न एखनहुँ जीवित अछि।

## भोरक रूपक आ ओकर भीतरक अन्हार

अध्यायारम्भ लोकगीत कहैत अछि—“भोर भेल हे, मुदा हर आँगनमे एक्के बेर नहि”। उजासक ई रूपक राष्ट्रिय विजयक आनन्दकेँ अस्वीकार नहि करैत; एकर वितरणपर प्रश्न करैत अछि। चौपालपर उठल झंडा आ टोलक कोनमे नहि जरल दीप एक-दोसराक विपरीत दृश्य बनैत अछि। नव राष्ट्रक नागरिक होएबाक औपचारिक स्थिति आ सम्मानपूर्वक जिअबाक भौतिक क्षमता एके तथ्य नहि।

फ्रे डरिक जेम्सनक राजनीतिक अचेतनक अवधारणा सँ एहि द्वैधक अर्थ खुलैत अछि: उत्सवक सार्वजनिक भाषा अपनहि भीतर असमान सामाजिक संरचनाक असन्तोष लऽ चलैत अछि। मुदा एतय प्रतीकक अर्थ बहुत हद धरि लोकगीत आ बूढ़बाक वक्तव्य स्वयं खोलि दैत अछि; पाठककेँ स्वतन्त्र खोजक लेल अपेक्षाकृत कम अनिश्चितता छोड़ैत अछि।

## दीर्घ स्मृति आ उत्तरजीवी नैतिकता

विश्वम्भरनाथ वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य आ गंगेश उपाध्याय सँ औपनिवेशिक शासनक अन्त धरि बूढ़बाक साक्षित्व स्मरण करबैत छथि। बूढ़बा हुलासा, सुखदेव, रत्ना, गंगेश, गौरी आ सावित्रीक नाम उच्चारि एहि ऐतिहासिक दिनकेँ अनेक युगक अनुत्तरित प्रश्नसभसँ जोड़ैत छथि। पॉल रिकरक कथात्मक काल-विन्यासमे अलग-अलग घटना एकटा मूल्यगत अनुक्रम प्राप्त करैत अछि: अतीतक संघर्षक परिणाम वर्तमानक उत्सव मात्र नहि, नव प्रश्न पुछबाक सार्वजनिक अधिकार बनैत अछि।

मौरिस हाल्बवाक्सक सामूहिक स्मृतिक दृष्टिसँ मृतकसभकेँ समाचार सुनाबय लेल पीपरक कात जुटल गाम स्मृतिक सामाजिक गठन करैत अछि। मृत व्यक्ति स्वयं ओ समाचार सुनलनि—एहन ऐतिहासिक तथ्य उपन्यास सिद्ध नहि करैत; अनुष्ठान समुदायकेँ अपन वर्तमान उपलब्धि पुरखाक अपूर्ण जीवनसँ जोड़बाक माध्यम दैत अछि। बूढ़बाक दीर्घ अस्तित्व कथाक अद्भुत आधार अछि, अभिलेखीय कालक्रमक दस्तावेज नहि।

## कथावाचकक नैतिक नियन्त्रण आ बहुस्वरता

रामाश्रयक सार्वजनिक भाषण, विश्वम्भरनाथक प्रश्न, बूढ़बाक उत्तर आ बच्चासभक फुसफुसाहट कथामे अलग भाषिक स्वर अछि। मुदा ई पूर्ण बाख्तिनीय बहुस्वरता नहि: अधिकांश स्वर स्वतंत्रताक महत्त्व स्वीकारै त छै क, मतभेद ओकर अपूर्ण परिणामपर अछि। अभावग्रस्त टोलक व्यक्ति अपन अनुभवमे स्वयं विस्तृत रूपसँ नहि बजैत छथि; हुनकर स्थिति लोकगीत आ बूढ़बाक सामान्यीकृत वाणी सँ प्रतिनिधित्व पबैत अछि।

अध्यायक सर्जनात्मक उपलब्धि ई अछि जे विजयोत्सवसँ बचि रहल अन्यायक प्रश्न उठैत अछि। ओकर सीमा ई जे वास्तविक राजनीतिक विचारान्तर, स्वाधीनताक विरोधाभासी स्थानीय लाभ आ असहमतिकेँ स्वतन्त्र पात्रदृष्टिसँ दीर्घ दृश्य रूपमे कम देखाओल गेल अछि। शताब्दी-विस्तृत कादम्बरीक सारकथात्मक शैली हेतु ई संक्षेप उपयोगी अवश्य, मुदा आलोचनामे एकरा बहुवर्गीय अनुभवक पूर्ण प्रत्यक्ष प्रस्तुति नहि मानबाक चाही।

## अन्तर्धारा: प्रश्न पुछबाक अधिकार

“स्वतंत्रताक ई भोर, ओ प्रश्न सभक उत्तर नहि”—बूढ़बाक ई मूल आशय अध्यायक निर्णायक आलोचनात्मक केन्द्र अछि। –१००क वाद-शालामे ज्ञानक प्रश्न मुख्य छल; –५५मे प्रश्न पुछब नागरिक अधिकार बनैत अछि। एहि दूरीमे दार्शनिक अन्वेषण राजनीतिक सहभागिताक भाषा ग्रहण करैत अछि।

एहि रूपान्तरणमे अभिनवता ऐतिहासिक दिवसक चयनसँ बेसी अछि: बीतल अत्याचारक गवाही नव शासनक परीक्षणक कसौटी बनैत अछि। भावुक अन्तमे मृतकसभकेँ समाचार देबाक दृश्य करुण अछि; मुदा न्याय एखनहुँ प्रतिज्ञा अछि, सिद्ध उपलब्धि नहि।

## अध्याय –५४ — जमींदारीक अन्त

# कानूनी भोर आ सामाजिक संरचनाक धीरे परिवर्तन

–५५क राष्ट्रिय स्वतंत्रताक बाद एहि अध्यायमे भूमि-सम्बन्धपर सीधा प्रश्न उठैत अछि। कमला देवी (द्वितीय) अनुष्ठानक उत्तराधिकारी छथि; प्रतापसेन ठाकुरक वंशज पुरान सामन्ती प्रतिष्ठा गमबैत अछि; सुखदेव महतोक वंशजक भूमि-अधिकारक कथा फेर अबैत अछि। उपन्यासक भीतर सरकारी भूमिसुधार एतय घटित ऐतिहासिक रूपान्तरणक पृष्ठभूमि अछि। मुदा कोन अधिनियमक कोन धारा आ कु न क्षेत्रीय प्रशासनिक प्रक्रिया लागू भेल—एहि अध्यायमे तकर विस्तृत अभिलेख नहि; आलोचनामे कानूनी विवरण गढ़ब अनुचित होयत।

जेरार जेनेतक अवधिक अर्थमे दशकोंक सामाजिक परिवर्तन किछु अनुच्छे दमे समेटल अछि। आरम्भमे सरकारक आदेशक तेजगति अछि, बीचमे परिवारसभक विरोध, आ अन्तमे नव रोजगारक अवसरक दीर्घ प्रवाह। ई सारकथन नीति, प्रतिरोध आ पीढ़ीक जीवनकेँ एक कथासूत्रमे बाँधैत अछि; मुदा भूमिहीन परिवारक अन्तर्वर्ती संघर्षक कतेको दृश्य छिपा सकैत अछि।

# सुखदेवक कथाक पुनरागमन आ दीर्घ कार्य-कारण

बूढ़बा स्मरण करैत छथि जे सुखदेवक भूमि पहिले अदालतक निर्णयसँ घुरल छल, आब कानूनी रूपसँ स्थायी अधिकारक बोध भेटैत अछि। एहि पुनरागमनकेँ –६४क “सुखदेवक बदला”सँ जोड़ि पढ़ब चाही; पहिनुक न्यायिक निर्णय आ बादुक संरचनात्मक रूपान्तरण भिन्न चरण अछि। पॉल रिकरक कथात्मक विन्यासक दृष्टिसँ पहिनुक घटना नव अर्थ पबैत अछि, जे घटना तखन अपने समयमे नहि समेटल जा सकल छल।

इएह पुनरावलोकन उपन्यासक बारह सय बरखक दावाकेँ अनुभवयोग्य बनबैत अछि। व्यक्ति मरि जाइत छथि, मुदा भूमि-अधिकारक विवाद वंशजक जीवनमे घुरैत अछि। मुदा ई कहब उचित नहि जे समाजक समूचा जातिगत प्रभुत्व भूमिसुधारसँ समाप्त भेल; कथामे

स्वयं किछु पुरान सम्बन्धक तनाव आ श्रमिक परिवारसभक आंशिक स्थायित्वक उल्लेख अछि।

## माटिक सत्ता, जाति आ अभिलेख

लोकगीतक मूल वाक्य—“जमीनक मालिक बदलल, माटि नहि बदलल”—संपत्तिक लिखित मालिकाना आ खेतीक भौतिक श्रम बीचक भेद खोलैत अछि। चर्मकार टोलाक भूमिहीन परिवारसभमे भूमिक बँटवारा मात्र दानक कथा नहि, ऐतिहासिक बहिष्कारक संशोधन अछि। उत्तरऔपनिवेशिक आलोचनाक दृष्टिसँ राष्ट्रिय सत्ता-बदलाव स्थानीय सामाजिक श्रेणीकरण तोड़बमे कतेक सक्षम भेल, से परीक्षणक मुख्य प्रश्न बनैत अछि।

मुदा निम्नवर्गीय किसानक कण्ठ सँ बहस अपेक्षाकृत कम सुनाइत अछि; कमला देवी आ बूढ़बाक संवाद निष्कर्षक केन्द्र बनैत अछि। गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाकक प्रतिनिधित्वक समस्याकेँ एतय सावधानीसँ लागू कएल जा सकैत अछि: समुदायक पक्षमे न्यायपूर्ण कथन आ समुदाय स्वयं अपन भाषामे बजब, दूनू एक नहि। कथाक सहानुभूतिक महत्त्व एहि आलोचनात्मक दूरीकेँ समाप्त नहि करैत।

## न्यायक परिणाम आ नैतिक असहमति

कमला देवी प्रश्न करैत छथि जे किछु लोक सुखी आ किछु दुःखी भेलासँ परिवर्तन नीक कहतहुँ वा बेजाय। बूढ़बा तत्काल सर्वसम्मतिक बदला न्यायसंगततताकेँ कसौटी बनबैत छथि। ई कथन सामाजिक परिवर्तनकेँ केवल जनप्रियताक संख्यासँ नापबाक विरुद्ध अछि। वर्गगत लाभक हानि आ दीर्घ ऐतिहासिक अन्यायक प्रतिकारक नैतिक स्थिति एक समान नहि।

तथापि उपन्यास प्रतापसेन वंशजक कटुता, नव भूमिधरक आर्थिक कठिनाइ आ बदलावक बादुक विवादकेँ थोड़े वाक्यमे छोड़ैत अछि। यथार्थवादी उपन्यासक दृष्टिसँ पीढ़ीक संघर्षक ठोस दृश्य आर अपेक्षित रहैत अछि; व्यापक ऐतिहासिक आख्यानक दृष्टिसँ ई चयन विचारक निरन्तरताकेँ प्रधानता दैत अछि।

## कथाशिल्पक मूल्याङ्कन

–५५मे झंडा सामूहिक स्वतंत्रताक दृश्य छल; –५४मे जमिनक कागच व्यक्तिगत आ सामुदायिक अधिकारक मूर्त चिह्न बनैत अछि। उपन्यास सार्वजनिक राष्ट्रवादक भाषा सँ कृषि-सम्बन्धक दैनिक राजनैतिक अर्थ दिस उतरैत अछि।

कथावाचक अन्तमे परिवर्तन अनिवार्य बतबैत अछि, मुदा परिवर्तनक दिशा न्यायपूर्ण रहेबाक संघर्षक पक्ष बूढ़बाक वाक्यमे टिकैत अछि। सामन्ती सत्ता लुप्त भेलाक बाद सेहो स्मरणक काज समाप्त नहि होइत—ई अध्यायक उपलब्धि अछि; भूमि-सुधारक जटिल स्थानीय प्रक्रियाक अपर्याप्त दृश्यांकन एकर सीमा।

## अध्याय –५३ — बिजलीक पहिल दीप

### दृश्य-विन्यासमे प्रौद्योगिकी प्रवेश

हरिवंशक जमानामे गाम धरि पाकल सड़क, खम्भा आ बिजलीक तार पहुँचल। बालकसभ लोहाक खम्भा घेरै त अछि, वृद्धसभ पीपरक छाहरिमे नव इजोतपर गप करैत छथि। चौपालक पहिल बल्ब जखन जरै त अछि, तखन डकही पोखरिक पानि, गाछक पात आ मानवीय चेहरा एके दृश्यगत बनावटमे चमकैत अछि। ई विस्तार दृश्य-साक्ष्यक कलात्मक व्यवस्था अछि; लेखक नव सुविधाक आगमनकेँ मात्र सूचना नहि, सामूहिक देखबाक घटना बनबैत छथि।

जेनेतक दृष्टिबिन्दुक अवधारणा अनुसार कथावाचक बाहरी वर्णनसँ बालक, वृद्ध आ हरिवंशक प्रतिक्रिया धरि गमन करैत अछि। इन्द्रियगत दृश्य अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत अछि, जखन कि “बिजलीक तार गामक हर घर धरि पहुँचय बहुत बरख लागल” एक वाक्यमे दीर्घ असमान वितरणक इतिहास समेटैत अछि। एक क्षणक उत्सव आ दशकक पहुँच-समस्या बीच कथन-अवधि भिन्न अछि।

### दीपक अन्तर्पाठीयता आ शंखक पुरान वाद-शाला

हरिवंश बूढ़बासँ कहैत छथि जे आब शंख आ डोरीक दीपसँ बेसी उजास भेटत। एहि वाक्यमे –१००क वाद-शाला सीधे पुनः उपस्थित होइत अछि। पुरान दीप भ्रमक भेद देखेबाक साधन छल; नव बल्ब गामक दृश्यता विस्तारित करैत अछि। मुदा साधनक वृद्धि सत्यक स्वतः वृद्धि नहि—ई शंका बूढ़बाक उत्तरमेसँ निकलैत अछि।

बूढ़बाक कथन—“दीप जतेक इजोत दैत अछि, ततबे परछाहिँ सेहो बनबैत अछि”—चमक आ ज्ञानकेँ सरल समानार्थी बनेबाक विरुद्ध अछि। –१००क शंख-रजत दृष्टान्त मे गलत पहिचान छल; एतय आधुनिक प्रकाश सेहो दृश्य बनेबाक संग किछु ढाँकि सकैत अछि। उपन्यास अपन दार्शनिक आरम्भकेँ प्रौद्योगिकीक कथामे पुनर्व्यवस्थित करैत अछि।

## दृश्यताक राजनीति आ स्मृति

झाक राँसिएरक दृश्य-संवेदनाक वितरणक विचार सँ ई प्रश्न उठैत अछि जे नव उजासमे के नजरि अबैत अछि आ के अदृश्य रहैत अछि। पाठ स्पष्ट कहैत अछि जे तार सभ घर धरि बहुत बरखक बाद पहुँचल। तेँ सार्वजनिक चौपालक बल्ब समूचा गामक समान सुविधा नहि सिद्ध करैत। इजोत सार्वजनिक अछि, मुदा ओकर घरेलू वितरण असमान आ विलम्बित।

हरिवंश अपन झोरामे पुरान माटिक दीप राखैत छथि। ई वस्तु संग्रहालयक निष्क्रिय नमूना नहि, स्मृतिक दैनिक अभ्यासक वस्तु अछि। भौतिक संस्कृति अध्ययनक दृष्टिसँ माटिक दीप आ बल्ब दुनू श्रम, पदार्थ, इजोत आ स्मरणक अलग व्यवस्था बनबैत अछि। पुरान वस्तुक संरक्षण नव साधनक निषेध नहि, तकनीकी उत्तराधिकारक एकटा मिश्रित रूप अछि।

## प्रगतिक ध्वनि, कथावाचकक नियन्त्रण

अध्याय लोकगीतसँ आरम्भ भऽ बूढ़बाक स्पष्टीकरणक बाद हरिवंशक प्रतीकात्मक व्यवहारपर समाप्त होइत अछि। आरम्भक गीत पहिनहिसँ “नव इजोत” आ “पुरान बाती”क नैतिक जोड़ी स्थापित करैत अछि; मध्यक संवाद ओकर अर्थ खोलैत अछि; अन्तक वस्तु-क्रिया ओकरा स्मृति-संकेत बनबैत अछि। एहि त्रिस्तरीय पुनरावृत्तिसँ रचना एकजुट होइत अछि, मुदा विचारक अप्रत्याशित विरोध लेल स्थान कम बचैत अछि।

वृद्धसभक शंका, महिलासभक घरेलू अनुभव, विद्युतीकरणमे मजदूरक श्रम आ ऊर्जाक लागत अलग भाषिक पक्ष नहि पबैत। बाख्तिनीय बहुस्वरताक कसौटीमे ई नव युगक अनेक संवेदनाक संकेत अछि, परस्पर बराबर अधिकारवला स्वतन्त्र वैचारिक स्वरक पूर्ण संगोष्ठी नहि।

## अध्यायक उपलब्धि आ सीमा

पानि पर काँपैत पीयर बल्ब-इजोत उपन्यासक सर्वाधिक सटीक दृश्यगत क्षणसभमे एक अछि, कारण परिवर्तन जल, वृक्ष आ मानवीय चेहराकेँ एक फ्रेममे फेर देखबैत अछि। कथा प्रगतिक स्वागत करैत अछि मुदा दृश्यता आ पहचानक विच्छे दक डर सेहो जोगबैत अछि।

मुदा “आँखि चौन्हियाब”क रूपक सामाजिक आर्थिक प्रभावक स्थान नहि लऽ सकैत; बिजलीक घरेलू असमानता, शक्ति-संबन्ध आ श्रम-वितरणक बारीक विवरण न्यून अछि।

एहि सीमा कैं स्पष्ट करब नव तकनीकक विरोध नहि, उपन्यासक वैचारिक दृश्य-विन्यास आ सामाजिक यथार्थचित्रणक भेद सुरक्षित राखब अछि।

## अध्याय –५२ — सीमाक पुकार

### दू युद्धक संक्षेप आ घरक प्रतीक्षा

अध्याय १९६२ आ १९६५क युद्धक उल्लेखसँ गामक युवाक बिदाइ कहैत अछि। रे डियोक समाचार, स्त्रीसभक समदाउन, माएक आँचर आ विजयकुमारक सेनामे भर्ती होएब—ई सभ युद्धक्षेत्रसँ दूर रहैत अनुभवक वस्तु अछि। कथावाचक भारतक व्यापक सैन्य इतिहास लिखबाक बदला युद्धक स्थानीय प्रतिध्वनि पर केन्द्रित छथि। मूल पाठमे विशिष्ट रणनीतिक अभियान वा मोर्चाक आधिकारिक सैन्य विवरण नहि, तेँ आलोचना सेहो एहन दावा नहि करत।

जेनेतक आख्यान-अवधिक अर्थमे दू युद्ध “दूर सीमापर”क घटनासार बनैत अछि, मुदा एकटा माएक प्रतीक्षा समयकेँ अनुभवगत रूपसँ विस्तृत करैत अछि। “ने पूरा भय, ने पूरा गर्व, केवल प्रतीक्षा”—एहि रूपमे बिदाइक सामाजिक वैभवक अन्त:स्थ कठिन भाव स्पष्ट होइत अछि। कथा युद्धक प्रशासनिक नक्शासँ बेसी घरक राति आ साँझक अनिश्चितता लिखैत अछि।

### लैङ्गिक काज, भाव-सामग्री आ मौन

स्त्रीसभ तिलक देबैत छथि, समदाउन गबैत छथि, राति-सभामे सेनामे गेल युवाक नाम स्मरण करैत छथि। एहि काजकेँ केवल सजावट कहब गलत: युद्धक अनुपस्थित देहक सामाजिक स्मृति रखबाक संस्था महिलासभक श्रम पर निर्भर अछि। सारा अहमदक भाव-परिचलनक चिन्तन सँ गौरव, डर, शोक आ अपनापनक सामूहिक गठन देखल जा सकैत अछि।

मुदा माएक निजी शब्द अपेक्षाकृत कम अछि। हुनक आँचर आ नोर ओ अर्थ व्यक्त करैत अछि जे पाठककेँ बुझबाक अछि, पर हुनका स्वतंत्र राजनीतिक विचारक रूपमे विस्तृत वाणी नहि भेटैत। स्त्रीक करुण श्रम दृश्य अछि, मुदा निर्णयप्रक्रियामे ओकर अधिकारक प्रश्न कम उठल अछि।

## विजयकुमारक घुरब आ युद्धक देहगत शेष

१९६५क युद्धमे विजयकुमार घायल भऽ एक हाथ कमजोर लऽ गाम घुरैत छथि। ई विवरण शहादत वा विजयक एकपक्षीय रूपककेँ रोकैत अछि। घुरल सैनिक अपन देहमे युद्धक दीर्घ परिणाम लऽ अबैत छथि; मृत साथीकेँ स्मरण करबाक हुनक नियमित कथन एकटा उत्तरजीवी गवाही बनैत अछि। आघात-अध्ययनक दृष्टिसँ स्मृतिक दोहरावकेँ अर्थपूर्ण देखल जा सकैत अछि, मुदा विजयकुमारकेँ कोनो चिकित्सकीय मानसिक निदान देब कथासँ समर्थित नहि।

बच्चासभकेँ सीमा परक बरफ, रातिक पहरा आ साथी खसबाक कथा कहैत विजयकुमार सैन्य अनुभवक अन्तरपीढ़ीय वाचक बनैत छथि। एहि प्रसंगमे मूल अनुभवी व्यक्ति बजैत छथि, जबकि बूढ़बा ओकरा व्यापक स्मृतिक अनुक्रममे रखैत छथि। प्रत्यक्ष अनुभव आ सामूहिक अभिलेख दूनू एक-दोसराक पूरक अछि, एक दोसराक बदला नहि।

## राष्ट्र-सीमा आ नामक सैर

लोकगीत “सीमा देह चिन्है हे, नाम नहि चिन्है सीमा” कहैत अछि। एहि कथनमे भूगोलक राजनीतिक सीमा आ कथनक सांस्कृतिक प्रसार बीच रूपकात्मक भेद अछि। बिदेश वा सीमा पर मरल व्यक्ति अपन गामक बालकक उच्चारणमे उपस्थित रहैत अछि; ई लोकस्मृतिक नैतिक प्रतिज्ञा अछि, सीमाक वस्तुगत लोप नहि।

उत्तरऔपनिवेशिक राष्ट्र-अध्ययनक दृष्टिसँ स्थानीय समाज राष्ट्रिय इतिहासक घटनाकेँ अपन श्रुत अनुभवमे रूपान्तरित करैत अछि। मुदा अध्याय युद्धक विरोधी पक्ष, सीमा-पार नागरिक आ सैनिकसभक भिन्न दृष्टि नहि विकसित करैत; राष्ट्रक सामूहिक शोक एक प्रमुख दृष्टिबिन्दु रहैत अछि। एहि कारण पूर्ण बहुपक्षीय युद्धोपन्यासक अपेक्षा एतय अनुचित होयत।

## अभिलेखीय नैतिकता आ आलोचनात्मक आरक्षण

बूढ़बा गामसँ गेल सभ युवाक नाम धेनाइ अपन कर्तव्य कहैत छथि, चाहे ओ घुरल होथि वा नहि। —५५मे मृत पुरखाकेँ राष्ट्रक स्वतन्त्रताक समाचार देल गेल छल; —५२मे जीवित

सैनिक बच्चाकेँ मृत साथीक नाम दैत छथि। स्मरणक प्रवाह अतीतसँ भविष्य दिस चलैत अछि।

अध्यायक सीमा युद्धक विस्तृत सामाजिक-आर्थिक प्रभाव आ घायल सैनिकक पुनर्वासक अनकहल पक्ष अछि। तकर बावजूद कमजोर हाथक विवरण अमूर्त वीरगाथाक बीच जीवित देहक अपूर्णता बचा रखैत अछि—एकटा महत्त्वपूर्ण शिल्पगत उपलब्धि।

## अध्याय –५१ — हरित क्रान्तिक बीय ।

## नव उपज आ विलुप्त होइत स्थानीय ज्ञान

अध्यायक आरम्भमे अधिक उपज देनिहार नव बीया आ रासायनिक खाद खेतक दृश्य बदलि दैत अछि। भारी बाली आ अन्नक ढे र गामक भूखसँ राहतक आशा देत अछि; मुदा रत्नाक वंशजक पारम्परिक माटि-बाढ़ि-रोग सम्बन्धी ज्ञान उपेक्षित होइत अछि। कथा नव कृषिकेँ शत्रु नहि बनबैत; ओकर लाभ स्वीकारि ओकर एकमात्र विकल्प बनि जाएबाक संकट बतबैत अछि।

–५३मे बिजलीक नव इजोत पुरान दीपक अर्थकेँ बदलने छल; एतय नव बीया पुरान बीयाक व्यावहारिक अस्तित्वकेँ चुनौती दैत अछि। प्रौद्योगिकीक आगमनक समय कथा लाभ आ सम्भावित हानि दुनूकेँ एक फ्रेममे राखैत अछि। “उन्नति आ हानि, दुनू, एके संग” — सुनयनाक बोध एहि अध्यायक केन्द्रीय तर्क अछि।

## बीयाक अन्तर्पीढ़ीय ज्ञान आ पर्यावरणीय स्मृति

सुनयना अपन आजीक कहल बाढ़ि-सहनशील धानक किस्म स्मरण करैत छथि, जे आब गामक खेतमे नहि भेटैत अछि। उपन्यासक भीतर ई उदाहरण कृषि-विविधताक हानि समझेबाक कथा-साक्ष्य अछि; कोन वास्तविक धानक वैज्ञानिक सहनशीलता कतेक, से बाहरी शोधबिना प्रमाणित नहि कएल जा सकैत। कथा में बीया उपजक पदार्थसँ बेसी पुरखाक जोखिम-ज्ञान आ भविष्यक विकल्पक सङ् के त बनैत अछि।

रोब निक्सनक धीमी हिंसाक अवधारणासँ एकटा उपयोगी प्रश्न खुलैत अछि: कोनो तात्कालिक दुर्घटनाक बिना सेहो विकल्पसभक धीरे -धीरे हेरा जाएब संकट होइत अछि। तथापि साहित्यिक रूपक आ पारिस्थितिक कारणक वैज्ञानिक प्रमाण अलग स्तर अछि। उपन्यास पर्यावरणीय स्मृतिक सामाजिक अर्थ रचैत अछि, कृषि-अनुसन्धानक प्रयोगशालात्मक नतीजा नहि।

## माटिक हाँड़ी: संग्रहणसँ संरक्षण-श्रम धरि

सुनयना रत्नाक वंशजसभक संग चन्ना गाछीक शान्त कोनामे माटिक हाँड़ीमे पुरान बीया राखैत छथि। रोपनीक बेर ओकर एक मुट्ठी नव खेतक कातमे फेर बाउल जाइत अछि। एहि आवृत्तिपरक कर्ममे स्मृति अनुष्ठानक उच्चारण मात्र नहि, जीवित सामग्रीक पुनरुत्पादनक श्रम अछि। बीया बचायब लेल ओकर जीवनचक्र जारी रखब पड़ैत अछि।

मारिया पुइग दे ला बेलाकासाक देखभाल-नैतिकतासँ एहि क्रियाकेँ पढ़ल जा सकैत अछि: भविष्यक उत्तरदायित्व महज सैद्धान्तिक सम्मान नहि, बारम्बार करबाक ठोस काज अछि। मुदा हाँड़ीमे दीर्घकाल बीया रखबाक वास्तविक तकनीकी शर्त, स्थानीय परीक्षण आ बाहरी बाजारक दबावक आर्थिक विवरण पाठमे कम अछि।

## स्त्रीक ज्ञान-अधिकार आ जैविक विविधता

सुनयना प्रश्न करैत छथि, बूढ़बा उत्तर दैत छथि, मुदा अंतिम निर्णायक क्रिया सुनयना स्वयं समुदाय संग करैत छथि। –७०मे विमलाक गाछी-रोपनी मृत्यु-स्मृतिसँ जुड़ल छल; –५१मे सुनयनाक बीया-संरक्षण भविष्यमे सम्भावित बिपत्तिक तयारी अछि। स्त्री पात्र जीवन-निरन्तरताक संस्थापक रूपमे सामने अबैत छथि।

स्त्रीवादी पर्यावरणीय आलोचनाक दृष्टिसँ स्त्री आ माटिक स्वभावत: एक समानता मानि लेब अनावश्यक होयत। पाठमे सुनयनाक काज हुनक अर्जित जानकारी, परिवारक अनुभव आ सामाजिक सहयोग पर आधारित अछि, कोनो प्राकृतिक स्त्रीत्वपर नहि। एहि भेदक संरक्षण समकालीन आलोचनाक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि।

## कथनक पुनरावृत्ति, मूल्य आ सीमा

लोकगीतमे पुरान बीया बचायबक आग्रह पुनः-पुनः अबैत अछि, बूढ़बाक संवाद ओकर वैचारिक रूप दैत अछि, आ हाँड़ीक दृश्य व्यवहारक प्रतीक बनैत अछि। पाठकक लेल आलोचनात्मक मन्तव्य स्पष्ट बनैत अछि। किन्तु बीज-बजारक व्यापारी, कृ षकक वर्ग-भिन्नता, उत्पादक लागत वा दीर्घ संवर्धनक असफलता जकाँ प्रतिरोधी स्वर कम अबैत अछि।

अध्यायक उत्तम शिल्पगत उपलब्धि अतीतक स्मरणकेँ भविष्यक विकल्प बनायब अछि। बीया जँ एखन रोपल जाइत अछि तँ “इतिहास” संग्रहालयमे राखल मृत वस्तु नहि रहैत; ओ नव मौसमक संग पुनः परीक्षा दैत अछि। ई कथाक समय-दर्शनक एकटा सबल कृषि-रूपक अछि। अध्याय −५५ सँ −५१: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन राष्ट्रीय घटना सँ स्थानीय जीवनक पाँच अलग समय

−५५मे स्वाधीनताक घोषणा आ गामक उत्सव एक भिनसरमे केन्द्रित अछि; −५४मे कानून लागू भेलाक बाद भूमि-अधिकारक दीर्घ इतिहास उठैत अछि; −५३मे सार्वजनिक बल्बक तात्कालिक चमक आ घरेलू बिजलीक बरखोंक दूरी अछि; −५२मे युद्धक तीव्र घटना आ परिवारक दीर्घ प्रतीक्षा अछि; −५१मे नव बीयाक तत्क्षणिक उपज आ जैविक विकल्पक धीरे लोप होइत अछि। पाँचू अध्याय घटना-समय आ जीवन-समयक असमानताकेँ अलग माध्यमसँ लिखैत अछि।

## पुराना नाम, नब भौतिक साधन

गामक इतिहास केवल कहबाक परम्परा नहि रहैत: −५४क भूमि-अधिकारक कागच, −५३क बल्ब आ माटिक दीप, −५२क घायल सैनिकक देह, −५१क हाँड़ीमे बीया आ −५५क झंडा—सभ अपन-अलग भौतिक अर्थ लैत अछि। स्मृति जबहि ठोस वस्तुसँ जुड़ैत अछि, तखन ओकर संरक्षणक श्रम आ संसाधनक असमानता जाँचनाय जरूरी होइत अछि।

## अधिकारक विस्तार आ प्रतिनिधित्वक अनिर्णीत प्रश्न

−५५मे सम्पूर्ण राष्ट्रक अधिकारक दावा, −५४मे भूमिहीन परिवारक स्वामित्व, −५३मे घरेलू सुविधा, −५२मे युद्धसँ प्रभावित परिवारक साक्ष्य आ −५१मे स्थानीय कृषिज्ञानक मान्यता—ई क्रम सामूहिक अधिकारकेँ पाँच क्षेत्रमे विस्तारित करैत अछि। मुदा अनेक अध्यायक अन्तिम अर्थ बूढ़बाक सुव्यवस्थित वक्तव्यमे समेटल गेल अछि, पीड़ित आ श्रमिक पात्रक स्वतन्त्र दीर्घ स्वर कम छै क। शिल्पगत एकता आ वास्तविक बहुस्वरताक बीच ई तनाव दीर्घ कादम्बरीक मूल्याङ्कन लेल केन्द्रीय अछि।

## अध्याय –५० — आपातकालक अन्हार

## प्रकाशक निषेध आ प्रतिरोधक नव कथाशिल्प

१९७५क राष्ट्रिय आपातकालक प्रभाव गामक राति-सभापर थानाक अनुमतिक शर्त बनि पहुँचैत अछि। पहिने जकर पहचान दीप जराक सार्वजनिक न्यायिक गप करब छल, ओहि सभाकेँ आब अन्हार, फु सफु साहट आ सिपाहीक नजरिसँ बचि कऽ चलय पड़ैत अछि। लेखक केवल शासनक घोषणा नहि कहैत छथि; सभा करबाक शारीरिक व्यवहार बदलैत देखबैत छथि। एहि सूक्ष्म परिवर्तनमे दमनक ठोस साहित्यिक रूप बनैत अछि।

–५३क बिजलीक इजोत सार्वजनिक दृश्यता विस्तारित करैत छल; –५०मे राजनीतिक शासनक कारण जानि-बुझि दीप बुताओल जाइत अछि। चमक आ अन्हारक पुरान रूपक एतय नव अर्थ लैत अछि: उजासक अनुपस्थिति सदिखन अज्ञान नहि, कखनो सुरक्षा-पद्धति सेहो भऽ सकैत अछि। एहि उलटबोधमे उपन्यासक चिन्ह-व्यवस्थाक वास्तविक लचक अछि।

## देखनिहार राज्य आ अदृश्य सार्वजनिक क्षेत्र

“बिनु अनुमति कोनो सभा नहि जुटत”—थानाक ई निर्देश गामक सामुदायिक संस्था पर नियमन स्थापित करैत अछि। मिषेल फू कोक अनुशासन-सत्ताक दृष्टिसँ लोक देखल जाएबाक सम्भावनासँ अपन चाल, स्वर आ देहक गति बदलैत छथि। सिपाही गाछीक कातसँ गुजरै त अछि आ स्त्रीसभ साँस रोकैत छथि: अज्ञात निगरानीक आशङ्का स्वयं व्यवहार बदलवाबैत अछि।

मुदा फू कोक सर्वव्यापी अनुशासनक नमूना यहाँ अक्षरशः लागू नहि। मूल पाठमे एक ठोस सिपाहीक गुजरब आ एक स्थानीय निषेध अछि; व्यापक निगरानी-जालक प्रशासनिक संरचना देखाओल नहि गेल। मिषेल द सेर्तोक दैनिक जीवनक रणनीतिक उपायसँ स्त्रीसभक धीमी बातचीत केँ पढ़ब सेहो उपयोगी अछि: निषिद्ध स्थान छोडने बिना ओकर प्रयोग बदलब।

## स्त्रीसभक गुप्त सभा आ ज्ञानक स्मृति

सुनयना आरम्भमे डरै त छथि, मुदा बूढ़बाक संग संवादक बाद राति-सभा जारी रखैत छथि। स्त्रीसभ गोलमे बैसैत, आँखिक इशारा आ कानाफू सीसँ न्याय-बात करैत छथि। “कोनो कागच नहि लिखल गेल, तैयो कोनो नाम नहि छु टल”—ई कथन लिखित अभिलेखक पूर्वाग्रहकेँ चुनौती दैत अछि। मौखिक स्मरण राजनीतिक दबावमे समुदायक एकटा बचाव-अभ्यास बनैत अछि।

स्त्रीवादी सार्वजनिक-क्षेत्रक आलोचनामे ई सभा औपचारिक संस्थाक बाहिर वैकल्पिक राजनीतिक जगह अछि। मुदा बूढ़बाक “न्यायक सभा, राजनीतिक सभा नहि” कथन स्वयं विवादास्पद अछि: कोन अत्याचार गुप्त रूपसँ सुनल जायत आ के निर्णय देत, ई सार्वजनिक शक्तिसँ जुड़ल प्रश्न अछि। कथाक नैतिक संरक्षण लेल सभाकेँ गैर-राजनीतिक कहल गेल हो, मुदा ओकर क्रिया वास्तवमे अधिकारक संघर्षमे प्रवेश करैत अछि।

## रचनाक अवधि, भय आ दृश्यक विस्तार

दू बरखक गुप्त सभा किछु वाक्यमे समेटल गेल अछि, मुदा एक सिपाही गुजरबाक क्षण विस्तृत दृश्य बनैत अछि। जेरार जेनेतक अवधिक अर्थमे समयक ई असमान वितरण पाठककेँ प्रतिदिनक कठिनाइ एक घटनाक ध्वनि आ मौनसँ अनुभव करबैत अछि। पोखरिक हल्लुक ध्वनि आ स्त्रीसभक रोकल साँस भयकेँ अनिर्दिष्ट उपदेशसँ बाहर आनैत अछि।

कथावाचक अन्तमे लौ “पहिनेसँ बेसी ऊँच जरल” कहि प्रतिरोधक विजय-प्रतीक रचैत अछि। ई काव्यात्मक प्रभावी अछि, मुदा गुप्त सभाक निर्णयसभक ठोस सामाजिक परिणाम आ विरोधक जोखिम विस्तारसँ नहि देखाओल गेल; एहि कारण ऐतिहासिक संकटक जटिलता एक नैतिक भोरमे जल्दी समेटल जाइत अछि।

## स्वतंत्रता-पश्चात् अध्यायक मूल्य

–५५क प्रश्न पुछबाक नागरिक अधिकार एतय फेर संकटमे पड़ैत अछि। उपन्यासक दीर्घ-कालिक वृत्त राजनीतिक स्वतंत्रता केँ स्थायी गारंटी नहि मानैत: अधिकारक रक्षा पुनः सामूहिक काजक विषय बनैत अछि।

मुदा बूढ़बाक भविष्य-आश्वासन पाठककेँ दमनक वास्तविक अनिश्चितता सँ किछु बचा दैत अछि। उपन्यासक सर्वोत्तम क्षण दीपक घोषणा नहि, ओहि सिपाहीक कातसँ गुजरबाक समयक रोकल साँस अछि—जतय कथाक नैतिक परिणाम पहिनेसँ तय नहि प्रतीत होइत।

## अध्याय ४९ — सूखाक बरखि

### पानिक अभाव आ कथाक स्मृति-चक्र

मानसून विफल होइत अछि, पोखरिक कादो खुलि पड़ैत अछि आ खेतक माटि फाटैत अछि। ई दृश्य हुलासा आ रत्नाक समयक अकालकेँ स्मरण करबैत अछि; मुदा घटना एके रूपमे नहि घुरैत, कारण गाम लग नव सामुदायिक संगठन आ सरकारी राहतक साधन अछि। अतीतक पुनरावर्तन कथामे नव निर्णयक कारण बनैत अछि। स्मृति एहि अध्यायमे रोएबाक अनुष्ठान नहि, संकटसँ निपटबाक प्रक्रिया अछि।

जेरार जेनेतक आवृत्तिपरक कथनक अर्थमे “पहिनहुँ” झेलल अकालक संक्षिप्त स्मरण वर्तमानक एक अलग मौसमकेँ इतिहासक शृंखलामे रखैत अछि। साहित्यिक अवलोकनक रूपमे सूखल पोखरि आ इनारक पानिक विरोध प्रभावी अछि; मुदा जलविज्ञानक वास्तविक कारण, भूमिगत पानिक उपलब्धता आ दीर्घकालीन टिकाऊपन एहि कथासँ स्वतः सिद्ध नहि होइत।

### राज्यक राहत आ समुदायकेँ पढ़बाक पद्धति

गोपाल सरकारी अधिकारीक संग मिलि घर-घरक अन्न-वितरणक हिसाब रखैत अछि। ककरा कतेक भेटल, के छु टल आ के करा बेसी आवश्यकता—ई प्रश्न आपूर्ति कैँ संख्यात्मक कुलसँ व्यक्ति-विशिष्ट अधिकारमे बदलैत अछि। जेम्स स्कॉटक राज्यक वर्गीकरणपर आलोचनाक दृष्टिसँ कागचपर दर्ज नाम सहायता पहुँचबामे उपयोगी अछि, मुदा प्रशासनिक सूची कियो छु टल तँ ओ व्यक्ति अदृश्य सेहो भऽ सकैत अछि।

गोपालक गाम-नकल यादवानन्दक छाया-पंजीक उत्तराधिकार अछि। ओ सरकारी अभिलेखक पूर्ण निषेध नहि करैत; राज्य आ समाजक बीच दोहर अभिलेखीय जाँचक व्यवस्था बनबैत अछि। कथा एहि सहयोगकेँ सफल बतबैत अछि, मुदा कोन घरक नाम छु टल वा सूची पर विवाद भेल, तकर पृथक् उदाहरण नहि अछि। तेँ एकर सफलताक दावाकेँ उपन्यासक आन्तरिक कथन रूपमे चिन्हब उचित।

## इनार फेर खुनब: श्रमक दृश्य आ बँटल कर्तृत्व

गोपाल गामक युवकसभक संग दछिन टोलक बहुत दिनसँ बन्द इनार फेर खुनैत अछि। दिन भरि माटि उठेबाक श्रमक बाद गहींराइसँ पानिक पहिल झलक देखाइत अछि। यथार्थवादी विवरणक बल एहि ठोस काजमे अछि: राहत कागचक आदेश वा बूढ़बाक चमत्कारसँ नहि, प्रशासनिक समन्वय आ स्थानीय श्रम दुनूसँ अबैत अछि।

एहि संग एक सीमा सेहो अछि। युवकसभक श्रम अलग पात्रक अनुभव नहि बनैत; स्त्रीक दैनिक जल-संग्रहक कष्ट आ इनारक स्थानपर सामुदायिक अधिकारक प्रश्न कम अछि। गाम “मिलि” खुनलक—ई सामूहिक शब्द अर्थपूर्ण अछि, मुदा ओकर भीतरक वास्तविक श्रम-वितरणकेँ जाँचब आलोचनाक कर्तव्य अछि।

## कथाक पर्यावरणीय न्याय

“अकाल केवल अन्नक कमी नहि”—बूढ़बाक कथन संकटकेँ सामाजिक स्मृतिक परीक्षा कहैत अछि। ई रूपक समुदायकेँ पुरान जोखिमक अनुभव सँ शिक्षित होएब सिखबैत अछि। पर्यावरणीय न्यायक अध्ययनमे प्राकृतिक अभाव आ संस्थागत तैयारी एक-दोसरापर असर करैत अछि; उपन्यास गामक तैयार समूहक महत्त्व देखबैत अछि।

तथापि भूखक व्यक्तिगत असमानता, अनाजक दाम, सम्पत्तिक वर्ग-विभाजन आ दीर्घकालीन जल-स्रोतक देखभाल विशिष्ट उदाहरण रूपमे अनुपस्थित अछि। सामाजिक स्मृति उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा भौतिक संसाधनक विकल्प बना देब उचित नहि। कथा स्वयं सरकारी राहतक आवश्यकता स्वीकारि ई सीमा किछु हद धरि सँभालैत अछि।

## रचनात्मक उपलब्धि

सूखल पोखरि आ फेर भेटल इनारक पानि उपन्यासक जल-रूपक केँ निराशासँ सामूहिक पुनर्निर्माणक ओर घुमबैत अछि। गोपालक नोटबुक नाम-स्मृति आ खाद्य-वितरणक अभिलेखकेँ एकहि नीतिमे जोड़ैत अछि: कियो छु टय नहि।

अन्तिम आशावाद अपेक्षाकृत सहज अछि; आगामी मौसमक असफलता, इनारक पुन:सूखब वा वितरण-विवादक सम्भावना कम उठैत अछि। मुदा कथा एगो जाँचबाक योग्य

सामाजिक दावा रखैत अछि जे सामुदायिक स्मृति प्रभावकारी तखने होयत जखन ओ प्रशासनिक हिसाब आ श्रममे उतरय।

## अध्याय –४८ — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

### बेतार स्वर सँ दृश्य-यन्त्र धरि

गोपालक समयमे पहिल रे डियो आ तकर बाद पहिल टेलीविजन चौपालमे अबैत अछि। रे डियोक बाकस सँ दूरक स्वर निकलैत अछि; फेर उज्जर-करिया काँपैत चित्रक सोझाँ बालक आ वृद्ध जुटैत छथि। ई माध्यमक संक्रमण पाठककेँ मात्र नव वस्तु नहि दैत, देखबाक आ सुनबाक सामुदायिक समयक नब बनावट दैत अछि। चौपाल लोकगीतक स्थाने स्क्रीनक केन्द्र बनैत जाइत अछि।

मार्शल मकलुहानक माध्यम सम्बन्धी चिन्तनसँ प्रश्न उठैत अछि जे समाचारक विषयक संग माध्यम स्वयं लोकक बैसबाक, समय बाँटबाक आ ध्यान देबाक ढंग बदलैत अछि। मुदा अध्याय रे डियो आ टेलीविजनकेँ एके “बाहरक शोर” मानबाक प्रवृत्ति सेहो रखैत अछि; ध्वनि, प्रसारणक गति आ दृश्य माध्यमक भिन्न सामाजिक सामर्थ्य अधिक विस्तार माँगैत अछि।

### ध्यानक अर्थव्यवस्था आ परम्परागत वाणी

जे बच्चा पीपरक कात बूढ़बाक कथा सुनैत छल से स्क्रीनक सोझाँ बैसय लगैत अछि; जे स्त्रीसभ महारपर गीत गबैत छलीह हुनकर स्वर तेज यान्त्रिक अवाजक तर दबैत अछि। कुसुम एहि विस्थापनकेँ प्रश्न बनबैत छथि। एकर अर्थ ई नहि जे माध्यम स्वभावतः विनाशकारी अछि; समय आ ध्यान नव रूपमे बाँटल जा रहल अछि।

बूढ़बाक “बाहरक अवाज” आ “भीतरक स्वर”क भेद काव्यात्मक अछि, मुदा एकरा भाषिक शुद्धता वा संस्कृतिक कठोर सीमा नहि मानल जा सकैत। गामक भीतरक स्वर सेहो पुरान कालमे बाहरी संपर्क सँ बनल अछि; रे डियोसँ आबयवला बात स्थानीय जीवनकेँ सचेत सेहो कऽ सकैत अछि। उपन्यास स्वयं बाढ़िक दूर-दर्शनद्वारा ई दूसरा सम्भावना खोलैत अछि।

## दूरक बाढ़िक दृश्य आ स्मृतिक प्रतिध्वनि

टेलीविजनपर दूर देशक बाढ़िक चित्र देखि गामक वृद्धसभ अपन पुरान बाढ़ि स्मरण करैत छथि। एहि क्षण माध्यम ककरो स्मृति छीनैत नहि, बल्कि सुदूर अनुभवकेँ स्थानीय आघातक संग जोड़ैत अछि। ऐसँ रचनाक आरम्भिक द्वैत जटिल बनैत अछि: जे दूरक छवि अछि, ओ अपने निकटक दुख बुझबाक नब माध्यम सेहो होइत अछि।

पॉल रिकरक समय-अनुभवक दृष्टिसँ परदेपरक वर्तमान चित्र बीतल स्थानीय घटनाकेँ स्मरणक वर्तमानमे घुरा आनैत अछि। जेरार जेनेतक आन्तरिक दृष्टिबिन्दु एतय वृद्धसभक सामूहिक पहिचानक रूपमे संकेतित अछि, मुदा अलग वृद्धक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक स्मृति-वर्णन कम अछि।

## कुसुमक नव मंच: माध्यमक पुन:प्रयोग

अध्यायक अन्तमे कुसुम यन्त्र बन्द नहि करैत छथि; बच्चासभकेँ टीक-समय पीपरक कथा सुनबैत छथि आ यन्त्रकेँ पुरान कथा कहबाक नव मंच बनबैत छथि। ई निर्णय बुजुर्गक स्मृति-रक्षा आ आधुनिक माध्यमक सहअस्तित्व बनबैत अछि। “बाहर/भीतर”क द्वैत कथाक व्यवहारिक समाधानमे किछु नरम पड़ैत अछि।

माध्यम-अध्ययनक दृष्टिसँ कुसुम निष्क्रिय दर्शक नहि, स्थानीय सम्पादक छथि। मुदा कथा वास्तवमे कार्यक्रम कोना बनेलनि, प्रसारण/प्रदर्शनक साधन कोन छल, ककरा बोलबाक अधिकार भेटल—ई बात स्पष्ट नहि करैत। तेँ “नव मंच” एक सर्जनात्मक दिशा अछि, पूर्ण तकनीकी विवरण नहि।

## मूल्याङ्कन

अध्यायक सशक्त दृश्य दूरक बाढ़िक चित्र द्वारा अपन बाढ़ि स्मरण भेनाइ अछि। एहिसँ गामक परम्परा बंद संस्कृति नहि, परस्पर अनुभवक विश्लेषक बनैत अछि।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शिल्पगत सीमा लोकगीत, बूढ़बाक उपदेश आ अन्तिम व्यवहारक एकहि नैतिक अर्थपर फेर-फेर पहुँचना अछि। तकर बावजूद कुसुमक सक्रिय पुनर्व्यवस्था मीडिया-विरोधक सहज रूढ़ि सँ उपन्यासकेँ बचबैत अछि।

## अध्याय –४७ — खाड़ी देशक बजार

### प्रवासक नब भूगोल आ पुरान प्रतीक्षा

अस्सीक दशकमे निर्माण-मजदूरीक अवसरसँ दुबई, कु वैत आ सऊदी अरब दिस गामक युवा जाय लगैत अछि। कुसुमक पति रमेश तीन बरखक करारपर दुबई जाइत छथि, नियमित पत्र आ पइसा पठबैत छथि, कखनो फोनपर गप सेहो होइत अछि। एकरा –६७क पुरान परदेशी रामसेवकक कथा सँ तुलना करैत बूढ़बा दूरी आ संचारक बदलल परिस्थिति चिन्हैत छथि।

आख्यानक दीर्घ समयमे एकहि प्रवास-विषयक फेर गमन होइत अछि मुदा समरूप नहि। पहिने चिन्ह शोकक छल; आब कुसुम जोड़ी पोखरिक जड़िमे रमेशक सुरक्षित घुरबाक आशाक चिन्ह राखैत छथि। ई निर्णायक अर्थ-परिवर्तन पाठककेँ देखबैत अछि जे प्रतीकक अर्थ इतिहाससँ बदलैत अछि।

### धनक गमन आ अनुपस्थित देह

पत्र आ पइसा घर धरि अबैत अछि, मुदा पाबनि आ बियाहक समय रमेशक खाली स्थान रहैत अछि। नव पक्का छत आ वस्तुक आगमनक संग सुन्न आँगनक विरोध अध्यायक प्रमुख दृश्य-विन्यास अछि। प्रवासक सामाजिक अर्थ आय-वृद्धिक संख्यासँ समेटल नहि जा सकैत; देखभाल, पारिवारिक निर्णय आ अनुपस्थित श्रमिकक श्रम-शरीर सेहो कहानीक विषय अछि।

प्रवासी-अध्ययनमे अवतार ब्राहक घर-परदेशक प्रश्न उपयोगी अछि: “घर” केवल भौगोलिक वापसी नहि, सम्बन्धक निरन्तरता आ पहिचानक व्यवहार अछि। मुदा लेखकक कथन धन कमायबक कारण नाम बिसरि जाएबाक चेतावनी दैत काल प्रवासीपर नैतिक बोझ राखि सकैत अछि; प्रवासीक परिस्थिति बाध्यकारी आर्थिक संरचनासँ सेहो निर्मित होइत अछि।

## दृष्टिबिन्दुक असमानता: कुसुमक प्रतीक्षा आ रमेशक चुप्पी

कुसुमक अनुभव पत्र पाबनाइ, अधूरल पाबनि आ प्रतीक्षाक चिन्हमे केन्द्रित अछि। रमेश स्वयं अपन तीन बरखक मजदूरी, आवास, मालिकक व्यवहार, करारक शर्त वा विदेशी श्रमस्थलक द्वंद्व पर प्रत्यक्ष कथन नहि दैत छथि। एहन अनुपस्थित स्वरकेँ कथावाचकीय चयन कहब उचित अछि, न कि ओकर दुःखक अभावक प्रमाण।

सामाजिक यथार्थवादक कसौटीमे रे मिटेन्सक लाभ आ श्रमिकक स्थितिक जटिलताक अपेक्षा अधिक अछि। मुदा कुसुमक प्रतीक्षाक चिन्ह प्रवासक कथा कैं केवल कमाइ आ सफल वापसीक सोपान होमयसँ रोकैत अछि।

## कथामे स्मारकक नव प्रयोजन

जोड़ी पोखरिक जड़िमे कुसुम जकर चिन्ह राखैत छथि से मृतक रमेश लेल नहि, जीवित व्यक्तिक सुरक्षित घुरबाक आशा लेल अछि। पुरान स्मारकक मृत्युकेन्द्रित अर्थ बदलैत अछि। सामूहिक स्मृति एखन मात्र जे गेल तकर नाम धरब नहि, जे दूर अछि तकर भविष्यक संग सम्बन्ध राखब सेहो अछि।

पॉल रिकरक कथात्मक पहिचानक दृष्टिसँ ई चिन्ह रमेशक जीवनकेँ अनुपस्थितिक बीच कथासँ जोड़ैत अछि। मुदा चिन्ह राखब कुसुमक एकटा सामाजिक काज अछि; एतबे सँ रमेशक वास्तविक सुरक्षित घुरब सुनिश्चित नहि होइत। रचनाक आशा आ जीवनक परिणाम बीच भेद बचल रहैत अछि।

## भाषा, बजार आ मूल्याङ्कन

उपन्यासक लोकगीत “चिट्ठी आबै, पइसा आबै, मुदा मुँह नहि आबै” कहल भावक संक्षिप्ततम कलात्मक रूप अछि। बाहरी मुद्रा आ निजी सहचर्यक अनमेल एतय बिना बड़ उपदेशक उपलब्ध होइत अछि।

अन्तिम बूढ़बा-वक्तव्यमे नाम बिसरबाक नैतिकता अधिक स्पष्ट भऽ जाइत अछि। नव प्रवासी पीढ़ीक अलग भाषा, मिश्रित नागरिकता वा विदेशमे बनल सम्बन्ध स्वतः विस्मृति नहि; उपन्यास यदि ओकरा अधिक स्वायत्त स्वर दितय, तखन प्रवासक आलोचना अधिक बहुस्तरीय बनितय।

## अध्याय -४६ — सद्भावक परीक्ष ।

## अफवाहक समय आ साझा जीवनक अभिलेख

अस्सीक दशकक अन्तमे आसपासक साम्प्रदायिक तनाव अफवाहक रूपमे गढ़ नारिकेल पहुँचैत अछि। किछु बाहरी लोक हिन्दू आ मुस्लिम परिवारक बीच अविश्वास उत्पन्न करबाक प्रयास करैत अछि। लेखक हिंसाक विस्तृत दृश्य नहि रचैत; चौपालमे फैलल संदेह आ सामूहिक प्रत्युत्तर पर ध्यान रखैत छथि। एहि कथन-चयनमे संकट आ ओकर सम्भावित विस्तारक संकेत अछि, मुदा घटना-शृंखलाक विशिष्ट कारण-प्रमाण कम अछि।

पुरान मौलवी आ पंडित एक संग ठाढ़ भऽ साझा बाढ़ि, अकाल आ पारस्परिक सहयोगक बात मन पाड़बैत छथि। सामूहिक स्मृति एतय सांस्कृतिक साज-सज्जाक वस्तु नहि, अफवाहक सत्यापनक सार्वजनिक आधार बनैत अछि। मुदा ककरो स्मरणक कथा वर्तमानक सभ आरोपक प्रमाण-परीक्षाक विकल्प नहि; ई एहन सामाजिक विश्वास अछि जकरा विशिष्ट तथ्यसँ जाँचब जरूरी अछि।

## दू धार्मिक पात्र आ कथाक बहुस्वरताक सीमा

मौलवी आ पंडितक साझे बोलब धर्म-भेदकेँ विवादक अनिवार्य कारण मानबाक विरुद्ध अछि। दुनू अपन समाजक साक्षी अछि आ एके चौपाल साझा करैत छथि। बाख्तिनीय बहुस्वरता तँ तखने गाढ़ होइत जखन ई पात्रसभक अलग ऐतिहासिक स्मृति, असहमति आ व्याख्या स्वतन्त्र रूपसँ विकसित होइत। एतय दूनूक वाणी मुख्यतः सद्भावक एक निर्णयकेँ पुष्ट करैत अछि।

मुस्लिम परिवारसभक पीढ़ीगत श्रम, साझा पोखरिक पानि आ खाद्य-सहयोग बताओल गेल अछि, मुदा हुनक अलग व्यक्तिनाम, निजी भय, सामाजिक स्थिति आ प्रतिरोधक अन्तरसंघर्ष अधिक स्पष्ट नहि। एहन प्रतिनिधित्व सद्भावक नैतिक छवि बनबैत अछि, मुदा समाजक बहुध्वनिक पूर्ण आख्यान नहि।

## साम्प्रदायिकता कैँ केवल बाहरी षड्यन्त्र मानबाक प्रश्न

बूढ़बा कहैत छथि—“फू ट बाहरसँ आबैत अछि, कुसुम, भीतरसँ नहि।” ई वाक्य गामक साझा इतिहासपर भरोसाक काव्यात्मक घोषणा अछि। मुदा आलोचनात्मक विवेचनमे एकरा सार्वभौम समाजशास्त्रीय नियम नहि बनाओल जा सकैत। अफवाह बाहरी लोक फैला सकैत छथि, तैयो ओकर ग्रहण स्थानीय पूर्वाग्रह, शक्ति-सन्तुलन आ मौन-असमानतापर निर्भर भऽ सकैत अछि।

उत्तरऔपनिवेशिक सामाजिक आलोचनाक कसौटीमे स्थानीय सौहार्दक मूल्य स्वीकार करैत ओकर इतिहासक अपूर्णता सेहो देखब आवश्यक अछि। कथा बाहरी खलनायकक कारण स्थिति जल्दी स्पष्ट करैत अछि; हिंसक अफवाहक जटिल प्रसार आ समुदाय भीतरक संभावित विभाजनक कठिन जांच कम होइत अछि।

## साझा पोखरि आ पीपर: स्थानीय सार्वजनिक स्थल

लोकगीत “एक्के पोखरिक पानि” आ “एक्के माटिक अन्न” सांप्रदायिक पहिचानसँ पहिने साझा पारिस्थितिक निर्भरता प्रस्तुत करैत अछि। पीपरक छाँह दूनू समुदायक उत्सवक स्थान बनैत अछि। बेनेडिक्ट एन्डरसनक कल्पित समुदायक विचारक सहायता सँ कहल जा सकैत अछि जे समुदाय साझा कथा आ आवृत्तिपरक अनुष्ठानसँ अपना कैँ पहिचानैत अछि; मुदा गामक प्रत्यक्ष परिचय आ दूरगामी आधुनिक राष्ट्रक संरचना एक समान नहि।

चौपालक एहन उपयोग सार्वजनिक स्थानक पुर्नरचनाक संकेत अछि। तथापि स्थानीय धार्मिक चिह्नक साझा स्वीकृति सभ परिवारक बराबर अनुभवक प्रमाण नहि: कियो लोक अपन प्रार्थना वा पाबनि लेल अलग ठाम चाहैत अछि कि नहि, तकर गप पाठमे नहि।

## सर्जनात्मक निर्णय

उपन्यास एहि अध्यायमे साझा पीड़ा आ सहायता कैँ जाति-धर्मक तात्कालिक विभाजनक विरुद्ध जीवित राजनीतिक संसाधन बनबैत अछि। मौलवी आ पंडितक एक संग चौपालपर आबब, लोकगीतक अपेक्षा बेसी मूर्त क्रिया बनैत अछि।

सीमा एहि सफल दृश्यसँ निष्कर्षपर अति शीघ्र पहुँचब अछि। अफवाह फैलौनिहारक प्रत्यक्ष कथन, आरोपक विषय आ प्रभावित परिवारक मनोविज्ञान विस्तारसँ नहि भेटैत। तकर बावजूद ई अध्याय दीर्घ कादम्बरीमे “नाम जनब” कैं हिंसाक विरुद्ध स्मरणशील पड़ोसक नैतिकतामे रूपान्तरित करैत अछि। अध्याय –५० सँ –४६: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन मौन, अन्न, स्वर, दूरी आ अफवाह: संवादक पाँच संकट

–५०मे शासनक निषेध स्त्रीसभक स्वर गुप्त करैत अछि; –४९मे राहतक सूची कियो छु टबाक जोखिम रखैत अछि; –४८मे तेज प्रसारण स्थानीय गीत दाबि सकैत अछि; –४७मे परदेशक दूरी पारिवारिक उपस्थितिकैं बाधित करैत अछि; –४६मे अफवाह पड़ोसक परिचय तोड़बाक प्रयास करैत अछि। पाँचू ठाम सामुदायिक सम्बन्ध स्वत: अटूट नहि—नव अभ्यास, संवाद आ जाँचक आवश्यकता अछि।

## सामुदायिक ज्ञानक पाँच भिन्न साधन

–५०क आँखिक इशारा आ मौखिक स्मृति, –४९क पुन:खुनल इनार आ दोहर अभिलेख, –४८क यन्त्रक नब कथा-मंच, –४७क प्रवासी लेल प्रतीक्षाक चिन्ह आ –४६क साझा आपदाक लोकस्मरण—सभकैं “परम्पराक रक्षा” कहि एके वस्तु नहि बनाओल जा सकैत। कतहु गुप्तता रक्षा करैत अछि, कतहु सार्वजनिक लेखा, कतहु प्रत्यक्ष श्रम, कतहु प्रतीक। आख्यानक विविधता एहि भिन्न माध्यमकैं अलग राखलासँ स्पष्ट होइत अछि।

## आलोचनात्मक अन्तर: समाधानक आशावाद

राति-सभा बचि जाइत अछि, इनार पानि दैत अछि, कुसुम माध्यमकैं पुन:प्रयुक्त करैत छथि, रमेशक प्रतीक्षा आशामय चिन्ह बनैत अछि, आ अफवाह साझा इतिहाससँ कमजोर पड़ैत अछि। पाँचू अध्यायक अन्त सामुदायिक उपायपर अछि। ई दीर्घ कादम्बरीक नैतिक एकता अछि; मुदा प्रत्येक संकटमेसँ बचि रहल आर्थिक, राजनीतिक आ मनोवैज्ञानिक अनिश्चितताक विस्तार कम भेटैत अछि। ई उपलब्धि आ सीमा दुनू एकसंग स्वीकार करब पद्धतिगत रूपसँ जरूरी अछि।

## अध्याय –४५ — उदारीकरणक हवा

### इतिहासक तीव्रता आ पात-जड़िक रूपक

१९९१क आर्थिक बदलाव गढ़ नारिकेलमे रंगीन प्लास्टिक, नव कपड़ा, के बल टेलीविजन आ निजी नौकरीक माध्यमसँ देखाओल गेल अछि। कुसुमक बेटा दिनेश नगरक कम्पनीमे काज पबैत छथि, मुदा तेज जीवनक बीच गामक मद्धिम साँझ मोन पाड़ैत छथि। घटना केवल अर्थनीतिक घोषणा नहि, इच्छा, रोजगार आ दैनिक समयक बदलल लय अछि। कथा स्थानीय जीवनमे व्यापक नीतिक प्रवेशक चुन्नल चिह्न रखैत अछि, ओकर सम्पूर्ण आर्थिक इतिहास नहि।

हवा, पात, डाढ़ि आ जड़िक रूपक अध्यायक लोकगीतसँ मुख्य संवाद धरि बनल रहैत अछि। जेरार जेनेतक आवृत्तिक स्तरपर “लोक आब बेसी चाहय लागल” जकाँ सारकथन परिवर्तनक सामूहिक प्रवृत्ति बतबैत अछि; दिनेशक गाम घुरबाक दृश्य ओकर व्यक्तिगत परिणाम बनैत अछि। मुदा अनेक व्यक्ति समान इच्छा राखैत छथि—एहन व्यापक दावा कथावाचकक सामान्यीकरण अछि; व्यापारी, श्रमिक, स्त्री आ बेरोजगार युवा एके स्वरमे पाठमे नहि बजैत।

### बाजारक नब दृश्यता आ इच्छाक राजनीति

नव वस्तुक चमक दिनेशक अवसरक संग-साथी आ गामक सामाजिक बँटवाराक संकेत अछि। वस्तु हाथक पहुँचमे आबैत अछि, मुदा कोन घर ओकरा किनि सकैत अछि, कोन परिवारक श्रमक कीमत बदलैत अछि, ई भेद विस्तारसँ नहि भेटैत। फ्रे डरिक जेम्सनक उत्तरआधुनिक उपभोगक संस्कृतिक दृष्टिसँ दृश्य-वस्तुक चमक आ इच्छाक गति एक समस्या बनैत अछि, मुदा एहि अध्यायकेँ नव बजारक पूर्ण विरोधपत्र कहब गलत: निजी रोजगारक संभावना स्वीकारल गेल अछि।

–४८मे टेलीविजनक तेज स्वर लोकगीतकेँ दबबैत छल; –४५मे के बलक अनेक चैनल दृश्य-संसारकेँ आर खण्डित करैत अछि। माध्यमक विस्तार आ बाजारक विस्तार दुनू पीपर

लगक सामूहिक साँझ पातर करैत अछि। एहि पुनरागमनमे कथानक अपन पूर्व प्रश्नक नव ऐतिहासिक रूप देखबैत अछि।

## घर-बाहरक द्वैत आ प्रवासी स्मृति

दिनेश अपन बच्चा सभ संग पीपर लग बैसब नव नियम बनबैत छथि। एतय पीपर केवल पुरातन वस्तु नहि, बदलल परिवेशमे परिवारक कथन-अभ्यासक स्थान अछि। कथा बाहरी रोजगारकेँ नकारैत नहि, गामसँ सम्बन्धक पुनर्निर्माण खोजैत अछि।

मुदा “जड़ि थिर” रहबाक आदर्श स्वयं प्रश्नयोग्य अछि: गामक परम्परा सेहो –५४क भूमिसुधार आ –५०क प्रतिरोध सँ बदलल अछि। अत: जड़ि केँ अविचल सत्ता मानब उपन्यासक इतिहास-चेतनाक विपरीत पड़त। सर्वोत्तम अर्थमे जड़ि स्थानक जड़ता नहि, स्मरणसहित संवादक निरन्तरता अछि।

## कथावाचकक मूल्य-विन्यास

बूढ़बाक उत्तर नव हवा केँ भीतर आबय देबाक पक्षमे अछि, मुदा जड़ि गहींर करबाक आग्रह करैत अछि। ई सहअस्तित्वक स्पष्ट सूत्र अछि। मुदा लोकगीत, बूढ़बाक वक्तव्य आ दिनेशक अन्तिम आचरण एके बातक तीन रूप होइत अछि; मतभेदक खुलल स्थान सीमित अछि।

उदार अर्थनीतिक स्थानीय प्रभाव—जमिनक दाम, रोजगारक असुरक्षा, उपभोगक ऋण, नव मध्यमवर्गक अंतर—पाठमे व्यापक रूपसँ नहि विकसित होइत। तेँ अध्यायक उपलब्धि अनुभवगत रूपक आ ऐतिहासिक संक्रमणक दृश्य-चयन अछि, सम्पूर्ण राजनीतिक अर्थनीतिक विवरण नहि।

## मूल्याङ्कन

प्रतीकक सशक्त पक्ष ई अछि जे तेज हवा गाछक पात हिलबैत अछि मुदा गाछक जड़ि पर ध्यान करब आवश्यक बनबैत अछि। अर्थनीतिक बदलावकेँ एक क्षणक बाहरी धक्कासँ बेसी दीर्घ अन्तरपीढ़ीय समायोजनक रूपमे देखाओल गेल अछि।

समीक्षात्मक सीमा ई अछि जे नव पीढ़ीक स्वर आखिरकार बूढ़बाक पूर्व-स्थापित निष्कर्ष मानि लैत अछि। असहमतिक स्वतन्त्र अनुभव विकसित होएत तँ कथा नव बजारक अन्तर्विरोध आर जटिल रूपमे खोलि सकितय।

## अध्याय –४४ — पहिल कम्प्यूटर

## लेखनक सामग्री बदलैत अछि, स्मरणक प्रश्न रहैत अछि

प्रतिमाक समयमे नारिकेल पात पाठशालामे सरकारी योजनासँ पहिल कम्प्यूटर पहुँचैत अछि। धूसर यन्त्रक हरियर अक्षर आ नारिकेल पातपर लिखल पुरखाक नामक दृश्य एके पाठशालामे ठाढ़ अछि। प्रतिमा सबसँ पुरान लोकगीतक पहिल पाँति टाइप करैत छथि, जकर बाद बच्चासभ ताली दैत अछि। एहि क्रियामे लिपि-माध्यमक संक्रमण केवल तकनीकी सूचना नहि, सांस्कृतिक घटना बनैत अछि।

नारिकेल पात, छापाखाना आ कम्प्यूटरक क्रम कथामे लिखित माध्यमसभक आत्मकथा-जकाँ अछि। पॉल रिकरक कथात्मक निरन्तरतामे साधन बदललाक बादो मूल प्रश्न रहैत अछि: ककरा लेल लिखल गेल, आ के ओकर अर्थ ग्रहण करत? मुदा “आत्मा” अपरिवर्तित रहत—एहन बूढ़बाक सूत्र सांस्कृतिक अर्थक क्रमिक बदलावकेँ किछु सरल बनबैत अछि।

## गिनती आ अर्थक बीच विरोधक परीक्षा

लोकगीत कहैत अछि यन्त्र गिनती करैत अछि मुदा नामक कथा नहि बुझैत। एक बूढ़ सेहो प्रश्न करैत छथि—“यंत्र अक्षर राखि सकैत अछि, मुदा अर्थ राखत की?” ई प्रश्न तकनीकी संग्रहण आ व्याख्याक भेद अछि। अक्षर सुरक्षित रहब मात्रसँ सामाजिक प्रसंग, उच्चारण, स्रोत आ अनुमति सुरक्षित नहि होइत। डिजिटल मानविकीमे अभिलेखक संरचना आ ओकर मेटाडाटा अर्थग्रहणक शर्त बनैत अछि।

तथापि कम्प्यूटर केवल संख्या गनबैत अछि आ अर्थ असम्भव अछि, एहन निरपेक्ष कथन आलोचनात्मक रूपसँ बहुत कठोर होयत। डिजिटल पाठक माध्यमसँ लोकक वाणी सुनि आ साझा कऽ सकैत छथि, मुदा अर्थक व्याख्या मनुष्यक सामूहिक काज रहैत अछि। उपन्यासक अन्तिम “अपने भाषामे” संरक्षणक प्रस्ताव एहि अधिक सूक्ष्म निष्कर्ष दिस संकेत करैत अछि।

## अभिलेखक सत्ता आ नामक निजता

बूढ़बा चेतबैत छथि जे नाम “केवल संख्या” बनि गेल तँ यन्त्र खतरनाक होयत। एहिसँ −७८क वैकल्पिक पंजी आ −४९क सरकारी हिसाबक प्रश्न डिजिटल युगमे घुरैत अछि। ककरा नाम राखबाक अधिकार, ककरा देखबाक अनुमति आ ककरा सुधार करबाक अवसर? ई प्रश्न अध्याय उत्पन्न करैत अछि, यद्यपि डेटा-सुरक्षाक ठोस नियम पाठमे नहि गढ़ल गेल अछि।

मिषेल फू कोक ज्ञान-सत्ता सम्बन्ध सँ ई देखल जा सकैत अछि जे डिजिटल अभिलेख तटस्थ पात्र नहि: ओकर वर्गीकरण ज्ञान-निर्माणक मानक बनबैत अछि। मुदा मूल पाठ एखन मुख्यत: आशापूर्ण शिक्षणक दृश्य अछि, दमनकारी कम्प्यूटरीकृत राज्यक प्रत्यक्ष आरोप नहि। भविष्यक जोखिमक संकेतकेँ घटित घटना मानि लिखब अनुचित।

## कथाक समयमे भविष्याभास

अन्तिम कथन कम्प्यूटर-पाठशालाक छोट आरम्भ भविष्यक “सम्पूर्ण डिजिटल अभिलेखागार”मे बदलत कहैत अछि। जेनेतक पूर्वाभासक दृष्टिसँ भविष्यक सूचना अध्यायक वर्तमान घड़ी सँ आगू छलाँग मारै त अछि। पाठक अपन स्वतंत्र अनिश्चितता घटैत अनुभव करैत अछि, मुदा दीर्घ कादम्बरीमे माध्यम-परिवर्तनक ऐतिहासिक रेखा स्पष्ट होइत अछि।

प्रतिमाक शिष्यसभक क्रमिक टाइपिंग वास्तविक काज अछि; डिजिटल अभिलेखागार भविष्यक कथावाचकीय प्रतिज्ञा। दूनूकेँ एक समान सत्यापित परिणाम नहि मानब।

## अध्यायक मूल्याङ्कन

हरियर स्क्रीनपर लोकगीतक पहिल पाँति उभरबाक दृश्य अत्यन्त प्रभावी अछि। ओकरा लोकक हाथक नारिकेल पातसँ जोड़ब तकनीक आ स्मृतिक संघर्षकेँ एक दृश्यमे सघन करैत अछि।

मुदा प्रतिमा आ शिष्यसभ अलग-अलग भाषा-चयन, त्रुटि, लिपि आ सम्पादनपर बहस करैत नहि देखाओल गेल; एहन प्रत्यक्ष प्रक्रिया भेटत तँ डिजिटल माध्यमक नैतिक जटिलता आर स्पष्ट होइत।

## अध्याय –४३ — सुखल होइत धार

## जलसमाधिक शीर्षकसँ जल-विलुप्ति धरि

कमला-बलानक जल-स्तर घटबाक, जंगल कटबाक, प्रदूषण बढ़बाक आ माछ कम भेटबाक घटना अध्यायमे क्रमसँ अबैत अछि। जे जल पहिने बाढ़ि आ गोहिक भयक केन्द्र छल, से आब सूखैत संसाधन अछि। कथावाचक “नव, धीमा बिपत्ति” कहि कालक लम्ब फैलाव चिन्हैत छथि। ई अध्याय उपन्यासक जलसमाधि-रूपक कैं केवल मृत्यु अथवा डुबबाक बिन्दुसँ निकारि जैविक जीवनक निरन्तरताक शर्त बनबैत अछि।

रोब निक्सनक धीमी हिंसाक सिद्धान्त सँ पर्यावरणीय क्षतिक दृश्य-विहीन, दीर्घकालिक चरित्र बुझल जा सकैत अछि। मुदा पाठमे जंगल-कटान, प्रदूषण आ धार-सूखनक वैज्ञानिक कारण-श्रृंखला विस्तृत परीक्षणसँ सिद्ध नहि; उपन्यास आन्तरिक कथावाचकीय सम्बन्ध प्रस्तुत करैत अछि। साहित्यिक चिन्ता आ पर्यावरणीय तथ्य-जाँच भिन्न काम अछि।

## बाढ़िक स्मृति आ विपरीत वर्तमान

पुरान लोक बाढ़िक समय घर बहयबाक बात मोन पाड़ैत छथि, मुदा आब ओहि बाढ़िक नदी स्वयं सूखैत देखैत छथि। एहि विरोधमे समयक एक गहींर विडम्बना अछि: भयक वस्तु अभावक कारण चिन्ताक वस्तु बनि जाइत अछि। जेरार जेनेतक आवृत्तिपरक कथन “बरख-दर-बरख” अनेक वर्ष एक अनुच्छे दमे समेटैत अछि।

सत्यनारायण जोड़ी पोखरि छोट भऽ गेल कहैत छथि आ बूढ़बा गोहिक नव अर्थ—“जल पीबि रहल”, “हवा गंदा कऽ रहल”, “माटि खा रहल”—रचैत छथि। गोहि एहि ठाम वास्तविक जलचर वा अलौकिक साक्षी सँ व्यापक विनाशक रूपक बनि जाइत अछि। एहि रूपकक विश्लेषणमे जीवित गोहिक वास्तविक पारिस्थितिक व्यवहारक विषय नहि मिलाउ।

## स्मृतिरक्षा सँ पर्यावरण-रक्षा

–७०मे चन्ना गाछीक रोपनी मृतकक नाम सुरक्षित करबाक निमित्त छल; –४३मे सत्यनारायण नव गाछ रोपैत छथि, पोखरिक महार बनबैत आ बरसातक पानि रोकबाक लेल

आहर खुनैत छथि। स्मरणक भूमिकेँ पारिस्थितिकी सँ जोड़ि कथा नैतिक काजक दायरा विस्तारित करैत अछि। भविष्यक बच्चाक जन्मसँ गाछ रोपबाक सम्बन्ध जीवनक उत्तराधिकारक प्रत्यक्ष प्रतीक बनैत अछि।

देखभाल-नैतिकताक दृष्टिसँ ई उपयोगी रूपान्तर अछि, मुदा जल-रक्षा केवल निजी रोपनीसँ पूरा नहि; औद्योगिक प्रदूषणपर संस्थागत नियन्त्रण, भूजल-व्यवस्थापन आ सामूहिक अधिकारक प्रश्न सेहो उठैत अछि। मूल पाठ एहिमे सम्पूर्ण नीति नहि बनबैत।

## कथावाचक आ मानवीय जिम्मेदारी

बूढ़बाक “प्रकृतिक स्वयंक अन्याय” कथन पात्रक रूपकात्मक उत्तर अछि; आङ् गिक पर्यावरणीय कारणक सीधा विवरण नहि। कतेको पर्यावरणीय प्रक्रिया मानवीय गतिविधिसँ जुड़ल देखाओल गेल अछि, मुदा कथाक वाणी संकटकेँ प्रकृतिक बीमारी कहि सामान्यीकृत करैत अछि। आलोचनामे मानवीय दायित्व आ प्राकृतिक परिवर्तनक अन्तर चिन्हब जरूरी अछि।

समूहक युवासभ काज करैत अछि, मुदा नदीक कात बसनिहार मछु आरा परिवार, स्त्रीसभक पानि आनबाक श्रम आ प्रदूषण करणिहार संस्थाक दृष्टि कम उभरैत अछि। बहुस्वरता पर्यावरणीय पक्षधर घोषणासँ स्वतः उत्पन्न नहि होइत।

## मूल्याङ्कन

नाम सुरक्षित करैत-करैत गामकेँ नाम राखनिहार जीवन-जगत बचेनाइ आवश्यक भेल—एहि भावकेँ उपन्यास अत्यन्त सटीक रूपमे नूतन करैत अछि। जल एहि अध्यायमे कथानकक सजावट नहि, कथा चलबाक भौतिक शर्त अछि।

उपलब्धि गामक पारिस्थितिक चिन्ताक कथानकमे स्पष्ट प्रवेश अछि; सीमा ई जे संकट जल्दी सामुदायिक रोपनीक नैतिक समाधानमे समेटल जाइत अछि, व्यापक जिम्मेदारीक संघर्ष खुलैत नहि।

## अध्याय –४२ — हाथक फोनक चमत्कार

### दूरी घटबाक घटना आ ध्यानक नब बँटवारा

पहिल मोबाइल फोन मुखियाक हाथमे अबैत अछि; दूर शहर गेल बेटाक अवाज सुनि लोक ओकरा घेरि लैत अछि। धीरे -धीरे अनेक घर धरि फोन पहुँचैत अछि आ परदेशक खबर तत्काल भेटय लगैत अछि। लेखक संचारक नव गति कें उत्सवक दृश्यसँ देखबैत छथि, मुदा ओकर संग एकटा उलटा दृश्य रचैत छथि—हाथक यन्त्रमे मगन मनुष्य कातमे बैसल लोककें नहि देखैत।

–४७मे रमेश आ कुसुमक पत्र आ असमय फोनक दूरी छल; –४२मे परदेशक माए एकदम लग सुनल बेटाक अवाजपर कानैत छथि। एहि पुनरागमनमे संचार-माध्यम कथाक भिन्न कालक अनुभवकें फेर अर्थ दैत अछि। जेरार जेनेतक अवधि एतय महिनाक प्रतीक्षासँ क्षणभरिक उत्तर धरि सिमटैत अछि।

### यन्त्रक माध्यम आ उपस्थितिक बहुविध अर्थ

मोबाइल फोन ककरो देह नहि अनैत, मुदा अवाजक तत्काल उपस्थिति दैत अछि। वृद्ध माए “जेना तूँ आँगनहिमे ठाढ़ छह” कहैत छथि। “जेना” शब्दकें शाब्दिक कथित आवागमन नहि बुझबाक चाही; ई अनुभूत निकटताक उपमा अछि। माध्यम-चिन्तनमे प्रत्यक्ष देह, श्रुत स्वर आ स्मरणक उपस्थिति एके स्तर नहि।

मार्शल मकलुहानक माध्यमक सामाजिक रूपान्तरणक चिन्तनसँ ई दृश्य पढ़ल जा सकैत अछि: सन्देश मात्र नहि, सन्देश अबबाक समय आ आकार परिवारक सम्बन्ध बदलैत अछि। मुदा तकनीककें स्वयं सम्बन्ध बनबैत शक्ति मानब पर्याप्त नहि; के फोन चलाब सिखबैत छथि, के उपकरणक पहुँच पबैत अछि, ओ सेहो महत्त्वपूर्ण अछि।

## अंजलिक शिक्षण आ वृद्धक अधिकार

अंजलि गामक वृद्धसभकेँ मोबाइल चलाब सिखबैत छथि। ई छोट विवरण पीढ़ीसभक बीच सत्ता-सम्बन्धकेँ एकतरफा नहि रहय दैत: वृद्धसभ स्मृतिक स्रोत छथि, मुदा नव संचारक काजमे नव पीढ़ी शिक्षक बनैत अछि। एतय ज्ञानक आदान-प्रदान पारस्परिक अछि।

मुदा “कोना ओकर मुँह देखल जाय”क भविष्यसूचक सम्भावना पाठककेँ ठोस उपकरणक काल-भेदपर सोचब बाध्य करैत अछि। अध्यायमे पहिल श्रव्य मोबाइल सँ पछाति दृश्य-संचार धरि सटीक क्रम स्पष्ट नहि; दीर्घ कथाक सारकथन भिन्न तकनीकी चरण समेटि दैत अछि।

## शंख-रजतक भ्रमक आधुनिक रूप

बूढ़बा कहैत छथि जे दूरक आवाजमे बुड़ल लोक कातमे बैसल माए-बापक मुँह बिसरि जाइत अछि। –१००मे शंखकेँ चानी बुझबाक भ्रम वस्तुक गलत पहिचान छल; एतय अनुभूत निकटता आ वास्तविक सम्बन्धक ध्यान-अभावक भेद अछि। दूनूकेँ शब्दश: एक ज्ञानमीमांसक त्रुटि मानब नहि, मुदा रूपकात्मक प्रतिध्वनि स्पष्ट अछि।

कथाक नैतिक दिशा बारम्बार “यन्त्र नीक, मुदा सावधानी” अछि। एहि कारण अनुभवक अनिश्चितता कम होइत अछि; विशेषत: बुढ़ियाक आँसू पाठककेँ अपन निष्कर्ष देबाक अधिक स्वतंत्र क्षण दैत अछि।

## समीक्षात्मक निर्णय

ई अध्याय परदेशी परिवारक अनुभवकेँ तकनीकक सुविधा आ सामाजिक ध्यानक सीमासँ जोड़ैत अछि। हाथक फोनक चमत्कारकेँ आश्चर्य आ चिन्ता दुनू बनेल गेल अछि।

सीमा ई जे फोनक स्वामित्व, लागत, स्त्रीक निजी पहुँच आ नियन्त्रणक सामाजिक प्रश्न अधिक विकसित नहि; उपलब्धता स्वयं एक समान नहि होइत। तकर बावजूद वृद्धक शिक्षणक दृश्य कथाकेँ केवल उपदेशमूलक चेतावनी सँ आर कनेक ठोस सामाजिक काज दिस आनैत अछि।

## अध्याय –४१ — शहरक बजारे

## शिक्षित प्रवास आ रोजगारक नव पीढ़ी

अंजलिक समयमे गामक शिक्षित युवासभ बंगलोर, हैदराबाद आ दिल्लीक आधुनिक रोजगारमे जाइत अछि। नारिकेल पात पाठशालामे अक्षर सिखनिहार पीढ़ी आब कम्प्यूटरक भाषा सिखि शहरक कम्पनीमे काज करैत अछि। एहि क्रममे –४४क पहिल कम्प्यूटरक शिक्षा रोजगारक सम्भावित फल पबैत अछि। उपन्यास शिक्षाकेँ केवल सांस्कृतिक संरक्षण नहि, सामाजिक गतिक साधन सेहो बनबैत अछि।

मुदा लोकगीत “शहर देह किनै” कहैत रोजगारीक सम्बन्धमे वेतनक संग समयक बिक्रीक रूपक रचैत अछि। बजार वास्तविक मनुष्यकेँ शाब्दिक खरीदैत अछि—एहन तथ्य नहि; निजी श्रम-समयक संगठनपर ई वैचारिक व्यंग्य अछि। शहरक अवसर आ श्रमक दबाव दूनूकेँ एक संग रखबाक कोशिश अछि।

## करुणाकरक दृष्टिबिन्दु आ घरक द्वैध

अंजलिक बेटा करुणाकर शहरक नौकरीक काज सँ गाम लौटैत छथि आ पीपर लग अपन जड़िसँ कटबाक आशङ्का व्यक्त करैत छथि। कथावाचक हुनक ऊँच भवनमे बैसि पीपर आ पोखरि मोन पाड़बाक टीस कहलनि। ई स्मरण शहरक पराजयक प्रमाण नहि, दू स्थानक बीच जीवित पहिचानक अस्थिरता अछि।

प्रवासी-अध्ययनक दृष्टिसँ घर केवल जन्मभूमि नहि; रोजगारी, मित्रता आ नव सम्बन्ध सेहो लोकक पहचान बनबैत अछि। उपन्यासक “जड़ि गाममे”क प्राथमिकता अर्थपूर्ण सांस्कृतिक दृष्टि अछि, मुदा शहरमे बनल जीवनकेँ गौण करबाक नैतिक जोखिम सेहो अछि।

## गाछक जड़िक विस्तारित रूपक

बूढ़बा कहैत छथि—जड़ि कटब आ जड़िसँ दूर जाएब अलग अछि, आ फैलैत जड़ि गाछकेँ आर मजगूत करैत अछि। –४५मे नव हवार सोझाँ स्थिर जड़िक आग्रह छल; –४१मे जड़ि

लम्बा होएबाक रूपक दूरी आ विस्तारकेँ सकारात्मक रूपमे स्वीकारै त अछि। एकहि प्रतीकक ई अर्थ-विकास उपन्यासक दीर्घ रचनामे आलोचनात्मक रूपसँ उल्लेखनीय अछि।

तथापि वनस्पति-रूपककेँ मानव पहिचानक जैविक नियम नहि बनाओल जा सकैत। भाषा, सम्बन्ध आ निवास बदलैत अछि; संस्कृति एकमात्र केन्द्रसँ सदिखन संचालित नहि होइत। कथाक रूपक सांस्कृतिक निष्ठाक कल्पना अछि, मानवीय गतिक स्थिर परिभाषा नहि।

## एक साँझक अनुष्ठान आ नब कथन-चक्र

करुणाकर वार्षिक छु ट्टीमे एक साँझ पीपर लग बितबैत छथि, शहरक गप बच्चासभकेँ कहैत छथि आ हुनकासँ पुरान कथा सुनैत छथि। ई दुतरफा कथन महत्त्वपूर्ण अछि। पहिनुक अनेक अध्यायमे बूढ़बा उपदेशक केन्द्र छथि; एतय शहरक अनुभव आ गामक स्मृति एक-दोसराकेँ सुनैत अछि।

जेरार जेनेतक आवृत्तिपरक कथन वार्षिक एक साँझक घटनाकेँ लगातार परम्परा बनबैत अछि। कथावाचक ई परिवर्तन सहज सामूहिक नियमक रूपमे कहैत अछि; नगरक अलग विचारधारा आ गाममे नव असहमति कतेक उत्पन्न भेल, से प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि।

## अध्यायक आलोचनात्मक निर्णय

अध्यायक सफलता नव रोजगारकेँ नकारने बिना सांस्कृतिक संवादक समय सुरक्षित करब अछि। “एक साँझ”क छोट आकार शताब्दीव्यापी स्मृति सँ विरोध बनबैत अछि: परम्पराक निरन्तरता लेल बहुधा सीमित मुदा नियमित उपस्थिति पर्याप्त आरम्भ बनि सकैत अछि।

सीमा ई जे अस्थायी नौकरी, शहरी वर्ग-भेद, महिला पेशेवरक अनुभव अथवा शहरसँ गाम न घुरि सकनिहारक परिस्थिति कम अछि। करुणाकरक सुखद वापसी एक सम्भावित जीवनपथ अछि, आधुनिक प्रवासी जीवनक सार्वभौम समाधान नहि। अध्याय −४५ सँ −४१: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन एकहि प्रतीकक क्रमिक अर्थ-विकास

−४५क तेज हवा जड़ि बचाएबाक आवश्यकता बतबैत अछि, −४४क कम्प्यूटर नामक अर्थक प्रश्न उठबैत अछि, −४३क सुखल धार स्मृति-रक्षासँ जीवन-रक्षाक पहिल शर्त

निकालैत अछि, –४२क फोन उपस्थितिक नव रूप बनबैत अछि, आ –४१मे जड़ि शहर धरि फैलैत अछि। पात, अक्षर, जल, स्वर आ जड़ि—ई पाँच प्रतीक अलग भौतिक संकट खोलैत अछि; ओहि कारण एके “परम्परा नीक” निष्कर्षमे एकरा घटा देब अनुचित।

## समयक पाँच परिवर्तन

उदारीकरणमे बाजारक गति तेज अछि; कम्प्यूटरमे लिखबाक समय सिमटैत अछि; धार सूखब बरख-दर-बरख पसरल दीर्घकालिक संकट अछि; फोनमे महिनाक प्रतीक्षा क्षणभरि बनैत अछि; शहरक प्रवासमे वार्षिक एक साँझ स्मृतिक नव आवृत्ति बनैत अछि। जेनेतक क्रम, अवधि आ आवृत्तिक भिन्नता एहि पाँच अध्यायकेँ विषयगत अनुक्रमक संग आख्यान-समयक प्रयोग सेहो बनबैत अछि।

## सामुदायिकता आ अपूर्ण बहुस्वरता

प्रतिमा, सत्यनारायण, अंजलि आ करुणाकर स्वयं नव काज करैत छथि—गीत टाइप करब, पोखरिक महार बनब, वृद्धकेँ फोन सिखाएब, शहरक अनुभव साझा करब। ई कर्तृत्व उपन्यासक नैतिक ऊर्जाक स्रोत अछि। मुदा निर्णयक अन्तिम सूत्र अनेक बेर बूढ़बाक एकरूप उत्तरमे अबैत अछि। बाख्तिनीय स्वायत्त वाणी आ सामाजिक कर्तृत्वक बीच ई अन्तर आलोचनामे खुलल राखब चाही।

## अध्याय ४० — सूचनाक अधिकार

### गुप्त पंजीसँ सार्वजनिक दस्तावेज धरि

करुणाकरक समयमे सरकारी अभिलेख माँगबाक कानूनी अधिकार उपलब्ध भेनाइ गढ़ नारिकेलक दीर्घ स्मृतिक नव मोड़ अछि। विभा यादवानन्दक छाया-पंजी आ सरकारी जमीनक कागच आमने-सामने राखैत छथि। उपन्यास पुरान गुप्त लेखनकेँ निष्फल घोषित नहि करैत; वैह पंजी आधिकारिक अभिलेखक मिलानक कसौटी बनैत अछि। स्मृति एतय अबैध छिपावसँ अधिकार-आधारित जाँच धरि पहुँचैत अछि।

–७८क यादवानन्दक छाया-पंजी, –६४क जमीन-विवाद आ –४९क राहतक गाम-नकल एहि अध्यायमे नब अर्थ पबैत अछि। जेनेतक अनालेप्सिस, अर्थात् अतीतक कथात्मक पुनरागमन, एतय केवल मोन पाड़ब नहि: पहिनुक अभिलेख नव कानूनमे काज करैत अछि। एहि दीर्घ कार्य-कारणसँ उपन्यासक समय-संरचना अपेक्षाकृत ठोस होइत अछि।

### देखबाक अधिकार, संस्थागत शक्ति आ सीमा

“जकरा जानबाक हक, से पुछि सकै ”—लोकगीतमे प्रश्न पुछबाक अधिकार नव सार्वजनिक शक्ति बनैत अछि। मिषेल फू कोक ज्ञान–सत्ताक सम्बन्धमे एतय प्रतिप्रश्न अछि: सरकारी अभिलेखक नियन्त्रण अधिकारीसँ नागरिकक हाथमे कतेक दूर धरि जा सकैत अछि? कथामे आवेदनक बाद पीयर-फाटल कागच विभाकेँ भेटैत अछि; एहन दृश्य अधिकारकेँ भौतिक वस्तुमे मूर्त करैत अछि।

मुदा आधिकारिक मोहर स्वयं सम्पूर्ण सत्यक गारंटी नहि। दूनू पंजीक मेल महत्त्वपूर्ण सत्यापन अछि, मुदा किछु मेल सँ सभ इतिहास “कानूनी रूपसँ मान्य” भऽ गेल—ई कथावाचकक व्यापक दावा अछि। अभिलेखक अपूर्णता, अधिकारीक असहमति, संशोधनक अधिकार आ बहिष्कृत लोकक नामक स्थिति अलग जाँच माँगैत अछि।

## दृश्यता, प्रकाश आ पंजीक राजनीति

अध्यायक प्रकाश–छाया रूपक –५०क गुप्त राति-सभासँ उलटा दिशा लैत अछि। ओतय अन्हारमे सार्वजनिक संवाद बचाओल गेल; एतय गुप्त पंजी उजासमे आनल जाइत अछि। दूनू ठाम उद्देश्य सत्यक रक्षा अछि, मुदा उपयुक्त व्यवहार राजनीतिक परिस्थिति अनुसार भिन्न अछि।

मौरिस हाल्बवाक्सक सामूहिक स्मृतिक अवधारणामे परिवार आ गाम पुरान घटना सामाजिक ढाँचामे धेने रहैत अछि; एहि अध्यायमे राज्यक कागचसँ ओकर मिलान भऽ रहल अछि। मौखिक स्मरण आ आधिकारिक पाठ दूनू कियो सर्वथा निर्दोष स्रोत नहि; जँ भिन्नता भेटत तँ व्याख्याक नव विवाद खुलत। कथाक आशावादी समाधान एहन सम्भावित तनाव कम विकसित करैत अछि।

## विभाक सक्रिय पात्रत्व आ वंशानुक्रम

करुणाकरक बेटी विभा सरकारी दफ्तरसँ कागच माँगैत छथि। इन्द्राणी, यादवानन्द, प्रतिमा आ आन पूर्ववर्ती पात्रक शृंखलामे स्त्रीक नव कर्तृत्व कानूनक उपयोगक रूपमे देखाइत अछि। एतय स्त्री केवल परम्परा सुननिहार नहि, अभिलेखक प्राप्तकर्ता आ तुलनाक कर्ता छथि।

तथापि विभाक अनुसन्धानक विधि, दस्तावेजक सूची आ भिन्न नाम भेटबाक संकटक दृश्य संक्षिप्त अछि। अध्यायक कथावाचक परिणाम जल्दी घोषित करैत अछि, जाहिसँ पाठक शोधक अनिश्चित श्रम कम अनुभव करैत अछि।

## मूल्याङ्कन

अध्यायक उपलब्धि स्मृतिक ऐतिहासिक रक्षा आ नागरिकक सूचना-अधिकारकेँ एक कथासूत्रमे जोड़ब अछि। पंजीक छाया कागचक सार्वजनिक इजोतमे आएब अतीतक युक्तिकेँ वर्तमानक कानूनसँ जाँचैत अछि।

सीमा—राज्यक मोहर आ सत्यक समीकरण अधिक सहज अछि। एहि संक्षेप केँ चिन्हित कएने बिना उपन्यासक अभिलेखीय कल्पना आ दस्तावेजी अनुसन्धानक अनुशासन एक नहि मानल जा सकैत।

# अध्याय ३९ — काजक गारंटी

## रोजगारक हक आ स्थानीय श्रमक स्थान

विभाक समयमे रोजगार-गारंटी योजनासँ पोखरि खुननाइ, बान्ह बान्हनाइ आ बाट बनौनाइ गामहिमे सम्भव होइत अछि। श्रमिकसभक शहर जायबाक बाध्यता घटबाक कथावाचकीय दावा रामसेवक आ भोलाक प्रवास-व्यथाक स्मृतिक संग जुड़ैत अछि। कथाक विषय नियोजनक आँकड़ा नहि, अपन माटिपर श्रम करबाक अधिकार आ परिवारक भंग होएब सँ बचबाक सम्भावना अछि।

आख्यानक पुनरावृत्ति एतय महत्त्वपूर्ण अछि: पहिने प्रवासक कारण टूटल घरसभ ४७ आ ४१ धरि बदलैत रूपमे आयल; ३९मे स्थानीय रोजगार ओकर एक सम्भावित उत्तर अछि। मुदा सभ परिवारकेँ पर्याप्त काज भेटल आ प्रवास समाप्त भेल, एहन व्यापक सामाजिक निष्कर्ष संक्षिप्त उपन्यास-अंश मात्र सँ स्थापित नहि।

## कागचक योजना आ मजदूरीक जीवित समय

सुरे श बूढ़बासँ कहैत छथि जे आब मजदूरकेँ परदेश नहि जाए पड़त। बूढ़बा भोला आ अदालतक विलम्ब स्मरण करा कानून आ व्यवहारक बीचक दूरी चिन्हैत छथि। तकर बाद योजनाक किछु पाइ बीचमे रुकैत अछि; सुरे श मजदूरक नाम आ मजदूरी सार्वजनिक पढ़ि अधिकारीसँ माँग करैत छथि। एहि दृश्यसँ अधिकारक वास्तविकता भुगतानक समय आ प्राप्तिमे निहित अछि।

६८मे अदालतक विलम्ब जीवनक समय खा लेने छल; ३९मे रुकल मजदूरी श्रमिकक वर्तमान आवश्यकताकेँ रोकैत अछि। जेनेतक अवधि-सिद्धान्त सँ दृश्य देखला पर नियमित हाजिरीक अनेक दिन सारकथनमे अछि, मुदा एक सार्वजनिक भुगतान-विवाद दृश्य रूपमे उभरैत अछि। ई चयन सरकारी योजनाकेँ कथाक तनाव बनबैत अछि।

## नामक सूची आ ज्ञानगत न्याय

काजक हाजिरीमे “कोनो नाम छु टय नहि” उपन्यासक पुरान नैतिक सूत्रक नव आर्थिक अर्थ अछि। सूचीमे नामक उपस्थिति मजदूरी पएबाक भौतिक शर्त बनैत अछि; तेँ दस्तावेजी भूल समाजक खाली कागजी त्रुटि नहि। मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत न्यायपर चर्चा एतय प्रमाणिकता, व्यक्तिक गवाही आ आधिकारिक लेखाक मेलसँ सम्बन्धित अछि।

मुदा नाम सूचीमे आबि गेलासँ मजदूरक हक स्वतः सुरक्षित नहि: मापन, मजदूरीक दर, देरी, शिकायत आ सामाजिक दबावक अलग प्रश्न अछि। कथा एक बारक रुकी पाइ वापस दियाओल जएबाक घटना कहैत अछि; पूरी व्यवस्था दोषमुक्त भऽ गेल, एहन अर्थ काढब अनुचित।

## बूढ़बाक बीया-रूपक आ सामाजिक कर्तृत्व

बूढ़बा कानूनकेँ नीक बीया कहैत छथि, जकरा गाछ बनाबय ईमानदार हाथ आ पानिक आवश्यकता अछि। −५१क पुरान बीया-संरक्षणक पारिस्थितिक रूपक आब सार्वजनिक नीतिक कार्यान्वयनक व्याख्या करैत अछि। एहि अन्तर्पाठीय पुनःप्रयोगमे नीति स्वयं जीवित समाजक श्रमसँ फलित होइत अछि।

सुरे शक सक्रियता महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा मजदूरसभक स्वतंत्र बहस, आन्दोलन आ असहमति कम भेटैत अछि। बाखिनीय बहुस्वरता एक ईमानदार स्थानीय संयोजकक वाणी सँ पूर्ण नहि होइत; श्रमिकक अपन भाषामे निर्णयक भूमिका आर विस्तृत होइत तँ सामाजिक संघर्ष गाढ़ होइत।

## समीक्षात्मक निर्णय

अध्यायक शक्ति अमूर्त “हक”केँ पोखरिक माटि आ सार्वजनिक हाजिरीक ठोस वस्तुमे अनुवादित करब अछि। कानूनक सफलता मजदूरक हाथ धरि पाइ पहुँचलाक बादे परखल जाएत—ई स्पष्ट सामाजिक कसौटी अछि।

सीमा ई जे योजनाक दीर्घ प्रशासनिक जटिलता एक नेतृत्वक ईमानदारीसँ हल होइत देखाइत अछि। ई नैतिक आशावाद उपन्यासक निरन्तरतामे अर्थवान अछि, मुदा पूर्ण नीतिगत विवरण नहि।

# अध्याय –३८ — इंटरनेटक जाल

## शंख-रजतक आधुनिक पुनरागमन

नीरजक समयमे स्मार्टफोन आ सस्ता इं टरनेट गामक बालकसभक हथेलीमे समाचार, चित्र आ गीत अनैत अछि। एहि विस्तारसँ संगहि झूठ-सन्देश, ईर्ष्या आ अनचाहा सम्पर्क क जोखिम बढ़ैत देखाओल गेल। बूढ़बा –१००क शंख–रजत दृष्टान्त पुनः उठबैत छथि: जँ चमकैत प्रस्ताव देखिते सत्य मानल गेल, तँ अनुभूति आ ज्ञानक भेद बिसरि जाएत।

एतय सावधानी चाही। शंखकेँ चानी बुझबाक प्रत्यक्ष-भ्रम आ जानि-बुझि फैलाओल डिजिटल गलत सूचना दूनू एके कारणसँ उत्पन्न नहि होइत। पहिल ज्ञानमीमांसक दृष्टान्त अछि, दोसरामे प्रसारक मंशा, माध्यमक गति आ दर्शकक भरोसा जुड़ैत अछि। अन्तर्पाठीय समानता शिक्षाप्रद अछि, मुदा विश्लेषणात्मक समरूपता पूर्ण नहि।

## चारि प्रमाण आ डिजिटल सत्यापन

बूढ़बा गंगेश उपाध्यायक प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक चारि प्रमाण उल्लेखि नीरजकेँ सन्देशक स्रोत, वक्ता आ समर्थन पुछबाक परामर्श दैत छथि। एहि कथनसँ शास्त्रीय ज्ञान-चिन्ता आधुनिक सञ्चारक नैतिक विधि बनैत अछि। नव्य न्याय एतय केवल पौराणिक स्मृति नहि, वर्तमान निर्णयक प्रश्न-पद्धति अछि।

तथापि “कोन प्रमाण” पुछब भरि हर गलत सूचना रोकि देत, एहन दावा तर्क संगत नहि। झूठ स्रोत सजि सकैत अछि, अनेक गवाही एके स्रोतसँ उत्पन्न भऽ सकैत अछि, चित्र संदर्भबाहिर रहि सकैत अछि। उपन्यासक नीरजक समूह एक झूठ सूचना खण्डित करैत अछि; एकर उपयोगी उदाहरणक समूचा डिजिटल सत्यापन-अनुशासनक स्थान नहि।

## स्क्रीनक गति आ सामूहिक विश्वास

एकटा “भड़काबय बला” झूठ समाचार “आगिक तरह” फैलैत अछि। रचनाक समय-निर्माणमे तीव्र प्रसार आ विलम्बित जाँच बीच तनाव अछि। जेरार जेनेतक अवधि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ समाचारक विवरण अल्प अछि, जबकि बूढ़बाक व्याख्या आ नीरजक शिक्षणक काज

दीर्घतर कथात्मक स्थान पबैत अछि। ई चयन बाहरी घटना सँ सामुदायिक क्षमता दिस महत्व सरकबैत अछि।

समाचारक वास्तविक सामग्री पाठमे नहि बताओल गेल, तेँ ओकर विषय, सम्भावित पीड़ित आ फैलौनिहारक सामाजिक स्वार्थ अनुमानसँ नहि भरबाक चाही। कथामे खतरा अनिर्दिष्ट राखलाक कारण दुष्प्रचारक विशिष्ट सामाजिक तन्त्रक जगह सामान्य नैतिक चेतावनी बेसी अछि।

## अभिलेख आ निजताक द्वन्द्व

–४४मे डिजिटल लेखन पुरान नाम बचेबाक साधन छल; –३८मे नाम नम्बर बनब आ अनजान सम्पर्क क जोखिम अछि। एकहि माध्यमक रक्षा आ क्षति दुनू सम्भावना उपन्यास स्वयं सामने आनैत अछि। सत्ता-विमर्शक दृष्टिसँ डिजिटल पहिचानक वर्गीकरण, जनसंचार आ पहुँचक असमानता प्रश्न बनैत अछि।

मुदा नीरजक समूह गामक “सभ” संदिग्ध बात जाँचि सकैत अछि—एहन वाक्य व्यावहारिक सीमा सँ अधिक आशावादी होयत। जाँचक सार्वजनिक शिक्षा महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा गलत आरोपक फैलाव आ पीड़ितक सुरक्षित शिकायत-संस्था अलग प्रसंग अछि।

## मूल्याङ्कन

अध्यायक सर्वाधिक सशक्त उपलब्धि दार्शनिक भ्रमक प्रश्न कैं आधुनिक सामाजिक तकनीकमे रूपान्तरित करब अछि। शंख-रजत उपमा एतय सुगठित दीर्घ उपन्यासक जड़ि याद करबैत अछि।

मुख्य सीमा स्रोत-परखक सरल समाधान अछि। सत्यापन सामुदायिक अभ्यास अछि, मुदा ज्ञानगत अन्याय आ भ्रामक संजालक जटिलता पूर्ण रूपेँ उद्घाटित नहि भेल।

## अध्याय ३७ — स्क्रीनक पहिल छाय।

# डिजिटल हिंसा आ कथानकक पीड़िताक दृष्टि

सपनाक समयमे सामाजिक माध्यमपर फोटो कैं आधार बना गामक एक युवतीकैं अनजान व्यक्ति धमकी दैत अछि। ३८क सामान्य झूठ-सूचनाक चेतावनी आब एक व्यक्तिक देह, छवि आ सामाजिक प्रतिष्ठाक संकट बनैत अछि। उपन्यास तकनीकक आलोचनाकैं अमूर्त भयक स्तरसँ आघात झेलैत व्यक्तिक सार्वजनिक गवाही धरि आनैत अछि।

मुदा पीड़िताक नाम, निजी परिस्थितिक विस्तार आ अपमानजनक सामग्रीक स्वरूप नहि देल गेल; एहि संयमकैं आलोचनामे कमी आ सम्भावित निजता-संरक्षण दुनू दृष्टिसँ देखल जा सकैत अछि। कियो ओकर फोटो कोना पओलक, एहन विवरण पाठमे नहि अछि, तैं किसी विशिष्ट अपराधक तकनीकी तरीका कल्पित नहि करब।

# लाजक भार पर प्रश्न आ स्त्रीवादी व्याख्या

बूढ़बा कहैत छथि जे अपराधक लाज पीड़ितक नहि, गुप्त धमकी देनिहारक अछि। सामाजिक लज्जाक बोझ पीड़ितपर थोपल जाएबाक विरुद्ध ई स्पष्ट नैतिक हस्तक्षेप अछि। सपनाक राति-सभामे स्त्रीसभ युवतीक संग ठाढ़ होइत छथि; एक व्यक्ति पर भार सामूहिक जिम्मेदारीक प्रश्न बनैत अछि।

स्त्रीवादी आलोचनामे निजी अपमानक धमकी सार्वजनिक शक्ति-सन्तुलनसँ जुड़ैत अछि। तथापि “खुलेआम बाजब” सभ पीड़ित लेल एकमात्र सुरक्षित उपाय नहि। निजी अनुमति, आत्मनिर्णय, कानूनी सहायता आ सूचना अधिक फैलि जाएबाक जोखिमक ध्यान आवश्यक अछि। अध्यायक समाधान सामूहिक साहस प्रस्तुत करैत अछि, मुदा निजताक सुरक्षाक विस्तृत प्रक्रिया नहि।

## पुरान राति-सभासँ नव डिजिटल सभा धरि

–६६मे पद्माक घरेलू हिंसाक गवाहीक विरुद्ध स्त्रीसभक राति-सभा औपचारिक संस्था बनल छल; –५०मे वैह सभा आपातकालमे गुप्त भेल; –३७मे सपना ओकर डिजिटल रूप बनबैत छथि। तीनू कालमे स्त्रीक स्वर दबेबाक तरीका बदलैत अछि, मुदा सामूहिक सुनबाक संस्था अपन रूप बदलैत रहैत अछि। एहि उत्तराधिकारमे उपन्यासक दीर्घ समय शिल्पगत कारण बनैत अछि।

बाख्तिनीय बहुस्वरता केवल अनेक स्त्री एक संग बैसबाक संख्या नहि; पीड़िताक अपन बात कहबाक स्वतन्त्रता, सहमति आ तर्कक भिन्नता सेहो आवश्यक अछि। पाठमे युवतीक प्रत्यक्ष कथनक विस्तार कम आ बूढ़बाक मार्गदर्शन अधिक अछि; एहि असमानता केँ चिह्नब उत्तरदायी समीक्षा अछि।

## भूतक रूपक आ अनदेखल अपराधी

कथामे पुरान चन्ना गाछीक भूतक स्थानपर स्क्रीनक छाया आ नुकाएल हाथ आबैत अछि। तोदोरोवक अद्भुतता-सिद्धान्तक कठोर अर्थमे ई प्रमाणित अलौकिक घटना नहि; “नव भूत” साइबर-उत्पीड़नक रूपक अछि। एहि भेदक संरक्षण आवश्यक अछि, नहि तँ सामाजिक अपराधक वास्तविकता मिथकीय अव्याख्येयतामे ढकि सकैत अछि।

अध्यायमे धमकी “अचानक कमजोर” पड़ैत अछि, मुदा धमकी देनिहारक पहचान, साक्ष्य-संरक्षण, शिकायत वा दण्डक क्रम नहि देखाओल गेल। सामूहिक समर्थन पीड़िताकेँ बल दैत अछि, मुदा अपराधक अन्तिम समाधानक प्रमाण नहि।

## साहित्यिक उपलब्धि आ सीमा

उपन्यास स्क्रीनक इजोतक पाछाँक अन्हार देखबैत अछि आ पीड़िताक एकाकीपनकेँ मुख्य नैतिक प्रश्न बनबैत अछि। स्त्रीसभक उत्तराधिकार एतय स्मृति मात्र नहि, नव आपदाक प्रतिरोध-क्षमता अछि।

सीमा ई जे सार्वजनिक गवाही आ सामाजिक समर्थनक बाद डिजिटल धमकी सहज लघु होइत देखाइत अछि। असहमति, गोपनीयता आ कानूनी प्रक्रियाक जटिलता आर विस्तार पबितय तँ अध्याय अधिक दृढ़ सामाजिक उपन्यास बनितय।

## अध्याय –३६ — अनदेखल ठगक पहिल आहट

### नौकरीक लोभ, वेबसाइटक दृश्य आ ठगीक घटना

सपनाक समयमे एक युवक नौकरीक झाँसामे अपन सम्पूर्ण जमा-पूँजी फर्जी ऑनलाइन कम्पनीकेँ पठा दैत अछि। वेबसाइट, कार्यालयक फोटो आ अधिकारीक अवाज एक भरोसेमन्द संस्थाक दृश्य बनबैत अछि; पाइ भेजलाक बाद कम्पनीक सभ डिजिटल चिन्ह एके राति बिलाय जाइत अछि। अध्यायक कथात्मक तनाव सार्वजनिक प्रतीक आ वास्तविक विश्वसनीयताक बीचक अन्तरमे अछि।

–३८क झूठ-सूचना एतय प्रत्यक्ष आर्थिक क्षतिमे बदलैत अछि। शंख-रजत भ्रमक रूपक प्रासंगिक अछि, मुदा एतय केवल युवकक अनुभूतिक भूल नहि, योजनाबद्ध छलक संकेत सेहो अछि। ठगक पहचान आ संचालन अज्ञात अछि; स्रोत जे नहि कहैत, ओहि आधारपर निश्चित व्यक्ति, देस वा तन्त्रकेँ दोषी कहब असंगत।

### अनाम शत्रु आ कथन-दृष्टिक सीमा

सपना बूढ़बासँ पुछैत छथि जे जकर चेहरा वा ठे कान नहि देखल जाइत अछि ओकरा कोना रोकी। बूढ़बा स्वीकार करैत छथि—“हमर पुरान ज्ञान एहि नव गोहिसँ कोना लड़त” से हुनका पूर्ण बुझल नहि। एहि स्वीकारमे बूढ़बाक स्थापित सर्वज्ञ प्रतीक पहिल बेर आधुनिक घटनाक सोझाँ अपन ज्ञान-सीमा उद्घाटित करैत अछि।

कथनशास्त्रमे ई उल्लेखनीय अछि: दीर्घ-जीवी साक्षी अनुभवक विशाल परम्परा रखितो नव तकनीकक अपराधीकेँ नहि चीन्हि सकैत छथि। उपन्यासक नायकत्व एतय परम्परागत ज्ञानक निश्चित विजय नहि, अज्ञान स्वीकार करबाक नब नैतिकता अछि।

### गोहि रूपकक ऐतिहासिक पुनर्गठन

पुरान पोखरिक गोहि देह लैत छल; नव “तार आ स्क्रीनक भीतर बसनिहार भूख” विश्वास आ पाइ ठगैत अछि। एकहि बिम्ब मृत्यु, प्राकृतिक भय आ डिजिटल आर्थिक

शोषणक अलग अनुभव समेटैत अछि। ई दीर्घ रूपक उपन्यासक मूल शीर्षककेँ नव जीवन दैत अछि।

मुदा गोहिकेँ दैवी जीव, वास्तविक जलचर आ डिजिटल शोषक—तीनूकेँ प्रत्यक्ष अर्थमे एक नहि करबाक चाही। लेखकक रूपक विषयक जटिलता बुझबैत अछि, किन्तु तकनीकी अपराधक अनुसन्धानक आवश्यकता समाप्त नहि करैत।

## चेतना, चेतावनी आ प्रणालीगत सुरक्षा

सपना परिवारसभकेँ संदिग्ध नौकरी-प्रस्ताव आ सुरक्षित भुगतानक विषयमे सचेत करैत छथि। ई व्यवहारिक सामुदायिक रक्षा अछि; बूढ़बाक “जागरूकता”क आग्रह लोकशिक्षाक भूमिका स्थापित करैत अछि। तथापि ऑनलाइन ठगीक विरुद्ध केवल व्यक्तिक सावधानी पर्याप्त अछि—एहन निष्कर्ष उचित नहि। पाठमे पुलिसक रपट अछि, मुदा अनुसंधानक परिणाम नहि; बैंकक नियमन, प्लेटफॉर्मक उत्तरदायित्व वा क्षतिपूर्तिक क्रम देखाओल नहि।

आधुनिक सत्ता–ज्ञान अध्ययनमे जिम्मेदारीक वितरण आवश्यक प्रश्न अछि। पीड़ित युवककेँ “लोभी” कहि दोषारोपण करब असंगत: कम्पनीक बनावटी प्रामाणिकता, रोजगारक आवश्यकता आ सूचना-असमानता घटना बनबैत अछि। पाठ युवकक वास्तविक आर्थिक क्षतिक तथ्य दैत अछि, ओकर चरित्रक नैतिक दोषक प्रमाण नहि।

## पूर्वाभास आ अध्यायक मूल्याङ्कन

अन्तिम वाक्य “आगूक कथा” आर बेसी जटिल होएबाक भविष्याभास करैत अछि। जेनेतक पूर्वसूचनाक अर्थमे ई अध्याय अगिला डिजिटल-जाल सम्बन्धी कथाक प्रवेश-द्वार अछि। साक्षीक असहायता कथानकमे नव अनिश्चितता उत्पन्न करैत अछि।

एहि अध्यायक सर्वोत्तम उपलब्धि बूढ़बाक सीमित ज्ञानक स्पष्ट स्वीकारोक्ति अछि। यद्यपि अन्तमे सावधानीक सामान्य शिक्षा भेटैत अछि, आर्थिक क्षति वापस भेटल अथवा ठग पकड़ल गेल—एहन दावा पाठ नहि करैत। ई अपूर्णताक संरक्षण कथाक सामाजिक सत्यक बल अछि। अध्याय −४० सँ −३६: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन अधिकारक दस्तावेजसँ डिजिटल छल धरि

–४०मे कागच माँगबाक अधिकार राज्यक बन्द आलमारी खोलैत अछि; –३९मे हाजिरी आ मजदूरीक सार्वजनिक लेखा अधिकारक परीक्षा बनैत अछि; –३८मे डिजिटल सन्देशक स्रोत-परख आवश्यक होइत अछि; –३७मे निजताक दुरुपयोग सामाजिक भय उत्पन्न करैत अछि; –३६मे बनावटी वेबसाइट आर्थिक ठगी करैत अछि। पाँच अध्याय प्रमाणक अर्थकेँ बढ़ैत जटिल बनबैत अछि—मोहर, हाजिरी, समाचार, छवि आ कम्पनीक परिचय सभकेँ समान कसौटीसँ नहि परखल जा सकैत।

## ज्ञानक अधिकार आ पीड़ितक कर्तृत्व

विभा सरकारी कागच माँगैत छथि; सुरे श रुकल मजदूरीक हिसाब सार्वजनिक पढ़ैत छथि; नीरज शंकास्पद सन्देश जाँचैत छथि; सपना पीड़िताकेँ एकाकी नहि छोड़ैत छथि; अनदेखल ठगक ठगायल युवकक अनुभव सामुदायिक चेतावनीक आधार बनैत अछि। ई क्रम जानबाक अधिकार सँ सुरक्षित काज आ सामूहिक प्रतिरोध दिस बढ़ैत अछि; मुदा पीड़ितक अपन प्रत्यक्ष स्वर सभठाम समान प्रबल नहि।

## रूपकक उपलब्धि आ रूपकक सीमा

–१००क शंख-रजत उपमा –३८ आ –३६मे पुनः प्रयोग होइत अछि, मुदा प्रत्यक्ष-भ्रम आ योजित छल अलग घटना अछि। –३७क “भूत” अलौकिक तथ्य नहि, उत्पीड़नक रूपक अछि; –३६क “गोहि” डिजिटल आर्थिक शोषणक प्रतीक अछि। उपन्यासक लम्ब रूपक-शृंखला अर्थपूर्ण अछि, तकर वैज्ञानिक, कानूनी आ सामाजिक विश्लेषणक स्तर अलग राखब चाही।

## अध्याय –३५ — देहक बजार खुजैत अछि

### पाइक ठगीसँ देहक अधिग्रहण धरि

राजीवक समयमे छलक स्वरूपमे निर्णायक परिवर्तन होइत अछि। –३६मे बनावटी नौकरी-कम्पनी युवकक जमा-पूँजी हड़पैत छल; एहि अध्यायमे विदेशक “अच्छा काज”क वादा किछु युवककेँ देशसँ बाहर अनैत अछि, जतय पासपोर्ट छीनि बलपूर्वक काज कराओल जाइत अछि। कथानक खुद कहैत अछि—“पहिने ठग केवल पाइ लैत छल; आब ओ मनुष्य लैत छल।” एहि वाक्यक सहायतासँ आर्थिक शोषण आ देहपर नियन्त्रणक बीचक अन्तर प्रखर बनैत अछि।

एक माएक अनेक साँझ बेटाक बाट ताकब कथा कैँ अमूर्त अपराध-विवरण सँ पारिवारिक अनुपस्थितिक अनुभव बनबैत अछि। बेटाक नाम, गन्तव्य अथवा नियोक्ताक चिन्ह पाठमे नहि भेटैत; ई अनामता पीड़ितक जीवित स्वरक अभाव सेहो रचैत अछि। अतएव एहि अंशसँ कोनो निश्चित विदेशी कम्पनी, देस वा तस्करी-सञ्चालकक पहचान घोषित नहि कएल जा सकैत।

### वर्णनक गति आ अनुपस्थित व्यक्तिक कथ्य

जेरार जेनेतक अवधि-भेदक दृष्टिसँ युवकसभक भरती, यात्रा, पासपोर्टक जब्ती आ बन्धन अनेक घटनाक संक्षिप्त सारकथन अछि। एकटा घरक माएक दीर्घ प्रतीक्षा आवृत्तिपरक वर्णनमे अछि; प्रत्यक्ष दृश्य राजीव आ बूढ़बाक बीचक संवादमे केन्द्रित अछि। जकर देह बन्धनमे अछि, ओकर कथा दोसरक सुनल खण्डित समाचार रूपमे आबैत अछि।

ई चयन पीड़ितक आवाज नहि होएबाक नैतिक प्रश्न उठबैत अछि। देहक बजारपर दीर्घ उपन्यासक बल देखाइत अछि, मुदा जबरन श्रमक दिनचर्या, बचबाक प्रयास, श्रमिकक पत्र अथवा परिवारक स्वतन्त्र प्रतिवादक दृश्य अनुपस्थित अछि। समाजशास्त्रीय निष्ठा लेल ई जानब आवश्यक अछि जे समुदायक साक्ष्य पीड़ितक अपन अनुभवक स्थान नहि लैत।

## गिरमिटिया-स्मृति आ ऐतिहासिक तुलना

राजीव गिरमिटिया-प्रथासँ तुलनाक प्रस्ताव रखैत छथि आ कहैत छथि जे पुरान व्यवस्थामे कमसँ कम करार आ तिथि छल। एहि पात्र-वाणीकेँ इतिहासक निष्कर्ष नहि मानल जाए; गिरमिटिया-श्रम स्वयं गम्भीर शोषण, बन्धन आ असमान शक्तिसँ जुड़ल छल। पाठक आलोचककेँ तुलना के निहार पात्रक भावनात्मक तीव्रता आ विभिन्न श्रम-प्रणालीक दस्तावेजी इतिहास अलग रखबाक आवश्यकता अछि।

उत्तरऔपनिवेशिक आलोचनामे समुद्रपार श्रमक नियंत्रण, पासपोर्टक जब्ती आ स्वतन्त्र गमन-अधिकारक निलम्बन महत्त्वपूर्ण विषय अछि। मुदा मूल पाठ निर्धारित भौगोलिक पथ, नियमक नाम वा ठोस ऐतिहासिक समानता नहि दैत; तेँ तुलना नैतिक स्तरपर प्रयुक्त रूपक अछि, प्रमाणित संस्थागत समरूपता नहि।

## ज्ञानक प्रश्न आ प्रतिरोधक सीमा

बूढ़बा प्रश्नकेँ रक्षाक औजार कहैत छथि—प्रस्ताव देनिहारक नाम, कम्पनी, कागच आ गारन्टी जाँचू। −१००क शंख–रजत भ्रमक ज्ञानमीमांसा एतय प्रत्यक्ष सामाजिक व्यवहार बनैत अछि। राजीव गाममे विदेशी नौकरीक प्रस्ताव परखबाक नव पाठशाला चलबैत छथि; नारिकेल पातक अक्षर-अध्ययन प्रवासी श्रमिकक सुरक्षाक प्रशिक्षण बनैत अछि।

एहि संरक्षणक स्पष्ट सीमा अछि। किछु शोषण साँच कम्पनी आ असली कागचक भीतर सेहो होइत अछि; व्यक्तिगत सावधानी सीमा-पार आपराधिक जाल रोकबाक सम्पूर्ण विधि नहि। कथामे पीड़ितक खोज, राजकीय सहायता, कानूनी बचाव आ पुनर्वासक परिणाम नहि भेटैत। ई अभाव पाठककेँ नैतिक शिक्षा आ संस्थागत जिम्मेदारीक अन्तरपर सोचब बाध्य करैत अछि।

## शिल्पगत निर्णय

शीर्षकक “बजार” शरीरक वस्तुकरण देखबैत अछि, मुदा कथाक सबसे तीक्ष्ण बिम्ब पीड़ितक माएक साँझक प्रतीक्षा अछि। तात्कालिक समाधान नहि भेटलाक कारण अनुपस्थित पुत्रक प्रश्न नैतिक रूपसँ खुलल रहैत अछि।

उपन्यासक उपलब्धि ठगीक क्षेत्रकेँ पाइ सँ मानव-अधिकार धरि बढ़ायब अछि। कमजोर पक्ष ई जे घटनाक प्रत्यक्ष केन्द्र प्रवासी श्रमिक नहि, राजीवक शिक्षण आ बूढ़बाक चेतावनी बनि जाइत अछि; पीड़ितक स्वतन्त्र कथा आर विस्तार माँगैत अछि।

## अध्याय –३४ — उज्ज्वलक स्वप्न

### सोहरक सुख आ पूर्वज्ञात विपत्तिक द्वन्द्व

गरीब घरमे उज्ज्वल झाक जन्म भेलापर सोहर आ गुड़ बाँटबाक सामान्य आनन्द अछि; मुदा बूढ़बाक अस्थिरता ओहि दृश्यकेँ अशुभ भविष्याभाससँ घेरि लैत अछि। दीपालीकेँ ओ बतबैत छथि जे बहुत पहिने एक युवककेँ “नदीमे नहि, स्क्रीनमे डूबत” देखने रहथि। ई वाक्य उपन्यासक जलसमाधि-प्रतीकमे डिजिटल ऋण, हारल रकम आ धमकीक नव अर्थ स्थापित करैत अछि।

जेनेतक पूर्वसूचना (प्रोलेप्सिस) एतय पाठकक समय-अनुभव बदलैत अछि: बालकक जीवनक वर्तमान क्षण भविष्यक सम्भावित क्षतिक प्रकाशमे देखल जाइत अछि। तथापि बूढ़बा घटना रोकि सकताह कि नहि, ई नहि जनैत छथि। कथानक ओहिठाम सर्वज्ञ भविष्यवक्ता नहि, अनुमानित आगूक त्रासक अधूरा साक्षी प्रस्तुत करैत अछि।

### ज्ञान-सीमा आ कथावाचकीय तनाव

बूढ़बाक वाक्य “हमरा नहि बुझल जे हम ओकरा बचा सकब की नहि” भविष्यदर्शनकेँ पूर्ण नियंत्रणसँ अलग करैत अछि। कथाविज्ञानमे ज्ञानक पहुँच आ घटनापर कर्तृत्व दू भिन्न श्रेणी अछि। दूरक झलक भेटब कारण-सूत्र बुझब अथवा परिणाम बदलि देबक शक्ति नहि। ई भेद बूढ़बाक दीर्घ-जीवी चरित्रकेँ एकरूप देवत्वसँ बचबैत अछि।

मुदा कथावाचक गामक सामूहिक दृष्टिकेँ “अनकहल नजरि” रूपमे उज्ज्वलपर राखैत अछि। रक्षाक इच्छा संग निगरानीक सम्भावना सेहो जन्मैत अछि। नवजातक अपन इच्छा आ निजता के ना सुरक्षित रहत, ई उत्तर तत्काल नहि देल गेल; परिणामस्वरूप स्मृति-सुरक्षा आ स्वतन्त्र जीवनक टकराव समीक्षाक सार्थक प्रश्न बनैत अछि।

### सोहर, जन्म आ शोकक असमय उपस्थिति

अध्यायारम्भक सोहर-धुनक पाँति “स्वप्न पैघ, मुदा जड़ि माटिमे” भविष्यक सपनाक संग मूल-समुदायक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। मुदा जन्मक लोक-उत्सवमे सम्भावित

ऋण आ धमकीक सूचना घुसैत अछि। शिल्पगत रूपेँ अतीतसँ आयल चेतावनी भविष्यकेँ वर्तमानक भीतर उपस्थित करैत अछि; ई समयक त्रिस्तरीय गठन अछि।

गरीब परिवारक स्थिति उल्लेखित अछि, मुदा उज्ज्वलक बाल-स्वभाव, घरक आर्थिक विवरण आ ओकर भविष्यक निर्णयकेँ बनबैत सामाजिक दबाव एखन कथित नहि। लेखकीय पूर्वसूचना पाठककेँ चरित्रक काज देखबासँ पहिने ओकर संभावित नियति कहल दैत अछि; एहि कारण मनोवैज्ञानिक विकासक स्थान कनेक संकुचित होइत अछि।

## दस्तावेजी चिह्नक अर्थ

दीपाली नव जन्मक साधारण अभिलेखमे उज्ज्वलक नामक कात अतिरिक्त चिह्न राखैत छथि। ई एकटा सटीक वस्तुगत बिम्ब अछि: समाजक स्मरण मात्र मुखक आश्वासन नहि, पन्नापर आगूक पाठक लेल छोड़ल संकेतमात्र सेहो अछि। –३०क दस्तावेज-केन्द्रित प्रकरणक पूर्वपीठिका एतहि बनैत अछि।

एहि अतिरिक्त चिह्नमे भविष्यसूचक कथनक पुरावा नहि अछि, केवल दीपालीक तखनक जानकारी अछि। अभिलेखक आलोचनामे ई भेद निर्णायक अछि—कागचपर लिखल आशंका वास्तविक अपराधक अन्तिम प्रमाण नहि।

## अध्यायक सौन्दर्यात्मक सीमा

नवजातक सुखक दृश्य आ बूढ़बाक मौनक विरोध अध्यायक शक्तिशाली रचनात्मक उपलब्धि अछि। गोहि आब केवल पोखरिक जीव नहि, अज्ञात डिजिटल भविष्यक मानसिक आकार बनैत अछि।

सीमा ई जे समुदायक सामूहिक नजरि देखबैत कथा बच्चेकेँ मुख्यतः सम्भावित पीड़ित रूपमे पहिचान दैत अछि; ओकर स्वतन्त्र इच्छा आ अप्रत्याशित जीवन-गति आर आरम्भ नहि भेल। ओकर अगिला जीवनक निर्णय ई पूर्वसूचनाक सत्ताकेँ परखत।

## अध्याय –३३ — वकीलक कोटक छाय ।

### चरित्रक विचलन आ कानूनी भाषा

बटुकनाथ नारिकेल पात पाठशालाक तेज विद्यार्थी रहि शहरमे कानून पढ़ैत अछि आ आरम्भमे गरीबक पक्ष लेनिहार वकील बनैत अछि। क्रमशः शक्तिशाली मुवक्किल, जीतक मोह आ धनसँ प्रभावित भऽ ओ कानूनक धाराकेँ कमजोरक रक्षा बदला बलगरक हितमे प्रयोग करैत अछि। कहानी अपराधी जन्मनिहार चरित्र नहि, सामाजिक व्यवस्था आ निजी चुनावक मिश्रित परिणाम देखबैत अछि।

शीर्षकक “कोटक छाया” वकीलक पेशागत परिचयकेँ नीतिगत अन्हारमे परिणत करैत अछि। –६८क न्यायिक समय-विलम्ब आब बटुकनाथक व्यवहारमे व्यक्तिरूप पबैत अछि; दीपालीक कथन “तारीखपर तारीख” एहि सम्पर्क केँ मूर्त करैत अछि। पॉल रिकरक कथात्मक विन्यासमे पहिनुक सामाजिक दोष उत्तरवर्ती चरित्रक सम्भावित कारण बनैत अछि।

### विधवाक दृश्य: नैतिक परीक्षण

गामक एक गरीब विधवा खेतक मुकदमामे बटुकनाथक सोझाँ अबैत छथि। क्षणभरि हुनक पुरनका गामक स्मृति जागैत अछि, मुदा ओ तुरन्त कानूनी धाराक भाषा दिस घुरि जाइत छथि। अही संक्षिप्त दृश्ये चरित्रक भीतर पुरान संवेदना आ वर्तमान पेशागत व्यवहारक वास्तविक टकराव अछि।

स्त्रीवादी तथा वर्गीय आलोचनामे विधवाक जमीनक प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा कथा ओकर अपन पक्षक विस्तृत वाणी नहि सुनबैत; ओ बटुकनाथक नैतिक परीक्षणक साधन सेहो बनि जाइत छथि। जँ जमीनक अधिकार, मुकदमाक वास्तविक अवस्था आ विधवाक स्वतन्त्र रणनीति विस्तार पबितय, तँ सामाजिक दृष्टिबिन्दु बेसी समतामूलक होइत।

## नैतिक चरित्र नहि, संरचनात्मक सम्बन्ध

बूढ़बा कहैत छथि जे बटुकनाथ दोषी जन्मल नहि; अदालतक सुस्त गति, प्रलोभन आ शक्तिक स्वाद ओकर रस्ता बदललक। ई कथन सरल खलनायकक चित्रणसँ बचबाक प्रयत्न अछि। सत्ता–ज्ञानक दृष्टिसँ कानूनी भाषाक विशेषज्ञता समान रूपसँ सभ पक्षक हितमे प्रयोग नहि होइत; संसाधन आ प्रभाव ओकर उपयोगकेँ प्रभावित करैत अछि।

मुदा व्यक्तिक जिम्मेदारी सम्पूर्ण व्यवस्थापर डालि देब सेहो पाठक लेल प्रश्न अछि। बटुकनाथ गरीबक मुकदमा विलम्बित करब चुनैत अछि; ई ओकर निज निर्णयक भाग अछि। आलोचना संस्थागत प्रोत्साहन आ नैतिक उत्तरदायित्व दुनू साथे रखैत अछि।

## दोहरे नामक स्मृति-संघर्ष

गाम बटुकनाथक पुरान ईमानदार नाम बचा रखैत अछि, जखन शहरक अदालतमे ओकर नव प्रतिष्ठा बनैत अछि। एक व्यक्ति के र दू सामाजिक कथा अछि। बाख्तिनक सामाजिक वाणी सिद्धान्तक प्रकाशमे पाठशालाक आशावादी कथा आ पेशागत सफलताक भाषा एक दोसराकेँ काटैत अछि; मुदा दूनूकेँ पात्रक भीतर पूर्ण स्वतन्त्र आवाज देल गेल नहि अछि।

बूढ़बाक “फेर सँ रस्ता बदलत”क आशा भविष्यक सुधारक बीया अछि, अन्तिम परिणाम नहि। एकरा पहिनेसँ घटल आत्मपरिवर्तनक प्रमाण मानब स्रोत-पाठक अतिक्रमण होयत।

## मूल्याङ्कन

विधवाक क्षणिक आगमन आ बटुकनाथक तुरन्त वापसी अध्यायक सबसँ सफल सूक्ष्म नाटकीय बिन्दु अछि। ई दृश्य नैतिक उपदेशसँ बेसी ठोस मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व देखबैत अछि।

मुदा चरित्रक क्रमिक विचलन प्रायः कथावाचकक सारकथनमे अछि; पेशागत दुविधाक दीर्घ दृश्य, विरोधी तर्क आ विधवाक अभिव्यक्ति कम अछि। रचनाक नैतिक संकेत बलवान, बहुस्तरीय उपन्यासीय अनुभव सीमित।

## अध्याय −३२ — समुद्रपारक साये

### समुद्रपारक जाल आ अभिलेखक सीमारेखा

अभिनव अखबारमे एक अन्तरराष्ट्रीय डिजिटल वित्त-जालक समाचार आ शीशाक मीनारक फोटो देखैत छथि। ओ रिपोर्टमे “लाउ किन-हंग” नाम बारम्बार भेटबाक बात बूढ़बाकेँ कहैत छथि। स्रोतक दृष्टिसँ ई पात्रक पढ़ल अखबारक सूचना अछि; उपन्यास एक स्वतन्त्र आपराधिक अनुसन्धानक परिणाम प्रस्तुत नहि करैत। नामक उल्लेखे सँ ओकर विशिष्ट अपराधसँ सम्बन्ध प्रमाणित नहि होइत।

कथाक भौगोलिक सीमा गामसँ शहर आ समुद्रपार धरि फैलैत अछि। −३५मे दूर देशमे फँसल श्रमिकक देह छू टबाक भय छल; −३२मे दूरस्थ वित्तीय नियन्त्रणक सूचना पैसा आ डेटाक मार्गक समस्या बनैत अछि। ई विश्व-व्यवस्थाक प्रश्न खोलैत अछि, मुदा पाठमे खाता, कम्पनी वा वास्तविक लेनदेन-मार्गक विवरण नहि।

### शीशाक मीनार आ प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सत्ता

अखबारक फोटोमे पारदर्शी शीशा छै क, मुदा ओकर भीतर कथित शक्ति अनदेखल अछि। दृश्य पारदर्शिता आ संस्थागत अपारदर्शिता बीचक विरोध मूल कथाक शंख–रजत भ्रमसँ जुड़ैत अछि। ऊँच मीनार चमकक प्रतीक अछि; छाया दृश्य-ज्ञानक अपूर्णता देखबैत अछि।

फू कोक सत्ता–ज्ञान सम्बन्धक सन्दर्भमे प्रश्न उठैत अछि जे दृश्य प्रमाण ककरा उपलब्ध अछि, समाचारक स्रोत के अछि आ अज्ञात संरचनाक पहचान कोना होएत। मुदा फू कोक अनुशासन–संस्थाक सम्पूर्ण तन्त्र एहि छोट प्रकरणमे प्रत्यक्ष नहि; सैद्धान्तिक तुलना उपयोगी पर सीमित राखल जाए।

### बूढ़बाक भविष्यदृष्टि आ अज्ञानक स्वीकृति

बूढ़बा पूर्वझलकमे “शीशाक मीनारमे बैसल एकटा छाह” देखनेक स्मरण करैत छथि, मुदा लाउ के छथि वा उज्ज्वल–बटुकनाथसँ सम्बन्ध की होयत, नहि जनैत छथि। जेनेतक

पूर्वसूचना एतय नाम, छवि आ भावी मिलनक अपेक्षा बनबैत अछि, बिना निर्णायक कारण-सम्बन्ध बतौने।

कथनक एक जोखिम अछि जे कथावाचक भविष्यक मिलनक संकेत बारम्बार देबाक कारण पाठक स्वतन्त्र खोजक स्थान घटि जाए। तथापि सम्बन्धक प्रकृति अनिर्णीत राखल गेल अछि; बूढ़बाक अज्ञान वास्तविक कथात्मक रिक्ति बनैत अछि।

## गोहि रूपकक वृहत्तर विस्तार

बूढ़बा कहैत छथि जे गोहि “जल बदलैत अछि, मुदा गोहि रहैत अछि”। पानीक जीव, डिजिटल ठगी आ समुद्रपारक वित्तीय सत्ता—एकहि रूपकक तीन चित्र अछि। ई तुल्यता शोषणक पुनरावर्ती स्वरूप बतबैत अछि; व्यावहारिक कारण-तन्त्रक एकरूपता नहि।

अभिनव गामक युवासभकेँ अन्तरराष्ट्रीय ठगीक चेतावनी दैत छथि। सजगता सामाजिक काज अछि, मुदा अनुसन्धानक अभावमे नाम, छवि आ अन्दाजकेँ पुष्ट आरोपमे बदल देब स्वयं अन्याय होयत। मूल उपन्यासक अनिश्चितता बचा रखब आलोचनाक प्रमाण-अनुशासन अछि।

## मूल्याङ्कन

शीशाक मीनारक छवि दृश्य-समृद्ध अछि: दूरक चमक एतय स्थानीय समुदायक असुरक्षाक छाया बनैत अछि। दीर्घ कथाक स्थानिक विस्तारक लेल अध्याय महत्त्वपूर्ण अछि।

सीमा ई जे दूरस्थ सामाजिक-आर्थिक संरचना मुख्यतः पात्रक सुनल रिपोर्ट आ बूढ़बाक प्रतिक्रिया द्वारा गठित अछि। अन्तरराष्ट्रीय अपराधक स्वतन्त्र दस्तावेजी प्रमाण, वैकल्पिक व्याख्या आ लाउक अपन दृष्टि एखन कथा मे उपस्थित नहि।

## अध्याय –३१ — सत्यव्रतक मौन

### बैंकक व्यवहारसँ साक्षीक आरम्भ

नगरक बैंकमे कर्मचारी सत्यव्रत मेहता किछु एहन खाता देखैत छथि जतय पैघ रकम अबैत आ शीघ्र अनेक खातामे बँटि अग्रसर भऽ जाइत अछि। ओ एकरा संदेहास्पद बुझैत छथि, मुदा जालक सम्पूर्ण रूप नहि जनैत। बैंकक साधारण दिनचर्या कथामे संभावित अपराधक चेतावनी बनैत अछि; सूक्ष्म, पुनरावर्ती लेनदेन कथानकक नव घटना-इकाइ अछि।

अतः मात्र रकमक तेज स्थानान्तरणकेँ उपन्यासक निश्चित कानूनी निष्कर्ष नहि बुझबाक चाही। सत्यव्रत स्वयं निश्चित नहि छथि। जेनेतक आन्तरिक दृष्टिबिन्दुक निकट कथन पाठककेँ कर्मीक सीमित जानकारी दैत अछि; बाहरी वर्णन हुनक चिन्ता बतबैत अछि मुदा सम्पूर्ण अपराध-प्रक्रिया नहि खोलैत।

### मौनक दू नैतिक मूल्य

लोकगीत कहैत अछि “मौन कहियो सुरक्षा रे, कहियो अन्याय बनै।” सत्यव्रतक अपन सीमित पद आ सम्भावित खतराक कारण चुप रहब पीड़ाक विषय अछि, मात्र चरित्रक कमजोरी नहि। बूढ़बा कहलनि जे बाजबाक उचित क्षण चिन्हू। एहि कथनमे विवेक, व्यक्तिगत सुरक्षा आ सार्वजनिक जवाबदेहीक तनाव अछि।

नैतिक आलोचनामे एकर महत्त्व एतेक जे तत्काल उजागर करब आ अनन्तकाल छिपाएब —दूनूकेँ कथा एकमात्र विकल्प नहि बनबैत। तथापि पेशागत गोपनीयता, सुरक्षित शिकायत-प्रणाली, वित्तीय अभिलेखक वैधानिक संरक्षण आ सम्भावित प्रतिशोधक विशिष्ट प्रक्रिया स्रोत-पाठ नहि दैत; एकरा स्वतः आरोप-प्रणालीक नियम नहि मानब।

### नोटबुकक कथात्मक भूमिका

सत्यव्रत खाता, तिथि आ रकमक विवरण एकटा निजी नोटबुकमे लिखबाक काज शुरू करैत छथि। पन्ना एतय भविष्यक गवाहीक सम्भावित वस्तु बनैत अछि; –३०क गोप

कुमारक व्यापक अभिलेख-कार्यक संग ई छोट पन्ना स्पष्ट अनुक्रम बनबैत अछि। तिथि आ रकम लिखब भावनात्मक शङ् का सँ जाँच योग्य सूचना दिस डे ग अछि।

मुदा नोटबुक अपने आपमे निर्विवाद प्रमाण नहि: लिखनिहारक पहुँच, लेखाक सत्यापन, वैधता, सुरक्षा आ सन्दर्भ पूछल जाएत। बूढ़बा स्वयं “जे देखू, से लिखू” कहैत छथि; देखल बातक नोंद आ साबित अपराधक निर्णय बीच अन्तर राखब आवश्यक अछि।

## समय, प्रतीक्षा आ सम्भावित हस्तक्षेप

अध्याय भविष्यक एक महत्त्वपूर्ण क्षणक प्रतीक्षा स्थापित करैत अछि। जेरार जेनेतक कथन-क्रममे एहन पूर्वाभास अन्तिम गवाहीक परिणाम खुला रखैत अछि; वास्तवमे सत्यव्रत एखन ककरो विरुद्ध सार्वजनिक बयान देने नहि छथि।

−३३क बटुकनाथ विधिक ज्ञानकेँ विलम्बक औजार बनबैत अछि; −३१क सत्यव्रत संस्थागत अन्दर देखल अनियमितता दर्ज करबाक सम्भावना खोजैत छथि। दूनू व्यक्तिक नैतिक अन्तर “नियमक भाषा के ना उपयोग कएल जाए” प्रश्नपर निर्भर अछि, केवल “नीक-बेजाय मनुष्य”क स्थिर वर्गीकरणपर नहि।

## मूल्याङ्कन

मौनक दोहर अर्थ, दर्ज होइत लेनदेन आ अन्तिम सम्भावित गवाही अध्यायकेँ अपेक्षाकृत संयत तनाव दैत अछि। बूढ़बाक निर्णय नहि थोपब चरित्रक स्वायत्तताक मान्यता अछि।

सीमा ई जे बैंकक जटिल संस्थागत संरचना आ सत्यव्रतक सहकर्मीसभक अलग दृष्टि कम देखाइत अछि। पैघ भविष्यसूचना पाठककेँ तैयार करैत अछि, मुदा सत्यव्रतक तत्काल सामाजिक संघर्षक बहुस्वरता आर विकसित भऽ सकैत छल। अध्याय −३५ सँ −३१: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन गायब देहसँ लुप्त रकम धरि

−३५मे विदेश गेल युवकक देहपर नियन्त्रण आ माताक अनवरत प्रतीक्षा; −३४मे जन्मल उज्ज्वलपर अज्ञात भविष्यक छाया; −३३मे न्यायिक समयक दुरुपयोग; −३२मे समुद्रपारक अनदेखल रकमक पथ; −३१मे बैंकक अन्तःस्थ विवरण—एहि क्रममे गोहि-प्रतीक देह, भविष्य, न्याय, वित्तीय दूरी आ साक्षीक प्रश्न संग जोड़ैत अछि। कथाक संवेदना क्रमशः घरसँ संस्थाक भीतर प्रवेश करैत अछि।

## पूर्वसूचना बनाम अपूर्ण ज्ञान

उज्ज्वलक सम्भावित स्क्रीन-डूबनाइ, बटुकनाथक घुरि सकबाक आशा, लाउ किन-हंगक संग भविष्यक भेट आ सत्यव्रतक नोटबुकक उपयोग—चारि भविष्यसूचना निश्चित परिणाम नहि अछि। बूढ़बाक दीर्घ स्मृति आ अज्ञान एकसंग उपस्थित होइत अछि; ई विरोध नैतिक रूपेँ उपयोगी, मुदा अत्यधिक पूर्वकथनसँ पाठकक अनिश्चितता घटबाक जोखिम अछि।

## सामूहिक रक्षा आ व्यक्तिक स्वर

राजीव नौकरीक परख सिखबैत छथि, दीपाली उज्ज्वलक नाम चिह्नित करैत छथि, बटुकनाथक विधवा अल्पकाल लेल उपस्थित छथि, अभिनव समाचारक नाम पढ़ैत छथि, सत्यव्रत स्वयं विवरण लिखैत छथि। एकर मध्य पीड़ित प्रवासी युवक आ विधवाक स्वतन्त्र आवाज अपेक्षाकृत कम अछि, जखन सत्यव्रतक नैतिक अनिश्चय विस्तृत सुनाइ दैत अछि। ई असमान वितरण बहुस्वरताक वास्तविक सीमा अछि।

## साहित्यिक सामर्थ्य आ जोखिम

पाँच अध्यायमे ठोस वस्तु—पासपोर्ट, नवजातक नामक चिह्न, वकीलक कोट, शीशाक मीनारक फोटो आ बैंकक नोटबुक—प्रतीकात्मक विचारकेँ साकार करैत अछि। मुदा कतेको सामाजिक रूपान्तरण बूढ़बाक सूत्रात्मक व्याख्यामे अन्त पबैत अछि। घटनाक जटिल दुराव आ पात्रक अलग-अलग भाषा आर दृश्यरूप पबितय तँ आधुनिक उपन्यासीय बहुध्वनि अधिक प्रबल होइत।

## अध्याय –३० — गोप कुमारक दस्तावेज

### पुरान पात आ डिजिटल पन्नाक संगम

गोप कुमार यादवानन्दक छाया-पंजी, विभाक सूचना-अधिकारसँ भेटल सरकारी कागच, पुरान नक्शा आ नव डिजिटल अभिलेख एक ठाम जोड़बाक काज करैत छथि। अध्यायक केन्द्र एकटा व्यक्तिक जीवनक घटना नहि, अनेक पीढ़ीक पृथक-पृथक दस्तावेजकेँ आपसमे पढ़बाक नव पद्धति अछि। –७८मे गुप्त पंजी, –४०मे सार्वजनिक अभिलेख, आ –४४मे कम्प्यूटरक लिखन-व्यवहार एतय एकहि संकलनक पूर्वशर्त बनैत अछि।

अभिलेखीय अध्ययनमे एकरा केवल “सभटा सुरक्षित भेल” नहि मानब। अलग स्रोतक रचनाकार, तारीख, उद्देश्य आ मौन सेहो दर्ज करबाक आवश्यकता अछि। गोप कुमारक संकलन पुरान नाम जोगबैत अछि, मुदा कु न नाम पहिनेसँ बाहर रहि गेल, कु न पत्र नष्ट भऽ गेल अथवा कु न विवरण परस्पर विरोधी अछि—ई प्रश्न पाठमे विस्तार नहि पाबि सकल।

### स्मृति आ इतिहासक कथात्मक दूरी

गोप कुमार शताब्दी पुरान बाढ़िमे हेरायल एक नाम आ यादवानन्दक हाथक टिप्पणी भेटैत छथि। एहि छोट दृश्यसँ भूतकालक अन्यथा बिसरल व्यक्ति वर्तमान अभिलेखमे पुनः प्रवेश करैत अछि। जेरार जेनेतक अनालेप्सिस एतय स्मरणात्मक कहानी मात्र नहि, दस्तावेजक पुनर्पठन द्वारा अतीतकेँ वर्तमानमे आनबाक क्रिया अछि।

मौरिस हाल्बवाक्सक सामाजिक स्मृति आ पॉल रिकरक कथात्मक समयक भेद प्रासंगिक अछि। अभिलेख नामक उपस्थिति राखि सकैत अछि, मुदा मृतकक सम्पूर्ण अनुभूति पुनः नहि लौटा सकैत। “नाम फेर गाम धरि घुरल” एक प्रभावकारी रूपक अछि, शाब्दिक पुनर्जीवनक घोषणा नहि।

### अधूरल अन्त आ सम्पादकीय आत्मचेतना

बूढ़बा कहैत छथि जे कथा एखन पूर्ण नहि भेल, कारण “एकटा अन्तिम अध्याय बाकी” अछि। ओ उज्ज्वल, बटुकनाथ आ दूरक छाहक भविष्यमे मिलनक संकेत दैत छथि।

उपन्यास अपन समापनक पूर्वयोजना स्वयं पात्रक मुखसँ कहबैत अछि; ई आत्मसन्दर्भी आख्यानगत युक्ति अछि।

एहि भविष्यसूचनाक प्रभाव दुहरा अछि। एक दिस पाठक अलग अध्यायक सुतलीक डोर समग्र परिणाममे जुड़बाक प्रतीक्षा करैत अछि; दोसर दिस अत्यधिक स्पष्ट समापन-पूर्वसूचना घटनाक अनपेक्षित खुलबाक सम्भावना घटबैत अछि। गोप कुमार “साक्षी, शायद लेखक” होयबाक सम्भावना स्वयं रचनाक कथनाधिकारपर प्रश्न उठबैत अछि।

## लेखकीय अधिकार आ उत्तरदायित्व

बूढ़बाक चेतावनी “कथा संकलित करब सजावट नहि, साक्षी बनब थिक” गोप कुमारक काजकेँ निरपेक्ष संग्रहक बदला नैतिक जिम्मेदारी बनबैत अछि। इतिहासक व्याख्या, उद्धरणक छनोट आ पीड़ितक नाम प्रकाशित करबाक निर्णय समाजपर प्रभाव छोड़ैत अछि।

मुदा पीड़ितक निजी पहिचान सुरक्षित राखबाक अधिकारक प्रश्न –३७क डिजिटल शोषणक पाछाँ आर जटिल अछि। “हर नाम” बचायब आ “हर नाम” सार्वजनिक करब एक समान काज नहि। पाठमे अभिलेखक गोपनीयता आ अनुमति-प्रक्रिया खुलल नहि; आलोचनामे एहि अन्तरकेँ सम्भावित समस्या रूपमे सुरक्षित राखब चाहिए।

## अध्यायक मूल्याङ्कन

गोप कुमारक अभिलेख दीर्घ कादम्बरीक अपन पाठकीय पद्धतिक प्रतिरूप अछि— अलग पात, अलग आवाज आ अलग समयक अर्थ एक साथ बुझब। कथनक ई आत्मचेतना रचनात्मक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि।

सीमा ई जे स्रोतसभक भीतरक असहमति बहुत कम अछि। दस्तावेजकेँ बचेनाइ सत्यक पहिल चरण, अंतिम न्याय नहि; गोप कुमारक भविष्यक आलोचनात्मक चुनौती स्रोतक सत्यापन आ वैकल्पिक स्मृतिक स्थान खोलब होयत।

## अध्याय –२९ — चन्द्रपालक सपन ।

### दूर जन्मल पात्र आ उपन्यासक भूगोल

मेरठमे एक दूरस्थ सम्बन्धी परिवारमे चन्द्रपाल बत्राक जन्म होइत अछि। परिवारक गामसँ सम्बन्ध पुरान नाम आ विरल चिट्ठी धरि सीमित अछि। तथापि बूढ़बा ओकर जन्मपर बेचैन होइत छथि, आ गोप कुमार पुछैत छथि—ई त गामक बच्चा नहि, तँ गामक साक्षी ओकर नाम किएक धरत? एहि प्रश्नमे दीर्घ उपन्यासक क्षेत्रीय सीमा बदलैत अछि।

बूढ़बाक उत्तर: नव गोहि स्क्रीन आ तारक जालमे गामक महार नहि मानैत। फलतः कथाक भूगोल सेहो स्थानीय सम्बन्धसँ दूरस्थ समुदाय दिस विस्तारित होइत अछि। उत्तरऔपनिवेशिक प्रवास-अध्ययनक प्रश्न एतय प्रासंगिक अछि, मुदा चन्द्रपालक परिवारक वास्तविक प्रवासक कारण वा मेरठक सामाजिक जीवन विस्तारसँ वर्णित नहि।

### शीर्षक आ मुख्य घटनाक बीचक भेद

अध्यायक परिचय कहैत अछि जे चन्द्रपाल कानूनक शिक्षा लऽ सट्टाक जालमे फँ सैत अछि, मुदा मुख्य दृश्य ओकर जन्म, बूढ़बाक अस्थिरता आ गोप कुमारक अभिलेखीय विस्तारपर केन्द्रित अछि। ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि: अध्यायक शीर्षक “सपना” आ परिचय सम्भावित भविष्य तय करबाक संकेत दैत अछि, जखन मुख्य प्रकरणमे ओ सट्टाक घटनाक प्रत्यक्ष अभिनय नहि करैत।

कथनशास्त्रमे ई भविष्याभास आ वर्तमान दृश्यक अनुपातक प्रश्न अछि। कथानक पाठककेँ चन्द्रपालक भविष्यक विषय पहिनेसँ संकेत दैत अछि, मुदा चरित्रक निर्णय अथवा दबावक विकसित घटना एखन स्थगित राखैत अछि। तेँ एकरा “चन्द्रपाल वर्तमान अध्यायमे सट्टेबाजी शुरू कएलक” कहि प्रस्तुत करब स्रोतसँ असंगत होयत।

## नामक सीमा आ संरक्षणक न्याय

गोप कुमार अपन अभिलेखमे “दूरस्थ सम्बन्ध” नामक नव वर्ग बनबैत छथि आ चन्द्रपालक नाम पहिल प्रविष्टि होइत अछि। एकर अर्थ केवल सूचीमे नामक विस्तार नहि; गामक सदस्यता अपन माटिमे जन्मलाक एकमात्र शर्तसँ बाहर निकसैत अछि।

तथापि संरक्षण एखनो “गामसँ जुड़ल” सम्बन्धक आधारपर अछि। जे लोकक कोनो वंश-सम्बन्ध नहि मुदा नव जालक समान पीड़ित छथि, हुनकर स्थान कतय? स्मृति-विस्तार सामुदायिक उदारता अछि, मुदा सार्वभौमिक अधिकारक पूर्ण परिभाषा एतय नहि।

## पूर्वदर्शन बनाम स्वतंत्र भविष्य

बूढ़बा पहिनहि सँ चन्द्रपालक सम्भावित भूमिकाक आभास पबैत छथि, मुदा ओ भविष्य निश्चित अपराधक दोष-निर्णय नहि करैत छथि। “नाम धरब” साक्षित्वक क्रिया अछि; ई विशिष्ट चरित्रक सार्वजनिक आरोपक प्रमाण नहि।

–३४क उज्ज्वलपर सामूहिक नजरि आ –२९क चन्द्रपालक दूरस्थ नाम—दुनूमे जन्मसँ पूर्व अथवा जन्मक समय भविष्यक नैतिक छाया बनैत अछि। एहि रूपकसँ नियतिवादक जोखिम अछि; पात्रक अगिला चुनाव ओकर अपन विवेकसँ पढ़ब, बूढ़बाक संकेतसँ मात्र नहि।

## मूल्याङ्कन

उपन्यासक स्थानीय साक्षीक नव सीमाक्षेत्र बनब अध्यायक मुख्य सौन्दर्यात्मक उपलब्धि अछि। छोट “दूरस्थ सम्बन्ध” शीर्षक दीर्घ भौगोलिक विस्तारक ठोस संस्थागत रूप बनैत अछि।

सीमा ई जे मेरठक वास्तविक अनुभव आ चन्द्रपालक निजी चेतना कम अछि। कालांतरमे अपराध वा छलक जालसँ ओकर सम्बन्ध बुझबाक लेल घटना चाही, केवल पूर्वसूचना नहि।

# अध्याय -२८ — राघवक कोड

## यन्त्रक भाषा आ मानवीय कौशल

नगरमे जन्मल राघव कोड आ यन्त्रक भाषा असाधारण सहजतासँ सिखैत अछि। कथावाचक ओकर तेज कौशल आ गामक नारिकेल पात पाठशालाक अक्षरज्ञानक तुलना करैत अछि। पुरान अभिलेखक साक्षरता आब डिजिटल संकेत रचनाक क्षमता बनि कऽ प्रवेश करैत अछि।

एहि पात्रकेँ केवल प्रतिभाक चिह्न बनायब उचित नहि। प्रतिभा कोनो तय नैतिक दिशा नहि देइत; बूढ़बा स्वयं राघवक चुनावक परिणाम नहि जनैत छथि। कथामे प्रौद्योगिक ज्ञानक शक्तिक संग नैतिक अनिश्चितताक स्पष्ट स्वीकृति अछि।

## औजारक निरपेक्षताक प्रश्न

बूढ़बा तलवारक उपमा दैत छथि—हाथ आ मन ओकर उपयोग नीक वा बेजाय बनबैत अछि। एहि विचारसँ राघवक व्यक्तिगत उत्तरदायित्व प्रखर होइत अछि। मुदा आधुनिक प्रौद्योगिकी-अध्ययनमे औजारक संरचना, प्रोत्साहन, संस्था आ पहुँच सेहो उपयोगक परिणाम निर्धारित करैत अछि। कम्प्यूटर-संहिता केवल चलौनिहारक मनक निष्क्रिय विस्तार नहि।

अध्यायक “शक्ति यन्त्रमे नहि”क आशय नैतिक बलाघात अछि, शाब्दिक तकनीकी निष्कर्ष नहि। जँ यन्त्रक डिजाइन किनका लाभ देत आ ककरा बाहर रखत, तकर जाँच होयत तँ सामाजिक सत्ता-विमर्श गहींर होएत।

## गरीब परिवारक कागचक सूक्ष्म घटना

एक निर्धन परिवारक दफ्तरी कागचमे बाधा छल; राघव अपन यन्त्रज्ञानसँ ओकर सुधार करैत अछि आ परिवारकेँ हक भेटैत अछि। ई ठोस घटना तकनीकी क्षमता सामाजिक सहायतामे लगबाक सम्भावना देखबैत अछि; -४०क सूचना-अधिकार आ -३९क नाम-हाजिरीक प्रश्न नव माध्यम प्राप्त करैत अछि।

मुदा कागचमे वास्तविक त्रुटि की छल, कु न प्रणाली सुधारल गेल आ कतेक अधिकार-सत्यापन भेल, ई विवरण नहि अछि। अतएव सटीक तकनीकी प्रक्रिया वा सरकारी निर्णयक नाम कल्पित नहि करब। समाधानक त्वरितता रचनाक शिक्षापरक लय अछि, विस्तृत तन्त्रक विवरण नहि।

## अभिलेखमे प्रश्नचिह्न आ कथात्मक समय

गोप कुमार राघवक नामक कात प्रश्नचिह्न लिखैत छथि। −३४मे उज्ज्वलक नामक कात अतिरिक्त चिन्ह आसन्न पीड़ाक आशंका छल; एतय प्रश्नचिह्न भविष्यक नैतिक चयनक अपूर्णता अछि। दूनू ठाम अभिलेख केवल भूतक स्मृति नहि, आगूक अनिश्चितताक वहनकर्ता बनैत अछि।

जेनेतक पूर्वसूचनाक दृष्टिसँ पाठक जानैत अछि जे राघव कथामे फेर महत्त्वपूर्ण होयत, मुदा ओकर सटीक रास्ता नहि जनैत। एहि अनिश्चिततामे चरित्रक स्वायत्तता रहल अछि; निर्णायक परिणति घोषित करब आगूक अध्यायक अधिकार छीनब होयत।

## मूल्याङ्कन

राघवक एकटा वास्तविक सहायता-घटना आ अभिलेखक प्रश्नचिह्नक विरोध सुगठित अछि: पात्रक वर्तमान काज नीक अछि, भविष्य खुलल अछि।

सीमा ई जे राघवक अपन प्रत्यक्ष संवाद, सामाजिक मित्रता आ तकनीकी कार्यक सामग्री बहुत सीमित अछि। बोधक केन्द्र बूढ़बाक नैतिक पाठ अछि; चरित्रक भिन्न आवाज आर सामने आबि सकैत छल।

# अध्याय –२७ — आरुणिक निर्माण

## बान्हक भौतिकता आ स्मृतिक दीर्घता

आरुणि अभियान्त्रिकी पढ़ि पुल आ बान्ह बनेबाक काजमे लगैत छथि। ओ बचपनक बाढ़िक कथा आ इन्द्राणीक चेतावनीक परम्परा याद रखैत छथि। माटिक बान्हक स्थानपर पक्का बान्ह, नव यन्त्रसँ पूर्वानुमान आ बुजुर्गसभक नदी-बोधक संगति कथामे आधुनिक निर्माणकेँ जीवित स्थानीय स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।

–४३मे नदीक सूखनाइ पर्यावरणीय संकट छल; –२७मे बाढ़िसँ रक्षाक संरचना प्राथमिक अछि। एकहि जल-क्षेत्रक अधिकता आ अभाव दूनू सम्भव प्रश्न अछि। ई विरोध उपन्यासक पर्यावरणीय बहुलता दिखबैत अछि, मुदा ठोस जल-विज्ञानक सुसंगत अध्ययन मूल अंशमे नहि भेटैत।

## देखभाल-नैतिकता बनाम निर्माणक उत्सव

आरुणि अटूट पुल आ बान्ह बनायबाक आकांक्षा रखैत छथि; बूढ़बा कहैत छथि जे कोनो निर्माण देखभाल बिनु टिकत नहि। एहि संवादमे निर्माणक एकबारगी उपलब्धि आ रखरखावक निरन्तर सामाजिक श्रमक स्पष्ट भेद अछि। नारीवादी देखभाल-नैतिकताक व्यापक अर्थमे टिकाऊ सम्बन्ध, जिम्मेदारी आ भविष्यक अज्ञात उपयोगकर्ता सभ निर्णयक हिस्सा अछि।

आरुणि अन्ततः हर निर्माणक लेल दीर्घकालीन देखभाल-योजना जोड़ैत छथि। कथामे ई नैतिक परिवर्तन परिणामरूपेँ देखाओल गेल अछि; मुदा योजना ककर नियन्त्रणमे, संसाधन के देत, निरीक्षण के करत—एहि संरचनात्मक प्रश्नक उत्तर विस्तृत नहि।

## लोकज्ञान आ विशेषज्ञ ज्ञानक सम्बन्ध

आरुणि नदीक प्रवाह बूझनिहार वृद्धसभ आ पानिक चढ़ाव पढ़निहार स्त्रीसभक ज्ञानकेँ आधुनिक यन्त्रसँ कम नहि मानैत छथि। ज्ञानगत न्याय एतय सैद्धान्तिक घोषणा मात्र नहि, अभियान्त्रिकेँ बहुस्रोत ज्ञानक आवश्यकता मानबाक काज अछि।

तथापि “दूनू ज्ञान समान” कहि सभ अनुभवजन्य दावाकेँ बिना जाँच स्वीकार करब उचित नहि। नदीक पुरान व्यवहार आ वर्तमान मौसमक स्थितिक अलग प्रमाण चाही। अध्यायक सशक्त दृष्टि विशेषज्ञता आ अनुभवक संवाद अछि; दूनूक वैज्ञानिक समरूपता सिद्ध करबाक प्रयत्न नहि।

## परीक्षाक रात्रि आ सामूहिक नायकत्व

पैघ बाढ़िक राति गामक लोक दीप लऽ बान्हपर पहरा दैत छथि आ नव बान्ह टिकैत अछि। एहि दृश्यमे निर्माणक सफलता अभियन्ताक एकल यश नहि, पहरा देनिहार समुदायसँग जुड़ैत अछि। ~८१क आक्रमणक सामूहिक प्रतिरोधसँ ई दृश्यक अन्तर्पाठीय सम्बन्ध बनैत अछि—सुरक्षा एकटा निरन्तर सामूहिक अभ्यास अछि।

मुदा एकटा बाढ़िमे बान्ह टिकबाक घटना एकर सदा अटूट रहबाक प्रमाण नहि। कथानक स्वयं आरुणिक मुँहसँ यही सीमा स्वीकृत करबैत अछि, जाहिसँ नैतिक संदेश तकनीकी सर्वशक्तिमानतासँ अलग रहैत अछि।

## मूल्याङ्कन

अध्यायक नीक पक्ष निर्माणक “भविष्य” केँ काजक हिस्सा बनबैत अछि। नदी, बान्ह, रातिक पहरा आ आरुणिक योजना वस्तुगत आधारसँ विचार जोड़ैत अछि।

सीमा ई जे विस्थापन, नदीक दोसर कातक परिवारक सुरक्षा आ बान्हक पारिस्थितिक प्रभावक चर्चा नहि; टिकाऊ निर्माणक सामुदायिक निर्णयमे ई प्रश्न सेहो प्रासंगिक अछि।

# अध्याय –२६ — देविकाक गीत

## कण्ठसँ ध्वनि-अभिलेख धरि

देविका गामक बूढ़ स्त्रीसभ लग बैसि पुरान बाढ़ि, अकाल, सोहर आ समदाउनक गीत हुनक स्वरमे दर्ज करैत छथि, फेर नव पीढ़ीक लेल नव सुरमे ढालैत छथि। एतय गीतक अस्तित्व एकहि रूपमे नहि: मूल गबैया कण्ठक ध्वनि आ नव प्रस्तुतिक रचनात्मक रूप दू अलग सांस्कृतिक वस्तु अछि।

लोकसाहित्य-अध्ययनक दृष्टिसँ एहि भेदक विशेष महत्त्व अछि। मूल प्रस्तुति, गबैयाक नाम, प्रसंग आ क्षेत्र लिखल जाए तँ अभिलेख ऐतिहासिक रूपसँ उपयोगी बनत; नव प्रस्तुति कतेक परिवर्तन के लक से सह-पाठ रहत। मूल अध्याय “हुबहू” रेकर्ड आ “नव सुर” दुनू काजक उल्लेख करैत अछि, मुदा सूचीकरणक विस्तृत विधि नहि दैत।

## अकालक बूढ़ी स्त्री आ स्वरक मृत्यु

एक वृद्ध स्त्री एहन अकालक टेक गबैत छथि जे आर कियो नहि जनैत; देविका ओहि काँपैत आवाजकेँ दर्ज करैत छथि। किछु दिनक बाद वृद्धा नहि रहैत छथि, मुदा ध्वनि बचि जाइत अछि। ई प्रकरण अध्यायक सबसे तीक्ष्ण दृश्य अछि, कारण जीवित देहक नश्वरता आ दर्ज स्वरक पुनःसुनाइ एक-दोसराकेँ समीप आनैत अछि।

मुदा “स्वर अमर भेल”क रूपककेँ तकनीकी स्थायित्वक तथ्य नहि मानब। ध्वनि-सञ्चिका नष्ट भऽ सकैत अछि, माध्यम अप्रचलित भऽ सकैत अछि, आ अनुमति बिना सार्वजनिक प्रसार पीड़ादायक भऽ सकैत अछि। अतीतक रक्षा लेल संरक्षण, उत्तराधिकार आ नैतिक अधिकारक अलग उपाय आवश्यक अछि।

## स्त्री स्वर आ सांस्कृतिक अधिकार

देविका स्त्रीसभक स्वरकेँ गीतक मुख्य स्रोत बनबैत छथि। लिखित आधिकारिक अभिलेखमे अक्सर कम रहनिहार जीवनानुभव धुनमे सुरक्षित भेटैत अछि। –६६क स्त्री

राति-सभाक गवाही एतय संगीतक अभिलेख रूप धारण करैत अछि; स्त्रीक बोलनाइ सार्वजनिक इतिहासक विषय बनि सकैत अछि।

तथापि गीतक सन्दर्भ जानने बिना प्रत्येक पदकेँ ऐतिहासिक घटना-सिद्ध प्रमाण नहि बनाउ। गीत सामुदायिक अनुभव, भाव, छन्द आ सांस्कृतिक अर्थक माध्यम अछि; ओकर दावी इतिहासक दोसर स्रोतसँ मिलाओल जाएत। एतय गबैयाक अपन अर्थ-विवेचनक आवाज आर विस्तृत भेटितय तँ बहुस्वरता प्रबल होइत।

## संगीत-पाठशाला आ पीढ़ीक समय

देविका नारिकेल पात पाठशालाक संगीत-शाखा बनबैत छथि, जतय बालकसभ अक्षरसँ पहिने एक पुरान गीत सिखैत छथि। एहि विन्यासमे मौखिक स्मृति आ लिखित साक्षरताक स्थान प्रतिस्पर्धी नहि, परस्पर पोषक अछि। –७३क मोहनक धुन आ –८०क लिखित लोककथाक विस्तार एके स्थानी परम्परामे लौटैत अछि।

जेरार जेनेतक आवृत्तिपरक कथनमे “हर बच्चा” गीत सिखबाक व्यवस्था दीर्घ सामाजिक नियम बनैत अछि। मुदा एको बच्चा नव गीत स्वीकार नहि करय वा अपन अलग संगीत चुनय, तकर प्रश्न कथा नहि उठबैत; सांस्कृतिक संरक्षण व्यक्तिक स्वतन्त्रता सँ अलग नहि।

## मूल्याङ्कन

अकालक वृद्धाक काँपैत कण्ठ आ ध्वनि-संग्रहणक यन्त्रक संगति पुरान आ नवक सीधा संवेदनशील मिलन अछि। एकर साहित्यिक महत्व ई अछि जे अभिलेख कागच अथवा बैंकक नोटबुक मात्र नहि, श्रुत स्वर सेहो अछि।

सीमा ई जे नब धुनमे परिवर्तित गीतक मूल गबैयाक अधिकार, अनुमति आ सन्दर्भक बारीकी कम अछि। देविका संरक्षणक शक्तिशाली पात्र छथि; हुनक सम्पादकीय चुनबाक निर्णयक पारदर्शिता आर विस्तृत होएब चाही। अध्याय –३० सँ –२६: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन अभिलेखक पाँच भौतिक रूप

–३०मे पुरान पंजी आ डिजिटल दस्तावेज एक ठाम संकलित होइत अछि; –२९मे नामक सीमा “दूरस्थ सम्बन्ध” धरि बढ़ैत अछि; –२८मे कागजक भूल तकनीकी ज्ञानसँ सुलझबाक

संकेत अछि; –२७मे नदी-बान्हक निरीक्षण आ भविष्यक देखभाल लिखित योजना बनैत अछि; –२६मे जीवित लोकगीत ध्वनि-अभिलेखमे बदलैत अछि। “साक्ष्य” एतय मात्र कागच नहि—विस्तारित समुदाय, संहिता, संरचना आ स्वरक विविध रूप अछि।

## प्रश्नचिह्न आ निर्णयक स्वतन्त्रता

गोप कुमार अन्तिम अध्यायक प्रतीक्षा करैत छथि, चन्द्रपालक दूरस्थ जन्म भविष्यक जोखिमसूचक बनैत अछि, राघवक कात प्रश्नचिह्न लिखल अछि, आरुणि निर्माणक काजमे देखभाल जोड़ैत छथि, देविका पुरान धुनक नव प्रस्तुति चुनैत छथि। पहिले तीनमे भविष्यक अज्ञात परिणाम प्रमुख अछि; पछिला दू मे वर्तमानक ठोस निर्माणक निर्णय देखाइत अछि। ई अन्तर चरित्रक स्वतन्त्र कर्तृत्वक विविध स्तर उद्घाटित करैत अछि।

## प्रमाण आ सहमतिक नैतिक संकट

गोप कुमारकेँ पुरान नाम मिलैत अछि; चन्द्रपालक नाम दूरस्थ सम्बन्धक सूचीमे चढ़ै त अछि; राघव गरीब परिवारक कागच ठीक करैत अछि; आरुणि स्थानीय ज्ञान सुनैत छथि; देविका वृद्धाक कण्ठ रिकॉर्ड करैत छथि। सभ दृष्टान्तमे ज्ञानक संरक्षण उपयोगी अछि, मुदा पहचान प्रकाशित करब, कागज बदलब, लोकज्ञानक प्रयोग आ ध्वनिप्रसारक अनुमति स्वतंत्र नैतिक प्रश्न अछि। उपन्यास संरक्षणक महत्त्व बतबैत अछि, समस्त अधिकार-प्रक्रिया विस्तारसँ नहि।

## संरचनात्मक सीमा आ उपलब्धि

पाँचू अध्याय नव पात्रक परिचय आ अपेक्षाकृत शीघ्र नैतिक निष्कर्षक ढाँचामे रचल अछि। भविष्यसूचना अनेक बेर तत्काल दृश्यपर भारी होइत अछि; तैयो गोप कुमारक पुरान टिप्पणी, राघवक प्रश्नचिह्न, आरुणिक बाढ़ि-पहरा आ देविकाक अकाल-टेकक ठोस वस्तुसभ वर्णनकेँ मात्र शिक्षा नहि रहय दैत। दीर्घ कृतिमे एहि वस्तुक पुनरावर्तन समग्र संरचनाक अन्तःसूत्र प्रदान करैत अछि।

## अध्याय –२५ — मीराक निजत ।

## नाम बचेनाइ आ नामक अधिकारक नव भेद

मीरा नगरमे पढ़ि डिजिटल निजता आ स्त्री-सुरक्षाक काज करैत छथि। ओ सपनाक डिजिटल राति-सभामे कानूनी सहायता जोड़ैत छथि। अध्यायक मूल वैचारिक परिवर्तन बूढ़बाक वाक्यमे अछि: पहिने गोहि देह खाइत छल, नाम नहि; आब नव गोहि नाम आ छविकेँ सेहो बजारक वस्तु बनबय चाहैत अछि। ई संशोधन दीर्घ उपन्यासक केन्द्रीय सूत्रकेँ अपरिवर्तनीय उपदेश नहि रहय दैत, नव समयमे जाँचल जा सकनिहार कथन बनबैत अछि।

नैतिक रूपेँ “नाम बचायब” आ “नामक उपयोगपर व्यक्तिक नियन्त्रण” अलग अछि। पहिल सार्वजनिक स्मृतिक कार्यक्रम भऽ सकैत अछि, दोसर निजी सहमतिक अधिकार अछि। गोप कुमारक अभिलेखीय उत्साह आ देविकाक ध्वनि-संरक्षणक पाछाँ मीरा प्रश्न रखैत छथि: ककरा अनुमति लेल गेल? एहि दृष्टिसँ –२५ पहिनुक अनेक अध्यायक सूक्ष्म आत्मालोचना सेहो बनैत अछि।

## स्त्रीवादी अधिकार-विमर्श आ संस्थागत उत्तर

फोटो चोराब, सूचना बेचब आ सहमति बिना नाम उपयोग करबाक उदाहरण पाठमे अछि। एक अज्ञात युवक वा हाथ द्वारा युवतीक फोटो दुरुपयोगक प्रसंगमे पीड़िता मीराक सभा धरि अबैत छथि; कानूनी मददसँ कथावाचक कहैत अछि जे नुकाएल हाथ “इजोतमे” आयल। ई घटना अपमानित स्त्रीक सार्वजनिक पुनःस्थापन आ कानूनी सहायताक संगम अछि।

मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक चिन्तनमे पीड़िताकेँ विश्वसनीय वाचिका मानब अनिवार्य अछि। मुदा पीड़िताक सहमति, सूचना सार्वजनिक करबाक सीमा आ संरक्षणक विशेष विधि बताओल नहि गेल। एहि कारण मीरा द्वारा प्रदत्त मददक नैतिक दिशा स्पष्ट होइत अछि, मुदा एकर प्रक्रिया पूर्ण रूपसँ चित्रित नहि।

## पीड़िताक आवाज आ सार्वजनिक छवि

पीड़िता “फेर माथ ऊँच कऽ ठाढ़” होइत छथि—ई दृश्य व्यक्ति-गरिमाक प्रत्यावर्तनक संक्षिप्त प्रतीक अछि। तथापि युवतीक अपन बयान विस्तृत नहि सुनाइत, आ कथावाचक मीरा तथा बूढ़बाक शिक्षाक स्वरमे अधिक स्थान दैत अछि। स्त्रीवादी कथनशास्त्रकेँ केवल सहानुभूति नहि, पीड़िताक अपन कहबाक शर्त सेहो देखबाक चाही।

पूर्व –३७क घटनामे सामाजिक गवाहीक महत्त्व छल; –२५मे कानूनी सहायताक अतिरिक्त स्तर अछि। ई संस्थागत विकास आशावादी अछि, मुदा दण्ड, क्षतिपूर्ति अथवा अपराधक तकनीकी जाँचक ठोस विवरण नहि; परिणामकेँ न्याय-प्रणालीक सर्वांगीण विजय नहि कहि सकैत छी।

## डिजिटल संग्रह आ गोपनीयताक द्वन्द्व

–३०क गोप कुमार हर नाम जोड़ि रहल छथि, –२६क देविका स्वर-संग्रह करैत छथि, –२५क मीरा “जकर नाम, तकर अनुमति”क सिद्धान्त प्रस्तुत करैत छथि। ई तीनू एकहि अभिलेखीय संस्कृति भीतरक वाद अछि: स्मृति सुरक्षित राखबाक नामपर निजताक अधिकार उल्लङ्घ न नहि हो।

फू कोक सत्ता-ज्ञान सम्बन्धक पद्धति एतय उपयोगी अछि, कारण सूचनाक संग्रह स्वयं शक्ति उत्पन्न करैत अछि। गोपनीयता आ न्याय बीच निश्चित एकबारगी समाधान नहि; पात्रकेँ उद्देश्य, पहुँच, भण्डारण आ सहमति जाँचबाक आवश्यकता अछि। मूल अध्याय एहि दिशा मे मूल्य प्रस्तुत करैत अछि, विस्तृत संस्थागत ढाँचा नहि।

## मूल्याङ्कन

अध्यायक साहित्यिक उपलब्धि बूढ़बाक आदर्श-वाक्यक संशोधन अछि। साक्षित्वक प्राचीन नैतिकता नव निजता-अधिकारसँ प्रश्नोत्तर करैत अछि; जीवित परम्पराक इएह चिन्ह अछि।

कथात्मक सीमा ई जे सहायता आ न्यायिक पहचान अपेक्षाकृत शीघ्र सम्पन्न होइत अछि, अपराध झेलैत युवतीक निजी अनुभव कम सुनाइत अछि। तइयो “नामक अनुमति” पूरा त्रयीक अभिलेखीय नैतिकतापर दूरगामी आलोचनात्मक कसौटी रखैत अछि।

## अध्याय -२४ — निशांतक बैंक

# साहूकारसँ आधुनिक बैंक धरि: शक्ति-सम्बन्धक निरन्तरता

निशांत ग्रामीण परिवारसभकेँ खाता, बीमा आ ऋणक सुविधा सुलभ कराबय चाहैत छथि। ओ पुरान साहूकारी ऋणक अत्याचार स्मरण करैत छथि; मुदा बैंकक कागचक भाषा स्वयं अशिक्षित किसान लेल अनचिन्हार अछि। एहि विरोधमे प्रगतिक सरल कथा प्रश्नाङ्कित होइत अछि: औपचारिक संस्था पुरान शोषण हटाउ सेहो सकैत अछि आ जटिल हिसाब द्वारा ओकर नब रूप सेहो बनि सकैत अछि।

-३१क सत्यव्रत बैंकक भीतर अनियमित लेनदेनक आशंका देखैत छथि, जखन -२४क निशांत सेवाग्राहीक समझक अभाव देखैत छथि। दूनू बैंक-आख्यानकेँ एकहि नैतिक निष्कर्षमे नहि घटेबाक चाही। एक ठाम गोपनीय लेनदेनक जाँच अछि, दोसर ठाम भाषा आ वित्तीय पहुँचक न्याय अछि।

# वित्तीय साक्षरता आ ज्ञानगत असमानता

बूढ़बाक सूत्र अछि जे अन्याय ओतय जन्म लैत अछि जतय एक पक्ष हिसाब बुझैत अछि आ दोसर नहि। निशांत चौपालमे चित्र आ उदाहरण द५ योजनासभ सरल मैथिलीमे बुझबैत छथि। एतय लोकभाषा अधिकारक व्यावहारिक माध्यम बनैत अछि; बैंकक कागचक अनुवाद केवल भाषिक सजावट नहि, निर्णय-क्षमताक वितरण अछि।

मुदा जे ग्राहक निरक्षर छथि, हुनका बुझा देब मात्र पर्याप्त सुरक्षा नहि। ऋणक शर्त, ब्याज, दावा अस्वीकार भेलाक उपाय, लिखित प्रतिलिपि आ शिकायतक अधिकार अलग आवश्यक तत्त्व अछि। उपन्यास शिक्षणक सुखद चित्र दैत अछि, समूचा नियामक विवरण नहि।

# बूढ़ किसानक क्षणिक अनुभूति

जे वृद्ध किसान कागचपर औंठा लगेबाक समय डे राइत छलाह, ओ निशांतक स्पष्ट समझावटक बाद खाता खोलैत छथि; पहिल बीमा-रकम पबैत हुनक आँखिमे नोर आबैत

अछि। ई घटना वित्तीय समावेशनकेँ घोषणापत्रसँ हटाकऽ एक विशिष्ट देहगत भावमे मूर्त करैत अछि। “हकपर भरोसा” ओहि क्षण अनुभवक परिणाम बनैत अछि।

तथापि खाताक वास्तविक योजना, बीमाक दावाक कारण वा भुगतानक प्रक्रिया बताओल नहि गेल। एहि अभावमे घटना साहित्यिक उदाहरण अछि, वित्तीय योजनाक कार्यप्रणालीक विश्वसनीय विवरण नहि।

## भाषा, लोकशिक्षा आ पात्रत्व

निशांत व्याख्याता छथि, मुदा किसानसभक अपन प्रश्नक वाणी अल्प अछि। बाख्तिनीय बहुस्वरताक दृष्टिसँ वित्तीय संस्थाक भाषा, निशांतक सरल भाषा आ किसानक अनुभवक तीनू स्वर स्वतंत्र रूपमे बहस करितय तँ सत्ता-भेद अधिक स्पष्ट होइत।

अध्यायक अंतिम दावा जे आब गामक “कोनो परिवार” जटिल भाषाक कारण ठगायल नहि, अत्यधिक व्यापक निष्कर्ष अछि। एकटा प्रभावशाली शिक्षण-प्रसंगसँ सम्पूर्ण गामक दीर्घकालीन शोषण समाप्त भेल, एहन प्रमाण अंशमे नहि भेटैत।

## मूल्याङ्कन

पोथीक दीर्घ समयमे भाषा स्वयं सामाजिक अधिकारक वस्तु बनल अछि। नारिकेल-पात पाठशालाक अक्षर-परम्परा बैंकक शर्त बुझबाक प्रत्यक्ष नागरिक काज धरि पहुँचैत अछि।

सीमा ई जे निशांतक सदाशयताक सहायतासँ समस्या बहुत जल्दी सुलझैत अछि। संस्था, ग्राहक आ नीति बीचक प्रतिरोध-विवाद आर विकसित होइत तँ आधुनिक सामाजिक यथार्थ अधिक बहुध्वनिपूर्ण होइत।

## अध्याय –२३ — नन्दक जन्म

### प्रमुख कथाक आगमन आ पूर्वकथाक समय-विन्यास

आरुणिक घरमे नन्दक जन्म होइत अछि। अध्यायक परिचय स्पष्ट करैत अछि जे भविष्यमे “गोहि सभक बीच जलसमाधि”क मुख्य कथामे ओकर विशेष भूमिका रहत। –१०० सँ चलि रहल पूर्व-कथाकाल आब मूल कथाक भविष्यक केन्द्रक निकट आबैत अछि। जन्म एहि ठाम वंशविस्तार मात्र नहि, कथनस्तरक अन्तर्प्रवेश अछि।

पीपरक असाधारण स्थिरता, बूढ़बाक ध्यानमग्नता आ सोहरक वातावरण एक जन्मकेँ भविष्यक कथात्मक अर्थसँ भरैत अछि। जेरार जेनेतक पूर्वसूचनाक प्रयोग बलवान अछि, मुदा नवजातक व्यक्तित्व एखन कथा-पात्रक रूपमे नहि, आगूक साक्षीक सम्भावनारूपमे उपस्थित अछि।

### पिताक आकांक्षा आ समुदायिक अपेक्षा

आरुणि बेटाकेँ बूढ़बाक कथा जानयबाक इच्छा कहैत छथि। बूढ़बा उत्तर दैत छथि जे किछु नाम पूरा कथाक भार उठबैत अछि। एहि प्रतीकमे परिवारक आशा आ समुदायिक इतिहासक महत्त्व अछि; मुदा नन्दपर जन्मक क्षणेसँ एक पैघ नैतिक जिम्मेदारी आरोपित सेहो होइत अछि।

समाजक स्मृति बचेनिहार भावी उत्तराधिकारीक शिक्षा महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा व्यक्तिक भविष्य स्वतन्त्र चुनावसँ निर्माण होइत अछि। “ओ केवल अहाँक बेटा नहि, गामक अगिला साक्षी” कथन सामूहिक अधिकार आ बच्चाक निजी स्वायत्तता बीचक तनाव खोलैत अछि।

### प्राकृतिक बिम्ब आ अद्भुतताक सीमा

हवा शान्त रहलाक बादो पीपरक पातक हल्का सरसराएब कथानकमे रहस्यमय वातावरण बनबैत अछि। त्स्वेतान तोदोरोवक अद्भुतताक बहस उपयोगी होइत अछि, मुदा एहि एक दृश्यसँ अतीन्द्रिय कारण निश्चित नहि; पात हिलबाक साधारण प्राकृतिक सम्भावना निष्कासित नहि कएल गेल अछि।

बूढ़बा एक असाधारण साक्षी छथि, मुदा “जेना” द्वारा वर्णित गाछक स्वागत कथावाचकीय मानवीकरण सेहो अछि। रूपक आ अलौकिक घटनाकेँ अलग राखलासँ उपन्यासक अर्थक सूक्ष्मता सुरक्षित रहैत अछि।

## इतिहासक भार आ शिशुक हाथ

नन्दक “नन्हा हाथ”क दृश्य दीर्घ इतिहासक विपरीत आकार बनबैत अछि: बारह सय बरखक स्मृति एक नव शिशुक सम्भावित कर्तृत्वक कात आबैत अछि। पॉल रिकरक समय-अवधारणामे अतीतक कथा आगूक जीवनक योजना रूपमे पुनर्विन्यस्त भऽ रहल अछि।

मुदा कथकक “अन्तिम पन्ना” देखबाक संकेत पाठककेँ पहिनेसँ समापन-बिन्दु अनुमान करबैत अछि। भविष्यमे नन्दक अपरिचित चुनाव एहि पूरान भविष्यवाणीकेँ बदलि सकैत अछि कि नहि, से प्रश्न कथाक अनिश्चितता बचा रखैत अछि।

## मूल्याङ्कन

सोहरक सामान्य आनन्द आ दीर्घ साक्षी-बोधक असाधारण महत्त्व बीचक विरोध अध्यायक मुख्य सौन्दर्यात्मक शक्ति अछि। एक छोट हाथमे विशाल कथा रूपकात्मक रूपसँ संगृहीत होइत अछि।

सीमा ई जे चरित्रक भावी महानताक घोषणा जन्मपर भारी पड़ैत अछि। उपन्यासीय स्वायत्तता तखन मजबूत होयत जखन नन्दक प्रश्न, असहमति आ अपन जीवनक निर्णय लेखकक पूर्वसूचनाकेँ चुनौती दैत देखाएत।

## अध्याय -२२ — बारह सयक निकटे

### कालक्रमक निर्माण आ गोल संख्याक समस्या

गोप कुमार वाचस्पति मिश्रक समयसँ बूढ़बाक वर्तमान धरि पीढ़ी आ घटना जोड़ैत छथि। हुनकर गणनाक अनुसार जलसमाधिकेँ लगभग बारह सय बरख होयबाक सम्भावना अछि। बूढ़बा स्वयं एहि परिणामपर संशयक स्थान बचबैत छथि—“जँ अहाँक हिसाब सही होइक।” ई सर्त अभिलेखीय ज्ञानक प्रमाणात्मक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

बारह सय साहित्यिक काल-चिह्न अछि; “लगभग”क आशय पाठमे निश्चित ऐतिहासिक संवत्सर, जन्मतिथि अथवा वैज्ञानिक दीर्घायु प्रमाण नहि बनैत। बूढ़बाक जीवनक असाधारण स्वरूप उपन्यासक कल्पनालोकक अंग अछि, जकरा बाहरी कालगणनाक दस्तावेजसँ पुष्ट मानब उचित नहि।

### संख्या बनाम नामक इतिहास

बूढ़बा गणनासँ बेसी नाम बाँचबाक महत्त्व बतबैत छथि। गोप कुमार सैकड़ों व्यक्तिक सूचीमे हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती आ सावित्रीक स्मरण करैत छथि। सामूहिक स्मृतिमे प्रसिद्ध साक्षीक एकल दीर्घायुकेँ केन्द्र बनाबैत हेरायल समुदाय पुनः हेराय सकैत अछि—एहि जोखिमसँ कथक स्वयं सचेत छथि।

स्मृति-अध्ययनक दृष्टिसँ संख्या याद राखब सहज अछि, मुदा जीवनक भिन्न अनुभव संग्रहीत करब कठिन। अध्यायक उपलब्धि भव्य कालमानकेँ सामान्य लोकक नामक परीक्षण-दिशा दैत अछि।

### आवृत्ति, बाढ़ि आ जीजिविषा

गोप कुमारक कालक्रममे बाढ़ि, अकाल, युद्ध आ महामारीक पुनरावृत्ति देखाओल जाइत अछि। कथावाचक एक दीर्घ युगकेँ किछु अनुच्छे दमे समेटैत अछि; जेनेतक समय-अवधि अनुसार ई विस्तृत सारकथन अछि। “टूटल, फेर ठाढ़ भेल”क आवृत्ति सामुदायिक जीजिविषाकेँ लय प्रदान करैत अछि।

मुदा बारम्बार पुनर्निर्माणक कथा स्थानीय असमानताकेँ ढाँकि सकैत अछि। कोन परिवार स्थायी रूपेँ उजड़ल, कोन नाम बचल नहि, कोन सामाजिक समूह बेसी क्षति झेललक—एहि प्रश्नक उत्तर एकटा गोल संख्या नहि दैत।

## कथाक आत्मसन्दर्भ आ भविष्यक पाठक

अन्तिम अनुच्छे दमे गोप कुमार नहि जनैत छथि जे ई “बारह सय बरख”क संख्या दोसर पीढ़ीक मुँहसँ भविष्यक कथाक शीर्षक-सन दोहराओल जाएत। ई आत्मसन्दर्भ उपन्यासक रचनात्मक संरचना खोलैत अछि: पूर्वकथा अपन आगूक पाठकीय ग्रहणक आभास दैत अछि।

ई भविष्यसूचक विधान कथानकक खुलल समयकेँ संगहि बाँधैत आ फैलाबैत अछि। पाठक परिणामक झलक पबैत अछि, मुदा कतेक नाम अखनहु अनलिखल अछि से प्रश्न बनल रहैत अछि।

## मूल्याङ्कन

बारह सयक विशाल संख्या आ एक-एक नामक व्यक्तिगत अर्थ बीचक विरोध महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि अछि। इतिहासक महिमामण्डनक विरुद्ध इतिहासक लोकसमुदाय याद राखबाक आग्रह सशक्त अछि।

सीमा ई जे कालगणनाक मूल क्रम, स्रोत-मिलान आ विसंगति जाँचक प्रक्रिया संक्षेपित अछि। शोधात्मक अभिलेखक वास्तविक कठिनाई कथाक नैतिक वाक्यमे सरलीकृत होइत अछि।

## अध्याय २१ — अनन्याक प्रश्न

### रटन्त शिक्षासँ अनुसन्धानपरक पाठशाला

नारिकेल पात पाठशालाक नव शाखामे अनन्या बच्चासभकेँ उत्तर रटेबाक बदला प्रश्न पुछब सिखबैत छथि। वृद्धसभ पहिने अचम्भित होइत छथि, तकर बाद बच्चासभक जिज्ञासाक महत्त्व स्वीकारै त छथि। एहि बदलावमे शिक्षक ज्ञानक निर्विवाद स्रोत नहि, जाँच आरम्भ करएबला मार्गदर्शक बनैत छथि।

उपन्यासक आरम्भिक शंख-रजत वाद दर्शनक विद्वानसभक मंचपर छल; २१मे वैह उदाहरण बालकक कक्षा धरि उतरैत अछि। शास्त्रक प्रश्न लोकशिक्षाक अनुभव बनब कथाक दीर्घकालिक वैचारिक यात्रा अछि।

### नन्दक प्रश्न आ विचारक स्वतन्त्रता

अनन्या शंखकेँ चानी बुझलाक कथा सुनबैत छथि। नन्द पुछैत अछि जे ओ मनुष्य जँ चानी होएबाक विषय पुछने रहितथि तँ ठगाइत नहि। एहि प्रत्यक्ष प्रश्नक दृश्य बालककेँ भविष्यक साक्षी मात्र नहि, स्वतन्त्र जिज्ञासु पात्रक रूपमे आरम्भिक आवाज दैत अछि।

तथापि प्रश्न पुछनाइ मात्र सभ भ्रमक समाधान नहि। प्रत्यक्षकेँ परखबाक साधन, उत्तरक स्रोत, साक्ष्यक विश्वसनीयता आ सामाजिक दबावक परीक्षण आवश्यक अछि। कथा नन्दक प्रश्नकेँ आदर्श प्रारम्भ बनबैत अछि, गम्भीर ज्ञानमीमांसाक पूरा परिणाम नहि।

### चारि प्रमाणक शैक्षिक रूपान्तर

अनन्या प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक प्रमाणमीमांसाकेँ सरल भाषा मे पाठशाला धरि अनैत छथि। एतय नव्य न्याय परम्पराक प्रस्तुति सैद्धान्तिक सूत्रक पुनरुक्ति नहि, आधुनिक दैनन्दिन सूचना-जाँचक उद्देश्यसँ रूपान्तर अछि। ३८मे डिजिटल गलत सूचना परखबाक बूढ़बाक उपदेशक शैक्षिक आधार एतय बालकसभक अभ्यास बनैत अछि।

मुदा शंख–रजत प्रत्यक्षभ्रम आ योजनाबद्ध ठगी अलग ज्ञानगत घटनासभ अछि। पाठककेँ स्रोतकोन, हित-स्वार्थ, संस्थागत जवाबदेही आ अनेक प्रमाण बीचक अन्तर जाँचबाक आवश्यकता अछि।

## संवादधर्मिता आ कथाक संस्थागत उत्तराधिकार

अनन्या सभ प्रश्न प्रशंसा करैत छथि, जखन पुरान रटन्त पद्धति उत्तरक एकरूपता चाहैत छल। बाख्तिनक संवादधर्मिता दृष्टिसँ प्रश्न उत्तरक नव सम्भावना उत्पन्न करैत अछि; मुदा बहुस्वरता तखन होइत अछि जखन बालकसभक भिन्न उत्तर, विरोध आ आचार्यक आत्मसमीक्षा सेहो स्वतन्त्र ठाम पाबय।

पाठमे नन्दक एक प्रश्न मुख्य दृश्य अछि; अन्य बच्चाक अलग संवादक विस्तार नहि। तथापि पाठशालाक नियम बदलल अछि, आ ई बदलाव –८२क सावित्रीक कबड्डी-संशोधन आ –६६क सुलोचनाक स्त्री-सभाक संस्थागत रचनासँ तुलना योग्य अछि।

## मूल्याङ्कन

अध्यायक सर्वोच्च उपलब्धि ज्ञानकेँ विशेषाधिकारसँ हटाकऽ बच्चाक जिज्ञासाक स्वीकृति बनबैत अछि। “के कहलक?” आ “एकर प्रमाण की?” समाजक भविष्यक साधन बनैत अछि।

सीमा ई जे नन्दक प्रश्नकेँ शीघ्र सम्पूर्ण ज्ञानक संकेतरूपेँ पढ़ल जाइत अछि। बालकक प्रयोग, गलत उत्तरसँ सीखब आ शिक्षिकाक अपन संशोधनक दृश्य आगे बढ़ितय तँ शिक्षाशास्त्रीय बहुलता अधिक ठोस होइत। अध्याय –२५ सँ –२१: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन नामक अधिकारसँ प्रमाणक अधिकार धरि

–२५मे मीरा व्यक्तिगत निजता आ अनुमति माँगैत छथि; –२४मे निशांत बैंकक भाषा बुझबाक अधिकार; –२३मे नन्द जन्मसँ सामूहिक स्मृतिक दायित्व पबैत अछि; –२२मे गोप कुमार संख्याक आकर्षणसँ हटि नामक सूक्ष्मता देखैत छथि; –२१मे अनन्या बच्चाकेँ प्रश्न पुछबाक अधिकार दैत छथि। ई क्रम गोपनीयता, व्याख्या, स्मृति, इतिहास आ ज्ञानक अधिकारक पाँच रूप बनबैत अछि।

## अतीतक स्वामित्व आ भविष्यक स्वतन्त्रता

मीरा एक व्यक्तिक छविपर ओकर नियंत्रण प्रतिपादित करैत छथि; निशांत ग्राहककेँ निर्णयक भाषा दैत छथि; नन्दपर जन्मसँ पैघ अपेक्षा रखल जाइत अछि; बूढ़बा बारह सयक संख्या सँ नाम दिस घुरबैत छथि; अनन्या नन्दकेँ स्वतन्त्र प्रश्नक अभ्यास सिखबैत छथि। एकहि समुदायमे व्यक्ति आ परम्पराक अधिकारक बीच तनाव स्थिर नहि, बदलैत सम्बन्ध अछि।

## पात्रक प्रत्यक्ष दृश्य आ उपदेशक अनुपात

−२५मे पीड़िता इजोतमे ठाढ़ होइत छथि; −२४मे बूढ़ किसान नोरसँ उत्तर दैत छथि; −२३मे नन्हा हाथ दीर्घ स्मृतिक रूपक बनैत अछि; −२२मे कालक्रमक गणना मुख्य घटना अछि; −२१मे नन्द प्रश्न पुछैत अछि। छोट प्रत्यक्ष दृश्यसभ अध्यायक वैचारिक भारकेँ जीवित करैत अछि, मुदा प्रत्येकक अन्तिम अर्थ बूढ़बाक अथवा कथावाचकक स्पष्टीकरणमे शीघ्र बन्द होएबाक प्रवृत्ति रहैत अछि।

## आलोचनात्मक सावधानी

अभिलेख आ निजता एक नहि; बैंक खाता खोलब समस्त वित्तीय न्याय नहि; नवजातक साक्षित्व ओकर अनिवार्य नियति नहि; बारह सयक संख्या सत्यापित कालगणना नहि; प्रश्न पुछब सर्वप्रकारक जालक निश्चित प्रतिरोध नहि। पाँच अध्याय सामाजिक प्रगतिक आशावादी चित्र दैत अछि, मुदा आलोचनाकेँ ओहि दावासभक प्रमाणक सीमा चिन्हब आवश्यक अछि।

## अध्याय –२० — छपाकक पहिल हिसाबे

### नन्दक साक्षित्वक आरम्भ

नन्द अभियान्त्रिकी पढ़ि पुल-निर्माण स्थलमे जाइत अछि आ देखैत अछि जे मजदूरक कम मजदूरी, असुरक्षित झोपड़ी आ सुरक्षा-अभावक संग कतेको श्रमिकक नाम दफ्तरी कागचसँ मेटा देल जाइत अछि। एक मजदूर रातिमे बिलाइत अछि; ठे के दारक लेखामे ओकर नाम कटि जाइत अछि। एहि विवरणमे “छपाक” कऽ कियो नदीमे डुबलाक निश्चित प्रत्यक्ष दृश्य नहि; श्रमिकक अचानक लोप आ अभिलेखीय मिटाव कथाक मूल घटना अछि।

–२७मे आरुणिक बान्ह-निर्माणमे सामूहिक पहरा उत्सवक अनुभव छल; –२०मे निर्माणस्थलक श्रमिक-असुरक्षा आ ठे के दारक लेखा उसी विकासक दोसर पक्ष खोलैत अछि। विकासक पूँजी आ श्रमिकक जीवित देहक दूरी एहि पुनरागमनक आलोचनात्मक महत्त्व अछि।

### नामक पुल आ भौतिक अधिकारक अन्तर

बूढ़बा नन्दकेँ “नामक आ हिसाबक बीच पुल” बनेबाक परामर्श दैत छथि। ई शीर्षकक समूचा रूपक बदलैत अछि: पाथरक पुलक संग न्यायपूर्ण नामांकनक अदृश्य पुल जरूरी अछि। नाम बचेनाइ मेटल श्रमिकक अस्तित्वक गवाही सुरक्षित रखब अछि।

मुदा नाम सुरक्षित राखब शरीरक खोज, मजदूरीक भुगतान, परिजनक सहायता अथवा श्रमिक सुरक्षा-जाँचक विकल्प नहि। श्रम-विमर्शमे अभिलेखीय बहिष्कारक आर्थिक परिणाम महत्त्वपूर्ण अछि; पाठमे ठोस कानूनी परीक्षण नहि भेटैत, तेँ गायब श्रमिकक मृत्यु अथवा अपहरणक निश्चित कारण घोषित नहि कएल जा सकैत।

### डायरीक उद्भव आ कथावाचकीय अधिकार

नन्द बूढ़बाक “गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि” वाक्य पहिल बेर अपन डायरीमे लिखैत अछि। एहि पन्नासँ भविष्यक “छपाकक हिसाब” आरम्भ होइत अछि। गोप कुमारक सामूहिक संकलनसँ अलग ई व्यक्तिक प्रत्यक्ष अनुभवक साक्षी-लेखन अछि।

आख्यानशास्त्रमे ई सम्भावित आन्तरिक दस्तावेजक जन्म अछि। किंतु वर्तमान अध्यायक मूल कथावाचक नन्दक सम्पूर्ण डायरी प्रस्तुत नहि करैत; केवल ओकर पहिल लेखाक सूचना दैत अछि। तेँ ई अध्याय दस्तावेजी उपन्यासक सम्पूर्ण स्वरूप ग्रहण कएलक कहब शीघ्रता होयत।

## ज्ञान, श्रम आ साक्षीक वर्गीय अर्थ

अनन्याक प्रश्न-पद्धति नन्दकेँ ओ देखबाक समर्थ बनबैत अछि जे आन लोक नहि देखैत छल। ई शैक्षिक परम्पराक परिणाम अछि। मुदा निर्माणस्थलमे मजदूरसभ स्वयं अपन दुःख कहबाक विस्तृत अवसर नहि पबैत; अभियन्ताक नैतिक संवेदना कथा चलबैत अछि।

फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक सन्दर्भमे हटाओल नामक संग हटाओल गवाहीक प्रश्न जुड़ैत अछि। पात्रत्वक अगिला विकास तब मजबूत होयत जखन मजदूरक अपन भाषामे पीड़ा, विरोध आ निर्णय कथाक केन्द्र धरि पहुँचत।

## मूल्याङ्कन

एक मजदूरक नाम काटल कागच आ नन्दक पहिल डायरी-पन्नाक विपरीत गति अध्यायक सशक्त रूपविधान अछि—सत्ता मेटबैत अछि, साक्षी लिखैत अछि।

मुख्य सीमा ई जे श्रमिकक लोपक परिस्थितिक प्रत्यक्ष जाँच आ परिवारक अनुभव अनुपस्थित अछि। सूक्ष्म अभिलेखीय नैतिकता आर ठोस सामाजिक अन्वेषण माँगैत अछि।

# अध्याय –१९ — सत्यव्रतक निर्णय

## पुरान नोटबुकक वर्तमान अर्थ

बैंकमे वरिष्ठ पदपर पहुँचल सत्यव्रत अपन अनेक बरखक खाताक नोंद फेर पढ़ैत छथि। अलग-अलग तारीख, रकम आ स्थानान्तरण एक पैघ आर्थिक जालक सम्भावित प्रतिरूप देखबैत अछि; राशि अन्ततः समुद्रपारक खातामे पहुँचैत देखाओल जाइत अछि। –३१मे नोटबुक केवल मौन प्रतिरोधक आरम्भ छल, एखन एकत्र पढ़ल जानकारी नव निर्णयक आधार बनैत अछि।

पॉल रिकरक विन्यास-पद्धतिसँ समयमे बिखरल सूचना नब कथात्मक सम्बन्ध प्राप्त करैत अछि। मुदा पैटर्न देखबाक अर्थ न्यायालयमे प्रमाणित अपराध नहि; सत्यव्रत एक आशङ्का सँ संगठित परीक्षण दिशि बढ़ैत छथि। मूल पाठ लेखाक वैधानिक परीक्षणक परिणाम नहि कहैत।

## मौनक बदलैत नैतिक व्याकरण

सत्यव्रत कहैत छथि जे आब चुप रहब सम्भव नहि। बूढ़बा पूर्वकथन फेर स्मरण करबैत छथि—मौन जखन अन्याय बनि जाइ, तखन साक्ष्यक संग बजब आवश्यक अछि। एहि अनुक्रममे मौन स्थायी सद्गुण वा दोष नहि, समयानुसार बदलैत निर्णय अछि।

व्यक्तिगत सुरक्षा आ सार्वजनिक दायित्वक बीचक तनाव कथामे बचल अछि। बूढ़बा ईमानदार अधिकारी आ दोसर साक्षी खोजबाक परामर्श दैत छथि; ई साहसक निजी महिमामण्डनसँ हटि सामूहिक संरक्षणक आवश्यकता स्वीकारब अछि।

## समुद्रपारक छाह आ अनिश्चित अपराध-सम्बन्ध

सत्यव्रत सोचैत छथि जे दूरक खाता-शृंखला सम्भवतः अभिनवक कहलग शीशाक मीनार धरि पहुँचैत हो। “भरिसक”क भाव निर्णायक अछि। एखन अपराधक संचालक, कम्पनीक नाम आ अन्तिम प्राप्तकर्ताक दस्तावेजी पुष्टि नहि देखाओल गेल; एतय आशङ्का पाठकक ज्ञान-सीमा बनबैत अछि।

–३२क अखबार-रिपोर्ट आ –१९क बैंक-नोंद एक दोसरा दिस संकेत करैत अछि। दू पृथक स्रोतक सम्भावित मिलान कथा कैं जाँचक रूप दैत अछि; मुदा सम्बन्धक सिद्धि एखन आगूक काज अछि।

## प्रतीक्षाक आवृत्ति आ कथात्मक विडम्बना

शीर्षक “निर्णय” कहैत अछि, मुदा अन्तमे सत्यव्रत नोटबुक सुरक्षित राखि सही अवसरक प्रतीक्षा करैत छथि। निश्चय आ सार्वजनिक उद्घाटन एखन अलग पड़ल अछि। कथाक वास्तविक घटना भीतरक नैतिक दृढ़ता अछि, बाहरी आरोपक औपचारिक प्रस्तुति नहि।

जेरार जेनेतक अवधि-विन्यासमे वर्षसभक मौन एकत्रित नोंदमे सिमटैत अछि, आ एक साँझक अन्तर्द्वन्द्व अपेक्षाकृत बड़ स्थान पबैत अछि। एहि माध्यमसँ पाठक मनुष्यक नैतिक समय आ बैंकक संस्थागत समयक असमानता बुझैत अछि।

## मूल्याङ्कन

अध्यायक शक्ति –३१क मौनकैं बिना विरोधाभास आ बिना अचानक चमत्कार एक नब नैतिक अवस्थामे अनैत अछि। चेतावनी, प्रमाण-संग्रह आ सहयोगक आवश्यकता एक शृंखला बनैत अछि।

सीमा ई जे कार्यस्थलक सहकर्मी, आन्तरिक प्रतिवाद आ पेशागत जोखिमक वास्तविक बहस कम अछि। आगामी खुलासा जेना सेहो हो, एहिठाम अन्तिम अपराध-सिद्धि नहि।

## अध्याय ११८ — अनन्या आ नन्दक भेंट

### शिक्षिका आ शिष्यक सम्बन्धक नव रूप

नन्द अभियान्त्रिकी शिक्षा पूर्ण कऽ गाम घुरैत अछि आ नारिकेल पात पाठशालाक डिजिटल रूपान्तरणमे अनन्याक संग काज करैत अछि। २१मे अनन्या नन्दकेँ प्रमाणक प्रश्न सिखबैत छलीह; १८मे वैह सीखल विद्यार्थी अभिलेखक नब तकनीकी माध्यमक सहकर्मी बनैत अछि। अध्याय शिक्षक–शिष्यक सम्बन्धकेँ सहकार्यक रूपमे पुनःव्यवस्थित करैत अछि।

एहि परिवर्तनमे पीढ़ीक उत्तराधिकार मात्र नहि, ज्ञानक परस्पर आश्रय अछि। अनन्या लोककथा, लोकगीत आ पंजीक सामग्री जनैत छथि; नन्द डिजिटल भण्डारणक विधि। दूनूक विशेषज्ञता एकदोसराकेँ पूर्ण करबाक कथन अछि, मुदा एकर स्वाभाविक सफलता तकनीकी योजना, संसाधन आ श्रमक वास्तविक विवरण बिना प्रस्तुत अछि।

### सहकार्य आ बहुस्वरताक सम्भावना

दूनूक बीच साझी मूल्यवृत्ति, स्मृति आ सत्य रक्षाक आकांक्षा देखाओल गेल अछि। बाख्तिनीय संवादधर्मिताक दृष्टिसँ वास्तविक बहुस्वरता केवल सहमति नहि; अलग निर्णय, बारीक असहमति आ उत्तरदायित्वक बाँट सेहो चाही।

अध्यायमे अनन्या आ नन्दक भिन्न तर्कक प्रत्यक्ष वाद कम अछि; बूढ़बा हुनका “प्रश्न आ निर्माण”क पूरक जोड़ी घोषित करैत छथि। एहि कारण समन्वयक सौन्दर्य अछि, मुदा व्यक्तिगतरूपसँ स्वतंत्र विचारक टकराव कम उभरैत अछि।

### डिजिटल स्मृतिक उपयोग आ सामाजिक अनुमति

गोप कुमारक पुरान संकलन डिजिटल रूपमे सुरक्षित राखबाक योजना ३०क दस्तावेजी परियोजनाक अग्रगति अछि। पुरान पन्ना, गीत आ नामक संरक्षणक उत्साह २५क मीराक निजता-अधिकारक प्रश्नसँ सेहो सम्बन्धित अछि। ककर निजी नाम सार्वजनिक होयत, वृद्ध

गबैयाक ध्वनिप्रसारक अनुमति के ना लेब, एहन भेद एहि अध्यायमे नब संस्थाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

मूल पाठ दूनूक सहमतिक कथा कहैत अछि, मुदा संग्रहित व्यक्तिसभक अनुमति विस्तारसँ नहि कहैत। ई सम्भावित नैतिक समस्या आलोचनात्मक तर्क अछि; एहि अंशसँ वास्तविक उल्लङ्घन घटल घोषित करब नहि।

## बूढ़बाक अन्तिम अध्यायक पूर्वसूचना

बूढ़बा एक बेर फेर अन्तिम कठिन अध्यायक निकट होएबाक अनुभूति कहैत छथि। जोड़ीकेँ “दू कान्ह”क सहारे भार वहबाक उपमा दैत छथि। पूर्वसूचना भविष्यक घटनाकेँ पाठकक प्रतीक्षा बनबैत अछि; नन्द-अनन्याक सम्बन्ध समग्र कथाक समापन-संरचनासँ बाँधल जाइत अछि।

मुदा कथावाचक आगूक जीवन-संबन्धक संकेत सेहो दैत अछि। एहन वक्तव्य चरित्रक निज अभिलाषा सँ पूर्वे एक अपेक्षित दिशा निर्मित करैत अछि; व्यक्ति-स्वायत्तता आ आख्यानक नियोजनक संघर्ष आलोचनाक प्रश्न अछि।

## मूल्याङ्कन

अध्यायक प्रभाव बालशिक्षा सँ समानधर्मी सहकार्य धरि सम्बन्धक विकासमे अछि। प्रश्न आ तकनीकक रूपक उपन्यासक परम्परा–आधुनिकता सम्बन्धकेँ नब बिन्दु दैत अछि।

सीमा ई जे साझी योजना तुरन्त समरसता पाबैत अछि। असहमति, स्रोतक गोपनीयता आ तकनीकी विफलताक दृश्य विकसित होइत तँ रचनाक सामाजिक वैविध्य बेसी स्पष्ट होइत।

## अध्याय –१७ — शीशाक मीनारक जाल

## त्रिमुखी शोषणक संगठित कथाचित्र

समाचारमे हांगकांगसँ सम्बन्धित एक विशाल जालक चर्चा अछि, जाहिमे नौकरीक प्रलोभन, निवेशक धोखा आ मनुष्यक जबरन श्रम एक साथ जोड़ा गेल कहल जाइत अछि। स्थानीय अनुभव –३६क बनावटी कम्पनी, –३५क श्रम-तस्करी आ –३२क दूरस्थ मीनारक छवि एहि अध्यायमे एक सम्भावित संयुक्त संरचना बनबैत अछि।

नव रूपक “तीन गोहि” देह, पाइ आ नामक भिन्न क्षति समेटैत अछि। मुदा समाचारक कथन, पात्रक आकलन आ प्रमाणित आपराधिक निर्णय अलग स्तर अछि। मूल प्रकरण जालक संचालनक स्वतन्त्र अभिलेख नहि, दूर दूर सँ आएल समाचार आ आशङ्का दैत अछि।

## सम्पूर्ण दृश्य न भेटबाक कथनशास्त्र

कथावाचक कहैत अछि जे जाल एहन अछि जाहिमे एक व्यक्ति पूरा रूप नहि देखि सकैत। ई कथन उपन्यासक दृष्टिबिन्दु कैं सीमित करैत अछि: एक युवक नौकरीक वादा देखैत अछि, आन निवेशक दुगुना पैसाक चमक, दोसर श्रमिक बन्धन। एहि विभाजनसँ चरित्रकैं टुकड़ा-टुकड़ा ज्ञान भेटैत अछि।

अतएव अध्यायक बहुविषयकता सत्यक बहुस्वर स्वयमेव नहि। अलग पीड़ितसभक प्रत्यक्ष वाणी, अलग आर्थिक प्रेरणा आ अपराधीपक्षक आन्तरिक तर्क नहि भेटैत। जालक एकत्व मुख्यत: कथावाचकक व्याख्या अछि, विस्तृत बहु-दृष्टिकोण कथन नहि।

## शीशाक मीनार: प्रकाश आ अन्हार

–३२मे मीनार अखबारक फोटो छल; एतय वैह छवि कथाक व्यापक शोषणक प्रतिमा होइत अछि। पारदर्शी शीशाक बाहरी चमक आ भीतरक अपारदर्शी नियन्त्रणक विरोध –१००क शंख-रजत प्रत्यक्षभ्रमक दूरस्थ प्रतिध्वनि अछि।

मुदा जँ पाठक मीनारक नाममात्रसँ कोनो निश्चित वास्तविक व्यक्तिक अपराध सिद्ध बुझय तँ साहित्यिक रूपक पर असंगत तथ्यात्मक भार पड़त। नामित पात्रक कथा-भूमिका उपन्यासक आन्तरिक कथन अछि; बाहरी तथ्य-जाँचक समानार्थी नहि।

## बूढ़बाक ज्ञानक सीमा

बूढ़बा कहैत छथि जे जाल भरिसक पहिनहि गाम धरि पहुँचि चुकल, उज्ज्वलक भविष्यसूचक स्वप्न आ बटुकनाथक पतनक रूपमे। परन्तु कोन नाम सीधे जालसँ स्पर्श पाओत, से हुनका नहि बुझल। भविष्यसूचना आ अज्ञान फेर सँ संग-संग अबैत अछि।

अनन्या नव सिरे चेतावनीक काज करैत छथि, मुदा चेतना जालक समग्र संस्थागत उन्मूलन नहि। पाठमे आर्थिक अनुसन्धान, श्रमिक-मुक्ति वा अपराधी-ग्रहणक अन्तिम परिणाम नहि भेटैत। एहि खुलल अवस्थाकेँ बचाएब रचनात्मक आ आलोचनात्मक दूनू दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि।

## मूल्याङ्कन

एकहि शोषक रूपकमे अलग अध्यायक घटनासभकेँ जोडनाइ दीर्घ उपन्यासक संरचनात्मक उपलब्धि अछि। पाठक स्थानीय कहानीक वैश्विक विस्तार अनुभव करैत अछि।

मुख्य सीमा सुनल समाचारक पुनरावृत्ति अछि; जालक कार्य-विधि आ प्रत्यक्ष पीड़ित-दृष्टि कम दृश्य बनैत अछि। अत्यधिक समेकित शत्रु-छवि सामाजिक जटिलताक भिन्न कारणसभ ढाँकि सकैत अछि।

## अध्याय –१६ — बटुकनाथक अंतिम मोड़

## शीर्षकक विडम्बना आ कथाक वास्तविक मोड़

लोकगीतमे बटुकनाथ अन्तमे “अपन नाम दिस घुरल”क आशावादी संकेत अछि। मुदा मुख्य घटनामे उलटा चित्र भेटैत अछि: प्रतिष्ठित वकील बड़का ठगी-मामलाक पक्षमे गवाह थकबैत, तारीख बढ़बैत आ प्रमाण उलझबैत छथि। अध्यायक परिचय सेहो कहैत अछि जे ओ अपन कौशल अन्हार शक्तिक सेवामे समर्पित करैत छथि। तेँ “अन्तिम मोड़” वर्तमान घटनामे नैतिक पुनरुत्थान नहि, पतनक तीव्रता रूपमे स्पष्ट देखाइत अछि।

एहि शीर्षक, लोकगीत आ गद्यक भेदकेँ समीक्षामे मेटा देब अनुचित। पाठक आशावादी लोकधुन सुनैत अछि, मुदा गद्य ओकरा अभी तक पुष्ट नहि करैत। ई विडम्बना जानि-बुझि रचल गेल अछि कि अनभिप्रेत असंगति, से लेखकक बाहरी पुष्टि बिना निश्चित कहि नहि सकैत।

## समयक दुरुपयोग आ न्यायिक हिंसा

बटुकनाथक पक्ष-रक्षा विधिक विशेषज्ञताक प्रदर्शन अछि, मुदा गवाहक थकान आ देरीक माध्यमसँ पीड़ितक न्याय अप्राप्य बनबैत अछि। –६८क अदालतक विलम्ब एक संस्थागत समस्या छल; –३३मे ओ व्यक्तिगत चरित्रक पेशागत व्यवहार बनल; –१६मे जानि-बुझि न्याय टारबाक कथित रणनीति रूपमे उभरैत अछि।

रोब निक्सनक “धीमी हिंसा” रूपक सामाजिक दीर्घकालीन क्षतिक तुलनात्मक बोध दे सकैत अछि, मुदा न्यायिक देरी आ पर्यावरणीय हिंसाकेँ शब्दशः एक सिद्धान्तक समान घटना नहि मानब। कथा पीड़ितक थाकबाक समयपर बल दैत अछि।

## साक्षीक धर्म आ निष्पक्ष स्मरण

नन्द बटुकनाथक कथा “बिनु घृणाक, बिनु क्षमाक” दर्ज करैत अछि। बूढ़बाक कथनानुसार नाम बचेनाइ दोष नुकायब नहि; दोषी व्यक्ति सेहो सत्य रूपमे अभिलेखक

विषय अछि। एहि बिन्दुपर अध्याय स्मृतिक नैतिकता बदलैत अछि: संरक्षणक अर्थ प्रशस्ति नहि, कठिन तथ्यक लेखा होइत अछि।

मुदा एतय “सत्य रूपमे” कहबाक आधार स्वयं समाचार आ सामुदायिक स्मृति अछि। आरोप, न्यायिक सिद्धि आ नैतिक मूल्याङ्कनक भेद सदिखन बचाउ; अज्ञात ठगी-मामलाक वास्तविक विवरण पाठमे नहि भेटैत। स्मृति-आलेखक प्रमाण-स्रोत स्पष्ट होयबाक आवश्यकता अछि।

## व्यवस्था, प्रलोभन आ चुनाव

बूढ़बाक व्याख्यामे व्यवस्था आ व्यक्तिक चुनाव दूनू बटुकनाथक चरित्र बनबैत अछि। ई कठोर नियतिवादकेँ अस्वीकार करबाक सम्भावना अछि। एक व्यक्ति पुरान नीक चरित्रक स्मृति राखितो हानिकारक व्यवहार चुनि सकैत अछि।

एहि अन्तिम अनुच्छे दमे नन्दक लेखकीय दूरी उल्लेखनीय अछि—ओ न बटुकनाथक बिना प्रमाण क्षमा घोषित करैत अछि, न निजी घृणासँ ओकर पुरान सद्गुण मिटबैत। व्यक्तिक जीवनी आ नैतिक निर्णयक जटिल सम्बन्ध ई अछि।

## अध्यायक उपलब्धि आ सीमा

पूर्वकथाक कथामे “अन्तिम मोड़” शीर्षकक आशा आ गद्यक घनीभूत पतनक विरोध सशक्त आलोचनात्मक बिन्दु अछि; नन्दक अभिलेखक सिद्धान्त उपन्यासक सम्पादकीय अन्तरात्मा स्पष्ट करैत अछि।

मुदा ठगी-मामलाक पीड़ितसभक प्रत्यक्ष दृश्य, बटुकनाथक आत्मसंवाद आ विधिक बहस अल्प अछि। चरित्रकेँ जटिल आपराधिक व्यवस्था मे घुसेबाक बदला सूत्रात्मक पतन-चित्र बढ़ि जाइत अछि। अध्याय −२० सँ −१६: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन कथाक पाँच नव द्वार

−२०मे मजदूरक बिलायल नाम नन्दक डायरी खोलैत अछि; −१९मे बैंकक पुरान नोंद वर्तमान निर्णयक आधार बनैत अछि; −१८मे शिक्षिका आ अभियन्ताक साझा अभिलेख-योजना; −१७मे दूरक जालक एकत्र आशङ्का; −१६मे बटुकनाथक नैतिक पतनक

अभिलेख। अलग-अलग पन्ना, बैंकक नोटबुक, डिजिटल संकलन, अखबार आ जीवनी—साक्ष्यक पाँच माध्यम कथाक समापन दिस एकत्र होइत अछि।

## पूर्वसूचना आ सम्पन्न घटना

नन्दक डायरी आरम्भ भेल, मुदा मजदूरक लोप नहि सुलझल; सत्यव्रत भीतर निर्णय लेलक, मुदा सार्वजनिक आरोप नहि; नन्द–अनन्या संग काज शुरू के लनि, मुदा योजना पूरा नहि; मीनारक जाल आशङ्काक रूपमे समीप अछि, मुदा अंतिम परीक्षण नहि; बटुकनाथक पतन गाढ़ होइत अछि, उद्धार नहि देखाओल गेल। ई भेद आलोचनामे वास्तविक घटना आ भविष्यक संकेत अलग राखबाक आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि।

## नैतिक संरक्षणक अपूर्णता

नामक लेखा श्रमिकक देहक सुरक्षा नहि; बैंकक नोंद अपराध-सिद्धि नहि; अभिलेख-संग्रह निजताक अनुमतिक विकल्प नहि; चेतावनी अपराधिक जालक उन्मूलन नहि; बटुकनाथक पुरान नाम बचब ओकर दोष मेटब नहि। पाँचू अध्याय एकहि “नाम बचाउ” सूत्रकेँ अलग कठिन व्यावहारिक कसौटीपर रखैत अछि।

## बाख्तिनीय बहुस्वरताक आरम्भ आ सीमा

नन्द, सत्यव्रत, अनन्या, दूरस्थ पीड़ित आ बटुकनाथक अलग सामाजिक स्थान अछि, मुदा अनेक बेर हुनकर कथाक अर्थ बूढ़बाक एक व्यापक व्याख्यात्मक स्वरमे समाहित होइत अछि। स्वतन्त्र पात्रसंवाद, मजदूरक अपन गवाही, बैंकक सहकर्मीक असहमति आ बटुकनाथक आत्मयुक्ति विकसित होएत तँ दीर्घ उपन्यासमे सामाजिक वाणीसभक वास्तविक परस्पर संघर्ष प्रबल होएत।

## अध्याय –१५ — चन्द्रपालक खात ।

## ऋणक विवशता आ आर्थिक जालक सूक्ष्म कड़ी

अध्यायमे चन्द्रपाल बत्राक सट्टासँ उपजल भारी ऋण, ओकर हताशा आ अपन बैंक-खाता दोसराक उपयोग लेल देबाक निर्णय ठोस घटनाक रूपमे आएल अछि। ओकरा “कमीशनक काज” कहल जाइत अछि; खातामे आयल पाइ आगू पठेबाक बदला ओ किछु हिस्सा राखैत अछि। एहि विवरणमे चन्द्रपाल निश्चेष्ट वस्तु नहि: ओ जोखिमक सबटा स्वरूप नहि बुझैत अछि, मुदा ऋणसँ मुक्त होएबाक लोभमे लेनदेन स्वीकार करैत अछि। अज्ञान, विवशता आ प्राप्त लाभक बीच ई त्रिकोण उपन्यासकेँ एकरेखीय खलनायक-चित्रणसँ कनेक दूर लऽ जाइत अछि।

सामाजिक आलोचनामे ई स्थान महत्त्वपूर्ण अछि। ऋणक संकट मनुष्यक विकल्प संकुचित करैत अछि, मुदा ओकर सभ निर्णय अनिवार्य नहि बना दैत अछि। पाठ चन्द्रपालक पूरा बैंक-विवरण, स्पष्ट चेतावनी वा स्वतन्त्र जाँच प्रस्तुत नहि करैत; तेँ ओकर अपराधक विशिष्ट कानूनी श्रेणी निर्धारित करब आलोचनाक सीमा सँ बाहर अछि। साहित्यिक तथ्य एतबा अछि जे ओ अपन खातेकेँ एक शोषणकारी प्रवाहक माध्यम बनबैत अछि आ अन्य पीड़ितक पाइ ओहि रस्तासँ गुजरै त देखाओल गेल अछि।

## विभक्त ज्ञान आ आख्यान-दृष्टिक अनुशासन

उज्ज्वल, बटुकनाथ आ चन्द्रपाल एक-दोसराक समग्र भूमिका नहि जनैत छथि। बूढ़बा सत्यव्रतकेँ ई अज्ञानक शृंखला बुझबैत छथि आ स्वयं दूरसँ ओकर “एक धागा” देखबाक बात करैत छथि। जेरार जेनेतक दृष्टिबिन्दु-विवेचनमे पात्रक अल्प-ज्ञान आ व्यापक कथनक तुलनासँ कथात्मक तनाव उपजैत अछि। कथावाचक पाठककेँ विभिन्न नामक परस्पर सम्बन्ध पहिनेसँ जनबैत अछि, मुदा अपराधी जालक प्रत्यक्ष संरचना अखनहु पूर्ण दृश्य नहि बनैत।

एतय सर्वज्ञता आ सर्वप्रमाणिकता अलग राखब जरूरी अछि। बूढ़बाक स्मृति सुदीर्घ अछि, मुदा ओ चन्द्रपालक भावी निर्णय पहिनेसँ नहि जनैत छलाह। ई स्वीकारोक्ति रहस्यक जादुई

समाधान रोकैत अछि। तथापि कथावाचक जखन अलग घटनाकेँ तुरन्त एकहि जालक अङ्ग घोषित करैत अछि, तखन स्वायत्त साक्षीसभक पारस्परिक परीक्षण लेल कम अवकाश बचैत अछि। पाठककेँ सम्बन्धक अनुमान आ सिद्ध प्रमाणक अन्तर स्वयं बनाएब पड़ैत अछि।

## नोटबुक: निज स्मृति सँ सार्वजनिक साक्ष्य दिस

सत्यव्रत अपन पुरान नोटबुकमे चन्द्रपालक खाता-लेनदेन देखैत छथि। एहि प्रक्रिया सँ −३१ आ −१९क मौन-संग्रह फेर सक्रिय होइत अछि: जे पन्नासभ पहिने भविष्यक उपयोग लेल सुरक्षित छल, ओ आब अनेक कथारेखाक जोड़ बिन्दु बनैत अछि। पॉल रिकरक आख्यान-विन्यासक दृष्टिसँ बिखरल तारीख आ रकम “घटना” तखन बनैत अछि जखन कियो हुनका पारस्परिक क्रममे पढ़ैत अछि। अभिलेख निरा निष्प्राण वस्तु नहि; ओकर व्याख्याकारक जिम्मेदारी सेहो अछि।

मुदा सत्यव्रतक नोटबुक पाठमे पूरा प्रस्तुत नहि अछि। कतेक रकम, कोन तारीख, कोन प्राप्तकर्ता आ खाताक सत्यापन-विधि—ई सभ पाठककेँ नहि देखाओल गेल। एतय साहित्यिक रूपकक सफलता आ अन्वेषणक दृश्यात्मक न्यूनता एके संग देखाइत अछि। आलोचक नोटबुककेँ जाँचक सम्भावित आधार मानि सकैत अछि, अन्तिम न्यायिक निर्णय नहि।

## लोकगीतक नैतिक आग्रह आ व्याख्यात्मक दूरी

आरम्भिक गीत कहैत अछि जे बिनु बुझने हस्ताक्षर कएनिहार जालमे फँ सैत अछि। ई गीत एकटा सतर्कता-सूत्र अछि; मुख्य गद्य ओकर भीतर मानवीय ऋण-संकट आ आंशिक जानकारीक कारण अधिक जटिल बनबैत अछि। लोकगीतक नैतिक स्पष्टता आ कथाक विवश निर्णयक बीचक दूरी पाठककेँ सोचबाक अवसर दैत अछि। गीतक दोहराव तात्कालिक लेनदेनकेँ सामुदायिक सीखक दीर्घ समयमे बदलैत अछि।

एहि अध्यायमे चन्द्रपालक अपन दीर्घ आत्मसंवाद वा ठगल पीड़ितक प्रत्यक्ष स्वर नहि भेटैत। अधिकांश जानकारी समाचार, सत्यव्रतक नोटबुक आ बूढ़बाक व्याख्यासँ आबैत

अछि। बाख्तिनक बहुस्वरताक कठोर कसौटीपर विचार-विरोधक स्वतन्त्र वाणी विकसित भेल नहि अछि; ई अध्याय एक मुख्य नैतिक दिशामे संचालित अछि।

## समग्र आलोचनात्मक निर्णय

खाताक साधारण दफ्तरी साधनकेँ दूरस्थ शोषणक जालसँ जोड़ब एहि अध्यायक सशक्त उपलब्धि अछि। “नाम” आ “खाता”क अर्थ-सम्बन्ध उपन्यासक स्मृति-विमर्शकेँ आर्थिक जीवन धरि पहुँचबैत अछि। बूढ़बाक अपूर्ण पूर्वज्ञान कथात्मक संयमक विशेष बिन्दु अछि।

मूल सीमा ई जे चन्द्रपालक मनक जटिलता आ खाताक स्पष्ट प्रमाण-विवरण कथित घटनाक अपेक्षा अल्प विकसित अछि। पात्रक नैतिक उत्तरदायित्व पर विचार सम्भव अछि, मुदा पीड़ितक आवाज बिनु एकरा समाप्त निर्णय बनायब उचित नहि।

# अध्याय -१४ — पुलक निर्माण

## विकासक वस्तु आ श्रमिकक अदृश्य देह

नन्द कमला-बलानपर बनैत पुलमे मुख्य अभियन्ताक सहायक नियुक्त होइत अछि। पुल गाम आ नगरक बीच यात्रा घटेबाक आशा अछि; परिवारक आरुणिक-सम्बद्ध सपना सेहो एहिमे जुड़ल अछि। एतेक सकारात्मक आरम्भक तुरन्त बाद नन्द बिनु पर्याप्त सुरक्षाक ऊँचाइपर काज करैत मजदूर, ठे के दारक उपेक्षा आ हाजिरीमे मनुष्यकेँ संख्यामात्र बनएबाक प्रवृत्ति देखैत अछि। एहि विपरीत संयोजनसँ लेखक विकासकेँ न एकदम अस्वीकार करैत छथि, न ओकर महिमा निर्विवाद मानैत छथि।

श्रम-आलोचनाक दृष्टिसँ पुलक लाभ समाजमे समान रूपसँ नहि बँटैत। जे संरचना यात्राक अवधि घटबैत अछि, ओकर निर्माणमे जुटल श्रमिकक दिन, घाम आ जोखिम सार्वजनिक उत्सवक पछिला भागमे रहि सकैत अछि। नन्दक मजदूरक नाम अपन डायरीमे लिखब एहि अदृश्यताक प्रतिवाद अछि। मुदा कागजी नामांकन सुरक्षा-उपकरण, समयपर भुगतान आ जोखिमक संस्थागत नियन्त्रणक पर्याय नहि; अध्याय एही दूरीक संकेत करैत अछि।

## स्थान-विन्यास आ द्विमुखी रूपक

पुल दू कात जोड़ैत अछि, मुदा बूढ़बा चेतबैत छथि जे जे बाट अवसर अनैत अछि, वैह बाट नव खतरा सेहो आनि सकैत अछि। ई दोहरा रूपक स्थानकेँ मूल्य-निरपेक्ष मानबाक विरुद्ध अछि। आधुनिक गतिशीलता व्यापार, शिक्षा आ आरोग्यक पहुँच देत; मुदा दलाल, अनचिन्हार ठे के दार आ असमान श्रम-सम्बन्ध सेहो ओही पथसँ प्रवेश कऽ सकैत अछि। एतय पुल केवल पृष्ठभूमि नहि, कथानकमे सम्बन्धसभक सम्भावित परिवर्तक अछि।

फ्रे दरिक जेमसनक सामाजिक समग्रताक प्रश्न एतय सावधानीसँ उठैत अछि: स्थानीय पुलक निर्माणदृश्य दूरस्थ आर्थिक सम्बन्धक नक्शा सँ जुड़बाक संकेत दैत अछि। मुदा पाठमे अनचिन्हार लोकक परिचय नहि देल गेल अछि; हुनका निश्चित आपराधिक जालक

सदस्य घोषित करब अनुचित होयत। उद्घाटनक प्रभाव संकेतपर आधारित अछि, सिद्ध सम्बन्धपर नहि।

## काल-क्रम, प्रत्याशा आ पुनरावृत्त स्मृति

–२७क आरुणिक-निर्माणक सपना आ –२०क श्रमिक लोपक प्रसंग एहि अध्यायमे फेर स्मरण होइत अछि। कथावाचक पुलकेँ आगूक “अन्तिम अध्याय”क रं गमंच कहैत भविष्यदिशि इशारा करैत अछि। जेनेतक परिभाषामे ई स्पष्ट भविष्यसूचना कथात्मक प्रतीक्षा उत्पन्न करैत अछि; पुरान श्रमिक-कथा स्मृतिगत प्रत्यावर्तनक काज करैत अछि। तीन काल—पूर्वक आशा, वर्तमानक सुरक्षा-संकट आ भावीक अनिष्ट—एकहि निर्माणस्थलपर टकराइत अछि।

ई काल-व्यवस्थामे जोखिम सेहो अछि। जखन कथावाचक आगूक घटनाक महत्त्व अनेक बेर घोषित करैत अछि, तखन पाठकक खोज स्वतन्त्र अनुमानसँ कम आ पूर्वनिश्चित नियति दिस अधिक चलैत अछि। नन्दक वर्तमान निर्णयक व्यावहारिक जटिलता, जकाँ ठे के दारसँ औपचारिक वाद आ काज रोकबाक अधिकार, अधिक दृश्य बनैत तँ प्रत्याशा आ वर्तमानक संघर्ष दुहूँ सबल होइत।

## नन्दक नैतिक रूपान्तरण आ कथनगत सीमा

नन्द बूढ़बासँ गप कएने पाछाँ मजदूरक सुरक्षा लेल अतिरिक्त सावधानी अपनबैत अछि, हुनकर हाल पुछैत अछि आ ठे के दारसँ बहस करैत अछि। ई घटनासभ ओकरा मात्र उपदेश सुननिहार पात्रसँ सीमित व्यावहारिक हस्तक्षेपक पात्र बनबैत अछि। शैक्षिक प्रश्न-पद्धति जे –२१ सँ विकसित भेल, आब श्रमिकक सम्बन्धमे परीक्षा पबैत अछि।

तथापि कथावाचकक अधिकाँश ध्यान नन्दक अनुभवपर अछि। मजदूरक अपन परिवार, मजदूरीक सौदा, ओहि ठे के दारसँ प्रतिरोध आ सुरक्षा-सङ् गठनक आवाज पर्याप्त स्थान नहि पबैत। केवल नन्दक सजगता श्रमिक स्वतन्त्रताक पूरा प्रतिनिधित्व नहि करैत; स्तरीकृत दृष्टिबिन्दु बनल रहैत अछि।

## साहित्यिक उपलब्धि आ अपूरणीय प्रश्न

भौतिक पुल आ नामक पुलक समानान्तर रूपक पूर्वक स्मृति-परम्पराकेँ आधुनिक विकासक केन्द्रमे अनैत अछि। गाम-नगरक दूरी कम होइत अछि, मुदा न्याय आ सुरक्षा बीचक दूरी एखनु पाटब शेष अछि। ई विरोध अध्यायकेँ साधारण निर्माण-वर्णनसँ अलग करैत अछि।

तकनीकी निर्माणक वास्तविक प्रक्रिया, सुरक्षा-विवादक प्रशासनिक रूप आ ठे के दारक दृष्टि अल्प विकसित अछि। आलोचनामे एकरा नन्दक पूर्ण सफलता नहि, बल्कि चेतना सँ उत्तरदायित्व दिस चलल आरम्भिक डे ग मानब अधिक पाठसंगत अछि।

## अध्याय –१३ — गोप कुमारक संकलन

# बिखरल अभिलेखक एकत्रीकरण आ इतिहास बनबाक शर्त

वृद्ध गोप कुमार यादवानन्दक छाया-पंजी, हरिपति कविक पोथी, गंगाधरक छापाखाना आ नव डिजिटल अभिलेखकेँ एक ठाम जोड़बाक काज करैत छथि। ई सूची शताब्दीक अलग-अलग लिखित माध्यमकेँ एक धागामे बन्हैत अछि। –१००क शंख-रजतक भ्रम, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम मृत्यु आ समकालीन चन्द्रपालक खाता—सभ कथा एक मर्मस्थलपर उपस्थित होइत अछि। संकलनक ई दृश्य उपन्यासक अपन दीर्घ संरचनापर आत्मचिन्तन अछि।

समकालीन अभिलेख-विमर्शमे संग्रहकर्ता किछु सामग्री चुनैत छथि, ओकर क्रम निर्धारित करैत छथि आ किछु सम्भव कथा बाहर छोड़ि दैत छथि। तेँ “सम्पूर्ण” संकलनक दावा साहित्यिक आकांक्षा अछि, स्वतः प्रमाणित ऐतिहासिक पूर्णता नहि। पाठ संकलनक सभ पन्ना, बाँचल आवाज आ छू टल जानकारीक सूची नहि दैत। गोप कुमारक श्रम महत्वपूर्ण अछि, मुदा इतिहासक पुनर्रचना निरपेक्ष पात्ररहित प्रक्रिया नहि।

# अन्तर्पाठीयता: शंखसँ खाता धरि अर्थक स्थानान्तरण

शंखकेँ चानी बुझबाक आरम्भिक दर्शन एतय आधुनिक आर्थिक खाताक मायाजालक संग एकत्र रखल गेल अछि। ई जोड़ी स्वतः दार्शनिक समरूपता सिद्ध नहि करैत; एहिसँ एक तुलनात्मक प्रश्न उठैत अछि—प्रत्यक्ष वस्तु आ ओहि वस्तुक नाम अथवा प्रतिनिधित्वक बीच दूरी कोन-कोन प्रकारेँ विश्वास उत्पन्न करैत अछि? प्रारम्भक भ्रमक उदाहरण जखन समकालीन ठगीक प्रसंगक निकट अबैत अछि तखन पुरान रूपक नब सामाजिक अर्थ प्राप्त करैत अछि।

अन्तर्पाठीयता एतय ग्रन्थसभक नामक उल्लेखमात्र नहि: अलग युगक घटनाकेँ सँग पढ़बाक क्रिया अछि। मुदा प्रत्येक ऐतिहासिक प्रसंगक भिन्नता सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। दार्शनिक दृष्टान्त आ बैंकिंग जाल एक प्रकारक कारणसँ नहि चलैत; दुनूकेँ “एक भ्रम” कहि देब सामाजिक जिम्मेदारीक अन्तर ढाँकि देत।

## संकलकक दैहिक समय आ कथाक दीर्घ समय

गोप कुमारक काँपैत हाथ, कमजोर आँखि आ अन्तिम समयक निकटता ग्रन्थक बारह सय बरखक समयकेँ एक मानवीय जीवनक सीमामे केन्द्रित करैत अछि। रिकरक समय-विन्यासक दृष्टिसँ ई संकलन अनुभवक कालक्रमकेँ कथात्मक रूप देबाक प्रयत्न अछि: दिनांकित कागज अलग-अलग पड़ल रहने अर्थ अस्पष्ट रहत, मुदा परस्पर क्रममे ओ उत्तराधिकारक रेखा बनेत। वृद्ध शरीरक क्षय आ संकलित स्मृतिक सम्भावित दीर्घजीविता मार्मिक विरोध बनैत अछि।

कथावाचक स्पष्ट करैत अछि जे अन्तिम अध्याय एखनहु नहि आयल। एहि शून्य पन्नाक कारण संकलन बन्द इतिहास नहि, चलैत वर्तमान अछि। कथानकक अन्तकेँ पहिनेसँ भोगबाक चाहना आ नव घटनाक लेल स्थान छोड़बाक इच्छा एकसंग उपस्थित अछि।

## साक्षीक अधिकार, उत्तराधिकारीक जोखिम

बूढ़बा गोप कुमारकेँ बतबैत छथि जे नव कठिन अध्यायमे नन्दकेँ अतीतक संकलनक आवश्यकता पड़त। एहि संवादमे अभिलेख निजी संग्रहसँ सामुदायिक उपयोगक साधन बनैत अछि। ज्ञानक उत्तराधिकार व्यक्तिक संरक्षण मात्र नहि, अगिला साक्षीकेँ दायित्व देबाक विधि अछि।

मुदा कागज संग्रहित कएनिहार गोप कुमारक दृष्टिक बाहर रहेनिहार लोकसभक स्वीकृति आ निजता प्रश्नस्वरूप बचैत अछि। मीराक निजतापर पहिनुक अध्याय –२५ एहि संकलनक नैतिक समीक्षा लेल आवश्यक प्रतिवाद प्रदान करैत अछि। उपन्यास एतय एहना प्रतिवाद विस्तारसँ नहि देखबैत; आलोचककेँ दूनू पाठसँ प्रश्न उठेबाक चाही, प्रमाण बिनु वास्तविक निजता-उल्लङ्घन घोषित नहि करबाक।

## आख्यानक आत्मचिन्तन आ सीमा

कथाक भीतर कथाक सूची बनेनाइ आत्मसन्दर्भी आख्यान-शिल्पक सुचिन्तित प्रयोग अछि। पाठक जे अनेको अध्याय अलग-अलग पढ़लनि, गोप कुमार ओहि सभकेँ एक ठाम देखैत छथि; ई संगति दीर्घ उपन्यासकेँ दार्शनिक आ सामाजिक एकतान प्रदान करैत अछि।

कठिनाई ई जे बारम्बार भविष्यक अनिष्टक घोषणा प्रत्यक्ष कार्यवाहीपर भारी पड़ैत अछि। गोप कुमारक संकलन-विधि, सामग्रीक परख आ असहमतिक आवाज विस्तृत होइत तँ अभिलेखीय जटिलता अधिक विश्वसनीय बनैत।

## अध्याय –१२ — चन्ना गाछीक कँ पकँ पी

### वातावरणसँ बनेल संकट-पूर्वाभास

शान्त हवाक बीच समूची चन्ना गाछीक गाछसभ एकसंग काँपैत अछि। ई असङ् गति अध्यायक घटनात्मक केन्द्र अछि: प्राकृतिक स्पष्टीकरण पाठककेँ नहि देल गेल, मुदा दृश्य सामूहिक भयसँ जुड़ैत अछि। गामक लोक पीपर लग जुटैत छथि; नन्द आ अनन्या प्रश्न करैत छथि; बूढ़बा सेहो घटना निश्चित रूपेँ की अछि, से जनबाक दावा नहि करैत छथि। एहि अनिश्चितता सँ घटना एके बेर अद्भुत आ सामाजिक बनि जाइत अछि।

त्स्वेतान तोदोरोवक अद्भुतक संकल्पनाक प्रयोग एतय सावधानी चाही। दृश्य वास्तविक प्रकृतिक असाधारण घटना अछि कि बूढ़बाक स्मृतिमय अस्तित्वक प्रकट प्रभाव—मूल कथाजगतमे अलौकिक सम्भावना पहिनेसँ स्वीकारल गेल अछि। तेँ ई अनिवार्यतः दीर्घकालीन पाठकीय दुविधा नहि; अधिक ठीक ई जे कथा नव अनिष्टक स्रोतक प्रश्न खुला राखैत अछि।

### गाछक देहमे स्मृतिक निवास

बूढ़बाक कथन अछि जे जलसमाधिक बाद हुनक स्मृति पीपर मात्र नहि, पूरी गाछीक जड़ि-जड़िमे बसल अछि। एहि कथात्मक कल्पनामे वनस्पति सम्पत्ति वा दृश्यसज्जा नहि रहि, स्मृतिक जीवित आधार बनैत अछि। पर्यावरणीय आलोचनाक दृष्टिसँ मनुष्यक इतिहास माटि आ गाछक शरीरक संग अविच्छिन्न होइत अछि। गाछीक काँपबाकेँ इतिहासक चोटक देहधारी रूप मानि सकैत छी, मुदा ई आलोचनात्मक अर्थ-निर्माण अछि, वास्तविक वनस्पति-विज्ञानक दावा नहि।

एहि जड़ि-सम्बन्धमे पहलेक नदीनाश, बाढ़ि आ भूमि-प्रश्नक प्रतिध्वनि अछि। मुदा समूची प्रकृतिक स्वर बूढ़बाक एक व्यक्तिसत्तामे समेटल गेलासँ अलग जीव-जगतक स्वतन्त्र अस्तित्वक चर्चा सीमित रहैत अछि। गाछकेँ केवल मानवीय शोकक वाहक बनौने पर मनुष्येतर प्रकृतिक अपन भिन्नता दबि सकैत अछि।

## पीढ़ीक स्मृति, वृत्तान्त आ सामूहिक सतर्कता

गामक नब्बे बरखसँ बेसी उमिरक वृद्ध स्त्री कहैत छथि जे बचपनमे एहन कँपकँपीक बाद पैघ बाढ़ि आयल छल। ई कथन वर्तमान घटनाकेँ पुरान अनुभवसँ जोड़ैत अछि; समयक सम्बन्ध एकटा जीवित व्यक्तिक स्मरण मार्फ त बनैत अछि, न्यायालयक लिखित अभिलेख मार्फ त नहि। स्मृति-अध्ययनमे ई मौखिक गवाही गामक आपदा-अनुभव संचारित करबाक साधन अछि।

मुदा पुरान बाढ़ि आ वर्तमान कँपकँपीक बीच कारणात्मक सम्बन्ध पाठमे प्रमाणित नहि अछि। कथानक ई विश्वासक सामाजिक प्रभाव देखबैत अछि: लोक जुटैत छथि, दीप जरै त अछि, सावधानी बढ़ैत अछि। एही परिणामक विश्लेषण करब उचित अछि; एहन मानब नहि जे वृद्धाक अनुभव भविष्यक घटना वैज्ञानिक रूपेँ निश्चित करैत अछि।

## अवधि-विस्तार आ प्रतीक्षाक लय

घटना क्षणमात्र काँपबाक अछि; गामक प्रतीक्षा पूरा राति चलैत अछि। जेनेतक अवधि-परीक्षणमे अल्प घटना आ लम्ब प्रतीक्षा एक बेमेल कथात्मक घनत्व बनबैत अछि। दीप, स्त्रीसभक फु सफु साहट आ एक ठाम बैसल नन्द–अनन्या एहन सूक्ष्म विवरण अछि जे समूचा गाम भयमे एकजुट भेलाक दृश्य रचैत अछि।

फेरो कथावाचक “पैघ घटना निकट” सूत्र कई बेर दोहरबैत अछि। आशङ्काक आवृत्ति वातावरण बनबैत अछि, मुदा परिस्थिति बदलैत नब क्रिया कम होइत अछि। ई अध्याय घटनात्मक गति घटाकऽ पाठककेँ अनिष्टक प्रतीक्षामे रखैत अछि—एकर उपलब्धि वातावरण, सीमा कथानकक स्थगन अछि।

## समग्र मूल्याङ्कन

साक्षी-गाछक अवधारणा विस्तारित कऽ सम्पूर्ण वनस्पति-समुदायकेँ स्मृतिक स्थल बनायब अद्वितीय कलात्मक विस्तार अछि। बूढ़बाक “हमरा नहि बुझल” स्वीकारोक्ति अद्भुत शक्तिक सीमित ज्ञान देखबैत अछि, जे कथानककेँ सर्वसमाधानकारी चमत्कारसँ बचबैत अछि।

स्त्रीक मौखिक साक्षी आ प्रकृतिक रहस्य प्रभावशाली अछि, मुदा आसन्न आपदासँ निपटबाक वास्तविक तैयारी, सामुदायिक निर्णय आ अनिश्चित जानकारीक परख कम दृश्य बनैत अछि। एहि अध्यायक अर्थ भविष्यवाणी प्रमाणित करब नहि, भयक बीच स्मृतिक सहारे समुदाय बनेबाक प्रक्रिया देखब अछि।

## अध्याय –११ — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

### साक्षित्वक पीढ़ीगत हस्तान्तरण

गाछीक कँपकँपीक अगिला राति बूढ़बा नन्दकेँ एकान्तमे पीपर लग बजबैत छथि। एक दीपक मन्द इजोत, नन्दक मौन आ बूढ़बाक गम्भीर स्वर दृश्यकेँ विदाइ-सन बनबैत अछि। बूढ़बा नन्दकेँ आरुणिकक पोता कहि सम्बोधित करैत छथि, मुदा मूल बात वंशावलि नहि: नन्दकेँ केवल अभियन्ता नहि, पुरखा सभक नाम धरनिहार उत्तराधिकारीक रूपमे पहिचान देल जाइत अछि। एहि परिवर्तनमे पात्रक पेशागत पहिचान सामाजिक साक्षित्वक दायित्वसँ जुड़ैत अछि।

कथा परम्पराक थाती केवल रक्तसम्बन्धसँ तय होएबाक जोखिम सेहो राखैत अछि। हुलासा, सुखदेव, गौरी आ सुनयनाक साहसक नाम नन्दक भीतर बसबाक कथन सामुदायिक इतिहासक रूपक अछि; ई सभक अनुभव नन्दमे अक्षरश: समा गेल, से शाब्दिक तथ्य नहि। आलोचनात्मक प्रश्न ई जे समुदायक दोसर जीवित उत्तराधिकारीसभकेँ सेहो समान स्वायत्त अधिकार भेटत कि नहि।

### कथनक भविष्याभास आ सीमित जानकारी

बूढ़बा पैघ परीक्षा निकट होएबाक अनुभूति बतबैत छथि, मुदा नन्दकेँ साफ क्रिया-सूची नहि दैत छथि। “जखन ओ समय आबय”क शर्तपर आधारित आशीर्वाद भविष्याभास अछि, पूर्ण भविष्यकथन नहि। –१२क गाछीक अनिश्चित कम्पन एतय व्यक्तिगत चेतावनी बनैत अछि; अगिला अध्यायक सम्भावित अन्हार पाठकक प्रतीक्षा बनबैत अछि।

जेनेतक दृष्टिसँ कथा समयरेखासँ आगू इशारा करैत अछि, मुदा घटनाक कारण आ परिणाम एखन अस्पष्ट रखैत अछि। अध्यायक अन्तमे कथावाचक कहैत अछि जे अगिला दिन जीवन बदलि जायत; ई अतिरिक्त निश्चितता बूढ़बाक सीमित ज्ञानक संग रोचक अन्तर बनबैत अछि। आलोचना लेल पात्रक अनुमान आ कथावाचकक भविष्य-ज्ञान अलग राखब आवश्यक अछि।

## निज निर्णय आ प्राप्त उत्तराधिकारक तनाव

बूढ़बा नन्दकेँ अपन भीतरक आवाज सुनबाक परामर्श दैत छथि। एतय अधिसत्ता पूर्ण रूपेँ आज्ञा बनिकऽ नहि उतरैत: निर्णायक क्षणमे नन्दक अपन निर्णय महत्त्वपूर्ण रहत। नन्द एखन भारक स्वरूप नहि बुझैत, मुदा ओकरा स्वीकार करैत अछि। एहि स्वीकारक कारण चरित्रक नैतिक विकासक सम्भावना बनैत अछि।

मुदा बूढ़बाक वाणी अनेक बेर उचित बाट पहिनेसँ तय करैत बुझाइत अछि। नन्दक संशय, असहमति अथवा अस्वीकारक सम्भावना बिस्तारसँ नहि देखाओल गेल। व्यक्तिक स्वाधीनताक आलोचनात्मक कसौटीपर आशीर्वाद सहज सहमति प्राप्त करैत अछि; वास्तविक नैतिक परीक्षा तखन प्रकट होयत जखन नन्द अपन निर्णयक मूल्य चुकाएत।

## मौन संवाद आ भावनात्मक अवधि

नन्दक प्रश्न “हमरा की करय पड़त?” संक्षिप्त अछि; तकर बाद बूढ़बाक दीर्घ आश्वासन अछि। एहि कथन-वितरणमे गुरु-शिष्यक असमान वाणी-अवधि स्पष्ट देखाइत अछि। नन्दक मौन शोक अथवा भयक अनिवार्य प्रमाण नहि, मुदा ओ श्रोता-पात्रक भूमिका सुदृढ़ करैत अछि। मन्द इजोत आ राति-जागरणक क्रम कथाक बाहरी घटना घटाकऽ भीतरी संक्रमणकेँ महत्त्व दैत अछि।

भावनात्मक रूपसँ ई दृश्य उत्तराधिकारक संस्कार बनैत अछि। रिकरक पहचान-विचारसँ नन्द अपन कथात्मक पहिचान पुरखाक घटनाकेँ अपना सकबाक माध्यमसँ पुन:रचित करैत अछि। तथापि नन्दक मानसिक परिवर्तन कथावाचक सीधा बतबैत अछि; अधिक स्वतन्त्र आत्मसंवाद होइत तँ ओकर जटिलता पाठक स्वयं अनुभव करैत।

## उपलब्धि, पुनरावृत्ति आ सीमा

पीपरक तर गुरु-साक्षी आ नव साक्षीक भेट दीर्घ पूर्वकथाक एक महत्त्वपूर्ण उत्तराधिकार-बिन्दु अछि। अतीतक नामकेँ भविष्यक साहससँ जोड़ि लेखक व्यक्तिगत पहिचानक सामुदायिक पक्ष उभारै त छथि। अगिला घटनाक पूर्वे आशीर्वाद राखबाक कारण ओ घटनाक नैतिक अर्थ आगू सँ प्रश्नित होइत अछि।

एहि सफलताक संग एक सीमा अछि: “अन्तिम अध्याय” आ “अकेल नहि”क आश्वासनक पुनरावृत्ति बहुतेक ठाम सूचना बढ़ेबाक बदला भावक बल बढ़बैत अछि। पात्रक प्रश्नक स्वतन्त्र विकास कम अछि। अध्यायकेँ नन्दक नैतिक निश्चयक पूर्ण सिद्धि नहि, उत्तरदायित्व स्वीकारबाक पूर्वक्षण बुझब अधिक सटीक होयत। अध्याय –१५ सँ –११: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन खाता, पुल आ संकलनक तीन साक्ष्य-माध्यम

–१५क बैंक-खाता आर्थिक प्रवाहक असमान जानकारी दैत अछि; –१४क पुल विकास आ श्रमिक-सुरक्षाक भौतिक संघर्ष खोलैत अछि; –१३क संकलन पुरान नामकेँ एक ठाम जोड़ैत अछि। एहि तीनू माध्यममे लिखित वा निर्मित संरचना अपना आप न्यायपूर्ण नहि अछि। के ओकर उपयोग करैत अछि, ककर नाम सुरक्षित करैत अछि आ ककरा बाहर छोड़ैत अछि—ई प्रश्नकेँ लेखक पुनः सोझाँ अनैत छथि। खाता हानि ढाँकि सकैत अछि, पुल जोखिम बान्हि सकैत अछि, आ संकलन विस्मृति रोकि सकैत अछि। मुदा प्रत्येक उपकरणक नैतिक मूल्य मानवीय व्यवहारपर निर्भर अछि।

## कँपकँपी सँ आशीर्वाद: सामूहिक भयक निजीकरण

–१२मे समूची गाछी काँपैत अछि आ गाम राति भरि एकत्र होइत अछि। –११मे वैह सार्वजनिक अनिश्चितता नन्दक एकान्त उत्तराधिकार-दृश्यमे बदलैत अछि। सामुदायिक संकटकेँ एक व्यक्ति वहन करबाक अपेक्षा उत्पन्न होइत अछि। कथावाचक भविष्यक भार नन्दपर केन्द्रित करैत अछि; आलोचनात्मक रूपसँ ई देखब आवश्यक जे सामाजिक प्रतिरोधक उत्तरदायित्व समुदायमे बँटल रहत कि एक नायकक साहसपर सिमटत।

## पूर्वाभासक संख्या आ वास्तविक क्रियाक असमानता

पाँचू अध्यायमे नव जाल अथवा पैघ संकटक निकटता कई बेर प्रकट अछि: चन्द्रपालक खाता, पुलपर अनचिन्हार लोक, गोप कुमारक खाली पन्ना, गाछीक कम्पन आ बूढ़बाक चेतावनी। लेखक आकांक्षाक लम्ब श्रृंखला बनबैत छथि, मुदा जाँचक अंतिम परिणाम देखबैत नहि छथि। जेनेतक भविष्याभासक दृष्टिसँ ई सफल तनाव अछि; अति दोहराव घटनाक नब जानकारी घटा सकैत अछि। समीक्षामे एहि भेदक कारण पाठक अनुमान आ सिद्ध तथ्य अलग राखि सकैत अछि।

## अध्याय –१० — पुलपर पहिल छपाक

### रात्रि-दृश्य आ दुर्घटनाक संवेदनात्मक संरचना

निर्माणस्थलक अन्हार, बरसातक बादक तेज धार आ थाकल मजदूरक अपूर्ण सुरक्षा पहिलहि वाक्यसभमे संकटक ठोस परिस्थिति रचैत अछि। तकर बाद एक मजदूर नदीमे खसैत अछि। “छपाक”क एकटा आवाज घटनाक दृश्य-चिह्न बनैत अछि; नन्द पानिमे कू दि सहायता करबाक चेष्टा करैत अछि, मुदा ओ व्यक्ति ओकरा नहि भेटैत। एतय प्रत्यक्ष पाठमे डुबनिहार मजदूरक असली नाम अस्पष्ट अछि। लोकगीत मृत्यु आ गोहिक छवि अनैत अछि, मुदा मुख्य कथाक घटना पानिमे खसब आ सफल उद्धार नहि भऽ सकब अछि। आलोचनामे गीतक विश्वास आ दृश्यगत निश्चितताकेँ एके प्रमाण नहि मानल जाएत।

दुर्घटनाक दृश्य संक्षिप्त अछि, मुदा ओकर प्रभाव नन्दक नदीक पानिसँ भीजल शरीर आ नोर बहैत पीपर लग घुरबाक दृश्य धरि पसरैत अछि। जेनेतक अवधि-विन्यासमे एतय तेज संकट-क्षणक बाद शोकक अपेक्षाकृत मन्द समय बनैत अछि। पानि आ नोरक मिलन रचनेक सौन्दर्य देइत अछि, मुदा दुर्घटनाक कारण-समीक्षा केवल प्रतीकसँ पूरी नहि होइत।

### अनाम देहक अनिश्चितता आ नैतिक पहिचान

नन्द न हाथ पकड़ि सकैत अछि, न डुबनिहारक नाम पुकारबाक लेल निश्चित शब्द पबैत अछि। ई दुगुनी असफलता उपन्यासक केन्द्रीय “देह आ नाम”क सम्बन्धकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। पीड़ितक शारीरिक अनिश्चितता आ दफ्तरी अनामिता मिलि एकटा सामाजिक प्रश्न बनबैत अछि—मनुष्य जे निर्माणमे काज करैत अछि, ओकर असली पहिचान कोन अभिलेखमे सुरक्षित अछि?

आधुनिक ज्ञानगत न्याय-विवेचनमे नाम नहि पेनाइ केवल विस्मृतिक भावनात्मक घटना नहि, साक्ष्य आ प्रतिकार धरि पहुँचमे बाधा सेहो अछि। मुदा पाठमे श्रमिकक घर, सहकर्मी आ श्रमसम्बन्धी शर्त तत्काल देखाओल नहि गेल अछि। नन्दक पीड़ाक माध्यमसँ पाठक घटना अनुभव करैत अछि; स्वयं श्रमिकक वाणी अनुपस्थित रहैत अछि। एहि सीमाकेँ

चिन्हब रचनाक मानवीय उद्देश्यमाथि अनादर नहि, ओकर प्रतिनिधित्वक संरचना बुझब अछि।

## बूढ़बाक परामर्श: दोष आ उत्तरदायित्वक अलग प्रश्न

बूढ़बा नन्दक असफल उद्धारक दोष नन्दपर नहि राखैत छथि; ओ अन्हार, धार आ मजदूरकेँ संख्या बुझनिहार व्यवस्थाक उल्लेख करैत छथि। एहि कथनमे व्यक्तिगत अपराधबोधसँ संरचनागत असुरक्षा दिस दृष्टि घुरैत अछि। नन्दकेँ नाम खोजबाक आदेश मिलैत अछि, जाहिसँ पीड़ितक सार्वजनिक स्मरण सम्भव हो।

तथापि “ई अहाँक दोष नहि”क नैतिक आश्वासन ककरो वास्तविक कर्तव्य-जाँचक अन्तिम फैसला नहि अछि। नन्द निर्माणस्थलपर नियुक्त छल; ओकर अधिकार, सुरक्षा-निर्देश, चेतावनी आ उपलब्ध साधनक विस्तृत परीक्षण पाठमे नहि अछि। बूढ़बाक वाणी शोकाकुल पात्र लेल सहारा अछि, औपचारिक अन्वेषणक विकल्प नहि।

## लोकगीत आ कथारूपमे “छपाक”क आवृत्ति

शुरुआती लोकगीत “छपाक”केँ शताब्दीसँ चलैत मृत्युक रूपक बनबैत अछि। तत्काल दृश्य ओकरा एकटा खास नदी, खास राति आ खास मजदूरक संकटमे रखैत अछि। एहि आवृत्तिसँ सामूहिक इतिहास आ एक व्यक्तिक अनुभवक जोड़ बनैत अछि। शब्द ध्वनि-अनुकरण सेहो अछि आ समूचे ग्रन्थक स्मृति-सङ् के त सेहो; एक क्षणक आवाज अनेक पीढ़ीक नैतिक चेतनासँ जुड़ैत अछि।

मुदा एहि प्रतीकक बारम्बार अनुप्रयोग व्यक्तिगत मृत्यु/लोपक भिन्न परिस्थिति समेटि सकैत अछि। बूढ़बाक दीर्घ फकरा सभ पीड़ितकेँ नाम देबाक आग्रह करैत अछि, मुदा एहि खास अध्यायमे डुबनिहारक नाम नहि भेटैत। सांकेतिक सफलता आ तथ्यगत अभावक ई विरोध कथाक मूल्यवान खुलल प्रश्न अछि।

## समीक्षात्मक निष्कर्ष

रचना आधुनिक निर्माणक तकनीकी विजयक बीच श्रमिक देहक असुरक्षित स्थिति सोझाँ अनैत अछि। दृश्य, श्रव्य चिह्न आ शोकक अवधि मिलि तीव्र भावात्मक असर उत्पन्न करैत अछि। नन्दक डायरी उद्भव ओहि असफल क्षणकेँ नब अन्वेषणक आरम्भ बनबैत अछि।

श्रमिकक व्यक्तित्व आ तत्काल सामूहिक बचाव-जाँच कम विस्तृत अछि। उपन्यासक नैतिक मन्तव्य प्रबल अछि, मुदा दुर्घटनाक प्रत्यक्ष कारण, परिणाम आ पीड़ितक पहिचान एखन अनुसन्धानक प्रश्न बनल रहैत अछि।

## अध्याय –९ — जाँचक आरम्भ

### एक नामक खोज सँ आर्थिक सम्बन्धक अन्वेषण

दुर्घटनाक पाछाँ नन्द ठे के दारक कागज, हाजिरी-पंजी आ मृत अथवा हेरायल मजदूरक संगीसभसँ जानकारी माँगैत अछि। ओकरा पता लगैत अछि जे श्रमिक झूठ नाम आ झूठ उमिरसँ काज करैत छल। ई कथात्मक आविष्कार अपन भितर अनेको सामाजिक जटिलता राखैत अछि: जँ एक श्रमिकक असली नाम सहकर्मी नहि जनैत, तखन दुर्घटना-पछाति पहिचान कोना सुनिश्चित होयत? लेखक हाजिरीक कागजकेँ स्वत: विश्वसनीय प्रमाण नहि मानैत छथि।

नन्द नाम खोजैत-खोजैत कम्पनीक अस्पष्ट दस्तावेज आ संदिग्ध पाइक प्रवाह लग पहुँचैत अछि। एहि बिन्दुपर निजी शोक जाँचक कथानकमे रूपान्तरित होइत अछि। मुदा “झूठ नाम”क कारण, श्रमिकक अपन सहमति आ रोजगारक मजबूरी स्पष्ट नहि अछि। बिनु कारण देखौने श्रमिककेँ दोषी ठहरे नाइ आलोचनात्मक रूपसँ अनुचित रहत।

### दू अन्वेषक आ विभाजित दृष्टिबिन्दु

सत्यव्रत कम्पनीक बैंकिंग सम्बन्धसँ जुड़ल संदिग्ध लेनदेनक सूचना रखैत छथि। ओ नन्दसँ कहैत छथि जे अहाँ मजदूरक नाम खोजैत छी आ हम पाइक बाट। एहि द्वैतसँ लेखक एकक केन्द्रित साक्षी-नायकक स्थानपर सहकारी जाँचक अवसर रचैत छथि। नन्दक प्रत्यक्ष कार्यस्थल-अनुभव आ सत्यव्रतक आर्थिक दस्तावेजी अवलोकन अलग ज्ञानक आधार अछि।

बाख्तिनीय संवादक पूर्ण बहुस्वरता एतयो अपने-आप नहि बनैत। दूनू अन्वेषक तुरन्त सहमत भऽ जाइत छथि; पद्धतिगत असहमति, दस्तावेजक अलग अर्थ अथवा शंकाक वास्तविक संघर्ष कम देखाओल गेल अछि। तथापि ज्ञान एक पात्र लग पूरा नहि होएबाक स्वीकृति उपन्यासक आख्यान-वितरणक उपलब्धि अछि।

## साक्ष्य, अनुमान आ कथनगत छलाँग

मूल कथावाचकक अनुसार मजदूरक नाम-उमेर भ्रामक अछि, कम्पनीक कागज अस्पष्ट अछि आ पाइक लेनदेन दूर धरि जाइत अछि। एहि तीन सूचना सँ एक व्यापक जालक सम्भावना प्रबल बनैत अछि। मुदा सम्भावना आ सिद्ध सम्बन्ध एक नहि। मूल अध्यायमे रकम, दिनांक, खाताक पूरा श्रृंखला, दस्तावेजक स्वतन्त्र प्रतिलिपि आ नामक पुष्ट स्रोत पाठककेँ नहि भेटैत।

पुलसँ शीशाक मीनार धरि दूरी कथनक अन्तमे अचानक समेटल जाइत अछि। जेनेतक आख्यानगतिक दृष्टिसँ ई अन्वेषणक विस्तृत प्रक्रियाकेँ कथात्मक सारमे संक्षिप्त करब अछि। पाठककेँ रोचक दिशाबोध भेटैत अछि, मुदा तथ्य-उद्घाटनक वास्तविक श्रम दृश्यात्मक विस्तार कम पबैत अछि।

## पाइन खनबाक गीत: ज्ञानक प्रक्रिया-रूपक

लोकगीत जाँचकेँ पाइन खनबाक संग जोड़ैत अछि—पहिने कादो, तकर बाद पानि। ई तुलना मिथिलाक जल-भूमि अनुभवसँ उठल अछि। ज्ञानक प्रक्रिया कठिन श्रमक रूपमे देखाओल गेल अछि; आरम्भिक बाधा अन्तिम असफलताक समतुल्य नहि। कथाक घटनासभ सेहो एहि आरोहक अनुसरण करैत अछि: पहिने अपठनीय हाजिरी, तकर बाद मिलैत भिन्न सूचना।

मुदा लोकगीतक “सत्य लग पहुँचत” आश्वासन अन्वेषणक पद्धतिगत त्रुटि अथवा असफलताको पूर्ण रूपेँ नहि समेटैत। वास्तविक जाँचमे विरोधी अभिलेख, गलत निष्कर्ष आ सम्भावित निर्दोषक रक्षा आवश्यक अछि। एहि अन्तरसँ गीतक प्रेरक भूमिका स्पष्ट होइत अछि, ओकरा सत्यापनक अचूक विधि बनब नहि।

## मूल्याङ्कन

एहि अध्यायक प्रमुख उपलब्धि नाम-आधारित सामाजिक इतिहास आ पाइ-आधारित आर्थिक अनुसन्धानक भेट अछि। नन्द आ सत्यव्रतक अलग विशेषज्ञता जोड़ि कथा पीड़ाक निजी वृत्तसँ संस्थागत प्रश्न धरि पहुँचैत अछि।

कम्पनीक जालक सिद्धि एखन संवाद आ कथावाचकक सारांशपर अधिक निर्भर अछि। स्रोत, प्रत्युत्तर आ जाँच-प्रक्रियाक अधिक प्रत्यक्ष दृश्य रहितयो कथानक सशक्त सम्भावना बनबैत अछि; एकरा पूर्ण प्रमाण-सिद्धि बुझब नहि चाही।

## अध्याय –८ — प्रमाणक बाहर आएब

### निज नोटबुकसँ सार्वजनिक वाचन धरि

सत्यव्रत अपन संकलित तिथि, खाता आ लेनदेन गोप कुमारक सहायतासँ पत्रकार आ जाँच-संस्थाक हाथ पहुँचबैत छथि। गोप कुमारक अभिलेखीकरण –१३ सँ चलैत स्मृति-रक्षाक कार्यक नव सार्वजनिक रूप बनैत अछि। पहिने जे पन्ना निजी मौनक चिह्न छल, आब ओहि पाठकेँ अनेक लोक पढ़बाक सम्भावना प्राप्त होइत अछि। ई परिवर्तन केवल कथानकमे सूचना बढ़ब नहि, वक्तव्यक सामाजिक पता बदलनाइ अछि।

विमर्श-विश्लेषणमे निजी साक्षी आ संस्थागत सत्यापनक अलग अधिकार होइत अछि। पत्रकारक छपल समाचार जनता धरि सूचना अनैत अछि; न्यायिक प्रक्रिया आ अन्तिम सिद्धि दोसर स्तर अछि। अध्यायमे पत्रकारकेँ अभिलेख सौंपल गेल अछि, मुदा मूल दस्तावेजक फोरें सिक परीक्षण, आरोपितक उत्तर आ अदालतक अन्तिम फैसला पाठमे प्रदर्शित नहि अछि। एहि सीमा राखि सार्वजनिक उद्घाटनक नैतिक महत्व मानब चाही।

### नामसभक एक चित्रमे जुटब आ ओकर खतरा

उज्ज्वल, बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ दूरस्थ लाउ किन-हंगक उल्लेख एक शृंखलामे अबैत अछि। बहुत काल धरि अलग बुझाइत पात्रसभ अब आपसी सम्भावित आर्थिक-सामाजिक सम्बन्धक चित्र बनबैत छथि। जेनेतक कथनमे एहन समेकित सूचना अनेक पहिने अधूरल कथासूत्रक पुनर्सङ् गठन अछि। पाठकक ज्ञान-विस्तार एकाएक होइत अछि, मुदा पात्रसभक वस्तुनिष्ठ दोष समान अनुपातमे प्रमाणित नहि होइत।

अलग भूमिकाक लोककेँ एकरूप खलनायक बनाय देबाक जोखिम आलोचककेँ देखबाक चाही। ऋणी खाता-धारक, वकील, सम्भावित सञ्चालक आ हताश पीड़ितक अधिकार आ जिम्मेदारी भिन्न होइत अछि। पाठमे सम्बन्ध दिखाओल गेलासँ सब गोटेक एकसमान अपराध-दोष स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि।

## सत्य सूर्य नहि, दीप: ज्ञानक सीमित उजास

बूढ़बाक कथन अछि, “सत्य सूर्य नहि, दीप थिक।” ई एकटा साधारण सौन्दर्य-उपमा नहि। दार्शनिक अर्थमे एक सीमित पाठक अथवा अन्वेषककेँ पूरा सामाजिक समग्रता एक बेरमे उपलब्ध नहि होइत; ओ उपलब्ध प्रमाणक उजासमे अगिला डे ग चुनैत अछि। एहि रूपकमे समग्र सत्यक दावा सीमित होइत अछि आ आंशिक साक्षीकेँ महत्त्व प्राप्त होइत अछि।

एहि आंशिकता भीतर नैतिक सावधानी सेहो जरूरी अछि। दीप जतबा देखबैत अछि ताहिसँ बाहरक अन्हारक अनुमान सावधानीसँ करबाक चाही; फोरें सिक अभावमे व्यक्तिक नाम सार्वजनिक करण स्वयं नैतिक निर्णय अछि। लेखकक रूपक जाँचक अस्थायीपन स्वीकार करैत अछि, मुदा प्रकाशित सूचनाक सामाजिक परिणामपर विस्तृत विवाद नहि करैत।

## सारांश-प्रधान आख्यान आ सार्वजनिक शोक

प्रमाण बाहर आयलाक बाद परिवारसभक आशा आ शोक एकसंग प्रकट अछि। जे लोक अपन बेटाकेँ गमौने छल, ओ पहिल बेर सार्वजनिक कागजमे दुःखक सम्भावित कारण पबैत छथि। ई असाधारण क्षण सामाजिक पहचानक पुनर्स्थापनाक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। गामक मौखिक फु सफु साहट छपल समाचारक पन्ना बनैत अछि; लोक-ज्ञान आ पत्रकारिताक सार्वजनिक क्षेत्र मिलैत अछि।

मुदा घटना विस्तारपूर्वक न्यायालयक दृश्य नहि, प्रमुखतः कथावाचकक समेकित सूचना अछि। परिवारक एक-एक विशिष्ट प्रश्न आ सम्भावित विरोधी कथा कम पबैत छी। लेखकक संवेदनशील मन्तव्य स्पष्ट अछि; बहुल व्यक्तिस्वरा लेल स्थान बढ़ैत तँ विमर्शक लोकतान्त्रिक शक्ति अधिक उभरैत।

## आलोचनात्मक निष्कर्ष

अध्याय स्मृति सँ अन्वेषण, आ अन्वेषण सँ सार्वजनिक मान्यता धरि कथानकक महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। नोटबुकक बहुवर्षीय मौन भावात्मक रूपेँ टूटैत अछि। बूढ़बाक दीप-रूपक एहि घटनाक सर्वाधिक सारगर्भित दार्शनिक बिन्दु अछि।

आख्यानक सीमा ई जे छपल प्रमाणक सत्यापन आ सामाजिक प्रतिवाद तत्काल विस्तृत नहि अछि। एतय “प्रमाण बाहर आएब” सार्वजनिक अवलोकनक आरम्भ अछि, अन्तिम न्यायिक निष्कर्ष नहि।

## अध्याय –७ — आधा-भूतक अनुभवे

# स्वप्न आ जागृतिक बीचक सीमारेखा

अत्यधिक श्रम आ शोकसँ थाकल नन्द पीपरक जड़ि लग सुतैत अछि। ओकर स्वप्नमे बूढ़बाक धुँधल आकृति प्रकट होइत अछि—धुआँ आ इजोतक बीच, बिनु कोनो प्रत्यक्ष संवादक। एतय दृश्य नन्दक स्वप्नानुभवक भीतर आबैत अछि; ओकरा जाग्रत प्रत्यक्ष दर्शनक समान दर्जा देब पाठकक ज्ञान-सीमा लाँघब होयत। मूल कथा स्वयं अन्तमे ई प्रश्न खुला राखैत अछि जे अनुभव सत्य छल कि शोकक कल्पना।

तोदोरोवक अद्भुतक वर्गीकरण पर विचार करैत ई खुलल प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा त्रयीक व्यापक कथाजगतमे बूढ़बा पहिनेसँ लोकविश्वास आ जादुई अनुभवक अङ् ग छथि; तेँ एकहि स्वप्नकेँ पूर्ण रूपेँ यथार्थ–अलौकिक द्वन्द्वमे बन्द करब उचित नहि। ई अध्याय नन्दक अनुभवगत दहलीजक प्रस्तुति अछि, अलौकिक अस्तित्वक स्वतन्त्र वैज्ञानिक प्रमाणीकरण नहि।

# दृष्टिबिन्दुक सङ् कु चन: नन्दक भीतरक अनुभूति

–८क सार्वजनिक समाचार-वाचनक विस्तृत सामाजिक क्षेत्र सँ कथावाचक अचानक एक निन्नाइत मनुष्यक अनुभव दिस अबैत अछि। जेनेतक आन्तरिक दृष्टिबिन्दु-विवेचनमे एतय पाठक ओहि वस्तुकेँ देखैत अछि जकर नन्द स्वप्नमे अनुभूति करैत अछि। बूढ़बाक मौन चेहरा आ नन्दकेँ प्राप्त शान्ति मुखर दार्शनिक प्रवचनसँ अलग संकेतात्मक भाषा बनबैत अछि।

कथाक अतेक भागमे बूढ़बा स्पष्ट नीति-कथन दैत छथि; एहि स्वप्नमे हुनक मौन संवादक सम्भावना अधिक खोलैत अछि। मुदा कथावाचक आ दादी मिलि सपनाकेँ उचित बाटक चिह्न मानबामे प्रवृत्त छथि। पाठकक स्वतन्त्र अनिश्चितता एही नैतिक आश्वासनक भीतर दबि सकैत अछि।

## दादीक मौखिक व्याख्या आ लोकज्ञान

भिनसर नन्द सपना दादीकेँ सुनबैत अछि। दादी ओकरा “आधा-भूत” कहैत छथि आ एक पएर वर्तमानमे, दोसर पएर बीतल नामक बीच होएबाक व्याख्या करैत छथि। ई लोकभाषिक अवधारणा नन्दक नव उत्तरदायित्वकेँ चिकित्सकीय लक्षणक रूप नहि, सामूहिक स्मृतिक अनुभवक रूपमे अर्थ दैत अछि। दादी शास्त्रक परिभाषा नहि, पहिनेसँ सुनल कथा आ निजी जीवनानुभव सँ अर्थ बनबैत छथि।

ज्ञानगत न्याय-विवेचनमे वृद्ध स्त्रीक ई प्रत्यक्ष व्याख्यात्मक अधिकार महत्त्वपूर्ण अछि। पुरुष गुरु बूढ़बाक लम्ब परम्पराक संग दादीक अपन लोकरूप ई अध्यायमे स्मृतिक दोसर माध्यम बनैत अछि। तथापि दादीक अवधारणा नन्दक अनुभवक एक सम्भावित अर्थ अछि; एकरा सभ मनुष्यपर लागु होएवला निश्चित सिद्धान्त नहि बुझब चाही।

## बारह सय बरख आ एक युवकक अनुभव-समय

दादी शंख-रजत, हुलासा आ सुखदेवक पुरान कथासभ दोहरबैत छथि। एहि पुनर्क थनमे दीर्घ पूर्वकथा नन्दक वर्तमान जीवनक अनुभव बनैत अछि। पॉल रिकरक कथात्मक पहिचानक विचारसँ मनुष्य अपन कथा ओहि सभ कहनीक सम्बन्धमे बुझि सकैत अछि, जे ओकरा पूर्वसँ प्राप्त अछि। नन्दक जीवनक किछु बरख आ बूढ़बाक बारह सय बरखक स्मृति एक नहि भऽ जाइत, मुदा व्याख्यात्मक रूपेँ एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि।

–६क गोप कुमारक पन्नासँ अलग, एतय स्मृति कागज नहि, मौखिक वचनक माध्यमसँ चलैत अछि। सत्यक सामूहिक संरक्षणमे लिखित आ सुनल—दुनू माध्यमक आवश्यकता उपन्यास पुनः उपस्थित करैत अछि।

## सफलता आ सीमाक विवेचन

स्वप्नक मौन आ दादीक व्याख्या मिलि नन्दक भीतरी परिवर्तनकेँ शिल्पगत रूप दैत अछि। “आधा-भूत”क लोकसंज्ञा आधुनिक स्मृति-विमर्शक अनोखा साहित्यिक रूपक बनैत अछि। एतय भावात्मक गहराइ बूढ़बाक दीर्घ प्रत्यक्ष उपदेशसँ कनेक अलग तरहक अछि।

मुदा शोक-सपना, लोकविश्वास आ बाह्य घटना मिलैत कथनमे अंतर सदिखन स्पष्ट राखब चाही। आलोचनाक जिम्मेदारी नन्दकेँ सचमुच अर्ध-अलौकिक प्राणी सिद्ध करब नहि, अनुभवक अनिश्चितता आ ओकर आचरणपर पड़ल प्रभाव पढ़ब अछि।

## अध्याय –६ — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

# संकलनक पूर्णता आ मानवीय समयक समाप्ति

अति वृद्ध गोप कुमार जीवन भरिक संकलनक अन्तिम पन्ना लिखि नन्द–अनन्याक हाथ सौंपैत छथि। मुख्य गद्य स्पष्ट कहैत अछि जे किछु मास बाद हुनक शान्तिपूर्वक देहावसान होइत अछि। एहि अध्यायमे दस्तावेजक समापन आ व्यक्तिक मृत्यु एके दृश्य नहि: पहिने सौंपबाक समारोह, तकर बाद कालगत छलाँग अछि। जेनेतक कथन-अवधिक दृष्टिसँ जीवन भरिक संग्रह एक पन्नाक अन्तिम लेखामे, आ किछु मासक अन्तर एक छोट उपसंहारमे सिमटैत अछि।

ई सिमटाव भावक तीव्रता बढ़बैत अछि; पाठक समझैत अछि जे मनुष्यक सीमित देहक बाहर काजक उत्तराधिकार चलि सकैत अछि। मुदा संग्रहक अन्तिम पन्नाक सटीक नाम अथवा पाठ प्रस्तुत नहि अछि। पूर्णताक अनुभव कथावाचक आ गोप कुमारक मनोभाव सँ बनैत अछि, पाठकक स्वतन्त्र अभिलेख-परीक्षणसँ नहि।

# सौंपल पन्ना: वस्तुक रूपमे नैतिक प्रतिज्ञा

गोप कुमार –१००क वाचस्पति मिश्रसँ आधुनिक डिजिटल युग धरि एकत्र कथा नन्द आ अनन्याकेँ सौंपैत छथि। ई सौंपनाइ मात्र सम्पत्ति हस्तान्तरण नहि। संवादमे गोप कुमार कहैत छथि जे अन्तिम अध्याय सम्भवत: अगिला पीढ़ी लिखत। एहि कारण कागजक थाती भविष्यक क्रियाक जिम्मेदारी बनैत अछि; नन्द–अनन्याक मौन से स्वीकृतिक भावात्मक रूप अछि।

आधुनिक अभिलेखशास्त्रमे संरक्षकक दायित्व कागज राखबामात्र नहि—स्रोत, क्रम, त्रुटि, गोपनीयता आ पहुँचक प्रक्रिया स्पष्ट करब सेहो अछि। उपन्यासक संकलनक मूल्य अतुल्य होयबाक कथन ई प्रश्नकेँ निरस्त नहि करैत। विशेषत: –२५क मीराक निजताक प्रसंगक पाछाँ उत्तराधिकारीकेँ ककर निजी सूचना सार्वजनिक करबाक अधिकार अछि, से नब नैतिक प्रश्न बनैत अछि।

## बूढ़बाक साक्षी-वंशावलि आ भिन्न स्वर

बूढ़बा यादवानन्द, विभा आ गोप कुमारकेँ एके स्मृति-संरक्षक परम्परामे रखैत छथि। एतय इतिहासक सूत्र केवल पुरूष वंशजक नहि; स्त्री विभाक नाम सेहो ओहि धरोहरमे शामिल अछि। भिन्न समयक अलग साक्षीकेँ एक नामावलीमे रखब कथाक नैतिक उत्तराधिकार निर्माण करैत अछि।

तथापि एहि परम्परामे ककर काज शामिल होइत अछि आ ककर बाहर रहि जाइत अछि, से प्रश्न खुलल अछि। व्यक्तिगत गोप कुमारकेँ आदरसँ स्मरण करब नीक, मुदा इतिहासक अन्य सहायक, श्रमिक आ अज्ञात लोकसभक अलग बोधक स्वर कम अछि। स्मृति-समुदायकेँ एक मात्र प्रभारीक लेखामे समेटब बाख्तिनीय बहुस्वरताकेँ संकुचित कऽ सकैत अछि।

## मृत्यु बादक सरसराहट आ कथात्मक लय

गोप कुमारक देहावसानक राति गाछीक जड़िसँ हल्लुक सरसराहट उठबाक उल्लेख “कहल जाइत अछि”क सूचनासँग आबैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण कथन-चिह्न अछि: घटना निश्चित सर्वज्ञ दावाक बदला सामुदायिक कथाक रूपमे पेश होइत अछि। गाछी पूर्वहुँ कँ पैत अछि, मुदा –१२क भयजन्य कँपकँपीक स्थानपर एतय बिदाइक कोमल ध्वनि अछि। एके वनस्पतिक रूपक नब भाव-लय प्राप्त करैत अछि।

मूल गीतक “साक्षी बदलल, कथा रहल” सूत्र ई दृश्यकेँ कुलीन स्मारकक बदला निरन्तर सामुदायिक वाचनक रूप देइत अछि। तथापि मृत्यु-परक अद्भुत घटनाकेँ चिकित्सकीय वा बाह्य प्रमाणित सत्य कहब पाठ-संगत नहि; ओ सामुदायिक स्मृति आ लोककल्पनाक भाग अछि।

## समग्र मूल्याङ्कन

अध्याय –१३मे संकलनक निर्मिति आ –६मे ओकर उत्तराधिकार पूर्ण होइत अछि। लम्ब ग्रन्थ अपन इतिहास-संग्रहक रूपकेँ एक व्यक्ति सँ दोसर हाथ पहुँचबैत अछि। वृद्ध हाथक काँपब आ नब हाथक मौन ग्रहण अल्प दृश्यावलीसँ व्यापक भावात्मक अर्थ रचैत अछि।

एकर शिल्पगत सीमा संकलनक प्रमाणिकता आ हस्तान्तरणक व्यावहारिक प्रक्रियाक अस्पष्टता अछि। गोप कुमारक मृत्यु प्रभावी समापन अछि, मुदा नन्द–अनन्याक स्वतन्त्र सम्पादकीय निर्णय एखन आगूक कथाक सम्भावना बनल अछि। अध्याय –१० सँ –६: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन छपाक सँ जाँच: श्रव्य घटना आ दस्तावेजी पाठ

–१०मे मजदूरक पानिमे खसबाक एक आवाज संकटक बिन्दु बनैत अछि; –९मे वैह अनाम घटना हाजिरी-पंजी, संगीसभक वाणी आ बैंकिंग लेनदेनक अन्वेषण शुरू करबैत अछि। एक क्षणक श्रव्य चिह्न बहु-माध्यम साक्ष्य खोजबाक कारण बनैत अछि। मुदा छपाक स्वयं डुबनिहारक पहिचान, श्रमिक सुरक्षा-व्यवस्था अथवा अपराधक दोषी निर्धारित नहि करैत। कथाक नैतिक ताकत ई अस्पष्टताकेँ जाँचक प्रश्न बनबामे अछि।

## निजी लेखा, सार्वजनिक समाचार आ स्वप्नक तीन सत्यस्तर

–९क नन्द आ सत्यव्रत स्रोत मिलबैत छथि, –८मे समाचारक सार्वजनिक क्षेत्र बनैत अछि, –७मे नन्द बूढ़बाकेँ स्वप्नमे अनुभव करैत अछि। ई तीनू अलग तरहक ज्ञान अछि—दस्तावेजी खोज, सार्वजनिक सूचना आ निजी अनुभव। ग्रन्थक “सत्यक दीप”क रूपक एहि भेदसभकेँ मिटाबय नहि, बरु सीमित उजासक मर्यादा बुझाबय उपयोगी अछि। स्वप्नक सांत्वना प्रामाणिक भावानुभव हो सकैत अछि, मुदा अपराध-जाँचक बाह्य साक्षी नहि।

## गोप कुमारक समापन आ नन्दक आरम्भ

–६क अन्तिम पन्ना तथा वृद्ध संकलकक मृत्यु –१३क प्रारम्भिक संग्रहक दृश्यकेँ पूरा करैत अछि। जखन गोप कुमार अपन संकलन नन्द–अनन्याक हाथ सौंपैत छथि, तखन एक मनुष्यक जीवनक अवधि सामुदायिक दीर्घ कालमे प्रविष्ट होइत अछि। –१०क नन्दक डायरी आ –६क प्राप्त संकलन बीचक सम्बन्ध भविष्यक सम्भावित सामूहिक अन्वेषणक आधार अछि। एखन अन्तिम न्यायिक परिणाम नहि देखाओल गेल अछि; प्रामाणिक आलोचनामे एहि अधूरल अन्तकेँ सुरक्षित राखब आवश्यक अछि।

## अध्याय –५ — जालक उजागर होएबे

### स्थानीय अन्वेषणक परिणाम आ ओकर सीमा

अनेक मासक जाँचक बाद नन्द आ सत्यव्रतक प्रमाणसँ ठगीक स्थानीय पक्ष उजागर होइत अछि। बटुकनाथक भूमिका आ चन्द्रपालक खाता सभाक सोझाँ अबैत अछि; बटुकनाथपर कानूनी काजवाही आरम्भ होइत अछि आ चन्द्रपाल जाँचक सामना करैत अछि। कथावाचक आरम्भहिमे “कमसँ कम स्थानीय रूपमे” कहि उद्घाटनक भौगोलिक सीमा निश्चित करैत अछि। ई छोट सावधानी महत्त्वपूर्ण अछि: स्थानीय दृश्य खुललासँ विश्वव्यापी जालक समूचा संचालन बन्द भेल, से प्रमाणित नहि होइत।

दूरस्थ लाउ किन-हंग एखन पकड़सँ बाहर बताओल गेल छथि। नन्द सेहो जीतकेँ अधूरल कहैत अछि। एतय नैतिक उत्कण्ठा आ विधिक परिणाम एकहि बिन्दु पर समाप्त नहि होइत। आलोचक बटुकनाथक कठघरामे ठाढ़ होएबकेँ दोषसिद्धि नहि बुझत; न्यायालयमे आरोपक प्रारम्भ आ अन्तिम निर्णय अलग घटना अछि। चन्द्रपालक अज्ञानक उल्लेख फेर सहमति, विवशता आ उत्तरदायित्वक भिन्न श्रेणी बनबैत अछि।

### वकीलक कठघरा आ नैतिक शोकान्तिका

बटुकनाथकेँ बाल्यकालसँ चिन्हनिहार गामक वृद्ध लोक अदालतमे ओकरा देखैत छथि। हुनकर प्रतिक्रियामे न्यायक प्रसन्नतासँ बेसी हेरायल सपनाक शोक अछि: जे बालक गरीबक हक लेल लड़बाक कल्पना करैत छल, वैह आब आरोपीक स्थानपर ठाढ़ अछि। ई दृष्टि आरोपितकेँ सरल दानवी रूपमे नहि बदलैत; ओकर पुरान आशा आ वर्तमान अवस्थाक बीच दुःखद दूरी देखबैत अछि।

दर्शन-प्रधान उपन्यास एतय चरित्रक नैतिक कालक्रम याद करबैत अछि। वृद्ध लोकक स्मृतिमे बटुकनाथक पहिनुक छवि, न्यायालयक वर्तमान दृश्यक विरुद्ध ठाढ़ अछि। तथापि ओकर अपन विस्तृत सफाइ, पछतावा अथवा वर्तमान तर्क एहि अंशमे प्रत्यक्ष नहि भेटैत। शोकान्तिक प्रभाव दर्शक-समुदायक स्मरणपर अधिक निर्भर अछि, आरोपितक स्वतन्त्र आत्मविश्लेषणपर कम।

## यशपतिक अधूरल अन्त सँ वर्तमानक सम्बन्ध

बूढ़बा अध्याय –८४मे यशपतिक अधूरल कथाकेँ स्मरण करैत छथि। वैह सन्दर्भ लाउ किन-हंगक पहुँचसँ बाहर रहबाक प्रश्नपर आब प्रयोग होइत अछि। भिन्न युगक दू अधूरल प्रतिरोध एकसंग राखि लेखक ऐतिहासिक पुनरावृत्तिक तर्क रचैत छथि। पॉल रिकरक कथात्मक समयमे पुरान कथा वर्तमानक हार-जीतक अर्थ निर्धारण करैत अछि: असफलताक उत्तराधिकारी भविष्यक साक्षी भऽ सकैत अछि।

मुदा यशपतिक सामन्ती भूमिहित आ आइक दूरस्थ आर्थिक जाल एकरूप ऐतिहासिक संस्था नहि। रूपकक समता स्थानीय पराजयक पुनरावृत्ति बुझबैत अछि; ई दूनू घटनाक कारणात्मक समानता सिद्ध नहि करैत। ई भेद साहित्यिक तुलनाक सावधानी अछि।

## लोकगीतक विजय-बोध आ गद्यक अधूरल न्याय

आरम्भिक गीतमे “जाल उघरल”क विजय-ध्वनि अछि, मुदा गद्य स्पष्ट करैत अछि जे किछु व्यक्ति पकड़सँ बाहर अछि। एहि अन्तर सँ लेखक पाठककेँ भावनात्मक समाधान आ वस्तुगत उपलब्धिक बीच राखैत छथि। जाल थरथराएल, पर पूर्ण रूपेँ समाप्त नहि भेल— ई छवि न्यायकेँ निरन्तर सामाजिक काजक रूपमे देखैत अछि।

तथापि “नाम अन्ततः न्याय धरि पहुँचैत अछि”क बूढ़बाक आश्वासन दार्शनिक विश्वास अछि, तथ्यगत अनिवार्यता नहि। अनेक समाजमे नाम सुरक्षित रहितो न्याय विलम्बित वा असम्भव होइत अछि। उपन्यासक लोक-आशा एहि कठोर प्रश्नसँ सामना करैत अछि; आलोचनामे आशा आ सिद्ध फलकेँ अलग राखब आवश्यक अछि।

## समेकित मूल्याङ्कन

अध्याय भागिक सफलताकेँ सम्मान दैत अछि, मुदा पूर्ण विजय घोषित नहि करैत। चरित्रक पतनक प्रति सामुदायिक शोक न्यायिक काजवाहीकेँ मानवीय धरातल प्रदान करैत अछि। पूर्वकथा आ वर्तमानक अधूरल अन्त परस्पर अर्थ ग्रहण करैत अछि।

जाँचक तकनीकी विवरण, बटुकनाथक प्रत्यक्ष विचार आ पीड़ितक क्षतिपूर्तिक स्थिति कम दृश्य बनल अछि। साहित्यिक उपलब्धि नैतिक परिणामक खुललपन अछि; सीमा संस्थागत प्रक्रियाक सांकेतिक संक्षेप।

# अध्याय -४ — नामक अन्तिम सूची

## तीस नाम आ तीन सय देह: गणनाक द्वैत

नन्द बहुत मासक खोजक बाद पुल-निर्माणक पीड़ितसभक असली नाम संकलित करैत अछि। मूल अध्याय “तीस नाम”कें “तीन सय लाश”क पुरान कथासँ जोड़ैत अछि। एहि दू संख्याक समानता नहि: पहिल वर्तमान डायरीमे पुनर्प्राप्त नामक सूची अछि; दोसर व्यापक त्रासदीक समेकित छवि। पाठ एहि दुनूक बीच ठोस अभिलेखीय पूर्ण मिलान प्रस्तुत नहि करैत। एहि भेदकें सुरक्षित राखब चाही, नहि तँ संख्या स्वयं पीड़ितक स्थान लऽ लेत।

नन्द परिवार-परिवारक खोज, ठे के दारक कटल कागज आ बिसरल पता मिलबैत अछि। एहि विवरणमे इतिहास-लेखनक श्रम अछि, जे -१०क पानिमे डुबल अनाम देहसँ आरम्भ भेल छल। नाम, गाम, परिवार आ जीवन-कथाकें संग राखबाक कारण पात्र मात्र एक पंक्तिक आँकड़ा नहि रहैत; ओकर सामाजिक सम्बन्ध फेर दृश्य होइत अछि।

## दस्तावेजक संरचना आ प्रतिपहिचान

ठे के दारक हाजिरी-पंजी नामकें मेटबैत अछि, नन्दक “छपाकक हिसाब” फेर लिखैत अछि। आधुनिक अभिलेख-विमर्शमे ई दू कागजक बीच अधिकार-संघर्ष अछि। एकटा दफ्तरी अनुपस्थिति बनबैत अछि, दोसर सार्वजनिक स्मरणक सम्भावना। मुदा डायरीक निजी अधिकार, सार्वजनिक सत्यापन, अभिलेख-संशोधनक प्रक्रिया आ पीड़ित-परिजनक स्वीकृति पाठमे विस्तारसँ नहि देखाओल गेल।

मीराक निजता सम्बन्धी पहिनुक प्रश्न एतय फेर उठैत अछि: नाम बचेनाइ आ नाम सार्वजनिक करबाक अधिकार पूर्णतः समान बात नहि। सत्यक स्थापना लेल स्रोतक परख, परिवारक संवेदना आ प्रभावित व्यक्तिक हित एकसंग विचारणीय अछि।

## माएक दृश्य आ शोकक स्वतन्त्र समय

तीस नाममे एक युवकक माए बरख धरि बेटाक घुरबाक बाट तकै त छथि। नन्द डायरीमे ओ नाम देखबेलाक पाछाँ ओ कानि सकैत छथि। ई क्षण नाम-पुनर्प्राप्तिक सार्वजनिक

काजकेँ एक व्यक्तिक दीर्घ प्रतीक्षाक संग जोड़ैत अछि। रिकरक कथात्मक समयमे गामक लम्ब इतिहास आ माएक एक साँझ एक-दोसराकेँ अर्थ देइत अछि।

मुदा आँखिसँ नोर आबि गेलासँ शोक समाप्त नहि होइत। देहक खोज, मृत्यु अथवा लोपक अन्तिम पुष्टि, परिवारक आर्थिक भविष्य आ न्यायिक प्रतिकार खुलल प्रश्न रहैत अछि। माएक एक दृश्य व्यापक सामाजिक क्षतिक सङ् के त अछि, सम्पूर्ण क्षतिपूर्तिक प्रमाण नहि।

## व्रतक पूर्णताक दावाक पुनर्परीक्षा

बूढ़बा नन्दकेँ योग्य उत्तराधिकारी कहैत छथि, आ लोकगीत सूची पूर्ण भेलाक उत्सव मनबैत अछि। एहि नैतिक स्वीकृतिमे एक लम्बा प्रयत्न सफल होइत अछि। मुदा एक सूची पूर्ण होइताच उपन्यासक समूचा न्याय-कार्य पूरा नहि भऽ जाइत। जतेक लोकक नाम लिखल गेल, ततेक लोकक जीवनक सभ प्रश्न पन्नामे समाहित नहि होइत।

सूचीक अंतिम स्वर “गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि” पुनः वर्तमान अनुभवसँ जुड़ैत अछि। रूपक जीवनक नश्वरता आ लोकस्मृतिक सम्भावित दृढ़ता देखबैत अछि; मुदा भूलबाक सामाजिक शक्ति पूर्ण रूपेँ समाप्त भेल नहि मानल जाए।

## शिल्पगत मूल्याङ्कन

डायरीक ठोस पन्ना, नन्दक यात्राक श्रम आ माएक नोर अध्यायक तीन भाव-माध्यम अछि। ई सभ मिलि दार्शनिक स्मरणकेँ मानवीय परिणाम प्रदान करैत अछि।

सीमा ई जे तीसो जीवनक अलग-अलग अनुभव पाठमे विस्तार पबैत नहि; “पूर्ण सूची”क प्रभाव एक प्रतीकात्मक समापन होइत अछि। ताहियो नामक पाछाँ परिवार आ गाम जोड़बाक आग्रह व्यक्तिहीन आँकड़ाक प्रतिरोधमे सशक्त अछि।

## अध्याय –३ — बारह सय बरखक पूर्णत ।

# एक साँसक खेलमे दीर्घ इतिहास

अमावसक राति चन्ना गाछीमे कबड्डी होइत अछि। खेलक पारीमे पुरखाक नाम एक साँसमे पुकारबाक चलन शारीरिक लय आ ऐतिहासिक स्मृति मिला दैत अछि। नन्द पहिल बेर स्वयं पारीमे उतरैत अछि; एतबा समय ओकर भूमिका श्रोता आ अभिलेखकर्ता रहल, आब सामुदायिक क्रियामे भागीदारी बनैत अछि। ई परिवर्तन दृश्यात्मक अछि—कागजमे लिखल नाम देहक श्वास आ सामूहिक उच्चारणमे उतरैत अछि।

मिखाइल बाख्तिनक लोक-उत्सवक दृष्टिसँ खेल सामुदायिक सत्ताक अस्थायी पुनर्वितरणक सम्भावना रचैत अछि: एक खेलाड़ी नाम पुकारै त अछि, दोसर लोक अपन पुरखाक नाम जोड़ैत छथि। मुदा एतय उत्सवमे सामाजिक असहमति वा भिन्न इतिहासक टकराव विस्तारसँ नहि अछि। बहु-कण्ठक उच्चारण बहुत अछि, स्वतंत्र वैचारिक बहुस्वरता कम।

# नामक आवृत्ति आ स्मृतिक नब प्रदर्शन

नन्द हुलासा, सुखदेव, रत्ना, गंगेश, गौरी आ सावित्रीक नाम पुकारै त अछि। ओ नाम पहलेक अध्यायमे अलग संघर्षसँ जुड़ल छल; एतय एक-एक नाम सामूहिक ध्वनि बनैत अछि। जेनेतक आवृत्तिक विचारसँ पुरान घटनाकेँ फेर कहल जाएब मात्र दोहराव नहि, नब वर्त्तमानक भीतर पुरानक अर्थ बदलनाइ अछि। पीड़ा-कथा उत्सवक एक पहिचान-धुन बनैत अछि।

मुदा उच्चारणक क्षण हर व्यक्तिक जीवनक विपरीतता पूर्ण रूपेँ पुनर्जीवित नहि करैत। राजनीतिक संघर्ष, जातिगत बहिष्कार आ स्त्रीक स्वाधीन निर्णयक अलग विवरण गीतक एक लयमे सिमटि सकैत अछि। अछि एतय स्मृतिक एकता, मुदा एकतान सभ भेदक समापन नहि।

## एक साक्षी सँ सामूहिक जिम्मेदारी

बूढ़बा कहैत छथि जे बारह सय बरख धरि नामक भार अकेले हुनक रहनि, मुदा नन्दक पारी आ गामक उत्तरस्वरक बाद ओ भार सभक भऽ गेल। ई कथात्मक उत्तराधिकारक निर्णायक मोड़ अछि। –११क एकान्त आशीर्वाद आब सार्वजनिक प्रतिज्ञाक पूर्वदृश्य होइत अछि; स्मृतिक अधिकार एक अलौकिक साक्षीक हाथसँ गामक अनेक व्यक्तिक हाथमे जाइत अछि।

एहि स्थितिमे बूढ़बाक हल्लुक होएब मृत्यु अथवा सम्पूर्ण लोपक प्रत्यक्ष विवरण नहि। ओ नैतिक भारक बाँट भऽ सकबाक अनुभव अछि। कथावाचकक कोमल उजास आ जड़ि-पातक कम्पन एहि अर्थकेँ दृश्य बनबैत अछि।

## वृत्ताकार समय बनाम वर्तमानक नव प्रयोग

अध्यायक फकरा बारह सय बरखक गोल पूरा होएबाक कथा कहैत अछि। शंख-रजतसँ चलल बौद्धिक प्रश्न नन्दक नाम-पुकार तक पहुँचैत अछि। रिकरक समय-विन्यासमे ई कथा अपन प्रारम्भकेँ अन्तमे नव अर्थ देइत अछि; मुदा कालक्रम शाब्दिक रूपेँ घुरि ओहि पहिल घटना मे नहि पहुँचैत।

नन्दक सहभागिता नव घटना अछि; तेँ वृत्तक बीच ऐतिहासिक परिवर्तन उपस्थित अछि। जँ एकरा मात्र पुनरावृत्त चक्र मानल जाए तँ गामक सामूहिक अधिकारमे भेल परिवर्तन अनदेखल रहि जायत।

## आलोचनात्मक निर्णय

कबड्डीक श्वासकेँ लोकस्मृतिक माध्यम बनायब एहि विस्तृत उपन्यासक सशक्त दृश्यात्मक उपलब्धि अछि। मुखसँ निकलल नाम आ थाकल बूढ़बाक हल्लुक होएब परम्पराक उत्तराधिकार स्पष्ट करैत अछि।

मुख्य सीमा ई जे सामूहिक नामस्मरणक बाद विविध सामाजिक वर्गसभक अलग दायित्व आ असहमति तुरन्त प्रस्तुत नहि होइत। उत्सव ज्ञान, न्याय आ संरक्षणक प्रारम्भिक अनुष्ठान अछि, स्वतः उपलब्ध संस्थागत समाधान नहि।

## अध्याय २ — अगिला पीढ़ीक वचन

### कबड्डीक ध्वनि सँ नव पीढ़ीक प्रतिज्ञा

२क कबड्डी समाप्त भेलाक पाछाँ गामक युवा लोक पीपर लग सामूहिक वचन लैत छथि। नन्द बूढ़बाक कथा आ गोप कुमारक संकलनक रक्षा कहैत अछि; अनन्या नारिकेल पात पाठशालासँ डिजिटल अभिलेख धरि साधन उपयोग करबाक प्रस्ताव रखैत छथि। खेलक क्षणिक श्वास नव दायित्वक दीर्घ कालमे परिणत होइत अछि। ई कथनक समय-संरचनामे उत्सवक तात्कालिकता आ संस्थाक भविष्यक अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि।

मुदा वचन स्वीकार भऽ गेलासँ व्यावहारिक संरक्षण पूर्ण होइत नहि। कोन संस्था अभिलेख राखत, के पहुँच नियंत्रित करत, स्रोत-परखक दायित्व कोन समिति उठाओत—ई प्रश्न भावीक काज अछि। सामाजिक न्याय-विमर्शमे प्रतिज्ञा संस्थागत व्यवस्था बनेबाक पहिल डे ग हो सकैत अछि, ओकर पूर्ण विकल्प नहि।

### गीत, कू टलेखन आ कानूनक त्रिसूत्री

युवा सभमे कियो संगणकीय लेखन जनैत अछि, कियो लोकगीत-पंजी, कियो कानून-हिसाब। लेखक एकहि उद्देश्य लेल भिन्न दक्षताक साथ देखबैत छथि। एहि समन्वयमे पुरान ज्ञानक डिजिटल संरक्षण आ नब तकनीकक सांस्कृतिक उत्तरदायित्व एक-दोसराक पूरक बनैत अछि।

बाख्तिनीय दृष्टिसँ कौशलक बहुलता स्वतन्त्र बहुस्वरता नहि; अलग ज्ञानक प्रयोगमे असहमति, निजता आ सार्वजनिक हितक टकराव सेहो हो सकैत अछि। अध्यायमे युवा लोकक सर्वसम्मति सहज अछि। विवादहीन आदर्श समुदाय साहित्यिक आकर्षणक संग जटिल सामाजिक परिस्थिति थोड़ अधिक सरल बनबैत अछि।

### दू पाण्डुलिपिक संयुक्त उत्तराधिकार

नन्द आ अनन्याक हाथमे गोप कुमारक दीर्घ संकलन आ नन्दक “छपाकक हिसाब” डायरी अछि। पहिल पुरान शताब्दीक स्मृति समेटैत अछि, दोसर वर्तमान श्रमिक-अन्यायक

खोज सँ उपजल अछि। दुनूकेँ संग राखलासँ उपन्यास एहन बुझबैत अछि जे इतिहासक संरक्षण आ आइक अन्यायक दस्तावेजीकरण अलग संस्थान नहि रहबाक चाही।

मुदा दुनू अभिलेखक प्रमाण-स्तर, प्रयोजन आ सम्भावित संवेदनशील सूचना अलग अछि। संकलनक लोकगीत आ डायरीक आर्थिक-पीड़ित विवरण एके खुलल मंचपर बिनु वर्गीकरणक नहि राखल जा सकैत; नैतिक सम्पादनक आवश्यकता कथा सँ आलोचनाक दिस प्रश्न बनैत अछि।

## बूढ़बाक उजास आ पाठकपर भरोसा

बूढ़बा गाछी-सँ उठैत कोमल उजासक माध्यमे प्रतिज्ञा स्वीकार करैत बुझाइत छथि। ई दृश्य लोकधर्मक साक्षित्वक रूपक अछि। पूर्व अध्यायमे एकक अव्यक्त साक्षी आब सामुदायिक उत्तराधिकारक पाछाँ आश्वस्त होइत अछि। कथावाचक कखनो-कखनो “जेना”क सहारे अनुभूतिक मर्यादा राखैत अछि; ताहि कारण घटना धार्मिक आदेशक पूर्ण दस्तावेज नहि बनैत।

लोकगीतक “सुनब मुक्ति छी” सूत्र नामक उच्चारण मात्रसँ आगू बढ़बाक आग्रह करैत अछि। जिनकर नाम दर्ज अछि हुनकर बात सुनब, आवश्यकता बुझब आ सार्वजनिक निर्णयमे स्थान देब—एहिमे भविष्यक नैतिक सम्भावना अछि।

## मूल्याङ्कन

–२ उपन्यासक ऐतिहासिक भारकेँ नव पीढ़ीक कौशल आ सामुदायिक वचनमे बदलैत अछि। बूढ़बाक उत्तराधिकार केवल एक वीर नन्दपर केन्द्रित नहि रहि अनेक युवाक सामूहिक दायित्व बनैत अछि।

समूहक आन्तरिक बहस, निजता-विधान आ वास्तविक संसाधनक प्रश्न एखन खुलल अछि। एहि कारण अध्याय नैतिक संकल्पक प्रभावी दृश्य अछि; पूर्ण सामाजिक संस्थानक प्राप्ति नहि।

# अध्याय –१ — अन्तिम साक्षी

## समीक्षाक विशिष्ट सीमा: एक अध्यायमे बहु-नाट्य पाठ

पूर्व-कथाकालक अन्तिम अध्याय –१ सामान्य समापनक अपेक्षा बहुत पैघ, अनेक स्तरवला रचना अछि। बूढ़बा नन्दकेँ अनदेखल भावी लेखकक अनुभूतिक बात कहैत छथि; तकर बाद सूत्रधार पाठकक सोझाँ अबैत छथि, गोप कुमारक संकलनक भीतर “विदेह नाट्य उत्सव”क शोकान्तिका प्रकट होइत अछि, आ अगिला भागमे शास्त्रीय दर्शनपर आधारित विस्तृत मंच-वाद एकक बाद एकक रचल गेल अछि। ताहि लेल अध्यायक आलोचना केवल नन्द–बूढ़बाक अन्तिम संवाद धरि सीमित राखब मूल पाठक प्रमुख अंशसभ छोड़ब होयत।

एहि अध्यायमे कथाक भीतर पोथी, पोथीक भीतर नाटक, नाटकक भीतर सूत्रधारक प्रत्यक्ष सम्बोधन आ तत्पश्चात् नव नाटकक शृंखला अछि। जेनेतक कथास्तरक अवधारणामे ई बहुस्तरीय विन्यास अछि। मुदा सभ आन्तरिक मंचक बीच ऐतिहासिक समय आ कथावाचकीय अधिकार स्वतः समान नहि। एहि भेद जाँचिकऽ आलोचना करबाक आवश्यकता अछि।

## अनदेखल लेखक आ कथास्तरक सीमा लाँघब

बूढ़बा नन्दकेँ बतबैत छथि जे कियो अनदेखल भावी लेखक हुनक कथा लिखत; ओ एहो कहैत छथि जे लेखक भरिसक “एतबे निकट” छथि। तकर तुरन्त बाद सूत्रधार मंचसँ पाठक लग पहुँचैत छथि। कथाक भीतरी पात्र बाहरी लेखनक सम्भावनापर विचार करैत अछि; ई आत्मसन्दर्भी कथा-विन्यास अछि। जेनेतक कथास्तर-उल्लङ्घन अथवा मेटालेप्सिसक विचार एतय उपयोगी अछि: पाठक आ पात्रक बीच कल्पित दूरी स्वयं कथा प्रश्नित करैत अछि।

मुदा बूढ़बाक अनुमानकेँ वास्तविक लेखकक ऐतिहासिक पहिचान वा लेखकीय कार्यप्रक्रियाक स्वतन्त्र प्रमाण नहि मानल जाए। ई पाठमे रचल कथन-उपकरण अछि। रचनाक आत्मचेतना प्रभावशाली अछि, मुदा पाठकक निरन्तरता टूटबाक जोखिम सेहो अछि —दीर्घ कथा अकस्मात् अपन रचना-प्रक्रिया विषयक भाष्यमे बदलि जाइत अछि।

## “विदेह नाट्य उत्सव”: अनचाहल शोकान्तिका

काजर-कारी नामहीन पोथी गोप कुमारक संकलनक निचुलका भागमे भेटैत अछि। नन्द ओकरा खोलैत अछि आ बिनु स्याही पन्नापर दृश्य उभरैत अछि। मंच-निर्देशक कथाकेँ सुखान्त बनबय चाहैत छथि; सूत्रधार प्रत्युत्तर दैत छथि जे एहि राति भोर नहि आओत। एतय पात्रक भीतर पात्रत्वपर वाद अछि: नाटक लिखनिहार अथवा मंच सजौनिहारक इच्छा आ डायरीक पूर्वस्थित घटनासभ परस्पर टकराइत अछि।

आत्मसन्दर्भी नाट्यक ई युक्ति दर्शककेँ सुखान्तक अपेक्षाक प्रति सजग करैत अछि। शोकान्तिका केवल दुर्दैवक परिणाम नहि, कथा-संशोधनक नैतिक मर्यादापर प्रश्न अछि। तथापि “डायरी अपने लिखैत अछि”क अलौकिक कल्पना पाठककेँ रचनाकारक जिम्मेदारी सँ पूर्ण मुक्त नहि करैत: कोन घटना चुनी गेल, ककरा आवाज भेटल, ई प्रश्न लेखक-निर्मित रूपमे एखन रहैत अछि।

## वर्दीक भीतर गोहि: राज्यसत्ताक आलोचना

शोकान्तिकाक आरम्भमे गली-स्तरक बनबिलाड़ अपन आपराधिक क्षेत्रक दावा करैत अछि, मुदा वरिष्ठ पुलिस-अधिकारी रणंजय सिंह ओकरा बतबैत अछि जे वास्तविक नियन्त्रण ओकर हाथमे अछि। सूत्रधार बनबिलाड़केँ दाँत आ रणंजयकेँ जबड़ा कहैत छथि। गोहिक रूपक एतय पोखरिक हिंस्र जीव सँ संस्थागत संरक्षणक छद्म रूपमे विकसित होइत अछि। जे व्यक्ति सुरक्षाक प्रतीकक पोशाक पहिरने अछि, वैह हिंसाक मूल सुविधा देबयवला रूपमे चित्रित अछि।

ई राज्य-विमर्शमे सत्ताक दृश्य आ अदृश्य स्तर अलग करैत अछि: जनताकेँ सहज दृश्य अपराधी भेटैत अछि, जखन कि संस्थागत संरक्षणक भूमिका धुँधली रहैत अछि। मुदा ई नाट्यक पात्रसभक कल्पित घटना अछि; कोनो वास्तविक पुलिस-अधिकारीविरुद्ध स्वतन्त्र ऐतिहासिक आरोपक दस्तावेज नहि। रूपकक नैतिक प्रहार साहित्यिक अछि, बाह्य अभियोग नहि।

## रत्नेश्वरक मृत्यु आ विलम्बित सहायता

शोकान्तिकाक दोसर पहरमे विशेष कार्यदलक अरुणेश, अभयकान्त, रत्नेश्वर आ सत्यवीर उपस्थित छथि। एक पीछा-काजक समय रत्नेश्वरक पएर तारमे फँ सैत अछि; सहायता-सन्देश पठाओल जाइत अछि, मुदा दलक उत्तर नहि अबैत। गोली लगैत अछि आ मंच अन्हार होइत अछि। अभयकान्त बादमे प्रश्न करैत छथि जे सहायता-दल दस मिनट ककर आदेशपर रुकल। एहि प्रश्नमे सत्ता-भ्रष्टाचारक सम्भावित निर्णायक बिन्दु अछि—मृत्यु केवल अपराधीक गोलीसँ नहि, कदाचित् संस्थागत सहायता-विलम्बसँ सेहो सम्बन्धित अछि।

मुदा निश्चित आदेशकर्ता एही दृश्यकेँ स्वतन्त्र प्रमाण सहित स्थापित नहि कएल गेल अछि। सत्यवीर रणंजयक दलक “मार्ग बदलल”क बात कहैत छथि; ई शंका गहींर करैत अछि, सम्पूर्ण जाँचक प्रतिवेदन नहि। सशक्त शोकान्तिका एही प्रकरणक अनुपस्थित सहायताकेँ दृश्य बनबैत अछि। बिज्जी नेवला रत्नेश्वर लग देरीसँ पहुँचैत अछि—पुरान रक्षक-रूपकक पराजय सामाजिक संस्थाक अपूर्णतासँ जुड़ैत अछि।

## रंगमंचक समय: पहर, दरार आ अपूर्ण पर्दा

मंच पहिल पहर सँ क्रमिक सार्वजनिक अन्हारक यात्रा बनबैत अछि। गुण्डा-पक्ष आ पुलिस-पक्षक फाटल आँगन एकसंग देखाएब दू सत्ता-क्षेत्रक समानान्तर दृश्य अछि। मंचपर कुर्सी, दीया, बिज्जीक निःशब्द पहरा आ रणंजयक ऊँच छाया दृश्य-चिह्नक रूपमे कार्य करैत अछि। जेनेतक अवधि-सिद्धान्तसँ अलग, एतय रं गमंचक सहउपस्थित स्थानकेँ पढ़नाइ आवश्यक अछि: एक दृश्य दू विरोधी संस्थाकेँ एक समय देखबा दैत अछि।

अन्तमे पर्दा आधा खसैत अछि आ ठमकि जाइत अछि। सूत्रधार कहैत छथि जे एक साँच शोकान्तिका पूरा नहि होइत; ओकर पहरा अगिला रातिकेँ सौंपल जाइत अछि। सुखान्त रोकबाक ई निर्णय साहित्यिक रूपेँ साहसी अछि। तथापि पाठककेँ संघर्षक अन्तिम सामाजिक परिणामक विस्तृत जानकारी नहि भेटैत; नाटक दायित्वक प्रश्न छोड़ैत अछि, अन्तिम न्याय-सूची नहि।

## “शंख आ रजत — उत्तरार्ध”: वेदक कर्म आ ज्ञान

शोकान्तिकाक बाद “शंख आ रजत — उत्तरार्ध” शीर्षकसँ दार्शनिक वाद-नाटक शुरू होइत अछि। ई वाचस्पति मिश्रक भामतीक चारि ब्रह्मसूत्र सम्बन्धी तर्कक मौलिक मंचीय पुनर्रचना कहल गेल अछि। मीमांसक कर्मकांडी, आक्षेपक, युवा संन्यासी, शिष्य आ परिषद् अलग प्रश्न उठबैत छथि। सूत्रधार पहिनुक शंख-चानी भ्रम-विचार सँ वेदक शब्दाधिकारक प्रश्न दिस बढ़ैत छथि। रं गमंचपर शंख आ डोरीक संग ताड़पत्रक चारि सूत्र नब वस्तु बनैत अछि।

विचारक मूल संघर्ष ई जे वेदक प्रयोजन मात्र कर्मक आज्ञा देब अछि कि ब्रह्मक ज्ञान सेहो स्वतन्त्र प्रयोजन अछि। एहि वादमे पूर्वपक्षक प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा रचनाक निर्णायक केन्द्र वाचस्पतिक उत्तर अछि। ताहि लेल अनेक पात्रक उपस्थिति स्वतन्त्र समबली दार्शनिक बहुस्वरताक सम्पूर्ण प्रमाण नहि; ई शास्त्रीय पूर्वपक्ष-सिद्धान्त संरचनाक नाट्यरूप अछि। संवादकेँ ऐतिहासिक महापुरुषसभक वास्तविक अभिलेखित शब्द नहि, उपन्यासकारक मौलिक नाट्य-रचना बुझबाक चाही।

## “आत्मसिद्धि-वाद — उत्तरार्ध”: समय आ प्रमाणक मंचीय वस्तु

एकर पाछाँ उदयनाचार्यसम्बद्ध विस्तृत वाद-नाटक अनेक अङ्कमे बीज, पाथर, स्वप्न, ज्ञान, आत्मा, नाश आ ईश्वरक अनुमानक परीक्षा करैत अछि। बीजक सम्भावित सामर्थ्य, टूटैत पाथर आ ज्ञानक सातत्यक विवेचन अमूर्त तर्ककेँ मंचपर देखाएब योग्य वस्तु बनबैत अछि। आक्षेप आ प्रत्युत्तरक क्रमसँ पाठक प्रत्यक्ष, अनुमान आ कार्यकारणत्वक भिन्न प्रश्न चिन्हि सकैत अछि।

एहि भागक महत्त्व केवल भारतीय दर्शनक सूचनामे नहि; उपन्यास प्रश्न करे बाक कलाकेँ नाटकीय टकराव बनबैत अछि। मुदा लम्ब दार्शनिक प्रतिपादन कथा-प्रवाहकेँ ठाम-ठाम रोकैत अछि। बाख्तिनक दृष्टिसँ अनेक वादीक आवाज अछि, मुदा निर्णय प्रायः एक दार्शनिक पक्षक तर्क -विजय दिस क्रमित अछि। जँ पाठक एहि नाट्यरूपकेँ निष्पक्ष बहसक वास्तविक प्रतिलेख समझत तँ रचनाक विधा आ उद्देश्यक भेद हेरा जायत।

“आत्मसिद्धि-वाद”क पुष्पगुच्छ: आठ प्रमाणक काव्यात्मक विधान

एही दार्शनिक शृंखलामे उदयनक तर्ककेँ पाँच पुष्पगुच्छक रूपमे पुन: संगठित कएल गेल अछि। नास्तिक, मीमांसक आ आन प्रतिपक्षी सोझाँ रखि अदृश्य कारण, प्रलय, प्रमाण-वैधता, ज्ञाता, सर्वज्ञता आ आठ प्रकारक तर्कक प्रश्न उठैत अछि। फूल अर्पणक छवि वादक आक्रमणकारी मुद्रा केँ सौजन्यक विधामे बदलैत अछि; नाटक स्वीकार करैत अछि जे प्रमाण प्रस्तुत करब आ मन परिवर्तन कराएब एक बात नहि।

पञ्चम पुष्पगुच्छक अन्तमे सूत्रधार प्रश्नक अंतिम निपटान दर्शकपर छोड़ैत छथि। ई खुललपन पूर्वक निश्चयात्मक वादक संग रोचक विरोध बनबैत अछि। तथापि आठ तर्कक सूत्रबद्ध आवृत्ति साहित्यिक चरित्र-निर्माणक अपेक्षा दार्शनिक अध्यापनक रूप अधिक लैत अछि। एकहि अध्यायमे एकर आयाम पाठकीय एकाग्रता लेल कठिन चुनौती बनैत अछि।

## “चिंतामणि रत्न — उत्तरार्ध”: उपमान, शब्द आ अर्थ

अन्तिम विस्तृत वाद-नाट्यमे गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिंतामणिक उपमान आ शब्द-सम्बद्ध तर्क प्रस्तुत अछि। गाय आ गाय-सन मुदा भिन्न पशुक मूर्ति, वनवासीक जानकारी, सादृश्य, शक्तिग्रह, विश्वसनीय वाणी आ आकांक्षा–योग्यता–सन्निधि वाक्यक अर्थपर प्रश्न उठबैत अछि। ई मंचीय युक्ति उपन्यासक “नाम बचेनाइ”क मूल सूत्रसँ गहिर सम्बन्ध रखैत अछि: नामक ज्ञान कोना बनैत अछि, शब्द ककरा संकेत करैत अछि, आ सुनल वचनक प्रमाणिकता कोना जाँचल जाए?

प्राभाकर, भाट्ट, बौद्ध आ वैशेषिक प्रतिपक्षी अलग मत रखैत छथि। मुदा गंगेशक दीर्घ उत्तर एहि नाटककेँ व्यवस्थित शास्त्रीय वादक विजयोन्मुख रूप बनबैत अछि। एकर मूल कथा-संबन्ध पाठककेँ स्वयं खोजय पड़ैत अछि—नन्दक मजदूर-नामक खोज आ दार्शनिक शक्तिग्रहक बीच अर्थपूर्ण तुलना सम्भव अछि, मुदा दुनू समस्या एकरूप नहि। भाषिक अर्थबोध आ सामाजिक अभिलेखक सत्यापन भिन्न प्रकारक काज अछि।

## आख्यानशास्त्रीय समाहार: वाचक, लेखक आ पाठक

अध्याय –१मे नन्दक निजी संवादक मध्यसँ पाठक सोझाँ सम्बोधित होइत छथि; गोप कुमारक संकलन नाट्य-पुस्तक बनैत अछि; सूत्रधार पहिनुक सम्पूर्ण पूर्वकथा याद करबैत

छथि; दार्शनिक मंचसभ फेरा-फेरी शास्त्रीय पूर्वपक्ष आ उत्तरपक्षक बहुल भाषा उभारै त अछि। ई अनेक स्तरक कारण दीर्घ त्रयी अपन पाठककेँ केवल कथा सुननिहार नहि, अर्थनिर्माणक सहभागी बनएबाक चेष्टा करैत अछि।

संगहि एक अध्यायक भीतर बहुत पैघ दार्शनिक भण्डारक समावेश संरचनागत असमानता रचैत अछि। –५ सँ –२ धरि छोटे घटनात्मक अध्याय, आ –१क अनेक-अङ्कीय नाट्यमाला एके अध्याय-संख्याक अन्तर्गत अछि; ताहि लेल अध्यायगणना मात्रसँ पाठकक श्रम, समय अथवा शिल्पगत महत्त्व नापल नहि जा सकैत। उपन्यास नाट्यशास्त्रीय विस्तारक कारण विशिष्ट अछि, मुदा सम्पादकीय दृष्टिसँ उपशीर्षक, स्वतंत्र अनुक्रम आ पाठ-स्थान स्पष्ट रहब आवश्यक।

## नैतिक निर्णय: स्मरणक विजय बनाम न्यायिक अधूरापन

सूत्रधारक अन्तिम लोकगीत “शंखसँ स्क्रीन धरि”क दीर्घ काल-यात्राकेँ नामक दृढ़तामे समेटैत अछि। मंचक अधखसल पर्दा आ जलैत दीया न्यायिक अन्तक बदला जिम्मेदारीक निरन्तरता देखबैत अछि। ई रचनात्मक चयन उपन्यासक केन्द्रीय प्रतिज्ञासँ मेल खाइत अछि: हिंसा देहकेँ समाप्त कऽ सकैत अछि, मुदा सामुदायिक स्मरण प्रतिवादक भाषा बनि सकैत अछि।

मुदा स्मृतिक विजय स्वयं पीड़ितक क्षतिपूर्ति, सुरक्षा अथवा संस्थागत दण्डक स्थान नहि लैत। पूर्वकथाक अन्त साहित्यिक अर्थमे उन्मुक्त अछि, सामाजिक अर्थमे अधूरल अछि। एहि अन्तरकेँ मानब अध्यायक शोकान्तिक दायित्वक न्यायपूर्ण आलोचना अछि।

## अन्तिम मूल्याङ्कन

अध्याय –१क सबसँ पैघ उपलब्धि आत्मसन्दर्भी सूत्रधार, अपूर्ण शोकान्तिका आ शास्त्रीय वादक बहुस्तरीय प्रयोग अछि। “गोहि” प्रकृतिक हिंस्र देहसँ सत्ता-छल धरि पहुँचैत अछि; “नाम” लोकस्मृतिसँ शब्दार्थ आ प्रमाणक दार्शनिक प्रश्न धरि विस्तृत होइत अछि। पाठक अनवरत बहसक संरचनामे अपन विचारक सक्रियता अनुभव करैत अछि।

एही विस्तारक प्रमुख सीमा अनुपातक असन्तुलन, पूर्वकथाक भावात्मक अन्तिम क्षणपछाति नाट्यविषयक तीव्र विस्थापन आ शास्त्रीय पक्षक दीर्घ उत्तरसभक कारण

प्रतिपक्षक स्वतन्त्र चरित्र-आवाजक संकु चन अछि। नाटककेँ ऐतिहासिक प्रमाण नहि, साहित्यिक पुनर्रचना मानि पढ़ला पर ओकर मूल्य अधिक सुसंगत स्पष्ट होइत अछि। अध्याय –५ सँ –१: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन अधूरल आपराधिक न्याय सँ नामक सामुदायिक न्याय

–५मे स्थानीय जाल उजागर होइत अछि, मुदा दूरस्थ सञ्चालनक प्रश्न बचैत अछि। –४मे नन्द तीस नाम जोड़ैत अछि, मुदा नामक सार्वजनिकता सम्पूर्ण दैहिक-आर्थिक न्याय नहि। –३मे वैह नाम सामूहिक कबड्डीक श्वासमे रूपान्तरित होइत अछि। एहिसँ कथा न्यायकेँ केवल अदालतक फैसला नहि, अभिलेख, स्मृति आ सार्वजनिक सहभागिताक परस्पर भिन्न मार्गमे पढ़बाक अवसर दैत अछि। मुदा एहि भिन्न मार्गकेँ एक-दोसराक स्थानापन्न नहि बुझबाक चाही।

## एकक साक्षीसँ बहुपीढ़ी उत्तराधिकार

–३मे बूढ़बाक बारह सय बरखक भार गामक अनेक कण्ठमे बँटैत अछि; –२मे युवा सभ लोकगीत, कू टलेखन, कानून आ पंजीक अलग ज्ञानसँ वचन लैत छथि। –१मे सूत्रधार पाठककेँ सेहो कथाक उत्तराधिकारी मानैत छथि। ई बढ़ैत वृत्त एक गामक कथाकेँ खुलल सार्वजनिक दायित्व बनबैत अछि। ताहियो बहुस्वरताक कसौटी एखन लागू रहैत अछि: सामूहिक स्वरमे जे असहमत अथवा अनुपस्थित छथि, हुनकर प्रतिनिधित्व कोना होयत?

## अन्तिम अध्यायक अनुपात आ विधा-विविधता

–५ सँ –२ छोट घटनात्मक गद्य-अध्याय अछि, जखन कि –१मे आत्मसन्दर्भी कथा, आधुनिक शोकान्तिका, वाचस्पति–उदयन–गंगेशसम्बद्ध अनेक विस्तृत दार्शनिक वाद-नाटक अछि। ई अनुपातक भेद दीर्घ कादम्बरीक विशिष्ट विधा-समन्वय देखबैत अछि। मुदा वादक दार्शनिक जीत आ जीवनक अधूरल सामाजिक न्याय एक समान निष्कर्ष नहि। शास्त्रीय संवाद पाठककेँ प्रश्न करबाक विधि दैत अछि; सामाजिक कथा ओहि प्रश्नक फल जाँचबाक नैतिक बाध्यता दैत अछि।

# पूर्वकथाक समापन आ मुख्य कथाक खुलल द्वार

ऋण-सङ्ख्यावला −१०० सँ −१ धरि यात्रा शंख-रजतक भ्रमक प्रश्न सँ आरम्भ भेल आ अनेक नामक उत्तराधिकारमे पहुँचैत अछि। अध्याय −१क अधखसल पर्दा बतबैत अछि जे पूर्वकथाक समाप्ति समूची त्रयीक अन्त नहि। खण्ड-१क अध्याय ० सँ मुख्य कथा नव आरम्भ पबैत अछि; ताहि लेल एहि बैचक आलोचना पूर्वकथाक मूल्याङ्कन अछि, समूचे ३०१ अध्यायक अन्तिम समालोचना नहि।

## अध्याय ० — गढ़ नारिके ल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावन ।

# लोकप्रस्तावना कि उपन्यासक भीतरी आलोचनाशास्त्र?

बच्चासभक “काल्हि सँ कथा?” प्रश्नपर बा पहिने गाम सुनबाक आग्रह करैत छथि। ई संवाद कथाक आरम्भ टारै त नहि, पाठकक सुनबाक रीति बदलैत अछि। गामकेँ नक्शामे समाहित बिन्दुक बदला माटि, पानि, गाछ, गीत, स्त्रीक श्रम आ बिसरल नामक परस्पर सम्बन्ध रूपमे रखल गेल अछि। जेरार जेनेतक आख्यानशास्त्रीय भेदसँ देखला पर ई मुख्य घटनाक तुरन्त दृश्य नहि, कथाजगतमे प्रवेश करबाबयवला आत्मव्याख्यात्मक वक्तव्य अछि। “संक्षिप्त” शीर्षकक विपरीत ई अध्याय सैकड़ो अनुच्छे द, खिस्सा आ गीत समेटैत अछि; छोट प्रस्तावनाक आकार एकर वास्तविक पाठ-विस्तारकेँ व्यक्त नहि करैत।

अध्यायक कथावाचक बहुत बेर पाठककेँ सीधे निर्देश दैत अछि जे चन्ना गाछी, नारिकेल पात आ कबड्डीकेँ कोन अर्थमे पढ़ब। ई आत्मसन्दर्भी प्रवृत्ति कथाकेँ अपन आलोचनात्मक कुंजी स्वयं प्रदान करैत अछि; एतय आरम्भहिसँ कथन आ कथनक व्याख्या संग चलैत अछि। उपलब्धि ई जे स्थानीय वस्तु प्रतीक बनबाक प्रक्रियाक सामाजिक आधार भेटैत अछि। सीमा ई जे पाठककेँ स्वतंत्र अर्थनिर्माण लेल कतेको बेर कम ठाम रहैत अछि: प्रतीक घटित होएबाक पूर्वहि ओकर अर्थ घोषित होइत अछि।

# जल-भूमि आ पर्यावरणीय समयक बहुस्तर

कमला-बलान, गंगा, पोखरि-डबरा, इनार, चौर आ अपूर्ण बान्हक वर्णनमे पानि केवल पृष्ठभूमि नहि। वैह कृषि, माछ-मखान, पाबनि, स्त्रीक पनिघट आ जीविकाक साधन अछि, फेर कटान, मृत्यु आ विस्थापनक कारण सेहो। बाढ़िक हिसाब राजकीय दिनाङ् कक बदला देहरीपर पानिक रेखा, बालु पड़ल खेत आ गाछक घावसँ राखल जाइत अछि। पर्यावरणीय आलोचनामे एहि भौतिक चिह्नकेँ स्थानीय पर्यावरणीय अभिलेख कहि सकैत छी। मुदा नदीक व्यक्तिवाचक “स्मरण” साहित्यिक रूपक अछि; एकरा वैज्ञानिक तथ्य घोषित करब ठीक नहि।

अध्याय गामक एकहि भौगोलिक स्वरूपमे सामाजिक असमानता सेहो देखबैत अछि। ककरो ऊँच आँगन बाढ़ि सँ बचैत अछि, ककरो पातर झोंपड़ी पहिल धारमे डूबैत अछि। तें जलसंकट सभ व्यक्तिपर एक समान नहि पड़ैत। पर्यावरणीय न्याय आ जातिगत भूगोलक मिलान ई अध्यायक विशेष उपलब्धि अछि। ओहि संग मूल पाठ बहुतेक उदाहरणकेँ निबन्धात्मक क्रममे राखैत अछि; कोनो विशिष्ट पोखरिक अधिकार-विवादक विस्तृत दृश्य कम अछि। अनुभवक वर्गीकरण सामाजिक सत्यक सम्भावना जगबैत अछि, मुदा अलग-अलग पात्रक संग घटित दृश्य ओकरा आर बल दऽ सकैत छल।

## गीतक बहुलता आ वास्तविक बहुस्वरताक प्रश्न

पाठ गीतकेँ एक गायकक निजी सम्पत्ति नहि मानैत: एक कण्ठ टेक उठबैत अछि, दोसर पद बदलैत अछि, तेसर नव घटना जोड़ैत अछि। बाख्तिनक संवादधर्मिताक परिप्रेक्ष्यमे ई सामूहिक रचना-माध्यम महत्वपूर्ण अछि, कारण अर्थ एक लेखकक अधिकारमे स्थिर नहि रहैत। माछमारक पुकार-उत्तर, रोपनीक ताल, बाढ़िक विलाप, सोहर आ कबड्डीक लय भिन्न सामाजिक काजसँ जन्मैत अछि। धुन श्रमक गति, एकसाथ काज करबाक ज्ञान आ जनसमूहक स्मृतिक साधन बनैत अछि।

मुदा अनेक गीत होएब अपने-आप बहुस्वरीय वैचारिक टकराव नहि। कथावाचकक व्यापक नैतिक स्वर अनेक भिन्न लोकगीतकेँ एके प्रतिज्ञा—अनाम लोकक नाम बचाउ—दिस लऽ जाइत अछि। स्वरक साझा उद्देश्य साहित्यिक एकता दैत अछि, मुदा जँ मतभेदक अलग अन्तिम अवसर नहि रहय, तँ बहुस्वरता सामूहिक एकस्वरमे बदलि सकैत अछि। आलोचना लेल पात्रक अलग सामाजिक बोली, भिन्न इच्छाक संघर्ष आ कथावाचकसँ प्रत्यक्ष असहमति देखब आवश्यक अछि।

## नौ लोकखिस्सा, दर्जनहुँ गीत आ संग्रहात्मक कथास्तर

डकही पोखरिक पात-दीप, चन्ना गाछीक साँस, दछिन टोलक साझा चूल्हि, पुरान बाटक पएरचिन्ह, अपूर्ण रिंग-बान्हक पहरा, गवाही-पाथर, ठूँठपर उगल पात, धान रोपबाक गीत आ नवजातक स्वागत अलग-अलग लोकखिस्साक क्रम बनबैत अछि। एकर बाद सेहो बीआ, पात, नाम-पहरा, काँचक परदा आदि गीत-पाठ अबैत अछि। ई सभ छोट कथा

भीतरक कथा अछि; एक कथाजगत अनेक सामुदायिक स्मृतिद्वारसँ खुलैत अछि। परम्परागत कथानकमे जे एकल घटनाशृंखला रहैत, एतय ओकर बदला प्रकारान्तरित सांस्कृतिक सूची अछि।

संग्रहात्मक रूपक कारण पाठक माटि, श्रम, स्त्री-अधिकार आ नब तकनीकक परस्पर सन्दर्भ एकसंग देखैत अछि। मुदा खिस्साक लगातार क्रमक बीच पात्रक एकटा सतत इच्छाक आरोह-अवरोह कम देखाइत अछि। ई दोषक सरल नामकरण उचित नहि—ई लोक-संग्रह आ कादम्बरीक मिश्रित विधागत चयन अछि। तथापि पुस्तकक भीतर एहि दीर्घ प्रवेशिका लेल स्वतन्त्र उप-अनुक्रम रहब पाठकीय सुविधा आ शिल्पगत अनुपात दूनू लेल उचित होयत।

## बा, स्त्रीक ज्ञान आ ज्ञानगत अन्याय

बा बच्चासभकेँ कथा सुनबयवाली मात्र नहि, गमछा, गन्ध, देहरी, पात आ चूड़िक टुकड़ासँ इतिहास पढ़निहारि स्त्री छथि। स्त्रीक विवाह-गीत, जन्मक सोहर, रोपनी, अरिपन, भोजन-ज्ञान आ शोक-स्मृतिमे जे बौद्धिक श्रम अछि, ओकरा दफ्तरी कागच सामान्यतः मान्यता नहि दैत। मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक सन्दर्भमे ई प्रश्न उठैत अछि जे प्रमाण ठहराबयवला संस्थाक अधिकार ककर हाथ अछि। अध्याय आधिकारिक सूची आ माएक “हाजिर”क संघर्षकेँ ज्ञानक मूल्याङ्कनक विवाद बनबैत अछि।

तथापि कण्ठस्थ स्मृतिक सम्मान करब आ ओकरा त्रुटिरहित साक्ष्य मानब एक बात नहि। अध्याय स्वयं लोकन्यायक जातिगत पूर्वग्रह, स्त्रीक विरुद्ध अफवाह आ भीड़क अन्याय स्वीकार करैत अछि। एहि आत्मसंशयमे एकर वैचारिक परिपक्वता अछि। लोकज्ञानकेँ राज्य-ज्ञानक पूर्ण विकल्प नहि, ओकर प्रमाणिक अधिकारपर उठाओल सार्वजनिक प्रश्न मानला सँ आलोचना अधिक न्यायसंगत रहैत अछि।

## इतिहास, भविष्यसूचना आ अनुभवक कालविपर्यय

अध्यायमे पुरखाक समय, कथाकारक वर्तमान आ भविष्यक पाठकक समय एकसंग उपस्थित अछि। गाछीक कबड्डी १८८५, १९३४, १९७७ आ आधुनिक स्क्रीनक दृश्य एके पारीमे लाँघि सकैत अछि। जेरार जेनेतक काल-क्रमक दृष्टिसँ ई सरल पूर्वकथन नहि, मुख्य

कथा अगुआ कऽ कहल जा रहल उद्घाटन अछि। बूढ़बा आ लोककथाक माध्यमसँ अलग कालक अनुभव एके सांकेतिक मैदानमे अबैत अछि, जाहिसँ इतिहास एकरेखीय प्रगतिक बदला पुनरावृत्त प्रश्नक क्रम बुझाइत अछि।

ई समय-संघटन पॉल रिकरक कथा-अनुभवक विवेचनक संग पढ़ल जा सकैत अछि: गाम अपन इतिहास केवल तिथिसँ नहि, श्रम, शोक आ उच्चारित नामसँ व्यवस्थित करैत अछि। मुदा भविष्यक घटनासभकेँ पहिनेसँ खोलि देलासँ आगामी अध्यायक अनिश्चितता घटैत अछि। पाठक “की होयत”क जिज्ञासासँ बेसी “ई कोना घटत”क प्रश्न लऽ आगाँ बढ़ैत अछि। ई एक स्पष्ट रचनात्मक लेन-देन अछि।

## अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

अध्याय ०क उपलब्धि गढ़ नारिकेलक सांस्कृतिक जीवनकेँ प्रासंगिक दृश्य, कामक धुन, पर्यावरणक घाव आ ज्ञानक असमान अधिकारसँ निर्मित करब अछि। लोकसमाजकेँ निष्कलुष आदर्श घोषित नहि कऽ ओकर भीतरक वर्ग, जाति आ लिंगभेद स्वीकारल गेल अछि। ई आत्मसमालोचनात्मक पक्ष एकरा केवल लोकसाहित्यक प्रदर्शनसँ अलग करैत अछि।

कठिनाई एकर पैघ आकार, अनेक समान नैतिक निष्कर्षक पुनरुक्ति आ प्रत्यक्ष कथानक शुरू होएबाक लम्ब प्रतीक्षा अछि। शीर्षकक “संक्षिप्त” शब्दक आलोचनात्मक परीक्षा आवश्यक अछि। लोकविश्वक निर्माण अद्वितीय पाठकीय सम्पत्ति अछि, मुदा निबन्ध, खिस्सा, गीत आ कादम्बरी-प्रस्तावनाक भिन्न रूपकेँ स्पष्ट खण्डबद्ध कएलासँ एहि समृद्धिक ग्रहणक्षमता बढ़ि सकैत छल।

## अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी

### खेल-संरचना सँ लोकअदालतक जन्म

चन्ना गाछीमे भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पीपरक ब्रह्मा आ पनिडुब्बीक संग कबड्डी चलैत अछि। मनुक्खक खेलमे सीमा स्थानक होइत अछि, मुदा भूतक खेलमे सीमा समयक अछि: पारी १८८५ छू कऽ १९३४, १९७७ आ आधुनिक मोबाइलक इजोत धरि जाइत अछि। बूढ़बा निर्णायक छथि; हुलासी बिना हाथक देहसँ सीमा चिन्हैत छथि। ई विशिष्ट दृश्य लोकविश्वासकेँ नाटकीय शरीर दैत अछि, आ कथाक अलग-अलग युगक आवाज एक मैदानमे भेटैत अछि।

भूतसभक पारीमे नाम बचा कऽ घुरबाक नव नियम बनबाक संगहि खेल न्यायिक क्रियामे बदलैत अछि। कोनो मृतकक अधूरल नाम केवल पार्श्वविवरण नहि, खेलक लक्ष्य बनैत अछि। बाख्तिनक लोकोत्सवात्मक संरचनामे सामाजिक सीमा अस्थायी रूपसँ लाँघल जाइत अछि। मुदा बूढ़बाक निर्णायक अधिकारपर के ओ प्रश्न नहि करैत; तें ई सम्पूर्ण समतावादी स्वच्छन्द लोकउत्सव नहि, साझा अनुष्ठानक भीतर एक नैतिक पदानुक्रम सेहो अछि।

### मृत्यु-दृश्य आ विकासक व्याकरण

पुलक नक्शापर गंगा नील रेखा, मजदूर गोल बिन्दु, जोखिम लाल त्रिभुज आ मृत्यु फुटनोट बनैत अछि। एहि विरुद्ध बिसेसर पासवानक घिस्सल चप्पल, टोकड़ी आ खसबाक “छपाक” देहक एकमात्रिकता फेर स्थापित करैत अछि। सरकारी बहीमे दुर्घटनाग्रस्त श्रमिकक ठाम “कार्यस्थल छोड़ि अनुपस्थित” लिखल जाएब कागचक मार्फ त व्यक्तिक लोप अछि। घटना आ अभिलेखक विरोध कथा-विकासक मुख्य तनाव अछि।

श्रमक दृश्य पर पाठकक दृष्टि एक बेर नन्द अभियन्ताक आँखिसँ, फेर भूतक खेलक ध्वनिसँ खिसकैत अछि। एही दृष्टिबिन्दु-परिवर्तनसँ मृत्यु दफ्तरी व्यवस्थाक तथ्य मात्र नहि रहैत; मृतकक नाम एक स्वतन्त्र कथात्मक प्रतिवाद बनैत अछि। मुदा बिसेसरक आन्तरिक जीवनक विस्तार अपेक्षाकृत कम अछि; पाठक ओकरा बेसी खसल श्रमिक आ मृत्यु-

पश्चात्साक्षीक रूपमे जनैत अछि। वास्तविक सामाजिक व्यक्ति बनबाक लेल ओकर पहिनुक जीवनक दृश्य आरो सम्भव छल।

## समयक अतिक्रमण आ भविष्यक “स्क्रीनक गोहि”

नन्दक जेबमे डायरी अछि, मोबाइल नहि; ताहियो भूतसभक खेलमे उज्ज्वल झाक भविष्यक डिजिटल संकट, हारल रकम आ धमकीक आभास अबैत अछि। ई भविष्याभास कथावाचकक समय-सीमा तोड़ैत अछि। जेरार जेनेतक अग्रकथनक दृष्टिसँ पाठक एतय अगिला घटनाक सूचना पहिनेसँ पबैत अछि, मुदा पात्र नन्दक वर्तमान ज्ञानमे ओ सूचना पूर्ण रूपसँ उपलब्ध नहि। कथा-वाचक आ पात्रक ज्ञानक एहि असमानताकेँ निरन्तर चिन्हब जरूरी अछि।

जलसमाधि नदीसँ स्क्रीन दिस पसारै त काल “गोहि” जीववैज्ञानिक प्राणी सँ आर्थिक-प्रौद्योगिकीय हिंसाक रूपक बनैत अछि। तथापि भविष्यक संकटकेँ भूतक निश्चित पूर्वज्ञान मानि लेबासँ वर्तमान पात्रसभक विकल्प आ अनिश्चितता मेटि सकैत अछि। लेखक भविष्याभासक सहारे नैतिक निरन्तरता रचैत छथि; एकर आलोचनात्मक सीमा सम्भावित नियतिवाद अछि।

## बहुविध देह आ मृत्यु-पश्चात् नामक पुनर्रचना

बिसेसर चन्ना गाछीमे पहुँचैत अछि तँ ओकर देहक अनुपस्थित भागमे पानि भरल अछि। छोटूक सही नाम अज्ञात अछि। मुनियाक श्रम हाजिरीमे प्रविष्ट नहि। एतय मृत्यु सभक एक समान रूप नहि; नाम, देह, जाति, उमेर आ स्थान अलग-अलग क्षतिग्रस्त अछि। तोदोरोवक अद्भुतता-विमर्शकेँ सावधानीसँ लागू करब चाही: पाठ लोकविश्वक अलौकिक नियम विस्तारसँ स्थापित करैत अछि, पात्रसभक दृष्टिमे ओकर सत्यता सतत तर्क -विवादक विषय नहि। अतः प्रत्येक भूत-दृश्यकेँ अनिर्णीत अद्भुत कहब अनुचित।

लोकविश्व कथाक भीतर समानान्तर अभिलेखक काज करैत अछि। भूतसभ सरकारी कागचक गलत नामकेँ सही रूपेँ उच्चारबाक प्रयास करैत अछि। मुदा अलौकिक रूपसँ उच्चरित नामक विधिक सत्यापन अलग प्रश्न अछि। कथा स्मरणक गरिमा स्थापित करैत अछि; आलोचना ओकरा स्वतः प्रमाणित नागरिक अभिलेख नहि बनाओत।

## मूल्याङ्कन आ शिल्पगत आरक्षण

अध्यायक अद्भुत उपलब्धि कबड्डीक साँस आ मृत श्रमिकक नामकेँ एक रचनात्मक नियममे जोड़ब अछि। सरकारी “विकास” शब्द “बिसेसर” बनि टूटबाक दृश्य चिन्हात्मक रूपसँ तीक्ष्ण अछि। मृत्युक ध्वनि “छपाक” गीत, दृश्य आ कागचक बीच एक पुनरावृत्त सांकेतिक सङ् के त बनैत अछि।

किछु ठाम कथावाचक पात्रक स्थानपर घटनाक नैतिक व्याख्या स्वयं पूरा करैत अछि; एहि कारण आधिकारिक पक्षक जटिल प्रतिवाद वा नन्दक स्वतन्त्र दुविधा कम खुलैत अछि। ताहियो खेलकेँ सामूहिक नाम-सुरक्षाक औजार बनेबाक शिल्प दीर्घ उपन्यासक एक प्रभावी कथात्मक आविष्कार अछि।

## अध्याय २ — दहिन कातक गाम

### गमछाक टुकड़ा आ वंशस्मृतिक आरम्भ

बा पुलक श्रमिकक फाटल गमछाक कोना उठा पुरान बक्सामे नारिकेल पातक नीचाँ रखैत छथि। स्मरणक ई ठोस क्रम—वस्तुक गन्ध, पातक पुरान दाग, कै थी-देवनागरी पर्ची—लिखित अभिलेखक बाहर रहल लोकज्ञानकेँ दृश्य बनबैत अछि। खण्डक आरम्भमे गाम दहिन कात अछि कि बाम, से नदीक बदलैत धार अनुसार अलग बुझाइत अछि। भूगोल स्वयं स्थिर वर्गीकरणक दावाकेँ प्रश्न करैत अछि; मानचित्रक दिशा स्थानीय अनुभवक तुलना मे अधूरल अछि।

गमछाक टुकड़ा पीढ़ीक बीच सम्पर्क क वस्तु बनैत अछि, मुदा ओकर स्रोतक पुष्टि आफसे नहि होइत। वस्तु साक्ष्यक मार्ग खोलैत अछि, अन्तिम व्यक्ति-पहिचानक एकमात्र प्रमाण नहि। उपन्यासक अपन प्रमाण-दर्शन एहि असमानताकेँ जगबैत अछि; आलोचक रहस्यसँ उत्पन्न ज्ञानक भावनाकेँ तथ्यगत पूर्णता नहि मानत।

### कलितक शिक्षा आ औपनिवेशिक अक्षरक द्विधा

१८८५मे लत्तड़ ठाकुरक घर कलितक जन्म, बच्चाक असामान्य श्रवण आ बादमे बंगाली शिक्षकसँ अंग्रेजी विद्या पढ़बाक प्रसंग एहि अध्यायक ऐतिहासिक विस्तार अछि। कलित देवनागरी, कै थी, अंग्रेजी अक्षर आ मुँहजबानी वंशावलीक बीच चलैत अछि। गाममे मेड़, लगान, जमीन आ व्यक्तिनामक भिन्न-भिन्न लिखावट सामने अबैत अछि; अंग्रेजी पढ़ब अधिकार-प्रवेश सेहो अछि आ शोषणक भाषा बुझबाक जोखिम सेहो।

उत्तरऔपनिवेशिक अध्ययनमे एकरा साधारण अंग्रेजी-विरोध कहब गलत होयत। कलितक साक्षरता पीड़ितक कागच पढ़बाक शक्ति दैत अछि, मुदा वैह दक्षता कागचक भयसँ कमाईक सम्भावना बनबैत अछि। उपन्यास ज्ञानकेँ मुक्ति वा अत्याचारक एकरेखीय उपकरण नहि, उपयोगकर्ताक इच्छासँ बदलनिहार संसाधन बनबैत अछि। तथापि ऐतिहासिक प्रशासनक सटीक रूपक जाँच बाहरी अभिलेखसँ अलग काज अछि; उपन्यासमे कहल घटना आलोचनाक पाठ-सत्य अछि, स्वतः प्रमाणित इतिहास नहि।

## समय, कालान्तर आ पीढ़ीक अप्रत्यक्ष सम्पर्क

कलितक शैशव, दरभंगाक कचहरीक भेंट, युवावस्थाक कागच-पठन आ वृद्ध पिता संग नदीक संवाद तीव्र सारकथनमे आगाँ बढ़ैत अछि। पिता लत्तड़ चिड़ियाक पएरक रे तपर बिसरल चिह्न देखबैत कहैत छथि जे कागच झूठो राखि सकैत अछि। बहुत वर्षक बाद नन्द मजदूरक गमछामे ओहि चेतावनीक अर्थ अनुभव करैत छथि, यद्यपि ओ कलित वा लत्तड़सँ प्रत्यक्ष नहि भेटल छलाह। ई समान प्रसंग कथात्मक पीढ़ीक उत्तराधिकार अछि, ऐतिहासिक प्रत्यक्ष भेट नहि।

रिकरक कथात्मक पहिचानसँ देखला पर नन्द अपन पूर्वपुरुषक उपदेश शब्दशः सुनने बिना व्यवहारमे पुनर्गठित करैत छथि। मुदा रक्तक भीतर स्मृति बहबाक कथावाचकीय कथन साहित्यिक कल्पना अछि; जैविक वंशस्मृतिक वैज्ञानिक सिद्धि नहि। उपन्यास दार्शनिक रूपकक सहारे समयक दूरी कम करैत अछि, जकर सीमाकेँ आलोचना स्वीकार करैत अछि।

## दृष्टिबिन्दु, वर्णनक अधिकार आ स्त्रीक व्याख्या

अध्यायक आरम्भ बा-केंद्रित वस्तुपठन सँ होइत अछि, तकर बाद कलितक बाल्यकाल आ पिताक दृष्टि, फेर नन्दक भविष्यकाल आ आरुणि नन्दनक स्मरण दिस गमन होइत अछि। एतेक दृष्टिबिन्दुक क्रम पाठककेँ एकल नायकक चेतनासँ बाहर बहु-पीढ़ीक अनुभव दैत अछि। मुदा संक्रमण कई बेर कथावाचकक सर्वज्ञ व्याख्यासँ होइत अछि; पात्रक स्वतन्त्र आत्मकथा कम अछि।

बा केँ अक्षर-पठनक औपचारिक क्षमता कम अछि, मुदा पुरान कागच पहचानबाक श्रव्य, गन्धात्मक आ दैहिक क्षमता अछि। एतय स्त्रीक ज्ञानक सम्मान महत्त्वपूर्ण अछि। तथापि गन्ध मात्रसँ हस्ताक्षरक सत्य-असत्य निश्चित करबाक नैतिक वचनकेँ विशेषज्ञ दस्तावेज-परीक्षणक विकल्प नहि मानल जा सकैत। सांकेतिक दृष्टि आ संस्थागत प्रमाणक भेद आलोचनामे बनल रहबाक चाही।

## सर्जनात्मक उपलब्धि आ सीमा

भौगोलिक दहिन-बामक अनिश्चितता सँ वैधानिक सही-गलत नामक जटिलता धरि रचनाक रूपक फैलैत अछि। कलितक जीवन आ बा-केंद्रित वस्तु-दृश्य एहि विचारकेँ मानवीय आकार दैत अछि। एकटा फाटल गमछा अलग युगक अनुभवकेँ जोड़ैत अछि।

आरम्भिक लोकविश्व, कलितक जीवन, नन्दक पृष्ठभूमि आ अनेक पूर्वाभासक कारण अध्याय शिल्पगत रूपसँ घना अछि। घटनाक असर के वळ व्याख्यासँ नहि, चित्रित चरित्र-निर्णयक समयसँ बढ़ैत; एहिमे किछु कथान्तरिक सम्बन्ध घोषित बेसी अछि, विस्तृत नाटकीय दृश्य कम।

## अध्याय ३ — छपाकक हिसाबेँ

## नामक प्रश्नसँ सक्रिय अन्वेषण धरि

नन्द आरुणि पुल-निर्माण शिविरमे मृत्यु-सूची आ वास्तविक श्रमिकक अनुभवक अन्तर परखय निकलैत छथि। बिसेसरक स्त्री जूता देखबैत पूछैत छथि जे नाम लिखलासँ मृत लोक घुरि आबैत अछि कि नहि; नन्द उत्तर दैत छथि जे घुरत नहि, मुदा बिलाइतो नहि। छोटूक तीन नाम, अलग भुगतान-बही आ अनिश्चित पिता-गाम स्पष्ट करैत अछि जे व्यक्तिक पहिचान दफ्तरी खानेमे टूटि सकैत अछि। एहि विशिष्ट प्रश्नसँ अध्याय पाठककेँ शोकक अलौकिक काव्यसँ प्रमाण एकत्र करबाक श्रम दिस अनैत अछि।

नन्द “अपूर्ण नाम”क अलग पन्ना बनबैत छथि। ई छोट सम्पादकीय निर्णय नैतिक रूपसँ पैघ अछि, कारण संदेहकेँ पुष्ट सत्य बनि लिखबाक बदला ओकर स्थिति दर्ज होइत अछि। ज्ञानमीमांसक दृष्टिसँ ई अनिश्चितताक ईमानदार स्वीकृति अछि। तथापि बादमे पात पर उभरल नाम आ स्वप्नक आवाजक मिश्रणमे कथावाचकक सीमा फेर जटिल होइत अछि।

## स्त्री-मजदूरीक अनुपस्थिति आ प्रशासनिक भाषा

मुनिया, सरयू, फु लकली, रजनी, जमुना आ धनेसरीक नाम उभरैत अछि, मुदा दफ्तर परिवारक सदस्यकेँ कर्मचारी मानबाक लेल तैयार नहि। नन्दक प्रश्न—माथ पर बोरा ढोनिहार स्त्री कर्मचारी किएक नहि—भौतिक श्रम आ अभिलेखीय पदनामक बीचक विषमता उजागर करैत अछि। नारीवादी श्रम-अध्ययनमे एहि लोपकेँ केवल शब्दक भूल नहि, सुरक्षा आ मुआवजाक अधिकारसँ बाहर राखबाक संरचनात्मक स्थिति रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

मुदा नामक सभ स्त्री जीवित छथि कि मृत, से कथाक भीतरहिं अनिश्चित कहल गेल अछि। एहि भेदकेँ बिना जाँच मृत्यु-सूचीमे जोड़ि देब उपन्यासक प्रमाण-विषयक अनुशासनक विरुद्ध होयत। साहित्यिक मूल्य एतय एक बिसरल सम्भावनाक गवाहीमे अछि —समाज जकर श्रम देखैत अछि, संस्था ओकर अस्तित्व नकारि सकैत अछि।

## सुरक्षा-बही, भुगतान-बही आ पन्नाक सत्ता

सुरक्षा-बहीक छापल “संतोषजनक” टिप्पणी, एके हाथक अनेक हस्ताक्षर आ मृत्युक बादो बिसेसरक नामपर मजदूरी निकसबाक विवरण आर्थिक अभिलेखकेँ शंकास्पद बनबैत अछि। नन्द लिफाफा स्वीकार नहि करैत, सुरक्षा-जाँच आ सूचीकेँ प्रश्न करैत छथि। फू कोक सत्ता-ज्ञान सम्बन्ध एतय प्रासंगिक अछि: प्रशासनिक दस्तावेज केवल सूचना राखैत नहि, कोन जीवन मान्य होयत तकर श्रेणी सेहो निर्धारित करैत अछि।

तथापि एके हस्तलिपि वा भुगतानक प्रविष्टि जाँचक प्रारम्भिक आधार अछि, कानूनी दोषसिद्धिक एकमात्र साधन नहि। तकनीकी रूपसँ भिन्न हस्ताक्षरक पुष्टि, भुगतानक वास्तविक मार्ग आ कम्पनीक प्रतिक्रिया पाठमे पूरा नहि खुलैत। रचनाक तीक्ष्ण व्यङ्ग्य “संतोषजनक” शब्दक विरोधमे मरै त देहक उपस्थितिसँ जन्मैत अछि।

## बरखा, गोहि आ दुर्घटनाक कथन-दृष्टि

तीसरा पायापर बरखा होइत काल कागचमे काज रोकबाक आदेश अछि, मुदा राति श्रम चलैत अछि। रस्सा टूटैत अछि; नन्दक आँखि टॉर्चक इजोतमे पानिक हाथ देखैत अछि, आ एक आवाज “सरयू” सुनैत अछि। कथाक भाषा स्वयं पूछैत अछि जे उत्तर पानिसँ आयल कि हवासँ। ई सीमित दृष्टिबिन्दु पाठककेँ असाधारण घटना आ संकटजन्य अनुभूतिक बीच राखैत अछि।

तोदोरोवक संकोचात्मक अद्भुतता एहि दृश्यपर सीमित रूपसँ लागू कएल जा सकैत अछि, कारण सुनल नामक स्रोत अनिर्णीत अछि। लेकिन समूचा चन्ना गाछीक संसार बारम्बार भूत-पात्रक स्वतन्त्र क्रिया स्थापित करैत अछि। तें उपन्यासक समस्त लोकविश्वकेँ यथार्थवादी भ्रम कहि नकारब पाठकक अनुभव बिगाड़त। प्रत्यक्ष दुर्घटना, श्रुत आवाज आ अलौकिक कथन तीनूकेँ अलग राखब आलोचनाक जिम्मेदारी अछि।

## पाठीय अवधि, स्मृतिक आरम्भ आ अधूरल प्रतिरोध

जाँच, धमकी, बनावटी निरीक्षण, बरखा आ रातिक श्रम अनेक अलग दृश्यक आरोहण बनबैत अछि। “छपाक”क पुनरावृत्ति शारीरिक हिंसाक ध्वनिक रूपक अछि। अध्यायअन्तमे

नन्द डायरीक नब पन्नापर “छपाकक हिसाब” लिखैत छथि। ई वाक्य सम्पूर्ण अन्वेषणक नामकरण करैत अछि; कथाक एक घटना अभिलेख-संकल्पमे बदलि जाइत अछि।

अध्यायक शक्ति नन्दकेँ तुरन्त विजयी नायक नहि बनेनाइ अछि। हुनका जानकारी छी, भय सेहो अछि, आ संस्थागत अवरोध जीवन्त अछि। सीमा ई जे अधिकारीसभक बहुतेक कथन एक दिशाक दबाव बनैत अछि; श्रमव्यवस्थाक भीतरी मतभेद, तकनीकी जाँचक स्वतंत्र प्रक्रिया आ बाचल श्रमिकक दीर्घ आत्मकथा कम अछि।

## नैतिक निर्णय

दुर्घटनाक बाद नाम लिखबाक श्रम स्वयं कथाक गति बनैत अछि। एक अभियन्ताक पेशागत ज्ञान सामाजिक न्याय लेल उपयोगी होइत अछि, मुदा ओकर नियन्त्रण-क्षेत्र सीमित अछि। वस्तु, बही, प्रत्यक्ष श्रमिक-गवाही आ आधिकारिक टिप्पणीक असंगति मिलि कथाक प्रमाण-परीक्षा बनबैत अछि।

विश्लेषणक अन्तिम कसौटी ई अछि जे “सरयू”क पानिमे सुनाएब आ पगार-बहीमे गलत प्रविष्टिक एकहि प्रकारक निश्चितता नहि। लेखक दूनू माध्यमसँ मानवीय अनुपस्थिति देखबैत छथि; आलोचना एकर काव्यात्मक समता स्वीकार करैत तथ्यगत दर्जा अलग राखैत अछि।

## अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश

### संख्या, नाम आ सूची-निर्माणक हिंसा

सरकारी मृत्यु-सूची तीस नामपर थामल अछि, जखन कि नन्दक डायरीमे गवाह, वस्तु, आंशिक पहिचान आ कथित मृत्यु-सूचनाक आधारपर अनेक अतिरिक्त नाम जमा होइत अछि। मूल पाठमे उनचास, बहत्तर, एक सय सात आदि क्रमिक संख्या भेटैत अछि; तीन सयक व्यापक दावा सरकारी तीसक विरुद्ध प्रतिवाद अछि, मुदा अलग-अलग सब नामक समान स्तरक सत्यापन प्रस्तुत नहि। आलोचनामे अधिकृत सूचीक स्पष्ट सीमा आ अन्वेषकक अधूरल सूची दुनूकेँ एकहि श्रेणीमे नहि रखब चाही।

नन्दक सूचीमे पिता, गाम, अनुमानित उमेर, मुआवजा-स्थिति लिखल जाइत अछि; ताहि बावजूद ई कागच कोनो व्यक्तिक पूर्ण जीवनक स्थान नहि लऽ सकैत। दस्तावेजक सौन्दर्यक भीतर छिपल हिंसाक कथावाचकीय विरोध संकेत करैत अछि जे सुव्यवस्थित खाने अनुपस्थित लोककेँ सहज लुकबैत अछि। हेडे न ह्वाइटक इतिहासक भाषिक संरचना सम्बन्धी प्रश्न एतय उपयोगी अछि: व्यवस्था घटना मात्र दर्ज नहि करैत, ओकर मान्य अर्थक आकारो चुनैत अछि।

### जूता, कड़ा, स्लेट आ वस्तु-साक्षीक व्याकरण

बिसेसरक जूता, सरयूक चाँदीक कड़ा, मुनियाक बालकक स्लेट, काँचक चूड़ी, बटन, सड़ल टिकट आ ताम्र-ताबीज लेखनसँ वञ्चित लोकक पहिचानक भिन्न सांकेतिक रूप अछि। भोलाराम अक्षर नहि लिखि सकैत, मुदा वस्तुसभक लिफाफा नन्दकेँ सौंपैत अछि। भौतिक वस्तुक एहि “वर्णमाला”सँ लेखक अभिलेखकेँ केवल अक्षरसँ बाहर फैलाबैत छथि।

वस्तु मात्रक आधारपर पूरा मृत्युक मामला स्थापित नहि होइत; ओकर ठाम, स्वामित्व आ घटना-संग सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि। बिसेसरक स्त्रीक उपस्थितिमे जूता एक निजी पहिचानक समर्थ संकेत अछि; एहि निजी अर्थकेँ विधिक साक्ष्य बनेबाक लेल अलग सत्यापन चाही। साहित्यिक उपलब्धि ई अन्तरकेँ अर्थपूर्ण तनाव बनबैत अछि, यद्यपि कथा कखनो वस्तुक बोलनाइकेँ स्वतः निर्णायक सत्यसँ लगभग एक कऽ दैत अछि।

## मुआवजा, अखबारक छवि आ विश्वसनीयताक संकट

मुआवजा-वितरणमे जे तीस नाम दर्ज अछि तिनकर परिवार बजाओल जाइत छथि; बिसेसरक स्त्री छोटू, सरयू आ मुनियाक प्रश्न उठबैत छथि। मीडिया मंत्रीक प्रतिनिधिक मुस्कान दिस कै मरा करैत अछि आ धूपमे आँखि सिकोड़ल स्त्रीक छविकेँ प्रसन्नता बुझि छापैत अछि। एहि दृश्यपर दृश्यक चयन स्वयं अधिकारक रूप धारण करैत अछि: फोटो सार्वजनिक कथन बनैत अछि, मुदा ओकर मूल भाव भिन्न हो सकैत अछि।

कथावाचक पाठककेँ छविक गलत अर्थ प्रत्यक्ष बतबैत अछि, जाहिसँ पत्रकारिक दृश्य आ स्त्रीक अनुभवक बीचक दूरी तीव्र होइत अछि। मुदा एहि समूची प्रसंगमे स्वतन्त्र पत्रकारक सम्भावित प्रश्न वा पछिला सुधारक प्रक्रिया देखाओल नहि गेल। कथा मीडिया-विमर्शक एक कठोर दृष्टान्त दैत अछि, पूर्ण पत्रकारिता-अध्ययन नहि।

## अदालतक स्थगन आ संस्थागत समयक गोहि

नन्द स्थानान्तरणक बाद याचिका बनबैत छथि। सरकारी बही, सुरक्षा-नकल, धमकी आ वस्तुसभक संग मुकदमा दाखिल होइत अछि, मुदा दू मासक बाद पहिल तारीख, फेर रिकॉर्ड न आएब, वकीलक हड़ताल, न्यायाधीशक अनुपस्थिति आ लगातार स्थगनक क्रम अछि। “तारीख नाम खाइत अछि”क कथनमे रूपक नियत संस्था पर पड़ैत अछि। जेरार जेनेतक अवधिसम्बन्धी दृष्टिसँ अनेक तारीख छोट सारकथनमे समाहित अछि, मुदा प्रतीक्षाक राजनीतिक पीड़ा एहि संक्षेपमे घनी होइत अछि।

लोक-अदालतक कबड्डी आ औपचारिक न्यायालयक पारी एक-दोसराक रूपक बनैत अछि: एकमे सीमा छू बाक समय गनल जाइत, दोसरमे जीवनक वर्ष। तथापि न्यायिक विलम्बक रूपक ककरा विरुद्ध कोन विधिक कर्तव्य साबित करैत अछि, तकर उत्तर नाटक स्वतः नहि देत। अदालतमे आरोप, सुनवाई आ दोषनिर्णयक अलग अवस्थाकेँ मानब आवश्यक अछि।

## माए, बा, बालकसभ आ गवाहक सामूहिक विस्तार

बिसेसरक पत्नी कागचक सूचीक बाहरक लोकक नाम पुकारै त छथि; बा “हाजिर”क उत्तर दैत छथि; नन्द गामक बच्चासभकेँ बिसेसर, सरयू, मुनिया आदि नाम उच्चारण

सिखबैत छथि। एतय सार्वजनिक स्मरण अदालतक निर्णयसँ अलग गति लैत अछि। मौरिस हाल्बवाक्सक सामूहिक स्मृति अनुरूप स्मरण एकल मस्तिष्कमे नहि, बारम्बार साझा उच्चारण आ स्थल-द्वारा निर्मित होइत अछि।

किंतु स्मृतिमे पहुँचबाक अधिकारो प्रश्नसँ मुक्त नहि। छोटूक असली नामक अनेक विकल्प भेटैत अछि; नन्द तीन प्रति बनबैत छथि—बा, वकील आ पीपरक जड़ि लग। प्रमाणित, संदिग्ध आ कल्पनात्मक नामक भेद राखनाइ आवश्यक अछि। अध्याय स्वयं एहि विविधताक उल्लेख करैत अछि, जे ओकर आलोचनात्मक सामर्थ्य बढ़बैत अछि।

## समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

आर्थिक परियोजनाक चमकीला उद्घाटन आ श्रमिकक बिसरल नामक टकराव एहि अध्यायक मूल शक्ति अछि। जूता आ पात, वकीलक टाइपराइटर आ बच्चाक कण्ठ, अखबारक छवि आ स्त्रीक प्रश्न—ई जोड़ीसभ अलग साक्ष्य-माध्यमक अधिकार जाँचैत अछि। जलसमाधि केवल प्राकृतिक मृत्यु नहि, सरकारी अनुपस्थितिक राजनैतिक निर्माण बनैत अछि।

सीमा लम्ब प्रक्रियाक शीघ्र सारकथन, अनेक संस्थागत पात्रक नैतिक एकरूपता आ गिनतीक आन्तरिक अनिश्चितता अछि। पाठक जँ तीस, अतिरिक्त अज्ञात नाम आ तीन सयक व्यापक दावाकेँ अलग रखैत अछि तँ अध्यायक नैतिक बल घटैत नहि; उलटे एकर प्रमाण-पद्धति अधिक स्पष्ट बनैत अछि। अध्याय ० सँ ४: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन माटिक प्रस्तावना सँ नदीक मृत्यु-दृश्य धरि

अध्याय ०मे जल, श्रम आ नामक सांस्कृतिक शब्दकोश बनैत अछि; अध्याय १मे बिसेसरक खसबाक दृश्य ओहि शब्दसभकेँ रक्तमांस दैत अछि। अध्याय २मे गमछा आ औपनिवेशिक कागच पीढ़ीक इतिहास जोड़ैत अछि। अध्याय ३मे जाँचक प्रक्रिया प्रारम्भ होइत अछि, आ अध्याय ४मे तीस नामक सीमा न्यायिक संघर्षक कारण बनैत अछि। ई क्रम केवल घटना-संग्रह नहि, स्मृतिसँ प्रमाण बनबाक धीमी यात्रा अछि।

## दू समानान्तर संस्थाक सीमा

चन्ना गाछीक लोक-अदालत लोप पबैत नामकेँ बचबैत अछि; औपचारिक कार्यालय, मजदूरी-बही आ न्यायालय अलग नियमसँ काज करैत अछि। अलौकिक गवाही संवेदना आ प्रश्नक आरम्भ देइत अछि, मुदा कानूनक अन्तिम परिणाम नहि। सरकारी बही दस्तावेज दैत अछि, मुदा ओकर प्रविष्टि पूर्वग्रह आ दमनसँ मुक्त नहि। दूनू पद्धतिक जाँच आवश्यक अछि, कोनो एकक अन्ध स्वीकृति नहि।

## कथन-अधिकार आ सामाजिक प्रतिनिधित्व

बा, नन्द, बिसेसरक स्त्री, कलित, बूढ़बा आ छोटू एकहि कथाभूमिमे अछि, मुदा सभकेँ समान वाणी-अवधि नहि भेटैत। मुख्य नैतिक व्याख्या कथावाचक आ बूढ़बाक नियंत्रणमे अधिक अछि। सबसँ कम मान्य श्रमिकक वास्तविक निर्णय, स्त्री-मजदूरक स्वतन्त्र एकालाप आ सरकारी कार्यालयक भीतरी असहमतिक खुलल दृश्य बहुस्वरताक अगिला कसौटी अछि।

## अध्याय ५ — तारीखक गोहि

### न्यायालयक स्थानरूपक आ समयक हानि

नन्द आरुणि आ अधिवक्ता देवकीनन्दन चौबे जिला अदालतक बरामदामे पहुँचैत छथि। भवनक काई, फाइलक लाल फीता, गिट्ठ आ तंग कोठली पोखरिक जलजाल सन देखाओल गेल अछि। याचिकामे अनेक अधूरल मृत्यु-पहिचान “अन्य अज्ञात मृतक”क बारह पंक्तिमे सिमटि जाइत अछि। प्रारम्भमे भौतिक पोखरिक गोहि न्यायालयक तारीखमे रूपान्तरित होइत अछि; ई संस्था-रूपक कथाक पुरान जलसमाधिसँ प्रत्यक्ष संवाद करैत अछि।

जेनेतक आख्यान-अवधिक दृष्टिसँ दोसरसँ दसमी तारीख धरि अनेक बरखक विलम्ब छोट-छोट वाक्यमे समेटल गेल अछि। मुदा बिसेसरक पत्नी तीसरी तारीखपर भाड़ाक अभावसँ नहि आबि सकैत छथि—एहि छोट घटना द्वारा सारकथनक भीतर गरीबक जीवनकालक ठोस लागत उभरैत अछि। फाइलक समय आ जीवित परिवारक समय बराबर नहि; विलम्ब प्रशासनक तटस्थ क्रिया नहि, असमान हानि अछि।

### सत्यव्रतक उद्भव आ वैचारिक स्वाधीनता

सरकारक कनिष्ठ अधिवक्ता सत्यव्रत मेहता आधिकारिक पंक्ति पढ़बाक लेल उठैत छथि, मुदा बिसेसरक जूता देखिकऽ रुकि जाइत छथि। ओ तत्काल समूचा सरकारी पक्ष नहि छोड़ैत; केवल रिकॉर्ड मँगएबाक अनुरोध रखैत छथि। ई छोट प्रतिक्रिया हुनकर चरित्रक वैचारिक आरम्भ अछि। सरकारी स्थानमे रहितो प्रश्न पूछबाक क्षमता कानूनक भीतर सम्भावित नैतिक स्वतन्त्रताक प्रमाण बनैत अछि।

तथापि वरिष्ठ अधिकारीक संकेतपर सत्यव्रत बादमे चुप बैसि जाइत छथि। एहिमे नायकत्वक सहज विजय नहि; पदगत निर्भरता आ अन्तःकरणक संघर्ष अछि। बाख्तिनक संवादधर्मिता एहि दृश्यमे उपयोगी अछि, कारण राज्यक आधिकारिक भाषा एक कर्मचारीक भीतरहिं प्रतिवाद सुनैत अछि। दुनू स्वर अभी समान शक्तिशाली नहि; मौनक स्थिति चरित्र-विकासक वास्तविक सीमा अछि।

## चन्द्रपाल आ बटुकनाथ: संस्थागत आछादन

चन्द्रपाल बत्रा बरामदामे अपन पहुँच बेचबाक प्रस्ताव रखैत अछि; बटुकनाथ हरिहरन विदेशी कम्पनीक परोक्ष सलाहकार रूपमे प्रक्रियाक गति मद्धिम बनेबाक चेष्टा करैत अछि। सभक कहबाक भाषा नम्र, मुदा मृतकक नामक प्रत्यक्ष प्रश्न टारबाक व्यवस्था स्पष्ट अछि। न्यायकेँ रोकबाक बदला अगिला तारीखक अन्तहीन सन्नाटा बनायब सत्ता-प्रयोगक सूक्ष्म शिल्प अछि।

कथावाचक बहुत पहिने सँ चन्द्रपालक भविष्यक डिजिटल अपराधक संकेत दैत अछि। ई अग्रकथन पाठककेँ प्रारम्भिक आर्थिक दलालीक परिणाम बुझबैत अछि, मुदा पात्रक स्वतन्त्र अनिश्चित भविष्य घटबैत अछि। दोषक कानूनी निश्चितता परिपक्व निर्णयसँ अलग प्रश्न अछि: उपन्यासक भीतर परोक्ष सल्लाह, संवाद आ आचरण अपराधक सम्भावना रचैत अछि; विधिक दोषसिद्धि स्वत: घोषित नहि मानल जायत।

## वस्तु-साक्ष्य, न्यायिक अनुवाद आ प्रतिलिपिक राजनीति

बटुकनाथ जूता, चूड़ी आ ताबीजकेँ भावनात्मक वस्तु कहि अस्वीकार चाहैत अछि, मुदा ओकरा मालखानामे नम्बर आ मोहर सहित प्रवेश भेटैत अछि। एतय स्त्रीक श्रमक कड़ा आ मरल मजदूरक जूता परस्पर भिन्न प्रमाणपद्धतिक बीच यात्रा करैत अछि। मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक विचारसँ सुनबाक असमानताक प्रश्न उठैत अछि: ककर वस्तुकेँ आधिकारिक अर्थ देल जाए?

जखन चौबेक दफ्तरमे कागच अदला-बदली होइत अछि, सत्यव्रत अनेक प्रतिलिपि रखबाक सुझाव दैत छथि। ई काज केवल कथानकक चतुराई नहि, प्रमाणक एकाधिकारिक नियन्त्रणक प्रतिरोध अछि। मुदा प्रतिलिपि स्वयं मूल-प्रमाणक स्रोत, समय आ प्रामाणिकताक जाँचसँ मुक्त नहि। कथा प्रमाणक लोकतन्त्रीकरण सुझबैत अछि, ओकर वैज्ञानिक पद्धति सम्पूर्ण विस्तारसँ नहि देत।

## नव कबड्डी-पारी आ आलोचनात्मक परिणाम

भूतसभक खेलमे विपक्षी पक्ष “रिपोर्ट नहि”, “गवाह नहि”, “अगिला तारीख” बाजैत अछि, आ पहिल पक्ष बिसेसरक नाम उच्चारबाक साँस बचबैत अछि। न्यायालयक विलम्ब

लोकक्रीड़ाक संरचनामे बदलैत अछि; खेल पढ़निहारकेँ कागचक सुक्खल दिनचर्या दैहिक तनावक रूपमे अनुभूत करबैत अछि। बिसेसरक जूतासँ टपकल पानिक “छपाक” अदालतक मालखाना आ नदीक बीच स्मृतिक सूत जोड़ैत अछि।

अध्यायक मूल शक्ति कानूनी प्रक्रियाक समयकेँ व्यक्तिक आयुक क्षति बनायब अछि। प्रमुख सीमा न्यायालयक बहुविध कारणसभकेँ बहुतेक एक दुष्ट व्यवस्था रूपमे समेटब आ पात्रसभक वैचारिक रूपरेखाकेँ पहिने सँ निश्चित कऽ देब अछि। एतय न्याय-आकांक्षा वास्तविक अछि, मुदा अदालती सफलताक परिणाम खुलल रहैत अछि।

# अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स

## दानदाता-सम्मेलन आ नैतिक भाषा-निर्माण

हार्वर्डक सभागारमे ईरा आरुणि, प्रोफे सर एलिना ग्रेव्स आ एडवर्ड ब्रूमक कार्यक्रम एक वैश्विक नैतिकता-मंच बनैत अछि। नाम, संस्था आ देश लिखल परिचय-पत्रसँ “आत्माक दाग” अनुपस्थित रहबाक वर्णन विडम्बना रचैत अछि। ब्रूमक कम्पनीक बदलबैत नाम—निर्माण, स्वास्थ्य, रक्षा, डिजिटल विश्वास—कथानकमे संस्थागत निरन्तरताकेँ नवा आवरण दैत अछि। औपचारिक प्रस्तुति आ श्रमिक-मृत्युक स्मृतिक बीचक अन्तर आलोचनाक वास्तविक केन्द्र अछि।

फू कोक सत्ता-ज्ञान सम्बन्धमे सम्मेलनी भाषा केवल छल-कपट नहि, वैधता बनेबाक औजार बनैत अछि। फोटो, प्रस्तुति आ अनुदानदाताक प्रशंसा मिलि सार्वजनिक नैतिक परिचय गढ़ैत अछि। मुदा ई विवेचन काल्पनिक संस्थाक पाठीय क्रियापर लागू अछि; वास्तविक हार्वर्ड वा कोनो वास्तविक निगमक विरुद्ध उपन्यासक दावाकेँ बाह्य प्रमाण बिना ऐतिहासिक आरोप नहि बनाओल जाएत।

## ईराक प्रश्न आ कर्तृत्वक निर्माण

ईरा सभागारक पाछाँ बैसलि बचपनमे सुनल छपाकक कथाकेँ नवा दृष्टिसँ मोन पाड़ैत अछि। पहिने लोक-स्मृति ओकरा अतिरं जित रूपक बुझाइत छल; आब ब्रूमक पुलक दृश्य आ पुरान मृत्यु-सूचीक असंगति ओकरा प्रश्न उठेबाक कारण दैत अछि। एक विद्यार्थी प्रश्न पूछैत छथि—साधारण नैतिकता भाषणक भीतर विशिष्ट मृतकक कागच कतय अछि? एहि प्रश्नसँ पात्र अभिभूत श्रोता सँ अनुसन्धानशील व्यक्ति बनैत अछि।

मुदा प्रश्नक स्वतन्त्र जाँच एखन आरम्भिक अछि। ईरा वेबसाइटक विवरण खोलैत छथि, नैतिकता-केन्द्रकेँ छोट पत्र पठबैत छथि, आ उत्तरक प्रतीक्षा करैत छथि। एकरा सम्पन्न अनुसन्धान नहि कहब चाही। ओकर सक्रियता ज्ञानक आग्रहमे अछि; निष्कर्षक प्रमाणिकता भविष्यक पाठमे जाँचबाक विषय रहत।

## तीन स्थल, तीन काल-धारा

हार्वर्डमे ब्रूमक मंच, दिल्लीमे सत्यव्रतक सरकारी फाइल आ दूर सँ राघव–चन्द्रपालक संकेत तीन कथा-स्थान एकसंग चलबैत अछि। कथावाचक एक स्थल छोड़ि दोसर दिस जाइत अछि; पात्रसभ सब घटना परस्पर जनैत नहि। जेनेतक दृष्टिबिन्दु-सिद्धान्तमे कथावाचकक उपलब्ध जानकारी पात्रक सीमित ज्ञानसँ पैघ अछि। ई असमानता पाठककेँ विडम्बनात्मक पूर्वबोध दैत अछि।

अध्यायअन्तमे तीन ठाम तीन काज शुरू होएबाक संयोजन रचनाक बहुस्थानिक गति अछि। मुदा ईरा, सत्यव्रत आ चन्द्रपालक नैतिक दिशा काफी स्पष्ट ठहराओल गेल अछि। आगामी संघर्षक शिल्पगत शक्ति तब अधिक होयत जखन एहि पात्रसभक आन्तरिक द्विविधा आ अप्रत्याशित निर्णय पाठकक सोझाँ अलग विकसित होयत।

## भीजल पानि, रेत आ रूपकक अतिक्रमण

ब्रूमक “मानक” उच्चारणपर मेजपर बून्द खसब, पुस्तकालयमे रे तक पतली रेखा आ सरयूक अदृश्य पएरक निशान समुद्रपारक चमकदार स्थानमे नदीक साक्ष्य प्रवेश करबैत अछि। दृश्यसभ लोकविश्वक अलौकिक व्यवहारक विस्तार अछि। कथाक प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट: दानक भाषासँ पुरान मृत्यु सदा बाहर नहि रहि सकैत।

तथापि बून्दक वास्तविक स्रोत आ रे तक उपस्थितिक कारणकेँ कथावाचक सदा निश्चित नहि करैत। कतहु “जेना” आ पात्रक अनुभूति रचना केँ अनिश्चित रखैत अछि। ओहि प्रत्येक चिन्हक ठोस भौतिक पुष्टि आलोचनाकेँ नहि गढ़बाक चाही। अद्भुत दृश्य संस्थागत छलक प्रतीकात्मक प्रश्न अछि, न्यायिक प्रमाण नहि।

## अध्यायक मूल्याङ्कन

वैश्विक नैतिकता-विवेचन आ गामक नाम-स्मृतिक मिलान उपन्यासक क्षेत्रीय सीमा विस्तार करैत अछि। ईराक प्रश्न कथाक ज्ञान-विन्यासमे नव स्वाधीन आवाज जोड़ैत अछि। सत्यव्रतक निजी संशय एहि आवाजक भारतीय कानूनी प्रतिध्वनि अछि।

सीमा ई जे नाटकीय प्रस्तुति बीच ब्रूमक आत्म-छवि आ अनुदान-निर्भर केन्द्रक जटिलता बहुत प्रत्यक्ष व्यङ्ग्य बनि जाइत अछि; स्वतन्त्र प्रतिपक्षी तर्कक विस्तार अपेक्षाकृत सीमित अछि। मुदा नैतिक भाषणकेँ नब प्रमाणसँ चुनौती देबाक रचनात्मक परिस्थिति प्रभावी अछि।

## अध्याय ७ — श्वासक भार्व

# महामारीमे श्वासक मूल्य आ जीवित देह

२०२०क महामारीक कथा दिल्लीक बरामदामे एम्बुलेंसक आवाज, अनन्याक शीशापर साँसक धुँध आ अस्पतालक बाहर वृद्ध रोगीक प्रतीक्षासँ खुलैत अछि। बा रोग आ ओकर चारूकात बनल लाभक खेलमे भेद रखबाक आग्रह करैत छथि। ओ कहैत छथि जे रोगसँ मरल, ऑक्सीजन नहि भेटलासँ मरल आ उपचारक अन्य कारणसँ मरल लोकक नाम अलग राखू। श्रेणी-निर्माण एतय नैतिक लेखनक हिस्सा अछि।

श्वास केवल जैविक क्रिया नहि, सार्वजनिक संसाधनक उपलब्धतासँ जुड़ल अनुभव अछि। अस्पतालक बिस्तरक सूची आ दरबाजाक “ठाम नहि”क विरोध उपन्यासक पहिनुक बहीविषयक प्रश्न दोहरबैत अछि। मुदा रोगक कारण, उपचार-अभावक कारण आ आर्थिक शोषणक जिम्मेदारी सटीक चिकित्सकीय अन्वेषणसँ निर्धारित होयत; रचनाक संवेग ओकर स्थान नहि लैत।

# गोप कुमारक लेखापरीक्षा आ अपूर्ण प्रमाण

गोप जीवनरेखा बायो-लॉजिस्टिक्सक आपूर्ति-बहीमे एके सिलिण्डर अनेक जिलामे एकहि दिन दर्ज होएबाक विसंगति देखैत अछि। “शव-प्रबन्धन किट”क भारी मात्रा आ छोट प्राप्ति-प्रमाणक अन्तर ओकरा पुरान तीस नामक स्मृति दिस लऽ जाइत अछि। संख्याक पुनरावृत्ति नैतिक भय जगबैत अछि; मुदा दुनू सूचीमे समान दोष सिद्ध होइत अछि, से एक मात्र अंकसँ नहि कहि सकैत छी।

गोप अनेक प्रतिलिपि तैयार करैत अछि, अनुपस्थित संलग्नक खोजैत अछि, आ पुरान “एन-आर-७७” कोडमार्फ त नन्दक पन्नाक निशान तक पहुँचैत अछि। ई डिजिटल अभिलेखक नवा कथास्थल अछि। कागचक मूल, प्रतिलिपिक स्रोत, कोडक अर्थ आ अनुपलब्ध फाइलक जाँचक प्रश्न खुलल अछि। उपन्यास जाँचक प्रेरणा सशक्त रूपमे गढ़ैत अछि, मुदा एतय सम्पूर्ण वित्तीय न्याय-परीक्षा नहि देत।

## समानान्तर कथन आ नगर–गामक साक्ष्य

दिल्लीमे आरुणि, गोप आ सत्यव्रतक अलग कार्य चलैत अछि, जखन कि चन्ना गाछीमे भूतसभा महामारीक मृत्युकेँ नवा सूचीमे बाँटैत अछि। एक स्थलपर अस्पतालक अन्दर श्वासक संकट अछि, दोसरपर कागचक आपूर्ति-संख्या। कथावाचक एकहि घटनाक अलग दृश्यसँ सामाजिक अनुभवक परत बनबैत अछि।

जेनेतक आवृत्तिक दृष्टिसँ पुरान “तीस” नव खातामे घुरि अबैत अछि। पाठक एकर साम्यसँ ई बुझैत अछि जे संस्थागत लोप भिन्न संकटमे पुनरावृत्त भऽ सकैत अछि। मुदा समान रूपक अलग ऐतिहासिक घटनाकेँ पूर्णतः एक नहि बनबैत; श्रम-दुर्घटना आ स्वास्थ्य-आपातक विशिष्ट कारण अलग पढ़बाक चाही।

## श्वास-खेल आ रूपकक भावनात्मक तीव्रता

भूतसभक कबड्डी एतय श्वास-खेल बनैत अछि। विपक्ष “बेड नहि”, “दवा नहि”, “भुगतान पहिने” बजैत अछि। जीवित लोकक हवा कम पड़बाक घटना मृतकक खेलमे फेर कहल जाइत अछि। ई दृश्य सामाजिक भाषा केँ शारीरिक लयमे उतारै त अछि, जाहिसँ अभावक प्रशासनिक शब्द प्रत्यक्ष भय बनैत अछि।

तथापि खेलक नियमक पुनरावृत्ति पहिनुक तारीख-कबड्डीसँ मिलैत अछि। समान संरचना थीमक निरन्तरता बनबैत अछि, मुदा नब संकटक दृश्यात्मक अनन्यता कम करि सकैत अछि। महामारीक व्याप्ति, परिचर्या-श्रम आ उपचारक चिकित्सकीय सूक्ष्मता लेल अधिक स्वतन्त्र पात्र-अनुभव उपयोगी होयत।

## समेकित मूल्याङ्कन

अध्याय घरक साँस, अस्पतालक सूची आ कम्पनीक खातेकेँ एक कथाजगतमे जोड़ैत अछि। अनन्याक प्रश्न मानवीय स्तर पुनर्स्थापित करैत अछि, आ गोपक अनुसन्धान “श्वास”केँ बाजारक निराकार पदसँ अलग करैत अछि।

साहित्यिक सीमा निगम-षड्यन्त्रक शीघ्र नैतिक निश्चितता आ संकटग्रस्त परिवारक लम्ब उपचार-अनुभवक अपेक्षाकृत कम विस्तार अछि। विश्लेषणक कठोरता लेल खाताक संदेह आ दोषक पुष्ट निर्णयक भेद राखब आवश्यक अछि।

## अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि

### आरम्भिक जीतसँ ऋणक आवर्त धरि

उज्ज्वल झा “राजा-राति” नामक डिजिटल खेलमे पहिने छोट जीत पबैत अछि आ मिठाइ लऽ घर अबैत अछि। तकर बाद हार, दुगुना दाँव, ऋण आ धमकीक आवर्त ओकर दिनचर्या बदलैत अछि। आँगनमे देविकाक देखल चुप्पी, फोनक नीला उजास आ बन्द कोठली आर्थिक लतकेँ घरेलू अनुभूतिक रूपमे प्रकट करैत अछि। रचना खेलक नियमक तकनीकी दस्तावेज नहि; कथनक केन्द्र भयक बढ़ैत निजी भार अछि।

सम्भावित मनोवैज्ञानिक विश्लेषणमे उज्ज्वलक लाज, जुआक प्रलोभन आ अपराधीक धमकी अलग कारण अछि। कोनो एकरेखीय “कमजोर व्यक्तित्व”क कारण त्रासदी बुझब उचित नहि। लेखक प्रारम्भिक लाभक लोभक संग कर्जक वास्तविक बाध्यता आ नकली अधिकारक भय जोड़ैत छथि।

### नकली अधिकारीक कथन आ भाषिक प्रभुत्व

फोनपर बाजनिहार नकली अधिकारी राष्ट्र, गिरफ्तारी, हवाला आ जाँचक शब्दावली उपयोग करैत अछि। उज्ज्वल कानूनक अर्थ नहि बुझैत, मुदा पुलिसक सामाजिक डर बुझैत अछि। एहि ज्ञान-असमानतासँ छलक सामर्थ्य जन्मैत अछि। फू कोक सत्ता-विमर्श एतय भूमिका निभबैत अछि: भाषाक आधिकारिक स्वर बिना वास्तविक अधिकारक सेहो शरीरक व्यवहार नियन्त्रित करि सकैत अछि।

मुदा फोनपर कहल आरोप स्वयं प्रमाणित कानूनी घटना नहि। जँ एकरा “डिजिटल अरेस्ट” कहल गेल अछि तँ ओ अपराधीक रचल भय-नाटक अछि, अदालतक वास्तविक आदेश नहि। आलोचना पात्रक विश्वास, अपराधीक छल आ कथावाचकक उपलब्ध सूचना अलग रखैत अछि।

## मुन्नाक खाता, गोपक चित्र आ अनेक स्तरक जिम्मेदारी

मुन्ना पासवानक खातामे रकम अबैत अछि आ दलालक कहला अनुसार आगाँ भेजल जाइत अछि। कथा बतबैत अछि जे मुन्ना सम्पूर्ण मार्ग नहि जनैत। गोपक स्क्रीनपर भुगतान-द्वार, राघव सोमानी, लाउ किन-हंग आ “सामुदायिक नवाचार निधि” धरि श्रृंखला बनैत अछि। एहि आर्थिक नक्सामे कर्तृत्वक अलग-अगल स्तर अछि—शिकार, अनभिज्ञ मध्यस्थ, सम्भावित सङ् गठक आ लाभग्राही।

कम्प्यूटरपर देखल रेखा पूर्ण न्यायिक वित्तीय परीक्षण नहि। खातेधारीक ज्ञान, अनुमति, वैध कारोबार आ अन्तरराष्ट्रीय मार्गक स्वतंत्र पुष्टि अलग काज अछि। एकरा चिन्हित करैत लेखकक मूल नैतिक आग्रह—शिकारक नाम अपराधीक सूचीमे निहुँसक नहि राखू—अधिक स्पष्ट होइत अछि।

## देविकाक गवाही आ शोकक प्रतिवर्णन

उज्ज्वलक देह बलानक किनारपर भेटैत अछि; ओकर थारी घरमे रहि जाइत अछि। देविका अपन भाइकेँ अपराधी नहि, धमकी आ लुटक शिकार कहैत भिडियो संदेश पठबैत अछि। ई परिवारक आवाज मौन दफ्तरी पदनामक विरुद्ध ठाढ़ अछि। सामूहिक स्मृतिक अवधारणामे मृतकक नाम व्यक्ति-परिवारक सामाजिक सम्बन्धसँ नवा अर्थ पबैत अछि।

तथापि मृत्यु-प्रसंग अत्यन्त संवेदनशील अछि। घटना-क्रमक पाठ उज्ज्वलक विपत्ति चित्रित करैत अछि, मुदा ओकर मानसिक अवस्थाक हर कारण निश्चित करबाक पूर्ण साधन नहि। अपराधक दोष, आर्थिक दबाव आ आत्म-हानिक बीच प्रत्यक्ष कारण-श्रृंखला अपराध-जाँचक बिनु अन्तिम रूपमे नहि बाँधल जाएत। कथा एक जीवनक क्षति पर शोक आ समाजक दायित्व उत्पन्न करैत अछि।

## कबड्डीक पुनरावृत्ति आ बदलैत कथात्मक देह

उज्ज्वलक आत्मा चन्ना गाछीमे पहुँचैत अछि तँ हाथमे फाटल मोबाइल अछि। बूढ़बाक प्रश्न “नाम?” आ उज्ज्वलक उत्तरक फेर-उच्चारण मृतकक लाजक कथाकेँ मान्यता दैत अछि। पुरान जलसमाधि पानिमे देह खसबाक प्रसंग छल; आब परदा आत्म-पहिचान आ

भविष्यक सुरक्षा खाइत अछि। ई प्रतीकात्मक विस्तार कथाक शीर्षककेँ आधुनिक अर्थ दैत अछि।

मुख्य उपलब्धि नव डिजिटल संकटकेँ पूर्ववर्ती लोकखेलक भाषामे रूपान्तरित करब अछि। सीमा ई जे रूपकक पुनरुक्तिसँ अपराध-जालक तकनीकी जटिलता संकुचित होइत अछि। तथापि देविकाक गवाही आ उज्ज्वलक “हम चोर नहि छी”क स्वर कथाक नैतिक ऊँचाई बनबैत अछि।

## अध्याय ९ — देहक बाजार

### स्वतन्त्र सहमति आ बाध्यताक अन्तर

गोप कुमार उज्ज्वलक फोनसँ होटल, विमानयात्रा, भुगतान आ संक्षिप्त व्यक्ति-सङ् के तवला फाइल खोलैत अछि। रमैय्या ओकरा सावधान करैत अछि जे नौकरीक लालच, भूख, ऋण, पासपोर्टक बन्धक आ भयक बीच धके लल स्त्रीक अनुभवकेँ “व्यापार”क स्वेच्छामूलक भाषा देब अनुचित अछि। ई संवाद शाब्दिक सूक्ष्मता मात्र नहि, सहमतिक वैध अर्थक संघर्ष अछि।

स्त्रीवादी आलोचनामे स्वायत्त निर्णयक अर्थ स्पष्ट, सुरक्षित आ दबावमुक्त विकल्पसँ जुड़ैत अछि। फूलमतिक अनपढ़ल अनुबन्धपर औंठा देबाक दबाव एहि कसौटीपर प्रश्न उठबैत अछि। मुदा उपन्यासक व्यक्तिगत दृश्यसँ प्रत्येक सम्बन्धित संस्थाक अपराध सिद्ध मानब नहि; दस्तावेज, धमकी आ प्रत्यक्ष गवाहीक अलग स्तर अछि।

### फूलमतिक नामक पुनरुद्धार आ दृष्टिबिन्दु

मधुबनीक बस-ठहराव सँ नौकरीक भरोसापर आनल फूलमति होटलमे “एफ०एम०” संक्षेप बनि जाइत छथि। फूलमति अपन नाम पूर्ण कहि औंठा देबासँ इन्कार करैत छथि। ई छोट कथन सम्पूर्ण उपन्यासक नाम-पुनर्प्राप्ति परम्पराकेँ जीवित स्त्रीक वर्तमान अधिकारमे उतारै त अछि। पहिनुक श्रमिकक मृत्यु-बाद नाम उचारल जाइत छल; एतय नाम जीवित देहक सुरक्षा लेल उच्चारित होइत अछि।

कथन फूलमतिक भयसँ भीतरक अनुभव आ बाहरी खाता/फोनक प्रेक्षण दूनू राखैत अछि। हुनकर नानीक प्रतिबिम्ब अन्तर्मुखी लोकस्मृतिक सहारा अछि, मुदा एकरा भौतिक रूपेँ सिद्ध अलौकिक साक्षी नहि बनाओल जाएत। फूलमतिक प्रत्यक्ष वचन अधिक मजबूत आत्म-अधिकारक प्रमाण बनैत अछि।

## संस्थानक छवि आ भवनक दू मंजिलक विडम्बना

मालविका ग्रीनक “महिला गरिमा संवाद” निचला सभागारमे चलैत अछि, जखन कि ऊपरक तलपर फूलमतिक देहपर दबाव अछि। सौम्या रामनाथन तैयार भाषण छोड़ि दरबजाक पारक वास्तविक गरिमाक प्रश्न उठा दैत छथि। भवनक ऊर्ध्वाधर विभाजन कथावाचकीय विडम्बना अछि: सार्वजनिक नैतिकता नीचे प्रदर्शित, अनौपचारिक हिंसा ऊपर गोपनीय।

ई शिल्प मंच आ परदेपाछाँक नाटकीय द्वैत रचैत अछि। बाख्तिनक द्विस्वरीय वाणीक दृष्टिसँ “गरिमा” शब्द दू विरोधी व्यवहारमे प्रयोग होइत अछि। तथापि सामाजिक सम्पूर्ण संस्थाकेँ एक दुष्ट-नायिका मात्र बनायब जटिल वास्तविकता सरलीकृत करि सकैत अछि; उपन्यास स्वयं सौम्याक प्रतिवादक माध्यमसँ संस्थागत क्षेत्रमे अन्तरसम्भावना देखबैत अछि।

## डिजिटल गवाही आ साक्ष्यक नैतिक सीमा

गोपक निकट संदेशक समय-मुद्रा, दरबजाक खुलब-बन्द होएब, भुगतानक मिलान आ कथित मेटाओल संवादक संकेत अबैत अछि। सौम्या आ पत्रकारसभक पहुँच, फोनक प्रसारण आ फूलमतिक सार्वजनिक उच्चारण मिलि तत्काल सामाजिक दबाव रचैत अछि। मुदा तकनीकी विवरणमे स्पष्ट दृश्य नहि, अनेक ठाम केवल समय-सङ् के त अछि; एहि असमानताकेँ सीधा प्रत्यक्ष वीडियो-प्रमाण मानब अनुचित।

खास प्रश्न निजता अछि। हिंसाक शिकार स्त्रीक पहिचान सार्वजनिक करब ओकर सुरक्षा, इच्छा आ भविष्यक जीवनपर प्रभाव दऽ सकैत अछि। उपन्यास नामक पुनर्प्राप्तिक उत्सव मनबैत अछि; आलोचनामे नाम सुरक्षित राखबाक अधिकार आ सार्वजनिक प्रसारणक सहमति अलग परखबाक चाही।

## मूल्याङ्कन: मृत्यु-स्मृतिसँ जीवितक अधिकार धरि

अध्याय फूलमतिक स्वतन्त्र निर्णयकेँ कथा-कर्मक केन्द्र बनबैत अछि, न कि ओकरा मात्र असहाय दृश्य रखैत अछि। हुलासीक पुरान आरोप-स्मृति, सौम्याक मंच-हस्तक्षेप आ

देविकाक उज्ज्वल-स्मृति स्त्रीसभक अनुभवकेँ भिन्न कालमे जोड़ैत अछि। पानिडुब्बीक तारमे उलझल झोंटा नव परदाक भयक प्रभावी छवि अछि।

सीमा त्वरित प्रसारणसँ बचाव, सामाजिक प्रतिध्वनि आ न्यायक सम्भावित आरम्भ एकरेखीय सफलताक प्रभाव देनाइ अछि; फूलमतिक बादुक सुरक्षा, आवास, आय आ उपचारक दीर्घ कठिनाइ एतय विस्तार नहि पबैत। साहित्यिक उपलब्धि ई जे “जलसमाधि” शब्द देहक मृत्यु सँ जीवितक सामाजिक अदृश्यता धरि अर्थविस्तार करैत अछि। अध्याय ५ सँ ९: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन तीन संस्थागत संकट आ कागचक स्वर

अध्याय ५मे अदालत मृत्यु-सूचीकेँ “अन्य” बनबैत अछि; ६मे दानदाता मञ्च विशिष्ट पीड़ितकेँ सामान्य नैतिकताक वाक्यमे समेटैत अछि; ७मे आपूर्तिक बही श्वासक संकटकेँ सङ्ख्यामे लुकबैत अछि; ८मे खाता आ नकली अधिकारीक भाषा युवककेँ अपराधी-जेकाँ डरबैत अछि; ९मे “स्वैच्छिक अनुबन्ध” जीवित स्त्रीक सहमति हेरबैत अछि। पाँचू ठाम भाषाक पदनाम जीवनक वास्तविक अर्थक स्थान लेबाक प्रयास करैत अछि।

## व्यक्तिगत गवाहीक पाँच स्वर

सत्यव्रतक रिकॉर्ड माँगब, ईराक प्रश्न, गोपक प्रतिलिपि, देविकाक भाइक पक्षमे कथन आ फूलमतिक अपन पूरा नाम कहल—ई पाँचो काज एकहि नैतिक लक्ष्यक अलग माध्यम अछि। मुदा दुनू भाषाक टकरावमे सभ काजक प्रमाणशक्ति एक समान नहि: प्रश्न, अभिलेख, पारिवारिक गवाही, पीड़िताक प्रत्यक्ष कथन आ अदालतक निर्णय अलग सत्यापन-स्तर अछि।

## कालक्रम, पुनरावृत्ति आ शिल्पगत सीमा

पहिनुक नदी-पुलक “छपाक” क्रमशः अदालतक तारीख, अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनी बून्द, ऑक्सीजनक अभाव, मोबाइलक भय आ होटलक बन्द दरबजाक भीतर सुनाइत अछि। ई अर्थक आवृत्ति उपन्यासकेँ आन्तरिक एकता दैत अछि, मुदा अनेक अध्यायमे समान दुष्ट संस्था आ समान नैतिक निष्कर्षक पुनरावृत्ति आ किछु त्वरित समाधान कथात्मक जटिलताक स्थान संकुचित करैत अछि।

## अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल

# निजताक देहरी आ कथावस्तुक नैतिक स्थानान्तरण

अध्यायारम्भक सखी-संवाद लोकधुन देहरी, चाबी आ अपन कथाक अधिकारकेँ एकहि अर्थ-क्षेत्रमे राखैत अछि। मुख्य घटनामे मृणालिनी आर्या, जे मीरा नामसँ सेहो चिन्हाइत छथि, अपराध-जालक वित्तीय अनुसन्धानमे शोधकर्त्री छथि; हुनकर निजी संवाद, चित्र आ सम्बन्धकेँ हुनकर गवाही रोकबाक साधन बनाओल जाइत अछि। तेँ अध्यायक मूल हिंसा केवल गोपनीय वस्तु बाहर आएबाक भय नहि, बल्कि एक व्यक्तिक अपन जीवनक अर्थ निर्धारित करबाक अधिकारपर आक्रमण अछि। पहिनुक अध्यायमे फूलमति अपन पूरा नाम कहि प्रतिरोध करैत छली; एतय मीरा अपन नाम आ अपन कहल बातक सीमा दूनू स्वयं निर्धारित करैत छथि।

देहरीक रूपक पुरान ग्रामीण सामाजिक अवकाशसँ डिजिटल उपकरणक भीतरी अवकाश धरि फैलैत अछि। कखनो स्क्रीन, कखनो होटलक अभिलेख, कखनो मेटि जाएबला सन्देश —सामाजिक घेराक प्रत्येक नव स्थानमे प्रवेशक अनुमति अलग प्रश्न बनैत अछि। नब स्त्रीवादी आ निजता-अध्ययनक दृष्टिसँ अध्याय देह, प्रेम आ सूचना-स्वामित्वक आपसी सम्बन्धक गहन समस्या रचैत अछि। मुदा एकर नीतिगत निष्कर्षकेँ मात्र नैतिक घोषणा बुझबाक बदला मीरा कोना स्रोत चुनैत छथि, कोन जानकारी सुरक्षित रखैत छथि आ कोन सार्वजनिक करैत छथि, एहि काजसभसँ पढ़ब अधिक उपयुक्त अछि।

# पहिचान, प्रतिरोध आ ज्ञानगत अन्याय

अपराधी दल मीरा सम्बन्धी निजी जानकारीक उपयोग हुनकर अनुसन्धानकेँ “चरित्र”क विवाद बनायबाक लेल करय चाहैत अछि। बटुकनाथक सलाहमे विदेशी प्रभाव आ व्यक्तिगत जीवनक आधारपर गवाही अविश्वसनीय सिद्ध करबाक योजना अछि। मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक पद्धतिमे एकर अर्थ ई अछि जे व्यक्तिक कथनक प्रमाणशक्ति ओकर सामाजिक पहिचानपर पूर्वाग्रह लगाकऽ घटाओल जाइत अछि। ई केवल बदनामी नहि, सार्वजनिक सत्य-निर्माणक प्रक्रिया पर कब्जाक प्रयास अछि।

मीराक पहिल लिखल कथन आ तकर संशोधन आलोचनात्मक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अछि: ओ अपन यौनिक पहिचानक चर्चा अपराधक स्पष्टीकरणसँ अलग करैत छथि, आ केन्द्रमे निजी जानकारी चोरि भय बनेबाक काज राखैत छथि। ई पुनर्लेखन पात्रक अपन वाक्यपर अधिकारक चिन्ह अछि। पाश्चात्य स्वायत्तता-विचारक संग तुलना सम्भव अछि, मुदा पात्रक आन्तरिक निर्णयकेँ कोनो विदेशी सिद्धान्तक यान्त्रिक उदाहरण बना देब अनुचित। वास्तविक रचनात्मक उपलब्धि ई जे मीरा पीड़िताक निर्बल भाषामे नहि अटकि, अपना गवाहीक नियम निर्धारित करैत छथि।

## बहुस्थानिक कथन आ सीमित साक्ष्य

गोपक शोध-कक्ष, अपराधीसभक अन्तर्वार्ता, सत्यव्रतक सीलबन्द लिफाफा आ मीरा–अदितिक निजी संवाद एकसंग कथित होइत अछि। जेनेतक दृष्टिबिन्दुक अवधारणामे कथावाचककेँ विभिन्न स्थलक ज्ञान अछि, मुदा प्रत्येक पात्र ओकर बराबर जानकारी नहि रखैत। पाठक बटुकनाथक धमकीक योजना पहिनेसँ जनैत अछि, जखन कि मीरा ओकर व्यावहारिक प्रतिकार विकसित करैत छथि। एही असमानतासँ नाटकीय विडम्बना उपजैत अछि।

डाटा, भुगतान आ कथित छद्म-संस्थाक कड़ी गोपक खींचल वृत्त “भय–डेटा–धन”मे समेटल गेल अछि। ई अपराधक मनो-सामाजिक दिशा देखेबाक समर्थ रचना अछि; मुदा वृत्त स्वतः डिजिटल परीक्षण नहि। मीरा द्वारा दियौ सन्देश, स्रोतक सत्यापन, प्राप्तकर्ताक आचरण आ आरोपक न्यायिक जाँच अलग-अलग स्तर अछि। कथाक अवलोकनकेँ बाह्य प्रमाणित अपराध-सिद्धि जकाँ प्रस्तुत नहि करब अध्ययनक आवश्यक संयम अछि।

## स्नेहक मौन आ साक्षीक स्वर

मीरा आ अदिति हाथ पकड़ि एक-दोसराक कातमे बैसैत छथि। एहिठाम भावनात्मक सम्बन्धक वर्णन अपराधक सनसनीसँ अलग स्वर लैत अछि; मौन सान्त्वनाक कार्य करैत अछि, ककरो चरित्रक दोष बनेबाक नहि। तकरा बाद मीरा अपने शब्दमे गोपनीयताक उल्लंघनक प्रसंग सार्वजनिक करैत छथि। एउ प्रकार निजी सहमतिक भीतर सुरक्षित रहल प्रेम आ सार्वजनिक गवाहीक सामाजिक जिम्मेदारी दूनूकेँ एक साथ राखल गेल अछि।

बाख्तिनक बहुस्वरीयता एतय पूर्ण स्वतन्त्रता रूपमे नहि, बल्कि भिन्न वाणीसभक संघर्ष रूपमे देखल जा सकैत अछि: अपराधीक संस्कृति-रक्षाक झूठ, शोधकर्त्रीक प्रमाण-भाषा, सखीक भरोसा, गोपक अभिलेखीय चित्र आ भूतक कबड्डीक प्रतिध्वनि। मुदा कथावाचक अपराधीसभक तर्ककेँ एतेक स्पष्ट विडम्बनात्मक रं ग दैत छथि जे हुनकर आवाज स्वतन्त्र दार्शनिक चुनौती कम दैत अछि। अपन पक्षक नैतिक स्पष्टता एहि अध्यायक उपलब्धि सेहो अछि आ जटिल बहुव्याख्याक सीमा सेहो।

## आख्यान-अवधि, पुनरावृत्ति आ साहित्यिक मूल्याङ्कन

पाँच मिनटमे मेटि जाएबला सन्देशक धमकी दीर्घकाल धरि मनमे टिकैत अछि। अल्प डिजिटल अवधि आ लम्ब मनोवैज्ञानिक समयक एहि विरोधमे रिकरक अनुभवगत समय-विचार उपयोगी अछि। अध्याय अन्तमे गवाहीक दृश्य विस्तार पबैत अछि, जखन कि अभिलेखीय कड़ीसभ अपेक्षाकृत तेज कथनमे आबैत अछि। एहिसँ पाठकक भावनात्मक समय पात्रक स्वरक संग चलैत अछि, मुदा तकनीकी जाँचक क्रम संक्षिप्त रहैत अछि।

अध्यायक पैघ उपलब्धि गोपनीयताकेँ अपराधी सँ पीड़िताक दिस उलटि आरोप करबाक स्थापित कू टनीति उजागर करब अछि। सीमा ई जे मीराक दीर्घ सामाजिक सुरक्षा, अदालतक भीतर प्रतिपरीक्षा आ डिजिटल साक्ष्यक संरक्षक पद्धति एतय सम्पूर्ण विकसित नहि अछि। उपन्यासक नैतिक आग्रह ठोस अछि, मुदा भविष्यमे प्रमाणक स्वीकार्यता आ व्यक्तिक गरिमा दुनू निभेबाक कठिन प्रक्रिया शेष रहैत अछि।

# अध्याय ११ — धनक कारी नदी

## कारी नदीक रूपक आ अङ्ककक नैतिक देह

अध्यायारम्भक रोपनी-नाविक मिश्र गीत कारी धनक नदीमे हरियर नाव उतारबाक आ श्रमिकक कमाइ घर घुरे बाक कल्पना रचैत अछि। एतय पुरान कमला-बलानक प्रवाह खाता सँ खाताक डिजिटल प्रवाहमे बदलैत अछि। गोप कुमारक मेजपर मीरा, सौम्या, रमैय्या, देविका आ ईशान दत्त बैसल छथि; पर्दापर जे अङ्क चलैत अछि ओकर पाछाँ युवकक ऋण, श्रमिकक कमाइ, स्त्रीक निजी चित्र आ राजनीतिक प्रभावक अनेक सम्बन्ध देखा पड़ैत अछि। पानिक भौतिक विनाश आ धनक अदृश्य प्रवाहक मेल शीर्षकक अर्थविस्तार करैत अछि।

पर्यावरणीय आलोचना एतय शब्दशः नदी-दूषणक अध्ययन नहि, बल्कि प्रवाहक एक रूपक कोना सामाजिक उत्तरदायित्वकेँ दृश्य बनबैत अछि, ताहि रूपमे उचित अछि। नदी निरन्तरता आ सङ् कट दूनू दैत अछि; खाता सेहो लेखा आ लोपक साधन बनि सकैत अछि। ई तुलनासँ मानुखक श्रमक देह आ वित्तीय अङ्ककक दूरी अनुभवगम्य बनैत अछि। मुदा एकरे नामपर सभ धन-प्रवाह समान रूपसँ अवैध अछि, एहन निर्णय मूल पाठसँ नहि निकालल जाए।

## वित्तीय जालक खोज आ प्रमाणक स्तर

गोपक अनुसन्धाने उज्ज्वलक भुगतान पैंतीस छोट खातामे बाँटल देखाओल गेल अछि; अध्याय ओकरा बीच छात्र, रिक्शा-चालक, वृद्ध विधवा, बेरोजगार आ अप्रमाणित नामक भेद दैत अछि। ई भेद लेखकीय दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एउ माध्यमक उपयोग आ खातेधारीक आपराधिक ज्ञान एक वस्तु नहि। राघवक मेटाओल सन्देशमे अधूरल नाम, प्रतिशत आ मार्ग-सङ् के त भेटैत अछि। ओहि टुकड़ासभसँ सम्भावित सम्बन्धक नक्सा बनैत अछि, मुदा स्वतंत्र सत्यापनक अभावमे निर्णायक कानूनी निष्कर्ष नहि।

फू कोक ज्ञान-सत्ता सम्बन्ध एतय दफ्तरी सूचनाक नियन्त्रणमे प्रतिबिम्बित अछि। खाताक नाम, कम्पनीक रूप, अनुबन्धक विधि आ कार्यक्रमक पवित्र शब्द एक प्रकारक

वैधता तैयार करैत अछि। ईशानक व्याख्यामे “प्रार्थना”क रूपमे हिंसा-संबद्ध धनक साङ् के तिक नाम प्रयोग होइत अछि; आलोचनाकेँ बुझबाक चाही जे ई कथा-जगतक पात्रक पढ़ल कोड अछि, शोधकर्ताक बाह्य सत्यापित निष्कर्ष नहि। भाषाक पवित्रता आ आर्थिक व्यवहारक सम्भावित हिंसा बीचक अन्तर रचनाक प्रमुख विडम्बना अछि।

## प्रमाणक सुरक्षा आ सम्प्रेषणक मर्यादा

सौम्या एक अधूरा मार्ग-नक्सा सार्वजनिक नहि करबाक स्पष्ट आग्रह करैत छथि, जाहिसँ अपराधक पद्धति दोहराबयवला विवरण बाहरे नहि जाए। अध्यायमे सार्वजनिक प्रमाण, न्यायालयक लेल सुरक्षित प्रमाण आ केवल सीमित पहुँचवला सामग्रीक अलग व्यवस्था विकसित होइत अछि। ई चुनाव केवल व्यावहारिक सतर्कता नहि, आलोचनात्मक ज्ञानमीमांसाक धुरी अछि: किछु सत्य सार्वजनिक हितमे आवश्यक अछि, मुदा ओकर सम्पूर्ण निजी विवरण बाहरे करब नव क्षतिक कारण भऽ सकैत अछि।

गोप तीन प्रति बनबैत अछि—सत्यव्रत, विदेशमे ईरा आ गामक पीपरक खोखर लेल। प्रतिलिपिक विस्तार स्मृतिसँ लोपक विरुद्ध रणनीति अछि, मुदा एहि कथा-व्यवस्थामे पीपरक खोखर अभिलेख-गृहक प्रतीक भऽ कऽ वैज्ञानिक संरक्षणक पूर्ण विकल्प नहि। प्रतिकृति, स्रोत, परिवर्तित सामग्री आ हस्तान्तरण-शृंखला दस्तावेजी परीक्षण माँगैत अछि। रचना प्रमाणकेँ एक कार्यालयक नियन्त्रणसँ बाहर आनैत अछि; ओकर औपचारिक प्रामाणिकता अलग चरण अछि।

## बहुस्थानिक समांतरता आ नैतिक दृश्य

कथावाचक शोधकर्तासभक राति-कक्षसँ बटुकनाथ–चन्द्रपालक सल्लाह आ सत्यव्रतक अध्ययन-कक्ष दिस यात्रा करैत अछि। एक स्थले खाता-परीक्षा चलैत अछि, दोसरठाम सूचना रोकबाक नीति बनैत अछि, तेसरठाम सरकारी शपथपत्रक समक्ष एक वकीलक अन्तरात्मा विचलित होइत अछि। जेनेतक कथन-समय अनुसार अनेक समकालीन क्रियाकेँ अलग-अलग दृश्य-क्रममे अनाबसँ पाठक एक नैतिक जालक व्यापकता देखैत अछि।

भूत ईशानक छाह नहि पड़बाक चमत्कार आ राघवक मेटाओल सन्देश पुनः उभरबाक घटना अलौकिक तथा डिजिटल ज्ञानक सीमा एक दोसराक सोझाँ रखैत अछि। एहि

मिथकीय विस्तारसँ अनुसन्धानक रचनात्मक रोचकता बढ़ैत अछि; तथापि साधारण तकनीकी पुनर्प्राप्ति आ अलौकिक उपस्थितिक कारणसम्बन्ध अस्पष्ट रहि सकैत अछि। जँ प्रत्येक समस्या जादुई साक्षीसँ सुलझैत, तँ अनुसन्धानक मानवीय श्रम गौण भऽ जाइत; सौम्याक सावधानी एहि जोखिमकेँ संतुलित करैत अछि।

## बाख्तिनक बहुस्वरता आ आलोचनात्मक निष्कर्ष

ब्रूमक पुरान वैश्विक नैतिकता-भाषणक नीचाँ ईशान लाल अक्षरमे वित्तीय रेखा जोड़ैत अछि। ई दृश्य आधिकारिक सार्वजनिक वाणीपर प्रतिपाठ लिखबाक नाटकीय पद्धति अछि। “गरिमा”, “साझेदारी”, “सुरक्षा” आ “नवाचार” सँ सम्बन्धित दावासभ मृत श्रमिक, नकली बिल आ जुआक प्रश्नक संग टकराइत अछि। बाख्तिनक द्विस्वरीय शब्दक अवधारणामे एके पदक अर्थ ओकर विरोधी सामाजिक प्रयोगसँ बदलैत अछि।

अध्यायक शक्ति आर्थिक जालकेँ अमूर्त संख्या नहि रहय देब आ देविकाक उज्ज्वल-स्मृतिक माध्यमसँ ओकर देहधारी परिणाम देखायब अछि। सीमा बहुतेक असङ्गत क्षेत्र—औषधि, निर्माण, डिजिटल खेल, सम्भावित हथियार-सम्बन्ध आ हिंसक वित्त—एक छोट कथासत्रमे परस्पर जुड़ल देखेबाक अति-घनत्व अछि। ई सांकेतिक जाल साहित्यिक रूपेँ प्रभावी अछि; प्रत्येक कड़ीक स्वतन्त्र जाँच रचनाक प्रस्तावसँ अधिक अपेक्षा करैत अछि।

# अध्याय १२ — डार्क -जालपर नारिके ल पातें

## अन्हार जालमे पातक दीप: परम्पराक नव अर्थ

अध्यायारम्भक बटगबनी-जागरण लोकगीत “पातक दीप”क छवि रचैत अछि। गढ़ नारिकेलक नारिकेल-पात पहिने लोकनाम, श्रमक इतिहास आ मृतकक साक्षी सँ जुड़ल छल; एतय ओ अंकीय गोपनीय संरचनामे नैतिक दिशा देखेनिहार चिन्ह बनैत अछि। कथा चन्ना गाछीक मौनसँ दिल्लीक बन्द अध्ययन-कक्ष आ हार्वर्डक पुस्तकालय धरि चलैत अछि। लोकपातक रूपक अनेक भौगोलिक स्थलक बीच सातत्य रखैत अछि, मुदा सभ स्थल एके अनुभव रखैत नहि।

रिकरक समय आ कथा-विचारक सहायतासँ देखल जाए तँ पात अतीतकेँ वर्तमानमे पुनर्विन्यस्त करैत अछि: मृतकक नाम, सरकारी सूची आ नव डिजिटल सूचना अबैत क्षण वर्तमान निर्णयक आधार बनैत अछि। मुदा लोकस्मृतिक संरक्षण आ तकनीकी संग्रहण एके प्रक्रिया नहि। पातक छवि अर्थ बनबैत अछि; उपकरणक मूल सामग्री, पहुँच-अनुमति आ वैध प्रस्तुति अलग श्रम माँगैत अछि।

## सत्यव्रतक आन्तरिक संघर्ष आ सूखल कागचक दृश्य

सत्यव्रत सरकारी शपथपत्र आ भीजल पन्ना एकसंग पढ़ैत छथि। आधिकारिक पत्रक विनम्र विधिभाषामे मृत्यु आ अनुपस्थित नामक पीड़ा नहि सुनाइत, जखन कि छोट तालिकामे नाम, तिथि, भुगतान, हस्ताक्षर आ हेरायल पन्नाक सङ् के त भेटैत अछि। कथावाचक सत्यकेँ रोमाञ्चक चित्र बदला सूखल बही बनबैत छथि। एहि विधागत चुनावसँ पाठकक ध्यान चमत्कार सँ प्रमाणक सूक्ष्म प्रश्नपर लौटैत अछि।

सत्यव्रत राज्यक कर्तव्य आ अपन नैतिक निर्णयक बीच उभड़ै त छथि। कथा हुनका तुरन्त सर्वज्ञ उद्धारक नहि बनबैत, बल्कि पढ़नाइ आ माननाइ बीचक दूरी देखबैत अछि। फू कोक आलोचनामे संस्थागत पद एकर व्यक्ति-विश्वासकेँ बाँधैत अछि; पात्रक संघर्ष एहि सीमाक भीतर नव जिम्मेदारीक सम्भावना खोलैत अछि। मुदा सरकारी पत्रमे लिखल प्रत्येक विधानक वास्तविक असत्यापन न्यायिक प्रक्रिया सँ बाहर निश्चय नहि कएल जा सकैत।

## डिजिटल अभिलेख, सीमित प्रकाशन आ निजताक साक्ष्य

ईशान अन्हार जालकेँ मात्र अपराधीक आश्रय नहि, कखनो-कखनो गुप्त साक्ष्य बचबाक अस्थायी स्थान सेहो कहैत अछि। ओ स्पष्ट करैत अछि जे अपराधक पद्धति सार्वजनिक करब उद्देश्य नहि। गोप सामग्रीक सुरक्षित प्रति रखैत अछि; तकर चाभी तीन अलग स्मृति/साक्षी-स्थलमे बँटायल रूपकमे उपस्थित अछि। ई रूपक सूचनाक उपलब्धतासँ अधिक, ओकरा उपयोग करबाक अधिकारपर जोर दैत अछि।

मीराक निजी विवरण आ पीड़ितसभक नामक सन्दर्भमे “सब खोलि दिअ” नैतिक आदेश नहि। सौम्याक पहिनुक वर्गीकरण—सार्वजनिक, सीमित, न्यायालयक लेल आ पीड़ितक अनुमति पर निर्भर—एतय आन्तरिक पृष्ठभूमि अछि। साक्ष्य सुरक्षित राखब आ नागरिकक निजता बचायब एक-दोसराक विरोधी नहि होयबाक चाही। अध्याय एहि द्विविधाकेँ निबन्धक रूपमे नहि, सामग्री-वितरणक काजक रूपमे स्थापित करैत अछि।

## स्वप्न, अलौकिकता आ कथन-दृष्टिक सीमा

ईरा हार्वर्डक पुस्तकालयक फर्शक नीचाँ पानि भरबाक अनुभव करैत छथि, जकरा आन विद्यार्थी नहि देखैत। हरिहरनक स्वप्नमे अदालतक कुर्सी गोहिक पीठ बनैत अछि। गोपक झपकीमे भूतसभ स्मृति-उपकरणकेँ कबड्डीक गेंद बना दैत अछि। एहि तीन अनुभूतिक कथन-स्थिति समान नहि; एक पात्रक अनुभूति, दोसराक स्वप्न आ तेसराक झपकीक दृश्य अछि। एहन विविधता जेनेतक दृष्टिबिन्दु-विभाजनक लेल बिसेस महत्त्वपूर्ण अछि।

अद्भुत दृश्यकेँ डिजिटल फाइलक भौतिक प्रामाणिकताक प्रमाण मानब नितान्त गलत होयत। ओ पात्रक मानसिक दबाव, मिथकीय प्रतिपाठ आ कथा-जगतक लोकविश्वासक केन्द्र अछि। पाठक जँ ई भेद राखैत अछि तँ अलौकिकता अनुसन्धानक स्थान नहि छीनैत; बल्कि समकालीन अपराधसँ लोकस्मृतिक भावनात्मक सम्बन्ध देखबैत अछि। एही कारण नब डिजिटल अन्हारक रूपक किछु ठाम सफल अछि, मुदा बारम्बार चमत्कारलेखन तकनीकी विश्लेषणक ठोस चरण संकुचित करैत अछि।

## नामक हरियर रेखा आ शिल्पगत परिणाम

अध्यायक अन्तमे उज्ज्वल, मृणालिनी, देविका, गोप, सौम्या, ईशान, सत्यव्रत आ ईराक अलग अनुभव “हरियर रेखा”मे जुड़े बाक दृश्य अछि। एक संग लाओल नाम दैहिक क्षति, निजी भय, अन्वेषण, नैतिक दुविधा आ आगामी गवाहीक सम्भावना जोड़ैत अछि। सामूहिकता एतय सभ पात्र एक विचारक कठपुतली होयबाक बदला असमान जोखिमक संग एक काजमे जुटल छथि, तें प्रभावी अछि।

मुदा अन्तक दृश्यात्मक एकता प्रत्येक कथारेखाक समान परिणाम नहि दर्शबैत: उज्ज्वल मरि गेल, मीरा जीवित गवाहीक लडाइ लड़ै त छथि, सत्यव्रत एखनो निर्णयक सीमा पर छथि। सहानुभूतिक एकता न्यायिक समानता नहि। आलोचनात्मक पढ़नाइ एहि असमानताकेँ बचबैत अछि; एतहि रचनाक करुण स्वर निरर्थक चमत्कारसँ ऊपर उठैत अछि।

## अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण

## मोहरक द्वैध अर्थ आ न्यायिक नाटक

अध्यायारम्भक करुण समदाउन मोहर खोलबाक आग्रह करैत अछि, मुदा “उचित हाथ”क शर्त सेहो रखैत अछि। ई शर्त मुख्य घटनामे जीवित होइत अछि: निजी पीड़ितक विवरण सीलबन्द राखब सुरक्षा अछि; ओहि आवरणक नामपर मृत्यु-सूची आ भुगतान-विसंगति नुकाएब अन्याय। एके सील दूनू उल्टा काज करि सकैत अछि। शीर्षक एहि विधिक द्विविधाकेँ वस्तु-रूपक बनबैत अछि।

अध्याय न्यायालयक बरामदा, कारी कोट, अधीर पत्रकार आ शपथपत्रक भाषा सँ दृश्य आरम्भ करैत अछि। कथावाचकक दृष्टि कखनो सत्यव्रतक भयक भीतर, कखनो हरिहरनक कू टनीतिक मनसाय, कखनो बाहरी साक्षीसभ दिस जाइत अछि। न्यायिक प्रक्रिया एक नाट्यमञ्च बनैत अछि, मुदा एकरा मात्र विजयक उत्सव कहब गलत: सुनवाई, नामक सार्वजनिक उच्चारण आ आगामी जाँच सब न्यायिक अन्तिम निर्णय सँ पृथक् अछि।

## शब्दक शुद्धता बनाम तथ्यक अनुपस्थिति

सत्यव्रतक पढ़ल सरकारी शपथपत्र व्याकरण आ विधिरूपेँ सुघर अछि, मुदा ओकर वाक्यसभमे अनेक मृतक अनुपस्थित छथि। कथावाचक रूप आ सत्यक ई फाँक विशेष रूपेँ देखबैत अछि। आलोचनात्मक विमर्श-विज्ञानमे एहन आधिकारिक दस्तावेज ककरा वस्तुनिष्ठ मानबाक अधिकार दैत अछि आ ककरा मौन करैत अछि, ई प्रधान प्रश्न अछि। शुद्ध भाषाक आड़मे मानवीय सूचना घटाओल जा सकैत अछि।

मुदा दस्तावेजक दोषक आलोचना करैत स्वयं आलोचक के वळ भावपर चलि नहि सकैत। उपन्यासमे पहिने स्वीकार कएल तीस नाम, संभावित शेष मृतकक सूची आ तत्काल उपस्थित प्रतिलिपि प्रमाणक अलग स्तर अछि। न्यायालयमे नाम पढ़ल जेनाइ सार्वजनिक सुनवाईक महत्त्वपूर्ण क्षण अछि; एकरासँ सभ मृत्युक कारण, अपराधीक व्यक्तिगत दोष आ आर्थिक क्षतिपूर्ति स्वतः निश्चित नहि होइत।

## सौम्याक वर्गीकरण आ निजताक न्याय

सौम्या दस्तावेजपर चारि चिह्न लगबैत छथि—सार्वजनिक, सीमित, सीलबन्द आ पीड़ितक अनुमति अपेक्षित। एहि वर्गीकरणमे मीरा-संबद्ध निजी धमकी, अन्य पीड़ितसभक पहचान आ खाताक सार्वजनिक असङ् गति अलग-अलग देखल गेल अछि। ई नब उपन्यासक न्याय-दृष्टिक सूक्ष्म उपलब्धि अछि: अपन इतिहास वापस पेनाइ आ अपन निजी जीवन पर नियन्त्रण राखब एक-दोसराक विपरीत नहि।

बटुकनाथ प्रक्रियाक सुविधा कहि एक विस्तृत आवरण चाहैत अछि, जखन कि सत्यव्रत संवेदनशील सामग्री अलग सुरक्षित राखि मृत्यु-सूचीक विसङ् गति खुलल रखबाक प्रस्ताव दैत छथि। विवाद केवल परस्पर विरोधी वकीलक भाषण नहि; ई न्यायालयक जानकारीक सीमा, जोखिमक विभाजन आ गवाहीक गरिमाक बहस अछि। मीराक निजी जीवनक सामग्री सार्वजनिक करब आवश्यक नैतिक विजय नहि, बल्कि पुनः क्षति होएबाक सम्भावना अछि।

## नाम-पाठ, लोकस्मृति आ कथन-अवधि

सत्यव्रत नामसभ पढ़ैत छथि, पन्द्रहम नामपर हुनकर गला रुकैत अछि; चन्ना गाछीमे हुलासी आ लोथक पुरान साक्षी-लोक समानान्तर प्रतिक्रिया दैत अछि। नाम उच्चारबाक समयक विस्तार, अदालतक अन्य प्रक्रियासँ विपरीत, कथन-गति मद्धिम करैत अछि। जेनेतक अवधिक दृष्टिसँ ई मद्धिम-गतिक स्थान पाठककेँ गनतीक भीतर अलग व्यक्तित्व सुनबाक अवसर दैत अछि। “अन्य” नामक प्रशासकीय समूह एक-एक उपस्थित जीवनमे फू टि पड़ैत अछि।

बाख्तिनक दृष्टिसँ अदालतक औपचारिक वाणी, भूतक मौन, फूलमतिक दुखक स्मृति आ पत्रकारक संक्षिप्त शीर्षक-इच्छा अलग मूल्यभाषा रचैत अछि। मुदा अध्याय कु छ हद धरि सबै प्रतिपक्षी मुखकेँ एकरे दुष्ट सन्दर्भमे रखैत अछि, ताहिसँ बहुस्वरताक जटिलता सीमित अछि। नाम-पाठक भावक गहिराइ आलोचना लेल प्रमाणित अछि, मुदा सभ सुननिहार एकर एके अर्थ स्वीकार करैत छथि, एहन दावा नहि कएल जाए।

## अलौकिक पानिक निशान आ आलोचनात्मक सन्तुलन

अदालतक भीतर पानिक दाग, झाड़ू लगेनिहार स्त्रीक देखल दाँतक वक्र निशान आ चन्ना गाछीक कबड़ीक बदलल नियम सामुदायिक स्मृतिक अद्भुत नाटक अछि। जँ न्यायिक कागच मृतकक नाम सँ भरैत अछि तँ लोकमंचक मृतक पुनः अपन स्वर पाबैत छथि। ई मिथकीय समकालीनता उपन्यासक विशिष्ट शिल्प अछि।

रचनाक उपलब्धि सीलबन्द सामग्रीक वास्तविक नैतिक द्विविधाकेँ नाटकीय तनाव बनायब अछि। कमजोरी ई जे अदालतक नाम-पाठक प्रभाव शीघ्र व्यापक सामाजिक नैतिक विजयक रूप लैत अछि, जखन कि आपत्ति, प्रतिपरीक्षा आ फैसला दीर्घ प्रक्रिया अछि। अध्याय स्वयं आगामी तारीखक बाट खुलल छोड़ैत अछि; आलोचनाकेँ सेहो फैसला बनाकऽ ओकरा बन्द नहि करबाक चाही।

## अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता

## अदालतसँ गाम धरि: कथानकक स्थानिक मोड़

अध्यायमे अदालतक सुनवाईक बाद पन्द्रह दिनक अन्तराल खुलैत अछि। सत्यव्रत सरकारी गाड़ी छोड़ि पैदल चलबाक निर्णय लैत छथि; समूह दिल्ली सँ रे ल पकड़ि गढ़ नारिकेल जाइत अछि। एतय कथनक केन्द्र वैश्विक डिजिटल जालक अमूर्त नक्सासँ खेत, स्टेशनक चाह, पुरान बक्सा आ घरक देहरीक ठोस स्थानपर अबैत अछि। वापसी मात्र भावनात्मक विश्राम नहि; न्यायिक फाइलक स्थानीय स्रोत आ पितृपीढ़ीक जीवित स्मृतिक संग पुनः सम्बन्ध अछि।

मानचित्र आ रे लक खिड़कीक वर्णनमे रस्ताक गति व्यक्ति-इतिहासक भीतर चलैत अछि। अनन्या काँचमे अपन चेहराक पाछाँ आरुणि, बा, नन्द आ नाम-विहीन पूर्वपीढ़ी देखैत अछि। जेनेतक दृष्टिबिन्दु अनुसार दृश्य एक बालिकाक अनुभवमे सीमित अछि, मुदा कथावाचक ओकरा ऐतिहासिक व्यापकता दैत छथि। रिकरक कथा-समयमे ई कई पीढ़ीक स्मृतिसँ वर्तमान यात्रा जोड़बाक प्रभावी बिम्ब अछि।

## बाक पाछाँ बैसबाक शिक्षा आ मौखिक इतिहास

सौम्या ट्रेनमे बा लग बैसि अपन नोटबुक बन्द करैत छथि। ओ पहिने लिखबाक बदला सुनैत छथि। बाक कमला–बलानक शान्ति आ कटानक तुलनामे सामाजिक अपराधक अलग रूपक बोध अछि: जे सत्ता खुल्लमखुल्ला तोड़ैत अछि, ओ देखाइ पड़ैत अछि; जे विनम्रतासँ अन्यायक आयोजन करैत अछि, ओ बहुत बेर नहि देखाइ पड़ैत। एतय ग्रामीण स्त्रीक अनुभव विशेषज्ञ भाषाक दम्भ पर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि।

मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत न्यायक दृष्टिसँ ई प्रसंग उपेक्षित लोकवाणीकेँ वैध समझक स्रोत बनबैत अछि। सौम्याक सुनब आत्मसुधारक दृश्य अछि; तथापि आलोचनाकेँ ई नहि मानबाक चाही जे लोकअनुभव अपने आप दस्तावेजी सत्यापनक स्थान लेत। बा अनुभवक नैतिक अर्थ समझबैत छथि, गोप–निशांत खाताक तथ्य जाँचैत छथि, अदालतमे प्रमाणकेँ प्रक्रियाबद्ध रूप चाही। तीनू प्रकारक ज्ञानक अलग उपयोग अछि।

## गवाहीक रोपनी: अभिलेखीय रीति आ पर्यावरणीय स्मृति

नन्दक मूल हाथलिखित पन्नासभ घरक बक्सासँ बाहर अनल जाइत अछि। गाछक जड़ि लग पीतल डिब्बामे ओकर प्रतिलिपि, श्रमिकक नामसभक प्रति, उज्ज्वलक फोटो, मीराक धमकीक प्रति, मुन्नाक खाता आ सत्यव्रतक अदालत-वचनक प्रति राखल जाइत अछि। मूल दस्तावेज सुरक्षित राखि प्रतिकृति गाड़बाक वर्णन प्रतीकात्मक अछि: मृतकक अस्थि पानिमे दऽ संस्कार करबाक प्रथाक बदला प्रमाण गाछक जड़िमे रोपल जाइत अछि।

पर्यावरणीय स्मृति-अध्ययनमे गाछ केवल साज-सज्जा नहि, अन्तरपीढ़ीय स्मरणक सामाजिक आधार अछि। मुदा माटिक भीतर कागचक प्रति राखब वास्तविक अभिलेखीय संरक्षणक सुरक्षित विधि नहि; कथा स्वयं एकरा “गवाहीक रोपनी” कहि काव्यात्मक रूप देत अछि। प्रामाणिक न्यायिक प्रतिलिपि उचित संस्थागत स्थानमे सुरक्षित रहनाइ जरूरी अछि। ई सीमा चिन्हित करब रूपकक कलात्मक मूल्य घटेनाइ नहि, ओकर कार्यक्षेत्र स्पष्ट करब अछि।

## मीराक घर-प्रवेश आ बहुस्वर सामाजिक स्वीकृति

मीरा अपन धमकीक प्रतिलिपिसभ सौम्याक हाथमे दैत छथि आ अनुमान करैत छथि जे अदालत हुनकर निजी जीवनपर प्रश्न करत। बा एहि निजी अनुभवक सम्पूर्ण विस्तार नबुझितो प्रेमकेँ हथियार बनाबयवालाकेँ दोषी ठहरबैत छथि। एतय शहरक विशेषज्ञ स्त्री आ गामक वृद्धा बीच एक नैतिक सम्बन्ध जन्मैत अछि। दुनू एकरूप व्यक्ति नहि; मीरा दस्तावेजी सुरक्षा जनैत छथि, बा सम्बन्धक गरिमा तुरन्त पहचानैत छथि।

बाख्तिनक दृष्टिसँ विशेषज्ञ, श्रमिक-परिवार, बालिका आ लोकसाक्षीक स्वर मिलि असमान भाषिक संसाधनक बावजूद साझा प्रतिरोध रचैत अछि। मुदा पात्रसभक स्वीकृति एकरूप सामाजिक यथार्थक प्रमाण नहि। पाठ स्वयं कहैत अछि गामक बहुत लोक मीराक कथा नहि बुझि सकत। एहि वाक्यक कारण अध्याय पूर्ण सामुदायिक सहमतिक सरल आदर्शवादसँ बचैत अछि; सामाजिक बोध बनबाक प्रक्रिया एखन चलि रहल अछि।

## हरियर अक्षर आ भविष्यक अपूर्ण प्रतिज्ञा

राति नारिकेल गाछक जड़ि लग नील इजोत देखल जाइत अछि; ईराक पुस्तिकापर ब्रूमक फोटो धुँधला भऽ श्रमिकक हथेलीक छवि बनैत अछि। भिनसर पातपर अक्षर-जेकाँ सूक्ष्म चिन्ह आबैत अछि, मुदा के ओ ओकरा पूर्ण पढ़ि नहि सकैत। एहि कारण अद्भुत घटना साहित्यिक प्रतीक अछि, दस्तावेजी प्रमाण नहि। बा गाछक मृत्यु होएबाक सम्भावना पर बीया बाँचबाक बात कहैत छथि—स्मृतिक भविष्य एक वस्तुक अमरता नहि, उत्तराधिकारक निरन्तर श्रम अछि।

कथात्मक रूपेँ अध्याय कु नै अन्तिम विजय पर बन्द नहि होइत। अगिला तारीख एखन शेष अछि; कथावाचक कहैत अछि जे असली घर-घुरान तखन होयत जखन “अनुपस्थित” नाम न्यायालयमे उपस्थित कहल जाएत। एहि अपूर्ण भविष्यमे आशाक गरिमा अछि, मुदा अनुष्ठानक चमत्कार न्यायिक, वित्तीय वा सामाजिक न्यायक विकल्प नहि। अध्यायक सर्वाधिक सफल शिल्प ई जे घर वापसीकेँ अन्तिम विश्राम बदला नवा जिम्मेदारी बनाबैत अछि। अध्याय १० सँ १४: अन्तराध्यायिक तुलनात्मक विवेचन निजताक अधिकारसँ सार्वजनिक गवाही धरि

अध्याय १०मे मीरा निजी जीवनक सूचना ककरा आगाँ, कोन शर्तपर खोलब, से स्वयं निर्धारित करैत छथि। ११मे सौम्या वित्तीय कड़ीसभक जानकारीक सार्वजनिक उपयोगक सीमा बाँटैत छथि। १२मे गोप सुरक्षित डिजिटल प्रतिलिपिक व्यवस्था बनबैत अछि। १३मे सत्यव्रत न्यायालयमे निजी सामग्री आ सार्वजनिक मृत्यु-सूची अलग करैत छथि। १४मे मीराक मूल निजी जानकारीक प्रतिलिपि फेर सौम्याक जिम्मामे राखल जाइत अछि। पाँचू ठाम स्वतंत्र गरिमा आ न्याय-प्रयोजनक बीच सीमा रक्षण मुख्य नैतिक परीक्षा अछि।

## भय, अङ्क, आवरण आ घरक चारि स्थान

ब्लैकमेलक फोन-अवकाश, कारी धनक खाता, अन्हार जालक गोपनीय संग्रह, न्यायालयक सीलबन्द लिफाफा आ गाछक जड़िमे गाड़ल प्रतिलिपि एक क्रममे बदलैत माध्यम अछि। ई वस्तुसभ अपन-आप सत्य नहि कहैत; मनुष्य ओकरा चुनैत, सुनैत आ अर्थ दैत छथि। जेनेतक बहुस्थानिक कथन आ रिकरक अन्तरपीढ़ीय समय एतय एक-दोसराकेँ पूरक करैत अछि।

## साहित्यिक उपलब्धि आ खुलल कठिन प्रश्न

मीराक स्वायत्त कथन, सौम्याक साक्ष्य-वर्गीकरण, सत्यव्रतक औपचारिक वाणीक नैतिक संशोधन, बा के र लोकज्ञान आ गोपक प्रतिलिपि-प्रथा उपन्यासकेँ सरल षड्यन्त्रकथा सँ अधिक व्यापक सामाजिक न्याय-आख्यान बनबैत अछि। तथापि संकुचित समयमे विशाल अन्तरराष्ट्रीय धन-जालक अनेक कड़ी जोड़बाक गति, अलौकिक दृश्यसँ प्रमाणक अर्थक मिश्रण आ न्यायिक प्रक्रिया शीघ्र नैतिक विजय होयबाक जोखिम प्रमुख शिल्पगत सीमा बनल रहैत अछि।

## अध्याय १५ — नामक जल

आदेश आ न्यायक मध्यवर्ती अवस्था

‘नामक जल’क प्रधान साहित्यिक उपलब्धि न्यायिक प्रक्रियाक आंशिक सफलताकेँ सामुदायिक स्मृतिक व्यापक प्रश्नसँ जोड़ब अछि। सत्यव्रत मेहता न्यायालयमे सरकारी सूचीसँ अनुपस्थित व्यक्तिसभक नाम प्रस्तुत करैत छथि। अगिला सुनवाई, स्वतंत्र लेखा-परीक्षा, पीड़ित-संरक्षण आ सम्बन्धित आर्थिक अभिलेखक जाँचक निर्देश भेटैत अछि। मुदा ई अन्तिम न्यायिक फैसला नहि अछि।

सौम्याक कथन एहि अध्यायक नैतिक भेद स्पष्ट करैत अछि—“आइ आदेश आयल अछि, फैसला नहि। मृतकक नाम खबर नहि, दायित्व अछि।” एहि वाक्यमे उपन्यास न्यायकेँ एकटा सम्पन्न घटना नहि, अपितु निरन्तर उत्तरदायित्वक प्रक्रिया बनबैत अछि। सरकारी आदेश तात्कालिक अछि; मृतकक सामाजिक पुनर्पहिचान दीर्घकालिक। न्यायिक प्रक्रियाक गति आ नामक स्मृतिक विस्तार एके कथात्मक समयमे एक-दोसराकेँ प्रश्न करैत अछि।

समकालिक आख्यान आ दृष्टिबिन्दु

जेरार जेनेतक आख्यानशास्त्रीय पद्धतिसँ देखला पर अध्यायमे दू स्थानक समानान्तर कथन-क्रम महत्त्वपूर्ण अछि। एक दिस दिल्लीक न्यायालयमे अभिलेख पढ़ल जाइत अछि, दोसर दिस गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछीमे मृतकसभक नाम लऽ कबड्डी खेलल जाइत अछि। कथावाचक न्यायालयक प्रत्यक्ष घटनासँ चन्ना गाछीक अद्भुत संसार धरि निर्बाध पहुँचैत अछि। एहि लेल कथन-दृष्टि ककरो एक पात्रक अनुभवमे सीमित नहि। मुदा समूचा वर्णन समान रूपसँ यथार्थवादी सेहो नहि अछि। न्यायालयक आदेश, मुंशीक अनुभव, मोबाइलक सन्देश आ गोहिक व्यवहार अलग-अलग कथात्मक प्रमाण-स्तरपर अवस्थित अछि। एहि स्तरसभकेँ अलग राखब आवश्यक अछि। अन्यथा आलोचक अलौकिक प्रतीककेँ न्यायिक घटनाक दस्तावेज बुझबाक त्रुटि कऽ सकैत अछि। आख्यानक आन्तरिक सत्य आ ऐतिहासिक तथ्य एके श्रेणीक नहि अछि। अतः आलोचनामे दृश्य-सम्बन्धक रूपक महत्त्व स्वीकारैत प्रमाणक सीमा सेहो चिह्नित रहबाक चाही।

नारिकेल-पात : अभिलेखक वैकल्पिक माध्यम

सत्यव्रतक हाथमे राखल नारिकेल-पात लोकस्मृतिक प्रतिनिधि अछि। पात अपने-आप विधिसम्मत साक्ष्य नहि बनैत। मूल कथामे सत्यव्रत पात आ ओकर संग राखल प्रमाणक प्रतिलिपिमे स्पष्ट भेद करैत छथि। ई अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। पात इतिहासक ओहि अंशक अस्तित्व बतबैत अछि, जकरा सरकारी अभिलेख पर्याप्त स्थान नहि देने अछि; प्रमाणक प्रतिलिपि ओहि कथनकेँ न्यायिक परीक्षण दिस अनैत अछि।

फुकोक ज्ञान–सत्ता सम्बन्धी विचार एहि दृश्यकेँ बुझबाक एकटा उपयोगी साधन अछि। सरकारी अभिलेखमे ककर नाम स्वीकारल जाए आ ककर नाम अनुपस्थित मानल जाए, से मात्र लिखबाक प्राविधिक प्रश्न नहि; सत्ता आ वैधताक प्रश्न सेहो अछि। गामक पातक उपस्थिति एहि ज्ञानाधिकारपर सवाल उठबैत अछि। मुदा जाँचयोग्य अभिलेखक आवश्यकता कथानक स्वयं नकारैत नहि अछि; एहि बातसँ प्रतीक आ प्रमाणक पारस्परिक सीमा स्पष्ट होइत अछि।

स्त्रीवादी आलोचना : गरिमा आ गवाही

मृणालिनीक प्रसंग अध्यायक विशेष उपलब्धि अछि। ओ अपन निजी जीवनक समूचा विवरण सार्वजनिक करब स्वीकार नहि करैत छथि; धमकी, वसूली आ साक्षी-दमनसँ सम्बन्धित सामग्रीकेँ न्यायिक परीक्षण लेल खोलबाक पक्ष लैत छथि। एतय स्त्रीक गवाहीक अर्थ ओकर निजी जीवनपर सार्वजनिक अधिकार नहि अछि। सौम्या सेहो एहि बातक सावधानी राखैत छथि जे सत्यक नामपर पीड़ित स्त्रीक फेर अपमान नहि हो।

एहि दृश्यकेँ स्त्रीवादी ज्ञानमीमांसाक आधारपर पढ़ि सकैत छी। पीड़ित स्त्री केवल प्रमाणक वस्तु नहि छथि। ओ स्वयं निर्धारित करैत छथि जे कतेक बात कोन मंचपर कहल जाएत। एहि आत्मनिर्णयमे पितृसत्तात्मक सार्वजनिक जिज्ञासाक आलोचना निहित अछि। गवाहीक वैधता व्यक्तिक गरिमाकेँ समाप्त कएने बिना स्थापित होएबाक चाही।

प्रतीकात्मक समापन आ शिल्पगत सीमा

नारिकेलक भीतरसँ नामयुक्त भीजल पन्नाक प्रकट होएब, गोहिसभक नाम नहि खा सकब आ अनन्याक भविष्यक खाली पाँति देखब एक प्रकारक जादुई यथार्थवादी कथन-रचना अछि। एहि शिल्पमे एकटा आलोचनात्मक कठिनाई सेहो अछि। जखन न्यायालयक प्रमाण, अलौकिक स्मृति आ नैतिक सत्य लगातार एक-दोसरामे विलीन होइत अछि, तखन पाठककेँ प्रमाणक वास्तविक सीमा चिन्हबाक अतिरिक्त श्रम करय पड़ैत अछि।

तथापि अध्यायक मुख्य उपलब्धि ई अछि जे नामकेँ मात्र मृतकक पहचान नहि, जीवित समाजक भविष्यगत दायित्व बनाओल गेल अछि। नाविक-परातीक जल-बिम्ब आ न्यायालयक नाम-पाठ एक सांस्कृतिक आख्यानक दू स्तर बनैत अछि। जल देहक नश्वरता याद करबैत अछि, आ नाम पीढ़ीसँ पीढ़ी धरि उत्तरदायित्वक सम्भावना बनल रहैत अछि।

## अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत

वैधानिक अदालतक समानान्तर लोक-अदालत

एहि अध्यायमे चन्ना गाछी एकटा अलौकिक न्यायिक मंच बनैत अछि। मृत मजदूर, डिजिटल ठगीक शिकार युवक, निजताक दुरुपयोगसँ प्रभावित स्त्री आ महामारीक पीड़ितसभक आवाज एक स्थानपर उपस्थित होइत अछि। मुदा चन्ना गाछीक अदालतकेँ राज्यक न्यायालयक वैधानिक विकल्प बुझब समीक्षात्मक त्रुटि होयत। एहि अदालतक दण्ड स्मृति, अपराधबोध आ नैतिक उत्तरदायित्वक साहित्यिक रूपक अछि।

जे अपराधी तारीख बढ़बैत छल, ओकर निद्राक समय अन्तहीन सुनवाई बनि जाइत अछि। जे नाम मेटबैत छल, ओकरा नामक सामना करबाक बाध्यता भेटैत अछि। जे निजताकेँ हथियार बनबैत छल, ओकर देह नहि, लोभ उजागर होइत अछि। ई दण्ड प्रतिशोधक साधारण पुनरावृत्ति नहि; अपराधक क्रियाकेँ अपराधीक अनुभवमे उलटा कऽ उपस्थित करबाक शिल्प अछि।

बहुस्वरता आ साक्षीक पृथक् अनुभव

बाख्तिनक बहुस्वरता-सिद्धान्तक सन्दर्भमे अध्यायक पात्रसभक आवाजपर विचार कएल जा सकैत अछि। सरयूक श्रम, उज्ज्वलक डिजिटल ऋण, मीराक निजता आ वृद्धक श्वास-संकट एके प्रकारक उत्पीड़न नहि अछि। सभक जीवनमे संस्था आ सत्ता अलग ढंगसँ प्रवेश करैत अछि।

कथावाचक हिनका सभकेँ नामक साझा धुरीपर अनैत अछि, मुदा सभक पीड़ाक विशिष्टता अक्षुण्ण राखबाक प्रश्न आलोचनामे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। एहि ठाम बहुस्वरता पूर्ण अर्थमे स्वतन्त्र वैचारिक विरोधक समान नहि अछि। अधिकांश गवाही एक साझा नैतिक निष्कर्ष दिस बढ़ैत अछि। तथापि अनुभवक अनेक सामाजिक स्रोत एकत्र होएब अध्यायक रचनात्मक शक्ति अछि। अलग व्यक्तिक अलग हानि एकहि बिम्बमे समाहित भऽ कऽ सेहो अपन विशिष्ट पहिचान माँगैत अछि।

देह, श्रम आ साक्ष्य

सरयूक हथेलीमे पुलक पाया बनि उठब अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रतीक अछि। मजदूरक देह ओहि निर्माणक साक्ष्य बनैत अछि जाहिमे ओकर नाम अनुपस्थित छल। एहि दृश्यक मार्क्सवादी

श्रम-आलोचनात्मक अर्थ स्पष्ट अछि। निर्मित पुल टिकैत अछि, मुदा ओकर निर्माणमे नष्ट भेल श्रमिकक जीवन अभिलेखसँ मेटा देल जाइत अछि। उत्पादनक वस्तु दृश्य अछि; श्रमिकक मृत्यु अदृश्य बनाओल गेल अछि।

हथेलीमे पुलक पाया प्रकट होएब एहि अदृश्यताक विरुद्ध शारीरिक साक्ष्यक कल्पनात्मक पुनरागमन अछि। जे हाथसँ निर्माण सम्पन्न भेल, ओही हाथमे पुलक पायाक बिम्ब श्रमक मूल्य आ श्रमिकक नामक अविभाज्य सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। ई अलौकिक रूपक वास्तविक तथ्यक न्यायिक प्रतिस्थापन नहि अछि; ई पाठकक नैतिक दृष्टिक पुनर्संयोजन अछि।

अलौकिक न्याय आ नैतिक सीमा

चन्ना गाछीक फैसलासभ पाठककेँ तत्काल नैतिक सन्तोष दैत अछि। मुदा एतय आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि—की साहित्यिक दण्ड संस्थागत सुधारक प्रश्नकेँ पर्याप्त स्थान दैत अछि? अपराधीक छाहकेँ दण्डित करब कथा-लोकमे सार्थक अछि, मुदा वास्तविक जगतमे पीड़ितक क्षतिपूर्ति, दोषक प्रमाण, न्यायिक उत्तरदायित्व आ भविष्यक अपराध-निरोधक काज अलग अछि।

अध्यायक अन्तमे बा जखन सभकेँ काज करबाक आग्रह करैत छथि, तखन कथा स्वयं एहि सीमाक समाधान दिस बढ़ैत अछि। नैतिक दण्डसँ प्राप्त संतोषक बाद अभिलेख, शिक्षा आ आपसी सहयोगक दीर्घकालिक आवश्यकता सोझाँ अबैत अछि। एहि मोड़पर उपन्यास चमत्कारक आकर्षणकेँ जीवनक श्रमसँ जोड़ि दैत अछि।

नाटकसँ समाज दिस संक्रमण

अदालत विसर्जित होइत अछि। ओकर कोनो लिखित आदेश, मुहर वा प्रमाणित प्रति नहि बनैत। मुदा लोकसभ शिक्षा, अभिलेख-निर्माण आ सहयोगक काजमे प्रवेश करैत अछि। ई शिल्पगत परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि। न्यायिक दृश्य अपन प्रभावक अन्तिम केन्द्र नहि रहैत। सामाजिक व्यवहार ओहि केन्द्रक स्थान ग्रहण करैत अछि।

कथाक अद्भुत मंच पराजितक नैतिक पुनर्पहिचान करबैत अछि; मुदा ओकर दीर्घकालिक महत्त्व तखन स्पष्ट होइत अछि जखन जीवन्त लोक अपन सुरक्षा आ स्मृतिक व्यवस्था स्वयं रचऽ लगैत अछि। एहि अर्थमे ‘चन्ना गाछीक अदालत’ सामाजिक आन्दोलनक कल्पना लेल एकटा प्रतीकात्मक प्रस्तावना बनैत अछि।

## अध्याय १७ — जीतक शोक

विजयक विडम्बनात्मक उलटाव

अध्यायक मूल विरोध ई अछि जे बटुकनाथ हरिहरन आ चन्द्रपाल बत्रा अपनाकेँ विजयी बुझैत अछि, मुदा जकरा सभ हरायल गेल, ओ सभ प्रतिपक्षक प्रतीक्षा करब छोड़ि स्वतंत्र सामाजिक काजमे लागि गेल अछि। एहि लेल ‘जीतक शोक’ साधारण पराजयक कथा नहि। ई ओहि विजयक शोक अछि जकरा अपन सार्थकता लेल पराजितक निरन्तर उपस्थिति चाही।

एतय विडम्बना कथानकक प्रमुख उपकरण अछि। वकीलक सम्मान-समारोहक समानान्तर गाममे बच्चा सरयूक नाम लिखबाक अभ्यास करैत अछि। एक दिस माला आ भाषण अछि; दोसर दिस खड़िया, पाथर आ लेखनक आरम्भ। दूनू दृश्यकेँ एकहि नैतिक मापनपर राखला सँ उत्सव आ श्रमक सामाजिक अर्थ बदलैत अछि। सम्मानक भाषण स्वयं अपन रिक्ततासँ उजागर करैत अछि।

कथन-समय आ नाटकीय विरोध

अध्यायमे शहर आ गामक घटनासभ क्रमशः बदलैत अछि। जेरार जेनेतक अनुसार ई समानान्तर कथन-व्यवस्थाक उदाहरण अछि। मुदा एकर प्रभाव मात्र स्थानिक नहि, कालगत सेहो अछि। शहरक पात्रसभ विगत मुकदमाक परिणाममे अटकल छथि। गामक पात्रसभ आगामी पीढ़ीक शिक्षा तैयार कऽ रहल छथि।

एक समूहक समय पछिल जीतपर निर्भर अछि; दोसर समूहक समय भविष्यक सम्भावनासँ बनैत अछि। एहि भेदसँ विजय आ पराजयक परम्परागत अर्थ बदलैत अछि। कथावाचक जीतक घोषित क्षणकेँ भविष्यक कसौटीपर जाँचैत अछि। ई कथाक काल-संरचनाक सशक्त प्रयोग अछि।

सामाजिक शिक्षाक प्रतिरोधी शक्ति

देविका युवकसभकेँ डिजिटल ठगीक युक्ति चिन्हबैत छथि। मीरा आ सौम्या स्त्रीसभकेँ धमकी आ अपमानक विरुद्ध सामूहिक सहयोगक महत्त्व बुझबैत छथि। अनन्या मृत मजदूरक नाम लिखैत अछि। ई सभ दृश्य प्रतिरोधकेँ आन्दोलनक केवल घोषणात्मक रूपसँ बाहर निकालैत अछि। प्रतिरोध दैनिक काजक रचना बनैत अछि।

अध्यायक उल्लेखनीय पक्ष ई अछि जे पीड़ितसभकेँ केवल न्याय माँगनिहार समूह नहि बनाओल गेल अछि। ओ सभ नव सामाजिक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि। जे लोक सार्वजनिक मंचपर पराजित कहाएल, ओ सभ आपसी शिक्षा, लेखन आ सुरक्षा-बोधक माध्यमसँ अपन सामाजिक क्षमता बनबैत अछि।

ज्ञानक लोकतन्त्रीकरण

चन्द्रपालक डिजिटल जाल भय, एकान्त आ अज्ञानपर निर्भर अछि। जखन लोक एक-दोसराकेँ सावधान करैत अछि, तखन ठगीक संरचनामे व्यवधान उत्पन्न होइत अछि। फुकोक सत्ता-विचारक आधारपर एहि प्रक्रियाकेँ एकटा प्रतिरोधी ज्ञान-प्रवाह मानि सकैत छी। मुदा एतय प्रतिरोध मात्र केन्द्रीय संस्थाक विरुद्ध नहि, स्थानीय आपसी सम्बन्धक पुनर्रचनासँ सेहो सम्भव होइत अछि।

गामक वृद्धा, बच्चा, स्त्री आ तकनीकी जानकारी रखनिहार युवक—सभ ज्ञानक उत्पादक बनैत अछि। एकर सामाजिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे जालक गोपनीयता सामूहिक अनुभवक आदान-प्रदानसँ कम होइत अछि। गवाही सुनब आ आगू सावधान करब ज्ञानक दुहरी क्रिया अछि।

आलोचनात्मक सीमा

अध्यायमे पीड़ित पक्षक सामूहिक काज आ अपराधी पक्षक बेचैनीक विरोध प्रभावकारी अछि। मुदा किछु स्थानपर नैतिक ध्रुवीकरण एतेक तीव्र अछि जे अपराधी पात्रसभक भीतरी जटिलता सीमित भऽ जाइत अछि। अपराधीक भय कथाक नैतिक उद्देश्य पूरा करैत अछि; ओकर सामाजिक मनोविज्ञानक सम्पूर्ण अध्ययन नहि बनैत।

तथापि एहि अध्यायक केन्द्रीय उपलब्धि अछि—न्यायिक हारकेँ सामाजिक निष्क्रियताक समानार्थी नहि मानब। जे सभ जीतक कागच रखने घुमैत अछि, तिनकर विजयक अर्थ ओहि लोकक सामाजिक सक्रियतासँ प्रश्नांकित होइत अछि, जिनका तिनी सभ पराजित मानैत छल।

## अध्याय १८ — खाली अदालत

रिक्तताक द्विविध अर्थ

‘खाली अदालत’मे रिक्तता पराजयक सूचक नहि, बदलैत सामाजिक सम्बन्धक संकेत अछि। न्यायालयक बरामदा, प्रतीक्षाक बेंच आ वकीलक कक्ष पहिनुक मुकदमासँ सम्बन्धित लोकक अनुपस्थितिसँ खाली बुझाइत अछि। मुदा कथावाचक एहि रिक्ततासँ दोसर दिशासँ देखबैत अछि। जे लोक अदालतमे नहि अछि, ओ सभ गाममे नाम लिखि रहल अछि, बच्चासभकेँ शिक्षा दैत अछि, स्त्रीसभक अनुभव सुनैत अछि।

एहि प्रकारेँ एक स्थानक रिक्तता दोसर स्थानक सामाजिक सक्रियतासँ बनैत अछि। एतय दृश्यताक प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि: राजकीय संस्था अपन सोझाँ उपस्थित लोककेँ पंजीबद्ध करैत अछि, मुदा गाममे चलैत कार्यक ओकरा समुचित ज्ञान नहि। खाली बेंचपर अनुपस्थित भऽ गेल जनसमुदाय नव सामाजिक क्षेत्रमे अधिक उपस्थित भऽ सकैत अछि।

संस्थागत भाषा आ सामान्य लोकक प्रश्न

बार परिषद्मे जन-अभिलेखक वैधतापर प्रश्न उठैत अछि। एक नव वकील पूछैत अछि जे मृतकक नाम लिखनाइ अनधिकृत कोना भऽ सकैत अछि। एहि छोट प्रश्नमे संस्थागत सत्ता आ नैतिक औचित्यक बीचक दूरी स्पष्ट होइत अछि। नाम लिखबाक काजपर नियंत्रणक प्रयास अभिलेखक वैधता मात्र नहि, स्मृतिक अधिकारकेँ सेहो प्रभावित करैत अछि।

ज्ञान–सत्ताक आलोचनामे ई दृश्य विशेष अर्थवान अछि। संस्था स्वयं निश्चित करऽ चाहैत अछि जे अभिलेखक अधिकृत निर्माता के होएत। मुदा मृतकक निकटस्थ परिवार आ जनसमुदाय सेहो स्मृतिक अनुभव-स्रोत अछि। एहि कारण संस्थागत अभिलेखक नियमक आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक बनैत अछि; तथापि संस्थागत नियमक सभ रूपकेँ दमनकारी कहि देब सेहो उचित नहि।

सफाइ-कर्मी : कथन-दृष्टिक निर्णायक मोड़

अध्यायक अन्तिम भागमे न्यायालयक सफाइ-कर्मी खाली बेंचपर लिखल नाम पोंछैत अछि। तकर बाद ओकरा अपन पिताक स्मृति अबैत अछि, जे निर्माण-स्थलसँ घुरि नहि सकल छलाह। सरकारी कागचमे दर्ज कथन आ पुत्रक स्मृति एक-दोसराक विरोधमे ठाढ़ होइत अछि। सफाइ-कर्मी अपन पिताक नाम धूरिमे लिखैत अछि।

एहि दृश्यसँ कथावाचकक दृष्टि पैघ पात्रसभसँ एक साधारण श्रमिक-पुत्र दिस मुड़ैत अछि। उपन्यासक नैतिक प्रश्न एतय कोनो दार्शनिक भाषणक अपेक्षा अधिक मूर्त बनैत अछि। धूरिमे नाम लिखब अस्थायी काज अछि; मुदा ओकर सामाजिक अर्थ दीर्घकालिक अछि। ई दृश्य स्मृति-अध्ययनक ओहि सिद्धान्तकेँ पुष्ट करैत अछि जे एक व्यक्तिक घर-परिवारक स्मरण अनेक बेर अधिकृत इतिहासक अपूर्णताकेँ देखबैत अछि।

रिक्त अदालतक विरोधाभास

अध्याय एकटा गम्भीर प्रश्न उपस्थित करैत अछि—जँ लोक अपने नाम लिखय, गवाही सुरक्षित करय आ शिक्षा चलाबय लगत, तँ औपचारिक अदालतक भूमिका की रहत? एकर उत्तर अदालतक अनावश्यकता नहि अछि। सामाजिक अभिलेख आ न्यायिक प्रक्रिया अलग काज करैत अछि। लोकक स्मृति अन्यायक पहचान करा सकैत अछि; मुदा अपराध-सिद्धि आ विधिसम्मत उत्तरदायित्व लेल प्रमाणक परीक्षण आवश्यक रहैत अछि।

एहि सीमा केँ पहचानलापर अध्यायक सामाजिक प्रतिरोधक अर्थ आरो गहींर होइत अछि। गामक अभिलेख न्यायालयक विरुद्ध निजी अधिकारक घोषणा मात्र नहि; न्यायालयक सन्दर्भमे अनुपस्थित जानकारीक सामाजिक संरक्षण सेहो अछि। रिक्तता एतय संस्थाक विरुद्ध सरल विजयक रूपक नहि, न्यायिक प्रक्रियाक सीमासँ बाहर उभरैत कर्तव्यक संकेत बनैत अछि।

शिल्पगत उपलब्धि आ सीमा

अध्यायक सभसँ प्रभावशाली निर्माण रिक्त बेंच आ अदृश्य उपस्थितिक विरोध अछि। रिक्त स्थानकेँ कथावाचक सामाजिक विस्मृतिक चिह्न बनबैत अछि; सफाइ-कर्मीक लेखन ओकरा पुनः उपस्थितिक स्थान बना दैत अछि। पात्रक छोट काज अध्यायक विशाल नैतिक अभिप्रायकेँ मूर्त करैत अछि। मुदा अलौकिक-प्रतीकप्रधान पूर्ववर्ती अध्यायक तुलना मे एतय दृश्य अपेक्षाकृत मद्धिम अछि। एही मद्धिमताक भीतर कार्यक साधारण स्वर, श्रमिक-पुत्रक स्मरण आ खाली अदालतक धूरि अधिक विश्वसनीय भाव-संरचना रचैत अछि।

## अध्याय १९ — नामक अभिलेख

लोकस्मृतिसँ सामाजिक संस्थापन धरि

एहि अध्यायमे चन्ना गाछीक स्मृति-व्यवस्था स्पष्ट नियम ग्रहण करैत अछि। लोकसभ मृतकक नाम लिखबाक काज आरम्भ करैत अछि। आरुणि, बा, सौम्या, मीरा, ईरा, देविका, गोप कुमार आ अनन्या अपन-अपन अनुभव आ सामर्थ्यसँ एहि अभिलेखक निर्माणमे भाग लैत अछि। एतय स्मृति केवल भावुकता नहि रहैत; ओकर रूप संरक्षण, सहमति, पहिचान आ शिक्षासँ जुड़ैत अछि।

एहि दृश्यक महत्त्व एहि बातमे अछि जे मूल कथाक अलौकिक स्मृति एखन जीवित लोकक साधारण, दोहरायल जा सकयवला काज बनैत अछि। पातपर लिखल नाम भूतक असाधारण अनुभवक प्रतीक रहैत अछि; मुदा अभिलेखक रूपमे नामक अस्तित्व तकरा पढ़निहार, लिखनिहार, मिलान करएबला आ सुरक्षित रखनिहार समुदायपर निर्भर होइत अछि। एहि अर्थमे अध्याय कथानककेँ चमत्कारसँ अभ्यास दिस अनैत अछि।

पहिल नियम : पुकारू नामक मान्यता

मृतकक सरकारी नाम आ घरमे पुकारल नामक अन्तर अभिलेखीय ज्ञानक गम्भीर प्रश्न अछि। बा सरकारी कागचक एकमात्र अधिकार स्वीकार नहि करैत छथि। ई निर्णय सामाजिक पहिचानक अनेकता केँ मान्यता दैत अछि। एक व्यक्ति सरकारी पंजीमे जे नामसँ दर्ज अछि, ओकर पारिवारिक आ सामुदायिक जीवन ओहि नामसँ भिन्न भऽ सकैत अछि। मुदा आलोचनात्मक दृष्टिसँ देखला पर दुनू रूप सुरक्षित राखब अधिक उपयोगी अभिलेखीय पद्धति होयत, जाहिसँ स्मृति आ सत्यापन दूनूक आवश्यकता पूरी भऽ सकय। सरकारी नामकेँ एकमात्र सत्य मानब स्थानीय अनुभवक अस्वीकृति होयत; उलटा, पुकारू नामकेँ बिना पहचान-सूत्रक अन्तिम तथ्य बना देब अभिलेखीय मिलानकेँ कठिन बना सकैत अछि। अध्याय एहि द्वन्द्वकेँ जीवित प्रश्नक रूपमे खोलैत अछि।

दोसर आ तेसर नियम : समावेश आ निजता

अभिलेख केवल पुल-निर्माणक मृत मजदूर धरि सीमित नहि रहत। महामारी, डिजिटल ठगी, शोषण आ निजताक दुरुपयोगसँ प्रभावित लोक सेहो एकर दायरा मे आबि सकैत अछि। अनेक प्रकारक पीड़ाकेँ एक स्मृति-स्थल देबाक इच्छा एहि नियमक आधार अछि। मुदा एहि

समावेशमे अनुभवक विशिष्ट भेद मेटा देबाक खतरा सेहो अछि। श्रम-दुर्घटना, उपचारक अभाव, आर्थिक ठगी आ अपमानक धमकीक प्रमाण-संरचना एक समान नहि।

मीरा एक आवश्यक प्रश्न उठबैत छथि—जँ कियो अपन निजी जीवन सार्वजनिक नहि करय चाहय तँ? एहि प्रश्नक उत्तरमे अभिलेखक तेसर नियम विकसित होइत अछि : मौनक लेल सेहो स्थान रहत। किछु पीड़ितक वास्तविक नामक बदला परिचयसूचक सीमित विवरण राखल जाएत। ई अध्यायक गम्भीर स्त्रीवादी उपलब्धि अछि। स्मृतिक नामपर ककरो निजताकेँ फेर हानि पहुँचाएब उचित नहि। पीड़ित व्यक्ति अपन जीवनक अर्थ गढ़बाक अधिकार रखैत छथि; अभिलेखक सामूहिक उद्देश्य ओहि अधिकारकेँ अपने-आप निरस्त नहि करैत अछि।

स्मृति-अध्ययन आ अभिलेखक सत्ता

पॉल रिकरक स्मृति-विवेचन आ आधुनिक अभिलेख-अध्ययनक आलोकमे अध्यायक आधारभूत प्रश्न अछि—अतीतक प्रतिनिधित्व ककर अधिकारमे रहत? सरकारक कागच, परिवारक स्मृति, गामक पुकारू नाम, गोप कुमारक संकलित आर्थिक विवरण आ ईराक प्रतिलिपि-निर्माण—ई सभ अलग-अलग ज्ञानस्रोत अछि। एकर बीच सत्यापन, सहमति आ संरक्षणक सम्बन्ध बनाओल आवश्यक अछि।

केवल सरकारी दस्तावेज पर्याप्त नहि; मुदा केवल मौखिक स्मृति सेहो प्रत्येक तथ्यक अन्तिम प्रमाण नहि बनैत। उपन्यास एहि द्वन्द्वक समाधान एकहि संस्थाक सर्वाधिकारमे नहि, अनेक स्तरक अभिलेख-व्यवस्थामे खोजैत अछि। एहि व्यवस्थाक नैतिक आधार पारदर्शिता अछि, मुदा ओकर व्यावहारिक आधार लिखित प्रक्रिया, सन्दर्भ आ सीमित पहुँच होयबाक चाही।

चौठ नियम : मृतकक स्मृतिसँ जीवितक रक्षा

अभिलेखक चौठ नियम एहि अध्यायक भविष्यगत महत्त्व स्पष्ट करैत अछि। नाम लिखब मृतकक सम्मान अछि; नाम पढ़ब जीवितक सावधानीक साधन सेहो बनैत अछि। यहीँ सँ अगिला अध्याय ‘स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला’क आधार तैयार होइत अछि। शिक्षा अभिलेखक स्वाभाविक विस्तार बनैत अछि। नाम आब केवल अतीतक चिह्न नहि रहैत; ओकरा माध्यमसँ भविष्यक सम्भावित क्षति चिन्हबाक सामाजिक सामर्थ्य विकसित होइत अछि।

शिल्पगत सीमा आ मूल्याङ्कन

अध्यायमे नारिकेल-पात, हरद-काजरक स्याही, धातुक पट्टिका आ दूरस्थ प्रतिलिपिक माध्यमसभ एक समृद्ध वस्तु-संसार बनबैत अछि। मुदा एहि भावपूर्ण व्यवस्थाक भीतर किछु व्यावहारिक प्रश्न खुलल रहैत अछि—भिन्न साक्ष्यक मिलान कोना होयत, असत्य प्रविष्टिक सुधार के करत, सम्मति केना दर्ज होयत, आ जीवित व्यक्तिक संवेदनशील जानकारी कतेक काल सुरक्षित रहत?

ई प्रश्न अध्यायक साहित्यिक महत्त्व घटबैत नहि। उलटा, एहि अभिलेखक नैतिक संकल्प आ संस्थागत परिपक्वताक बीचक दूरी स्पष्ट करैत अछि।

अन्तराध्यायिक समीक्षा : अध्याय १५–१९

एहि पाँच अध्यायक क्रम एकटा स्पष्ट रचनात्मक विकास देखबैत अछि। अध्याय १५मे न्यायालयक आदेशसँ नामक सामाजिक मान्यता आरम्भ होइत अछि। अध्याय १६मे चन्ना गाछी अलौकिक नैतिक अदालत बनैत अछि। अध्याय १७मे प्रतिपक्षक कागजी विजयक विपरीत जनसमुदायक प्रतिरोधी काज शुरू होइत अछि। अध्याय १८मे अदालतक रिक्तता सामाजिक सक्रियताक चिह्न बनैत अछि। अध्याय १९मे ओहि सक्रियताकेँ अभिलेखीय नियम आ शिक्षाक स्थायी रूप देबाक प्रयास होइत अछि।

एहि क्रममे न्याय एक स्थानसँ दोसर स्थान दिस स्थानान्तरित मात्र नहि होइत; ओकर अर्थ बदलैत अछि। न्यायिक सुनवाई, नैतिक स्मरण, सामुदायिक संगठन आ जनशिक्षा एक-दोसरासँ सम्बन्धित रहैत अछि, मुदा समान नहि अछि। उपन्यासक एहि अंशक प्रमुख उपलब्धि मृतकक नामकेँ भविष्यक सामाजिक कर्तव्य बनायब अछि। एकर प्रधान शिल्पगत जोखिम अलौकिक नैतिक निश्चितताकेँ संस्थागत प्रमाणक जटिलतासँ अति निकट आनब अछि।

एहि दूनू पक्षकेँ संग राखलापर ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’क एहि पाँच अध्यायक अर्थ अधिक व्यापक होइत अछि। ई केवल मृतकक स्मरण नहि; ई स्मृतिक सामाजिक उपयोग, ओकर अधिकार आ ओकर मर्यादाक कथा अछि।

# अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

शोकक अभिलेखसँ सार्वजनिक शिक्षाक यात्रा

स्मृतिसँ व्यवहार धरि

‘नामक अभिलेख’क बादक ई अध्याय मृतकक नाम लिखबाक काजकेँ जीवित लोकक सुरक्षा सँ जोड़ैत अछि। चन्ना गाछीमे उज्ज्वलक नाम लग राखल फुटल मोबाइलक काँच एक विशेष अर्थ ग्रहण करैत अछि। काँचमे उल्टा देखाइत आकाश आ गाछक प्रतिबिम्ब देखब सँ डिजिटल संसार केवल बाहरी आभासी स्थल नहि रहैत; ओ गामक भूगोल, परिवारक क्षति आ मृतकक स्मृतिसँ गाँथल वस्तु बनैत अछि। एहि वस्तुक संग देविकाक मौन, उज्ज्वलक पहिल जीत, तकर बादक आर्थिक हानि आ धमकीक उल्लेख जोड़ि अध्याय ठगीक क्रमिक फँसाव देखबैत अछि। मृत्युकेँ शुद्ध व्यक्तिगत कमजोरीक परिणाम कहबाक बदला कथाकार ओकर पाछाँ सक्रिय लालच, लत, छल आ भयक संरचना सामने अनैत छथि।

पाठशालाक पहिल दृश्य एतय निर्णायक अछि। बीचमे फुटल काँच, बैंकक पुरान पासबुक, अधूर कॉपी आ नारिकेलक पात राखल अछि। एहि चारि वस्तुमे डिजिटल जोखिम, वित्तीय व्यवस्था, अधूर जीवन आ सामुदायिक स्मृतिक चारि अर्थ एकत्र होइत अछि। शिक्षाक स्थान सरकारी भवन नहि, गाछीक छाह अछि। तथापि एकर गम्भीरता कोनो मान्यताप्राप्त संस्थासँ कम नहि देखाओल गेल अछि। नेना, वृद्ध, किसान, मजदूर, छात्र आ परदेशमे कमाइ करएबला परिवारक सदस्य एकहि स्थानपर सीखैत छथि। एहि रचनामे ज्ञानक दिशा ऊपरसँ नीचाँ नहि, अनुभवसँ अनुभव दिस चलैत अछि।

भयक चारि पएर : रूपकक सामर्थ्य

निशांत ‘स्क्रीनक गोहि’क चारि पएर लालच, भय, लाज आ असगरपन मानैत अछि। ई वर्गीकरण अध्यायक रूपकात्मक मेरुदण्ड अछि। नदीक गोहि देह पकड़ैत अछि; स्क्रीनक गोहि आँखि आ निर्णय पकड़ैत अछि—पनिडुब्बीक कथन एहि सम्बन्धकेँ लोक-अलौकिक आवाज दैत अछि। बच्चाक प्रश्न, ‘दाँत स्क्रीनमे कतय होइत अछि?’, जटिल वित्तीय अपराधक तन्त्रकेँ समझाबय लेल कथा भीतर उपयोगी आरम्भ-बिन्दु बनैत अछि। निशांत

तकनीकी शब्दजाल छोड़ि गोपनीयताक दबाव, तुरन्त धन पठेबाक धमकी आ सुनिश्चित जीतक प्रलोभनकेँ संकेतक रूपमे बुझबैत अछि।

एहि शिक्षाक सीमा सेहो देखबाक चाही। सभ डिजिटल साधन अनिवार्यतः ठगी नहि आ सभ भय एकहि अपराध-विधिक लक्षण नहि। तथापि कथा जे पहिल व्यावहारिक नियम स्थापित करैत अछि—‘अकेला नहि रहू’—से तकनीकी विशेषज्ञतासँ पहिले सामाजिक सहारा उपलब्ध करएबाक उपाय अछि। ई नियम अपन विश्वस्त लोकसँ विचार-विमर्श करबाक अवसर बनबैत अछि। पाठशालाक सफलता ओकर ‘सभ जानकारी’ देबामे नहि, पीड़ितक चुप्पी तोड़बामे अछि।

निशांतक स्वीकारोक्ति आ उत्तरदायित्व

निशांतक स्वीकारोक्ति अध्यायकेँ साधारण शिक्षाप्रद प्रसंगसँ आगाँ लऽ जाइत अछि। ओ स्वीकार करैत अछि जे भुगतानक तकनीकी व्यवस्था बनबैत काल ओकरा लोकक इच्छा, भय, लत आ एकान्तक मापनक नैतिक परिणाम देखबाक चाही छल। एक व्यक्ति ओकरा प्रत्यक्ष प्रश्न करैत अछि—‘तँ अहूँ दोषी छी?’ बा देविकाकेँ निशांतक बचाव करबासँ रोकैत छथि। एहि क्षण कथा ज्ञानक आधिकारिक स्रोतक सेहो सार्वजनिक परीक्षण करबैत अछि। शिक्षककेँ अपन भूमिका पर उत्तर देब पड़ैत अछि; ओ केवल बाहरी अपराधीकेँ दोष दऽ कऽ मुक्त नहि भऽ सकैत अछि।

मुदा तकनीकी सहयोग, नैतिक असावधानी आ जानि-बुझि अपराधमे भागीदारी एक वस्तु नहि। अध्याय निशांतक अन्तःकरणक परिवर्तन विश्वसनीय बनबैत अछि, मुदा विधिक जिम्मेवारी निर्धारित नहि करैत। साहित्यिक मूल्याङ्कनमे ई अन्तर सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। बा एहि जटिल विमर्शकेँ सरल वाक्य ‘जे गलती बुझि गेल, से सुधारू’ द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्वक रूप दैत छथि। नैतिक शिक्षाक बल एतय आत्मस्वीकारक बादक व्यवहारमे अछि।

न्यायिक प्रक्रिया आ असंस्थागत प्रतिरोध

बटुकनाथक नोटिस आ डाकियाक गाछसँ हस्ताक्षर माँगबाक असम्भवता व्यंग्यात्मक दृश्य रचैत अछि। कानूनक कागज संस्था, अध्यक्ष, पता आ उत्तरदाता ताकैत अछि; पाठशालाक अस्तित्व बच्चाक प्रश्न, लोकक सामूहिक उपस्थिति आ पातक लेखनमे अछि। ई विरोधाभास प्रशासनिक नियन्त्रणक सीमाकेँ उजागर करैत अछि। तथापि औपचारिक संस्था

नहि होयब स्वयंमे कोनो सार्वभौमिक कानूनी सुरक्षा नहि—उपन्यासक चित्रणकेँ प्रतीकात्मक प्रतिरोधक रूपमे पढ़ब अधिक युक्तिसंगत अछि।

सत्यव्रत मेहताक व्यक्तिगत टिप्पणीक सीमित हैसियत कथाकार स्वयं स्पष्ट करैत छथि। ओ औपचारिक न्यायिक आदेश नहि। ई सावधानी अध्यायक बल अछि : लोकशिक्षाक नैतिक वैधता आ राज्यक विधिसम्मत निर्णय अलग-अलग स्तरपर बनैत अछि। चन्ना गाछीक पाठशाला अदालतक सम्पूर्ण विकल्प नहि, न्याय सँ पहिने सम्भव सामाजिक हस्तक्षेप अछि।

शिल्पगत उपलब्धि आ सीमा

बाल-लोकगीतक पुनरावृत्ति, कबड्डीक रेखा, सूखल पातक घंटी आ उज्ज्वलक फुटल मोबाइल एक बहुस्वरीय दृश्य बनबैत अछि। ‘अकेला तँ नहि छी?’ प्रश्न गीत, संवाद आ गामक अभिवादन—तीनू रूपमे घुरि अबैत अछि। बाख्तिनक संवादधर्मिताक सन्दर्भमे एहि रूपान्तरणक महत्त्व अछि : एक सूत्र लोकक अनेक कण्ठसँ बजैत सामाजिक व्यवहार बनैत अछि। मुदा अपराधी पक्षक प्रतिक्रियासभ कई ठाम अत्यन्त शीघ्र आ योजनाबद्ध देखाओल गेल अछि; पाठशालाक व्यावहारिक प्रभावक परिमाण पर्याप्त स्वतंत्र साक्ष्यक बदला संवादक माध्यमसँ व्यक्त होइत अछि। कथा एकर बदला लोकक प्रश्न जगबाक नैतिक प्रक्रिया प्रमुख बनबैत अछि। समग्रतः अध्यायक सर्वाधिक टिकाउ उपलब्धि मृतकक स्मृतिकेँ भयसँ बचबाक जीवित कौशलमे बदलब अछि।

# अध्याय २१ — निजताक शपथ

पीड़ितक मौनसँ स्वायत्तताक सामूहिक घोषणाधरि

आन्तरिक भयक सामाजिक रचना

अध्याय २०क ‘अकेला तँ नहि छी?’ प्रश्नक उत्तर अध्याय २१मे सामूहिक शपथ रूपेँ विकसित होइत अछि। आरम्भमे कथाकार स्पष्ट करैत छथि जे नाम लिखि देबामात्रसँ समाजक भीतर बैठल लाज, अपमानक भय आ निजताक असुरक्षा समाप्त नहि होइत। देविका उज्ज्वलक मृत्युक बाद समाज द्वारा ओकरा ‘अपने दोष’ कहि चिह्नित करबाक स्मरण करैत छथि। मृतकक बाद सेहो अपमानक पुनरुत्पादन एहि अध्यायक मुख्य नैतिक समस्या अछि। नामक अभिलेख जँ व्यक्तिक गरिमा सुरक्षित नहि करय, तँ ओ केवल दोसर सार्वजनिक सूची बनि रहि जाएत।

मीरा अर्थात् मृणालिनीक प्रसंग एहि समस्याकेँ आओर स्पष्ट करैत अछि। एक स्त्रीसँ ओकर प्रेमकेँ धमकी देनिहार लोक निजी सामग्रीक व्यापार बनबैत अछि। कथाकार प्रेमकेँ अपराधक रूपमे नहि, प्रेमक जानकारीक दुरुपयोगकेँ हिंसाक रूपमे देखबैत छथि। एहि परिवर्तनसँ आख्यानक दृष्टिबिन्दु पीड़ितक कथित ‘चरित्र’सँ हटि धमकी, निगरानी आ शोषणक सत्ता-संरचना दिस जाइत अछि। स्त्रीवादी ज्ञानमीमांसाक दृष्टिसँ ई महत्वपूर्ण अछि, कारण मीरा अपन अनुभवक अर्थक स्वयं व्याख्याकार बनैत छथि।

लाल माटिक वृत्त आ सार्वजनिक वचन

सौम्याक लाल माटिसँ खींचल वृत्त कथा भीतर विधिक शपथक अनुकृति नहि, ओकर सामुदायिक पुनर्रचना अछि। वृत्तमे ‘निजता’, ‘ठगी’ आ ‘लाज’ लिखल जाइत अछि। तीनू शब्दक बीच सम्बन्ध स्थापित करब एतय आवश्यक अछि : ठगी केवल धनलाभक अपराध नहि; बहुत बेर व्यक्तिगत जानकारीक ऊपर नियन्त्रण प्राप्त कऽ लोककेँ असगर करबाक अभ्यास अछि। ‘लाज अपराधीक हो’ वाक्य पीड़ित पर आरोप घुराओल जाएबाक चलनकेँ चुनौती दैत अछि।

वृत्तक सामाजिक बल ओकर खुलल स्वरूपमे अछि। मुदा एहि खुललपनक अन्तर्विरोध सेहो अछि। जे व्यक्ति अपन अनुभव सार्वजनिक नहि करए चाहैत छथि, हुनकर निजता सामूहिक शपथक उत्साहमे दोबारा भंग नहि होय। पहिनुक ‘नामक अभिलेख’ अध्यायमे स्वीकृत

मौनक अधिकार एहि अध्याय पर सेहो लागू होयबाक चाही। सामूहिक सुरक्षा तखने विश्वसनीय बनत जखन सार्वजनिक कथनक संग अस्वीकार, गोपनीयता आ सहमतिक अधिकार सुरक्षित रहत।

मुन्ना पासवानक साक्ष्य आ अपराधक तह

मुन्ना पासवान कहैत अछि जे पाँच हजारक आशामे ओकर बैंक-खाता प्रयोग कराओल गेल आ बादमे नामसँ पकड़ा गेल। ओकर कथनमे अपराधी नेटवर्कक गुमनामी आ स्थानीय व्यक्तिक दस्तावेजी दृश्यता स्पष्ट रूपसँ अलग अछि। मीरा ओकर नामकेँ बचबाक अधिकारसँ जोड़ैत छथि। एतय कथाकार सामाजिक शक्ति-असमानताक प्रश्न उठबैत छथि : भुगतानक अन्तिम सिरापर ठाढ़ व्यक्ति आसानीसँ चिन्हाइत अछि, मुदा नियंत्रणकारी व्यक्ति बचि सकैत अछि।

एहि दृश्यकेँ निर्दोषताक स्वचालित विधिक घोषणा मानब उचित नहि। ककरो संलग्नता, जानकारी, दबाव आ लाभक भिन्नता जाँचक विषय अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ कथा मुन्नाक कथनकेँ सुनबाक नैतिक अधिकार सुनिश्चित करैत अछि, अन्तिम न्यायिक निर्णय नहि सुनबैत। ई भेद राखलासँ अध्यायक सामाजिक करुणा आ प्रमाणक अनुशासन दूनू सुरक्षित रहैत अछि।

निजता, देह आ प्रेमक भाषिक राजनीति

सौम्याक नोटमे स्त्री, पुरुष, तेसर लिंग तथा भिन्न सम्बन्ध-रूपक व्यक्तिसभक देहक अधिकार समान धरातलपर राखल गेल अछि। बा सीताक स्मरण करैत लोकपरम्परासँ संवाद बनबैत छथि—पहिने स्त्रीक देह पर सार्वजनिक अधिकारक दबाव छल; आब ओहि दबावक विरोधमे स्त्री धरती पर अपन बात लिखत। ई प्रसंग पुराकथाक आवृत्ति नहि, ओकर पुनर्पाठ अछि। परम्पराक प्रतीक अपन मूल सामाजिक अपेक्षासँ नब नैतिक सम्भावना दिस मोड़ल जाइत अछि।

हुलासीक अनुपस्थित हाथक उपस्थिति आ इनारक पानिमे प्रतिबिम्बक बदलैत रूप अलौकिक शिल्पकेँ संवेदनात्मक अर्थ दैत अछि। मीरा जे लोकक सामने कहि नहि सकैत छली, ओ कथाक भूत-संसारक मौन संगतिमे अनुभव करैत छथि। अलौकिक पात्र एतय भयक वस्तु नहि, मानवीय स्वीकृतिक साक्षी बनैत छथि।

शिल्पगत परीक्षण

अध्यायमे कथन, शपथ, प्रश्न आ लोकगीतक आवृत्ति बहुत प्रभावकारी अछि। नेनी द्वारा ‘घरक लोक डाँटत तँ?’ पूछब निर्णायक अछि; ई प्रश्न सिद्धान्तक आत्मविश्वासकेँ वास्तविक सामाजिक परिस्थिति समक्ष अनैत अछि। तथापि एहन सामुदायिक शपथक बाद पीड़ितक पुनर्वास, जानकारीक सुरक्षा, विश्वासपात्रक चयन आ दस्तावेजक सीमित पहुँचक जटिलता अधिक खोलल जा सकैत छल। ‘हम दोषी नहि’ घोषणाक सामर्थ्य अपार अछि, मुदा ओकर उपयोग ककरो निज इतिहास सार्वजनिक करबाक बाध्यता नहि बनय—ई विवेचन अगिला साहित्यिक निष्कर्षक आवश्यक सावधानी अछि।

# अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण

सभागारक मंच आ पातक आवाजक प्रतिद्वन्द्विता

दू भोरक तुलनात्मक आरम्भ

कैम्ब्रिजक भोर आ गढ़ नारिकेलक भोरक अन्तरसँ अध्याय आरम्भ होइत अछि। धानक खेत, ओस, नारिकेल पात आ कमला-बलानक गन्ध विदेशक विश्वविद्यालय भवनमे स्मृतिक रूपमे उपस्थित होइत अछि। एहि असम्भव गन्धक माध्यमसँ भौगोलिक दूरी कथा भीतर नैतिक दूरीक प्रश्न बनैत अछि। पात्र शारीरिक रूपसँ अलग-अलग महादेशमे छथि, मुदा नामक अभिलेख ओकर अनुभव एक साझा श्रवण-क्षेत्रमे अनैत अछि।

एडवर्ड ब्रूमक भाषणक विषय ‘मानव गरिमा’ आ ‘उत्तरदायी पूँजी’ अछि। भाषणक सुव्यवस्थित मंच, सोना अक्षर, अस्पताल आ पुलक दृश्य—ई सभ नैतिक छविक सार्वजनिक उत्पादनक उपकरण बनैत अछि। ओकर समानान्तर गढ़ नारिकेलक बच्चासभ मृतकक नाम पढ़ैत छथि। मुख्य विरोध पूँजी बनाम ग्रामक साधारण विरोध नहि; अनाम लाभ-वर्णन बनाम विशेष व्यक्तिक उपस्थिति अछि। ब्रूम जेकर विषयमे ‘सबसे कमजोर मनुष्य’ कहैत अछि, ओ व्यक्ति सभागारमे उपस्थित नहि; नाम-पाठ एहि अनुपस्थितिक नाटकीय परीक्षण करैत अछि।

ईराक मौनक रणनीति

ईरा आरुणि अपन निर्धारित अग्रपाँतिक स्थान छोड़ि सभागारक बाहर सीढ़ीपर प्रसारण आयोजित करैत छथि। ओ सीधे आरोपपत्र नहि पढ़ैत छली; बच्चा सभक द्वारा उच्चरित नाम लोककेँ सुनबैत छथि। एहि दृश्यमे ‘प्रश्न नहि पूछब’ निष्क्रियता नहि, कार्यक्रमक नियमक बाहर स्वतंत्र सार्वजनिक क्षेत्र रचबाक निर्णय अछि। वक्ताक माइकक बदला भीजल पातक नाम कथा-कथनक केन्द्र बनैत अछि।

बाख्तिनक बहुस्वरताक अवधारणाक आलोकमे एहि दृश्यकेँ देखला पर मंचक एकमुखी वक्तव्यक सम्मुख अनेक सामाजिक अनुभव उपस्थित होइत अछि। तथापि नामक उच्चारण अपने-आप सभ सम्बन्धक अन्तिम ऐतिहासिक प्रमाण नहि। नाम स्मृतिक अधिकार जतबैत अछि; दोष, कारण आ उत्तरदायित्वक जाँच अलग स्तरपर बनैत अछि। अध्यायक नैतिक तीक्ष्णता एहि अन्तरकेँ मेटला सँ नहि, ओकरा प्रश्न बनएने रहबासँ आओर बढ़ैत अछि।

तकनीकी दृश्य आ अलौकिक हस्तक्षेप

ब्रूमक प्रस्तुतीकरणक स्लाइडमे बीच-बीचमे नाम प्रकट होइत अछि। कथाकार ई दृश्यकेँ तकनीकी व्यतिक्रम आ असाधारण स्मृतिक सीमापर राखैत छथि। कोन यन्त्रसँ स्लाइड बदलल, एकर निश्चित यथार्थवादी प्रक्रिया पाठ नहि दैत। एकरा सत्यापित साइबर-कार्रवाईक विवरण मानबाक बदला कथा भीतरक अलौकिक-नाटकीय हस्तक्षेप मानब उपयुक्त अछि। गोहिक जल, पुलक पाया, मजदूर आ मृतकक आवाज ब्रूमक भयमे लौटि अबैत अछि; एहि बिन्दुपर निजी अपराध-बोध, वास्तविक प्रसारण आ कल्पित प्रतिध्वनि एक-दोसरमे मिश्रित होइत अछि।

जेनेतक दृष्टिबिन्दु-विवेचनसँ देखला पर कथा ब्रूमक भीतरक अनुभव, ईराक निर्णय, सभागारक सामूहिक प्रतिक्रिया आ दूर देशक सञ्चालकसभक सन्देश बीच स्थानान्तरित होइत अछि। ई तीव्र परिवर्तन अन्तरमहादेशीय अपराध-जालक बहुकेन्द्रीयता देखबैत अछि। मुदा प्रत्येक परिवर्तन समरूप विस्तार नहि पबैत : विद्यार्थी, पत्रकार आ एलिना ग्रेव्सक प्रतिक्रिया अनेक स्थानपर प्रतिनिधि प्रतिक्रिया रूपेँ सीमित रहैत अछि। एहि कारण दृश्यक रूपकात्मक असर मजबूत अछि, मानसगत विविधता अपेक्षाकृत कम।

खाली मंचक प्रस्ताव

एलिना द्वारा ‘हम की कऽ सकैत छी?’ पूछल जाएब अध्यायक आलोचनात्मक केन्द्र अछि। ईराक उत्तर मंच खाली छोड़बाक अछि। ई कोई अन्तिम न्यायिक उपाय नहि; प्रतिष्ठित मंचक नैतिक उपयोगपर प्रश्नचिह्न अछि। जकरा आमन्त्रित कएल जाए, ओकरा सार्वभौमिक नैतिक विश्वसनीयता स्वतः भेटि जाए—एहि मान्यताकेँ कथा अस्वीकार करैत अछि। खाली मंच नकारात्मक क्रिया नहि, संस्थागत स्वीकृतिकेँ शर्तबद्ध करबाक राजनीतिक संकेत अछि। मुदा ईराक रणनीतिक चुप्पी आ बच्चासभक सार्वजनिक नाम-पाठक बीच निजताक पुरान प्रश्न फेर उठैत अछि। अध्याय १९ आ २१मे सहमतिक महत्त्व स्थापित अछि। विदेशमे सीधा प्रसारण करैत समय जीवित प्रभावित व्यक्तिक जानकारी, अपूर्ण पहिचान आ सीमित सार्वजनिक सहमतिक प्रश्न स्पष्ट रूपसँ सामने आओत तँ प्रतिरोधक नैतिक आधार आओर संगत बनत। कथाक कला ई तनावक कारणे अधिक विचारोत्तेजक होइत अछि।

मूल्याङ्कन

हार्वर्डक भाषण आ चन्ना गाछीक नाम-पाठक समानान्तर विन्यास अध्यायक प्रमुख उपलब्धि अछि। नामक उच्चारण ‘उपस्थित’क प्रत्युत्तर संग मृतककेँ कथाक वर्तमान कालमे अनैत अछि। सभागारक औपचारिक ताली आ बाहरक धैर्यपूर्ण मौन अलग सामाजिक लय गढ़ैत अछि। एडवर्ड ब्रूम द्वारा कम्पनीक नाम बदलल जाएब अन्ततः दाँतक स्थायित्व आ नामक अस्थिरताक व्यंग्य बनैत अछि। यद्यपि बाहरी सार्वजनिक प्रक्रियाक परिणाम तत्काल नाटकीय देखाओल गेल अछि, अध्याय सफलतापूर्वक प्रतिष्ठाक चमक आ प्रमाणक कठिन नैतिक प्रश्न बीचक भेद स्थापित करैत अछि।

# अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज

कागजी विजयक बाद अर्थक रिक्तता

पराजितक अनुपस्थिति

बटुकनाथ हरिहरन हाथमे जीतक आदेश लऽ कऽ ओहि लोककेँ ताकैत अछि जिनका ओ अदालतमे हरौने मानैत छल। मुदा कियो क्षमायाचना, अपील वा समझौताक लेल ओकर दुआर नहि अबैत। एहि अनुपस्थितिसँ अध्यायक मूल मनोवैज्ञानिक संघर्ष आरम्भ होइत अछि। कागजी आदेश बटुकनाथक पास अछि; विरोधी पक्षक व्यवहार पर नियन्त्रण ओकरा लग नहि। ओकर शक्ति संघर्षक निरन्तरतापर निर्भर छल, आ गढ़ नारिकेलक लोक प्रतिद्वन्द्वीकेँ केन्द्र बनायब छोड़ि अपन काज चुनि लेने छथि।

एहि कथात्मक निर्माणमे भयक कारण आक्रमण नहि, महत्वहीन होएबाक आशङ्का अछि। बटुकनाथ विरोध, शोर, मुकदमा आ अपीलकेँ वकालतक परिचित भाषामे बदलि सकैत अछि; मुदा लोक अपन काजमे लागल रहथि तँ ओकर व्यावसायिक प्रभुत्वक भाषा निष्फल होइत अछि। कथाकार ओकर आत्मप्रतिमा आ वास्तविक सामाजिक असर बीच दूरी बनबैत छथि। ई पात्रक आन्तरिक टूटनक विश्वसनीय साहित्यिक आधार अछि, चाहे कथानकमे अलौकिक संकेत सेहो उपस्थित रहय।

नक्शा आ नदी : प्रमाणक दू संसार

कमला-बलानक कछार पर नक्शा आ वास्तविक नदीक अन्तर एक प्रमुख प्रतीक अछि। चालकक कथन—‘नक्शामे नदी नहि चलैत, सर। एतय नदी चलैत अछि’—दस्तावेजीकृत व्यवस्था आ परिवर्तनशील जीवन-जगतक बीच सम्बन्ध पर गम्भीर टिप्पणी अछि। नक्शा निरर्थक नहि; मुदा नक्शा अकेला चलैत धारक स्थान नहि लऽ सकैत। नव्य न्यायक प्रमाण-विचारक दृष्टिसँ एहि प्रसंगमे लिखित विवरण, प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रसङ्गगत अनुमानक भिन्नताक परीक्षण सम्भव अछि। उपलब्ध दस्तावेज एक विषयक प्रमाण होइत अछि; सम्पूर्ण सामाजिक स्थिति जानबाक लेल उचित विषय, सम्बन्ध आ प्रमाण-सीमा आवश्यक अछि।

बटुकनाथक यात्रामे गति बाहरी रूपसँ शहरसँ गाम दिस अछि, मुदा मानसिक रूपसँ आदेशक निश्चितितासँ अनुत्तरित प्रश्न दिस। जे व्यक्ति न्यायिक स्थगन दोसर लोक पर थोपैत छल,

ओकरा अनन्याक ‘प्रतीक्षा करब न्यायालयमे सीखने हएब’ सुनब पड़ैत अछि। एहि विडम्बनाक असर उपदेशसँ बेसी संवादक भूमिकाक उलटफेरमे अछि।

नाम, मूल्य आ समझौताक असफलता

देविका मृतकक नामक बदला मुआवजाक दर पर बातचीत स्वीकार नहि करैत छली। मीरा निजी सामग्रीक ‘दबाओल’ जाएबाक प्रस्तावकेँ अस्वीकार कऽ ओकर दुरुपयोग समाप्त करबाक बात करैत छथि। आरुणि हाथमे याचिका नहि, कोदारि लेने भेटैत छथि; गोप कुमार ‘समाधान’क बदला ‘स्मरण’ कहैत छथि। एहि सभ दृश्यमे पात्रसभक व्यवहार कानून-विरोधी नारा नहि, मूल्य-निर्धारणक भिन्न व्यवस्था रचैत अछि।

तथापि मुआवजा आ स्मृति स्वभावतः विरोधी वस्तु नहि। पीड़ितक गरिमा सुरक्षित करैत उचित प्रतिकर प्राप्त करब सेहो न्यायसंगत भऽ सकैत अछि। बटुकनाथक प्रस्ताव एहि विशिष्ट प्रसंगमे अविश्वसनीय अछि, कारण ओकर उद्देश्य सामाजिक आन्दोलनकेँ दबाएब बुझाइत अछि। साहित्यिक आलोचनाकेँ एहि प्रसंगगत अविश्वासकेँ सामान्य सिद्धान्त बनाबय सँ बचबाक चाही।

कागजक नाव आ भीजल आदेश

अनन्या बटुकनाथक खाली समझौता-कागजसँ नाव बनबैत अछि आ पानिमे छोड़ि दैत अछि। ई क्षण प्रतीकात्मक रूपसँ निर्णायक अछि। नाम, पक्षकार आ सहमतिक विवरण बिना कागज पानीमे टिकैत नहि। ई पाठ-विशेषक व्यंग्य अछि, सम्पूर्ण लिखित न्यायिक व्यवस्थाक नकार नहि। गाममे अपन अधिकारसँ प्रवेश करबाक आकाङ्क्षा रखने व्यक्ति अन्ततः चन्ना गाछीक एक साधारण आगन्तुक बनि रहि जाइत अछि।

अलमारीमे जीतक आदेश पसीजबाक घटना अलौकिक रूपकक पुनरावृत्ति अछि। अदालतक मोहरक स्थिरता आ कछारक पानिक गतिशीलता एकहि वस्तुमे मिलि जाइत अछि। आदेशक भीतर उभरल प्रश्न ‘अपील ककर विरुद्ध?’ बटुकनाथक अधिकार-बोध पर चोट करैत अछि। जँ विपक्षी लोक अपन अन्य सामाजिक कार्य शुरू कऽ देलनि, तँ अदालतक विजय ओहि कार्यक अन्तिम अर्थ कोना निर्धारित करत?

उपलब्धि आ सीमा

अध्याय बटुकनाथक भीतरक रिक्तता, खाली दुआर, गामक मौन आ बच्चाक निर्भयताकेँ क्रमबद्ध नाट्यस्थितिमे बदलैत अछि। ओकर मनोवैज्ञानिक रचना विशेष रूपसँ प्रभावकारी

अछि। मुदा गामक लगभग प्रत्येक पात्र ओकरा प्रतिएक वाक्यक सटीक उत्तर दैत अछि; संवादक ई कौशल कखनो-कखनो पूर्वनियोजित नैतिक विजयक अनुभूति करबैत अछि। अधिक अनिश्चित प्रतिक्रिया पात्रक संसारकेँ आओर जटिल बना सकैत छल। तइयो अध्यायक उपलब्धि एहि प्रश्नमे अछि : प्रतिद्वन्द्वीकेँ हरायब सँ बेसी निर्णायक की ओहि प्रतिद्वन्द्वीकेँ अपन सामूहिक जीवनक केन्द्र बनायब छोड़ि देब नहि?

# अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू

समापनक निषेध आ अगिला पीढ़ीक लेखकीय अधिकार

अन्तक बादक भोर

अध्याय २४ स्वयं अपन शीर्षक द्वारा उपन्यासक परम्परागत समापन-अपेक्षा पर प्रश्न उठबैत अछि। बटुकनाथक भीजल आदेशक विपरीत चन्ना गाछीमे ओससँ भीजल नारिकेल-पात मौजूद अछि। एक दिस अदालतक स्थिर शब्द, दोसर दिस जीवित स्मृतिक परिवर्तित होइत लेखन। बालकसभ कबड्डीक पुरान रेखा पर नब रेखा खींचैत छथि। पुरान रेखा मेटाओल नहि गेल अछि; नब रेखा ओकर भीतर मिलि जाइत अछि। एहि दृश्यसँ कथा स्मृतिक निरन्तरता आ नव व्याख्याक अधिकार दूनू एकत्र व्यक्त करैत अछि।

अनन्याक ‘आब खेल शुरू’ कथनपछि कबड्डीमे उच्चरित नाम मृतकक उपस्थिति बनैत अछि। सोमित उज्ज्वलक नाम लैत अछि; नेनी सरयूक नाम बजैत अछि। गाछीमे अनदेखा खिलाड़ी ‘तीस नाम नहि, तीन सय नाम’ कहैत अछि। ई आवाज नाम-पञ्जीक अपूर्णताकेँ गलती नहि, उत्तरदायित्व बनबैत अछि। मृतकक सूची पूर्ण नहि भेलापर भविष्यक बच्चासभकेँ खोजब, लिखब आ सत्यापन करबाक काज भेटैत अछि।

कथाकारक अधिकारक परिवर्तन

आरुणि उपन्यासक अन्त लिखि चुकल बुझैत छथि, मुदा ग्रामसमाज कथाक स्वामित्व बदलि रहल अछि। ई शिल्पगत आत्मसन्दर्भ विशेष महत्त्वक अछि। कथा केवल पात्रक अनुभूतिपर नहि, कथाक निर्माण-प्रक्रियापर सेहो विचार करैत अछि। जेनेतक आख्यान-स्तरक अवधारणाक सन्दर्भमे आरुणि कथाभितर लेखकीय चेतनाक प्रतिनिधि बनैत छथि; अनन्या ओहि चेतनाक उत्तराधिकारी मात्र नहि, ओकर सीमाकेँ बदलनिहार नब लेखिका बनैत छथि।

जखन आरुणि अपन कॉपी अनन्याकेँ दैत छथि, तँ शिल्पक केन्द्र निर्णायक रूपसँ हस्तान्तरित होइत अछि। अनन्या लिखैत छथि—‘चन्ना गाछीमे आइ फेर कबड्डी भेल।’ अगिला पंक्तिमे पकड़ा गेल पात्र झूठ अछि। एहि वाक्यक अर्थ एहि बातमे अछि जे खेलेबाक नियम आब मूल कथाकारक इच्छासँ नहि, नव पीढ़ीक नैतिक कल्पनासँ निश्चित होएत।

उपन्यासक स्वामित्व सामाजिक होइत अछि—ई बात कथा उद्घोषणासँ नहि, लेखनक वस्तु हाथ बदलबाक क्रियासँ व्यक्त करैत अछि।

भूतक खेलसँ जीवितक खेल धरि

पहिल चरणमे भूतसभ खेलैत छलाह आ जीवित लोक डेराइत देखैत छल। एतय जीवित लोक खेलैत छथि आ भूतसभ आश्वस्त दर्शक बनैत छथि। ई भूमिकाक उलटफेर उपन्यासक दीर्घ शिल्पक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि। बूढ़बा भूतक थकान घटैत अछि; हुलासीक धुँधला हाथ प्रकट होइत अछि; पनिडुब्बीक आचरण आ राकशक इजोतक अर्थ बदलैत अछि। अलौकिक जगत कथाक बाहरी चमत्कार नहि, ऐतिहासिक पीड़ाक प्रतीकात्मक संवाहक बनि जाइत अछि। जखन जीवित लोक स्मृतिक जिम्मेवारी लैत छथि, मृतकक हस्तक्षेपक आवश्यकता बदलैत अछि।

हुलासी द्वारा अपूर्ण ‘जा’ लिखल जाएब अर्थपूर्ण अछि। जान, जन्म, जागरण आ जल—ई सम्भावित अर्थ एक अक्षरमे उपस्थित रहैत अछि, मुदा कोनो एक अर्थ अन्तिम नहि। त्स्वेतान तोदोरोवक अद्भुत आख्यान-विचारक आलोकमे एहि दृश्यकेँ पढ़ल जा सकैत अछि : चमत्कारक यथार्थगत स्थिति अन्तिम निर्णय नहि पबैत, तथापि पाठकीय अनुभवमे ओ सामाजिक स्मृतिक विश्वसनीय भाषा बनैत अछि।

भुगतानक जाल आ नव पीढ़ीक प्रश्न

देविका डिजिटल ठगीक कक्षा चलबैत छली, मीरा निजताक प्रश्न उठबैत छथि, निशांत पैसाक नलीक नक्शा देखबैत अछि, गोप कुमार अभिलेखक डिजिटल प्रति बनबैत अछि। एहि विविध काजसँ सामाजिक प्रतिरोध भावुक शपथक बाद संस्थागत व्यवहारक प्रश्न बनैत अछि। बच्चा पूछैत छथि जे पैसा घूमि कऽ फेर हुनकासँ किएक माँगल जाइत अछि; निशांत तत्काल उत्तर नहि दऽ सकैत। ई असमर्थता कथाक उपलब्धि अछि। सभ समस्याक समाधान पात्रक भाषणमे नहि भेटैत; किछु उत्तर लेल आर्थिक व्यवस्थामे वास्तविक परिवर्तन जरूरी अछि।

सत्यव्रत मेहताक ‘स्मृति पर राज्यक स्वामित्व नहि होइत’ टिप्पणी स्वतंत्र अभिलेखक अवधारणाकेँ पुष्ट करैत अछि। मुदा कथामे एहो प्रश्न शेष अछि जे पातक नामक संरक्षण, सार्वजनिक पहुँच, गलत नामक सुधार आ जीवित व्यक्तिक सहमति केना निश्चित होयत।

स्मृतिक सार्वजनिक अधिकार आ निजताक व्यक्ति-आधारित अधिकारक सन्तुलन एहि उपन्यासक अगिला आलोचनात्मक अन्वेषणक महत्त्वपूर्ण विषय बनैत अछि।

खुलल अन्त आ रचनात्मक ईमानदारी

अध्यायक अन्तमे अपराधी नेटवर्क समाप्त नहि होइत। चन्द्रपालक ऐप फेर चलैत अछि, किछु लोक फेर फँसैत छथि, विदेशी कम्पनी नव नामसँ सामने अबैत अछि। एहि स्वीकारोक्तिक कारणे अध्याय एक कृत्रिम सर्वविजयी समापनसँ बाँचैत अछि। समाजक ज्ञान बढ़ब आ अपराधक पूर्ण उन्मूलन एक समान घटना नहि। प्रतिरोधक उपलब्धि लम्बा आ अधूरा अछि।

नारिकेल फलमे पानिक बदला खालीपन आ ओहि खालीपनसँ पातक निकलनाइ सृजनक प्रतीक अछि। खालीपन अन्त नहि, लिखबाक स्थान अछि। मुदा एकर रूपकात्मक समृद्धिक संग कथामे प्रतीकक घनत्व सेहो बहुत बढ़ि जाइत अछि—फल, पात, ओस, रेत, छाह, जल, नाम आ कबड्डी लगभग प्रत्येक दृश्यकेँ अर्थ-घोषणामे बदलि दैत अछि। किछु ठाम अधिक मौन आ सामान्य दैनिक क्रिया स्वतन्त्र रूपसँ उभरैत तँ कथाक यथार्थ-लय अधिक प्रबल होइत। एतय नित्य जीवनक छोट दृश्य—स्त्री द्वारा खाली फलमे तुलसीक बीज राखब—विशेष महत्त्व पबैत अछि। अमूर्त पुनर्जन्म माटि आ बीजक साधारण क्रियामे ठोस भऽ जाइत अछि।

अध्यायक अन्तिम उपलब्धि समाप्तिक अधिकार छोड़ब अछि। आरुणिक उत्तर, ‘समाप्ति किताबक होइत अछि, गामक नहि’, उपन्यासक स्वरूपपर आलोचनात्मक टिप्पणी सेहो अछि। पुस्तक बंद भऽ सकैत अछि; जे समाज ओकर भीतरक नाम, प्रश्न आ न्याय-अन्यायक स्मृति सँ काम लैत अछि, ओकर कथा आगाँ चलैत रहैत अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय २०–२४

अभिलेख, सहारा, सार्वजनिकता, अस्वीकार आ पुनरारम्भ

एहि पाँच अध्यायक क्रममे स्मृति सामाजिक जीवनक अलग-अलग रूप ग्रहण करैत अछि। अध्याय २० नामक अभिलेखकेँ डिजिटल ठगीसँ बचबाक शिक्षामे बदलैत अछि। अध्याय २१ शिक्षासँ उठल भरोसाकेँ निजता, देह आ प्रेमक सार्वजनिक मर्यादाक शपथ बनबैत अछि। अध्याय २२ गामक नाम-पाठकेँ वैश्विक प्रतिष्ठित मंचक भाषणक सम्मुख रखैत अछि। अध्याय २३ कानूनी विजय पबनिहार पात्रकेँ ओहि समाजक सामने असहाय देखबैत अछि जे

ओकरा अपन जीवनक केन्द्र बनायब छोड़ि देने अछि। अध्याय २४ एहि सम्पूर्ण क्रमक लेखकीय स्वामित्व नव पीढ़ीकेँ सौंपि दैत अछि।

शिल्पमे तीन वस्तु निरन्तर घुरि अबैत अछि—कागज, पात आ स्क्रीन। कागज अदालतक आदेश, नोटिस आ समझौताक प्रारूप दैत अछि। पात मृतकक नाम, पाठशालाक नियम आ अगिला कथाक सम्भावना लैत अछि। स्क्रीन जालसाजी, धमकी आ अन्तरमहादेशीय व्यापारक माध्यम अछि, मुदा सएह स्क्रीन विदेशमे नाम-पाठक प्रसारण सेहो करैत अछि। कथाकार कोनो एक साधनकेँ पूर्णतः पवित्र वा अपवित्र घोषित नहि करैत छथि; ओकर उपयोगक नैतिक दिशा बदलब कथानकक विषय अछि।

दृश्य-स्थान सेहो बदलैत रहैत अछि। चन्ना गाछी स्मृति सँ पाठशाला, पाठशालासँ लोकशपथ, लोकशपथसँ अनौपचारिक न्यायिक प्रतिरोध आ अन्ततः नव कथाक आरम्भ-स्थल बनैत अछि। हार्वर्डक सभागार एहि चक्रक बाहरी प्रतिरूप अछि; बटुकनाथक अलमारी ओकर विरोधी अन्तःस्थान। चन्ना गाछी खुलल, बहुवाचक आ अपूर्ण; अलमारी बन्द, एकान्त आ निरर्थक विजयक स्थान अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ करुण रस सामाजिक उत्तरदायित्व दिस प्रवाहित होइत अछि। व्यङ्ग्य बटुकनाथक प्रतीक्षामे, खाली मंचक प्रस्तावमे आ डाकियाक प्रश्नमे विकसित होइत अछि। ध्वनिक स्तरपर पातक खरखराहट, नामक सामूहिक उच्चारण, पोखरिक छपाक आ बच्चाक मौन अनेक अर्थ संकेत करैत अछि। औचित्य-विचारक कसौटीपर एहि प्रतीकक सफल प्रयोगसँ संग हुनकर अधिकता सेहो परखबाक चाही।

आधुनिक पाश्चात्य आलोचनामे बहुस्वरता, स्मृति-अध्ययन, कथात्मक काल आ ज्ञानात्मक अन्यायक सन्दर्भ एहि पाठक लेल उपयोगी अछि। मुदा एहि सभ सिद्धान्तक उपस्थिति अपने-आप पाठक उपलब्धि प्रमाणित नहि करैत। विशिष्ट दृश्य—उज्ज्वलक फुटल काँच, मीराक शपथ, ईराक सीढ़ी, बटुकनाथक कागजी नाव, अनन्याक नव पन्ना—एहि विश्लेषणक मूल आधार अछि। नव्य न्यायक दृष्टिसँ स्मृति, प्रत्यक्ष, अनुमान, अभिलेख आ आरोपक प्रमाण-मर्यादा भिन्न अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ राज्यक आधिकारिक अभिलेखक संग लोकस्मृति, व्यक्तिगत गवाही आ प्रतिपक्षी आर्थिक विवरण एकसाथ देखबाक आवश्यकता अछि। दुनू दृष्टिकोण मिलि स्मृतिक नैतिक महत्त्व आ ऐतिहासिक जाँचक अनुशासन अलग राखैत अछि।

पाँच अध्यायक सामूहिक सीमा एहि बातमे अछि जे ठगीक शिक्षासँ परिणाम तुरन्त देखाइ पड़ैत अछि, विरोधी पक्षक गणना अपेक्षाकृत सोझ रूपमे विफल होइत अछि आ लोकसमूहक अनेक संवाद पूर्ण नैतिक बोधसँ सम्पन्न अछि। वास्तविक सामाजिक परिवर्तन एतबा रेखीय नहि। तथापि उपन्यासक उद्देश्य अपराधक सांख्यिकीय प्रतिवेदन तैयार करब नहि, लोकसमाजक स्मृति आ उत्तरदायित्वक कल्पनात्मक रूप गढ़ब अछि। एहि लक्ष्यक भीतर उपन्यास विजयकेँ सजाय नहि, सतत काज मानैत अछि—नाम लिखब, जोखिम चिन्हब, सहारा देब, निजता बचायब आ अगिला बच्चाकेँ लिखबाक अधिकार सौंपब।

# अध्याय २५ — मोन टांगल

नैतिक स्मृतिक उलटा प्रवाह : धूर्तक भीतर सामुदायिक न्याय

समापनक पश्चात् कथाक पुनः विस्तार

अध्याय २४क अन्तिम वाक्य आ अनन्याक हाथमे पहुँचल कापीक बाद अध्याय २५ अचानक पाँच एहन पात्रक मानस-दुनियामे प्रवेश करैत अछि, जे एखन धरि नामक अभिलेख आ पाठशालाक विरोधी रहल अछि। बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बत्रा, राघव ‘सिग्नल’ सोमानी, लाउ किन-हंग आ एडवर्ड ब्रूमक अलग-अलग आवास आ उपकरणमे चन्ना गाछीक पात, नाम आ पानिक स्मृति अस्वाभाविक ढंगसँ प्रकट होइत अछि। एहि संरचनागत निर्णयसँ लेखक कथाक नैतिक केन्द्र बदलैत छथि : न्याय-माँगनिहारक अनुभवक बाद न्यायसँ बचनिहारक भीतरक भय सामने अबैत अछि। ‘मोन टांगल’ केवल भावात्मक स्थिति नहि; कथानकमे देह आ मानसक अलग-अलग यात्रा सम्भव करएबला सूत्र अछि।

बटुकनाथक अलमारीमे जीतक आदेश विधिसम्मत मोहर आ हस्ताक्षरसहित उपस्थित अछि, मुदा ओकर कात रेत जमैत अछि आ रेतसँ ‘मोन टांगल’ अक्षर बनैत अछि। अदालतक दस्तावेज सत्यापित रूपमे कोठलीमे अछि, मुदा ओकर अनुभव अलौकिक अछि। ई भिन्नता अनिवार्य अछि : कागजपर वास्तवमे कोनो न्यायिक निर्णयक प्रामाणिकता बदलल अछि—एहन तथ्य कथाक जादुई दृश्यक आधारपर सिद्ध नहि होइत। साहित्यिक अर्थमे आदेशक सूखल रेत न्यायिक विजयक आन्तरिक रिक्तता बनैत अछि। जीतक औपचारिक स्थायित्व आ अनुभूतिक अस्थिरता बीच ई वैषम्य अध्यायक प्रथम कलात्मक उपलब्धि अछि।

पाँच ठामक पाँच असुविधा

चन्द्रपालक विधि-डिग्रीक काँचपर ‘पहिल म्यूल’ उभरब ओकर अपराध-जालक प्रारम्भिक खाताधारकक स्मृति फेर जगबैत अछि। राघवक मेटि जाएबला संदेश, अपने आवाजमे आयल ध्वनि आ डिजिटल पात नेटवर्कक बेनाम प्रक्रियाकेँ नामदार जीवनसँ जोड़ैत अछि। लाउक पाँच स्क्रीन—भुगतानक मार्ग, जुआक आँकड़ा, दवा-खरीद, आधार-निर्माण आ भारतक नक्शा—व्यापारक अलग-अलग प्रवाहकेँ एक दृश्य-व्यवस्थामे बाँधैत अछि। एडवर्ड ब्रूमक नैतिकताक भाषणक नीचाँ देवनागरी नाम देखाइ देब ओकर सार्वजनिक छवि आ

निजी स्मृतिक फाटल सम्बन्ध प्रकट करैत अछि। एहि सभ प्रसंगमे उपकरण बदलैत अछि, मुदा क्रियाक मूल रूप एके : जे कुछु आँकड़ामे बदलि देल गेल छल, से पुनः व्यक्तिक रूप धारण करैत अछि।

एहि समानान्तर दृश्य-रचनाक शिल्पगत लाभ व्यापकता अछि। नायक-पक्षक नैतिक घोषणा गाम धरि सीमित नहि रहैत; अपराधक वित्तीय, विधिक आ प्रचारात्मक केन्द्रसभमे पहुँचल तनावक रूप धारण करैत अछि। मुदा एकर सीमा सेहो अछि : लगभग सभ विरोधी पात्रक सामने एकहि प्रतीक—नारिकेलक पात—एकहि त्वरित प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया भिन्न छथि, मुदा चमत्कारी हस्तक्षेपक साम्य कखनो-कखनो पात्रगत विशिष्टताकेँ कम करैत अछि।

स्वप्न, अभिलेख आ उत्तरदायित्व

देविकाक स्वप्नमे उज्ज्वल मोबाइलक बदला काठक फटकी लेने अबैत अछि। ओकर वाक्य फोन काटि देबाक साहसकेँ अपन मृत्युसँ बचबाक प्रतीक बनबैत अछि। मीराक स्वप्नमे निजी जीवनक छविक खरीद-बिक्रीक दरबार अछि। निशांत भुगतान-नलीकेँ नदीक रूपमे देखैत अछि; सौम्या अंग्रेजी विधिक आ बैंक सम्बन्धी भाषाकेँ मैथिलीक अनुभव-प्रधान कथनमे परिवर्तित करैत छथि। ई सभ अनुक्रिया दोषी पक्षक दृश्यसभक प्रतिलोम अछि। विरोधीक स्वप्नमे नाम अभियोग अछि; पीड़ित आ सहयोगीक स्वप्नमे नाम सुरक्षा, अनुवाद आ साझा समझक माध्यम अछि।

एतय भाषाक प्रसंग उल्लेखनीय अछि। सौम्या द्वारा जटिल वित्तीय पदक मैथिली अर्थ खोजब मात्र अनुवादक काज नहि। ‘दोसराक नाम पर चलायल खाता’ सँ ‘अपन नामक देह भाड़ा पर देब’ धरि अर्थ विकसित होइत अछि। पहिल कथन प्रक्रियाक विवरण अछि; दोसरमे आर्थिक शोषणक देहगत आयाम प्रकट अछि। तथापि कवितामय अनुवादकेँ विधिक परिभाषाक स्थानपर सीधे प्रयोग करब अनुचित होयत। साहित्यक प्रभाव आ दस्तावेजी सटीकताक प्रयोजन अलग राखलासँ अध्यायक अर्थ अधिक स्पष्ट रहैत अछि।

अन्तरात्माक न्याय आ ओकर सीमा

सत्यव्रत मेहताक सरकारी पद आ निजी आत्माक दू अलग कुर्सी पर बैसल हेबाक दृश्य एक नैतिक उपमा अछि। एक खाली कुर्सी ‘सत्य’क प्रतीक्षामे अछि। लेखक एतय राज्यक औपचारिक संस्थासभक भीतर काज करएबला व्यक्तिक द्वन्द्व देखबैत छथि। शासन-विधिक

काज आ निजी अन्तःकरण परस्पर सम्बन्धित भऽ सकैत अछि, मुदा संस्थागत निर्णयक नियम केवल व्यक्तिगत पीड़ासँ निश्चित नहि होइत। नव्य न्यायक प्रमाण-विचार एहि ठाम एक उपयोगी सावधानी दैत अछि : स्वप्न, गन्ध, स्मृति आ प्रतीक पात्रक मानसिक अवस्थाक साक्ष्य भऽ सकैत अछि; वास्तविक अपराधक प्रमाण लेल स्वतंत्र अभिलेख, सम्बन्ध आ परीक्षण आवश्यक अछि।

राघवक ‘नाम कीनू’ सन्देशपर चकित होएब अध्यायक भाषिक शिखर अछि। लाभक भाषा मृतकक स्मृतिक मूल्य निर्धारित करब चाहैत अछि, मुदा नामक सामाजिक अर्थ मूल्य-सूचीसँ नहि धराबैत। एहि कारण जखन अनन्याक कापीमे ‘झूठक मोन गाछीमे आबि चुकल’ पंक्ति उभरैत अछि, कथा एक नब यात्रा-मञ्च तैयार करैत अछि। ई अद्भुत घटना मानसक पहिने पहुँचबाक कथात्मक घोषणा अछि, वास्तविक आवागमनक अभिलेख नहि।

शिल्पगत निष्कर्ष

स्वप्नक समवर्ती शृंखला, शहर-विदेशक काट-छाँट, काँच आ पातक विरोध, कुंजीक धात्विक स्पर्श आ अलमारीक धूरि अध्यायकेँ घन रूपकात्मक बनबैत अछि। लोकधुन ‘मोनक बाट घर’ यात्राक पूर्वलय बनैत अछि। मुख्य सीमा प्रतीकक तीव्र आवर्तन आ अपराधीक पक्षमे आत्मनिरीक्षणक शीघ्र आरम्भ अछि। तथापि अध्याय सफलतापूर्वक प्रश्न उठबैत अछि—नाममेटनिहारक भीतरी संसारमे स्मृति अपना मार्ग कोना बनबैत अछि?

# अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

दस्तावेजसँ देह धरि : रेल, प्रतिबिम्ब आ लोक-न्यायक प्रश्न

यात्राक भौतिकता

पिछला अध्यायमे ‘मोन’ गढ़ नारिकेल पहुँचि गेल अछि; एतय बटुकनाथ देहसँ प्रस्थान करैत अछि। ओ बार काउन्सिलक बैसकी रद्द करैत अछि, रेल पकड़बाक निर्णय लैत अछि आ अपन झोलामे जीतक आदेश, दू पेन-ड्राइव, सीलबन्द लिफाफा, नोट आ पिताक पुरान चश्मा रखैत अछि। एहि वस्तुसभक सूची आकस्मिक नहि : आधुनिक तकनीकी साक्ष्य, गोपनीय विधिक कागज, धन, निजी उत्तराधिकार आ औपचारिक फैसला एकहि झोलामे उपस्थित अछि। पिता द्वारा सिखाओल ‘कानून पढ़ह, मुदा लोक पढ़ब नहि बिसरह’ वाक्य पात्रक आत्मइतिहासकेँ वर्तमान यात्रासँ जोड़ैत अछि। पिता-पुत्रक स्मृतिक ई पुनरागमन अपराधी पात्रमे मानवीय जटिलताक प्रवेश अछि; एकरा प्रायश्चित्तक पूर्णता मानब जल्दबाजी होयत। रेल सार्वजनिक स्थानक रूपमे विशिष्ट अछि। विशेष पास आ प्रथम श्रेणीक प्रतीक्षालयसँ शुरू भऽ यात्रा आरक्षणविहीन छोट लाइनक भीड़, माछक टोकरी, किसान आ वृद्धाक अनुभव धरि पहुँचैत अछि। पदाधिकारसँ प्राप्त सुविधा क्रमशः कम होइत अछि। ई केवल वर्गीय अवनयनक नाटकीय उपाय नहि; पात्रक देह गवाहीक अर्थ सीखबाक परिस्थिति बनैत अछि। गामक बाट पर जूता उतारबाक क्षण माटिक स्पर्शकेँ ज्ञानक वैकल्पिक माध्यम बनबैत अछि।

टिकट परीक्षक आ अदृश्य सहयात्री

बूढ़बा भूत बूढ़ यात्रिकक रूपमे बटुकनाथक सामने बैसैत छथि, मुदा टिकट परीक्षक हुनका नहि देखैत अछि। ई दृश्य अद्भुत आख्यानक शास्त्रीय अनिश्चय निर्मित करैत अछि। बटुकनाथक अनुभूति ओकर निजी मानसक प्रक्षेपण अछि अथवा उपन्यासक जगतमे वास्तविक अलौकिक उपस्थिति—दुनू सम्भावना पाठकसमक्ष खुलल रहैत अछि। भूतक वाक्य ‘नाम पढ़ने छी?’ दस्तावेजक विधिक पहिचान आ मृतकक व्यक्तिगत जीवनक अनुभूतिक अन्तर बतबैत अछि। ओकर उपयोग कानून नकारबाक लेल नहि, लिखित साक्ष्यक मर्यादा पर प्रश्न उठएबाक लेल अछि।

टिकट परीक्षकक खाली सीट देखबाक प्रसंगक नैतिक तीक्ष्णता अछि। पात्र जे अनुभूति करैत अछि, औपचारिक निरीक्षक ओकरा नहि देखैत अछि। तखन अनुभव आ परीक्षणक दूरी स्वयं कथाक घटना बनैत अछि। नव्य न्यायसँ विचार कएल जाए तँ बटुकनाथक निजी प्रत्यक्ष एक प्रकारक अनुभूति अछि; टिकट परीक्षकक प्रत्यक्ष ओकर स्वतन्त्र प्रतिवाद। साहित्यिक अर्थमे ओहि टकरावसँ अनुपस्थित लोकक सामाजिक उपस्थिति व्यक्त होइत अछि, किन्तु बाह्य इतिहासक निष्कर्ष एकहि अनुभूतिसँ निश्चित नहि कएल जा सकैत।

स्टेशनक नाम आ प्रक्रियाक प्रतीक

ट्रेनक बोर्ड पर ‘तारीख’, ‘स्थगन’, ‘समझौता’ आ ‘मौन’ देखाइ देब न्यायिक प्रक्रियाक शब्दकेँ भौगोलिक यात्रा-पड़ाव बनबैत अछि। ‘मोन टांगल हाल्ट’ एहि रूपकक शिखर अछि। जे व्यक्ति तारीख आ स्थगनक उपयोग दूसर लोककेँ प्रतीक्षामे राखय लेल करैत छल, आब स्वयं अर्थक प्रतीक्षामे अछि। रेलक समय-सारिणी आ मुकदमाक समय-व्यवस्था आपसँ गुंथल अछि। जेनेतक आख्यानकालक दृष्टिसँ बाहरी यात्राक नियमित क्रमकेँ स्मृति, स्वप्न आ पुनरावृत्त दृश्य निरन्तर बाधित करैत अछि।

पिता, बाल्यकालक गरीब वादी आ स्टेशनक मखान-विक्रेता बालक तीन पीढ़ीक सामाजिक नजर खोलैत अछि। बालकक प्रश्न, जीतल लोक एते दुखी किएक, विजयक कानूनी वर्गीकरण पर अनुभवक सरल प्रतिप्रश्न अछि। बालक निष्कर्ष नहि सुनबैत; प्रश्नक सीधापनसँ बटुकनाथक आत्मविवरण अस्थिर करैत अछि।

छाहक झोला आ अर्थक स्थानान्तरण

आधिरातिक अनिर्दिष्ट स्टेशन पर बटुकनाथक छाह ओकर झोला लऽ उतरैत अछि, मुदा देह भीतर आ वास्तविक झोला गोदमे रहैत अछि। ई द्वैत एक अलौकिक पहेली अछि। बूढ़बा भूतक संकेत अनुसार बाहर आदेशक कागज रहल, भीतरक अर्थ उतरि गेल। दस्तावेज आ ओकर अर्थ एक-दोसरासँ पृथक भऽ सकैत अछि—ई उपन्यासक गहिर प्रश्न अछि। विधिक दस्तावेज सत्यापन योग्य बस्तु अछि; ओकर न्याय-संगतता आ सामाजिक प्रभाव अलग विवेचनक विषय अछि। कथाकार एहि दूरीकेँ छाहक देहधारी यात्रा बनबैत छथि।

अध्याय २३क संग कालक्रमक कठिन प्रश्न

एहि अध्यायक एक अनिवार्य आलोचनात्मक समस्या अछि। पहिनुक अध्याय २३ ‘बटुकनाथक खोज’मे बटुकनाथक गढ़ नारिकेल पहुँचनाइ, देविका, मीरा, आरुणि आ

अनन्यासँ भेट, पोखरिक अनुभव आ शहर घुरब वर्णित अछि। अध्याय २६ फेर ओकर यात्रा ‘देहक बारी’ आ ‘पहिल बेर’क अनुभव रूपेँ विस्तृत करैत अछि। एहि पुनरागमनकेँ समान पात्रक नब यात्रा, पूर्व यात्राक पुनर्कथन अथवा भिन्न कथात्मक काल-स्तर रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। मुदा उपलब्ध दृश्यसभ स्पष्ट तिथि वा संक्रमण-चिह्न नहि दैत जे एहि विकल्पसभमे एक निश्चित करय। एही लेल समीक्षा एकरा कालक्रमक सत्यापित एकरूपता घोषित नहि करैत। यदि लेखकक अभिप्रेत अर्थ पुनर्कथन अथवा असमकालिक आख्यान अछि, तँ ओकर संकेत आओर स्पष्ट होएबाक आवश्यकता अछि।

ई समस्या केवल सम्पादकीय सूक्ष्मता नहि। अध्याय २३क बटुकनाथ समाजक निर्भयतासँ हिलि उठैत अछि; अध्याय २६क बटुकनाथ यात्रामे एखनहुँ भय, नियन्त्रण आ सौदाक उपाय सोचैत अछि। दुनू रूप चरित्र-विकासक सम्भावित चरण छथि, मुदा क्रमक अनिश्चितता ओकर परिवर्तनक रेखा धुँधली बनबैत अछि।

औचित्य आ उपलब्धि

रेलयात्राक विवरण, उच्चवर्गीय सुविधा सँ लोकक सामान्य परिवेश धरि प्रवेश, माटिक ठंढक, पिताक चश्मा आ बच्चाक नाम-पाठ पात्रक मनोवैज्ञानिक यात्रा विश्वसनीय बनबैत अछि। भूतक अति-सटीक नैतिक वाक्य कखनो शिक्षाप्रद संवादक सीमा धरि पहुँचैत अछि; ओकर विपरीत खाली सीट, छाहक झोला आ माटि छूबाक क्षण अधिक बहुअर्थी अछि। अन्ततः ‘नाम पढ़ब?’ प्रश्न कर्तव्यक पहिल पाठ बनैत अछि, अपराधसँ स्वतः मुक्ति नहि।

# अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

साइबर-व्यापारक काँचभितर स्मृतिक प्रतिरोध

कक्ष, उपाधि आ प्रतिशत

चन्द्रपाल बत्रा गढ़ नारिकेल देहसँ नहि जाएबाक निर्णय लैत अछि। बटुकनाथक रेलयात्राक प्रतिलोममे ओकर स्थान स्थिर अछि : ऊँचका अपार्टमेण्ट, काँचक देबाल, अनेक स्क्रीन, डिजिटल जुआक आँकड़ा, खाताक सूची आ सन्देशक प्रवाह। शहरक छतसभ नीचाँ देखबाक दृश्य सत्ता-असमानताक स्थानिक रूप अछि। ओकर परिचयसूचक अनेक पदवीक अन्तमे ‘प्रतिशत’ एक स्थायी सूत्र रूपमे अबैत अछि। एहि भाषिक पुनरावृत्तिसँ विधिक योग्यता, अनुपालनक मुखौटा आ आर्थिक कमीशनक आन्तरिक सम्बन्ध प्रकट होइत अछि।

कक्ष स्वयं एक प्रतिकूल अदालत बनैत अछि। तेसर पक्षक गवाही नहि, सर्वर-प्रविष्टि; न्यायाधीश नहि, गणना; फैसला नहि, शेष रकम। कथाकार तकनीकी-सत्ता पर निर्भर तर्क-बोधक व्यंग्य करैत छथि, मुदा तकनीकक अस्तित्वमे नहि, ओकर दुरुपयोगमे नैतिक प्रश्न राखैत छथि। एहि भेदक कारणे ‘स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला’क पूर्व अध्यायसँ ई प्रसंग सम्बन्धित रहैत अछि : जँ स्क्रीन ठगीक माध्यम बनि सकैत अछि, तँ साक्ष्य आ लोकस्मृतिक माध्यम सेहो बनि सकैत अछि।

हटाओल नामक वापसी

बत्रा ‘उज्ज्वल झा’ नाम हटाबैत अछि, तखन मुन्ना पासवान, रितेश कुमार, सोहैल अंसारी आ एक अज्ञात स्त्रीक बेटाक परिचय क्रमशः सामने अबैत अछि। जे परिचय खाता-सूचीक सामान्य अंश रहल, ओ स्क्रीनक स्वतन्त्र प्रतिवादी जेकाँ प्रस्तुत होइत अछि। ‘नाम अज्ञात’ विशेष अर्थपूर्ण अछि, कारण डिजिटल प्रविष्टि भरल रहितहुँ व्यक्तिक वास्तविक परिचय अनुपस्थित भऽ सकैत अछि। नाम मेटाओल डेटा-प्रक्रिया आ व्यक्ति मेटाओल सामाजिक हिंसा बीचक रूपकात्मक समानता एहि दृश्यसँ बनैत अछि।

एहि क्षणक शिल्पगत कठिनाई ई अछि जे स्क्रीनक अद्भुत परिवर्तनकेँ बत्रा हैकिंग बुझैत अछि, मुदा सुरक्षा-जाँचमे कोनो घुसपैठ नहि देखाइत। कथा यथार्थवादी साइबर जाँचक प्रामाणिक प्रतिवेदन नहि दैत, बल्कि दोषीकेँ मात्र देखाइ देनिहार नामसभक अलौकिक विधान रचैत अछि। एहि अनुभवक आधारपर गोप कुमार, ईरा, सौम्या वा निशांत द्वारा

वास्तविक घुसपैठ सिद्ध भेल—एहन अनुमान अनुचित अछि। पात्रक आरोप ओकर भयक अभिव्यक्ति अछि, तथ्यक प्रमाणीकरण नहि।

मुखौटाक इतिहास

मेरठक विधि-शिक्षा आ राघवक मार्फत डिजिटल कारोबारमे प्रवेशक स्मृति चन्द्रपालक चरित्रकेँ पूर्वकथा दैत अछि। ‘कानूनक उद्देश्य न्याय होइत अछि’ लिखनिहार युवा विद्यार्थी धीरे-धीरे अनुपालनक भाषा प्रयोग कऽ जोखिमपूर्ण ऐपक रक्षा करएबला पात्र बनैत अछि। आत्मजिज्ञासा एतय केवल अपराध-स्वीकार नहि; शिक्षाक औपचारिक ज्ञान आ नैतिक उपयोग बीच गहींर अन्तर अछि। डिग्रीक फ्रेमक भीतर बदलैत अक्षर एहि विडम्बनाक दृश्य-केंद्र अछि।

बत्राक कोठलीमे तीन संस्थागत क्षेत्र भेटैत अछि : विधिशास्त्र, वित्तीय तकनीक आ जनसञ्चार। ओ कानूनी नोटिस बनबैत अछि, सर्वरक जाँच करबैत अछि आ समाचार-वृत्तान्त प्रभावित करबाक योजना रचैत अछि। नामक अभिलेखकेँ ‘अन्धविश्वास’ कहि उपहास करबाक प्रयत्न प्रतिपक्षी गवाहीक विश्वासनीयता घटएबाक भाषा-कौशल अछि। एहि ठाम विमर्शक शक्ति-विचार उपयोगी अछि : जे पक्ष सार्वजनिक शब्दावली नियंत्रित करैत अछि, ओ वास्तविक अनुभवक अर्थ सेहो बदलय चाहैत अछि।

फोन बन्द करबाक राजनीतिक अर्थ

बालकक फोन बन्द करब छोट दृश्य अछि, मुदा साम्राज्यक लाभ-धारणापर मूल प्रश्न उठबैत अछि। बत्राक नेटवर्क ध्यान, पुनरावृत्ति आ निरन्तर सम्पर्क पर टिकैत अछि। जखन व्यक्तिक चेतना ठगीक भय आ प्रलोभनक दबावसँ बाहर निकलैत अछि, ओकर निर्णयक स्वतन्त्रता पुनः सक्रिय होइत अछि। मुदा समस्त शोषणक संरचना केवल फोन बन्द कयलासँ नहि टूटैत : लाभक प्रवाह, अभियोजन, नियामक तन्त्र आ सामाजिक सहायता सभ परस्पर आवश्यक अछि। कथाकार एहि अंशमे प्रतीकक विजय प्रस्तुत करैत छथि; आलोचना ओकर व्यावहारिक सीमा चिन्हैत अछि।

सर्वर-प्रविष्टि आ दोषक सम्बन्ध

स्क्रीनपर उठल प्रश्न—पहिल जीत किएक देल गेल, हारलाक बाद ऋण-फोन किएक, मृत व्यक्तिक खाता किएक चलल—आर्थिक शोषणक भिन्न चरणक प्रति संकेत अछि। ई आरोपसभ कथाभितरक नैतिक प्रश्न छथि। वास्तविक आर्थिक अपराधक निर्णायक

प्रमाणक लेल लेन-देन, प्रयोगकर्ताक सहमति, शर्त, धमकी आ परिचालन-सूत्रक अभिलेख चाही। बत्राक निजी अनुभव न्यायालयक साक्ष्यक पर्याय नहि। एतय उपन्यासक रूपकात्मक सत्य आ बाह्य सत्यापनक अनुशासन अलग-अलग राखब विशेष महत्त्वक अछि।

शिल्पगत निर्णय

बटुकनाथक यात्रा सड़क आ रेलपर, बत्राक यात्रा काँचक दरार भीतर चलैत अछि। पहिल शारीरिक निकटता दिस, दोसर मानसिक असगरपन दिस। नेलकालीन स्क्रीनक निरन्तर पुनरावृत्ति भय उत्पन्न करैत अछि, मुदा सभ स्क्रीन एकहि संकेत देब लागलाक कारण दृश्यात्मक अचम्भाक तीव्रता किछु घटैत अछि। एहि सीमा बावजूद बत्राक अन्तिम संदेश ‘सबूत नहि, नाम खोजू’ आ पातक उत्तर ‘नाम खोजबासँ पहिने नाम सुनू’ ध्यान देबाक योग्य अछि। नाम सुननाइ नैतिक आरम्भ अछि; प्रमाण खोजब अनावश्यक नहि, बल्कि अलग अगिला चरण अछि।

# अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी

मिटनिहार सन्देशसँ अटल नाम धरि
मौनक बनाओल व्यापार

राघव सोमानीक व्यक्तित्व आवाजक भय पर आधारित अछि। आवाज अभिलिखित भऽ सकैत अछि, गवाही बनि सकैत अछि; तँ ओ मेटि जाएबला सन्देश, अनेक फोन, अलग सिम आ वैकल्पिक पहिचानक सहारा लैत अछि। एहि तकनीकी आचरणसँ उपन्यास आर्थिक अपराधक एक विशेष नैतिक संरचना व्यक्त करैत अछि : कारोबारी सम्पर्क जतेक विखण्डित, जिम्मेवारी ओतेक अदृश्य। राघव खाताक संख्या देखैत अछि, खाताधारक व्यक्तिक इतिहास नहि। ‘सिग्नल’ ओकर उपनाममात्र नहि; ओकर अपनाकेँ निरन्तर रूपेँ साक्ष्यसँ अलग राखबाक इच्छा अछि।

ओहि राति बन्द प्रिन्टर अपनाप पन्ना निकालैत अछि। ‘उज्ज्वल झा’, ‘मुन्ना पासवान’, ‘सरयू मजदूरिन’ आ ‘नाम अज्ञात’ प्रकट होइत अछि। तार हटाएलाक बादो प्रिन्टरक चलैत रहब स्पष्ट रूपसँ अलौकिक अथवा स्वप्नधर्मी आख्यानक युक्ति अछि। एकरा वास्तविक डिजिटल-अपराध अन्वेषणक तकनीकी विधि मानब नहि। ई दृश्य ई प्रश्न रूपायित करैत अछि जे मेटनिहार उपकरणक संसारमे सामाजिक स्मृति कतय टिकैत अछि।

बाल्यकालक बही आ पहिचानक विखण्डन

राघवक पिताक हार्डवेयर-दोकानक उधार-बही अध्यायक पुनरागमनशील प्रतिमा अछि। बाल्यकालमे देरीसँ पइसा देनिहार ग्राहकक नाम लिखल देखिकऽ राघव निष्कर्ष निकालेने छल जे नाम रखनाइ निरर्थक; खाता बेसी उपयोगी। ई छोट निर्णय आगे चलि आर्थिक शोषणक आधार बनैत अछि। किन्तु पिताक स्मरणमे उलटा पाठ अछि—खाताक हिसाब चूकय, तँ नामसँ प्रश्न पूछल जा सकैत अछि। एहि दू दृष्टिक बीच अंकक नियमितता आ व्यक्ति-आधारित उत्तरदायित्वक विरोध अछि। लेखक राघवक वर्तमान संकटकेँ ओकर निजी इतिहासमे पूर्वबीज दैत छथि।

कथाक अनुसार ओ छात्रावास, निजी महाविद्यालय आ श्रमिक आवास सभसँ गरीब युवकक बैंक-खाताक उपयोगक व्यवस्था बनबैत रहल अछि। एहि वर्णनमे बेरोजगारी आ नगण्य कमीशन अपराधी नेटवर्कक संसाधन बनैत अछि। मुदा मजबूरी, जानकारी, धोखा आ

स्वेच्छासँ संलग्नताक भिन्नताकेँ एके श्रेणीमे सीमित नहि करब चाही। उपन्यासक आलोचनात्मक बल एतय अछि जे अन्तिम स्थानीय नाम देखाइ पड़ैत अछि, जबकि निर्देश देनिहार संरचना बेनाम रहि सकैत अछि।

पहिल खाता : अरुणेश कुमार

अध्यायक निर्णायक क्षण राघव द्वारा पहिल विद्यार्थी खाताधारकक नाम खोजब अछि। पुरान पत्र, फोटो आ भुगतान देखैत ओकरा ‘अरुणेश कुमार’ भेटैत अछि। ई नाम प्रकट भेलापर पर्दा नहि काँपैत, भूत नहि अबैत, अक्षर स्थिर रहैत अछि। पूर्वक बारम्बार चमत्कारी दृश्यसभक बीच ई साधारण स्थिरता विशेष प्रभावी अछि। नाम भेटब अलौकिक दण्डसँ क्षणिक विश्राम दैत अछि; मुदा ओहि नामक नीचाँ अगिला खाली पंक्ति ओकर उत्तरदायित्वक व्यापकता पुनः खोलैत अछि।

राघव पुरान छात्रावास पहुँचैत अछि। भवन बदलि गेल अछि, दरबान नब अछि, मुदा चाह-दोकानक वृद्ध व्यक्ति अरुणेशक मामिला स्मरण करैत अछि। ई दृश्य आधुनिक स्मृति-अध्ययन लेल विशिष्ट अछि : डेटा-मिटानाइ आ लोकस्मृति-मिटानाइ समान प्रक्रिया नहि। चाहबलाक ‘दान नहि चाही, हिसाब साफ’ वाक्य अनावश्यक आर्थिक कृपाक बदला उत्तरदायित्वक सटीक माँग अछि। राघव द्वारा अतिरिक्त पैसा देबाक क्षण स्वयंसिद्ध प्रायश्चित्त नहि; ओ सम्बन्धकेँ फेर एक वित्तीय व्यवहारमे सीमित करबाक पुरान चेष्टा सेहो भऽ सकैत अछि।

मौनीक नैतिक सम्भावना आ संकट

राघव म्यूल-खाताक नब भर्ती रोकबाक संदेश पठबैत अछि। ई वास्तविक व्यवहारगत बदलावक संकेत अछि, मुदा तत्काल निर्विवाद नैतिक परिवर्तन नहि। ओ अपन पुरान सम्पर्कसभक नाम खोजैत अछि, तइयो विदेशी मालिकक प्रतिक्रिया सँ डेराइत अछि। सिम तोड़ब, पन्ना सहेजब आ फोन सिरहाने नहि राखब—तीनू क्रिया अलग अर्थ राखैत अछि। सिम तोड़लासँ अपराधक इतिहास अपने नहि सुधरैत, उलटा सम्भावित अभिलेखक विनाशक प्रश्न उठि सकैत अछि। पन्नामे नाम जोड़ब स्मृतिक प्रारम्भ होइत अछि। फोन दूर राखब व्यक्तिगत निर्भरता घटएबाक प्रतीक अछि।

लेखक अन्तमे स्पष्ट करैत छथि जे राघवक काज एखन स्वीकारोक्ति अथवा प्रायश्चित्त नहि, केवल आरम्भ अछि। ई सावधानी अध्यायक मुख्य कलात्मक उपलब्धि अछि। जे पात्र अपन

अपराधजालमे सक्रिय अछि, ओकर एक भावनात्मक राति ओकर सम्पूर्ण उत्तरदायित्व समाप्त नहि करैत। अद्भुत स्वप्न आ मनोवैज्ञानिक संकटक बीच ई अधूरापन कथाकेँ नैतिक विश्वसनीयता दैत अछि।

नव्य न्याय आ अभिलेखक विचार

राघवक बही, प्रिन्टरक पन्ना, पुरान बैंक-सूची, वृद्ध चाहबलाक स्मरण आ अरुणेशक वास्तविक नाम—ई सभ भिन्न प्रमाण-स्रोत अछि। एतय खाताक अंकसँ वास्तविक व्यक्तिसँ सम्बन्धित अनुमान करब तभी उचित जखन पर्याप्त सम्बन्ध-सूत्र उपलब्ध हो। चाहबलाक मौखिक स्मृति महत्वपूर्ण अछि, किन्तु एकमात्र अन्तिम प्रमाण नहि। तथापि एहने मौखिक स्मृति प्रायः औपचारिक दस्तावेजक जाँच लेल महत्त्वपूर्ण सूत्र दैत अछि। उपन्यास एहि समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक सम्भावना रचैत अछि।

मूल्याङ्कन

राघवक अलमारी, अज्ञात नामक खाली पन्ना, पिताक बही आ अरुणेशक खोज एक जटिल मनोवैज्ञानिक वृत्त रचैत अछि। मनोवैज्ञानिक विस्तार एहि बैचक अन्य विरोधी अध्यायसभसँ अधिक क्रमबद्ध अछि। चमत्कारी प्रिन्टर आ फोनक अनेक रूप कखनो अधिक सजावट बुझा सकैत अछि, मुदा चाह-दोकानक दृश्य ओकर कथा केँ दैनिक जीवनक ठोस माटि दैत अछि। ‘मौन’ यहाँ अपराधक रणनीति सँ सुनबाक नैतिक पूर्वशर्त बनबाक दिशामे बदलैत अछि।

# अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना

अन्तरदेशीय लाभक भाषा आ मृतकक अनुपस्थित सूची

तीन अक्षरक सत्ता

लाउ किन-हंग अपन पूरा नाम लुकाबैत अछि आ ‘एल. के. एच.’ बनि रहैत अछि। कथाकार एहि नाम-सङ्कोचनकेँ पकड़े जाएबाक भय आ वैश्विक वित्तीय अन्हारक संरचनासँ जोड़ैत छथि। व्यक्तिक पूर्ण नाम दस्तावेजी उत्तरदायित्वक सम्भावना खोलैत अछि; संक्षेप ओकर संपर्क-व्यवहारक सुविधा बनैत अछि। मुदा तीन अक्षरक उपयोग अपने-आप विधिक प्रमाणक अभाव नहि। कथामे ई एक अर्थप्रधान लक्षण अछि : जकरा सभक जीवनक वास्तविक नाम ओ मेटबैत अछि, ओ स्वयं अपन नाम अधूरा राखैत अछि।

शीशाक घर आ समुद्रक आरम्भिक विरोध दृष्टिगत अछि—बाहर जहाज आ पानि, भीतर खाता आ प्रतिशत। लाउ समुद्रकेँ प्रत्यक्ष जलराशिक रूपमे नहि, रकमक प्रवाहक रूपमे पढ़ैत अछि। भूगोलक वित्तीय अनुवाद ओकर संसारक मूल अभ्यस्त प्रक्रिया अछि। गढ़ नारिकेलक छोट बिन्दु नक्शामे अस्थिर होइतहि ओकर परिचित मानचित्रक भरोसा डगमगाए लागैत अछि।

जल-स्वप्नक आरोह

लाउक स्वप्नमे पानी क्रमशः घरक तल्ला, घुटना, छाती धरि पहुँचैत अछि। प्रत्येक चरणपर ओकर मानसिक उत्तर व्यावसायिक अछि—बीमा, पम्प, आपात निकास, हेलिकॉप्टर। ई चारि प्रतिक्रिया संकटकेँ प्रबन्धनयोग्य संपत्ति-जोखिम मानैत अछि। मुदा पानीमे समुद्रक नमक नहि, अस्पतालक दवा, पुलक सीमेन्ट, मोबाइलक ताप आ नोटक सीलन अछि। ई असम्भव मिश्रित गन्ध विभिन्न अपराध-सूत्रकेँ एक नैतिक जलमे रूपान्तरित करैत अछि। जे आर्थिक जोखिम विभाजित कएल गेल छल, से स्वप्नमे अविभाज्य सामाजिक अनुभव भऽ जाइत अछि।

पानीपर तैरैत मोबाइलसभमे उज्ज्वलक प्रश्न, सरयूक पुल-सम्बन्धी प्रश्न आ डिजिटल गिरफ्तारीक धमकीसँ प्रभावित स्त्रीक आवाज उठैत अछि। एहि प्रश्नसभक साहित्यिक मूल्य न्यायिक निष्कर्षमे नहि, कारण-श्रृंखला मांगबामे अछि। स्वप्न पात्रक मानसक सामना पीड़ितक कथनसँ करबैत अछि। मुदा प्रत्येक आरोपक वास्तविक संस्थागत, अनुबंधीय आ

लेन-देन सम्बन्ध बाहरी अभिलेखक परीक्षण माँगैत अछि। लाउक सपनामे ककरो चेहरा देखनाइ व्यक्तिगत दोषक अन्तिम ऐतिहासिक पुष्टिकरण नहि।

गोहिक बहुरूपी प्रतीक

चारि गोहि क्रमशः मोबाइल-स्क्रीन, अदालतक मोहर, हार्वर्डक इजोत आ अस्पतालक उपकरण-औषधिक संग्रहसँ जुड़ैत अछि। एहि रूपान्तरणसँ उपन्यासक मूल शीर्षकक गोहि वास्तविक जलचरक संग विधिक, वित्तीय, स्वास्थ्यगत आ प्रचारात्मक तन्त्रक प्रतीक बनैत अछि। गोहिक पीठपर अदालतक मोहर संस्थागत प्रक्रियाक दुरुपयोगक संकेत अछि; मुदा अदालतक समस्त कामकेँ गोहिक पेटमे राखि देब सार्थक निष्कर्ष नहि। रूपकक आलोचना अति-सामान्यीकरणसँ बचब चाहैत अछि। अनुकूल दृश्य ओ अछि जे विशिष्ट संस्थागत भ्रष्टता अथवा शोषणक सम्बन्ध खोलैत अछि, न कि सभ संस्थाकेँ समान घोषित करैत अछि।

हार्वर्डक सभागारक स्वप्नमे ब्रूमक नैतिक शब्दक पाछाँ आर्थिक राशि देखाइत अछि। ‘गरिमा’ आ ‘विकास’क भाषाक बाजार-भाव बनि जाएब भाषिक वस्तुकरणक तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। ईराक बाहर बच्चासभसँ नाम पढ़ेबाक आयोजन पूर्व अध्याय २२क पुनरावर्तन अछि; लाउक स्वप्नमे ओ पुनरावर्तन नव दृष्टिबिन्दुसँ घटैत अछि। पहिने दृश्य प्रतिरोधी समाजक दृष्टिसँ छल, एतय स्वार्थी निवेशकक भयमिश्रित मानससँ। एहि परिवर्तनसँ समान घटना अर्थक नब तह पबैत अछि।

‘निन्न’क खाली कॉलम

बूढ़बा भूत द्वारा खातामे ‘निन्न’क अनुपस्थित कॉलम चिन्हित करब अध्यायक सर्वाधिक सार्थक बिम्ब अछि। लाभ, जोखिम, आंशिकता आ भविष्यवाणीक गणना करएबला पात्रक सभसँ मूल मानवीय विश्राम लेखा-बहीमे दर्ज नहि। एहि बिम्बक कारण उपन्यास दण्डक कथा मात्र नहि रहैत; लगातार नियन्त्रणक आकाङ्क्षा सँ उत्पन्न मानसिक कैदक कथा सेहो बनैत अछि। लाउ स्वप्नमे असहाय अछि, किन्तु जागलाक बाद ओकर पहिल व्यवहार आत्मसमर्पण नहि—साथीसभक पहुँच काटब आ भुगतान रोकब अछि। एहि विरोधसँ कथाकार परिवर्तनक सीमितता स्पष्ट करैत छथि।

मेई लानक प्रश्न आ पातक प्रत्यक्षता

सहायक मेई लान लाउक निर्देश स्वीकार करैत छथि, मुदा गामक अस्तित्व आ नाम खोजबाक बढ़ल प्रवृत्तिक तथ्यात्मक संकेत सेहो दैत छथि। मेई लानक उपस्थितिसँ स्वप्नक बाद बाहरी आर्थिक-सञ्चालनक संसार फेर प्रवेश करैत अछि। टेबलपर नारिकेल-पात देखला पर सहायक पूछैत छथि जे ई के अनलक; लाउ उत्तर दैत अछि ‘कियो नहि’। एहि दृश्यकेँ कथाभितरक अलौकिक घटना मानब सम्भव अछि; मुदा ई वास्तविक विश्वक पुष्टि कएल आर्थिक दस्तावेज नहि। लाउक निजी अनुभव आ मेई लानक प्रश्नक साझा उपस्थितिसँ अद्भुतक आयाम विस्तृत होइत अछि।

राघवक पहुँच बन्द करब, बत्राक भुगतान रोकब आ हरिहरनक खर्च अलग रखब तीन विशिष्ट आर्थिक निर्णय छथि। ई सभ नैतिक रूपान्तरणक प्रमाण नहि; सम्भवतः क्षतिग्रस्त नेटवर्क सँ अपने केँ अलग रखबाक रणनीति अछि। एकरा स्पष्ट राखलासँ पात्रक मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता सुरक्षित रहैत अछि। लाउ सपना सँ भयभीत अछि, मुदा आर्थिक नियन्त्रणक पुरान अभ्यस्त साधन एखनहुँ नहि छोड़ने अछि।

मूल्याङ्कन

स्वप्नक आरोही जल, मोबाइलक क्रम, चारि गोहि, हार्वर्डक पुनरावर्तन, खाली ‘निन्न’ कॉलम आ हरियर पातक धड़कन अध्यायक सघन रूपक-समूह बनबैत अछि। अर्थक घनत्व ओकर शक्ति अछि; सीमा ई जे लगभग प्रत्येक उपकरण नैतिक प्रश्नक उत्तर एकहि दिशा सँ देब शुरू करैत अछि। विभिन्न पात्रक स्वतंत्र इच्छाक अनिश्चितता कम भऽ सकैत अछि। तथापि लाउक अन्तिम निर्णय आत्मस्वीकृतिक बदला कारोबार-सुरक्षा पर आधारित अछि; ई अपूर्णता अध्यायकेँ कृत्रिम नैतिक मुक्ति सँ बचबैत अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय २५–२९

मोन, यात्रा, स्क्रीन, चुप्पी आ सपना

एहि पाँच अध्यायक आन्तरिक अनुक्रम एक विशिष्ट विरोधी-चरित्र-शृंखला बनबैत अछि। अध्याय २५मे पाँच प्रमुख धूर्तक मानस एकसाथ चन्ना गाछीक स्मृतिसँ विक्षुब्ध होइत अछि। अध्याय २६ बटुकनाथक देहक यात्रा दिखबैत अछि; अध्याय २७ चन्द्रपालकेँ अपन स्क्रीनक भीतर बन्द राखैत अछि; अध्याय २८ राघवक मौनकेँ पहिल खाताधारकक नाम खोजबाक श्रममे बदलैत अछि; अध्याय २९ लाउक समुद्र-पार वित्तीय साम्राज्यकेँ स्वप्नक पानीमे

असुरक्षित बनबैत अछि। चारि प्रकारक अन्तरात्मा एकहि प्रतीक स्वीकार करैत अछि, मुदा ओकर व्यवहारगत प्रतिक्रिया एकसमान नहि।

समानता आ भिन्नता

बटुकनाथ यात्रा करैत अछि, परन्तु नियंत्रणक इच्छा तुरन्त छोड़ैत नहि। चन्द्रपाल नहि जाएबाक निर्णय लैत अछि, लेकिन स्क्रीनसँ स्वयं नहि बचि सकैत। राघव प्रारम्भिक स्तरपर भर्ती रोकैत अछि आ अरुणेशक नाम खोजैत अछि, मुदा पूर्ण उत्तरदायित्व स्वीकार एखन नहि करैत। लाउ अपन अधीनस्थ लोकक पहुँच काटि व्यापारिक जोखिम घटाबय चाहैत अछि। एहि क्रममे पाँच पात्रक मनोदशामे परिवर्तनक स्तर क्रमशः अलग अछि। कथा परिवर्तनक एक मात्र नैतिक प्रतिरूप लागू करबासँ आंशिक रूपेँ बचैत अछि।

स्थल-शिल्पमे अलमारी, रेल, काँचक अपार्टमेण्ट, धातुक अलमारी आ समुद्रक शीशाघर एक अन्तरसम्बद्ध वस्तु-समूह बनैत अछि। सभ ठाम भीतर-बाहरक सीमा उपस्थित अछि : ताला, दरबाजा, खिड़की, नेटवर्क, काँच, नाम आ कागज। एहि सीमापर स्मृति प्रकट होइत अछि। पातक नस—पैसाक नली, लोकक जीवन-रेखा आ अभिलेखक पृष्ठ—तीनू रूपककेँ आपस मे जोड़ैत अछि। नदीक ‘छपाक’ वित्तीय लेन-देनक अदृश्य सामाजिक आघातक ध्वन्यात्मक समकक्ष बनैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ भयानक रसक आन्तरिक स्रोत बदलैत अछि। पहिने पीड़ित पात्र भयभीत छलाह; आब आपराधिक लाभक संरचना चलबेनिहार पात्र अपन स्मृतिसँ डेराइत अछि। बीभत्स आ करुणक स्पर्श राघवक पन्ना पर नाम, लाउक मोबाइलमे मृतकक छवि आ बटुकनाथक आदेशक रेतमे प्रकट होइत अछि। वक्रोक्तिक विशेष बल वस्तुक उलटा व्यवहारमे अछि—मेटायल संदेश लौटैत अछि, बन्द प्रिन्टर छापैत अछि, विजयक आदेश आरोप जेकाँ बजैत अछि, समुद्रक पानि मृतकक आवाज लैत अछि। मुदा औचित्यक कसौटीपर चमत्कारक आवृत्तिक सीमा दर्ज करबाक चाही; एकहि नैतिक संदेश बहुत उपकरणसँ दोहरलाक कारण कथाक अनपेक्षितता घटि सकैत अछि।

पाश्चात्य आलोचनाक दृष्टिसँ स्वप्न-विन्यास, आत्मप्रक्षेपण, अपराध-बोध आ अविश्वसनीय अनुभूतिक प्रश्न प्रासंगिक अछि। तोदोरोवक अद्भुत आख्यान-संकल्पना विशेष उपयोगी अछि, कारण अनेक दृश्यक प्राकृतिक आ अलौकिक व्याख्या बीच पाठक निर्णय स्थगित राखि सकैत अछि। एकर संग समकालीन अभिलेख-अध्ययनक प्रश्न अछि : केकर नाम

डेटामे रहल, केकर नाम मेटाओल गेल, कोन व्यक्तिक कथन साक्ष्य बनल, आ केकरा मात्र लाभक प्रतिशत बना देल गेल?

नव्य न्याय आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे एहि अध्यायसभकेँ पढ़ैत स्पष्ट करबाक आवश्यकता अछि जे मूल उपन्यास अपराधी पात्रक मानसक भीतर भावात्मक सत्य रचैत अछि। स्वप्न, अलौकिक पात, निजी भय आ कल्पित संवाद वास्तविक वित्तीय लेन-देनक सत्यापनक स्थान नहि लऽ सकैत। मुदा ई दृश्य जाँचक नैतिक प्रश्न उपस्थित करैत अछि : कतबा खाताक पाछाँ वास्तविक व्यक्तिक नाम मिलैत अछि, हस्ताक्षर केकर अछि, निर्देश के देलक, लाभ के पाओलक, आ प्रभावित परिवारक सार्वजनिक वा निजी स्मृतिक स्थान कतय अछि?

विशेष पाठगत आपत्ति

अध्याय २३मे बटुकनाथक गढ़ नारिकेल भ्रमण आ पुनरागमन वर्णित भेला बाद अध्याय २६मे ओकर पहिल निर्णायक आगमनक रूपमे यात्रा प्रस्तुति कालक्रमक स्पष्ट संकेत बिना दोहरल गेल अछि। ई सम्भवतः पुनर्कथन, नव यात्रा अथवा असमकालिक आख्यानक उपकरण हो; मुदा पाठक लेल सत्यापनयोग्य संक्रमण नहिएँ स्पष्ट अछि। ओही प्रकार अध्याय २४क ‘उपन्यास फेर शुरू’ आत्मसन्दर्भ अध्याय २५ सँ आरम्भ विरोधी-मानसक नव चक्रक कारण रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। लेखक एहन चक्रात्मक रचना चाहैत छथि तँ पूर्वरचित यात्रा आ नव यात्रा बीच शीर्षकीय अथवा कथात्मक संकेत जोड़लासँ पाठककेँ लाभ होएत। मूल पाठमे चुपचाप परिवर्तन करब उचित नहि; समीक्षा एहि बिन्दुकेँ पाठगत परीक्षणक विषय रूपमे सुरक्षित रखैत अछि।

अन्तिम मूल्याङ्कन

एहि पाँच अध्यायक सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि अपराधी-पक्षक भीतर नाम सुनबाक असह्य अनुभव उपस्थित करब अछि। आत्मग्लानि स्वतः न्याय नहि; चुप्पी स्वतः स्वीकारोक्ति नहि; स्वप्न स्वतः क्षतिपूर्ति नहि। कथाक गम्भीर अर्थ एहि दूरीकेँ चिन्हबामे अछि। गढ़ नारिकेलक पाठशालाक पहिल प्रश्न ‘अकेला तँ नहि छी?’ आब अपराध-जालक कक्षसभमे एक विपरीत प्रश्न बनि उठैत अछि—‘केकर नाम मेटलहुँ?’ एहि बदलैत प्रश्नक कारण स्मृति पीड़ितक सहारा रहैत, अपराधीकेँ उत्तरदायित्वसँ सामना कराबयवला नैतिक शक्ति सेहो बनैत अछि।

# अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत

*बाहरी निर्णयक भाषा आ अन्त:करणक असमाप्त सुनवाई*

## पाँच स्थान, एक नैतिक रात्रि

अध्याय २९मे लाउ किन-हंगक स्वप्न तक पहुँचल मानसिक बेचैनी अध्याय ३०मे पाँच प्रमुख प्रतिपक्षी पात्रक साझा रात्रिक रूप लैत अछि। बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बत्रा, राघव ‘सिग्नल’ सोमानी, लाउ किन-हंग आ एडवर्ड ब्रूम अपन-अपन सुरक्षित ठामपर छथि; तथापि हुनकर मोनपर एकहि प्रश्नक दबाव अछि। उपन्यास एहि पाँच भिन्न ठामकेँ बारी-बारी खोलैत अछि, जाहिसँ शहरक न्यायालय, बैंक-संलग्न स्क्रीन, मेटाइत सन्देशक संसार, समुद्रपारक शीशाघर आ प्रतिष्ठित सभागार एक अमूर्त अदालतक परस्पर सम्बद्ध कक्ष बनि जाइत अछि। पात्रसभक पारस्परिक सम्पर्कक ठोस साधन एतय आवश्यक नहि; कथाकार अपराधसँ उपजल बेचैनीकेँ साझा समयक संरचनामे बाँधैत छथि।

एहि संरचनाक प्रभाव ई अछि जे बाहरी संस्थागत विजयक निश्चितता भीतरक अनुभवमे विघटित होइत अछि। पाँचू पात्र अपन भूमिकाकेँ अलग-अलग सीमामे व्याख्यायित करैत छथि—कानूनी प्रक्रिया, खाताक स्वीकृति, सन्देशक वहन, प्रतिशतक गणना, अथवा नैतिक भाषण। मुदा भीतरक अदालत एहि सभ विभाजनकेँ स्वीकार नहि करैत। एकर मूल प्रश्न ककरा दण्ड देल जाए से मात्र नहि, बल्कि ककर प्रभावक फल ककर देह, घर आ नामपर पड़ल—से अछि। एकर कारण

एहि खण्डमे अपराध-जालक बहुकेन्द्रीय संरचना स्पष्ट होइत अछि; दायित्वक एकल केन्द्र खोजबाक बदला अलग-अलग सम्बन्धक जाँच आवश्यक देखाओल गेल अछि।

## बटुकनाथ : पदक अधिकार आ बाल्यकालक प्रतिप्रश्न

बटुकनाथक कक्षमे ओकर अधिकार-पत्र, विजयक आदेश आ विधिक उपाधि उपस्थित अछि। कथाकार एहि सज्जाक भीतर एक बालक बैसाबैत छथि, जे ओकरा नाम पढ़बाक आग्रह करैत अछि। बालकक चेहरा वकालत आरम्भ करबाक पहिल इच्छाक स्मरण करबैत अछि—ओ समय, जखन किताबसँ लोककेँ बचएबाक सपना रहैत छल। एतय बाहरी न्यायाधीशक बदला पूर्वक आत्म-छवि प्रश्न करैत अछि। एकर शिल्पगत महत्त्व एहि बातमे अछि जे पात्र अपन वर्तमान निर्णयसँ मात्र नहि, अपन पुरान नैतिक सम्भावनासँ सेहो टकराइत अछि।

कानूनी आदेशक ‘प्रक्रियात्मक दोष’ आ स्मृतिमे उभरैत नामक टकराव प्रक्रियाक आवश्यकताकेँ पूर्णतः नकारबाक तर्क नहि। प्रक्रिया न्यायिक निष्पक्षताक साधन सेहो भऽ सकैत अछि। अध्यायक विशिष्ट आलोचना ओहि प्रयोगपर केन्द्रित अछि जतय प्रक्रिया प्रभावित व्यक्तिक बात सुनबाक बदला ओकर पहुँच रोकबाक हथियार बनैत अछि। बालकक आग्रह कानूनी नतीजा उलटबैत नहि, मुदा एक नैतिक प्रश्न खोलैत अछि : जिनकर नाम सुनवाईक केन्द्रमे रहबाक छल, ओ सभ आदेशक भाषामे कतय छथि?

## चन्द्रपाल : खाताक सहमति आ भूखक सन्दर्भ

चन्द्रपालक भीतरक अदालत बैंक-पासबुक, खाता-मिलान आ उज्ज्वलक ऋण-सन्देशक माध्यमसँ निर्मित होइत अछि। ओकर पहिल बचाव ई अछि जे खाता-धारक अपन कागज देने छल। पासबुकक काल्पनिक प्रतिउत्तर भूखक परिस्थिति आ स्वतंत्र सहमतिक बीच भेद उजागर करैत अछि। एहि प्रसंगमे उपन्यास आर्थिक विवशताकेँ केवल भावात्मक पृष्ठभूमि नहि, कथित स्वीकृतिक वास्तविक अर्थ बुझबाक आवश्यक शर्त मानैत अछि।

नव्य न्यायक प्रमाण-विवेकसँ एहि दृश्यक अध्ययन करैत काल दू स्तर पृथक राखब उचित अछि। खाता खोलबाक दस्तावेज एक सीमित तथ्यक साक्ष्य भऽ सकैत अछि; मुदा स्वेच्छा, जानकारी, दबाव आ उपयोगक प्रयोजनक प्रमाण ओकरा मात्रसँ स्वतः स्थापित नहि होइत। एकर उलटा सेहो सत्य अछि—आर्थिक कठिनाइ अपने-आप प्रत्येक कथनकेँ निरस्त नहि करैत। कथाकार एतय प्रमाणक पूर्ण विधिक निष्कर्ष नहि, सन्दर्भहीन वैधताक नैतिक सीमा चित्रित करैत छथि। एही सूक्ष्म भेदमे दृश्य साहित्यिक रूपसँ उपयोगी अछि।

## राघव : मेटाइत सन्देश आ स्मृतिक स्थायित्व

राघवक अपराध-जगत गायब होएबला सन्देश, दोसरक परिचय आ अस्थायी संकेतपर टिकल अछि। ओकर बन्द कोठलीमे नारिकेल-पात झरब आ अधूरा सन्देश फेर देखाएब अत्यन्त अर्थपूर्ण अलौकिक युक्ति अछि। मेटाइत माध्यमक विपरीत पातक अक्षर टिकि जाइत अछि। कथा एतय डिजिटल साक्ष्यक वास्तविक तकनीकी

पुनर्प्राप्ति प्रदर्शित नहि करैत; ओ दृश्य अपराधीक अपन सोचल ‘बिलायल साक्ष्य’क स्थायित्वक प्रतीक बनैत अछि। दर्पणमे राघव अपन चेहराक बदला ओ लोकनिकेँ देखैत अछि, जिनका ओ खाता वा कमिशनक इकाई मानैत छल।

एहि रूपान्तरणमे वस्तुकरणक समस्या सामने अबैत अछि। भुगतानक तन्त्रमे मनुष्यक जगह ‘छोट खाता’ लिखल गेल छल; अन्तःकरणक सुनवाईमे ओही स्थानपर वृद्धा, विद्यार्थी, रिक्शाचालक आ परिवारक चिन्ता उपस्थित होइत अछि। कथाक नैतिक दबाव साधारण अपराध-बोध नहि, दूसराक जीवनक विशिष्टता स्वीकार करबाक असमर्थता सँ उपजल अछि।

## लाउ किन-हंग आ एडवर्ड ब्रूम : गणना आ गरिमाक विखण्डन

लाउक शीशाघरमे कटोरा, सिक्का, दवा, रक्तक बून्द आ फुटल काँच जमा होइत अछि। ओकर ‘प्रतिशत’क भाषा मृत्युमे हिस्साक प्रश्नक सामने अटकि जाइत अछि। दृश्य ई नहि कहैत जे आर्थिक गणना अपनामे अपराध अछि; प्रश्न लाभक शृंखलामे प्राप्त हिस्साक संग परिणामक उत्तरदायित्व जुड़ैत अछि कि नहि। एडवर्ड ब्रूमक अदालतमे नैतिक भाषणक ताली न्यायाधीश बनि उपस्थित होइत अछि। ‘गरिमा’क शब्दक नीचाँ कीचड़ देखा देबाक शिल्प सार्वजनिक नैतिक घोषणाक चमक आ परोक्ष लाभक अपारदर्शितासँ एक दृश्य बनबैत अछि।

पाँचू भीतरक अदालतमे खाली कुर्सीक पुनरावृत्ति विशेष महत्त्वक अछि। कुर्सी ककरो तय न्यायाधीशक नहि; ओ तिनका सभक अनुपस्थितिक चिह्न अछि, जिनका प्रतिपक्षी पात्र पराजित मानैत छथि। एहन रिक्तता पछिला अध्याय २३क बटुकनाथक खाली दुआरक स्मरण करबैत अछि। पहिने विरोधी पक्षक नहि अबब

ओकरा डरौने छल; आब पाँचू पात्रक भीतरक अदालत पूछैत अछि जे ओ लोक कतय गेल। उत्तर—पाठशाला, पात, नाम-पाठ, विदेशक श्रवण-सभा—आपराधिक तन्त्रक विजयोन्मादकेँ निरर्थक बनबैत अछि।

## रस, ध्वनि आ आलोचनात्मक सीमा

करुण अनुभवक संग भय, व्यङ्ग्य आ अद्भुतक समवाय एहि अध्यायक मूल शिल्प अछि। अदालतक फर्शपर खिंचल पातर रेखा नैतिक अवशेषक ध्वनि उत्पन्न करैत अछि। जेनेतक आख्यानकालक दृष्टिसँ एक रात्रिमे पाँच दूरस्थ मानसिक दृश्य जोड़बाक युक्ति बाहरी घटनाक क्रमसँ बेसी अनुभवक साम्य देखबैत अछि। तथापि पाँचू प्रतिपक्षीक भीतर लगभग एकहि रात्रिमे समरूप संकट उठब कथानककेँ अत्यधिक योजनाबद्ध बना सकैत अछि। अन्तःकरणक आवाजसभक भाषा सेहो कखनो-कखनो असाधारण रूपसँ स्पष्ट अछि; मनोवैज्ञानिक अस्वीकार, तर्क आ आत्मवञ्चनाक मिश्रण आओर सूक्ष्म भऽ सकैत छल।

मूल पाठक सावधानी ई अछि जे प्रतिपक्षी पात्रसभकेँ भीतरक अदालतमे तुरन्त कानूनी दोषसिद्ध व्यक्ति मानि नहि लेल जाए। स्वप्न, प्रतीक, लाभ-संबन्ध आ अन्तःकरणक प्रश्न साहित्यिक स्तरपर प्रभावशाली अछि; बाह्य इतिहासमे आरोप प्रमाणित करबाक लेल स्वतंत्र दस्तावेजी परीक्षण चाही। अध्यायक उपलब्धि दण्डक घोषणा नहि, ओहि मानसिक क्षेत्रक उद्घाटन अछि जतय विजयक आदेश विवेकक प्रश्नक उत्तर नहि दऽ पबैत।

# अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज

*आन्दोलनक दृश्यसँ सार्वजनिक श्रमक नित्यक्रम धरि*

## पराजयक नव व्याकरण

पहिनुक अध्यायमे पाँचू प्रतिपक्षी पात्र प्रतीक्षामे अटकल रहैत छथि; एहि अध्यायमे जे लोक अदालतक दृष्टिसँ हारल कहल गेल छथि, ओ सभ भोरमे अपन-अपन काज आरम्भ करैत छथि। विरोध-प्रदर्शन वा प्रतिशोधक बदला कक्षा, अभिलेख, निजताक रक्षा, दस्तावेजक लोकभाषामे रूपान्तरण आ घर-घर पहुँचब कथा-गतिशीलताक केन्द्र बनैत अछि। श्रमगीतक लय एहि परिवर्तनकेँ विशिष्ट सांगीतिक आधार दैत अछि। ‘हार’ आ ‘जीत’ बाहरी निर्णयक स्थिर शब्द नहि रहि लोकक व्यवहारसँ मापल जाएबला अवधारणा बनि जाइत अछि।

अनन्या कबड्डीक नब मैदान रचैत छली, जाहिमे हारल कहला पर खिलाड़ीकेँ बाहर नहि, दोसर काज देल जाएत। ई छोट दृश्य अध्यायक समूचा सामाजिक दर्शन संक्षेपमे रखैत अछि। दण्डात्मक निष्कासनक बदला कार्य-वितरण—खेलक नियममे एहि परिवर्तनसँ अगिला पीढ़ीक संस्थागत कल्पना प्रकट होइत अछि। मुदा एहन कल्पनाक अर्थ अपराधीकेँ स्वतः दण्डमुक्त करब नहि; पाठ स्वयं प्रत्यक्ष सामाजिक सुरक्षाक काम आ विधिक प्रक्रियाक बीच भेद खुलल रखैत अछि।

## देविकाक मोबाइल : अवशेषसँ पाठक साधन

देविका उज्ज्वलक फुटल मोबाइलकेँ स्मारक रूपमे गाछक जड़ि लग स्थिर नहि रखैत छली; ओ एकरा संग लेने पाठशाला दिस जाइत छली। अध्याय २०मे जे फुटल काँच मृत्युक स्मरणक वस्तु छल, एतय सएह उपकरण लोकशिक्षाक चलायमान साधन बनैत अछि। वस्तुक प्रयोग बदललासँ मृत्युक अर्थ मेटैत नहि; मृत्यु भविष्यक जोखिम चिन्हबाक सामाजिक उत्तरदायित्व बनैत अछि।

निशांत बैंक-खाताकेँ ‘देहक छाह भाड़ा पर देब’क रूपक द्वारा बुझबैत अछि। खाता-उपयोगक तकनीकी विषयकेँ पारिवारिक क्षति आ कानूनी जोखिमसँ जोड़बाक एहि युक्तिमे लोकशिक्षाक शक्ति अछि। मुन्ना पासवानक उपस्थितिसँ भाषा अमूर्त नहि रहैत। तथापि जकर खाता अपराधमे प्रयोग भेल, ओकर प्रत्यक्ष सहभागिता, दबाव आ जानकारीक अन्तर वास्तविक जाँचक विषय अछि। देविकाक करुणा सुनवाईक वातावरण बनबैत अछि; ओ न्यायिक आरोप-निर्णयक विकल्प नहि।

## सौम्याक अनुवाद : सत्ता-भाषाक पाठ-परीक्ष

सौम्या पुलक हिसाब, दवाइक बिल, वैक्सीन-खरीद, अस्पतालक अभिलेख, डिजिटल ठगीक खाता आ अदालतक तारीख लोकक बोलीमे पढ़बैत छली। ‘अघोषित मृत्यु’ वा ‘प्रक्रियात्मक विलम्ब’ सन शब्द सामाजिक अनुभवसँ जोड़ल गेल अछि। ई केवल भाषानुवाद नहि—ज्ञानक पहुँचक पुनर्वितरण अछि। प्रशासनिक शब्दसँ वञ्चित समुदाय जखन अपन अनुभवक भाषा पबैत अछि, तखन ओ दस्तावेजक प्रश्न पूछबाक सामर्थ्य अर्जित करैत अछि।

एतय अनुवादक शक्ति आ खतरा दुनू अछि। दफ्तरक वाक्यक भावार्थ सरल करब आवश्यक अछि, मुदा ओकरा मूल सन्दर्भ, प्रमाण-सीमा आ आधिकारिक प्रयोजनसँ अलग कऽ अन्तिम तथ्य कहब उचित नहि। न्यायिक ‘प्रक्रियात्मक विलम्ब’क विशिष्ट कारण, औषधि-खरीदक लेखा वा मृत्यु-पञ्जीक अलग-अलग नियम अपन स्रोतक संग पढ़ल जाएबाक चाही। अध्यायमे सौम्याक पाठ-प्रक्रिया लोकक अनुभवक भाषा निर्माण करैत अछि; विस्तृत अभिलेखीय सत्यापनक प्रश्न एकर अगिला अनिवार्य चरण रहैत अछि।

## मीरा आ ईराक श्रवण-समुदाय

मीरा ककरो प्रेम वा निजी जानकारीकेँ तमाशा नहि बनएबाक सार्वजनिक शपथ प्रस्तावित करैत छली। ई प्रसंग अध्याय २१क ‘निजताक शपथ’क सरल पुनरावृत्ति नहि रहबाक चाही; एतय नव बात शपथक दैनिक अभ्यासमे परिवर्तन अछि। घबरायल व्यक्तिक कात ठाढ़ रहब, ठगीक सन्देश पहचानब आ ककरो निज अनुभव बिना अनुमति सार्वजनिक नहि करब—एहि सभ व्यवहारमे नैतिक घोषणाक विश्वसनीयता तय होइत अछि।

ईरा विदेशमे ‘पात-पाठ’ आरम्भ करैत छली। भारतीय, अफ्रीकी, लातिनी आ अन्य देशक विद्यार्थीसँ बनल समूह वैश्विक प्रतिष्ठाक मंचसँ अलग बहुस्वर लोक-अध्ययनक सम्भावना उद्घाटित करैत अछि। मुदा लोकक नाम पढ़ि श्रोता असुविधा अनुभव करथि, सएह परिवर्तनक अन्तिम प्रमाण नहि। नामक साथ परिचय, सहमति, दस्तावेजक स्रोत आ वास्तविक सहायता-जाल बनत तखने ईराक उपक्रम दीर्घकालिक संस्थागत रूप लेत।

## गोप कुमारक खाली स्थान : अभिलेखक नैतिक मर्याद ।

गोप कुमार संख्या आ खाताकेँ सम्बन्धक जाल बनाकऽ बुझबैत अछि—मजदूर, ओकर घर, बच्चा, अधूर सपना। एक युवक पूछैत अछि जे सपना कागजमे कोना लिखल जाए। गोपक उत्तर खाली स्थान छोड़बाक अछि। ई दृश्य एहि अध्यायक अत्यन्त प्रौढ़ क्षण अछि। अभिलेखमे जे बात ज्ञात नहि, तकरा अनुमानसँ भरि देबाकेँ कथा महिमामण्डित नहि करैत। खाली स्थान एक प्रकारक सूचना-अभाव देखबैत अछि; ओकरा सत्यापित तथ्यक स्थानपर राखब नहि, अगिला खोजक कारण बनब उचित अछि।

नव्य न्यायपरक प्रमाण-विवेकमे प्रत्यक्ष रूपसँ ज्ञात तथ्य, दस्तावेजसँ समर्थित विवरण, सन्दर्भाधारित अनुमान आ अज्ञात प्रश्नक भेद रखनाइ जरूरी अछि। गोपक खाली स्थान एहि भेदक साहित्यिक रूप मानल जा सकैत अछि। आरुणिक समक्ष अनन्याक कथन—नाम पढ़बासँ बेसी कठिन नाम नहि पढ़ब—एहि अधूर ज्ञानक सामाजिक मूल्य स्पष्ट करैत अछि।

## पूर्व अध्यायसँ तुलना आ सीम ।

अध्याय २०–२४मे पाठशालाक जन्म, निजताक शपथ आ लोक-अभिलेखक स्वीकृति दिखाओल गेल छल। अध्याय ३१मे ओही प्रवृत्ति फेर विस्तृत कार्यसूची बनि उपस्थित अछि। पुनरावृत्तिक लाभ ई अछि जे सामाजिक परिवर्तन केवल एक नाटकीय क्षणपर निर्भर नहि; ओकरा निरन्तर काज चाही। मुदा शिल्पक जोखिम सेहो एतय स्पष्ट अछि : अनेक पात्र एक-एक आदर्श कार्यक प्रतिनिधि बनि जाइत

छथि, आ प्रत्येक छोट प्रयत्नक परिणाम प्रतिपक्षी नेटवर्कमे तुरन्त देखाओल जाइत अछि। वास्तविक संघर्षक श्रम, विफलता, असहमति आ साधन-संकट अधिक ठोस रूपेँ उपस्थित होएत तँ कथात्मक विश्वास आओर बढ़त।

तइयो अध्यायक मूल उपलब्धि प्रतिशोधक भाषा सँ निर्माणक भाषा दिस जएब अछि। बा द्वारा चूल्हाक लग न्यायकेँ लोकक व्यवहारमे चिन्हबाक बात एहि परिवर्तनक केन्द्रीय सूत्र अछि। ई कथन अदालतक औपचारिक भूमिकाकेँ निरस्त नहि करैत; सामाजिक अन्याय घटएबाक प्रारम्भिक, दैनिक आ साझी जिम्मेवारीक ओहि रूपकेँ सामने अनैत अछि जे मुकदमाक परिणामक प्रतीक्षा नहि करैत।

# अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी

*नाम, प्रश्न आ सत्ता-भाषाक पुनरर्थनिर्धारण*

## खेलक मैदान : भूगोलसँ अधिक सम्बन्ध

तेसर कबड्डीक घेरा चूना वा डोरीसँ नहि, माटिमे अपने बनैत अछि। ओकर रेखामे कमला-बलानक टेढ़ धार, पुलक पायाक छाह, मोबाइलक चमक आ अदालतक मेजक सीधापन एकसंग उपस्थित अछि। ई दृश्य उपन्यासक विभिन्न कथास्थलकेँ एक प्रतीकात्मक भूगोलमे समेटैत अछि। नदी, श्रम, डिजिटल ठगी आ न्यायिक प्रक्रिया अलग कथा नहि रहैत; सभ ओहि सामाजिक सम्बन्धक रूप देखाओल गेल अछि जाहिसँ नामक विस्मरण आ लाभक शृंखला बनैत अछि।

घेरामे तीन दल पहुँचैत अछि। पहिल दल मृतकसभक—सरयू, नन्द, उज्ज्वल, श्रमिक, रोगी आ शोषणक शिकार लोकक नाम। दोसर दल बच्चासभक—अनन्या आ लोकशिक्षासँ जुड़ल नव पीढ़ी। तेसर दल देहक नहि, पाँच प्रमुख प्रतिपक्षीक मोनक अछि। एही विभागमे उपन्यासक सामाजिक परत स्पष्ट होइत अछि : जे लोक इतिहासमे अपूर्ण नाम बनि गेल, जे लोक भविष्यक प्रश्न उठाबैत अछि, आ जे लोक वर्तमान सत्ताक सूत्र अपने हाथमे राखैत अछि, ओ सभ एकहि मैदानमे प्रवेश करैत अछि।

तथापि ई वास्तविक कबड्डीक सरलीकृत मंचन नहि। खेलक नियम साँस, नाम आ प्रश्नक नैतिक परीक्षणमे बदलि गेल अछि। कथाकार लोकखेलक गतिशीलताकेँ

न्यायिक प्रतिप्रश्नक वैकल्पिक आख्यान-प्रविधि बनबैत छथि। लोकजीवनक अभ्याससँ उपजल खेल यहाँ विचारक मंच बनैत अछि; शास्त्रक भारी व्याख्याक बदला प्रतियोगिताक साझा देह-लय प्रयोग होइत अछि।

## मृतकक नाम आ नेनाक प्रश्न

सरयू अपन नाम दोहरबैत घेरामे प्रवेश करैत छली। हुनकर स्वर आरोपपत्रक वाक्य नहि; ओ ओहि व्यक्तित्वक वापसी अछि, जकरा सार्वजनिक अभिलेख अधूर छोड़ि देने छल। अनन्या एकर बाद ‘प्रश्न’ दोहरबैत मैदानमे उतरैत छली। एहि क्रममे नाम आ प्रश्न दू तरहक साँस बनैत अछि। नाम अतीतक पहिचान बचबैत अछि; प्रश्न वर्तमानक धोखा चिन्हैत भविष्यक सम्भावना बनबैत अछि।

चन्द्रपालक मोन इनामक प्रलोभन दैत अछि, मुदा अनन्या पूछैत छली जे इनामक पाछाँ कर्ज अछि कि नहि। एहि क्षण पाठशालाक शिक्षाक परिणाम अलौकिक चमत्कारक बदला निर्णय-क्षमताक रूपमे देखाइत अछि। लोकशिक्षाक वास्तविक उपलब्धि तैयार उत्तर याद करब नहि, अनुचित आग्रहक सामने प्रश्न करब अछि। देविकाक पहिनुक पाठ एक व्यावहारिक पूछताछक आदत बनि जाइत अछि।

## पाँच प्रतिपक्षीक शब्द-रक्ष ा

बटुकनाथ ‘स्थगन’ द्वारा साँस बचबय चाहैत अछि; चन्द्रपाल कमाइ आ खाता; राघव मेटाइत सन्देश; लाउ किन-हंग प्रतिशत; एडवर्ड ब्लूम गरिमा। प्रत्येक पात्र अपन परिचित भाषासँ मुक्त होएबाक प्रयास करैत अछि, मुदा ओही भाषा ओकर सीमाकेँ

प्रकट करैत अछि। कथाकार अनुपयुक्त शब्दक प्रदर्शन मात्र नहि करैत छथि; ओ देखबैत छथि जे शब्दक सामाजिक प्रयोग कोन लोककेँ अदृश्य करैत अछि।

मुन्ना पासवानक खाता देहधारी मनुष्य बनि उठैत अछि। 'म्यूल'क व्यापारिक वर्गीकरणक विरुद्ध मुन्नाक अपन नाम उच्चारण मानवीय पहिचानक प्रतिरोध अछि। एहि प्रसंगमे वस्तुकरणक भाषा टूटैत अछि, मुदा 'म्यूल' श्रेणीक विधिक आ वित्तीय अर्थ तत्काल समाप्त नहि भऽ जाइत। पाठक लेल मूल प्रश्न ई अछि जे तकनीकी वर्गीकरण मानवीय विवरणकेँ कतेक छिपबैत अछि आ न्यायिक जाँच ओकरा कोना पुनः उपस्थित करय।

राघव द्वारा मिटाओल सन्देशसभ पातक रूपमे घुरैत अछि। एहि बिम्बमे डिजिटल क्षणिकता आ लोकस्मृतिक स्थायित्व एक दोसरासँ जुझैत अछि। ई तकनीकी पुनर्प्राप्तिक प्रामाणिक प्रक्रिया नहि, अलौकिक नैतिक स्मृतिक दृश्य अछि। लाउक प्रतिशत-साँस नन्दक पुल-नक्शा आ हड्डीक प्रश्नक सामने काँपैत अछि। ब्रूमक गरिमा ईराक प्रश्नक समक्ष कमजोर होइत अछि, कारण ओ ओहि लोकक नाम उचित रूपसँ उच्चारण नहि कऽ पबैत, जिनकर अधिकारपर भाषण दैत अछि।

## शब्द छीनब नहि, अर्थ बदलब

खेलक अन्तिम नियम प्रतिपक्षी पात्रसभसँ एक-एक शब्द छोड़बैत अछि : प्रक्रिया, खाता, सन्देश, हिस्सा आ गरिमा। एतय कथा अपन सबसँ महत्त्वपूर्ण भाषिक मोड़ लैत अछि। प्रक्रिया नाम-पाठक क्रम बनैत अछि; खाता मनुष्यक जीवनी; सन्देश चेतावनी; हिस्सा उत्तरदायित्व; आ गरिमा नामक उच्चारण। उपन्यास भाषा छोड़बाक नहि, सत्ताक अर्थ-निर्धारण सँ भाषा मुक्त करबाक सम्भावना देखबैत अछि।

भारतीय ध्वनि-विचारक आलोकमे एहि पाँच शब्दक पुनरर्थनिर्धारण अनेक स्तरपर काज करैत अछि। शब्दक प्रचलित अर्थक पाछाँ स्थित सामाजिक अनुभव प्रकट होइत अछि। कागजक 'प्रक्रिया' जँ विस्मरणक उपक्रम छल तँ नामक क्रम ओकर प्रतिपक्ष अछि। 'खाता' जँ रकमक मार्ग छल तँ ओकर भीतरक व्यक्ति सामने अनायब आवश्यक अछि। एहि प्रक्रिया मे व्यंग्य, करुणा आ लोकस्मृति एकसंग उपस्थित अछि।

## खेलक अन्त आ पुनरारम्भक विरोधाभास

अध्यायक अन्तमे न विजय-दिवस अछि, न प्रतिपक्षीक पूर्ण समाप्ति। पुरान शब्दक स्वाद बदलैत अछि, आ खेल अगिला साँसक प्रतीक्षा करैत अछि। 'फेर आरम्भ होउ' पातपर लिखल रहैत अछि। ई अध्याय २४क 'उपन्यास फेर शुरू'क कलात्मक प्रतिध्वनि अछि। कतेको बेर पुनरारम्भक प्रयोग पाठकीय अनुभवमे परम्परागत समापनक अस्वीकार बनैत अछि, मुदा लगातार समान सूत्र घुरलासँ परिवर्तनक ठोस अन्तर धुँधला पड़बाक जोखिम सेहो अछि।

तीन दल, पाँच पात्र, साँसक क्रम आ शब्दक रूपान्तरण अत्यन्त योजनाबद्ध अछि। एहि कारण पात्रक अप्रत्याशित आत्मविरोधक तुलनामे नैतिक नाट्यरचना स्पष्ट देखाइत अछि। तथापि ई स्पष्टता लोकनाट्यक विशेषता सेहो अछि : खेलमे नियम सामने रहैत अछि, आ दर्शक देखैत अछि जे ककर भाषा कतेक दूर साँस लऽ सकैत अछि। अध्यायक उपलब्धि न्यायकेँ दण्डक अन्तिम आदेश नहि, प्रश्न पूछबाक आ शब्दक अर्थ बदलबाक सामाजिक सामर्थ्यक रूपमे चित्रित करब अछि।

## अध्याय ३३ — मोनक परीक्ष ।

*अन्त:करणक दर्पण आ नाम उच्चारणक अनिवार्यत।*

### तेसर पारीक भीतर दोसर परीक्ष ।

पछिला अध्यायमे प्रतिपक्षी पात्रसभ अपन-अपन प्रिय शब्द छोड़ि खेलक बाहर गेल छल; अध्याय ३३मे हुनकर मोन फेर मैदानमे उपस्थित अछि। एतय कथा एक पारीक अन्त मानि समाप्त नहि होइत। ओ ‘चारिम साँस’ द्वारा परीक्षा गहन करैत अछि। पुरान कबड्डीमे पकड़ल खिलाड़ी बाहर होइत छल; नव नियमानुसार नाम काटनिहार व्यक्ति नाम उच्चारण कएने बिना मैदान छोड़ि नहि सकैत। दण्डक केन्द्र शारीरिक हार नहि, स्मृतिक अनिवार्य सामना अछि।

ई नियम प्रतिपक्षी पात्रक भागबाक सामान्य रणनीति रोकैत अछि। तथापि कथाकार जे ‘नाम पढ़ि लेलक, से कनी मनुष्य भेल’क सम्भावना खोलैत छथि, ओ स्वीकृति आ सुधारक विचारक विषय अछि; ओकरा न्यायिक उन्मुक्तिक प्रमाण नहि मानल जा सकैत। एक नाम बजा देबामात्रसँ पीड़ितक क्षति घुरि नहि अबैत। उपन्यास स्वयं अगिला अध्यायमे एहि अपूर्णताक प्रश्न उठबैत अछि।

### बटुकनाथ आ स्मृतिक अनियन्त्रित उच्चारण

बटुकनाथ विधिक पदावली गनए चाहैत अछि, मुदा ओकर मुँहसँ सरयू देवी आ लखन पासवानक नाम निकलैत अछि। पात्रक आत्म-नियन्त्रणक संकटक कारणे दृश्य प्रभावशाली बनैत अछि। ओ जे शब्द कहय चाहैत छल, ओहि शब्दक स्थान मृतकक

नाम लऽ लैत अछि। न्यायिक संस्थाक भाषा आ लोकस्मृतिक भाषा एतय एक दोसरा पर चढ़ि जाइत अछि।

नव्य न्यायविषयक विश्लेषणमे एहि घटनाक प्रमाण-स्थिति स्पष्ट राखब आवश्यक अछि। जादुई रूपसँ नाम उच्चरित होयब कथा-जगतक विधान अछि; ताहिसँ वास्तविक कथित अपराधक तथ्य स्वतः सिद्ध नहि होइत। मुदा साहित्यिक अर्थमे नामक अनियन्त्रित वापसी दमनक अवचेतन इतिहास सामने अनैत अछि। जे बात ‘अधिकार-क्षेत्र’ कहि टारल गेल छल, ओ जीह पर पुनः उपस्थित भऽ गेल।

## चन्द्रपाल, मुन्ना आ संख्याक देहधारण

चन्द्रपालक स्क्रीनमे उज्ज्वल झा, मुन्ना पासवान आ आन खाताधारकसभक नाम चमकैत अछि। ओकर मुँहसँ पहिल जीतक निःशुल्क नहि होएबाक स्वीकारोक्ति निकलैत अछि। ई कथन पाठशालाक पहिनुक चेतावनीक प्रतिध्वनि अछि, मुदा पहिने जे शिक्षाक वाक्य छल, एतय सएह अपराधी पात्रक भीतरी अस्थिरताक संकेत बनैत अछि। फर्जी लाभ, अतिरिक्त कर्ज आ धमकीक संबंध स्पष्ट करबाक क्षमता सामाजिक प्रतिरोधक मानसिक बल अछि।

बच्चासभ चन्द्रपालक कथन पर हँसैत नहि। ई संयम महत्त्वपूर्ण अछि। हास्यक अवसर रहितो कथा पीड़ितक स्मृतिसँ जुड़ल नामकेँ तमाशा नहि बनबैत। तथापि प्रतिपक्षीक मुखसँ निकलल एक वाक्य हुनकर पूर्ण स्वीकारोक्ति नहि। कथावाचकक नैतिक दृश्य आ ककरो पात्रक कथनक प्रमाण-मूल्य अलग राखब समीक्षाक अनिवार्य सावधानी अछि।

## राघवक दर्पण आ सहयोगक प्रश्न

मेटाइत सन्देश राघवक चारू दिस अक्षर बनि घूमैत अछि। ओ लाउ किन-हंगसँ सहायता चाहैत अछि, मुदा ‘उपयोग समाप्त’ लिखल पात भेटैत अछि। एहि एक क्षणमे अपराध-जालक भीतरक श्रेणीबद्ध शोषण देखाइत अछि। जे लोक स्थानीय खाताधारकक्कें उपयोगक वस्तु बनबैत छल, सएह स्वयं ऊपरक सञ्चालकक लेल उपयोग समाप्त भेला पर छोड़ल जाएबला माध्यम निकलैत अछि।

ई दृश्य अपराधमे भागीदारीक अर्थ घटबैत नहि। उलटा, निर्भरता, लाभ, दबाव आ विवेकक भिन्न तह बुझबाक अवसर दैत अछि। राघवक अपनापर पड़ल संकट ओकर पूर्व काजक निष्कर्ष नहि बदलैत; मुदा अपराध-जालक परस्पर अविश्वासक रचना उद्घाटित करैत अछि। दर्पणक बिम्ब एतय कारावासक विकल्प नहि, आत्म-परीक्षणक असहज साधन बनैत अछि।

## लाउक दूरी आ ब्रूमक भाष

लाउ किन-हंग भारतक नक्शाक आर्थिक बिन्दुसँ घरक देहरी, चप्पल आ अधूर यात्राक कल्पनाधरि पहुँचैत अछि। ओकर गणनाक भाषा पहिल बेर एक व्यक्तिक नाम सुनबाक दबाव अनुभव करैत अछि। भौगोलिक दूरीक नैतिक निवारण एतय रूपकात्मक अछि; वास्तविक वैश्विक वित्तीय सम्बन्धक सत्यापनक लेल स्रोत आ दस्तावेज चाही। मुदा कथा दूरीक्कें उत्तरदायित्वसँ स्वतः मुक्ति मानबाक विचारक परीक्षण करैत अछि।

ब्रूमक ‘गरिमा’ शब्द पातपर ‘दाम’ बनैत अछि, फेर ‘नाम’। ई रूपान्तरण अध्यायक सबसँ सघन भाषिक युक्ति अछि। मनुष्यक गरिमा पर बाजबाक पहिने श्रमिकक नाम सुनबाक आग्रह नैतिक भाषणक प्रतिष्ठाकेँ सामाजिक वास्तविकतासँ जोड़ैत अछि। मुदा नाम जानब पर्याप्त नहि : जीवितक रक्षा, श्रमिकक अधिकार, प्रतिकर, सत्यापन आ संस्थागत परिवर्तन तकर अगिला स्तर अछि। अध्यायक सफलता एहि अपूर्णताकेँ आगामी कथा लेल खुलल रखबामे अछि।

## दर्शक आ खिलाड़ीक स्थानपरिवर्तन

अन्तमे धूर्तसभ किनार बैसि देखैत छथि, आ लोथसभ, जे पहिने दर्शक छलाह, खेलमे उतरैत छथि। दृश्य-संरचनाक ई उलटफेर सामाजिक प्रतिनिधित्वक बृहत्तर प्रश्न उठबैत अछि। इतिहासमे जे निर्जीव दर्शक, अनुपस्थित मृतक वा नामहीन पीड़ित मानल गेल, ओकर भागीदारी भविष्यक नियम बदलि सकैत अछि। अपराधक खेल चलबनिहार प्रतिपक्षी एखन अस्थायी दर्शक बनि रहैत अछि।

चन्ना गाछीमे नाम उच्चारण बाध्यकारी रूपक अछि; वास्तविक सामाजिक न्यायमे नामक सार्वजनिक उच्चारणक संग पीड़ितक निजी जीवनक अधिकार सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। अध्याय २१क निजताक शपथकेँ बिसरि सभ नाम सार्वजनिकीकरण करब विरोधाभासी होयत। एहि सीमा पर दृष्टि राखलासँ रचनाक नैतिक आग्रह अधिक परिपक्व बनैत अछि। समग्रतः मोनक परीक्षा अपराधीक भीतरक चिन्ता मात्र नहि; ई ई पूछैत अछि जे ककर नाम, ककर अनुभव आ ककर भविष्य मानव गरिमाक भाषामे स्थान पबैत अछि।

# अध्याय ३४ — सुनैत नदी

*नामक उच्चारणसँ घरक खोजधरि*

## मौनक श्रवण आ अधूर अक्षर

अध्याय ३४क आरम्भ ‘चारिम साँस’क बादक निःशब्दतासँ होइत अछि। कथाकार एहि निःशब्दताकेँ शान्ति नहि मानैत; नदी अपन धार रोकि किनारक कथन सुनैत अछि—एहन रूपकक निर्माण करैत छथि। सुनब एतय निष्क्रिय क्रिया नहि; श्रवणक पाछाँ साँच-झूठक परीक्षणक प्रश्न अछि। नारिकेल-पातक नोकपर नामक आधा अक्षर रहब एहि समस्याक दृष्यमान संकेत अछि। नाम पढ़बाक पहिल अभ्यास आब पर्याप्त नहि, किएक तँ नाम अधूर रहि सकैत अछि।

देविका ‘अधूरा नाम नहि बाजब’ पाठ पढ़बैत छली। बच्चासभ एक कंकड़पर आधा नाम लऽ बूढ़ लोक, परिवार, मजदूरक अभिलेख, नदीक गीत वा पुरान बहीसँ दोसर आधा खोजैत अछि। ई दृश्य अध्यायक अनुसन्धानपरक उपलब्धि अछि। पाठशालाक ज्ञान अब नारा दोहरएबाक बदला स्रोत खोजबाक अभ्यास बनैत अछि। स्मृति निश्चित सूची नहि; ओ जाँच, परामर्श आ स्रोत-सम्बन्धक माध्यमसँ विकसित होइत अछि।

## पानिक सर्वव्याप्ति आ प्रतिपक्षीक दूरी

बटुकनाथक स्नानघर, चन्द्रपालक तिजोरी, राघवक सन्देश, लाउक ऊँच शीशाघर आ ब्रूमक भाषणक कागज—पाँचू ठाम पानि, माटि वा नाम असम्भव रूपेँ उपस्थित

होइत अछि। एहि दृश्यक पुनरावृत्तिसँ गढ़ नारिकेलक लोकस्मृति दूरस्थ आर्थिक सत्ता कैं स्पर्श करैत अछि। बटुकनाथक निर्णयमे ‘नाम अधूरा’ प्रकट होइत अछि; चन्द्रपालक खातामे पारिवारिक जीवन; राघवक कूटसन्देश लोकभाषाक अक्षर बनैत अछि; लाउक दूरदेशक लाभमे प्रथम मृतकक प्रश्न उठैत अछि; ब्रूम ‘मानव-पूँजी’ लिखए चाहैत अछि, मुदा पानिसँ ‘मजदूर’ लिखल जाइत अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ ई असाधारण घटनासभ अपराध-साक्ष्यक स्वतः प्रमाण नहि। आधुनिक आख्यानशास्त्रमे अलौकिक हस्तक्षेप आ पात्रक भीतरी अनुभव बीचको सीमा खुलल रहैत अछि। चमत्कारक यथार्थ-स्थिति निर्णीत नहि भेलाक बादो ओकर रूपात्मक अर्थ स्पष्ट अछि : जे नाम मेटल गेल बुझाओल गेल, ओकर उपस्थितिक माँग दुनियाँक अलग-अलग केन्द्रमे पहुँचि रहल अछि।

## नदीक सुननाइ आ नव्य न्यायक प्रमाण-विवेक

‘सुनैत नदी’क शीर्षकक अर्थ नदीक मानवीकरणसँ आगाँ जाइत अछि। नदी केवल आवाज नहि लैत; ओ श्रवणक धैर्य, जाँचक क्रम आ अधूर ज्ञानक असुविधा रूपमे उपस्थित अछि। देविका बच्चासभकेँ सिखबैत छली जे धमकी देनिहारक परिचय पूछू, अपन नाम आ सुरक्षित सम्बन्ध स्पष्ट राखू, आ बिना जाँच भयजनित आदेश नहि मानू। एतय सावधानीक क्रिया ज्ञानात्मक अभ्यास बनैत अछि।

नव्य न्यायक कसौटीपर ककरो केवल परिचय कहि देब सत्यक अन्तिम प्रमाण नहि; परिचय, प्रत्यक्ष परिस्थिति, दस्तावेज आ सम्बन्धित साक्ष्यक परस्पर जाँच आवश्यक अछि। डिजिटल ठगीक प्रसंगमे ततेक महत्त्वपूर्ण ई सेहो अछि जे नक्कल कएल गेल नाम वा सरकारी पहिचान दऽ ठग लोक विश्वास अर्जित करैत अछि। तेँ

पाठशालाक सूत्रकेँ ‘नाम पूछि सुरक्षित भऽ गेल’क सरल निष्कर्षपर रोकब उचित नहि। मूल दृश्यक सामाजिक लक्ष्य अकेलापन तोड़ब आ जाँचक आदत उत्पन्न करब अछि; आलोचनात्मक व्याख्या एहि व्यावहारिक मर्यादाकेँ अधिक स्पष्ट करैत अछि।

## भाषाक अनुवाद आ अधूर अभिलेख

राघवक कूट-अक्षर लोकभाषामे बदलबाक प्रसंग अपराधी संकेतक अर्थ खोलबाक प्रतीक अछि। तथापि ‘एल एक’सँ ‘ललित’ वा दोसर कोडसँ विशिष्ट नाम बननाइ वास्तविक फोरेंसिक साक्ष्यक बिना निश्चित पहचान नहि मानल जा सकैत। उपन्यासक अलौकिक भाषा-रूपान्तरणकेँ अनुसन्धानक कल्पनात्मक नाट्यरूप बुझब उचित अछि। एहि भेदसँ रचनाक मूल्य घटैत नहि; उलटा पाठक बुझैत छथि जे लोकभाषाक पहुँच आ तकनीकी प्रमाणक कठोरता एक-दोसरक पूरक होयबाक चाही।

बटुकनाथक विद्यार्थी-कालक शिक्षकक स्मृति सेहो एहि प्रसंगमे उलट प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। विधिक अध्ययनक मूल उद्देश्य न्यायसंगत सुनवाई रहबाक छल; वर्तमान व्यवहार ओकर प्रतिपक्ष बनल। ई कथा भीतरक स्मरण अछि, बाहरी ऐतिहासिक उद्धरण नहि। चरित्रक अतीतक तर्क जेना नैतिक आत्मचिन्तनक स्रोत बनैत अछि, से अध्याय ३०क बाल्यकालक बालक-साक्षीसँ अर्थपूर्ण सम्बन्ध राखैत अछि।

## पानिक कटोरा : सत्यक प्रतीक, प्रमाणक सीम ।

अन्तिम खण्डमे पाँचू मोन चन्ना गाछीक बीच बैसल अछि। नाम उच्चारणपर माटिक कटोरामे पानिक बून्द पड़ैत अछि; कपटपूर्ण वा अधूर कथनपर बून्द धुआँ भऽ उड़ैत अछि। लोककथात्मक परीक्षाक रूपमे ई अत्यन्त प्रभावकारी अछि। सत्य एतय सर्द शब्द नहि, ताप, पानि आ स्मृतिक जीवित सम्बन्ध अछि। बटुकनाथ सरयू देवीक परिचय अधूर राखिते बून्द डोलबैत अछि; चन्द्रपाल उज्ज्वलक नाम केवल समाचारक आधारपर जानैत अछि; राघव मुन्नाक नामसँ किछु स्वीकार करैत अछि; लाउ उच्चारण करितो मानवीय अनुभवसँ दूर अछि; ब्रूमक सामान्य ‘श्रमिक’ शब्द आखिरकार विशिष्ट नामक दबाव अनुभव करैत अछि।

मुदा पानिक ताप वा स्थिरता वास्तविक जगतमे सत्यक प्रमाण-पद्धति नहि। ई कथाक नैतिक रूपक अछि। ककरो आँखिमे पानि आबि गेल, वा ककरो उच्चारण कठिन भेल, ताहिसँ दोषसिद्धि अथवा निर्दोषता नहि ठहराओल जा सकैत। एहि भेदक उल्लेख आवश्यक अछि, कारण उपन्यासमे न्याय, अपराध आ अभिलेखक विषय सर्वत्र अछि। प्रतीकात्मक सत्य-परीक्षा आ विधिक सत्यापनक पृथक्करण एहि अध्यायक आलोचनाकेँ अधिक विश्वसनीय बनबैत अछि।

## पहिल साँस आ दोसर साँस

बूढ़बा भूत अन्तमे कहैत छथि जे नाम कहब पहिल साँस अछि; नामक घर धरि जाएब दोसर। एहि वाक्यसँ पाँच अध्यायक नैतिक विकास एक नब चरणमे प्रवेश करैत अछि। प्रतिपक्षीक भीतर असहजता, लोकक सार्वजनिक शिक्षा, शब्दक

पुनरर्थ, दर्पणक सामना आ नामक उच्चारण—ई सभ आरम्भ अछि। वास्तविक उत्तरदायित्व नामक घर, ओकर श्रम, मृत्यु, परिजनक सहमति आ अधूर जीवनक सत्य धरि पहुँचबाक अभ्यासमे अछि।

नदीक धार-रोकबाक बिम्ब एहि उपलब्धिक सटीक रूप अछि। जल्दबाजीमे घोषणा करबाक बदला ककरो बोलब पूरा सुनब; सुनलाक बाद साक्ष्य मिलाएब; आ तकर बाद उचित काज करब—ई क्रम रचनाक नैतिक शिक्षा बनि निकलैत अछि। शिल्पगत सीमा ई जे प्रतिपक्षीक पाँचू मोनक एकरूप अलौकिक परीक्षा फेर दोहराओल गेल अछि; एकर प्रभाव बनल रहैत अछि, मुदा स्वप्न-न्यायक एकहि युक्तिक अत्यधिक प्रयोग कथानकक स्वाभाविक गति कम कऽ सकैत अछि। तइयो अन्तिम सूत्र ‘नामक घर धरि जाएब’ उपन्यासकेँ नब क्रियात्मक कठिनाइ दिस पठबैत अछि।

# अन्तराध्यायिक विवेचन : अध्याय ३०–३४

*भीतरक सुनवाईसँ अधूर नामक खोज धरि*

## क्रमक रचनात्मक एकत

अध्याय ३०–३४ एक वृहत्तर नैतिक-अनुसन्धानक पाँच क्रमिक अवस्था बनबैत अछि। अध्याय ३०मे प्रतिपक्षी पात्रसभक अन्तःकरणमे अदालत खुलैत अछि। अध्याय ३१मे पराजित कहल लोक अपन सार्वजनिक काजमे लगैत छथि। अध्याय ३२मे मृतकक नाम, नेनाक प्रश्न आ प्रतिपक्षी पात्रक स्वार्थ-भाषा कबड्डीक साझा मैदानमे आमने-सामने अबैत अछि। अध्याय ३३मे नाम उच्चारणक बाध्यता मोनक परीक्षा बनैत अछि। अध्याय ३४मे ई परीक्षा नामक स्रोत, परिवारक परिचय आ श्रवणक मर्यादा धरि गहन होइत अछि।

एहि क्रममे तीन तरहक गतिशीलता देखल जा सकैत अछि। पहिल, पराजय आ विजयक सामाजिक अर्थ बदलैत अछि : अदालतक जीत मानसिक पराजय बनैत अछि, अदालतक हार सार्वजनिक श्रमक आरम्भ। दोसर, भाषा बदलैत अछि : प्रक्रिया, खाता, प्रतिशत, सन्देश आ गरिमा पात्रक पुरान सत्ता-शब्द छल, जे प्रश्नक उपस्थिति सँ नब सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि। तेसर, स्मृति विकसित होइत अछि : नाम लिखब, नाम पुकारब आ अन्ततः नामक पूरा जीवन खोजब—ई तीनू अलग काम अछि।

## पाँच प्रतिपक्षीक मनःसंरचन ।

बटुकनाथ विधिक पदक सुरक्षित अर्थमे रहय चाहैत अछि; चन्द्रपाल बैंक-खाताक औपचारिक स्वीकृति आ लाभक प्रतिशतपर आश्रित अछि; राघव सन्देशक क्षणिकता आ निर्देश-प्रणालीक आड़मे रहैत अछि; लाउ वैश्विक आर्थिक दूरीक माध्यमसँ परिणामक निकटता टारैत अछि; ब्रूम नैतिक भाषण आ प्रतिष्ठाक सामाजिक पूँजी सँ अपन छवि निर्मित करैत अछि। पाँचू पात्रक आत्मरक्षा-प्रणाली भिन्न अछि, मुदा हुनकर भीतरक अदालत बारम्बार एक सामान्य प्रश्न उठबैत अछि : जकर जीवनपर असर पड़ल, ओकर नाम कियैक अनुपस्थित अछि?

कथाकार ई पात्रसभकेँ समान दुष्टताक एक निर्जीव समूह मात्र नहि बनाबय चाहैत छथि; अलग-अलग वस्तु, स्थान आ भाषा दैत छथि। मुदा पाँचू पात्रक अचानक समानान्तर अपराध-बोध पाठमे नैतिक संरचनाक योजना सेहो देखबैत अछि। एहि पात्रसभक परस्पर विरोध, स्वार्थक टकराव वा नैतिक असहमतिक आओर ठोस चित्रण कथा-गतिकेँ अधिक बहुवाची बना सकैत छल।

## समुदायक श्रमक अलग लय

एहि पाँच अध्यायमे जीवित लोकक संसार दोसर लयपर चलैत अछि। देविका कक्षा चलबैत छली; निशांत वित्तीय काजक परिणाम बुझबैत अछि; सौम्या अभिलेखक जटिल शब्दकेँ लोकक समझमे अनैत छली; मीरा निजताक अधिकारक रक्षा करैत छली; ईरा विदेशी मंचपर नाम-पाठक नैतिक प्रतिप्रश्न खोलैत छली; गोप कुमार संख्याकेँ जीवनीक सम्बन्धमे बदलैत अछि; अनन्या खेलक नियम बदलैत छली।

एकर कारण कथाक नायकत्व एक व्यक्तिसँ हटि सामूहिक गतिविधिमे विभाजित होइत अछि।

अध्याय ३१क ई कार्य-लय पछिला अध्याय ३०क अलौकिक दबावकेँ धरतीक आधार दैत अछि। केवल स्वप्नक न्यायसेना प्रतिपक्षीक सम्पूर्ण सत्ता बदलि नहि सकैत; बच्चाकेँ ठगी चिन्हब सिखेनाइ, नामक प्रमाण जुटेनाइ, निजताक सम्मान आ दस्तावेज पढ़बाक सामर्थ्य विकसित करब वास्तविक सामाजिक अभ्यास अछि। रचनाक विश्वसनीयता एहि दैनिक व्यवहारसँ बढ़ैत अछि।

## कबड्डी आ कथात्मक समय

कबड्डीमे साँस जतेक देर टिकैत अछि, ओतेक देर खिलाड़ीक प्रयास जारी रहैत अछि। कथाकार एहि सीमित साँसकेँ उपन्यासक अनन्त स्मृतिक संग जोड़ैत छथि। तेसर पारी, चारिम साँस, पाँचम साँस—ई सभ केवल अध्याय-विभाजन नहि; नैतिक श्रवणक क्रम बनैत अछि। जेनेतक आख्यानकालक भेद अनुसार एतय बारम्बार एकहि प्रकारक परीक्षा घुरि अबैत अछि, मुदा ओकर अर्थ क्रमशः बदलबाक प्रयास होइत अछि। पुनरावृत्ति संरचनाक आधार अछि, मुदा ओहि पुनरावृत्तिमे ठोस नब क्रिया जोड़ब आवश्यक।

लोकगीत सभ एहिमे दोसर आवृत्तिमूलक विधान बनबैत अछि। भीतरक अदालतक गीत, हारल लोकक श्रमगीत, तेसर पारीक कबड्डी-धुन, दर्पणक झूमर आ नदीक समदाउन-लय भिन्न स्वर-परम्परा अनैत अछि। पदसभ विषयक प्रतिध्वनि रचैत अछि, मुदा किछु ठाम गीत कथाक निष्कर्ष अत्यधिक स्पष्ट कहि दैत अछि; पाठक अपन निर्णय बनाबय लेल कम अवकाश पबैत अछि। रस आ ध्वनिक कलात्मक

सामर्थ्य तखन अधिक प्रभावी होइत अछि जखन प्रतीकक अर्थक संग अनुभवक अस्पष्टता सेहो बचल रहय।

## प्रमाण, स्मृति आ नामक निजत I

नव्य न्यायपरक परीक्षणमे एहि पाँच अध्यायक प्रमुख प्रश्न केवल के सत्य कहैत अछि नहि; ककर कथन कोन साधनसँ ज्ञात अछि, ओकर सन्दर्भ की अछि, आ विरोधी साक्ष्यक सम्भावना केहन अछि—से अछि। कथामे पानिक कटोरा, पातक नाम, दर्पणक दृश्य आ सपनाक अदालत नैतिक कल्पनाक शक्तिशाली माध्यम अछि। मुदा वास्तविक सामाजिक-अभिलेखक तहमे परिवारक बयान, दस्तावेज, आर्थिक खाता, मूल सन्देश, प्रत्यक्षदर्शी आ जाँचक क्रम अलग-अलग विश्वसनीयता रखैत अछि। कथा एहि भिन्नताकेँ पूर्ण कार्यप्रणाली रूपमे नहि लिखैत; आलोचनाकेँ ओहि अभावक संकेत करबाक चाही।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक आलोकमे राज्यक अभिलेख, लोकगीत, श्रमिक परिवारक स्मरण, डिजिटल दस्तावेज आ कल्पनात्मक लोकविश्वास समानान्तर स्रोतपरत मानल जा सकैत अछि। मुदा समानान्तर होएबाक अर्थ प्रमाण-मूल्य समान होएब नहि। मूल उद्धरण, लोक-विश्वास, पात्रक आरोप आ ऐतिहासिक निष्कर्षक वर्गीकरण सुरक्षित राखल जाएब आवश्यक अछि। नामक सार्वजनिक उच्चारण संग जीवित व्यक्तिक सहमति, निजी सामग्रीक मर्यादा आ संवेदनशील जानकारीक संरक्षणक नियम सेहो रहबाक चाही।

## समापन

एहि पाँच अध्यायक महत्त्व एक नब नैतिक दिशा खोलबामे अछि : ‘भितरक अदालत’ व्यक्तिक आत्मरक्षा-भाषाक परीक्षण करैत अछि; ‘हारल लोक सभक काज’ लोक-शिक्षा आ सहायक श्रमकेँ वास्तविक प्रतिरोध बनबैत अछि; ‘तेसर कबड्डी’ सार्वजनिक भाषा बदलैत अछि; ‘मोनक परीक्षा’ व्यक्ति आ ओकर सत्ताक शब्दक बीचक दरारि देखबैत अछि; ‘सुनैत नदी’ अधूर नामक घर धरि पहुँचबाक दायित्व सामने रखैत अछि।

रचनाक सीमा सेहो एहि महत्त्वक संग जुड़ल अछि। अलौकिक अन्तःकरण-परीक्षाक समान युक्ति लगातार घुरैत अछि; प्रतिपक्षी पात्रसभ बहुधा अपेक्षाकृत सोझ नैतिक संकेतक रूपमे व्यवहार करैत छथि; सामाजिक सुधारक परिणाम कखनो शीघ्र देखाओल गेल अछि। मुदा उपन्यास जतय अपना केँ अधिक ठोस बनबैत अछि, ओहि ठाम बच्चाक प्रश्न, जीवनक स्थानीय वस्तु, अधूर नाम, लोकभाषाक दस्तावेज आ काजक दैनिक निरन्तरता अछि। एहि आधारपर पाँच अध्यायक प्रमुख निष्कर्ष अछि : नाम केवल उच्चारणक वस्तु नहि, ओकर पाछाँक जीवनकेँ सुनबाक, जाँचबाक आ गरिमासहित सुरक्षित रखबाक दायित्व अछि।

# अध्याय ३५ — नामक देहरी

*स्मृतिक भूगोल, घरक साक्ष्य आ पछतावाक अधूर आरम्भ*

## देहरीक रूपक : नामसँ जीवनक ठाम धरि

अध्याय ३४क अन्तिम निर्देश छल जे नाम पढ़ब पहिल साँस अछि, नामक घर धरि पहुँचब दोसर। अध्याय ३५ एहि निर्देशकेँ कथाक वास्तविक गतिमे बदलैत अछि। चन्ना गाछीक जड़िमे ढारल पाँच बून्द पानि प्रत्येकमे एक देहरीक छवि लैत अछि। अनन्या पाँच घरक रूपरेखा खींचैत छली—सरयू देवीक, मुन्ना पासवानक, उज्ज्वलक, अज्ञात मजदूरसभक आ ओहि घरक जकर मालिकक नाम एखन धरि भेटल नहि अछि। ई पाँचम रिक्त घर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि; अभिलेखक पूर्णता नाम ज्ञात लोकक सूचीसँ नहि, बचेबाक शेष प्रश्नक उपस्थितिसँ मापल जा रहल अछि।

देहरी एतय स्थिर भौतिक वस्तु मात्र नहि। घरक भीत टूटि सकैत अछि, छप्पर बदलि सकैत अछि, सदस्य परदेश जा सकैत छथि, मुदा देहरी परिवारक पुनर्स्मरणक प्रवेशद्वार बनल रहैत अछि। पूर्ववर्ती अध्यायसभमे नारिकेल-पात मृतकक नामक वाहक छल; एहि अध्यायमे घरक देहरी ओहि नामक सामाजिक सम्बन्धकेँ सामने अनैत अछि। नाम मृत्युक सूचना नहि, व्यक्तिक निवास, सन्तान, रोजीरोटी, प्रतीक्षा आ स्मृतिक श्रृंखला अछि। एहि अर्थमे नदी आ गाछीक अलौकिक भूगोल अब गामक घर-आँगनक ठोस रचनासँ जुड़ैत अछि।

## बटुकनाथक रेलयात्रा आ नैतिक दूरी

बटुकनाथ हरिहरन दिल्लीसँ अपन गाड़ीमे जाए चाहैत अछि, मुदा बारम्बार वाहन बन्द होएबाक बाद रेल पकड़ैत अछि। टिकट पर दरभंगाक स्थानपर सरयू देवीक देहरीक उल्लेख प्रकट होएब यथार्थवादी परिवहन-वृत्तान्त नहि; अपराध-बोध आ आत्म-परीक्षाक अलौकिक दृश्य अछि। यात्राक वास्तविक दिशा पटरीक नक्शासँ निर्धारित होइत अछि, मुदा कथाक नैतिक दिशा एखन एक स्त्रीक अधूर अभिलेख निर्धारित करैत अछि। साथ बैसल बूढ़क उपस्थिति, खेतमे देखाइत टोकड़ी नेने स्त्री, आ आँखि मूनलाक बादो ओहि दृश्यसँ मुक्त नहि होएब बटुकनाथक भीतरी प्रतिरोधकेँ क्रमशः कमजोर करैत अछि।

सरयू देवीक पूर्व घरपर पहुँचि बटुकनाथ अपन पद-परिचय देबाक प्रयास करैत अछि, मुदा वृद्धाक प्रश्न सामने रुकि जाइत अछि। वृद्धा ओकरा भीतर नहि बजबैत छथि; एक मुट्ठी देहरीक धूरि हाथमे राखैत छथि। ई दृश्यक मर्यादा महत्त्वपूर्ण अछि। पीड़ित परिवार आगन्तुककेँ स्वचालित प्रवेश, क्षमा वा मेहमानक अधिकार नहि दैत। देहरी ओहि घरक सदस्यक नियन्त्रित सीमा अछि। जे व्यक्ति बाहरक अदालतमे नाम-पाठ रोकबाक काज केने छल, ओकरा एखन परिवारक उपस्थितिमे बोलबाक अधिकार स्वतः नहि भेटैत। पॉल रिकरक स्मृति आ उत्तरदायित्व सम्बन्धी विचारक आलोकमे एतय अतीतक पुनःस्मरण केवल भावात्मक अनुभूति नहि, भविष्यक कर्मक माँग अछि।

धूरि आँखिक कोर लगबिते सरयू देवीक अन्तिम दिनक दृश्य बटुकनाथ लग खुलैत अछि। मुदा ई दृश्य स्वप्न-न्यायक शिल्पक अंश अछि; ओकरा वास्तविक अदालतक

प्रत्यक्ष साक्ष्य मानि नहि लेल जाए। कथाकार स्वयं महत्त्वपूर्ण अन्तर राखैत छथि : बटुकनाथ जमीनपर बैसि जाइत अछि, मुदा ई एखन ‘पश्चात्ताप’ नहि, देखबाक आरम्भ अछि। वृद्धा सेहो आँसू वा मौनकेँ पर्याप्त नहि मानि ‘जे देखलहुँ, से लिखू’ कहैत छथि। एहि वाक्यसँ भावनाकेँ उत्तरदायित्वक अनुशासन भेटैत अछि।

## चन्द्रपालक परदापर उज्ज्वलक घर

चन्द्रपाल बत्रा फोन तोड़ि, पानिमे फेंकि वा नब साधन लऽ कऽ नामक स्मृतिसँ छुटकारा पाबय चाहैत अछि। तथापि परदापर उज्ज्वलक झुकल छप्पर, देविकाक चूल्हि आ देबालक कोरा ठाम देखाइत अछि। तकियाक किनारपर दाँतक निशानक स्मृति कथाक सबसँ तीक्ष्ण घरेलू बिम्बसभमे अछि। डिजिटल भुगतानक गणना जकरा एक खाता, एक ऋण वा एक जोखिम मानैत छल, ओ भयक कारण बिछौनापर दाँत गड़ौने युवकक रूपमे देखाइत अछि।

चन्द्रपाल अन्ततः देविका पर दबाव नहि बनएबाक आदेश दैत अछि। कथाकार ई परिवर्तनकेँ करुणाक निश्चित विजय नहि कहैत—ओ डरक पहिल रोक अछि। ई संयम अध्यायक विशेष उपलब्धि अछि। अपराध-जगतसँ जुड़ल पात्रक एक क्षणक असहजता, धमकी रोकबाक आदेश वा आँखिमे नोर आबि जएब पूर्ण नैतिक परिवर्तनक प्रमाण नहि। ओकरा आगाँ व्यवहार, परित्याग, यथार्थ स्वीकार आ क्षतिक प्रतिकारक कसौटी परखबाक शेष अछि। वर्तमान अध्याय एहि कठिन प्रक्रियाक पहिल अस्पष्ट पड़ाव देखबैत अछि।

## राघवक अक्षर, मुन्नाक देहरी

राघव ‘सिग्नल’ सोमानी देवनागरीमे मुन्नाक नाम लिखबाक प्रयत्न करैत अछि। ओ पहिने ‘म्यूल’क ‘म’ चिन्हैत छल; पातक शिक्षा ओकरा ‘मुन्ना’क ‘म’ दिस घुरबैत अछि। एहि छोट अक्षर-परिवर्तनमे शब्दसँ व्यक्ति धरि यात्रा निहित अछि। मेटाइत सन्देश, संकेत-संख्या आ खाताक अधूर पता पर निर्भर अपराधक तन्त्र सामाजिक अस्तित्वक पूर्णता नष्ट करैत अछि। राघवक लिखल नामसँ देहरी, फाटल कमीज आ पाँच हजारक प्रलोभनक दृश्य उपस्थित होइत अछि।

मुन्नाक पूरा पता खोजबाक समय बैंकक अधूर जिला, सिमक झूठ स्थान आ कागजक गलत हिज्जे सामने अबैत अछि। ई प्रसंग विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक लेल उपयोगी अछि। औपचारिक अभिलेख, स्थानीय स्मृति, भौगोलिक संकेत आ परिवारक कथन एक दोसरा पूरक होएत तखने व्यक्तिक समुचित पहिचान उभरि सकैत अछि। मुदा कथामे पातक गरम भऽ दिशाक पुष्टि करब अलौकिक संकेत अछि; वास्तविक शोधमे एहिसँ पता वा निर्दोषता प्रमाणित नहि मानल जा सकैत। राघव द्वारा मुन्नाकेँ ‘उपयोग कएल गेल युवक’ कहब कथात्मक नैतिक पुनर्पहिचान अछि, न्यायिक दोष-निर्णय नहि।

## लाउक बाजार-नक्शा आ ब्रूमक भाषण

लाउ किन-हंग व्यापार-मार्ग, बैंकिंग केन्द्र आ उपभोक्ता-संख्या देखैत अछि; नब तह खोलला पर ओकर सामने घरक देहरीसभ प्रकट होइत अछि। नक्शाक सामाजिक आलोचना एहि बातमे अछि जे बाजारक दृष्टि वस्तु खरीदनिहार वा जोखिम वहन

करएबला व्यक्तिक घरक अनुभवकेँ अक्सर अलग कऽ दैत अछि। सलाहकारसभ धर्म, जाति, चुनाव आ स्थानीय मध्यस्थक माध्यमसँ प्रतिरोध कम करबाक उपाय देब चाहैत छथि; कथा ई भेद सामने अनैत अछि जे कथाक छवि प्रबन्धन आ ऐतिहासिक अन्यायक समाधान एक नहि अछि।

ब्रूमक भाषणमे नैतिक आत्मसुधारक वाक्य बदलि लाभक स्वीकारक रूप लेब सेहो एहि अध्यायक अलौकिक भाषिक परीक्षण अछि। सुन्दर भाषणक शब्द भ्रष्ट होएबाक बिम्बक शक्ति अछि, मुदा रूपक एखन संस्थागत परिवर्तनक विवरण नहि दैत। वास्तविक उत्तरदायित्व लेल सम्झौता, खाताक शृंखला, श्रमिकक परिवार आ सार्वजनिक साक्ष्य स्वतंत्र जाँचक विषय रहत। नामक घर देखब ज्ञानक आरम्भ अछि, अन्तिम न्याय नहि।

## अन्तराध्यायिक निरन्तरता आ शिल्पगत सीमा

अध्याय २३ आ २६मे बटुकनाथक गढ़ नारिकेल यात्राक वर्णनक बाद अध्याय ३५मे फेर यात्रा होइत अछि। एकरा स्पष्ट कालक्रमिक भेदक संग पढ़ल जाएब चाही। पाठक सामने पुनरागमन, स्वप्न-यात्रा आ मानसिक परिवर्तनक अन्तर पूर्णतः निर्दिष्ट नहि; एहि कारण कथानकक समय-सम्बन्ध प्रश्न आमन्त्रित करैत अछि। तथापि नब यात्रा भाव-स्तरपर पुरान यात्रासँ भिन्न अछि : एतय लक्ष्य गामक विरोधी समुदाय नहि, सरयू देवीक देहरी अछि। आलोचनामे एहि भावात्मक परिवर्तनकेँ स्वीकार करैत समयगत अस्पष्टताकेँ नहि नुकाएब चाही।

अध्यायक घरघुरनी गीत, पाँच बून्द पानि, टिकट, फुटल परदा, देहरीक धूरि आ नाम लिखबाक अभ्यास एक समृद्ध वस्तु-जगत रचैत अछि। मुदा पाँचू प्रतिपक्षीक साथ

एकहि समय समान अलौकिक हस्तक्षेप भेला कारण व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक विविधता किछु कम होइत अछि। अध्याय अपन सबसँ अधिक प्रभाव ओहि ठाम उत्पन्न करैत अछि जतय वृद्धा बटुकनाथकेँ भीतर नहि बजबैत छथि, देविका अपन घरकेँ दृश्य बनबैत छथि, आ राघव नामक पहिल अक्षर सीखैत अछि। एहि तीन क्रियामे नैतिक परिवर्तन घोषणाक बदला व्यवहारक कठिनाइ बनि उपस्थित अछि।

# अध्याय ३६ — घर, भय, सपन ।

*पीड़ितक जीवन-वृत्त आ न्यायसँ आगाँक उत्तरदायित्व*

## तीन कंकड़ : स्मृतिक त्रिमुखी संरचन ।

अध्याय ३६मे चन्ना गाछीक सातम साँस घर, भय आ सपनाक तीन कंकड़ बनि बच्चासभक हाथमे पहुँचैत अछि। अध्याय ३५मे जे देहरी केन्द्र बनल छल, ओकर अर्थ एतय गहन होइत अछि। घरक स्थान जानि लेलाक बादो व्यक्तिक सम्पूर्ण कथा ज्ञात नहि होइत। घरक भीतर के डेराइत छल, आ ओ व्यक्ति की चाहैत छल—ई दू प्रश्न बिनु नाम अधूरा रहि जाइत अछि। एहि अर्थमे तीन कंकड़ केवल स्मरणक उपकरण नहि, चरित्रक सामाजिक जीवनी लिखबाक त्रिमुखी अनुसन्धान-विधि अछि।

कबड्डीक घेरामे तीन गोला बनबैत बालकसभ स्मृतिकेँ पाठ्य-विषय बनबैत अछि। ई तकनीक पाठकीय दृष्टिसँ सशक्त अछि, कारण घर, भय आ सपना बुझबाक लेल पाठक अपन अनुभवक तुलना सेहो करैत छथि। मुदा एकर आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे जीवनक जटिल बहुलताकेँ तीन निश्चित प्रश्नमे समेटल जाएब कखनो पर्याप्त नहि। व्यक्तिक जाति, श्रम-इतिहास, आय, सम्बन्ध, स्वास्थ्य, आवागमन, वचन आ स्वीकृति एहन अनेक पक्ष सेहो छथि, जे कंकड़क त्रिकोणसँ बाहर रहि सकैत छथि।

## सरयू देवीक चूल्हि आ मृत्युक बादक भूख

सरयू देवीक घरक दृश्य धुँआ, अधपकल भात आ मायक प्रतीक्षामे सूति गेल बच्चाक माध्यमसँ प्रस्तुत होइत अछि। एहि घरेलू वस्तुसभक रचना पुलक दुर्घटनाकेँ परिवारक समयसँ जोड़ैत अछि। सरकारी पञ्जीमे ‘अनुपस्थित’ लिखल स्त्रीक जीवनक अभाव चूल्हि पर ठंढा भेल भोजनमे व्यक्त होइत अछि। करुण रसक दृष्टिसँ ई सफल दृश्य अछि : मृत्युकेँ अमूर्त आँकड़ा बनेबाक बदला घरक दिनचर्याक भंगरूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

मुदा भूतक कथनमे जे बच्चाक भोजनकेँ ‘साक्ष्य’ कहल जाइत अछि, ओकर प्रमाण-मर्यादा पर विचार जरूरी अछि। घरमे प्रतीक्षारत बालकक अनुभव ऐतिहासिक श्रम-मृत्युक सामाजिक असरक साक्ष्य होएबाक सम्भावना रखैत अछि; किन्तु दुर्घटनाक यान्त्रिक कारण, उत्तरदायी व्यक्ति अथवा सरकारी अभिलेखक झूठक प्रत्यक्ष निर्णय ओकरा अकेलेसँ नहि स्थापित होइत। एहि अन्तरकेँ राखब अध्यायक करुण शक्ति घटबैत नहि; साहित्यिक संवेदना आ न्यायिक परीक्षण दूनूक स्वतन्त्र महत्त्व सुरक्षित करैत अछि।

## उज्ज्वलक घर आ ‘केवल’क भाष

चन्द्रपाल उज्ज्वलक घरमे देविकाक उपस्थिति आ बिछौनाक दाँतक निशान देखैत अछि। पहिने स्वतन्त्र परामर्शदाता होएबाक तर्क दैत ओ अपन भूमिका छोट करब चाहैत अछि। मुदा ‘केवल’ शब्द पर ओकर भाषण अटकि जाइत अछि। कथाकार एहि एक शब्दक माध्यमसँ अपराध-जालक विभाजित उत्तरदायित्वक प्रश्न खोलैत

छथि। जे व्यक्ति स्वयंकेँ केवल सलाहकार, माध्यम वा बाहरी सहयोगी कहैत अछि, ओकर भूमिका वास्तवमे कतेक छल—ई लिखित आर्थिक सम्बन्ध, जानकारी, निर्णयाधिकार आ परिणामक आधारपर जाँचक विषय अछि।

उज्ज्वलक अधूर पत्रमे अपराधी आ गलती कएनिहार व्यक्तिक बीच ओहि अन्तरिक भेदक आवाज अछि जे अध्याय २०–२१ सँ निरन्तर चलि रहल अछि। पीड़ित अपन आर्थिक हानिक कारण आत्मदोष अनुभव कऽ सकैत अछि; अपराध-जाल ओकरा एहि भावनासँ आओर नियंत्रित करैत अछि। देविकाक पत्र नहि मेटि उत्तर लिखबाक आग्रह दमनक बदला उत्तरदायित्वक माँग बनैत अछि। प्रतिशोधक बदला उत्तर देबाक आग्रह प्रभावशाली अछि, मुदा एकरा पीड़ित परिवारक क्षमा मानब अनुचित होयत।

## मुन्नाक मायक गमछा आ स्थगित क्षम I

राघव मुन्ना पासवानक घरमे पुरान गमछा देखैत अछि, जकरा मुन्ना बैंक जाए काल संग लेने छल। पिता पूछैत छथि जे हुनकर बेटाकेँ सरगना किएक लिखल गेल। मायक प्रश्न नौकरीक भ्रम आ उपयोगक सम्बन्ध खुलबैत अछि। कपड़ाक ई साधारण वस्तु बैंक-खाताक संकेत-संख्यासँ अधिक प्रत्यक्ष घरेलू अर्थ रखैत अछि। घरक परत खोलबाक एहि दृश्य मे कथा अपराधीक स्वीकारोक्तिक तुलनामे पीड़ित परिवारक उत्तरक अधिकारकेँ प्राथमिकता दैत अछि।

मायक गमछा घीचि लेब निर्णायक अछि। राघव झुकि, गमछा छूबि, माफीक संकेत देब चाहैत अछि; मुदा माय ‘एखन नहि’ कहैत छथि। पहिने खाताक वास्तविक सत्य सार्वजनिक कएल जाय—एहि आग्रहसँ क्षमा आ प्रायश्चित्तक सरल कथारूप भंग होइत अछि। पीड़ित परिवारक अधिकार केवल कथाकार वा अपराधीक आत्मशुद्धिक

उपकरण नहि। हुनका सभक सूचना, अस्वीकार आ सत्यक माँग स्वतंत्र अछि। स्त्रीवादी नैतिक आलोचनाक दृष्टिसँ ई दृश्यक महत्त्व अत्यन्त पैघ अछि।

## लाउक बाजार-अनुभव आ ब्रूमक लेखन-अभ्यास

लाउक सलाहकार लग उमेर, खर्च, ऋण-झुकाव आ व्यवहारक वर्गीकरण अछि, मुदा ‘घर’क उत्तर नहि। कथा एतय आँकड़ाक अमानवीय प्रयोगक आलोचना करैत अछि। संख्याक वस्तुनिष्ठ उपयोगक अस्वीकार नहि, ओकर सामाजिक सन्दर्भसँ विच्छिन्न प्रयोगक परीक्षण अछि। लाउ अपन सर्वर बन्द करबाक आदेश दैत अछि; घरक प्रश्न तथापि ‘बाहरी जाल’सँ बाहर उपस्थित रहैत अछि। कथा बतबैत अछि जे स्रोतक सामाजिक सत्य कम्प्यूटरक परदा हटाओलासँ समाप्त नहि होइत।

एडवर्ड ब्रूम मैथिलीमे ‘माफ करू’ लिखबाक अभ्यास करैत अछि। प्रोफेसर एलिना ग्रेव्सक सहयोगसँ ओकर सार्वजनिक वाकपटुता एक अनिश्चित विद्यार्थीक लेखनमे बदलैत अछि। नाम गलत उच्चारित भऽ जएबाक डर आ नाम नहि लेबाक नैतिक विफलता बीच अंतर कएल गेल अछि। मुदा ककरो भाषा सीखबाक प्रयास स्वतः ऐतिहासिक उत्तरदायित्व पूरा नहि करैत। एहि अन्तरक कारण दृश्य सहृदयता आ आलोचनात्मक दूरी एकसंग बचबैत अछि।

## भयक शपथ : पीड़ितपर आरोपक प्रतिरोध

अनन्या घरक बाद भय पूछैत छली। सरयू देवीक भय बच्चाक भूख, उज्ज्वलक भय बहिनक अपमान, मुन्नाक भय निरपराध होइत अपराधी कहाएब, मीराक भय निज प्रेमक दुरुपयोग, आ नन्दक भय सत्य लिखलाक बादो नदी द्वारा निगलल जाएब

अछि। कथा एहि भयसभकेँ सामाजिक शर्तक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, व्यक्तिगत दुर्बलताक चिह्नक रूपमे नहि। देविका भयग्रस्त, ठगल वा धमकाओल व्यक्ति पर लाज न थोपबाक शपथ सिखबैत छली। ई अध्याय २१क निजताक नैतिकता केँ अगिला स्तरपर लऽ जाइत अछि।

नव्य न्यायक प्रमाण-शास्त्रीय दृष्टिसँ पीड़ितक बयानक मान्यता आ घटनाक प्रत्येक विवरणक न्यायिक पुष्टि भिन्न प्रश्न अछि। तथापि भय बतबैत काल व्यक्ति पर अपमान आरोपित नहि करब सुनवाईक पूर्वशर्त अछि। उपन्यास सफलतापूर्वक देखबैत अछि जे ठगीक आर्थिक प्रणाली लोकक मौनसँ लाभ उठबैत अछि; अपन भय साझा करबाक सुरक्षित वातावरण ओकर विरुद्ध महत्त्वपूर्ण सामाजिक साधन बनि सकैत अछि।

## सपना : न्यायसँ पुनर्निर्माण धरि

तीन कंकड़मे सभसँ कठिन सपना अछि। सरयू देवीक सन्तानक पढ़ाइ, देविकाक निर्भयता, मुन्नाक पिताक बैंकमे सम्मान, मीराक निडर प्रेम आ नन्दक श्रमिक-नामयुक्त पुल—ई सभ मृतक वा पीड़ितक जीवनक सकारात्मक आकाङ्क्षा बनि अबैत अछि। स्मृतिपरक आन्दोलनक लक्ष्य केवल अतितक अपराधी चिन्हब नहि; भविष्यक जीवनक शर्त सुधारब सेहो अछि। एहि अर्थमे सपनाक प्रश्न पुनर्स्थापनात्मक न्यायसँ सम्बन्धित अछि, मुदा पाठक ई भेद राखथि जे प्रतीकात्मक सपना आ वास्तविक प्रतिकर अथवा पुनर्वास एकरूप नहि।

बूढ़बा भूत एहि बेर फैसला नहि, ‘गृहकार्य’ दैत छथि। पाँचू प्रतिपक्षी घर, भय आ सपनाक प्रश्न पर अलग-अलग स्तरपर अटकैत छथि। राघव मायक शपथ आ

सपनाक सामने भावविभोर होइत अछि; लाउ पूरा घर नहि कहि पबैत; ब्रूम एक नाम कच्चा उच्चारण करैत अछि। एहि भिन्नतासँ प्रगतिक रेखीय विजय अपेक्षाकृत टुटैत अछि। तथापि कथामे भीतरक अदालतक बारम्बार समान परीक्षा आ पाँच प्रतिपक्षीक उपस्थिति पुनरावृत्तिक जोखिम बनैत अछि।

## समग्र मूल्याङ्कन

अध्याय ३६क सर्वाधिक प्रभावी बिम्ब तीन कंकड़ नहि, बल्कि गमछा घीचि लेनिहार माय आ उत्तर लिखबाक माँग करएबला देविका छथि। एहि दुनू दृश्य मे पीड़ित पक्ष ककरो आत्मशुद्धिक साधन नहि बनैत; ओकरा सत्य, मर्यादा आ अस्वीकारक स्वतंत्र अधिकार भेटैत अछि। घर, भय आ सपनाक क्रम एहि कारणे सार्थक अछि जे ओ स्मृतिकेँ कोमल भावमात्र नहि, अनुभव बुझबाक कठिन काम बनबैत अछि। सामाजिक अन्यायक समाधानक दिशा एतय पीड़ितक अतीत सुनबासँ ओकरा गरिमापूर्ण भविष्य निर्माणधरि विस्तार पबैत अछि।

# अध्याय ३७ — तीन कंकड़

*अपराधक आरम्भक खोज आ जीवन-वृत्तक नैतिक सीमा।*

## सातम साँसक प्रश्नसँ आठम साँसक इतिहासधरि

अध्याय ३६मे बच्चासभक जेबीमे घर, भय आ सपनाक तीन कंकड़ राखल गेल छल। अध्याय ३७मे ओ कंकड़ केवल पीड़ितक नहि, पाँच प्रतिपक्षी पात्रक इतिहास खोलबाक साधन बनैत अछि। अनन्या आ पाठशालाक बच्चासभ पूछैत छथि जे जखन कियो दोसराक घरक भय बेचैत अछि, तकर अपन घरक कथा कोना बुझल जाए। एहि परिवर्तनमे उपन्यास एक नब आलोचनात्मक प्रश्नक सामना करैत अछि : अपराधीकेँ अमानुष बना देबासँ ओकर काजक सामाजिक उत्पत्ति बुझब कठिन होइत अछि; मुदा ओकर उत्पत्ति बुझबाकेँ क्षमा वा विधिक बचाव सेहो नहि बनाओल जा सकैत।

मीरा स्पष्ट करैत छली जे धूर्तक अपन पीड़ा ओकर अपराधक क्षमा नहि। सौम्याक कथन अपराधक जड़ि चिन्हबाक उद्देश्य आओर स्पष्ट करैत अछि। एहि दू स्त्री-पात्रक सावधानीक कारण बालकसभक जिज्ञासा भावुक अपराधी-महिमामण्डनमे नहि बदलैत। समीक्षा लेल ई भेद अत्यन्त जरूरी अछि। जीवनीक आरम्भ खोजब कारणगत अनुसन्धान भऽ सकैत अछि, मुदा अपराधक परिणाम आ उत्तरदायित्वक स्वतंत्र मूल्याङ्कन नष्ट कएने बिना।

## बटुकनाथ : छोट छूटसँ प्रक्रियाक दुरुपयोग

बटुकनाथ अपन ‘घर’क प्रश्न पर मद्रासक पुरान गली, दिल्लीक बँगला आ विधिक फाइल-कक्ष बीच डोलैत अछि। पिताक छोट दलालीक स्मरण आ ‘आरम्भ’ लिखल कंकड़ ओकर वर्तमान पदक पाछाँक जीवनसँ जोड़ैत अछि। कथाकार एतय एक महत्त्वपूर्ण विकास-रेखा प्रस्तावित करैत छथि : आरम्भमे समाज जकरा मामूली छूट वा सुविधाजनक असत्य मानैत अछि, सत्ता आ साधन प्राप्त भेलाक बाद ओही व्यवहार पैघ संस्थागत क्षति तक पहुँचि सकैत अछि।

मुदा बाल्यकालक पिता वा पारिवारिक पेशाकेँ बटुकनाथक समस्त वर्तमान व्यवहारक निश्चित कारण मानब सामाजिक नियतिवाद होयत। कथा भीतर पिताक थकान आ अपूर्ण नैतिकता जखन सामने अबैत अछि, ओ पात्रकेँ एक सूत्रीय खलनायक होएबासँ बचबैत अछि। निर्णायक प्रश्न बटुकनाथक अपन चुनाव छथि—कखन ओ विधिक प्रक्रिया केँ व्यक्ति-संरक्षणक बदला याचिकाक पहुँच रोकबाक साधन बनाएलक, आ कखन ओ अपन पदकेँ जनक सुनवाईसँ ऊपर रखलक। पुरान घरक स्मृति एहि चुनावक विवेचन खोलैत अछि, उत्तरदायित्व समाप्त नहि करैत।

## चन्द्रपालक छात्रावास आ शमीमक प्रतिदृष्टान्त

चन्द्रपालक फोन पर मेरठक छात्रावासक गन्ध उभरैत अछि—सस्ता चाह, पुरान गद्दा, कानूनक किताब आ पहिल झूठ। पहिल किसानक जमीन-विवादमे फाइल जमा करब बिसरि जएबाक कथा ओकर वर्तमानक आर्थिक अपराधक आरम्भिक नैतिक

असावधानी रूपमे प्रस्तुत होइत अछि। समय कैँ बहसक साधनक बदला बिकाउ वस्तु बनएबाक बात ओकर पेशागत पतनक सूत्र अछि।

शमीम नामक पुरान मित्र प्रतिदृष्टान्त बनैत अछि। दुनू कानूनक शिक्षा लैत छथि, मुदा एक व्यक्ति छोट वकील रहि गरीबक केस लड़बाक विकल्प ग्रहण करैत अछि, दोसर धन आ प्रतिष्ठाक दीर्घ शृंखला बनबैत अछि। एतय शिक्षा, गरीबी अथवा व्यवस्था अपने-आप व्यक्तिक भविष्य सुनिश्चित नहि करैत; ओकर चुनाव, अवसर आ उत्तरदायित्वक प्रयोगसँ भिन्न दिशा बनैत अछि। कथानकमे शमीमक उपस्थिति चन्द्रपालक आत्मसमर्थनक सम्भावना सीमित करैत अछि—एकहि परिस्थितिसँ दोसर निर्णय संभव छल।

## राघवसँ राघवेश : नामक छोट होएबाक अर्थ

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक पुरान नाम ‘राघवेश’ सामने अबैत अछि। ओ अपन घरमे पत्र, फोटो वा स्मृतिक वस्तु नहि राखैत; पत्नी छोड़ि चुकली आ बेटा हुनका ‘साहब’ कहैत अछि। एहि रिक्त घरेलू जीवनक वर्णनमे अपराध-जगतक ‘सुरक्षा’क भाषा व्यक्तिगत सम्बन्धक विघटनक संग जुड़ैत अछि। ओकर सबसे पैघ भय पुलिस वा मालिक नहि, अपन पुत्रक प्रश्न अछि—पिताक काम की छल?

गणितप्रेमी बालकसँ खाता-संकेतक सञ्चालक बनबाक यात्रा एक करुण विरोधाभास अछि। रमैय्या सुब्रमण्यम द्वारा पुरान नाम बताओल जाएब भाषिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। ‘राघवेश’ सँ ‘राघव’क संक्षेप केनाइ अपने-आप नैतिक ह्रासक प्रमाण नहि; बहुत लोक अपन नाम अनेक रूपमे प्रयोग करैत छथि। मुदा एहि विशेष कथा-सन्दर्भमे छोट नाम जीवनक अनेक सम्बन्ध काटि देबाक रूपक बनैत

अछि। व्याख्या एहि प्रतीकात्मक स्तरपर उचित अछि, सामान्य नाम-परिवर्तनकेँ नैतिक रोग मानबाक औचित्य नहि।

## लाउ किन-हंग : गरीबीक अनुभवक विकृत प्रत्युत्तर

लाउक शीशाघरमे 'तोहर घर?' प्रश्न बारम्बार उपस्थित होइत अछि। वैश्विक व्यापारक नक्शा, बैंकक नेटवर्क आ समुद्रकातक उँच आवास ओकर उत्तर नहि बनि पबैत। अन्ततः माय द्वारा राति-राति सिलाइ करबाक स्मृति खुलैत अछि। ओ गरीबीसँ बाहर आबए चाहैत छल, मुदा कथाकार ओकर बादक व्यापारकेँ गरीब लोककेँ उपयोगक वस्तु बनाएबाक दिशामे देखबैत छथि।

एहि रचनामे गरीबीक अनुभवक विरोधाभास तीक्ष्ण अछि। आर्थिक अभावसँ निकलल व्यक्ति समाजक वञ्चित लोकक पक्षमे सेहो काज कऽ सकैत अछि। ताहि कारण बाल्यकालक अभावकेँ आर्थिक शोषणक अनिवार्य कारण मानब अनुचित। निशांतक उपस्थिति एहि सम्भावनाकेँ सामाजिक प्रश्न बनबैत अछि। लाउ अपन कठिन बाल्यकालक स्मृतिकेँ अपराधक औचित्य बनाबए चाहय तँ ई आलोचना तकरा स्वीकार नहि करैत; ओकरा देखबाक चाही जे ओहि अनुभवक बाद ओकर द्वारा कएल आर्थिक निर्णयसभक पीड़ित पर की प्रभाव पड़ल।

## एडवर्ड ब्रूम : संख्याक भीतर नुकाएल दोष

ब्रूमक अकादमिक सभागार, नैतिक पूँजीक प्रस्तुति आ वैश्विक उत्तरदायित्वक भाषण पत्रपर 'तोहर घर?' प्रश्न बनैत अछि। ओकर उत्तर नागरिकता वा कम्पनीक पद नहि, एक एहन बालकक स्मरण अछि जकरा सिखाओल गेल छल जे गलती

संख्यामे नुकाएल जा सकैत अछि। ई प्रसंग आत्म-पहिचानक आलोचना अछि : सामाजिक पद व्यक्तिक समस्त नैतिक अनुभव नहि बनि सकैत।

ब्रूम बादमे पुरान गोदाममे पुल-परियोजनाक फेंकल पट्टिका देखैत अछि, जाहिपर भारतीय नदीक नामक वर्तनी गलत अछि। गलत वर्तनी उपनिवेशी वा वैश्विक पूँजीक ज्ञानात्मक दूरीक प्रतीक बनैत अछि। मुदा एक गलत नामक आधारपर सम्पूर्ण ऐतिहासिक दोष प्रमाणित नहि होइत; साहित्यिक रूपमे ओ स्मरणक दुर्बलता, स्थानीय इतिहासप्रति उपेक्षा आ औपचारिक प्रतिष्ठाक दूरीक सार्थक बिम्ब अछि।

## गोप कुमारक वस्तु-पञ्जी : कथा आ प्रमाणक भेद

गोप कुमार पुरान टिकट, छात्रावासक रसीद, प्रशिक्षण-शिविरक कागज, नौकरीक परिचयपत्र, निमन्त्रणपत्र आ फोटो जमा करैत अछि। ओकर कथन एहि अध्यायक प्रमाण-सम्बन्धी केन्द्रीय उपलब्धि अछि : ई सभ ‘आरम्भ’ अछि, पूर्ण प्रमाण नहि। एहि दृष्टिसँ अध्याय नव्य न्यायक प्रमाणविवेक आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक प्रश्नक सन्निकट पहुँचैत अछि। एक जीवनीक निर्माण लेल दस्तावेज, स्मृति, वस्तु आ कथन अलग-अलग स्थान रखैत अछि; कोनो एक स्रोत सम्पूर्ण नैतिक इतिहास नहि।

पाँच पातपर ‘छोट छूट’, ‘समयक बिक्री’, ‘नामक काट’, ‘गरीबीक बदला गरीबसँ’ आ ‘संख्यामे दोष छिपाब’ लिखबाक दृश्य पाँचू प्रतिपक्षीक विकास-रेखाकेँ अलग करैत अछि। किन्तु एहि पाँच सूत्रक अधिक व्यवस्था पात्रक व्यक्तित्वकेँ परिभाषित करबाक जटिलता घटा सकैत अछि। मनुष्यक जीवनक बहुविध कारण, चुनाव, असहमति आ संयोगकेँ पाँच नैतिक शीर्षकमे समेटब एक प्रकारक शैक्षिक योजना

अछि। कथा ई योजना बच्चासभक पाठशालामे राखैत अछि; आलोचनाकेँ एकरा इतिहासक अन्तिम सत्य नहि मानबाक चाही।

## अध्यायक उपलब्धि

अध्याय ३७क श्रेष्ठ पक्ष अपराधी व्यक्तिक मानवीय अतीत देखबैत ओकर काजक आलोचना न छोड़ब अछि। अपराधक ‘आरम्भ’ चिन्हब प्रतिशोधक बदला रोकथामक ज्ञान देबाक प्रयास अछि। तीन कंकड़क संग चारिम कंकड़—‘तोर आरम्भ’—जुड़ब एहि विचारक सशक्त रूपक अछि। तथापि पात्रसभक भीतरक नाटकीय आत्मस्मृति बारम्बार सजग नैतिक पाठ बनि जाइत अछि; यथार्थवादी मनोविज्ञानमे बचाव, अस्वीकार, विरोधाभासी स्मृति आ आत्मवञ्चना अधिक अव्यवस्थित रहैत। एकर बावजूद उपन्यास शिक्षा आ न्यायकेँ पुनरावृत्ति रोकबाक जिम्मेवारीसँ जोड़बामे सफल होइत अछि।

# अध्याय ३८ — नामक उच्चारण

*अभिलेखीय शुद्धता, अपमानक संशोधन आ भाषा-न्याय*

## लिखल अक्षर आ बजल नामक अन्तर

अध्याय ३८मे चन्ना गाछीक खेल दू दिन रुकैत अछि। बच्चासभ आश्चर्य करैत छथि जे नाम लिखि दैत पर्याप्त किएक नहि। बूढ़बा भूत उच्चारण सीखबाक काल माँगैत छथि। एहि विरामक नाटकीय महत्त्व अछि। उपन्यास बारम्बार ‘अगिला साँस’ कहि आगाँ बढ़ैत छल; एतय कथा जानि-बुझि ठहरैत अछि। नाम लिखबाक क्रिया बहुत बेर संस्थागत प्रक्रिया भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा सही उच्चारित करब व्यक्तिक पहिचान, सम्मान आ स्थानीय भाषा सुनबाक श्रम माँगैत अछि।

एहि दृश्यसँ एक प्रकारक भाषिक न्यायशास्त्र विकसित होइत अछि। नाम केवल वर्णनक सुविधा नहि; व्यक्ति स्वयंकेँ जेना चिन्हैत छथि अथवा परिजन तिनका जेना स्मरण करैत छथि, ओहि रूपक महत्त्व अछि। तथापि भाषिक मान्यता आ तथ्यक सत्यापन अलग रखबाक चाही। कोनो नामक उच्चारण ठीक भेला मात्रसँ मृत्यु-वृत्तान्त, आर्थिक शोषणक सम्पूर्ण इतिहास वा ककरो दोष न्यायिक रूपसँ सिद्ध नहि होइत। नामक शुद्धता अनुसन्धानक आवश्यक आरम्भ भऽ सकैत अछि, पर्याप्त अन्त नहि।

## भोला नट : ‘अज्ञात’क आलस्य

भोला नटक नाम बारम्बार उच्चारित भेलापर हुनकर बहिन सामने अएबाक कथा आत्मीय स्मरणक अलौकिक दृश्य अछि। ओ कहैत छथि जे हुनका मृतकक समाचार नहि देल गेल छल। एकर ऐतिहासिक अर्थ परिवारकेँ सूचना न पहुँचेबाक संरचनात्मक समस्या अछि। श्रम-अभिलेखमे ‘अज्ञात’, ‘जोन-मजदूर’ वा अपूर्ण पता लिखि देब बहुत बेर प्रशासनिक कठिनाइक चिह्न होइत अछि; मुदा कथाकार चेतबैत छथि जे अज्ञात कहि काज समाप्त मानब आलस्य बनि सकैत अछि।

बटुकनाथ पहिने भोला नटक नामक कात ‘घर अज्ञात’ लिखैत अछि, मुदा कागज कारी भऽ जाइत अछि। ओ फेर ‘घर खोजबाक बाकी’ लिखैत अछि, आ कागज उज्जर होइत अछि। एहि दू वाक्यक अन्तर गम्भीर अछि। ‘अज्ञात’ एक स्थिर स्थिति-चिह्न भऽ सकैत अछि, जखन कि ‘खोजबाक बाकी’ अनुसन्धानक अधूर कर्तव्य स्पष्ट करैत अछि। न्यायिक अभिलेखमे कखनो अज्ञात स्थिति सत्यतः आवश्यक होइत अछि; तकरा असत्य कहब उचित नहि। मुदा अभियोजन, शोध वा जनस्मृतिक कार्य-पञ्जीमे सत्यापनक शेष काज स्पष्ट दर्ज करब अधिक पारदर्शी अछि।

## सरयूक अभिलेख : नाम, लिंग आ सम्बन्धक परीक्षण

अध्याय ३८मे ‘सरयू महतो’ नामक स्त्री-मजदूर सरकारी सूचीमे पुरुष आ अनुपस्थित लिखल भेटैत छथि। अनन्या बच्चासभकेँ नामक संग देहक सत्य पढ़बाक आग्रह करैत छली। एक गलत लिंग-चिह्न वा अनुपस्थितिक शब्द मृत

व्यक्तिक सामाजिक इतिहास केना बिगाड़ि सकैत अछि, तकर कथात्मक प्रदर्शन तीक्ष्ण अछि। मुदा एहि ठाम पूर्ण पाण्डुलिपिक सम्पादकीय परीक्षण लेल एक प्रश्न उठैत अछि : पूर्ववर्ती अध्यायसभमे प्रमुख स्त्री-मजदूरक नाम ‘सरयू देवी’ रूपमे घुरि आबैत अछि; अध्याय ३८मे ‘सरयू महतो’ नामक वर्णन अछि। ई दुनू अलग व्यक्ति छथि कि एक व्यक्तिक अलग नाम-रूप—मूल पाठमे स्पष्ट अभिलेखीय मिलान आवश्यक अछि। आलोचनाकेँ बिना पुष्टि एकरा समान व्यक्ति अथवा निश्चित विरोधाभास घोषित नहि करबाक चाही।

एहि प्रश्नक अस्तित्व अध्यायक मूल प्रतिपादनक संग सहमत अछि। नाम सही बजबाक अर्थ नाम-रूप, नातेदारी, ग्राम, श्रम, मृत्यु-घटना आ दस्तावेजक भिन्न तहक मिलान सेहो अछि। स्थानीय पुकारू नाम, सरकारी नाम, विवाहोत्तर नाम आ जाति-सूचक उपनामक अन्तर स्वाभाविक भऽ सकैत अछि। आओर शोधक लेल मूल अध्याय-पञ्जी, पूर्व अभिलेख आ पात्र-वर्णन देखब आवश्यक अछि। साहित्यिक शिल्पमे ई एक संभावित निरन्तरता-बिन्दु अछि, जे भविष्यक समग्र समीक्षा-ऑडिटमे सुरक्षित रहबाक चाही।

## हुलासीक जीवनक पुनर्पहिचान

हुलासी स्वयं अपन नाम पढ़बाक आग्रह करैत छली। ओकर कथा पर आत्महत्या, पाप आ अपशकुनक विभिन्न आरोप चढ़ाओल गेल छल; ओ अपन मृत्यु इनारमे दुर्घटनासँ होएबाक बात कहैत छली। अनन्या ओहि कथनकेँ अपमानक संशोधनक रूपमे पढ़ैत छली। ई दृश्य अध्यायकेँ केवल श्रमिक-अभिलेखसँ आगाँ स्त्रीक प्रतिष्ठा आ लोकविश्वासक हिंसक नामकरणक आलोचनासँ जोड़ैत अछि।

स्त्रीवादी ज्ञानमीमांसामे एहन प्रसंग विशेष महत्त्व रखैत अछि, कारण व्यक्तिक अनुभव ओकरा ऊपर थोपल सामाजिक व्याख्यासँ भिन्न होएबाक अधिकार रखैत अछि। हुलासीक स्वरक साहित्यिक शक्ति ओहि अपमानकेँ प्रत्युत्तर देबामे अछि, जे मृत्युक बादो ओकर जीवन पर अधिकार जमौने छल। तथापि हुलासीक भूत-स्वर कथा-जगतक सत्य अछि; वास्तविक मृत्यु-कारणक ऐतिहासिक प्रमाणक बदला ओकरा उपयोग नहि कएल जाए। कथा समाजक असावधान आरोप आ अपमानकारी स्मृतिक विरुद्ध नैतिक तर्क देइत अछि।

## नाम बिगाड़ब, नाम चोरब आ पहिचानक व्यापार

अध्यायमे राघवक मेटाइत संदेश, चन्द्रपालक औपचारिक खाताक भाषा, लाउक संकेत-नक्शा आ ब्रूमक नैतिक भाषण पुनः नामक शुद्धताक कसौटीपर अबैत अछि। आर्थिक अपराधक तन्त्र लोकक पूरा व्यक्तित्वकेँ उपयोगकर्ता, खाता, देह-बाजारक संख्या अथवा जोखिम-प्रविष्टिमे बदलैत अछि। नाम सही करब एहि वर्गीकरणक विरुद्ध आरम्भिक प्रतिरोध बनैत अछि।

ईरा हार्वर्डक पुस्तकालयमे नैतिक भाषणक विरोधमे नामक विषयपर पत्र लिखैत छली। मैथिलीक पहिल पंक्ति अनुवाद होएबासँ इन्कार करैत अछि—एहि बिम्बमे सांस्कृतिक अनुवादक सीमा आ मूल भाषाक आत्मसम्मान प्रत्यक्ष अछि। किन्तु अनुवादक असम्भवता एक सौन्दर्यात्मक रूपक अछि; वास्तविक अन्तरराष्ट्रीय सार्वजनिक विमर्शमे जिम्मेदार अनुवाद, उच्चारण-संशोधन आ स्थानीय समुदायसँ परामर्श दूनू आवश्यक अछि। पाठक लेल ई अलग करब जरूरी अछि जे मूल भाषाक गरिमा बचब आ आन भाषामे सत्य पहुँचाएब परस्पर-विरोधी काज नहि।

## तीन पात : घर, मृत्यु, अपमान

सौम्या ‘घर, मृत्यु, अपमान’क तीन पातक विधान बनबैत छली। पहिनुक अध्यायमे घर, भय आ सपना छल; एतय सूची बदलैत अछि। ई परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि। पहिले जीवित व्यक्तिक सम्पूर्ण आकाङ्क्षा बुझबाक कोशिश छल; एतय अभिलेखीय गलती, मृत्यु-विवरण आ सार्वजनिक अपमानक सुधार केन्द्रमे अछि। एकहि व्यक्ति लेल स्मृति-पद्धति स्थिर नहि होइत; उद्देश्य बदललासँ प्रश्न सेहो बदलैत अछि।

मीरा निजताक शपथमे नामक सम्मानपूर्वक पुनर्स्थापनक प्रावधान जोड़ैत छली। मुदा जीवनक प्रत्येक विवरण सार्वजनिक कऽ देब व्यक्ति-स्वायत्तताक विरोधमे जा सकैत अछि। शोषणक शिकार व्यक्ति जँ अपन नाम सार्वजनिक नहि करए चाहैत छथि तँ तिनकर मौन सुरक्षित रहबाक चाही। ‘सही नाम’क नामपर ककरो गोपनीय पहचान खोलब नव अन्याय होयत। एहि अन्तरकेँ पाठक समक्ष स्पष्ट राखलासँ अध्यायक नैतिक आधार अधिक परिपक्व बनैत अछि।

## मूल्याङ्कन

अध्याय ३८क प्रमुख उपलब्धि नामक लेखन आ नामक मान्यता बीच श्रमक अन्तर देखब अछि। ‘घर अज्ञात’क बदला ‘घर खोजबाक बाकी’ लिखबाक दृश्य अत्यन्त स्मरणीय अछि। भोला नटक बहिन, हुलासीक अपमान आ सरयूक गलत अभिलेख स्मृति-लेखनक अनेक जटिलता सामने अनैत अछि। तथापि मृत्यु-कारणक अलौकिक निर्धारण आ नामक तुरन्त सही उच्चारणपर घटनाक समाधान कखनो-

कखनो प्रमाणक दीर्घ प्रक्रिया के सरल बना दैत अछि। व्यापक आलोचनात्मक निष्कर्ष ई अछि : नामक गरिमा तखने सुरक्षित रहत जखन भाषा-संशोधनक संग अभिलेखक स्रोत, सहमति, वर्तनी, पहचानक भिन्न रूप आ तथ्यगत सत्यापनक स्वतंत्र अनुशासन रहत।

# अध्याय ३९ — बीजक शान्ति

*नामक स्मृतिसँ सामाजिक अभ्यासक अंकुर धरि*

## स्थिरताक भीतरक परिवर्तन

अध्याय ३९क आरम्भ नवम साँसक नाम-पाठक बादक एक अजीब शान्तिसँ होइत अछि। कथाकार एकरा थाकल देहक विश्राम वा अदालतक स्थगनक शान्तिसँ अलग करैत छथि। ई बीजक शान्ति अछि—बाहर पात स्थिर, भीतर धरती फोड़बाक तैयारी। अध्याय ३५क देहरी, ३६क घर–भय–सपना, ३७क आरम्भक इतिहास आ ३८क सही नाम-पाठ एतय एक सामूहिक भविष्यक सम्भावना बनैत अछि। पहिने जे दृश्यसभ प्रतिपक्षीक मानस पर केन्द्रित छल, ओ सभ आब पाठशाला, गाम, बैंकक काउण्टर आ घर-घरक स्मृति अभ्यासमे बदलैत अछि।

‘बीज’क बिम्ब अलौकिक अछि, मुदा ओकरा प्रयोगक सामाजिक अर्थ ठोस अछि। राघवक सिम-कार्ड छोट बीज बनैत अछि; मेटाओल सन्देशसभ पातक आधा नाम रूपमे लौटैत अछि। ई तकनीकी साक्ष्य पुनर्प्राप्तिक वास्तविक विवरण नहि। कथा एहि दृश्यसँ ई सुझबैत अछि जे दमनक माध्यम आ गोपनीय संकेत सभ समाजक सामूहिक स्मृतिमे फिर प्रश्न बनि घुरि सकैत अछि। वास्तविक जाँचमे मूल सन्देशक सुरक्षित प्रतिलिपि, यन्त्रक स्थिति, समयक क्रम आ साक्ष्य-शृंखला आवश्यक रहैत अछि।

## देविकाक नव पाठ : भयक स्वामित्वक परिवर्तन

देविका उज्ज्वलक फाटल परदाकेँ फेर पाठशालामे अनैत छली। ‘भय गुप्त राखल गेल तँ व्यापार बनैत अछि’—ई वाक्य अध्यायक व्यावहारिक नैतिक केन्द्र अछि। बच्चाक प्रश्न अछि जे भय कहि देनेसँ समाप्त भऽ जाइत अछि कि नहि। देविका नकारात्मक उत्तर दैत छली : भय तुरन्त नहि मेटैत; ओकर ऊपर नियन्त्रणक सम्बन्ध बदलैत अछि। गुप्त भय अपराधीक एकान्त साधन बनैत छल, साझा भरोसक वातावरणमे ओ सहायताक विषय बनि सकैत अछि।

मुदा एहि कथनक व्याख्यामे निजताक अधिकार बिसरल नहि जाए। प्रत्येक व्यक्ति अपन डर सार्वजनिक मंचपर कहबाक बाध्य नहि। सुरक्षित सहायता-सम्बन्ध, विश्वासपात्र, सहमतिपर आधारित गोपनीय बातचीत आ आवश्यक विधिक संरक्षणक बीच भेद आवश्यक अछि। अध्याय २१क निजताक शपथ एहि नव पाठक शर्त अछि। कथाक लोकशिक्षा तखने संतुलित बनैत अछि जखन भय कहबाक विकल्पक संग नहि कहबाक अधिकार सेहो सुरक्षित रहत।

## सौम्याक अनुवाद आ रमैय्याक व्यंग्य

सौम्या दस्तावेजक भाषा लोकक पीड़ासँ जोड़ैत छली। सरकारी ‘वित्तीय अनियमितता’, ‘अनधिकृत श्रमिक’ आ ‘आपूर्ति व्यय’ सन पदक बगलमे बच्चाक डर, श्रमिकक श्रम आ श्वासक दामक बोध अनैत छली। रमैय्या सुब्रमण्यम एहि अनुवादक काजमे अपन हँसी आ व्यंग्य जोड़ैत अछि। एतय भाषा राजनीति केवल

शब्द-संशोधन नहि; ककर अनुभव संस्थागत वाक्यमे प्रकट होइत अछि, तकर प्रश्न अछि।

तथापि व्याख्यात्मक लोकभाषा मूल दस्तावेजक शब्दक स्वचालित प्रतिस्थापन नहि। शोधस्तरीय अभिलेखमे मूल पद, ओकर कार्यकारी अर्थ, प्रसंगगत अनुवाद आ आरोपित अनियमितताक स्वतंत्र सत्यापन अलग राखब आवश्यक। ‘आपूर्ति व्यय’क वास्तविक खातामे अपराध छिपल अछि कि नहि, ई अन्य साक्ष्यक प्रश्न अछि। सौम्याक अनुवादक साहित्यिक उपलब्धि दस्तावेजकेँ प्रश्नक योग्य बनबैत अछि; ओकरा बिना जाँच अन्तिम दोष-सिद्धि बना देब नहि।

## ज्ञान ‘बिलमे पानि’ बनि पहुँचैत अछि

गोप कुमार देखैत अछि जे नाम-अभिलेख, पाठशाला आ शपथ बनलाक बादो शक्तिशाली प्रतिपक्षीसभक आर्थिक-संस्थागत जाल सुरक्षित रहि सकैत अछि। बूढ़बा भूतक ‘बिलमे पानि’ पठएबाक रूपक एहि स्थिति पर लागू होइत अछि। ई पानि हिंसा अथवा प्रतिशोध नहि; ज्ञान, प्रश्न, लोकशिक्षा आ अभिलेखीय सावधानी अछि। प्रत्येक गाम, स्कूल, परदेशी परिवार आ अदालतक प्रतीक्षालयमे नाम, भय, खाता, निजता आ विकासक शब्दक परीक्षा हो—एहि प्रस्तावसँ प्रतिरोध एक स्थलसँ अनेक स्थलधरि फैलैत अछि।

एहि विस्तारक शिल्पगत लाभ ई अछि जे चन्ना गाछी केवल चमत्कारक केन्द्र नहि, समाजमे पुनरुत्पन्न होएबला शिक्षाक विधि बनैत अछि। तइयो कथामे एकटा अतिरिक्त सावधानी अछि : लोकशिक्षा प्रत्येक अपराधक स्वतः अन्त नहि करैत। आर्थिक प्रतिरक्षा, बैंकिंग प्रक्रिया, डिजिटल साक्षरता, शिकायत निवारण, कानूनक

अनुपालन आ संस्थागत निगरानीक अलग-अलग भूमिका अछि। लोकप्रश्न ओकर आधार बनि सकैत अछि, पूर्ण प्रतिस्थापन नहि।

## ‘सही नाम पकड़ू’ : खेल आ शैक्षिक न्याय

अनन्या बच्चासभकेँ ‘सही नाम पकड़ू’ खेल सिखबैत छली। एक बच्चा अपराधीक भूमिका, दोसर पीड़ितक, तेसर गवाहक आ चारिम न्यायाधीशक भूमिका करैत अछि। गलत नामकेँ गवाह सुधारैत अछि; पीड़ित फेर दौड़ए लगैत अछि। खेलक एहि संक्षिप्त रूपमे काव्यशास्त्रीय रस, लोकनाट्यक क्रिया आ सामूहिक शिक्षा मिलैत अछि। पीड़ित पुनः दौड़ि सकैत अछि—ई देहगत गतिशीलता ओकर सामाजिक वापसीक प्रतीक अछि।

तथापि ‘सही नाम’ एकटामात्र सुधारक उपाय नहि। अनुचित आरोप, भय, वित्तीय हानि आ सामाजिक बहिष्कारक बाद व्यक्ति फेर स्वतंत्र रूपसँ चलि सकय, ताहि लेल व्यवहारिक सहारा जरूरी अछि। खेल एहि जटिल प्रक्रियाक आरम्भिक रूपक अछि। बच्चासभक सक्रिय प्रश्न पूछबाक अभ्यास कथाक वास्तविक सामर्थ्य अछि।

## बैंकक बाबूक लाल पेंसिल

अध्यायक सर्वाधिक ठोस यथार्थवादी परिवर्तन गामक पाठशालासँ निकलि बैंकक एक सामान्य कर्मचारी धरि पहुँचैत अछि। बच्चासभ मुन्ना पासवानक कथा सुनबैत छथि; बाबू पहिने औपचारिक खाताखोलनक नियमक उल्लेख करैत अछि। बच्चासभ नियमक संग व्यक्तिक अवस्था देखबाक प्रश्न उठबैत अछि। बाबू बादमे अपन रजिस्टर खोलि तीन संदिग्ध खाता अलग चिन्हैत अछि। लाल पेंसिलक छोट

निशान कथा भीतर सार्वजनिक शिक्षा आ संस्थागत सावधानीक सम्बन्ध बनैत अछि।

ई निशान स्वयं अपराधक प्रमाण नहि; ओ जाँचक संकेत अछि। एक गलत सकारात्मक चिन्ह ककरो निर्दोष व्यक्ति पर नब हानि पहुँचा सकैत अछि। ताहि कारण वास्तविक बैंकिंग प्रक्रियामे गोपनीयता, उचित जाँच, निर्दोष पक्षक सुनवाई आ दस्तावेजी अनुशासन आवश्यक अछि। कथाकार एहि स्तरक विस्तृत बैंकिंग प्रक्रिया नहि प्रस्तुत करैत छथि, मुदा शिक्षकसँ कर्मचारी धरि चेतनाक संक्रमणक दृश्य विश्वसनीय सामाजिक सम्भावना खोलैत अछि। एहि कारण लाल पेंसिलक निशान अलौकिक परदाक चमत्कारसँ बेसी दीर्घकालिक साहित्यिक अर्थ रखैत अछि।

## प्रतीकक भोज : इतिहासक पारिवारिक रसोई

दसम साँसक राति चन्ना गाछीमे अदालत नहि, प्रतीकात्मक भोज होइत अछि। एक मुट्ठी चाउर, एक चुटकी नून, एक बून्द पानि आ नामक अभिलेखक पात प्रत्येक घरसँ जोड़ल जाइत अछि। जीवित, मृतक, बच्चा, भूत आ पनिडुब्बीक सामूहिक उपस्थिति लोककथाक सामुदायिक रूप गढ़ैत अछि। एहि दृश्य मे स्मृति केवल कागजक तथ्य नहि, भोजनक गन्ध आ साझा व्यवहारक अंग बनैत अछि। सामूहिक भोजक अर्थ ई जे जिनका इतिहासमे अनुपस्थित कएल गेल, तिनका घरक रसोईक गरिमा भेटय।

प्रत्येक पात्र अपन चिह्न राखैत अछि—देविका नून, मीरा दीप, सौम्या अनुवाद, ईरा मोहरबिना कार्ड, गोप कुमार उज्ज्वलक वाक्यक प्रतिलिपि, अनन्या लिखबाक खड़िया। ई वस्तुसभ पात्रक गतिविधिकेँ संक्षेपमे रखैत अछि। सामूहिक स्मृति अनेक

भिन्न कर्मसँ निर्मित होइत अछि; सभ व्यक्ति एकहि प्रकारक गवाही नहि दैत। भोजक दृश्य एहि बहुस्वरताक सर्वाधिक सुन्दर रूप अछि।

## ओसक ‘आब’ : कालक नब निर्देश

अन्तिम भोरमे ओसक बून्दक भीतर ‘आब’ शब्द पढ़ल जाइत अछि। एतय कथाक कालबोध स्थगनक विरोधमे स्थित अछि। न्यायालयक तारीख, अपराधीक समय-विस्तार आ अलौकिक स्वप्नक पुनरावृत्तिक बाद ‘आब’ एक क्रियात्मक वर्तमानक आदेश अछि। नामक सही लेखन, सुरक्षित सहायता, खाताक जाँच आ बच्चाक शिक्षा आगाँक अनिश्चित विजयक प्रतीक्षा बिना शुरू कएल जाए।

मुदा तत्काल काजक आग्रह जल्दबाजीमे अन्तिम निर्णय सुनएबाक आदेश नहि। पाठशाला तत्काल शुरू भऽ सकैत अछि; कोनो विशिष्ट व्यक्ति पर आरोपक विधिक पुष्टि उचित समय आ विधि माँगैत अछि। एहि अन्तरकेँ सुरक्षित राखलासँ अध्यायक नैतिक उत्साह व्यवहारिक न्यायसँ संगत रहैत अछि।

## शिल्पगत उपलब्धि आ सीम

अध्याय ‘बीज’, ‘पात’, ‘ओस’, ‘बून्द’, ‘नून’, ‘भोज’ आ ‘आब’क सहायतासँ स्मृतिक प्रकृतिपरक बिम्बक सघन संसार रचैत अछि। पात पर लिखल नामक मृत्युगन्ध सँ बीजक अंकुरणधरि परिवर्तन समयक एक अलग लय बनैत अछि। तथापि मोबाइलक परदा, प्रिण्टर, सिम-कार्ड आ परदेशक काँचपर बारम्बार एकहि प्रकारक अलौकिक अक्षर प्रकट होएबाक युक्ति कथाक आश्चर्य घटा सकैत अछि। एहि अपेक्षा बैंकक बाबूक तीन खातापर लाल निशान आ घरसभक छोट अर्पण

अधिक बहुआयामी दृश्य छथि। एकर माध्यमसँ उपन्यास प्रतिरोधकेँ भावुक उद्घोषणा सँ संस्थागत सावधानी आ लोकजीवनक आचरण धरि पहुँचबैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ३५–३९

*देहरी, तीन कंकड़, आरम्भ, सही नाम आ बीजक सामाजिक न्याय*

## पाँच अध्यायक विषयगत क्रम

अध्याय ३५क ‘नामक देहरी’ नामक व्यक्तिगत उच्चारणसँ घरक वास्तविक अस्तित्वधरि जाइत अछि। अध्याय ३६क ‘घर, भय, सपना’ व्यक्ति कैँ घरेलू स्थानक अतिरिक्त भावनात्मक आ भविष्यगत सन्दर्भ दैत अछि। अध्याय ३७क ‘तीन कंकड़’ पीड़ितक अनुभव बुझबाक शिक्षा कैँ अपराधी पात्रक आरम्भिक जीवनक जाँचधरि विस्तृत करैत अछि। अध्याय ३८क ‘नामक उच्चारण’ लिखित नामक सत्यापन, गलत अभिलेख आ अपमानक प्रश्न कैँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। अध्याय ३९क ‘बीजक शान्ति’ ई सब सिखल ज्ञान कैँ गामक विद्यालय, बैंक आ सामुदायिक आयोजनक व्यवहारमे पहुँचबैत अछि।

ई क्रम एकहि विचारक पाँच रूप नहि, पाँच तरहक काम अछि : पहुँचब, सुनब, इतिहास समझब, संशोधन करब आ अभ्यास बनायब। एहि क्रियात्मक क्रमक कारण कथा आगाँ बढ़ैत अछि। तर, अलौकिक ‘साँस’क गणना—पाँचम, सातम, आठम, नवम आ दसम—जतय अलग अध्यायमे फेर-फेर आओत, ओतय कथाक समयगत नियम स्पष्ट करबाक अतिरिक्त प्रयत्न चाही। एकरा स्थिर ऐतिहासिक समय-क्रम मानब कठिन; लोकनाट्यक प्रतीकात्मक पारीक रूपमे पढ़ब अधिक उपयुक्त अछि। पूर्ण सम्पादकीय ऑडिटमे एहि पर अलग टिप्पणी आवश्यक रहत।

## देहरी आ दस्तावेजक सम्बन्ध

पहिल तीन अध्यायमे जखन देहरी आ घरक अर्थ खुलैत अछि, तखन एक मौलिक अभिलेखीय प्रश्न उठैत अछि : नाम व्यक्तिक जगह चिन्हबैत अछि कि व्यक्तिक जीवनक सम्बन्ध? बच्चासभक नक्शा सड़कक बदला देहरी चिन्हबैत अछि; गोप कुमारक टिकट, छात्रावासक कागज आ फोटो अपराधीक आरम्भक वस्तु-साक्ष्य बनैत अछि; अध्याय ३८मे सरकारी ‘अज्ञात’क स्थान ‘खोजबाक बाकी’ लिखल जाइत अछि; अध्याय ३९मे बैंकक बाबूक लाल पेंसिलक निशान काजक अगिला चरण बनैत अछि। ई चारि प्रसंग अभिलेखक चारि अलग कार्य देखबैत अछि—खोज, सन्दर्भ, संशोधन आ जाँच।

नव्य न्यायक प्रमाण-विवेक एहि ठाम विशेष उपयोगी अछि। प्रत्यक्ष अनुभव, दस्तावेज, अनुमित सम्बन्ध आ अलौकिक संकेत अलग-अलग ज्ञानरूप छथि। कथा भूतक दृष्टि सँ सत्यक उच्चारण करैत अछि; शोधक वास्तविक दावा करैत समय एहि कथात्मक सत्य कैं साक्ष्यक रूपमे उपस्थित करब उचित नहि। जखन समीक्षा प्रतीकक अर्थ बुझबैत अछि, तखन ओकर आधार साहित्यिक पाठ अछि; जखन आर्थिक अपराध वा न्यायालयक प्रक्रियाक ऐतिहासिक दावा करबाक हो, तखन अतिरिक्त बाह्य प्रमाण चाही। एहि अनुशासनक पालन स्वयं उपन्यासक मूल प्रश्न —ककर नाम सही लिखल जाए—क संग नैतिक रूपसँ संगत अछि।

## पीड़ितक स्वायत्तता आ अपराधीक आत्मबोध

बटुकनाथ सरयू देवीक देहरीपर आमन्त्रण बिना ठाढ़ रहैत अछि; वृद्धा ओकरा भीतर नहि बजबैत छथि। मुन्नाक माय राघवक हाथसँ गमछा वापस खींचि लैत छथि। देविका उज्ज्वलक पत्र मेटएबाक बदला उत्तर चाहैत छली। मीरा निजताक शपथमे अपमानक निषेध जोड़ैत छली। एहि दृश्यसभमे पीड़ित अथवा परिजन केवल दोषी पात्रक नैतिक परिवर्तनक साधन नहि; हुनका प्रवेश रोकबाक, माफी टारबाक, सत्य माँगबाक आ निजी जीवन पर नियन्त्रण राखबाक अधिकार अछि।

पाँच प्रतिपक्षीक बचपन देखाओल जाएब कथा कैँ बहुवाची बनबैत अछि, मुदा एक जोखिम सेहो अछि। अपराधीक दुख पाठकक सहानुभूति पबैत-पबैत पीड़ितक क्षति कैँ पाछाँ धकेलि नहि दे। अध्याय ३७मे मीरा आ सौम्या एहि जोखिम पर स्वतन्त्र आलोचनात्मक सीमा रखैत छथि। व्याख्याक पद्धतिमे इएह सीमा उचित : उत्पत्ति बुझब अपराधक औचित्य नहि।

## अलौकिक आख्यानक पुनरावृत्ति

पात, भीजल कागज, नाम प्रकट करैत परदा, पाँच प्रतिपक्षीक एकसाथ असहजता आ बच्चाक नियम एहि पाँच अध्यायमे लगातार घुरैत अछि। लोककथात्मक आवृत्ति कथा-जगतक संगति बनबैत अछि। मुदा एकहि प्रकारक नैतिक चमत्कार अतिशय प्रयोग भेला पर पात्रक आत्मसंघर्ष पूर्वानुमेय होएबाक खतरा अछि। सबसँ सफल क्षण एहि चमत्कारसँ अलग छोट मानवीय व्यवहारमे छथि—वृद्धाक देहरी, मुन्नाक

मायक गमछा, शमीमक अलग जीवनमार्ग, भोला नटक घरक अधूर पता, आ बैंक बाबूक लाल निशान।

शिल्पमे घरक दृश्य आ वैश्विक व्यापारक दृश्य समानान्तर चलैत अछि। छोट गामक स्थानीय शब्द दूरदेशक औपचारिक भाषणसँ टकराइत अछि। एहि संरचनामे कथाकार इतिहासक एकमुखी आधिकारिक लेखनक स्थान अनेक सामाजिक कण्ठ अनैत छथि। बाख्तिनक संवादधर्मिता आ रिकरक स्मृति-विचार एहि प्रसंगमे उपयोगी ठहरैत अछि, मुदा दृष्टान्तक अर्थ स्वतः सिद्धान्तक सत्यापन नहि।

## गीत आ ‘आब’क समयबोध

पाँच अध्यायक गीतसभ क्रमशः देहरीक घरघुरनी, घर–भय–सपनाक बाल-झूमर, आरम्भक चिन्तन, सही नामक लोकपाठ आ ओसक पराती अपन विषयक लय बनबैत अछि। गीतक लाभ ई अछि जे नाम लिखबाक कार्य केवल अभिलेख-तक सीमित नहि रहैत, ओ सार्वजनिक स्मृतिमे गायल जा सकैत अछि। कखनो-कखनो गीत कथासँ निकलल निष्कर्षकेँ सीधा कहि दैत अछि, जाहिसँ पाठकक स्वतन्त्र व्याख्याक अवकाश कम होइत अछि; तथापि लोकगीतक पुनरावृत्ति उपन्यासक सांगीतिक संरचनाक स्थायी विशेषता अछि।

‘आब’ एहि बैचक कालगत निर्णय अछि। ई अतीत बिसरबाक नहि, अतीतक सही ज्ञान प्राप्त करैत वर्तमानमे काज शुरू करबाक आग्रह अछि। ‘आब’क अर्थ पीड़ितक पक्षमे सुरक्षित काज तुरन्त शुरू करब, मुदा तथ्यक निर्णयमे सावधानी छोड़ेब नहि।

## समेकित मूल्याङ्कन

अध्याय ३५–३९क सर्वाधिक मौलिक उपलब्धि नामकेँ जीवनीक ठोस सम्बन्धमे लौटाएब अछि। मृतकक नामक सम्मान तखने पूर्ण होइत देखाओल गेल अछि जखन घरक चिन्ता, भयक परिस्थिति, अधूर सपना, अपमानक संशोधन आ जीवित समुदायकेँ सावधान करबाक काज एकसंग होइत अछि। मूल पाठ वास्तविक अपराध-जाँचक पुस्तिका नहि; ओ स्मृति, न्याय आ ज्ञानक सम्भावनाक अलौकिक-सामाजिक उपन्यास अछि। एकर कलात्मक शक्तिक सम्मान करैत ओकर प्रमाणगत सीमा, कथाकालक पुनरावृत्ति आ पात्रक नैतिक समानतासँ सेहो चिन्हब आवश्यक अछि।

अन्ततः एहि पाँच अध्यायक संदेश एक प्रचारात्मक नारा नहि, काजक क्रम बनि सामने अबैत अछि : पीड़ितक देहरी पर पहुँचू, ओकर अनुभव सुनू, समाजक आरोप जाँचू, नाम सही राखू, आ शिक्षाकेँ संस्थागत व्यवहारमे उतारू। एहि क्रममे अनन्याक प्रश्न, वृद्धाक अस्वीकार, मायक गमछा आ बैंकक लाल निशान मिलि उपन्यासक नैतिक चेतनाक बहुवचन बनबैत अछि।

# अध्याय ४० — ओसक अक्षर

*नामक अभिलेखसँ वस्तुक जीवन-वृत्त धरि*

## एगारहम साँस : ठहरल खेलक नब अर्थ

दसम साँसक अन्तमे कबड्डीक मैदान स्थिर अछि, मुदा एगारहम साँस ओस पर उतरैत अछि। पातक ‘आब’ शब्द बच्चासभक हथेली भीजबैत अछि आ भीजल हथेलीक छाप कापीमे छोट-छोट केवाड़ी खोलैत अछि। प्रत्येक केवाड़ीक पाछाँ एक नाम, प्रत्येक नामक पाछाँ घर आ प्रत्येक घरक भीतर एक साधारण वस्तु अछि। ई आरम्भ पहिनुक अध्यायसभक नैतिक सूत्रकेँ नव कथात्मक साधन दैत अछि : केवल मृतकक नाम लिखि देब पर्याप्त नहि, ओकर जीवनक दैनिक पदार्थ, परिश्रम, भूख, पारिवारिक प्रतीक्षा आ आर्थिक सम्बन्ध सेहो बुझबाक चाही। ओसक अक्षर एहि कारणे ज्ञानक नवीकरणक रूपक अछि। ओ कोनो स्थायी शिलालेख नहि, भोरक क्षणभंगुर पानि अछि; तइयो ओकर क्षणिकता काज शुरू करबाक आग्रह बनैत अछि।

आन्तरिक कथाकालमे एगारहम साँस दसम साँसक ‘आब’क उत्तर होइत अछि। केवल महत्त्वपूर्ण कथनक पुनरावृत्ति नहि, दृश्यगत स्थानपरिवर्तन सेहो होइत अछि। पहिने उज्ज्वलक फोन, नारिकेल-पात आ नामक पञ्जी एकत्र छल; आब फाटल गमछा, खाली दवाइक शीशी, मोबाइल रिचार्जक कूपन, मजदूरक टिफिन, चाउरक डिब्बा, बस-टिकट आ बैंकक पासबुकक प्रतिलिपि एक सामाजिक अभिलेख बनैत

अछि। वस्तु अपन उपयोग समाप्त भेला पर मूक अवशेष नहि रहैत, ओकरा पढ़निहारक लेल सम्बन्धक प्रश्न बनैत अछि।

## वस्तुक अभिलेख आ साक्ष्यक मर्यादा

अनन्या नामक संग एक वस्तु लिखबाक नियम दैत छली। गोप कुमारक पुरान धारणा—सत्यक सुरक्षा प्रतिलिपि राखलासँ होइत अछि—बदलि ओहि दिशामे जाइत अछि जतय सत्यक साझा सामाजिक उपयोग महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। भोला नटक टिफिन देखैत बच्चा पूछैत छथि जे ओ की खाइत छल। एक बूढ़ी भात, नून आ पियाजक गन्ध मोन करैत छथि। एहि छोट स्मरणक साहित्यिक बल एहि बातमे अछि जे मजदूरक सामाजिक उपस्थिति केवल ओकर मृत्युदिन वा भुगतानक रसीद तक सीमित नहि। भोजनक स्वाद, दैनिक थकान आ घरक सम्बन्ध सेहो ओकर जीवनक सत्य अछि।

मुदा वस्तु मात्रसँ अपराधक कारण-शृंखला निश्चित नहि भऽ जाइत। टिफिन मजदूरक जीवनक चिह्न होएबाक सम्भावना रखैत अछि, ओकर वास्तविक स्वामित्व, प्रयोग, प्राप्तिक स्थान आ घटना-सँ सम्बन्ध स्वतंत्र जाँचक विषय अछि। नव्य न्यायक प्रमाण-विवेकक आलोकमे वस्तुक प्रत्यक्ष अस्तित्व, लोकक स्मरण, अनुमानित सम्बन्ध आ न्यायिक रूपसँ समर्थित निष्कर्ष अलग-अलग स्तर छथि। कथाकार जखन वस्तुक मार्ग पढ़बाक नव अभ्यास अनैत छथि, तखन एहि स्तरसभक अन्तर परखबाक अवसर सेहो खोलैत छथि। वस्तु-जीवनी अन्वेषणक प्रवेशद्वार अछि; पूर्ण प्रमाणक अनिवार्य विकल्प नहि।

## मुन्ना पासवान : नामक मालिक आ खाताक सञ्चालक

मुन्ना पासवानक प्रसंग अध्यायक अत्यन्त सघन सामाजिक दृश्य अछि। बच्चासभ ओकरा ‘म्यूल’ कहि वर्गीकृत नहि करैत, बल्कि खाता ओकर छल अथवा ओकरा ऊपर राखल गेल छल—ई पूछैत अछि। मुन्नाक उत्तर खाता ओकर नामपर होएबाक संग डर दोसराक होएबाक अनुभव स्पष्ट करैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे बैंकखाताक नामधारक स्वतः निर्दोष घोषित भऽ गेल; खाताक वास्तविक उपयोग, स्वीकृति, जानकारी, दबाव आ लेनदेनक क्रम अलग जाँच चाहैत अछि। मुदा आर्थिक अपराधक भाषामे जे व्यक्ति केवल जोखिम-वर्गीकरण बनि जाइत अछि, ओकरा प्रश्नक उत्तर देनिहार मनुष्यक रूपमे वापस अनब एक महत्त्वपूर्ण कथात्मक परिवर्तन अछि।

बैंकक बाबू पहिने तीन संदिग्ध खाता चिन्हने छल, आब चौदह धरि पहुँचैत अछि। ओ चिट्ठी, सतर्कता आ पूछताछक औपचारिक प्रक्रिया अपनबैत अछि; प्रत्येक कागजसँ पहिने ‘लोक देखू’क मानवीय संकेत जोड़ैत अछि। ई दृश्य उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ठोस पायदान अछि। न्यायिक सावधानीक अर्थ संस्थाक नियम छोड़ब नहि, ओहिमे व्यक्ति पर संभावित अन्याय बुझबाक दक्षता जोड़ब अछि। बच्चाक नैतिक प्रश्न आ कर्मचारीक नियमानुकूल काज एक दोसरा पूरक बनैत अछि।

## मीराक इच्छा आ वस्तुक नैतिक स्वामित्व

मीरा अपन मण्डलमे सार्वजनिक स्मृति आ निजी सामग्रीक दुरुपयोग बीच सीमा स्पष्ट करैत छली। जे वस्तु व्यक्ति अपन स्वेच्छासँ साझा करथि, ओ स्मृतिक अंश

भऽ सकैत अछि; भय दिखाबय लेल छीनि लेल गेल वस्तु हिंसाक साधन अछि। एहि भेदक कारण ‘वस्तुक अभिलेख’ सर्वसुलभ संग्रहालय बनेबाक आदेश नहि रहि सहमति-आधारित स्मृति-अभ्यास बनैत अछि। ब्लैकमेल, अन्तरंग सामग्री आ निज पहिचानक प्रश्न उठैत समय कथामे ई शर्त अनिवार्य अछि। भूत हुलासीक समर्थन एहि विचारकेँ लोक-अलौकिक संवेदनाक तह दैत अछि।

ईराक विदेशी सभामे बच्चासभक नाम-वस्तु-पाठ सुनब आ एडवर्ड ब्रूमक मंचपर जंग लागल टिफिनक छवि उभरब दू विरोधी दृश्य छथि। ब्रूमक सभागार वस्तुकेँ आकर्षक प्रस्तुतीकरणक ‘रूपक’ मानि लेब चाहैत अछि, जबकि गामक बच्चा वस्तुक मालिकक नाम बजैत अछि। अन्तर वस्तुक प्रतिमा आ वस्तुक सामाजिक सम्बन्धक अछि। वैश्विक सार्वजनिक नैतिकता जँ ठोस श्रमिकक अनुभवकेँ केवल सजावटी दृश्य बनबैत अछि, तँ भाषणक संरचना भीतर शोषणक आलोचना समाहित भऽ कऽ सेहो निष्प्रभावी होएबाक खतरा रहैत अछि।

## वस्तुक रस्ता : अन्तिम दृश्यक गम्भीरत

एगारहम साँसक उत्तरार्द्धमे पनिडुब्बीक केशसँ जंग लागल कील, टूटल सिम-कार्ड आ सूखल नारिकेल-फूल खसैत अछि। पुल, पर्दा आ गामक तीन अलग संसार एक पातपर रखल जाइत अछि। बच्चा सभ वस्तुक यात्रा कहैत छथि : कील कारखानासँ पुल, पुलसँ पानि, पानिसँ नन्दक कापी; सिम-कार्ड दुकानसँ युवक, युवकसँ ठग, ठगसँ बैंक आ बैंकसँ मुन्नाक लाज। ई रेखाचित्र कथाक नव नैतिक व्याकरण प्रस्तुत करैत अछि—नाम के छल, रस्ता के-के ओकरा संग छल, के छोड़लक, के बेचलक,

के देखलक आ के मौन रहल। एक व्यक्तिक कथा सामाजिक सम्बन्धक जाल बनि जाइत अछि।

ई ठाम उपन्यास दार्शनिक रूपसँ सर्वाधिक सशक्त अछि, मुदा ‘वस्तुक रस्ता’क प्रत्येक चरणकेँ ऐतिहासिक तथ्यक रूपमे प्रस्तुत करबाक पहिने स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक अछि। कथाक चाउर-नूनक नक्शा स्मृतिक चित्र अछि, प्रमाणित स्थल-मानचित्र नहि। सत्यव्रत मेहताक पोटलीमे राखल पदार्थ आ हुनकर प्रश्न एहि सीमा केँ स्पष्ट करैत अछि : लोक वस्तुकेँ सम्बन्ध बनबैत अछि, कानून साक्ष्यक मान्यता देबाक विधि रखैत अछि। दुनूक सम्बन्ध गढ़बाक चुनौती न्यायसम्बन्धी साहित्यक केन्द्रीय प्रश्न बनैत अछि।

## सम्भावित पाठगत निरन्तरता-संकट

एहि अध्यायमे ‘सरयू महतो’क बेटी ‘कमली’ अबैत छली आ अपन पिताक स्मरण करैत छली। पूर्व अध्याय ३८मे ‘सरयू महतो’क स्त्री-मजदूर होएबाक आ सरकारी अभिलेखमे पुरुष लिखल होएबाक कथन अछि; पहिनुक अनेक अध्यायमे ‘सरयू देवी’ नामक स्त्री पात्र सेहो प्रमुख अछि। ई सभ नामक बीच ककर सम्बन्ध अछि, पितृ/मातृ-पहिचान आ मजदूरक विवरण कत्तऽ भिन्न अछि—ई मूल त्रयीक सम्पूर्ण पात्र-पञ्जी बिना निश्चित नहि ठहराओल जाए। वर्तमान समीक्षा एहि बिन्दुकेँ स्रोतगत निरन्तरताक प्रश्न रूपमे सुरक्षित रखैत अछि, न कि अनुमानसँ कथा सुधारैत अछि।

**कलात्मक उपलब्धि आ सीम ।**

एगारहम साँसक लोकगीतमे खुलल हथेली भरोसक बिम्ब अछि। ओसक क्षणिक अक्षर, भीजल कापी, नूनक दाना, टिफिनक दाग आ नामक पात एहि अध्यायक संवेदनशील वस्तुशिल्प रचैत अछि। तथापि चन्द्रपालक परदापर स्वतः बदलैत लिखावट, राघवक सिम-अंकुर आ ब्रूमक मंचक अनपेक्षित छवि सन चमत्कार पहिनुक अध्यायसभसँ पर्याप्त समान अछि; एकर कारण अलौकिक झटका किछु पूर्वानुमेय भऽ जाइत अछि। एकर विपरीत मुन्नाक जवाब, बैंकक बाबूक लाल पेंसिल, मीराक सहमति-आधारित विभाजन आ वस्तुक मार्ग बतबैत बच्चासभक मौन—ई दृश्य अधिक टिकाउ रचनात्मक सामर्थ्य रखैत अछि। अध्याय एक नव प्रश्नपर समाप्त होइत अछि : नामक बाद जीवन, जीवनक बाद रस्ता आ रस्ताक बाद रोकबाक सम्भावित मोड़ केना देखल जाए?

# अध्याय ४१ — नामक नावें

*रस्ताक पुनर्निर्माण आ बचाएबाक सम्भावनावला मोड़*

## नाव : अभिलेखक गतिशील रूपक

अध्याय ४०मे वस्तुक मार्ग पहिचानल गेल छल; अध्याय ४१ एहि मार्गकेँ नदीमे उतरैत नावक रूप दैत अछि। किनारपर राखल नाव तैयार रहि कऽ सेहो उपयोगहीन अछि। स्मृति आ प्रमाणक दू चप्पू तथा बीचमे जीवित आशाक लोकगीतात्मक विन्यास एहि परिवर्तनक रूपरेखा बनबैत अछि। नाम लिखल कागज जँ केवल शेल्फमे बन्द रहय, तखन ओ मृतकक सामाजिक प्रतिष्ठा आ जीवितक सुरक्षासँ स्वतः नहि जुड़त। नाव चलब आवश्यक अछि—अर्थात् स्मृतिकेँ सवाल, सहायता, अभिलेख-जाँच आ रोकथामक ठोस कर्ममे उतारब।

अनन्या माटि साफ करैत छली; बच्चा पानि अनैत अछि, देविका चाउर, मीरा हल्दी, सौम्या नापी-कापीक लाल पेंसिल, ईरा खाली नक्शा आ गोप कुमार पुरान स्मृति-उपकरण। एहि बहुवस्तुगत संयोजनमे कियो एक पात्र सम्पूर्ण सत्यक स्वामी नहि। नावक रूपक एकल महानायकक बदला साझा कर्मक नाटकीय शिल्प बनैत अछि।

## भोला नटक यात्रा : श्रम आ दस्तावेजक अन्तर

चाउरसँ घर, हल्दीसँ खेत, नूनसँ ठेका-शिविर आ पानिसँ पुलक पाया बनैत अछि। भोला नटक नामक कात ‘अनधिकृत’ शब्द काटि ओकर घरसँ श्रमस्थल धरि यात्रा लिखबाक दृश्य भाषिक-ऐतिहासिक पुनर्पाठ अछि। सरकारी प्रविष्टि ककरो मजदूरकेँ

एक प्रशासकीय श्रेणीमे सीमित करैत अछि; गामक लोक ओकर आगमन, श्रम, भोजन आ परिवारक समय पुनर्स्थापित करैत छथि।

मुदा ‘अनधिकृत’ शब्द कत्तऽ आ कोन विधिक सन्दर्भमे लिखल छल, से मूल अभिलेखक जाँच बिना सिद्ध नहि होयत। यदि ई उपन्यासक कल्पित फाइलक शब्द अछि, तखन व्याख्या कथाविश्वक भीतर रहबाक चाही। चाउर, नून आ हल्दीक माटि-नक्शा गामक सामाजिक सत्यक काव्यात्मक मॉडल अछि; स्थल-निर्माणक तकनीकी नापी वा गवाहीक अन्तिम स्वरूप नहि। एहि भेदकेँ स्वीकार करब मूल प्रसंगक महत्त्व घटबैत नहि; उलटा अनुत्तरित प्रश्नसमेत संरक्षण करैत अछि।

## सरयू महतो आ उज्ज्वल : दू प्रकारक रस्ता ।

सरयू महतोक मार्ग टिफिन, ठेकेदारक गोदाम, मजदूर-लाइन, पुलक बामा पाया आ पानिक दाग धरि पहुँचैत अछि। बूढ़क वाक्यमे सरयू पायासँ नहि, ‘गिनती सँ खसल’। एहि रूपकक केन्द्र व्यक्तिक सामाजिक अस्तित्वकेँ मजदूरक संख्या-मात्रमे बदलबाक हिंसा अछि। मुदा प्रसंगगत पहिचानक जाँच—अध्याय ३८ आ ४०मे सरयू महतोक लिंग आ पारिवारिक विवरणक असंगति—एतयो आवश्यक अछि; नामक सही रस्ता बनबैत काल पात्रक पहिचान स्वयंसिद्ध नहि मानल जाए।

उज्ज्वलक मार्ग नदी वा पुलक नहि—घर, विद्यालय, मोबाइल दुकान, पहिल जीत, ऋण, डिजिटल गिरफ्तारीक धमकी आ छत धरि अछि। एक जीवनक पतन-क्रम अत्यन्त कम वस्तुमे संरचित भेल अछि। एहि क्रममे पारिवारिक शोककेँ निजी गलतीक सरल बोध बनएबाक बदला छलक विभिन्न चरण आ डरसँ निर्मित नियन्त्रण देखाओल गेल अछि। बच्चा सभक चुप्पी दृश्यकेँ उपदेशसँ बचबैत अछि।

सामाजिक जाँचक दृष्टिसँ प्रत्येक चरणक अलग समय, सन्देश, लेनदेन आ साक्ष्य आवश्यक होयत; मुदा कथा एहि चरणसभक नैतिक परस्परता देखबैत अछि।

## मुन्नाक तीन कटोरी : वित्तीय पहिचानक विखण्डन

निशांत नाम, खाता आ डरक तीन कटोरी राखैत अछि। मुन्ना क्रमशः अपन नाम आ खाता स्वीकार करैत अछि, मुदा डरक विषयमे कहैत अछि जे ओ ओकर अपना सँ नहि, ओकरा देल गेल छल। ई कथन भयकेँ अपराध-जालक स्थानान्तरित साधन रूपमे देखबैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे खाताधारकक प्रत्येक क्रिया दबावमे भऽ गेल—से जाँचबाक विषय अछि—मुदा सामाजिक भय, धमकी आ आर्थिक निर्भरता अलग समझल जाएबाक चाही।

‘डर हस्तान्तरित सम्पत्ति’क सूत्र साहित्यिक रूपक अछि, विधिक सम्पत्तिक परिभाषा नहि। एहन सावधानी नव्य न्यायक दृष्टिसँ उपयोगी अछि; नामधारिता, व्यवहारिक नियन्त्रण, जानकार सहमति आ धमकीक अनुमानक भेद स्थापित भेला परे कारणक शृंखला स्पष्ट होइत अछि।

## मीराक निजताक रस्ता

मीरा बुझबैत छली जे अन्तरंग फोटो वा सन्देश विश्वासमे ककरा देल गेल, ओ ककर फोन, सर्वर, धमकी आ मौन धरि पहुँचल—ई मार्ग परखबाक चाही। एहि प्रश्नमे डिजिटल उत्पीड़नक वास्तविक नैतिक संरचना छिपल अछि। विश्वासक दुरुपयोग पीड़ितक प्रेमकेँ दोष सिद्ध नहि करैत; सूचना लऽ कऽ ओकर गैरसहमतिक प्रसार करएबलाक काजकेँ परीक्षाक केन्द्र बनबैत अछि। सौम्याक लोकभाषाक अनुवाद

पीड़ितक अपमान कम करबाक प्रयास अछि। मुदा सुरक्षित अनुसन्धानमे गोपनीय जानकारीक सीमित पहुँच, सहमति आ प्रतिलिपिक नियन्त्रणक कठोर आवश्यकता रहैत अछि। ‘रस्ता’ खोजबाक नामपर निजी सामग्री फेर सार्वजनिक नहि होय—ई मूल अध्याय २१ सँ उठल नैतिक शर्त एतयो लागू अछि।

## अधूर रस्ताक गरिम ।

एक वृद्धा अपन पुत्रक पुलक दुर्घटनाधरि पूरा यात्रा नहि मोन कऽ पबैत छथि; हुनका केवल ‘भादवक सोम’ स्मरण अछि। अनन्या एहि एक संकेतकेँ माटिमे दर्ज करैत छली। गोप कुमार अज्ञात रस्ताक लेल खाली स्थान छोड़ैत अछि, आ हुलासी कहैत छली जे प्रत्येक कथा तुरन्त नहि बजैत। एहि दृश्यसभमे उपन्यास शिल्पगत रूपसँ अतिशय परिपक्व अछि। स्मृतिक नैतिकता कोनो मूल्यपर रिक्त स्थान भरब नहि, जे अंश पक्का भेटल अछि ओकरा चिह्नित करब आ बाकीकेँ बाकी मानब अछि।

नव्य न्यायक प्रमाण-विवेकमे अपूर्ण साक्ष्य अनिवार्य रूपसँ असत्य नहि, मुदा ओहि अपूर्णतासँ निश्चित निष्कर्ष काढ़ब सेहो उचित नहि। अदालतक सन्देहक मानक आ समुदायक करुणापूर्ण सुनवाई अलग उद्देश्य निभबैत अछि। पाठ एहि दुनू केँ अलग राखबाक माँग करैत अछि। सत्यव्रत मेहताक ‘अधूरा रस्ता सेहो रस्ता’क टिप्पणी मानवीय अर्थमे महत्त्वपूर्ण अछि; ओकरा विधिक कारण-सिद्धान्तक सम्पूर्ण पुनर्स्थापन नहि मानब।

### ‘कोन मोड़ पर बचाओल जा सकैत छल?’

अध्यायक अन्तिम तिहाइमे मार्ग-पठन निर्णायक प्रश्नमे बदलैत अछि। भोला नटक रस्तामे सुरक्षा-बेल्ट, सरयूक रस्तामे सही गिनती, उज्ज्वलक प्रथम धमकीपर सामूहिक सहायता, मुन्नाक बैंकखातापर प्रश्न आ मीराक निजी विश्वासक रक्षा—ई सभ संभावित मोड़ छथि। एहि बिन्दुपर कथा मृतकक उपरान्त स्मरणसँ भविष्यक दुर्घटना वा अपराध रोकबाक सम्भावना दिस बढ़ैत अछि।

मुदा ‘प्रत्येक मृत्यु वा प्रत्येक अपराध अवश्य कोनो एक व्यक्ति रोकि सकैत छल’—ई सामान्य नैतिक दावा प्रमाणातीत भऽ सकैत अछि। परिस्थिति, अधिकार, जोखिम, जानकारी, तकनीकी सीमा आ उपलब्ध सहायता भिन्न-भिन्न होइत अछि। जँ अपराध रोकल नहि गेल तँ सम्पूर्ण दोष स्वतः चुप रहल प्रत्येक दर्शक पर नहि पड़ैत। एहि प्रसंगक व्याख्या दोष-स्थानान्तरण नहि, रोकथामक सम्भावना प्रश्नाकुल करबाक साधनक रूपमे अधिक उचित अछि। उपन्यासक भीतर पाँच प्रतिपक्षीक सामने जे मोड़ घुरैत अछि, ओ हुनकर कथित निर्णयक नैतिक परीक्षण अछि, बाहरी अपराध-दोषक अंतिम निर्णय नहि।

## शिल्पगत मूल्याङ्कन

नामक नावक लोकधुन, पदार्थक माटि-नक्शा, तीन कटोरी आ खाली स्थान अध्यायक विशेष उपलब्धि छथि। ब्रूमक मंचपर टिफिनक खनखनाहट श्रमिकक भोजन-समय कैँ वैश्विक नैतिक भाषणक भीतर प्रवेश करबैत अछि। ईरा द्वारा मंचक प्रश्नोत्तरक बदला लगातार लिखबाक निर्णय स्मृतिक दीर्घकालिक कार्यकैँ प्रतिष्ठाक

क्षणिक उत्तर सँ अलग करैत अछि। मुदा प्रतिपक्षीक कम्प्यूटरमे जादुई वस्तु प्रकट होएब आ सभक निजी मोनपर समान दबाव पढ़ब कथा कैं कखनो योजनाबद्ध बना दैत अछि।

बारहम साँस ‘भार उठू’क अगिला निर्देशपर ठहरैत अछि। एहि संक्रमणक शक्ति ई अछि जे ज्ञान सार्वजनिक काज बनबैक बाद सवाल उठैत अछि—क्षतिक भार ककर, आ ओ कतेक ठाम बाँटल जाय? एहि प्रश्नक उत्तर नहि देल जाएत; अगिला अध्यायक लिये रखल जाएत।

# अध्याय ४२ — भारक वृत्त

*दण्डक आदेश, साझा दायित्व आ स्मृतिक क्रियात्मक रूप*

## तेरहम साँस : दण्ड आ भारक अर्थभेद

अध्याय ४१क अन्तिम ओस ‘भार उठू’ कहैत अछि। अध्याय ४२क आरम्भमे बूढ़बा भूत दण्ड आ भार बीच एक विचारोत्तेजक भेद रखैत छथि : दण्ड ऊपरसँ देल जा सकैत अछि, भार भीतरसँ कन्हापर चढ़ैत अछि। ई उपन्यासक न्यायसम्बन्धी विमर्शक महत्वपूर्ण मोड़ अछि। पहिने न्यायालयक आदेश आ प्रतिपक्षीक मन:संकट एक-दोसराक विरुद्ध ठाढ़ छल; आब कथा सामाजिक उत्तरदायित्वक अनेक रूपक परीक्षा करैत अछि। अपराधक विधिक दण्ड, पीड़ितक पुनर्वास, सामुदायिक सहायता आ व्यक्तिगत पछतावा एकहि बात नहि। ‘भार’क रूपक एहि सभकेँ जोड़बाक प्रयत्न करैत अछि, मुदा एकर भीतर अन्तर सभ बचाएब आवश्यक अछि।

अनन्या दू वृत्त खींचैत छली—‘जिनका पर अपराध भेल’ आ ‘जिनका द्वारा अपराध भेल’। तेसर पातल वृत्त ओ लोकक अछि जिनका सभ देखल आ चुप रहलाह। ई तेसर वृत्तक समावेश सामाजिक नैतिकताक दायरा बढ़बैत अछि। अन्याय केवल प्रत्यक्ष कर्ताक काजसँ नहि, संस्थाक उदासीनता, सूचना-दमन आ समर्थ लोकक मौनसँ सेहो दीर्घ होइत अछि। मुदा सभ मौन समान दोष नहि। ककरो भय, निर्भरता, जानकारीक सीमा वा हस्तक्षेपक असमर्थता अलग होइत अछि। एहि कारण तेसर वृत्त भावात्मक आरोपक सरल सूची नहि, प्रश्न पूछबाक आरम्भ होयबाक चाही।

## भोला नटक टिफिन आ मुन्नाक कन्ह ।

भोला नटक खाली टिफिन मुन्ना पासवान उठबैत अछि; हलुक लोहेक वस्तु ओकर हाथमे अत्यन्त भारी अनुभव होइत अछि। टिफिनमे अधूर मजदूरी, भूख आ दुर्घटनाक स्मृति भरल अछि। ई अलौकिक भार सामाजिक ऋणक रूपक अछि। देविका मुन्नाकेँ कहैत छली जे ई ओकर अपराध नहि, मुदा समाजक एक दायित्व अछि। एहि वाक्यमे पीड़ितक सामाजिक सहयोग आ दोषारोपण बीच महत्त्वपूर्ण सीमा स्थापित होइत अछि।

मुन्नाक अपन बैंक-खाताक अनुभवक संग टिफिन उठब एक नब पहिचान गढ़ैत अछि। जकर नाम आर्थिक अपराधक वर्गीकरणमे फँसल छल, ओकर हाथ आब भोजन-सुरक्षाक काजमे सहभागी अछि। तथापि सामूहिक काममे भाग लेबासँ मुन्नाक पुरान खातासम्बन्धी तथ्य स्वतः बदलि नहि जाइत; ओ अलग जाँचक विषय अछि। लोकसहभागिता ओकर सामाजिक गरिमाक अधिकार पुनः स्थापित करैत अछि, अनिवार्य न्यायिक निर्णय नहि।

टिफिनसँ अन्न-सूची बनएबाक निर्णय साहित्यिक प्रतीककेँ नीति-सदृश कार्यमे बदलैत अछि। जे परिवार अभावक कारण जोखिमयुक्त मजदूरीक लेल बाहर जाइत अछि, तिनकर भोजनक सुनिश्चितता पर समुदाय काज शुरू करए—ई रचनाक सकारात्मक आकाङ्क्षा अछि। मुदा गामक अन्न-सूचीक वास्तविक सञ्चालन, सामुदायिक संसाधन आ अधिकारक वितरणक व्यावहारिकता कथा विस्तारसँ नहि खोलैत। एहि अपूर्णताक उल्लेख मूल विचारक मूल्य कम नहि करैत; ओकर यथार्थवादी पूर्तिक कठिनाइ चिन्हबैत अछि।

## बटुकनाथक भारी फाइल : स्थगित समयक स्मारक

बटुकनाथ जीतक आदेशक फाइल उठए चाहैत अछि, मुदा कागजक भार असम्भव भऽ जाइत अछि। फाइलमे स्थगनक समय, विधवाक वृद्धावस्था आ मजदूरक सन्तानक पितृहीन जवान होएब जमा भेल अछि। कानूनक तराजूक स्थान कन्हाक बिम्ब लेब एक सूक्ष्म अर्थविपर्यय अछि। तराजू निर्णयक निष्पक्षताक प्रतीक होइत अछि; कन्हा अन्यायसँ उपजल जीवित भारक। दुनूक बीच विरोध अनिवार्य नहि; निष्पक्ष निर्णय तथा क्षतिक अनुभव एकहि न्यायप्रक्रियाक अलग आवश्यक पक्ष भऽ सकैत अछि।

फाइल न उठब ककरो विधिक दोषसिद्धिक स्वतः प्रमाण नहि। ई पात्रक भीतरक नाटकीय अनुभूति अछि। तथापि कागजक भाषा आ लोकक जीवन-समय बीच जे दूरी पहिनुक अध्यायसभमे छल, ओ एतय दृष्यमान भऽ उठैत अछि। बटुकनाथ अपन पेशागत कुशलताकेँ स्थगनक कला मानैत छल; फाइलक भार ओकरा ओहि समयक मानव-लागत पढ़बय बाध्य करैत अछि।

## चन्द्रपालक ईंट, राघवक पाथर-पात

चन्द्रपालक परदामे नामलिखल खाते ईंट बनैत अछि आ टेबुलपर खसैत अछि। डिजिटल लेनदेनक अदृश्य प्रभावक दृश्यात्मक भार एहि रचनाक कला अछि। ‘म्यूल’ कहि सीमित कएल व्यक्ति ककरो घरक सदस्य अछि; ओकर खाता जेना ईंट बनि देहपर पड़ैत अछि, तहिना अर्थव्यवस्थामे परोक्ष जोखिमक एक माप होइत अछि। तथापि नामक सूचीमे जिनकर प्रवेश अछि तिनकर आपराधिक संलग्नता

समान नहि। कथा कल्पनात्मक दृश्य उत्पन्न करैत अछि, पर जाँच-पद्धति तैयार नहि करैत।

राघवक मेटाइत सन्देशसभ पाथरक पात होइत अछि। ओ जे विनती पढ़ि फोन काटि देने छल, ‘देखल’ शब्दक भार ओकरा सामने अबैत अछि। एहि रूपान्तरणमे एक खास आधुनिक अनुभव साहित्य बनैत अछि : सन्देशक उत्तर न देब केवल तटस्थ संचार-प्रक्रिया नहि, किछु सन्दर्भमे शक्तिक प्रयोग सेहो भऽ सकैत अछि। मुदा कोनो व्यक्तिक ‘देखल’ संकेतकेँ स्वतः अपराधमे सहभागिताक प्रमाण मानब नहि चाही। अध्यायक नैतिक उद्देश्यानुसार सन्दर्भक व्याख्या आवश्यक अछि।

## लाउक पुनर्गठन आ ब्रूमक छविव्यवसाय

लाउ किन-हंगक सलाहकार कम्पनीक नाम बदलब, पुनर्गठन आ जोखिम-हस्तान्तरणक विचार लैत छथि। कागजपर नूनक घेरा बनैत अछि। लाभक औपचारिक स्थानान्तरणसँ नैतिक उत्तरदायित्व मेटाएब कठिन—ई अध्यायक केन्द्रीय आरोप-प्रश्न अछि। व्यावसायिक पुनर्गठन अपने-आप अनैतिक नहि, मुदा पूर्वक काजक असल दायित्वसँ भागबाक साधन बनत तँ सामाजिक आलोचना आवश्यक होयत।

ब्रूमक जनसम्पर्क-समूह सहानुभूतिक छवि बनाबए चाहैत अछि—बच्चा, गाम, स्त्री, पात, पुल। ईराक टिप्पणी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि : भारकेँ छविमे बदलि बेचब दोसर व्यापार भऽ सकैत अछि। वास्तविक सहायता, दस्तावेजक खुलापन आ संस्थागत सुधारक बदला भावनात्मक तस्वीर उपयोग करब नैतिक नाट्यक

विडम्बना अछि। एहि ठाम उपन्यास प्रतिष्ठित भाषण आ लोकक जीवनमूल्यक बीचक पुरान टकराव नव रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

## समुदायक आत्मपरीक्षा : दोष स्वीकार नहि, हिस्सा बुझब

गोप कुमार, रमैय्या, सौम्या, मीरा आ देविका अपन-अपन व्यवहारक सीमाक उल्लेख करैत छथि। गोप फाइलकेँ जीवनसँ बेसी प्राथमिकता देबाक, रमैय्या मौन रहबाक, सौम्या दस्तावेजक भाषा देर सँ पहुँचेबाक, मीरा पीड़ितक भाषा पहिने नहि सुनबाक, देविका उज्ज्वलक डर पहचानबामे चूकबाक अनुभव कहैत छली। एहि स्वीकारसभक साहित्यिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे नैतिकता केवल बाहरी अपराधीकेँ दोष देबाक भाषा नहि रहैत; समुदायक स्नेहशील सदस्य सेहो अपन देखबाक सीमाक परीक्षा करैत छथि।

मुदा देविकाक पूर्व अनुभवकेँ उज्ज्वलक मृत्युक विधिक कारणक रूपमे नहि पढ़ल जाए। शोकग्रस्त परिजन प्रायः अपन प्रतिक्रिया पर पुनर्विचार करैत छथि; एहि पुनर्विचारकेँ उनकर दोषसिद्धि मानब अन्यायपूर्ण होयत। सामुदायिक आत्मचिन्तन आ अपराधक जिम्मेवारीक स्तर समान नहि। एहि भेदकेँ सम्मान देब समीक्षा लेल आवश्यक अछि।

## ‘स्मारक ओ जे काज करए’

अध्यायक दोसर चरणमे वस्तुसभ काज बनैत अछि। टिफिन अन्नसूची, हेलमेट सुरक्षा-संकल्प, सिम डिजिटल ठगी चिन्हबाक पाठ, पासबुक वित्तीय सतर्कता, शीशी दवाइ-जाँच, खड़िया प्रश्न-पाठ बनैत अछि। ई ‘क्रियात्मक स्मारक’क

अवधारणा रचनाक सबसँ महत्त्वपूर्ण मौलिक सूत्रसभमे अछि। मृतकक नामक माला वा स्थिर मूर्तिक अतिरिक्त जीवित लोकक हितमे नियमित कर्म होएब स्मरणक एक भिन्न रूप अछि। हुलासीक उपस्थितिमे एक युवती दोसरा युवतीक संग थाना जाएबाक तैयारी करैत छली—एहि दृश्यसँ डर मेटबाक असम्भव प्रतिज्ञाक बदला सहारा पाबय योग्य व्यवहार सामने अबैत अछि।

गोप कुमार पुरान ईशान दत्तक टिप्पणी पढैत अछि जे भारकेँ केवल उजागर नहि, गन्तव्य सेहो दिअ। एहि कथनमे लेखकीय आलोचनाक सामग्री अछि : डेटा प्रकाशित करब, रोष उत्पन्न करब आ सहायता पहुँचेबाक बीच व्यवस्था चाही। ककरा सूचना देल जायत, ककर सहमति सँ, कोन भाषा मे, आ कतेक सहायता भेटत—ई प्रश्न संस्थागत व्यवस्थाक मुख्य भाग अछि। कथा दिशा देखबैत अछि; पूरा व्यवस्था तैयार नहि करैत।

## उपलब्धि आ पुनरावृत्तिक सीम ।

तेरहम साँसक श्रम-झूमर ‘असगरे उठाएब दण्ड, बाँटि उठाएब न्याय’क ध्वनि रचैत अछि। कन्हापर भार आ समान श्रमक ताल काव्यात्मक दृश्य गढ़ैत अछि। मुदा भार बाँटबाक नैतिक विचार लेल अपराधी, राज्य आ समुदायक अलग-अलग अधिकार आ दायित्व स्पष्ट सीमारेखासहित रखबाक चाही। अन्यथा अपराधीक भार पीड़ित अथवा गरीब समुदाय पर दोबारा पड़बाक जोखिम रहत। कथा जखन वस्तुसभकेँ सामाजिक उपयोगमे बदलैत अछि, तखन ओकर रचनात्मक विश्वास अधिक प्रबल अछि; जखन पाँचू प्रतिपक्षीक परदापर एकहि प्रकारक जादुई वाक्य प्रकट होइत अछि, तखन अनुभव अपेक्षाकृत पूर्वानुमेय बनैत अछि।

समग्रतः ई अध्याय न्यायकेँ केवल दण्ड नहि, जिम्मेवारीक क्रिया बनबैत अछि; एकर नैतिक सफलता ओहि दृश्यसभमे अछि जतय पीड़ितक स्वायत्तता सुरक्षित राखि जीवित समाजक हाथमे काज सौंपल जाइत अछि।

# अध्याय ४३ — चलैत भार

*जिम्मेवारीक घरोघरी यात्रा आ पीढ़ीगत प्रश्नक पूर्वपीठिक।*

## स्थिर भारसँ चलैत दूत धरि

तेरहम साँसक अन्तमे भार घर-घर पहुँचबाक घोषणा कएने छल। अध्याय ४३मे भार बाँटलासँ समाप्त नहि होइत—ओ चलए लगैत अछि। चन्ना गाछीक वस्तु, पात आ नाम आब केवल गाछीक गोलक भीतर रहबाक बदला पाँच प्रतिपक्षीक व्यक्तिगत घरधरि पहुँचैत अछि। एहि परिवर्तनसँ लोक-अलौकिक कथा अपन भौगोलिक विस्तारक नब चरणमे प्रवेश करैत अछि। पहिले विश्वविद्यालय, बैंक, न्यायालय आ दफ्तर जकाँ सार्वजनिक संस्थासभ पर प्रश्न छल; आब देहरीक भीतर परिवार, पत्नी, माय आ सन्तान प्रश्नक स्रोत बनैत छथि।

बा अनन्याकेँ कहैत छली जे नाम मृतकक घर पहुँचल, आब नाम मेटएबाक अभ्यास रखने व्यक्तिक घर पहुँचेबाक समय अछि। एहि वाक्यसँ आलोचनाक नजरि बदलैत अछि। सामाजिक अनाचारक स्थायी संरक्षण बहुत बेर निजी जीवनक सुरक्षित दीवालसँ सेहो बनैत अछि; सार्वजनिक भाषण आ पारिवारिक सम्बन्धक विरोधाभास पात्रक नैतिक अन्तर उजागर करैत अछि।

## बटुकनाथक डिग्री आ मायक ‘बटुक’

बटुकनाथक दीवालपर टांगल विधिक डिग्रीक काँच धुँधल पड़ैत अछि, आ अक्षरक स्थान भोला नट, सरयू, मुन्ना आ उज्ज्वलक नाम उभरैत अछि। शीशा ओकर अर्जित

पद आ पेशागत पहचानक दृष्यमान सतह अछि। ओ सतह पोंछैत अछि, नाम हटि जाइत अछि, मुदा भीतरक दरारि बचि रहैत अछि। एहि चमत्कारक बाद मायक मुँहसँ बाल्यकालक पुकारू नाम ‘बटुक’ निकलैत अछि। माँक सवाल ओकर कमायल विजयक नैतिक मूल पूछैत अछि।

डिग्रीक वैधता आ पात्रक अन्तःकरण एक अलग विषय अछि। व्यावसायिक शिक्षा व्यक्तिक बौद्धिक योग्यता आ अधिकार-प्राप्ति सिद्ध कऽ सकैत अछि; ओकरा लोकक अनुभव स्वतः नैतिक निश्चिन्तता नहि दैत। मायक ‘बटुक’ पुकार ओकर पदवीक बाहरी औपचारिकताक पाछाँक बालक उपस्थित करैत अछि। ई अध्याय ३७मे पिताक नाम-पर्ची आ प्रारम्भिक जीवनक आलोचनात्मक सूत्र सँ जुड़ैत अछि, मुदा एतय माता जीवनक अन्तिम चरणमे आवाजक माध्यमसँ प्रश्न लौटा रहल छथि।

## चन्द्रपालक बेटा : कमाइक घरक भीतरक रिक्तत ।

चन्द्रपाल बत्राक बेटा अपन पिताक व्यवसायसँ दूरी रखबाक दावा करैत अछि, मुदा ओ स्वयं ओहि कमाइ सँ निर्मित मकानक निवासी अछि। मोबाइलपर देखल असाधारण प्रश्न, उज्ज्वल सन युवकक स्वप्न आ पिताक लाभमे मृत्युक गन्धक अनुभव एहि पात्रकेँ केवल निष्क्रिय उत्तराधिकारी रहबासँ रोकैत अछि। चन्द्रपाल पुत्रक फोन छीनि अपन प्रभाव फिर स्थापित करए चाहैत अछि, मुदा प्रश्न पुत्रक मोनमे उपस्थित भऽ गेल अछि।

एहि दृश्यकेँ पिता-कृत अपराधक स्वतः पुत्रपर आरोपक रूपमे नहि पढ़ब उचित। उत्तराधिकारक लाभ, पारिवारिक सुविधा आ व्यक्तिक अलग नैतिक चुनाव भिन्न

छथि। पुत्रक प्रश्न सामाजिक स्थिति पर विचारक आरम्भ अछि; उन्मुक्ति वा दोषसिद्धिक अन्तिम घोषणा नहि। अध्याय एही सम्बन्धक मानसिक कठिनाइ समक्ष अनैत अछि।

## राघवक पत्नी आ भोजनक मौन

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक घरक भातक दाना ‘खाता बन्द’क अक्षर बनैत अछि। पत्नी घरेलू खर्चक खाता पूछैत छली, मुदा राघव उत्तर नहि दैत अछि। डिजिटल गोपनीयताक अभ्यास जे कार्यस्थलपर योजनाबद्ध छल, ओहि प्रकारक चुप्पी घरेलू सम्बन्धमे संक्रमित भऽ गेल अछि। भातक दाना साधारण घरक वस्तु अछि; ओकरा अपराधक खातासँ जोड़ब कथाक अलौकिक प्रतिन्यासक प्रभावी उदाहरण अछि।

एक महत्वपूर्ण निरन्तरता-प्रश्न एतय उठैत अछि। अध्याय ३७मे राघवक पत्नी ओकरा छोड़ि चुकली—एहन वर्णन भेटैत अछि; अध्याय ४३मे पत्नी भोजन परसैत उपस्थित छथि। ई अलग कालखण्डक दृश्य अछि, स्वप्नक दृश्य अछि, अथवा पात्रगत प्रस्तुतिक असंगति—मूल पाण्डुलिपिक काल-सङ्केत परखने बिना निश्चित नहि कहल जाए। आलोचनामे एकरा चिह्नित करब चाही; स्वयं दृश्यकेँ चुपचाप बदलि देब पाठनिष्ठता विरुद्ध होयत।

## लाउक नक्शा आ दहिन हाथक काँप

लाउ किन-हंग स्वयं दूर देशक काँचघरमे सुतैत अछि, मुदा अपन सचिवसँ गढ़ नारिकेलक स्थान शोधए कहैत अछि। नक्शामे छोट गामक बिन्दु चमकैत अछि, आ करोड़क हस्ताक्षर करएबला हाथ काँपैत अछि। एहि दृश्यक विषय आर्थिक मापक

भाषा आ लोकस्मृतिक नैतिक निकटताक अन्तर अछि। आर्थिक शक्ति स्थानक दूरी रखि काज करबाक सुविधा देइत अछि; कथा ओहि दूरीकेँ सपनाक माध्यमसँ मेटबैत अछि। मुदा नक्शापर बिन्दुक चमक वास्तविक वित्तीय सम्बन्धक प्रमाण नहि—ई प्रतीकात्मक कथाभाषा अछि।

## लोकसमुदायक काज आ प्रतिपक्षीक भय

गढ़ नारिकेलक लोक प्रतिपक्षीक सपनाक समाचार नहि जनैत छथि। देविका ठगी चिन्हबाक शिक्षा, निशांत सावधान वित्तीय प्रश्न, मीरा निजताक सहमति, सौम्या बहुभाषिक दस्तावेज-पाठ, ईरा विद्यार्थीसभक नाम-पाठ, गोप कुमारक अभिलेखीय काज आ आरुणिक लेखन जारी अछि। ई विरोधाभास अध्यायक प्रभावशाली पक्ष अछि। अपराधी भयक संसारमे, गाम निर्माणक संसारमे। समुदाय अपन सफलता अपराधीकेँ डेराएब सँ नहि, काममे टिकब सँ मापैत अछि।

सौम्याक दस्तावेजकेँ मैथिली, हिन्दी, बांग्ला, ओड़िया, तमिल, तेलुगू आ उर्दूमे उपलब्ध करएबाक योजना भाषिक न्यायक महत्त्वपूर्ण विस्तार अछि। मुदा मूल उद्धरण आ अनुवादक भेद, तकनीकी अर्थक सटीकता तथा दस्तावेजक विश्वसनीयता सभ भाषामे समान रूपसँ जाँचबाक चाही। जनता द्वारा सुगमतासँ बुझल जाएब सत्यापनक अनुशासनक विकल्प नहि, ओकर आवश्यक सहचर अछि।

गोप कुमारक अनिश्चित उपस्थिति साहित्यिक उपकरणक रूपमे ध्यानाकर्षक अछि। लोकक बीच ओ नुकायल, मरि गेल वा छाहमे बसल—एहन अलग-अलग गप फैलैत अछि; तथापि नब फाइलमे ओकर लेखनक चिन्ह भेटैत अछि। ई अस्पष्टता चरित्रकेँ अर्ध-लोककथा बनबैत अछि। मुदा उपन्यासक प्रमाणवादी ध्येयक दृष्टिसँ अफवाह,

प्रत्यक्ष उपस्थिति आ दस्तावेजमे लेखनक लेखकत्व अलग करबाक अपेक्षा रहैत अछि। हुनकर रूपकात्मक सर्वव्यापकता आ वास्तविक घटनामे हुनकर सहभागिताक सीमा एक नहि।

## भूतसभक दिउसा उपस्थितिक शिल्प

भूत जे पहिने केवल रातिक खेलमे उपस्थित छलाह, आब दुपहरियामे बच्चासभक काज देखैत छथि। लोथ पात उठबैत अछि, राकश लिखबाक इजोत दैत अछि, प्रेत पन्ना थामैत अछि। एहि दृश्यसँ अलौकिक संसारक कार्य बदलैत अछि। भूत भयक प्रदर्शन करएबला पात्र नहि, जीवित लोकक स्मृतिक सहाय बनैत छथि। अध्याय २४क खेलक भूमिकापरिवर्तनक ई अगिला चरण अछि। तइयो एकर निरन्तर विस्तार चमत्कारक स्वतंत्र आश्चर्य कम कऽ सकैत; लोकजीवनक ठोस छोट दृश्य एहि चमकक समानान्तर अधिक आवश्यक बनैत अछि।

## ‘जीत’ नहि, ‘काज’

बा द्वारा अनन्याक ‘जीति गेलौं?’ प्रश्नक उत्तर एहि अध्यायक दार्शनिक केन्द्र अछि। जीतक घोषणा प्रतिपक्षी सत्ता कैं नवीन रूपेँ उभारि सकैत अछि; निरन्तर काजक सामर्थ्य ओहि घोषणासँ भिन्न अछि। बा जितबाक शब्दपर सतर्कता रखैत छली आ पातपर ‘काज’ लिखए कहैत छली। आरुणि अन्तिम पंक्ति लिखबामे रुकैत अछि, कारण कथा घर-घर प्रवेश कऽ रहल अछि। ई आत्मसन्दर्भात्मक दृश्य उपन्यासक शिल्पगत ध्येय स्पष्ट करैत अछि : पुस्तकक अध्याय समाप्त भऽ सकैत अछि, सामाजिक काजक अन्त नहि।

बटगबनी गीतक भार-परिवहन आ घरेलू वस्तुक क्रिया लोकसम्बन्धक लय अनैत अछि। मुदा अध्यायक सीमामे फिर प्रतिपक्षीक चारू घरमे समान समयपर अलौकिक संकेतक आवृत्ति अछि। जे क्षण पात्रक निजी सम्बन्धक भिन्नता देखबैत अछि—मायक पुकार, बेटाक प्रश्न, पत्नीक भोजन, सचिवक नक्शा—ओ विशेष रूपसँ प्रभावकारी अछि। अगिला अध्यायमे एहि घरेलू प्रश्नक नब पीढ़ी द्वारा तीव्र परीक्षण होएबाक संकेत एतय स्पष्ट बनि जाइत अछि।

# अध्याय ४४ — पोतीक कापी

*सन्तानक प्रश्न, पारिवारिक उत्तराधिकार आ ‘ककर’क नैतिक व्याकरण।*

## पन्द्रहम साँस : भयक प्रवेशक नब रस्ता।

अध्याय ४३मे भार प्रतिपक्षी पात्रक घरधरि पहुँचैत अछि; अध्याय ४४मे ओ भार परिवारक सन्तान द्वारा पूछल प्रश्न बनि जाइत अछि। डरक पानिसँ तुलना एहि अध्यायक आरम्भिक कल्पना अछि। देबाल भेटलापर पानि दरार ताकैत अछि; प्रतिरोधक अन्य रस्ता नहि भेटला पर पोतीक कापीमे उतरि जाइत अछि। एहि बिम्बक अर्थ केवल ई नहि जे अपराधीक घरमे भय पसरि गेल; गुप्त रूपसँ सञ्चालित नैतिक प्रश्न परिवारक अगिला पीढ़ीक भाषा प्राप्त करैत अछि।

बटुकनाथक सात वर्षक पोती कानून, बारक मर्यादा वा अपीलक औपचारिक तर्क नहि बुझैत छली। मुदा ओ चित्र बनबैत छली। ओकर कापीमे चन्ना गाछी, कारी-उज्जर लोक, लोथ आ गाछीक बाहरे ठाढ़ बूढ़ व्यक्ति प्रकट होइत अछि। बच्चीक प्रश्न—जीत प्राप्त करएबला लोक खेलक बाहर किएक ठाढ़ अछि—बटुकनाथक समस्त पेशागत आत्मछविक परीक्षा बनैत अछि। कानूनी सफलता आ सामुदायिक स्वीकृतिक बीच जे अन्तर उपन्यासक पूर्व अध्यायसभमे बारम्बार उठल छल, ओ सात वर्षक चित्रसँ नब तीक्ष्णता पबैत अछि।

## बाल-दृष्टिबिन्दु आ प्रश्नक कलात्मक शक्ति

पोती अपन दादाक जीतकेँ कबड्डीक जीतक परिचित नियमसँ तुलना करैत छली। एतय लेखक बाल-दृष्टिबिन्दुक स्वायत्तता बचबैत छथि। नेनीक प्रश्न वयस्क न्यायशास्त्रक सैद्धान्तिक निबन्ध नहि; ओ रोज सुनल 'केस जीतलौं' वाक्यक साधारण अर्थ पर आधारित अछि। बच्चा जे भाषा समाजसँ सीखैत अछि, ओही भाषाक विरोधाभास पर विचार करैत अछि। एहि दृश्यसँ कथाकारक दीर्घ व्याख्या बिना एक गम्भीर दार्शनिक प्रश्न खड़ा होइत अछि—निर्णय जँ लोकक अनुभूतिमे न्याय नहि बनय, तँ जीतक अर्थ की?

पोती चित्रमे बूढ़ व्यक्तिक हाथमे कागज रखैत छली आ 'नाम पढ़ू' लिखैत छली। ई वाक्यक शक्ति ओकर छोट आकारमे अछि। पूर्व अध्यायसभमे अनगिनत अलौकिक स्क्रीन आ भारी आदेश छल; एतय मोम-रंगक गन्ध, कापीक चित्र आ बच्चाक कुतूहल पर्याप्त होइत अछि। प्रश्नक वाक्यांश एक प्रकारक नैतिक समन बनि जाइत अछि, मुदा एकरा न्यायालयक वास्तविक समनक विकल्प नहि मानल जाए। ई कलात्मक रूपक अछि, औपचारिक निर्णय नहि।

## चन्द्रपालक बेटा आ उत्तराधिकारक असुविध ।

चन्द्रपाल बत्राक घरक सामने मोबाइल बन्द राखने युवकसभ ठाढ़ छथि। ओ नारा, हिंसा वा अवरोध नहि करैत; केवल सार्वजनिक जागरूकता लेल मार्गसँ जाएबाक अनुमति पूछैत छथि। चन्द्रपालक बेटा युवकसभक बात सुनि तिनका रास्ता दैत अछि। पिताक क्रोधक उत्तरमे ओ अपन शिक्षा, गाड़ी आ घरक आर्थिक स्रोतपर प्रश्न

उठबैत अछि। परिवारक लाभ आ बाहरी पीड़ाक स्मृति एतय एक-दोसरासँ टकराइत अछि।

ई प्रश्न पुत्रक स्वतः दोषनिर्धारण नहि। ओ संभवतः पिता द्वारा सञ्चालित काजक सभ विवरण नहि जानैत होयत। मुदा शिक्षा आ सम्पन्नताक वातावरणमे पएर जमा कऽ ओहि साधनक स्रोतबारे पूछबाक सामर्थ्यक विकास एक रचनात्मक परिवर्तन अछि। प्रतिरोधक सामाजिक विषय घरक भीतर प्रवेश करैत अछि, आ उत्तराधिकारी व्यक्ति अपन स्वतन्त्र नैतिक निर्णयक सम्भावना पबैत अछि।

चन्द्रपालक थप्पड़ उठाएल हाथ रुकि जाइत अछि; अलौकिक परदापर उज्ज्वलक खाली कुर्सी देखाइत अछि। खाली कुर्सीकेँ कथाकार प्रतिपरीक्षासँ बाहरक अनुपस्थिति बनबैत छथि। साहित्यिक अर्थमे ई पीड़ितक मृत्यु वा अनुपस्थित आवाजक चिह्न अछि। मुदा ‘खाली कुर्सी सभसँ कठिन साक्ष्य’ सन कथनकेँ विधिक प्रमाणशास्त्रक शाब्दिक प्रस्तावना नहि बनाओल जाए। अनुपस्थिति नैतिक प्रश्न जगबैत अछि; घटना-विशेषक उत्तरदायित्वक सिद्धि लेल दस्तावेज, गवाही आ कारण-सम्बन्धक जाँच अनिवार्य अछि।

## राघवक बेटी : गोपनीयताक वास्तविक प्रश्न

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक किशोरी बेटी पाठशालासँ घुरि कऽ पूछैत छली जे मेटाओल सन्देश ककरो मोनमे बचल रहय तँ की होइत अछि। राघव डिजिटल संदेशक अस्थायी स्वरूपसँ अपन कामक सुरक्षा सुनिश्चित करैत छल; पुत्रीक प्रश्न स्मृतिक भिन्न माध्यम देखबैत अछि। ओ फेर पूछैत छली जे सभ गुप्त बात गलत

होइत अछि कि नहि। राघव कहैत अछि जे किछु बात सुरक्षा लेल गुप्त रखल जाइत अछि। पुत्री तुरन्त पूछैत छली—ककर सुरक्षा लेल?

ई ‘ककर’ अध्यायक केन्द्रीय आलोचनात्मक शब्द अछि। गुप्तता अपने-आप अनैतिक नहि : निजताक रक्षा, संवेदनशील साक्ष्यक संरक्षण, जोखिममे पड़ल व्यक्तिक सुरक्षित संवाद—ई सभ आवश्यक अछि। मुदा अपराध-जालमे गुप्तता जकरा बचबैत अछि, ओकर परीक्षण जरूरी अछि। बेटी प्रश्न कैँ नैतिक निर्णयक औजार बनबैत छली; एकहि व्यवहारक अर्थ ओकर लाभार्थी, उद्देश्य, दबाव आ हानिपर निर्भर कऽ सकैत अछि।

एतय पारिवारिक निरन्तरताक एक दोसर प्रश्न उठैत अछि। अध्याय ३७मे राघवक पुत्र ओकरा ‘साहब’ कहैत अछि; अध्याय ४४मे किशोरी बेटी देखाओल गेल अछि। एक व्यक्तिक पुत्र आ पुत्री दूनू होएब स्वाभाविक अछि, तैँ केवल एहि आधारपर विरोधाभास नहि। मुदा पत्नी द्वारा अलग भऽ जएबाक पूर्वक उल्लेख आ अध्याय ४३मे पत्नी द्वारा भोजन परसब, तथा सन्तानसभक आयु आ घरेलू स्थिति—एहि सभक कालगत क्रम पूर्ण कथामे जाँचबाक आवश्यकता अछि। अनुमानसँ परिवारक संरचना निर्धारित नहि कएल जाए।

## लाउक पुत्र आ वैश्विक बजारक घर

लाउ किन-हंगक पुत्र विदेशी विद्यालयमे उपनिवेश, बजार आ नैतिक व्यापारक पाठ पढ़ैत अछि। ओ भारतक नक्शा माँगैत अछि आ पूछैत अछि जे जाहि देशसँ लाभ कमायल जाइत अछि, ओतयक लोकक नाम ज्ञात अछि कि नहि। लाउ देश, बजार आ व्यक्तिक सम्बन्धकैँ अलग करबाक प्रयास करैत अछि; पुत्र तकर भीतर

नामधारी लोकक हिसाबक प्रश्न वापस अनैत अछि। एहि दृश्यसँ आर्थिक दूरीक नैतिक सुरक्षा अस्थिर होइत अछि। भौगोलिक नक्शा केवल बाजार-प्रवेशक साधन नहि, ओतय रहनिहार व्यक्तिसभक जीवन बुझबाक सन्दर्भ बनि सकैत अछि।

तथापि ‘बाजारक लाभ = निश्चित अपराध’ सन रेखीय निष्कर्ष उपन्यास स्वयं सभ प्रसंगमे प्रमाणित नहि करैत। लाउक विशिष्ट कथित कार्य, आर्थिक माध्यम, जानकार सहयोग आ प्रभाव अलग-अलग जाँचक विषय अछि। पुत्रक प्रश्न एखन पारिवारिक नैतिक आलोचना अछि, बाहरी इतिहासक निष्पक्ष आर्थिक लेखापरीक्षा नहि। कथाक उपलब्धि एहि प्रश्नक सृष्टिमे अछि।

## घरेलू स्थानसँ लोक-पाठशाला धरि

गढ़ नारिकेलमे देविका ठगीक प्रस्ताव पर जल्दी लाभ, गुप्तता आ सामाजिक दबावबारे पूछबाक अभ्यास करबैत छली। निशांत कहैत अछि जे प्रश्न ठगक लाभ पर प्रहार करैत अछि। मीरा प्रेम, देह आ सहमतिक अधिकारक प्रश्न व्यक्तिक स्वायत्तता सँ जोड़ैत छली। सौम्या ‘सन्तानक प्रश्न’ नामसँ दस्तावेजी विचार बढ़बैत छली। ईरा लाभक स्थानसँ नाम पढ़बाक प्रस्ताव रखैत छली। एहि दृश्यसभमे लोकशिक्षाक केन्द्र तैयार उत्तर नहि, प्रश्न करबाक सामर्थ्य अछि।

ई काजक व्यावहारिक सम्भावना प्रबल अछि। मुदा बालकसभ कैं वास्तविक आर्थिक छल, डिजिटल धमकी आ पारिवारिक दबावपर प्रश्न सिखबैत समय सुरक्षित वयस्क सहायता, संकट-समाधान आ उमेर-अनुकूल जानकारी सेहो आवश्यक अछि। सब प्रकारक जोखिमक सामना बच्चा स्वयं करथि—एहन अर्थ पाठक नहि काढ़थि।

नेनाक प्रश्न सामाजिक वयस्क उत्तरदायित्वकेँ सक्रिय करबाक साधन अछि, ओकर भार नेना पर एकल रूपसँ रखबाक उपाय नहि।

## कबड्डीक बीच 'ककर'

अन्तमे चन्ना गाछीक चारू कोनामे पोतीक चित्र, चन्द्रपालक बेटाक खाली कुर्सी, राघवक बेटीक प्रश्न आ लाउक पुत्रक नक्शा लगाओल जाइत अछि। बूढ़बा भूत कहैत छथि जे बच्चासभ कोनो दल नहि, सीटी छथि—ओ खेल शुरू करैत छथि। एहि उपमामे भविष्यक पीढ़ीकेँ पक्षधर संघर्षक अनियन्त्रित उपकरण नहि, नियम बदलबाक नैतिक सामर्थ्य प्रदान कएल गेल अछि। तथापि बच्चा 'सीटी' छथि—ई सेहो विशिष्ट आदर्शीकृत रूपक अछि; वास्तविक बालकसभक स्वतन्त्र इच्छा, अपूर्ण ज्ञान आ निजी भयक स्थान बचल रहबाक चाही।

अनन्या बीच मैदानमे 'ककर' लिखैत छली। एहि एक शब्दसँ पैसा, मृत्यु, जीत, आदेश, मौन, देश आ नाम—सभ प्रश्नवाचक होइत अछि। 'ककर' सम्पत्ति, जिम्मेवारी, निर्णयाधिकार, अनुभूति आ स्मृतिक वितरणक एक सार्वजनिक व्याकरण अछि। कथाकारक दीर्घ दार्शनिक विमर्श एतय एक शब्दमे संक्षिप्त भऽ जाइत अछि। शब्दक संक्षिप्तता ओकर शक्ति अछि; तथापि सम्पूर्ण उत्तर केवल प्रश्नद्वारा स्वतः नहि भेटत। तकरा साक्ष्य, व्यवहार आ संस्थागत क्रिया चाही।

## आख्यानगत आत्मचिन्तन आ सीमा

आरुणि केँ भय होइत अछि जे कथा फेर उपदेश बनि जायत। बा उत्तर दैत छथि जे कथा सँ फूटल प्रश्न आ बाहरसँ थोपाल उपदेश भिन्न अछि। ई संवाद उपन्यासक

स्वयं-आलोचनात्मक क्षण अछि। एखन धरि पाँच प्रतिपक्षीक मानसपर एकसमान अलौकिक दबावक आवृत्ति कथाक उपदेशात्मक रचनाकेँ उजागर करैत छल; पोतीक चित्र, परिवारक भोजन आ पुत्रीक सहज प्रश्न एहि एकस्वरताकेँ किछु तोड़ैत अछि। तथापि चारू परिवारक सन्तान बहुत समय एकहि नैतिक दिशा मे प्रश्न उठबैत छथि; अलग मनःस्थिति, असहमति, पारिवारिक दबाव आ विरोधी अनुभव आओर विस्तार पबैत तँ दृश्य अधिक बहुवाची होइत।

अध्यायक मुख्य उपलब्धि एहि तथ्यक साहित्यिक प्रतिरूप अछि जे इतिहासक नैतिक पुनर्परीक्षा कई बेर विशेषज्ञ मंचपर नहि, घरक कापीमे शुरू होइत अछि। बालकक प्रश्न वयस्कक उत्तरदायित्व निर्धारित नहि करैत, मुदा ओकर गुप्त विरोधाभास उघारैत अछि। ‘ककर’क पारी एहि कारण अन्तिम निर्णय नहि, नव अनुसन्धानक आरम्भ अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ४०–४४

*ओस, नाव, भार आ पोतीक कापीक माध्यमसँ स्मृतिक कार्य-व्यवस्था।*

## नामसँ जीवन आ जीवनसँ रस्ता।

एहि पाँच अध्यायक आरम्भ अध्याय ३९क ‘आब’सँ होइत अछि। अध्याय ४० नामक संग वस्तु जोड़ैत अछि; अध्याय ४१ वस्तुक मार्ग आ रोकथामक सम्भावित मोड़ पढ़बैत अछि; अध्याय ४२ ओहि मोड़क उत्तरदायित्व ‘भार’ रूपमे रखैत अछि; अध्याय ४३ भारकेँ सार्वजनिक मञ्चसँ घरक भीतर पहुँचेबाक कथा रचैत अछि; अध्याय ४४ परिवारक अगिला पीढ़ीक प्रश्नक माध्यमसँ उत्तरदायित्वक नव भाषा गढ़ैत अछि। ई क्रम ‘नाम → वस्तु → रस्ता → मोड़ → भार → घर → प्रश्न’ रूपमे देखल जा सकैत अछि। क्रमक हर चरण पिछला चरणक केवल पुनरावृत्ति नहि, ओकर सीमाक अगिला परीक्षा अछि।

जखन मृतकक नाम सरकारी सूचीमे रहैत अछि, ओ तकर एक परिचय अछि। टिफिन, पासबुक, मोबाइलक शीशा, नूनक दाना, खड़िया वा दवाइक शीशीक सहायता सँ व्यक्ति अपन श्रम, भय, प्रेम आ घरेलू समय पुनः प्राप्त करैत अछि। वस्तुक मार्ग ओकर जीवनक सामाजिक सम्बन्ध खोलैत अछि। मार्गमे कोन व्यक्ति, संस्था वा तन्त्र निर्णय लेने छल, तकर प्रश्न उत्तरदायित्वक तन्त्र बनबैत अछि। एकर बाद दण्ड, सामाजिक सहायता आ पुनर्वासक भार अलग-अलग रूपमे सामने अबैत अछि।

## स्मृतिक नैतिकता आ प्रमाणक विभाजन

गोप कुमारक डेटा, चन्ना गाछीक पात, बच्चासभक माटि-नक्शा, सत्यव्रत मेहताक टिप्पणि आ प्रतिपक्षीक अलौकिक स्वप्न एकहि उपन्यासमे अनेक ज्ञानरूप उत्पन्न करैत अछि। नव्य न्याय-आधारित आलोचनामे एहि सभकेँ एक समान प्रमाण मानब अनुचित अछि। प्रत्यक्ष वस्तु, ओकर स्वामित्वक कथन, घटना-सँ कथित सम्बन्ध, अलग स्रोतक पुष्टिक्रम आ ककरो दोषक निष्कर्षक कड़ी स्पष्ट करब जरूरी अछि। कथा जे बात लोकस्मृतिक रूपक द्वारा व्यक्त करैत अछि, ओ यथार्थ-जाँचमे साक्ष्य होएबाक लेल स्वतंत्र परीक्षण माँगैत अछि।

अध्याय ४०क ‘वस्तुक अभिलेख’ आ अध्याय ४१क ‘रस्ता-पाठ’ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक लेल विशेष सार्थक अछि। सरकारी रजिस्टरक सहायतासँ लोकक मौखिक स्मरण, पारिवारिक पदार्थ, स्थानीय भौगोलिक ज्ञान आ सार्वजनिक दस्तावेजक भिन्न स्रोतसभ एकसाथ परखल जा सकैत अछि। मुदा समानान्तर इतिहासक अर्थ सभ स्रोतकेँ समान विश्वसनीय कहि देब नहि। प्रमाणगत विरोधाभास —विशेषतः सरयू महतोक लिंग, बेटी कमली द्वारा पिताक स्मरण तथा पहिनुक ‘सरयू देवी’क विवरण—जसक तस दर्ज होएत आ मूल पात्र-पञ्जी मिलानक बादे निष्कर्ष बनत।

## दण्ड, भार आ पुनर्निर्माणक भिन्नत ।

अध्याय ४२क दुई वृत्त आ मौन दर्शकक तेसर वृत्त सामूहिक नैतिकताक सीमा बढ़बैत अछि। मुदा अपराधक कर्ता, लाभान्वित व्यक्ति, डरि मौन रहल साक्षी,

अभावग्रस्त परिवार, सामाजिक सेवा करएबला व्यक्ति आ राज्यक अधिकारी—सभ पर समान भार नहि रखल जाए। पीड़ितक गरिमा बचाएब, उचित प्रतिकर, स्वतंत्र विधिक सुनवाई, सामुदायिक पुनर्वास, सुधारात्मक शिक्षा आ अपराध-नियन्त्रण अलग-अलग उद्देश्य छथि। कथाक 'कन्हा'क रूपक एहि उद्देश्यसभकेँ बातचीतमे अनैत अछि; ओकरा विधिक वर्गीकरणक स्थान नहि देबाक चाही।

एहि पाँच अध्यायमे ठोस सामाजिक काज—बैंक-बाबूक सन्दिग्ध खाताक नियमानुकूल पुनरावलोकन, युवकसभक ठगी-जागरूकता, मीरा द्वारा सहमति आधारित निजता-सुरक्षा, सौम्याक लोकभाषिक अभिलेख-पाठ, देविकाक निरन्तर वर्ग—अलौकिक दृश्यसभक तुलनामे जीवनक सामाजिक सुधारक विश्वसनीय आधार अछि। उपन्यास जखन एहि काजसभपर ठहरैत अछि, तखन ओकर नैतिक कल्पना व्यवहारक कठिन धरातल प्राप्त करैत अछि।

## व्यक्तिगत घरक भीतरक सत्ता-संघर्ष

बटुकनाथक माय आ पोती, चन्द्रपालक बेटा, राघवक पत्नी आ बेटी, लाउक पुत्र—एहि सम्बन्धसभ द्वारा कथाकार संस्थागत शक्तिक घरक भीतर प्रवेश करैत छथि। अलग पीढ़ीक लोक अपराधी पात्रक नैतिक आत्मकथाक एकाधिकार चुनौती दैत छथि। बालकसभक प्रश्न शासनक पद, धनक स्रोत वा सार्वजनिक प्रतिष्ठाक आधिकारिक भाषा स्वीकार नहि करैत; ओ सरल सम्बन्ध पूछैत अछि : ककर लाभ, ककर नाम, ककर भय, ककर घर?

तथापि परिवारक वंशजकेँ अपराधक स्वतः साझीदार मानब नहि। पीढ़ीगत विवेचनतखन नैतिक होयत जखन अगिला पीढ़ीक स्वायत्तता सुरक्षित रहय आ

ओकरा उपलब्ध जानकारीक सीमा सेहो देखल जाय। अध्याय ३७मे राघवक पत्नी छोड़ि जाएबाक कथन, अध्याय ४३मे पत्नी द्वारा भात परसब तथा अध्याय ४४मे किशोरी बेटी आ अध्याय ३७क पुत्रक विवरणक कालक्रम पर जाँच शेष अछि। ई प्रश्न स्रोतगत निरन्तरताक विषय अछि, आलोचक द्वारा मनोनुकूल पुनर्गठनक अवसर नहि।

## लोकगीत, वस्तु-संरचना आ आख्यानकाल

अध्याय ४०क ओस-गीत खुलल हथेलीक विश्वास, अध्याय ४१क नाविक-गीत स्मृति आ प्रमाणक साझा खेवाइ, अध्याय ४२क श्रम-झूमर कन्हाक संयुक्त लय, अध्याय ४३क बटगबनी घर-घर सहयोग आ अध्याय ४४क दादी-पोती गीत अगिला पीढ़ीक प्रश्नक पुनरावृत्ति रचैत अछि। लोकधुन कथाक नैतिक विचारकेँ समुदायमे बजाएबला भाषा दैत अछि। ई ध्वन्यात्मकता भारतीय रस-ध्वनि-विचारक आलोकमे काव्यार्थक आधार अछि; मुदा अनेक गीत मुख्य गद्यक निष्कर्ष लगभग सोझ रूपमे फेर कहैत छथि, जाहिसँ कखनो नव कलात्मक अर्थक स्थान पुनरुक्ति लेबैत अछि।

एगारहमसँ पन्द्रहम साँस धरि अध्यायक्रम अपेक्षाकृत स्पष्ट अछि। तथापि पाँचू प्रतिपक्षीक दूरस्थ घरमे समानान्तर अलौकिक चिह्न आ अपनहि लिखाइत अक्षरक बहुत आवृत्ति अछि। बाख्तिनक बहुस्वरताक कसौटी पर पात्रक संवादक स्वतन्त्रता पूर्ण नहि; किछु ठाम सभकेँ एकहि अन्तःकरणक अदालतक पूर्वनिर्धारित नियम भीतर चलय पड़ैत अछि। जेनेतक आख्यान-दृष्टिबिन्दु सँ देखला पर दूर देशक कार्यालय, निजी गृह आ चन्ना गाछी बीच तीव्र परिवर्तन कथा सँ व्यापक विश्वक

अनुभव देइत अछि, मुदा व्यक्तिगत मानसकेँ विस्तारमे ठहरबाक अवकाश कखनो कम भेटैत अछि।

## उपन्यासक स्वयं-समालोचन I

अध्याय ४४मे आरुणिक ‘उपदेश बनि जाएबाक’ भय अनायास नहि। लोकगीतक घोषणापरक पंक्ति, बच्चाक नैतिक प्रश्न पर प्रतिपक्षीक तुरन्त असमर्थता आ चमत्कारक नियमित पुनरागमन शिल्पगत सीमा उत्पन्न करैत अछि। बा उत्तर दैत छथि जे कथा सँ फूटल प्रश्न उपदेश नहि। ई कथन उपयोगी अछि, मुदा समीक्षा लेल अन्तिम सुरक्षा नहि। प्रश्न जँ पात्रक जटिल अनुभवसँ स्वाभाविक रूपमे निकलय तँ ओकर कलात्मक बल अधिक; जँ सभ पात्र एकहि सरल उत्तर दिस प्रेरित होथि तँ आलोचक ओकर योजना चिन्हि सकैत अछि। अध्याय ४४क पोतीक चित्र आ पत्नी-बेटीक असुरक्षित घरेलू संवाद कथाक अधिक सूक्ष्म सम्भावना देखबैत अछि।

## समेकित निष्कर्ष

अध्याय ४०–४४क मुख्य रचनात्मक उपलब्धि स्मृतिकेँ संग्रहित वस्तुसँ सार्वजनिक जाँच, जाँचसँ साझा काज आ साझा काजसँ अगिला पीढ़ीक प्रश्नमे बदलब अछि। नामक अभिलेख भावुक पञ्जी बनि स्थिर नहि रहैत; नामधारी व्यक्तिक जीवन, भोजन, भय, श्रम, निजी सहमति आ ऐतिहासिक मार्ग पर प्रश्न करैत अछि। न्याय एतय केवल बाहरी निर्णय नहि, न हिंसात्मक प्रतिशोध; ओ सार्वजनिक जिम्मेवारीक कठिन साधना बनैत अछि।

एहि साधनाक आलोचनात्मक मर्यादा सेहो स्पष्ट रहबाक चाही। कल्पित भूतक साक्षी, जादुई परदा, भीजल पात आ बदलैत अक्षर साहित्यिक सत्यक वाहक छथि; ओ स्वतंत्र अपराध-जाँचक सम्पूर्ण विकल्प नहि। स्रोतक आन्तरिक निरन्तरताक प्रश्न, खास कऽ सरयू महतो/सरयू देवी तथा राघवक पारिवारिक कालक्रम, अनुत्तरित रहितो इमानदार आलोचनामे सुरक्षित रहबाक चाही। पाँच अध्याय एक अद्भुत, सामाजिक आ प्रश्नप्रधान आख्यानक रूपमे अगिला साँस लेल ठाढ़ अछि : जखन नेना पूछैत अछि ‘ककर?’, तखन उत्तरदायित्वक वास्तविक काज शुरू होइत अछि।

# अध्याय ४५ — भीतरक हवा

*पीढ़ीगत अस्वीकार, घरेलू मौन आ नैतिक उत्तराधिकार*

## सोलहम साँसक द्वार : ‘ककर’सँ ‘की लेब?’ धरि

अध्याय ४४क ‘ककर?’ प्रश्न सोलहम साँसमे ‘की लेब?’ आ ‘की छोड़ब?’क द्वन्द्वमे बदलैत अछि। दुआर खुलब पूर्व अध्यायक प्रभाव छल; अध्याय ४५मे ओहि दुआरसँ बरखों सँ बन्द हवा बाहर निकलैत अछि। सम्पत्ति, नाम, मान-सम्मान आ चुप्पीक पीढ़ीगत सम्बन्ध एहि हवाक रूपकमे समेटल अछि। घरेलू जीवनक बाहरी सुव्यवस्था भीतरक नैतिक उलझन नुकबैत अछि। पातपर लिखल मृतकक नाम जखन सन्तानक प्रश्न बनि घरमे पहुँचैत अछि, तखन पारिवारिक प्रेम आ आर्थिक लाभक सम्बन्ध स्वतः अनुत्तरित नहि रहि पबैत।

अध्यायक आरम्भक लोकगीत ‘बन्द घर खुलल’मे केवाड़ी, जाला, खिड़की, बासि हवा आ नब धूपक सामुदायिक चित्र अछि। गीत घरकेँ दोषी नहि मानैत; समस्या घरमे बन्द राखल असहज सत्य अछि। ई अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। अपराधक कृत्य वा लाभक पृष्ठभूमि पर प्रश्न उठाएब घरक सभ सदस्यकेँ समान रूपसँ अपराधी ठहराएब नहि। मुदा घरक सदस्य जखन प्रश्न पूछबाक सामर्थ्य पबैत छथि, तखन पुरान चुप्पी अस्थिर होइत अछि।

## बटुकनाथक पोती : चित्रसँ प्रतिप्रश्नक देह धरि

बटुकनाथ हरिहरन पोतीक बनाओल चन्ना गाछीक चित्र दराजमे बन्द करैत अछि; चित्र फेर मेज, तकिया तर आ अएनापर उपस्थित भऽ जाइत अछि। ई अलौकिक आवृत्ति स्मृतिक स्थायित्वक रूपक अछि। कागज नुकबला व्यक्ति प्रश्न नहि नुकाबि पबैत। दोसर चित्रमे कागज खाएबला बूढ़, मोबाइल चिबाएबला व्यक्ति आ मुँहविहीन व्यापारीक आकृति एक घरोघरी लोकनाट्य रचैत अछि। बच्ची चित्र किएक बनबैत छली—कारण घरमे वयस्क लोक कथा नहि कहैत छथि—ई दृश्य व्यापक कथासूत्रक विशेष सूक्ष्म पुनर्व्याख्या अछि।

पोतीक प्रश्न केवल दादाक पेशागत जीत पर नहि, ओकर हस्तान्तरित मौन पर केन्द्रित अछि। घर, गाड़ी, पुस्तकालय, नाम आ सम्पत्ति उत्तराधिकारमे देल जाएत; चुप्पी सेहो देल जाएत कि नहि? एतय बालदृष्टि वयस्क न्यायशास्त्रक अन्तिम निर्णय नहि दैत; ओ पारिवारिक सत्ताक सूचनात्मक असमानता देखबैत अछि। बच्ची जखन माथ सहलएबाक लेल बढ़ल हाथसँ पाछाँ हटि ‘खेलक बाहर किएक ठाढ़ छी’ पूछैत छली, तखन स्नेहक स्वाभाविक अधिकारक संग सत्यक अपेक्षा टकराइत अछि। ई अस्वीकृति बच्चाक स्वतन्त्र व्यक्तित्वक संकेत अछि, मुदा ओकरा भय वा दबावसँ रहित सार्वभौमिक बालअनुभव मानब उचित नहि।

## चन्द्रपालक बेटा : लाभक स्रोतक लिखित प्रश्न

चन्द्रपाल बत्राक बेटा पिताक कारक चाबी घुराबैत अछि। डिक्कीमे भेटल नकदक थैली, कागज आ बैंकक पन्ना परिवारक सम्पन्नताक पाछाँक प्रश्न उपस्थित करैत

अछि। बेटाक अस्वीकारक मूल वाक्य सम्पत्ति नहि लेबाक भावुक घोषणा मात्र नहि, लाभक स्रोत आ ओकरा सँ जुड़ल मृतकक नामक सम्बन्ध बुझबाक माँग अछि। पिताक 'आदर्शवाद पेट नहि भरैत' तर्कक उत्तरमे बेटा दोसराक पेट खाली कऽ अपना पेट भरबाक प्रश्न उठबैत अछि। रचनाक संवादधर्मिता एहि विरोधक माध्यमसँ प्रकट होइत अछि।

अध्यायक न्यायविवेकक सीमा स्पष्ट अछि : कारक डिक्कीमे नकद वा बैंकक कागज भेटलासँ ओकर विधिक स्रोत अथवा दोष स्वतः सिद्ध नहि होइत। पात्रक सन्देह कथाक नैतिक संघर्षक भाग अछि; वास्तविक आर्थिक अपराधक प्रमाणक लेल लेनदेन, स्वामित्व, समय आ सम्बन्धित दस्तावेजक जाँच चाही। मुदा बेटाक प्रश्न एहि अनुसन्धानक आवश्यक आरम्भ अछि। चन्द्रपालक पत्नी दूरसँ सुनैत छली; हुनकर चेहरापर राहतक संकेत ई बतबैत अछि जे घरक चुप्पी भीतर अलग-अलग व्यक्ति अलग ढंगसँ सहैत रहि सकैत छथि।

## राघवक बेटी : चुप्पीक नोंद

राघव 'सिग्नल' सोमानीक बेटी 'चुप्पीक नोंद' नामक कापी खोलैत छली। पिताक अनुत्तरित प्रश्न लिखबाक ओकर निर्णय मेटाइत सन्देशक शिल्पक विरुद्ध एक अस्थायी किन्तु दृढ़ दस्तावेजी प्रतिपक्ष बनैत अछि। राघवक फोनपर 'फाइल हटाउ, नाम रोकू' सन संकेत अबैत अछि; ओ फोन उलटि दैत अछि, आ बेटी पहिल चुप्पी दर्ज करैत छली। कापी आइ डिजिटल उपकरणक तकनीकी प्रतिपक्ष नहि, परिवारक भीतरक स्मृतिगत प्रतिप्रश्न अछि।

ई स्थिति अध्याय ४३मे पत्नीक भोजनक मौन तथा अध्याय ४४मे बेटीक ‘ककर सुरक्षा लेल’ प्रश्नसँ अर्थपूर्ण सम्बन्ध रखैत अछि। एकरसँ पात्रक प्रश्नक स्रोत घरक बाहरक लोकअदालत सँ निजी सम्बन्ध धरि बदलैत अछि। तथापि पत्नी द्वारा पहिने राघवकेँ छोड़ि देबाक अध्याय ३७क उल्लेख आ पछिलका घरेलू दृश्यसभक कालक्रम स्वतंत्र परीक्षण चाहैत अछि। आलोचककेँ एहि निरन्तरता-संशय केँ भरबाक लेल अनुमानित पुनर्मिलनक कथा नहि रचबाक चाही।

## लाउक पुत्र आ ब्रूमक नातिन : नैतिक मंचक उलटफेर

लाउ किन-हंगक पुत्र विद्यालयमे ‘लाभक वंश आ नामक ऋण’ पर निबन्ध पढ़ैत अछि। पुरस्कारक सार्वजनिक मंच निजी आर्थिक उत्तरदायित्वक प्रश्नक मञ्च बनि जाइत अछि। लाउ निबन्ध सुनैत सामाजिक प्रतिष्ठाक अभ्यस्त तालीक बदला मौन देखैत अछि। एहिठाम प्रतिष्ठाक सार्वजनिक संरचना आ पुत्रक व्यक्तिगत न्यायबोध बीच तनाव अछि। ब्रूमक नातिन सेहो गरिमाक भाषण आ पुरान परियोजनाक मृतकक नामक अभिलेख पूछैत छली। ब्रूम ‘इतिहास जटिल’ कहि उत्तर टारय चाहैत अछि; नातिन जटिलताकेँ नाम मेटबाक अनुमति नहि मानैत छली।

दूनू दृश्य नैतिक भाषणक प्रमाणक सीमा देखबैत अछि। व्यक्तिगत आ पारिवारिक प्रश्न सत्यापन शुरू करैत अछि, मुदा कम्पनीक विशिष्ट उत्तरदायित्व पर अन्तिम विधिक निष्कर्ष नहि स्थापित करैत। एहि आलोचनामे पाश्चात्य विमर्श-विश्लेषण उपयोगी अछि : 'गरिमा', 'नेतृत्व', 'लाभ' आ 'व्यापार' सन सार्वजनिक शब्दसभकेँ नामधारी व्यक्ति आ सम्बन्धित काजक परीक्षणसँ जोड़ल जा रहल अछि। एही कारण दुनू सन्तान-संबद्ध प्रसंग वैश्विक सत्ता केँ घरक निकटता सँ जाँचैत अछि।

## बच्चाक दल, लोकशिक्षा आ वारिसी अस्वीकार

गढ़ नारिकेलमे अनन्या पूछैत छली जे धूर्तक बच्चा प्रश्न करए लगथि तखन हुनका कोन दलमे मानल जायत। बा कहैत छली जे बच्चाक दल प्रश्नक दल अछि। देविका 'घरक प्रश्न'क पाठ जोड़ैत छली; मीरा भय आ सहमतिक वंशानुगत रूप चिन्हैत छली; सौम्या उत्तराधिकारीक इन्कारक महत्त्व लिखैत छली; ईरा लाभ स्वीकार करबाक पहिने ओकर हिसाब बुझबाक आग्रह करैत छली। एहि सभ क्रियामे भविष्यक पीढ़ी माता-पिताक आर्थिक संसाधनक स्वचालित नैतिक उत्तराधिकारी नहि रहैत।

मुदा बच्चाक प्रश्नक उत्सव मनबैत समय नाबालिगक सुरक्षा, निर्भरता आ अधिकारक सीमा बिसरल नहि जाए। अपारदर्शी वित्तीय काजक पूछताछक जिम्मेवारी वयस्क संस्था आ सक्षम अनुसन्धानकर्ताक अछि; बच्चा कैं जोखिमपूर्ण सामना करबाक बाध्यता नहि होएबाक चाही। उपन्यासक सर्वाधिक सामाजिक रूपसँ उपयोगी अर्थ ई अछि जे बालक आवाज पबैत छथि आ वयस्क लोकक सत्य बोलबाक उत्तरदायित्व बढ़ैत अछि।

## सोलहम साँसक ‘नाम लेब, लाभ नहि’ सूत्र

अन्तिम खेलमे बच्चासभ प्रश्न लऽ ठाढ़ छथि; प्रतिपक्षीक मन लाभक गणना, संकेत-मेटाएब आ प्रक्रिया-पदावलीसँ निकलि नहि पबैत। अनन्या ‘की लेब’ आ ‘की छोड़ब’ लिखैत छली। बच्चासभ मृतकक नाम आ स्मृति स्वीकार करबाक, मुदा ओहि नाम मेटि कमायल लाभ अस्वीकार करबाक सूत्र उच्चारित करैत छथि।

लोकधुनमे बन्द हवा बाहर अबैत अछि। एहि रूपकसँ विरासत एक निष्क्रिय दाय नहि रहि विवेकपूर्ण चयन बनैत अछि।

शिल्पगत सीमा ई जे बहुतो सन्तान एकहि नैतिक निष्कर्ष दिशि अपेक्षाकृत तत्परतासँ पहुँचैत छथि; परिवारक सामाजिक दबाव, लाभक निर्भरता, भिन्न सूचना आ असहमतिपर अधिक चित्रण कथा कैं बहुस्वरीय बना सकैत छल। तथापि पोतीक चित्र, बेटाक कारक चाबी, बेटीक कापी आ नातिनक प्रश्न स्वतंत्र वस्तु-प्रतीकक माध्यमसँ अध्यायक संरचना समृद्ध करैत अछि। रचनाक उपलब्धि नैतिक उत्तराधिकारकैं रक्तसँ अलग कऽ चुनेल गेल सार्वजनिक स्मृतिक रूपमे प्रस्तुत करब अछि।

# अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार

*प्राप्त सम्पत्तिसँ बेसी ओकर स्रोत आ चयनक परीक्षण।*

## सत्रहम साँस आ विरासतक पदार्थ-जगत

पछिला अध्यायमे सन्तानसभ नाम स्वीकारि लाभ छोड़बाक संकल्प करैत छथि। अध्याय ४६ एहि संकल्पकेँ उत्तराधिकारक सघन पदार्थ-जगतमे लेबैत अछि : चाभी, बैंकक मोहर, अलमारीक कपड़ा, वसीयतनामा, कार, भोजनक दाना, शीशाक देबाल आ खेलक खिलौना। सत्रहम साँसक विषय मात्र आर्थिक सम्पत्तिक आलोचना नहि, घरक सुखक पाछाँक अदृश्य सम्बन्धक अनुसन्धान अछि।

शीर्षकक ‘अन्हार’क अर्थ सम्पन्नताक विरोधमात्र नहि। धन कथाक भीतर समाजोपयोगी कार्य सेहो करि सकैत अछि; प्रश्न ओकर स्रोत, उपार्जनक विधि, उपभोक्ता वा मजदूरक हानि आ भविष्यक हस्तान्तरणक अछि। आरम्भक 'श्वासक मूल्य जीवन' लोकगीत जीवन रक्षक काजकेँ लाभक पहिल शर्त बनबैत अछि। एहि सांगीतिक विधानमे करुणा आ श्रमक मूल्य प्रमुख अछि, तथापि गीतक उपदेशात्मक स्पष्टताक कारण पाठकक स्वतन्त्र अर्थनिर्माणक स्थान कखनो सीमित होइत अछि।

## बटुकनाथक तीन गोला आ वसीयतनामाक अलौकिक व्याकरण

बटुकनाथक पोती पूछैत छली जे ओकर नामपर की छोड़ल जाएत। उत्तर घर, जमीन, खाता, पुस्तकालय आ नाम अछि। पोती घर, खाता आ नामक तीन गोला खींचि तकर कात पएर, पानि आ गाछ बनबैत छली। 'मरल पएरपर बनल घर राति चलैत

होयत' सन बालकल्पना सम्पत्तिक स्रोतेपर प्रश्न अछि। बटुकनाथ वसीयतनामामे 'चल सम्पत्ति'क स्थान 'चल मृतक' आ 'अचल सम्पत्ति'क स्थान 'अचल नाम' देखैत अछि। एहि दृश्य मे विधिक वर्गीकरणक परिचित पद लोकस्मृतिक प्रेतबिम्बमे उलटि जाइत अछि।

ई रूपान्तरण मनोवैज्ञानिक अलौकिकता अछि; वास्तविक सम्पत्तिक दोषपूर्ण उपार्जनक प्रमाण नहि। तथापि विधिक कागजक पूर्णता नैतिक प्रश्नक अन्तिम समाधान नहि, ताहि बातक साहित्यिक प्रतिपादन ई दृश्य करैत अछि। नव्य न्याय-सम्बद्ध कसौटी पर कोनो सम्पत्तिक स्रोत सिद्ध करबाक लेल दस्तावेजक प्रामाणिकता, उपार्जनक काल, स्वामित्व आ आरोपित हानिक कारण-सम्बन्ध आवश्यक अछि; स्वप्नक बदलल अक्षर ओहि जाँचक स्थान नहि लऽ सकैत।

## चन्द्रपालक बेटा : स्रोत-लेखनक माँग

चन्द्रपालक बेटा मुन्ना, उज्ज्वल आ अन्य व्यक्तिक नामक सूची दिखबैत प्रश्न करैत अछि जे 'मामला' कहाएल लोक वस्तुतः के छलाह। पिताक पुरान कानून-पुस्तकमे ‘न्याय पढ़ब’ आ आबक ‘दर निकालब’क टकराव पेशागत मूलसंकल्प आ आर्थिक अवसरवादक प्रतीक अछि। बेटा जतेक लाभ अपन नामपर लिखल अछि तकर स्रोत लिखित रूपमे बुझबाक माँग करैत अछि। इन्कारक उपयोगी स्वरूप एतय नाटकीय वाक्यक बदला लेखाक पारदर्शिताक आग्रह बनैत अछि।

एहि ठाम पात्रक कथन आ तथ्यक निर्णय बीच अन्तर रखब आवश्यक। पिता यदि स्रोत नहि बता पबैत अछि तँ प्रश्न गहन होइत अछि, मुदा 'स्रोत नहि बताओल' अपने-आप प्रत्येक धनराशिक अपराधसिद्धि नहि। कथा पुत्रक निर्णयाधिकार, अपन

नामक उपयोगपर नियन्त्रण आ अनैतिक लाभसँ दूरी बनएबाक आकांक्षा साहित्यिक स्तरपर प्रस्तुत करैत अछि।

## राघवक थारी : एक दानाक घरोघरी साक्षित्व

राघवक पत्नी प्रत्येक भोजनमे एक दाना भात अलग राखैत छली। ओ कहैत छली जे ई ओहि घर लेल अछि जतयसँ राघवक पैसाक कारण भोजन छिनायल। एक दाना राघवक इलेक्ट्रॉनिक संदेशक संसारक विरुद्ध शरीरक स्मृतिक वस्तु बनैत अछि। डिजिटल संकेतसभ मेटल जा सकैत अछि, मुदा दैनिक भोजनक पुनरावृत्ति स्मरणकेँ घरक क्रिया बना दैत अछि। पत्नी जखन अलग दानाकेँ श्राद्धक अन्नक रूपमे व्याख्या करैत छली, तखन परिवारक भोगक शान्ति भंग होइत अछि।

एहि बिम्बक करुण शक्ति प्रबल अछि, मुदा परिजनक कथनकेँ अपराधक वित्तीय शृंखलाक स्वतंत्र प्रमाण नहि मानल जाए। ई पत्नी द्वारा अनुभव कएल नैतिक आरोप आ प्रतिरोधक साहित्यिक रूप अछि। अध्याय ३७क कथन अनुसार पत्नी अलग भऽ चुकली आ ४३, ४६मे घरेलू उपस्थित छथि; कालगत संक्रमणक स्पष्टता बिना एकरा घटनात्मक त्रुटि वा पुनर्मिलनक प्रमाण कहब—दुनू अनुमान होयत।

## लाउक नातिन आ धनक भाषानुवाद

लाउ किन-हंगक नातिन शीशाक देबालपर एक गाछ बनबैत छली, जकर फल मोबाइलक समान अछि। लाउ सम्पत्ति-सूची देखैत अछि—परतदार खाता, कम्पनी, व्यापारिक माध्यम, दान-संस्था आ चिकित्सकीय निधि। नातिनक नाम जोड़बाक ठाम अलौकिक प्रश्न उभरैत अछि : 'जे भाषामे कमाएल, ओहि भाषामे उत्तर दिअ।'

प्रतिशत, विनिमय आ समझौताक भाषाक सीमा एहि दृश्यसँ देखाओल गेल अछि। वित्तीय लेनदेनक शब्द गरीब व्यक्ति अथवा श्रमिकक अनुभवकेँ पूर्ण रूपेँ व्यक्त नहि करैत।

नातिनक दृश्य अध्याय ४४क पुत्रक भारतक नक्शा माँगबाक प्रसंगसँ अर्थपूर्ण सम्बन्ध रखैत अछि। दूनू सम्बन्ध एक परिवारमे सम्भव अछि; अतः पीढ़ीक उल्लेख स्वतः विरोधाभास नहि। तथापि लाउक पारिवारिक सम्बन्धक कालक्रम आ मेइ-लता सन अगिला अध्यायक पात्रक सम्बन्ध मूल स्रोतक पात्र-पञ्जीमे पृथक पहिचान अपेक्षित करैत अछि।

## खेलमे लट्टू आ खिलौना कार

गढ़ नारिकेलक बच्चासभ वस्तु उठाबैत पुछैत छथि जे ई ककर श्रम, हानि आ नामक परिणाम अछि। चमकदार खिलौना कारक स्रोत नहि बता सकनिहार बच्चा ओकरा खेलसँ बाहर राखैत अछि; दादाक हस्तनिर्मित लट्टूक कथा कहलाक बाद लट्टू भीतर रहैत अछि। ई दृश्य उत्तराधिकारक ज्ञात इतिहासक मूल्य स्थापित करैत अछि। किएक तँ उपयोगक वस्तुक पाछाँक श्रम मनुष्यक सामाजिक सम्बन्ध खोलैत अछि, खेल वस्तु-संग्रहक बदला जीवनीक आदान-प्रदान बनैत अछि।

तथापि उत्पादकक नाम नहि जानब या दूरस्थ कारखानाक श्रमक इतिहास अनभिज्ञ होयब अपराधक संकेत नहि। आधुनिक वस्तु-शृंखला जटिल अछि। बालशिक्षा लेल प्रश्नक नियम उपयोगी अछि, किन्तु स्रोत अनिश्चित भेला पर वस्तु नैतिक रूपेँ निषिद्ध घोषित करब तार्किक अतिरेक होयत। कथाक खेलकेँ वास्तविक सामाजिक अनुशासनक पूर्ण नियम नहि, पूछताछक कल्पनात्मक अभ्यास मानब उचित अछि।

## अस्वीकारसँ चयन

अध्यायक अन्तमे अनन्या 'उत्तराधिकारीक इन्कार' लिखि फेर 'चयन' लिखैत छली। ई छोट सम्पादन अत्यन्त सार्थक अछि। इन्कार नकारात्मक क्रिया अछि; चयन स्मृतिक सकारात्मक दिशाक निर्माण अछि। नाम, श्रम, प्रेम आ चुनेल गेल स्मृति उत्तराधिकारक नब आधार बनैत अछि। बच्चासभक खाली कागज धरतीमे समाइ नारिकेलक अंकुर बनबाक अलौकिकता एहि रचनात्मक सम्भावनाक दृष्यमान रूपक अछि।

बूढ़बा भूतक ‘नाम मेटाकऽ बनल धन त्यागू’ आग्रह भावात्मक रूपेँ प्रभावशाली अछि, मुदा वास्तविक उत्तराधिकारक विधि, आश्रित सदस्यक हक, हानिग्रस्त लोकक प्रतिकर, धनक खोज आ कानूनी प्रक्रिया जटिल छथि। केवल सम्पत्ति छोड़ि देलाक घोषणा पीड़ित कैँ देय धनक न्यायोचित वितरणक स्थान नहि लेत। अध्याय एहि असमाप्त प्रश्नकेँ आगाँक कथा लेल खोलैत अछि। ओकर उपलब्धि चयनकेँ रक्तवंशक पक्का नियति मानबाक बदला नैतिक उत्तरदायित्वक गतिशील काज बनएब अछि।

# अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान

*लोकमिथकक पुनर्रचना, बचावक तेसर हाथ आ श्रवणक न्याय*

## अठारहम साँस : पुरान आख्यानक नब मैदान

अध्याय ४६क उत्तराधिकार-चयनक बाद अठारहम साँसमे गज-ग्राहक प्राचीन कथारूप चन्ना गाछीक खेल बनैत अछि। शीर्षकमे गजक बल, ग्राहक पकड़ि आ पानिक स्थल—तीन मुख्य तत्त्व अछि; आरम्भिक सूत्र ‘छोड़ौनिहार हाथ सदिखन तेसर’ चौथा तत्त्व जोड़ैत अछि। एहि चौथा तत्त्वमे उपन्यासक विशिष्ट पुनर्रचना अछि। संकटमे फँसल व्यक्तिक संघर्ष, ओकरा जकड़ने तन्त्र आ बीचमे हस्तक्षेप करएबला व्यक्ति वा संस्था—ई संबंध कथा सँ सामाजिक न्यायक प्रश्न दिस जाइत अछि।

बा पुरान पीतल कटोरा, कमला-बलानक कछारक माटि आ पानि लऽ कथा कहैत छली। गजक पैर जलमे पकड़ाइल अछि, ग्राह जलक अनुकूल स्थानमे अछि, झुण्ड सहायता करबामे सफल नहि। बालकसभक लेल ई लोकाख्यान परिचित विद्यालयी चित्र सँ बाहर आबि स्थानीय माटिक अनुभव बनैत अछि। कथावाचक पुरान आख्यान जसक तस उद्धृत नहि करैत; ओकर संकट-रचना आ उद्धारक प्रश्नकेँ आधुनिक समाजक अपराध, श्रम-मृत्यु, डिजिटल ठगी आ न्यायिक मौनक बीच रखैत अछि। एतय अन्तरपाठीयता केवल सजावटी धार्मिक संकेत नहि, कथाक संरचनात्मक साधन अछि।

## गज के, ग्राह के, पानि के?

अनन्या गज, ग्राह आ पानिक गोल बनबैत छली। गोलमे उज्ज्वल, सरयू, नन्द, अनुपस्थित मजदूर, ‘तीस’ आ ‘तीन सय’क संख्या, बैंकखाता, देह, निजता आ श्वास लिखैत छली। ई सब अलग सामाजिक स्थितिक एकही जलक्षेत्रमे उपस्थित करबाक कल्पना अछि। लाभक प्रलोभनक शब्द ‘जीतू’ ग्राहक दाँत बनि सकैत अछि—बत्राक बेटाक स्मरण एहि अर्थक उदाहरण अछि। लोकगीत बलक संग धैर्य, ज्ञान आ सहयोगक आवश्यकता देखबैत अछि।

मुदा हर पीड़ितकेँ गज आ प्रत्येक विरोधी पक्षकेँ ग्राह मानि निश्चित नैतिक विभाग करब कथा-गतिलाई अत्यधिक सरल बना सकैत अछि। कतहु वित्तीय लेनदेनमे दबाव आ जानकारीक सीमा अछि; कतहु न्यायिक प्रक्रिया आ संरचनात्मक हानि; कतहु व्यक्तिगत निर्णय आ सामाजिक संकटक मिश्रण। तीन रूपक-श्रेणी एहि विविधताकेँ प्रश्न उठएबाक लेल उपयोगी छथि, सम्पूर्ण ऐतिहासिक वर्गीकरणक विकल्प नहि।

## बच्चासभक खेल : नामक साँस आ भूमिकाक अस्वीकार

अनन्या गज बनैत छली आ हरिहरनक पोती ग्राह। सरयू, उज्ज्वल, नन्द आरुणिक नाम कहिते पकड़ि ढीला होइत अछि। पोती ग्राह बनल रहबाक अस्वीकार करैत छली। एहि क्षण आन नैतिक संभावना खुलैत अछि : खेलक भूमिका जन्म वा परिवारक आधारपर तय नहि रहबाक चाही। नेनी अपना हाथसँ पकड़ि छोड़ैत छली; कियो ओकरा अपराधीक उत्तराधिकार स्वीकार करबाक आदेश नहि दैत।

दोसर खेलमे पोती गज बनैत छली, बत्राक बेटा ग्राह। ‘प्रक्रिया’ आ ‘कानून’ कहिते पकड़ि कसैत अछि, मुदा सरयू सन नाम स्मरण करबाक संकेत पाबि पोती अपन घरक मृत पएरपर ठाढ़ होएबाक चित्रक अर्थ बजैत छली। नामक शाब्दिक उच्चारण नहि भेलो कथाक लोकजगत सत्यक बोधद्वारा पकड़ि ढीला होइत देखबैत अछि। एहि विरोधाभाससँ कथा अपन पहिनुक नियम—केवल सही नाम उच्चारित करब—कठोर रूपेँ नहि अपनबैत। अर्थपूर्ण अनुभव, स्वीकार आ सामाजिक सम्बन्ध सेहो नैतिक क्रियाक अंश बनैत अछि।

## आर्यनक अपन नाम कहबेँ

चन्द्रपालक बेटा पछिला अध्यायसभमे नामविहीन 'बेटा' रूपमे उपस्थित छल; एतय ओ 'आर्यन' कहि अपन पहिचान देइत अछि। खेलमे मेइ-लता ओकर पएर पकड़ैत छली, आ ओ प्रतिशत, संकेत आ कमीशन कहि छूटए नहि पबैत। देविका पहिने ओकर अपन नाम कहबाक आग्रह करैत छली, तकर बाद ओ उज्ज्वल झाक नाम बजैत अछि। ई दृश्य पीड़ितक नामपूर्व अपन परिचय स्वीकारबाक आ स्वयंकेँ कुल-मात्रसँ अलग चिन्हबाक दुहरी क्रिया देखबैत अछि।

मेइ-लता लाउक परिवारमे पोसाएल आ भारतीय आया द्वारा 'लता' पुकारल गेल युवतीक रूपमे आबैत छली। अध्याय ४६मे लाउक नातिन आ अध्याय ४४मे पुत्रक उपस्थिति छल। ई पात्रसभ अलग होएब सम्भव अछि; मूल स्रोत स्वयं मेइ-लताक पारिवारिक सम्बन्धकेँ अलग बतबैत अछि। ताहि लेल मेइ-लता केँ लाउक जैविक नातिन मानि जोड़ि देब गलत होयत। मूल पात्र-पञ्जीमे एहि सम्बन्धक अलग पहचान बनाओल आवश्यक अछि।

## सत्यव्रत मेहता : उद्धारक नहि, सुननिहार

दूर दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता गज-ग्राह आख्यान पढ़ैत छथि। हुनकर आत्मप्रश्न ई अछि जे गज जँ पुकारि नहि सकल तँ उद्धारक कथा की अर्थ राखैत अछि। मजदूरक आवाज पानिमे भरल, उज्ज्वलक आवाज डिजिटल डरमे अटकल, मीराक निजी जीवन सार्वजनिक धमकीक चापमे दबायल—एहि घटनासभकेँ लोकक आवाज न सुनेबाक तन्त्रक विभिन्न रूपमे पढ़ल गेल अछि। सत्यव्रत स्वयं केँ देवता, सरकारक सर्वशक्तिमान उद्धारक वा निरपेक्ष न्यायपुरुष मानि नहि उपस्थित करए चाहैत छथि। ओ कान लऽ कऽ सुनबाक संकल्प करैत छथि।

ओ अपन पहिनुक मौनक उल्लेखवला स्वीकार-पत्र लिखैत छथि, मुदा तत्काल हस्ताक्षर नहि करैत। कागजक शीघ्र स्वीकारोक्ति स्वयं केँ हलुक करबाक नब विधि बनि सकैत अछि—एहि आशंका केँ पाठ महत्त्व दैत अछि। वास्तविक उत्तरदायित्व लेल सुनवाई, मूल अभिलेखक सत्यापन, वैधानिक उत्तरदायित्व, पीड़ितक अधिकार आ उचित निर्णयक प्रक्रिया जरूरी अछि। पात्रक निश्चय एहि काजक सम्भावना खोलैत अछि, ओकर स्वतः पूर्ति नहि।

## बा आ बूढ़बा भूतक असहमति

अध्यायक सर्वाधिक विचारोत्तेजक क्षण बा आ बूढ़बा भूतक असहमति अछि। बा नामक पुकारकेँ उद्धारक केन्द्र बनबैत छली; बूढ़बा भूत कहैत छथि जे ग्राह अपन पकड़िक इतिहास नहि बुझत तँ गज छूटला बादो ओ दोसर पएर पकड़त। ई कथन रचनाक नैतिक दृष्टिकेँ व्यक्तिगत उद्धारसँ संस्थागत कारण-पुनरुत्पादनक प्रश्न धरि

लऽ जाइत अछि। पीड़ितक तत्काल मुक्ति आवश्यक अछि, मुदा तन्त्रक शोषक विधान बरकरार रहला पर नव पीड़ित पैदा भऽ सकैत अछि।

पनिडुब्बीक कथन—ग्राह भूखक कैदी होइतहुँ भूखकेँ धर्म बना देब अपराध अछि—एहि बहसकेँ आओर जटिल करैत अछि। अपराधक सामाजिक उत्पत्ति चिन्हब आ ओकर औचित्य स्वीकार करब अलग काज अछि। अध्याय ३७मे प्रतिपक्षीक आरम्भक जीवनक परीक्षण एतय लोकमिथकीय तर्कसँ जुड़ैत अछि। एहन अन्तरलोक संवाद बाख्तिनक बहुस्वरता सम्बन्धी विचारक दृष्टिसँ सार्थक, कारण एक नैतिक पात्रक कथनकेँ दोसर पात्र संशोधित करैत छथि।

## कलात्मक मूल्याङ्कन

गज-ग्राहक लोकगीत, कटोरामे माटि-पानि, पएरक पकड़ि आ 'नामक साँस' कथानककेँ देहगत क्रिया दैत अछि। एहि अध्यायमे अलौकिक परदाक नियमित चमत्कारक अपेक्षा खेलक नियम, भूमिका बदलनाइ, आर्यनक नाम कहब आ बा-बूढ़बाक असहमति अधिक प्रभावकारी अछि। तथापि नामक उच्चारण मात्रसँ पकड़ि स्वतः ढीला होएब सामाजिक संघर्षक कठिनाइकेँ अत्यधिक सजिलो बनएबाक जोखिम रखैत अछि। सत्यव्रतक आगमन एखन केवल भावी संकेत अछि; अगिला अध्याय ओकर श्रवणक वास्तविक परीक्षा लेत।

अध्यायक मूल उपलब्धि पुरान उद्धार-कथाकेँ नव प्रश्नमे बदलब अछि : बचाओल ककरा जाए, सुनत के, आ पकड़ेबाक कारण फेर जन्म नहि ले ताहि लेल की बदलल जाए?

# अध्याय ४८ — पुकार

*श्रवणक अधिकार, सत्यव्रतक यात्रा आ मटमैला कटोराक शिल्प*

## उन्नैसम साँस : सुननाइ स्वयं एक क्रिया

अध्याय ४७मे गज-ग्राहक कथा पुकारक शब्दक खोजपर ठहरल छल। अध्याय ४८ ओहि पुकारकेँ कथाक मध्यस्थल बनैत देखबैत अछि। बूढ़बा भूत कबड्डीक नियम अस्थायी रूपेँ रोकि कहैत छथि जे एखन 'पुकार' सुनबाक अछि। एहि विराममे उपन्यासक गति विशेष अर्थ लैत अछि। खेल, दण्ड, अलौकिक आदेश वा नामक अनिवार्य उच्चारणक बदला धैर्य, चुप्पी आ ध्यान केन्द्रमे अबैत अछि।

अनन्या खाली कटोरा रखैत छली। ओकर कथन अछि जे भरल कटोरामे पुकार अपन चेहरा मात्र देखत, खाली कटोरा आवाजक घर बनैत अछि। ई भारतीय दार्शनिक शून्यता अथवा निष्क्रिय उदासीनताक सामान्य रूपक नहि; विशिष्ट प्रसंगमे पूर्वनिर्धारित उत्तर टारि ककरो पूरा कथन सुनबाक तैयारी अछि। न्यायिक सुनवाईमे सेहो बयान देनिहार व्यक्ति कैँ बिना बाधा कहबाक अवसर चाही, मुदा निष्पक्ष श्रवणक अर्थ प्रमाणक प्रश्न छोड़ि देब नहि।

## सरयू, उज्ज्वल आ मुन्नाक तीन भिन्न पुकार

पहिल पुकार सरयूक अछि—स्त्री-मजदूर, जकर नाम सरकारी पञ्जीमे अधूर वा गलत लिखाएल छल। ओ नामक त्रुटिक संग मृत्यु, श्रम आ परिजनक अधिकारक सम्बन्ध देखबैत छली। एहिठाम नामक गरिमा केवल सही वर्तनी नहि; दस्तावेजी

दर्जामे व्यक्तिक वास्तविक उपस्थितिक प्रश्न अछि। मुदा अध्याय ४०–४१मे 'सरयू महतो'क बेटी कमली द्वारा पिताक स्मरण आ अध्याय ३८मे सरयू महतोक भिन्न लिंग-विवरण देखाओल गेल अछि। ई पहिचानक सम्बन्ध अब अधिक जटिल भेल। वर्तमान आलोचना एकरा निश्चित रूपेँ एक व्यक्ति मानि पूरा कथा घड़ैत नहि; मूल पात्र-पञ्जी, घटनाकाल आ पूर्ववर्ती नामरूपक जाँच शेष रखैत अछि।

उज्ज्वलक पुकार बन्द मोबाइलक परदासँ प्रकट होइत अछि। देविका फाटल फोन धरतीपर राखि अपन भाइकेँ वित्तीय हारक संख्यामात्र नहि, घरक भोरक भाग मानैत छली। ओ निजी शोककेँ लोकशिक्षाक काजमे बदलि चुकली। करुण रस एतय नोरक नाटकीय प्रदर्शनसँ बेसी दृढ़ सामाजिक कर्ममे उपस्थित अछि। तथापि मोबाइलक अलौकिक संदेश वास्तविक मृतकक प्रमाणित वक्तव्य नहि, उपन्यासक स्मृति-शिल्पक भाग अछि।

तेसर पुकार मुन्ना पासवानक अछि, जे जीवित छथि। बैंकमे लाभार्थी, पुलिसक कागजमे संदिग्ध, गाममे बदनाम आ घरमे भयग्रस्त पुत्र—एहि वर्गीकरणसभक बीच ओकर अलग आवाज अछि। ओ स्वीकार करैत अछि जे कमीशनक आशामे खाता खोलने छल। एहि स्वीकारोक्ति सँ विवशता आ स्वेच्छा, जानकारी आ अज्ञान तथा बादक नियंत्रणक प्रश्न जटिल बनैत अछि। बा काजक समझ-बूझ आ अनजाने फँसबाक अनुभव बीच भेद स्थापित करैत छली। दुनू स्तरक उचित अनुसन्धान जरूरी अछि; पीड़ितक करुण स्थिति स्वीकार करब तथ्यगत जिम्मेवारीक जाँचक विरुद्ध नहि।

## सत्यव्रत मेहताक कानक यात्र ।

सत्यव्रत दिल्लीक सरकारी आवासमे पुरान 'नाम-सूचीक सत्यापन आवश्यक' लिखल कागज देखैत छथि। ओतय 'सत्यापन नहि, श्रवण'क अक्षर उभरैत अछि। एहि दृश्यकेँ सोझ रूपमे सत्यापनक अस्वीकार नहि पढ़ल जाए। पात्रक पूर्व प्रवृत्ति केवल कागजक शब्द पढ़ब छल; नब अनुभव पीड़ितक स्वर सुनबाक आवश्यकता सामने अनैत अछि। पूर्ण न्यायमे श्रवण आ सत्यापन दुनू पूरक होयबाक चाही।

लम्बा गलियाराक स्वप्नमे स्थगित, मृतक, अनुपस्थित, डिजिटल विवाद, वाणिज्यिक रहस्य, राष्ट्रीय हित, निजता आ अपर्याप्त साक्ष्य सन विभागक अलमारीसभ अछि। प्रत्येक विभाग राज्यक विशेष प्रयोजनक द्योतक होइतहुँ मनुष्यक आवाज अनसुना रहबाक खतरा सेहो रखैत अछि। नेनी कानक बाहरी आ भीतरी अर्थ पूछैत छली। पात्र जागि कपड़ा, कापी, स्याहीकलम आ पुरान शपथपत्र नेने स्टेशनक रस्ता पकड़ैत छथि।

एहि यात्राक खास कलात्मक उपलब्धि पैदल शुरू करबाक निर्णय अछि। पात्र उच्च पदक औपचारिक वाहन नहि मँगैत; सामान्य रेलडिब्बामे युवक, माय, मजदूर आ मुकदमाबाज वृद्धक संग यात्रा करैत छथि। ई दृश्य राज्यक प्रतीकात्मक दृष्टिसँ लोकक प्रत्यक्ष जीवन दिस गतिक रूप देइत अछि। मुदा साझा रेलयात्रा मात्रसँ न्यायिक परिवर्तन सिद्ध नहि होइत। गाम पहुँचि के सुनत, के बोलत, अभिलेख कोना रखल जाएत—अगिला कार्य अधिक कठिन अछि।

## नामक पूरा स्वरूप आ सुनबाक सहमति

सत्यव्रत चन्ना गाछी पहुँचि ताली, मंच अथवा प्रणाम प्राप्त नहि करैत छथि। खाली कटोराक समक्ष ओ पहिने अपन देर सँ आएबाक बात कहैत छथि आ तत्पश्चात् जे बोलए चाहथि हुनका बोलबाक, जे चुप रहए चाहथि हुनका चुप रहबाक अधिकार मानैत छथि। एहि कथनमे अध्याय २१क निजता-शपथसँ विकसित एक महत्त्वपूर्ण मर्यादा अछि : सार्वजनिक अभिलेखक उत्साह व्यक्तिक मौनक अधिकार नष्ट नहि करय।

खाली कटोराक तलसँ मटमैला पानि उगैत अछि, मुदा ओहि पानिमे आकाश साफ देखाइत अछि। विरोधाभासी बिम्ब कथाक प्रमुख सौन्दर्यात्मक उपलब्धि अछि। मटमैला पानि समाजक जटिल, अधूर आ संघर्षपूर्ण स्मृतिक संकेत होएबाक संग नैतिक दृष्टिक स्पष्टताक सम्भावना सेहो बनैत अछि। पात 'सरयू' बजैत अछि; सत्यव्रत पूरा नाम पूछैत छथि, आ उत्तरमे घर, श्रम, बच्चाक प्रतीक्षा तथा प्रतिकरक असत्यक प्रश्न उठैत अछि। ओ कापीमे 'नामक पूरा स्वरूप' लिखैत छथि। नामक परिभाषा प्रशासनिक प्रविष्टिसँ सामाजिक जीवनी धरि विस्तृत होइत अछि।

## मौनक अपराध आ क्षमाक सीमा

पुकार सुनैत सत्यव्रत अपन पहिनुक मौनक स्मरण करैत छथि। ओ तत्काल क्षमायाचनासँ सावधान छथि, कारण क्षमा माँगब स्वयं कैं हलुक करबाक नब चातुर्य बनि सकैत अछि। ओ अपन मौन सेहो अभिलेखमे जोड़ए कहैत छथि। एहि स्वीकृति सँ उपन्यास प्रतिपक्षीक दण्डक बाहर सरकारी संस्थाक आत्मपरीक्षाक कठिन प्रश्न

उठबैत अछि। मुदा एक पदाधिकारीक मौनक विधिक दोष सिद्ध करबाक लेल ओकर वास्तविक कर्तव्य, जानकारी, निर्णयाधिकार आ कार्यक परिणामक स्वतंत्र परीक्षण चाही।

अध्याय सत्यव्रतक नोरक बदला ओकरा सुननिहारक कार्यद्वारा परखैत अछि। ओ कापी खुलल छोड़ैत छथि, अन्य लोक पेन पकड़ैत छथि, आ अनन्या, देविका, मुन्ना, हरिहरनक पोती, चन्द्रपालक बेटा नाम लिखबाक कार्यमे सहभागी बनैत छथि। एहि सहभागितासँ समुदाय एक नायकक एकाधिकारक बाहर आबैत अछि।

## समग्र मूल्याङ्कन

‘पुकारकेँ कान’ लोकगीत श्रवणक धैर्यकेँ सेवा रूपमे देखबैत अछि। खाली कटोरा, पुरान शपथपत्र, सामान्य रेलडिब्बा, मटमैला पानि आ खुलल नोटबुक कथाक प्रौढ़ प्रतीक छथि। न्यायशास्त्रक भाषा विरुद्ध लोकभाषाक बहस एतय 'धारा नहि, श्रवण'क सूत्रमे तीक्ष्ण होइत अछि, मुदा एकरा विधिक प्रक्रिया समाप्त करबाक उद्घोषणा नहि मानबाक चाही। पात्रक पदसँ मनुष्यक श्रवणधरि यात्रा नैतिक आरम्भ अछि; आधिकारिक अभिलेख-संशोधन, पीड़ितक इच्छा आ उचित कारवाईक प्रश्न अबो बचल अछि। अध्यायक शक्ति ई अछि जे उद्धारक बनबाक सुगम नाट्यताक बदला सुनबाक दीर्घ, श्रमसाध्य अभ्यास प्रस्तावित करैत अछि।

# अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख

*श्रवणक उधार, आत्मस्वीकृतिक सीमा आ अभिलेखक निजता।*

## बीसम साँस : सुनल आवाजक पछिला काज

अध्याय ४८मे पुकार सुनल गेल छल; अध्याय ४९मे सुनलाक बादक उत्तरदायित्व केना निभाओल जाए, ई प्रश्न उपस्थित होइत अछि। शीर्षकक ‘मौनक अभिलेख’ एक विरोधाभास रचैत अछि। अभिलेख साधारणतः उच्चारित वा लिखल कथन दर्ज करैत अछि; मौन कखनो साक्ष्यक अभाव, कखनो भय, कखनो उपेक्षा, कखनो रणनीतिक अस्वीकारक रूप होइत अछि। लेखक एहि अनेक अर्थकेँ एक प्रश्नमे रखैत छथि : जे सुनबाक समर्थ छल आ चुप रहल, ओकर मौन इतिहासमे कोना चिह्नित होयत?

सत्यव्रत मेहताक कान रातिभरिक नाम सुनि भारी भेल अछि; कटोरा सेहो उठैत नहि। ई भार अध्याय ४२क कन्हापर बैसल सामाजिक जिम्मेवारीक रूपकसँ जुड़ैत अछि। मुदा एहि ठाम भारक स्वरूप भावसंसर्ग मात्र नहि, अभिलेखक कठिन विधान अछि। कोन कथन सार्वजनिक लिखल जाय, ककर जानकारी व्यक्तिसम्मत साझा हो, कोन विवरण अपूर्ण अछि—ई प्रश्न पीड़ितक गरिमासँ अविच्छिन्न रूपमे जुड़ल अछि।

## जलसमाधिक नव अर्थ आ करुण विरोधाभास

आरम्भमे कथावाचक जलसमाधिक अर्थ डूबि मरबाक घटना सँ आगाँ बढ़ाकऽ देहक अन्त आ नामक बन्धन-मुक्ति बीचक पुल मानैत अछि। गज-ग्राहक स्मरणमे गजक पकड़ि, पुकार आ उद्धारक क्रम पुनः उपस्थित अछि। गोहि सभ कैं न देवदूत बनाओल गेल अछि, न साधारण रूपेँ नैतिक न्यायाधीश; ओ सभ प्राकृतिक दाँतक रूपमे कथा-जगतक क्रूरता सँ जुड़ल अछि। एहि रुपकमे देहक विघटन आ नामक मुक्ति संगसंग देखाएब करुण आ अद्भुत रसक मिश्रण बनैत अछि।

मुदा एहन चित्रण पाठक लेल कठिन नैतिक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। हिंसात्मक मृत्यु स्वयं 'मुक्ति'क आवश्यक साधन नहि होइत। वास्तविक मृतकक मृत्युकैं आध्यात्मिक लाभ वा पीड़ाक उचित कीमत कहि सामान्यीकृत करब अमानवीय निष्कर्ष होयत। कथा-जगतक लोकविश्वास आ प्रतीकात्मक विमर्शक अन्तर बाहरी दुर्घटनाक तथ्यसँ स्पष्ट राखब आवश्यक अछि। समीक्षक लेल एहि बिम्बक कलात्मक सामर्थ्य स्वीकार करैत ओकर संभावित रूमान्तीकरण पर प्रश्न उठाएब बराबर जरूरी अछि।

## सत्यव्रत आ ‘मौनक अभिलेख’क जन्म

सत्यव्रत नामसभ लिखि नोटबुक बन्द करए चाहैत छथि, मुदा बूढ़बा भूत कहैत छथि जे मौनक नाम बाकी अछि। बा प्रतिपक्षी, पीड़ित आ दर्शकक अलग-अलग कथा सँ जुड़ल मौनक प्रश्न अनैत छली। सत्यव्रत अपन पहिल नौकरीक एक गरीब लोकक दरखास्तपर लिखल ‘विचारणीय’ शब्द याद करैत छथि। ओ दरखास्तक पछिला

परिणाम हुनका ज्ञात नहि—कदाचित् लोक मरि गेल, कदाचित् घर घुरि गेल। एहि अनिश्चिततक उल्लेख स्रोतगत रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि : कथाकार विभिन्न सम्भावना रखैत छथि, निश्चित परिणाम घोषित नहि करैत।

‘विचारणीय’ सन प्रशासनिक शब्द दायित्वक काम पूरा कएने बिना स्थगनक आवरण बनि सकैत अछि। मुदा सभ स्थगन वा विचाराधीन प्रविष्टि एकसमान अन्याय नहि होइत; कतेको निर्णय विवेकपूर्ण परीक्षणक लेल समय माँगैत अछि। प्रश्न ई अछि जे औपचारिक शब्दक पाछाँ कोन काज वास्तवमे भेल, कोन नहि, आ अधिकारीक कतेक नियन्त्रण छल। सत्यव्रतक आत्मपरीक्षा एहि सम्बन्धक जाँच दिशि इशारा करैत अछि, तथापि कागजक जादुई अक्षर विधिक दोषक स्वत: प्रमाण नहि।

## सरयू, उज्ज्वल, मुन्ना : मौनक भिन्न रूप

सरयूक नामक कात अधिकारी द्वारा पूरा परिचय नहि पूछबाक मौन लिखल जाइत अछि। एहि जगह एक अतिरिक्त सम्पादकीय सावधानी आवश्यक अछि। अध्याय ४८मे सरयू स्त्री-मजदूरक रूपमे पुकारैत छली; अध्याय ४०–४१मे ‘सरयू महतो’ आ ओकर बेटी कमली द्वारा पिताक स्मृति प्रस्तुत अछि; अध्याय ३८मे सरयू महतोक लिंग-सम्बन्धी भिन्न विवरण अछि। भिन्न व्यक्ति होएबाक सम्भावना तथा स्रोतक सम्भावित विरोधाभास दूनू खुलल अछि। ‘मौनक अभिलेख’ बनबैत समय नाम-साम्यकेँ निश्चित पहचान मानि भरल नहि जाए।

उज्ज्वलक नामक कात 'परिवारक मौन' लिखल गेलापर देविका स्वयं अपन अनुभवक चर्चा करैत छली। बा दोष आ मौन एक नहि कहि ओकरा सावधान करैत

छली। ई छोट हस्तक्षेप अध्यायक नैतिक सार्थकता लेल अनिवार्य अछि। शोकग्रस्त परिजन पश्चाताप करि सकैत छथि, मुदा हुनकर पहिनुक असमर्थता वा अपूर्ण जानकारीकेँ दुर्घटना अथवा ठगीक विधिक कारण मानब पीड़ितपर भार थोपबाक अन्यायपूर्ण प्रक्रिया होयत। देविकाक 'बहिनक मौन' स्वयं लिखब आतंरिक स्मृति-अभ्यास अछि; ओ स्वतः अपराधस्वीकृति नहि।

मुन्ना बैंकखाता खोलबाक समय एक कर्मीक द्वारा पहिचानपत्र अनेक बेर देखबाक आ फोनपर गप करबाक स्मृति सुनबैत अछि। ओ पूछैत अछि जे कर्मी वास्तवमे जानैत छल कि नहि। बूढ़बा भूत 'शंका देखलाक बादक मौन'क सूत्र कहैत छथि। एतय अत्यन्त स्पष्ट प्रमाण-भेद चाही : कोनो कर्मीक असामान्य व्यवहार, फोनपर गप अथवा ग्राहकक पछिला स्मृति मात्रसँ जानकार सहभागिता सिद्ध नहि। संस्थागत सतर्कताक नियम, त्यागल गेल संकेत, अधिकारीक अधिकार आ दस्तावेजक रजिस्टर देखब आवश्यक अछि। कथा मौनक सम्भावना उठबैत अछि; आलोचनाकेँ शंकाकेँ निष्कर्ष नहि बनएबाक चाही।

## मौनक समानता नहि : संस्थागत सम्बन्धक कसौटी

अध्यायक सभा विविध लोक केँ एकत्र करैत अछि—बैंकक बाबू, अस्पतालक कम्पाउण्डर, वकीलक मुंशी, शिक्षक, पीड़ित परिवार, प्रतिपक्षीक सन्तान आ सत्यव्रत। सभ अपन-अपन मौनक प्रकार स्मरण करैत छथि। बैंकक कर्मचारी ‘अन्य टिप्पणी’ खाली राखबाक; अस्पतालक कर्मचारी ‘ऊपरसँ आदेश’क पाछाँ वास्तविक व्यक्ति नुकबाक; मुंशी तारीख लिखैत पीड़ितक प्रतीक्षा उपेक्षित करबाक प्रश्न उठबैत अछि।

एहि दृश्यक सामाजिक महत्त्व अछि, मुदा तीनू काजक अधिकार-सीमा समान नहि। कोन कर्मचारी पर कानूनी सूचना देबाक कर्तव्य छल, ककरा नोकरीक भय छल, कोन फाइलक जिम्मेदारी कोन अधिकारीक छल—एहि तथ्य बिना सभ मौनकेँ समान अपराध बनब उचित नहि। ‘केओ पूरा अपराधी नहि, केओ पूरा निर्दोष नहि’क कथात्मक वाक्य नैतिक जटिलताक संकेत भऽ सकैत अछि, मुदा वास्तविक जिम्मेवारीक निष्पक्ष विभाजनक विकल्प नहि। एक अनसुनी पुकारक नैतिक मूल्य आ औपचारिक अपराधक प्रमाण-भार अलग प्रक्रिया माँगैत अछि।

## शिक्षाक सभा आ सार्वजनिक पाठ

मौनक अभिलेखक पाठक अगिला चरणमे आवाज बदलैत अछि। जे लोक सदिखन मंचपर बाजल, ओ सुनैत छथि; जे लोक चुप रहल, ओ नाम पढ़ैत छथि। हरिहरनक पोती दादाक समक्ष पूरा नाम पढ़बाक आग्रह करैत छली, चन्द्रपालक बेटा उज्ज्वलक नाम पढ़बाक जिम्मेदारी लैत अछि। एहिठाम पाठक देखैत छथि जे लेखनक तुलनामे सार्वजनिक पाठक सामाजिक तीव्रता अधिक अछि : कागजमे नाम लिखि सकल जाएत, मुदा सभक उपस्थितिमे ओकर अर्थ बजबाबय कठिन होइत अछि।

तथापि ‘जे नाम लिखल गेल, ओ कखनहु मेटाओल नहि जाएत’क शपथ संवेदनशील अभिलेखक दृष्टीसँ सावधानी चाहैत अछि। निजी अथवा अपमानजनक जानकारीक संरक्षित प्रति अनुसन्धान लेल आवश्यक भऽ सकैत अछि, किन्तु सार्वजनिकीकरण पीड़ितक सहमतिपर निर्भर रहबाक चाही। गलत परिचय सुधरबाक, अयोग्य आरोप हटाबयबाक आ निजता-सुरक्षाक अधिकार सेहो लोकन्यायक अंश अछि। ककरो नामक गलत आरोप एक बेर सार्वजनिक भेला पर ओकर हानि दीर्घकालिक भऽ

सकैत अछि। एहि कारण अध्यायक स्वयं आरम्भिक लोकगीतमे ‘अनुमतिक मसि’ आ ‘ककर कथा कतेक खोलब’क सावधानी विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

## सत्यव्रतक नब भूमिका : पहरेदारी, अधिकार नहि

सत्यव्रत अंतमे उद्धारक होएबाक बदला अभिलेखक पहरेदार बनबाक कल्पना करैत छथि। ओ राज्यक 'मामला समाप्त' आ समाजक 'नाम अपूर्ण' बीच संवादक स्थान बचबए चाहैत छथि। ई भूमिका न्यायालयक प्रत्यक्ष अधिकार आ समुदायक स्मृतिगत पहरेदारी बीच संक्रमण अछि। अधिकारीक व्यक्तिगत विनम्रता पर्याप्त नहि; अभिलेख सुरक्षित राखबाक विधि, प्रमाणक स्रोत, गलत प्रविष्टि सुधारबाक प्रक्रिया आ समयसीमा सहित उचित कार्यवाही सेहो अनिवार्य अछि।

अन्तमे कटोरा उठए लगैत अछि, मुदा हाथ भारी रहैत अछि। ई बिम्ब अध्यायक सटीक सौन्दर्यात्मक निष्कर्ष अछि। स्मृति-बोझ तखने अर्थपूर्ण भऽ सकैत अछि जखन ओ व्यक्तिगत अश्रुसँ सार्वजनिक जिम्मेवारी बनय। हुलासी, मृतकसभ, लोथ आ राकशक लालटेनसम्बद्ध उपस्थिति लोकविश्वासक जगतमे श्रवणकेँ सामुदायिक कर्म बनबैत अछि।

## आलोचनात्मक निष्कर्ष

अध्याय ४९क श्रेष्ठ पक्ष श्रवणक नैतिक अर्थकेँ ‘अनुमति’, ‘सन्दर्भ’, ‘मौनक भिन्न कारण’ आ ‘अगिला काज’सँ जोड़ब अछि। एतय करुणा अलौकिक स्मृतिक संग दस्तावेजी प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। सीमा ई जे सार्वजनिक स्वीकारकेँ कखनो विधिक सुनवाईक जटिल चरणसभक तुलनामे अधिक शीघ्र नैतिक विजय बनाओल

गेल अछि। स्रोतक पहिचानगत त्रुटिक सम्भावना आ एकहि तरहक अलौकिक अक्षरक पुनरावर्तन सेहो शेष अछि। तथापि ओहि ठाम कथा अत्यन्त प्रभावी अछि जतय बा देविकाक मौन आ दोष अलग करैत छली, आ सत्यव्रत खाली कटोराक स्थानपर अपन हाथक भार स्वीकार करैत छथि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ४५–४९

*उत्तराधिकारक चयनसँ पुकार आ मौनक जिम्मेवारी धरि*

## पाँच अध्यायक वैचारिक क्रम

एहि पाँच अध्यायक क्रम एक नव नैतिक-पथ गढ़ैत अछि। ‘भीतरक हवा’ प्रश्न घरक बन्द व्यवस्था खोलैत अछि। ‘उत्तराधिकारक अन्हार’ सम्पत्तिक स्रोत आ चयनक कठिन निर्णय सामने रखैत अछि। ‘गज-ग्राह आख्यान’ पीड़ितक संकट, शोषणक पकड़ि आ उद्धारक तेसर हाथक मिथकीय परीक्षण करैत अछि। ‘पुकार’ सुनबाक अवस्था तैयार करैत अछि आ सत्यव्रत कैँ सार्वजनिक मंचक बाहरी उद्धारक स्थानसँ लोकक बीचक श्रोता बनबैत अछि। ‘मौनक अभिलेख’ सुनल आवाजक उत्तरदायित्व लिखबाक सामाजिक कठिनाइ खोलैत अछि। एकर सूत्र ‘प्रश्न → चयन → संकट-पहिचान → श्रवण → अभिलेखीय जिम्मेवारी’ रूपमे देखाओल जा सकैत अछि।

एहि क्रममे पन्द्रहमसँ बीसम साँसक भाषा कथा-समयक इकाई बनैत अछि। सोलहम साँस घरेलू प्रश्न, सत्रहम साँस चयन, अठारहम साँस गज-ग्राहक खेल, उन्नैसम साँस पुकार आ बीसम साँस मौनक अभिलेख सम्हारैत अछि। अध्यायसभमे साँसक क्रम लगातार राखबाक प्रयास मूल घटनागत निरन्तरता मजबूत करैत अछि। मुदा एकहि साँसमे दूरदेशक परिवार, गामक मैदान, न्यायिक आवास आ अलौकिक मानसक दृश्यसङ्क्रमण कथा-कालक अस्थिरता उत्पन्न करैत अछि; आन्तरिक क्रम केहन अछि, से पाठकक विवेकसँ पुनः बनबैत पड़ैत अछि।

## उत्तराधिकार : जन्मसँ अलग निर्णयक शक्ति

बटुकनाथक पोती, चन्द्रपालक बेटा, राघवक बेटी, लाउक पुत्र-नातिन तथा ब्रूमक नातिन अलग-अलग रूपमे उत्तराधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। कोनो व्यक्ति माता-पिताक अपराधमे जन्म-मात्रसँ साझीदार नहि; तहिना प्राप्त सम्पत्तिक स्रोतबारे जानकारीक अवसर पाबि ओकरा अनसुना करब नैतिक निर्णयक विषय बनि सकैत अछि। अध्याय ४५–४६ सन्तानकेँ पितृऋणक दोषसिद्ध बंधुआ नहि, अपन भविष्यक चयन करएबला स्वतन्त्र व्यक्ति बनबैत अछि।

एहि सामाजिक रूपकक सीमा सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। नाबालिगक सुरक्षित भविष्य, शिक्षाक अधिकार, आश्रित परिवारक हक आ सम्पत्तिक विधिक स्थिति एक सरल 'लाभ त्यागू' कथनसँ निर्धारित नहि होइत। पीड़ितक प्रतिकर आ अवैध लाभक वसूली विधिक प्रक्रियासँ होएबाक चाही; वारिसक भावात्मक नकार अपनामे पर्याप्त नहि। कथा एहि चयनक नैतिक शक्ति देखबैत अछि, पूरा आर्थिक समाधान नहि।

## अन्तरपाठीय गज-ग्राहक पुनर्रचन I

अध्याय ४७ गज-ग्राहक कथा केँ जखनि स्थानीय नदी, गामक माटि आ बच्चासभक खेलमे रखैत अछि, तखन पुरान उद्धारक दैवी संरचना बदलैत अछि। बा गजक पुकार आ नामक बल महत्त्वपूर्ण मानैत छली; बूढ़बा भूत ग्राहक पकड़िक इतिहास बुझबाक आग्रह करैत छथि। ई असहमति अत्यन्त मूल्यवान अछि। अकेल पीड़ितकेँ संकटसँ निकालयब तात्कालिक काज अछि; तकर बाद अन्य व्यक्तिक संकट रोकबाक लेल तन्त्रक कारण बदलनाइ आवश्यक अछि।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ ई मिथकीय अन्तर्पाठ पात्रक समाजशास्त्रीय संघर्षक संक्षिप्त मानचित्र दैत अछि। मुदा गज, ग्राह आ उद्धारक तेसर हाथक रूपक सम्पूर्ण सामाजिक गतिशीलताक अपरिवर्तनीय नकाशा नहि। मुन्ना सन खाताधारकक परिस्थिति, वित्तीय सहयोगक विभिन्न तह आ सरकारी अधिकारीक भूमिकामे नैतिक सम्बन्ध कतेको मिश्रित छथि। कथा एहि अन्तरसभकेँ पूर्ण समाधान नहि दैत; ओ तकर प्रश्न पूछबाक सामर्थ्य विकसित करैत अछि।

## अभिलेख : नामक रूप, वस्तुक रस्ता आ मौनक स्रोत

अध्याय ४०–४४मे नामक वस्तु, रस्ता आ भारक अध्ययन भेल छल। नव बैच एहि अगिला स्तरपर अछि : ककर सम्पत्तिक स्रोत, ककर आवाज दबायल, ककर सुनबाक क्षमता छल, ककर मौनक कारण की छल। अनन्याक कापी, राघवक बेटीक चुप्पीक नोंद, सत्यव्रतक पुरान शपथपत्र, बैंकक अन्य-टिप्पणी आ मौनक नब कापी—ई सभ अभिलेखक विभिन्न रूप बनैत अछि।

नव्य न्यायपरक प्रमाण-परीक्षण एतय सभसँ जरूरी अछि। कथाक भीजल पात, स्वतः बदलैत अक्षर आ भूतक वाणी साहित्यिक स्तरक सत्य छथि। दस्तावेजी इतिहासमे कोन बात प्रत्यक्ष रूपसँ ज्ञात, कोन विश्वसनीय कागजसँ समर्थित, कोन साक्षीक बयान, कोन अनुमान आ कोन अस्पष्ट—तकर वर्गीकरण चाही। मौन सेहो कोनो स्थिर अपराध-प्रविष्टि नहि : जानकारीक अभाव, भय, संस्थागत सीमा, निजता-रक्षा, कर्तव्यभंग आ जानकार सहयोग परस्पर भिन्न स्थिति छथि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक विधिक अनुरूप लोकस्मृति, राज्य-अभिलेख, परिवारक जीवन-वृत्त, आर्थिक कागज आ गीतक आवाज अलग-अलग तहमे रखल

जा सकैत अछि। मुदा स्रोतसभक अभिप्राय आ प्रमाण-मूल्य समान नहि। सरयू देवी/सरयू महतोक नाम, लिंग आ पारिवारिक सम्बन्धक सम्भावित असंगति तथा राघवक घरेलू घटनाक क्रम प्रामाणिक मिलानक प्रतीक्षामे रहबाक चाही।

## पीड़ितक निजता आ मौनक अधिकार

मीरा पहिनेसँ निजताक शपथक केन्द्रमे छली; नव बैच सत्यव्रतक सुनब सँ इन्कार करएबला व्यक्ति कैं सेहो चुप रहबाक अधिकार देबाक कथनसँ एहि विचारकैं विस्तार दैत अछि। पीड़ितक कथन लिखलाक बाद ककर समक्ष पढ़ल जाय, ककर सहमति सँ प्रकाशित हो, गलती कोना सुधरल जाय—ई प्रश्न साहित्यक नैतिक शक्ति घटबैत नहि, ओकरा अधिक उत्तरदायी बनबैत अछि। विशेषतः डिजिटल ब्लैकमेल, दबावमे खाता खोलब आ मृत्यु-पंजीक त्रुटिक प्रसंगमे गोपनीयता स्वयं न्यायसङ्गत शर्त अछि।

देविकाक आत्मदोष आ बैंक-कर्मीक शंकाक प्रसंग अध्याय ४९क आलोचनात्मक कसौटी अछि। देविकाक पछतावा अपराध-निर्णय नहि; बैंकक अजीब व्यवहार जानकार मिलीभगतक पर्याप्त प्रमाण नहि। एहन भेद सुरक्षित राखब आवश्यक अछि, कारण सहानुभूतिक नामपर दोषक अनुचित बाँट सेहो नव अन्याय उत्पन्न करि सकैत अछि।

## रस, लोकगीत आ नैतिक घोषणाक सीमा

सोलहम साँसक आँगन-पराती, सत्रहमक उत्तराधिकार-मंगल, अठारहमक गज-ग्राह लोकधुन, उन्नैसमक करुण पुकार आ बीसम साँसक मौन-बही गीत क्रमिक

सांगीतिक व्यवस्था गढ़ैत अछि। परिवारक बन्द हवा सँ लोक-आख्यानक जल, तकर बाद खाली कटोराक मटमैला पानि आ कापीक स्याही—ई वस्तु-बिम्ब एक साझा अनुभव जगबैत अछि। करुण, अद्भुत आ शान्त अनुभवक मिश्रण विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

तथापि उपन्यास अनेक बेर नैतिक निष्कर्ष बहुत स्पष्ट घोषणाक रूपमे कहैत अछि, आ पाँचू प्रतिपक्षीक मानसिक संकट लगभग एकहि दैवी नियमपर घुरैत अछि। कथा एखन ओहि ठाम अधिक प्रौढ़ अछि जतय पात्रसभ असहमत छथि : बा आ बूढ़बा भूतक भिन्न दृष्टि, सत्यव्रतक हस्ताक्षर टारब, देविकाक दोष-सन्देह पर बाक सावधानी आ आर्यनक अपन नामक कठिन उच्चारण। एहि असहमति आ संकोचक विस्तारसँ रचनाक बहुस्वरता बढ़ि सकैत अछि।

## समेकित मूल्याङ्कन

अध्याय ४५–४९ समूची त्रयीक नैतिक विचारकेँ एक नब धुरी दैत अछि। मृत्यु आ आर्थिक अपराधक कथा केवल पीड़ितक नाम पुनः उच्चारण करएबला जुलूस नहि रहैत; ओ आर्थिक उत्तराधिकारक स्रोत जाँचबाक, पुरान मिथकक अर्थ नब सामाजिक संघर्षमे खोजबाक, पीड़ितक स्वर धैर्यसँ सुनबाक आ अभिलेखीय जिम्मेवारी निभाबयबाक कठिन प्रश्न बनैत अछि। एहि पाँच अध्यायक सर्वाधिक सघन बिम्ब चारि छथि—नेनीक कापी, लाभ त्यागबाक खाली कागज, गजक फँसल पएर आ मौनसँ भारी भेल कटोरा।

अन्तिम सूत्र ई नहि जे लिखित मौन सभ दोषसिद्ध करैत अछि। बल्कि जे व्यक्तिक स्वर सुनल गेल, तकर सन्दर्भ, अनुमति, विश्वसनीयता आ आवश्यक काजक दायित्व

उत्पन्न भेल। न्याय भावुक स्वीकृतिक अन्तिम क्षण नहि, अपूर्ण साक्ष्य सँ सजग सामाजिक क्रिया धरि चलैत रहबाक अभ्यास अछि। एहि बिन्दुपर नव बैच अन्त होइत अछि, मुदा मौनक अभिलेख आगाँक यात्राक नाम-पाठ लेल खुलल रहैत अछि।

# अध्याय ५० — देहक बादक नाम

## नाम, देह आ स्थल : प्रतीकक नव सम्बन्ध

अध्याय ४९मे मौनकेँ अभिलेख बनएबाक प्रश्न उठल छल; अध्याय ५० ओहि प्रश्नकेँ अभिलेखसँ आगाँ, नामक भौतिक आश्रय धरि लऽ जाइत अछि। चन्ना गाछीक आरम्भिक दृश्य विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि : आकाश साफ अछि, मुदा सभकेँ पएर भीजल बुझाइत अछि। एहि असम्भव अनुभूतिमे कथा-पात्रक अपराधबोध, नदीमे विलीन देह आ मिटाओल गेल नामक स्मृति एकसाथ सक्रिय अछि। पानिक प्रत्यक्ष उपस्थिति नहि, तथापि ओकर स्पर्श अनुभव होइत अछि। ई विरोधाभास कथाक प्रमुख ध्वनि अछि—अनुपस्थित मृतकक स्मृति जीवित लोकक दैनिक अनुभूतिसँ अलग नहि कएल जा सकैत अछि।

सत्यव्रत मेहता गाछीक बाहर ठाढ़ छथि। हुनका रोकनिहार केओ नहि, तथापि ओ भीतर नहि जाइत छथि। एहि सूक्ष्म दृश्यसँ लेखक संस्थागत अधिकार आ व्यक्तिगत नैतिक तैयारीक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। अदालतमे बोलबाक अभ्यास रखने व्यक्ति चन्ना गाछीमे पहिने अपन देहक आवाज सुनबाक दायित्वसँ जूझैत छथि।

कथावाचकक देह-अनुभूति सम्बन्धी अनुच्छेद—धड़कन, श्वास, पएरक धरतीसँ सम्पर्क—न्यायिक कागचक अमूर्त भाषाकेँ मूर्त मानवीय स्थितिमे उतारैत अछि। एतय दोषसिद्धि नहि, सुनबाक योग्यता स्वयं समीक्षाक विषय अछि।

## अक्षरक पोखरि आ लोकमिथकक पुनर्पाठ

गाछीक भीतर अचानक बनल पोखरिमे चान नहि, अक्षर तैरैत अछि। टूटल अक्षरक नाममे जुड़ब, देहक छिन्न-भिन्न होएबाक हिंसात्मक स्मृतिसँ भाषा द्वारा गरिमा फेर पएबाक रचनात्मक प्रयत्न अछि। सरयू देवी, बुधन मियाँ, जगेसर पासवान, उज्ज्वल झा आ आन नाम न्यायिक फाइलमे केवल प्रविष्टि नहि रहि, परिवार आ श्रमक

इतिहासक जीवित सम्बोधन बनैत अछि। तथापि सरयू देवीं नामकेँ पछिला अध्यायसभक ‘सरयू महतो’क संग निश्चित एकहि व्यक्ति मानब सम्भव नहि; कथाक पात्र-पञ्जीक ई खुलल प्रश्न समीक्षा मे सुरक्षित रहबाक चाही। अनन्याक प्रश्न—सत्यव्रतक नाम सेहो लिखायल जाएत कि नहि—मृतक-सूचीकेँ उत्तरदायी जीवित लोकक पञ्जीमे विस्तार दैत अछि। सत्यव्रत अपन नामक संग ‘मौन’ कहैत छथि। ई आत्मस्वीकृति महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ कथा एहि ठाम अपराधक दायित्वकेँ जन्म, पद अथवा रक्त-सम्बन्धक आधारपर नहि, निश्चित समयपर कएल अथवा टारल काजक आधारपर विचारैत अछि। नन्दक फाइल, मजदूरक सूची, उज्ज्वलक मामला आ गोप कुमारक तथ्यक प्रतीक्षा—ई चारि स्मरण कथामे संस्थागत विलम्बक नैतिक अर्थ खोलैत अछि। मुदा ‘प्रतीक्षा’क प्रत्येक घटना अनिवार्यतः अपराध प्रमाणित करैत अछि, एहन निष्कर्ष मूल पाठ नहि दैत अछि; एतय आलोचना नैतिक शिथिलता आ विधिक प्रमाणक कसौटी अलग राखैत अछि। गज-ग्राह आख्यानक दृश्य अध्याय ४७क लोकमिथकीय प्रश्नकेँ सत्यव्रतक भीतर लऽ अबैत अछि। ग्राह केवल बाहरी शिकारी नहि; लोभ, पद, पारिवारिक मान आ सुविधाजनक इतिहासक सम्मिलित पकड़ि सेहो अछि। जखन नाम सभ गजक देहपर पड़ैत अछि, तखन बेड़ी टूटबाक दृश्य एक सामूहिक मुक्ति-काव्य बनैत अछि। मुदा गज मुक्त भेल कि मरल—कथावाचक ओकर अन्तिम निर्णय टारि दैत छथि। एहि अनिर्णीत अवस्थामे अद्भुत रस करुण अनुभवक संग जुड़ैत अछि। जलसमाधि नामक शीर्षक भयक एकार्थी चित्र नहि रहि, देहक नाश, स्मृतिक बन्धन आ नैतिक छुटकाराक विरोधाभासी रूपक बनैत अछि।

## छाह, पर्दा, पात : कथानकक बहुस्वर

बटुकनाथ हरिहरनक छाह अधिकार-क्षेत्र पूछैत अछि; चन्द्रपाल बत्राक डिजिटल परदा अपन आँकड़ा मेटाबए चाहैत अछि; राघवक मेटाएबला सन्देश आ लाउ किन-हंगक समुद्री स्वप्न स्मृतिक प्रसार दर्शबैत अछि। एहि दृश्यसभमे स्थानीय चन्ना

गाछी आ दूरस्थ आर्थिक-जाल एकहि काल्पनिक स्थलमे भेटैत अछि। कथाक भिन्न माध्यम—न्यायिक आदेश, मोबाइल परदा, मृतकक नाम आ पात—सत्ताक भिन्न भाषा बनैत अछि। तथापि ई सभ दृश्य साहित्यिक अन्तःकरणक नाट्य छथि, वास्तविक अभियोगक स्वतंत्र पुष्टिकरण नहि। प्रतिपक्षीक स्वप्नक पुनरावृत्ति कथाकेँ प्रभावशाली तऽ बनबैत अछि, मुदा मनोवैज्ञानिक विविधता सीमित करबाक जोखिम सेहो उत्पन्न करैत अछि।

समापनमे सत्यव्रत दिल्ली जाएबाक पहिने गंगा-पुल पहुँचबाक निर्णय करैत छथि, जतय देह खसल छल ओतय नाम लगाओल शेष अछि। कथाक निर्णायक मोड़ एहने ठोस स्थल-परिवर्तनमे अछि : अद्भुत पोखरिक नामकेँ भौतिक धरतीपर ठाम चाही। अध्यायारम्भक समदाउन-जड़ि गीत आ अन्तक नाम-जड़ि गीत एहि प्रस्थानकेँ सांगीतिक आवृत्ति दैत अछि। स्मृति एतय केवल पाठ नहि; वृक्ष, पट्ट, छाह आ नेनाक भविष्यक प्रश्नमे रूपान्तरित होएबाक प्रस्ताव अछि।

## आलोचनात्मक निष्कर्ष

एहि अध्यायक सर्वाधिक सशक्त उपलब्धि मौनक अभिलेखसँ नामक स्थानिक पुनर्स्थापना धरि यात्रा अछि। सत्यव्रतक पदक भय आ अनन्याक प्रश्न एक-दोसराकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। सीमा ई जे गज-ग्राह, पोखरि, बदलैत अक्षर आ स्वप्नक अनेक चमत्कार मिलि लोकक ठोस सामाजिक प्रयासकेँ कखनो-कखनो पाछाँ धकेलैत अछि। तथापि गंगा-पुल दिस पात्रक प्रस्थान एहि सीमाक सम्यक् प्रतिकार अछि : नामक मुक्ति केवल रूपकमे नहि, सार्वजनिक स्मृति आ प्रमाणक उत्तरदायित्वमे परखल जाएत।

# अध्याय ५१ — साक्षीक भार

## सुननाइसँ गवाही धरि : उत्तरदायित्वक परिवर्तन

पछिला अध्यायमे सत्यव्रत नामक भार अनुभव करैत छथि; अध्याय ५१मे ओ भार उठएबाक प्रविधि प्रश्न बनैत अछि। आरम्भिक लोकगीत साक्षीकेँ एकाकी वीर नहि, भय, थकान आ परिवार रखने मनुष्यक रूपमे चिन्हैत अछि; सुरक्षित घर, सलाह, विश्राम आ सामूहिक रक्षा ओकर आवश्यकताक हिस्सा छथि। ई प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ मुख्य कथा-भागमे सत्यव्रतक आत्मस्वीकृति बहुत प्रभावी होइतहुँ गवाहीसँ जुड़ल दीर्घकालिक जोखिमक संस्थागत समाधान विस्तारसँ देखाओल नहि गेल अछि। गीत कथाक अपूर्ण सामाजिक पक्ष उद्घाटित करैत अछि, केवल भाववृद्धि नहि करैत।

चन्ना गाछीमे कबड्डी बन्द अछि। पीपरक ब्रह्मा, बूढ़बा भूत, लोथ, पनिडुब्बी आ डाइन सभक भिन्न देह-मुद्रा न्यायिक दृश्यकेँ लोकक अलौकिक मंच पर रखैत अछि। सत्यव्रतक हाथक मोहरयुक्त कागच दिनमे शासनक भार, रातिमे आत्मस्वीकृतिक भार बनैत अछि। बूढ़बा भूत ‘लेखा’ आ ‘भार’क भेद करैत छथि : पहिलमे जोड़-घटाउ सम्भव, दोसरमे सुनल बातक उत्तरदायित्व सहज मेटायल नहि जा सकैत अछि। एतय आधिकारिक दस्तावेजक उपयोगिताकेँ सम्पूर्ण नकारल नहि गेल अछि; ओकर स्नेहहीन उपयोगक आलोचना कएल गेल अछि।

## गोहि आ मुक्ति : नैतिक असुविधाक रचना

बूढ़ गोहिक कथन पनिडुब्बी अनुवाद करैत छली। गोहि देह खाएबाक हिंसात्मक सत्य स्वीकारैत अछि, मुदा देहक कैदसँ नाम अलग होएबाक सम्भावना सेहो उपस्थित करैत अछि। एहि विरोधाभाससँ उपन्यास अपन शीर्षकक एक नव अर्थ खोजैत अछि। गज-ग्राह कथाक ग्राहक नैतिक रूपान्तरण गोहिमे अनायास निर्दोषता

नहि जोड़ैत; बूढ़बा भूत स्वयं स्पष्ट करैत छथि जे मुक्ति अपराधक क्षमा नहि। एहि विभाजनकेँ सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। रूपकक भीतर देह-भक्षणकेँ मुक्तिदान मानब एक काव्यात्मक प्रस्ताव अछि; वास्तविक पीड़ाक इतिहासमे एकरा हिंसाक औचित्य नहि मानल जा सकैत अछि।

सत्यव्रत जे कागच फाड़ब चाहैत छथि, ओकरा फाड़ैत नहि, माटि पर पसारैत छथि। ‘मामला निस्तारित’, ‘अभिलेख अनुपलब्ध’, ‘प्रमाण अपर्याप्त’ आ ‘समय व्यतीत’ सन पदबंध चन्ना गाछीक हवामे नव शब्दक अर्थ ग्रहण करैत अछि। ई भाषिक वक्रोक्ति प्रशासकीय निष्कर्षक पाछाँ छूटल जीवन देखबैत अछि। मुदा प्रमाण-अपर्याप्ततिाक न्यायसंगत निर्णय स्वयं अनिवार्यतः अन्याय नहि; अन्याय तखन होइत अछि जखन जाँचक अभाव, उपेक्षा अथवा स्वार्थक कारण वास्तविक साक्ष्य प्राप्तिक अवसर विनष्ट कएल जाए। कथा एहि सूक्ष्म भेदकेँ अधिक विस्तार दैत तँ विधिक आलोचना आ सशक्त होइत।

## अनन्या, साक्षी-पत्र आ सामूहिक शिक्षा

अनन्याक प्रश्न—‘साक्षी की करैत अछि?’—एहि अध्यायक विचारात्मक केन्द्र अछि। सत्यव्रत उत्तरमे दृष्टि बेचबाक अस्वीकार आ बिकि चुकल दृष्टिक ऋण घुराएबाक कठिनता कहैत छथि। अपन पदनामक पट्टी माटिमे राखब आ ओकर उलटल सादा भागपर लिखब, प्रभुत्वसँ उत्तरदायी व्यक्तित्वमे रूपान्तरणक दृश्यात्मक विधान अछि। बच्चासभक घेरामे सत्यव्रत अपन पहिल साक्षी-पत्र रचैत छथि। पहिल पंक्तिमे ओ स्वीकारैत छथि जे नाम पुकारल जाइत छल आ ओ प्रक्रिया सुनैत रहलाह। ‘स्वीकार पर ताली नहि’क शान्त दृश्य पूर्व अध्यायक अलौकिक घोषणाक तुलनामे अधिक संयमित आ कलात्मक रूपसँ सफल अछि।

तथापि साक्षी-पत्र अदालतमे जाएबाक पहिने बच्चासभ पढ़त—ई निर्णय शिक्षा-दृष्टिसँ अर्थपूर्ण होइतहुँ न्यायिक आ निजतासम्बन्धी कसौटी पर प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। गोपनीय पीड़ित-सूचना, असत्यापित अभियोग आ बच्चासभक सम्भावित

आघातक सीमा के तय करत? मीरा पीड़ितक निजता तथा देविका भविष्यक डिजिटल शोषण रोकबाक प्रश्न लऽ अबैत छथि। सौम्याक संख्या-केन्द्रित अभिलेख नाम दिस घुरैत अछि; ईरा अपन परदेशी उच्चारणमे गामक नाम सीखैत छली। एहि बहुस्वरमे गवाहीक मूल्य व्यक्ति-विशेषक पश्चात्तापसँ बढ़ि सामूहिक अभ्यास बनैत अछि, मुदा औपचारिक सुरक्षित अभिलेखनक आवश्यकता समाप्त नहि होइत अछि।

## रचनात्मक मूल्य आ सीमा

पदनाम माटिमे राखलाक बाद नारिकेल अंकुर फुटबाक अन्तिम दृश्य प्रायश्चित्तक अतीन्द्रिय परिणाम देखबैत अछि। आरम्भ आ अन्तक गीतमे छातीक भार आ सामूहिक रक्षा दोसर धुरी गढ़ैत अछि। एकर संग सामाजिक योजना—साक्षीक सुरक्षा, सहमति, जाँच, न्यायालय धरि उचित पहुँच—अध्यायक महत्त्वपूर्ण अपूर्ण सम्भावना अछि। कथामे अनेक प्रतिपक्षी अपन भयावह स्वप्न अथवा विकृत परदामे देखाइत छथि; सभक आन्तरिक संकट लगभग एकहि प्रतीक-विधानमे रहि जाएबाक खतरा अछि। सर्वोत्तम अंश ओहि ठाम अछि जतय सत्यव्रत सार्वजनिक प्रशंसा नहि, सुनल बातक अगिला काज स्वीकारैत छथि।

# अध्याय ५२ — अगिला आवाज

## सुनबाक स्थलसँ सार्वजनिक चौपाल धरि

अध्याय ५२क आरम्भ पहिनुक कथा-यात्राकेँ अन्त सन प्रस्तुत कऽ तुरन्त नव आरम्भ बनबैत अछि। नामक पहरा बच्चासभक हाथमे पहुँचल अछि, मुदा एहि उपलब्धिक बीच चन्ना गाछी काटल जाए लगैत अछि। एही द्वन्द्वमे शीर्षक ‘अगिला आवाज’ अपन वास्तविक अर्थ पबैत अछि : एक पीढ़ीक सत्यक घोषणा अगिला पीढ़ीक स्मृतिक साधन आ संघर्षकेँ स्वतः सुरक्षित नहि करैत। अतीन्द्रिय अदालतक वन-जगत नगरपालिका, ठीकेदार आ सड़क-विस्तारक कागजी शब्दसभक सामने आबैत अछि।

रस्सी, लाल कपड़ा, बाँसक घेराबन्दी, झरैत पात आ मजदूरक हथौड़ी—ई क्रमिक विवरण कटानकेँ एक दिनक घटना नहि, प्रक्रिया बनबैत अछि। सरकारी नक्शामे गाछी ‘अतिक्रमण’, ठीकेदारक कागचमे ‘विकास क्षेत्र’ आ नगरपालिकाक अभिलेखमे सार्वजनिक सुविधा बनैत अछि। एकहि स्थल विभिन्न संस्थाक भाषामे रूपान्तरित होइत अछि। नव्य न्याय-दृष्टिसँ एतय नाममात्रक प्रशासनिक अभिधान आ वास्तविक स्थल-सम्बन्धक अन्तर जाँचबाक अछि : काटबाक विधिक अधिकार, पर्यावरणीय मूल्य, स्थानीय उपयोग आ निवासीक परामर्श पाठमे स्वतः प्रमाणित नहि भेल अछि।

## जड़िक भीतर सहेजल सामग्री आ दृश्यता

कटल डालिक बाद गाछीक भीतर धूप पहुँचैत अछि आ चुनरीक टुकड़ा, पुरान दिया, नामक पाथर आ बच्चाक काँचक गोली देखाइ पड़ैत अछि। अन्हार हटब मात्र विनाश नहि; किछु छुपल साक्ष्यक दृश्यता सेहो सम्भव करैत अछि। लेखक एहि विपरीत फलकेँ कलात्मक ढंगसँ स्वीकारैत छथि। मुदा कटल वृक्षक जीवन पुनः तुरन्त घुरि

नहि अबैत; अन्हारक स्थानपर प्रकाश आबब विकासक पर्याप्त प्रमाण नहि। कथा एही कारण अपन पर्यावरणीय आ सांस्कृतिक प्रश्नकेँ सहज एकरेखीय निर्णयमे नहि समेटैत अछि।

सत्यव्रत साधारण वस्त्र आ झोरासँ पहुँचैत छथि, आदेशपत्र नेने अधिकारी जेकाँ नहि। बालिकाक प्रश्न जे गाछि कटिते कथा कटि जाएत कि नहि, स्मृतिक भौतिक आधार आ सामुदायिक अभ्यासक सम्बन्ध खोलैत अछि। सत्यव्रत जड़िक सुनबाक रूपक दैत छथि। एहि उत्तरक महत्व एहि बातमे अछि जे ओ अपन पहिनुक मौनसँ स्वतः मुक्त घोषित नहि होइत छथि। लोक ओहि ठाम अबैत अछि; महिलासभ दिया रखैत छली, शिक्षक बच्चासभकेँ लोकस्मृति बुझबैत छथि, मजदूर रातिमे जड़िपर पानि ढारैत छथि। ई साझा क्रिया अलौकिक विजयक बदला वास्तविक सामाजिक भागीदारीक रूपमे अधिक प्रभावकारी अछि।

## नामक रजिस्टर, सार्वजनिकता आ जोखिम

गाछीक ठाम धीरे-धीरे सार्वजनिक स्मृतिक चौक बनैत अछि। लोक नाम पढ़ैत अछि, बच्चा रजिस्टरमे लिखैत अछि, बूढ़ गवाही दैत छथि आ युवक मोबाइल बन्द करैत छथि। एहि अन्तिम क्रियाक विशेष अर्थ अछि : आरम्भमे डिजिटल चित्र आ प्रत्यक्ष प्रसारण देखाओल गेल छल; अन्तमे सुनबाक समय यन्त्र हटाओल जाइत अछि। स्मृतिक प्रचार आ पीड़ितक निजताक मध्य तनाव ई दृश्यक भीतर रहैत अछि। मूल अध्याय ई नहि कहैत जे सभ नाम अथवा सभ निजी कथा बिना अनुमति सार्वजनिक कएल जाए; ताहि लेल समीक्षा एहि रजिस्टरकेँ सहमति-आधारित प्रक्रिया बनएबाक आवश्यकता मानैत अछि।

काटल ठूँठपर हरियर बिन्दु देखबाक बाद ओकर व्याख्या एक नहि रहैत अछि—केओ चमत्कार, केओ जिजीविषा, केओ माटिक जिद बुझैत अछि। एहि बहुविध व्याख्यासँ दृश्य एकमात्र धार्मिक निष्कर्षमे कैद नहि होइत। तथापि ‘निर्दोष हाथ’क रूपमे बच्चासभकेँ संस्था-संचालनक अकेल आश्रय बनबैत समय उपन्यास जोखिम लैत

अछि। संरक्षित अभिलेख, स्थानीय निर्णय, आर्थिक संसाधन आ वयस्क उत्तरदायित्वक बिना नेनाक नैतिक जागरण दीर्घकाल धरि पर्याप्त नहि होयत।

## अगिला आवाजक संरचनात्मक सार

अध्यायक अन्तमे ठूँठक सूक्ष्म हरियर संकेत आ ‘जतय अन्त बुझल गेल, ओतय सँ कथा फेर आरम्भ भेल’क संरचना कथाकेँ नव खण्ड दिस धकेलैत अछि। अध्यायारम्भक चौपाल-गीतमे अगिला स्वर लेल स्थान छोड़बाक आग्रह आ अन्तक लोकगीतमे उगल चौपालक चित्र विषयगत एकरूपता रचैत अछि। सीमा ई जे लगातार उज्जर नैतिक सूत्र कहबाक कारण दृश्यसभक स्वाभाविक असहमति कखनो दबि जाइत अछि। सर्वश्रेष्ठ क्षण ओ अछि जतय डरक पुरान स्थल नव लोकबैठकी बनैत अछि, मुदा ठूँठ आ कटानक वास्तविक नुकसान अजस्र उपस्थित रहैत अछि।

# अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान

## कटानक वृत्त आ उजासक अनिश्चित अर्थ

पछिला अध्यायमे जड़िक कात लोकबैठकी उगल छल; अध्याय ५३ ओहि ठामक पहिल पूर्ण दिनक सूक्ष्म अनुभव रचैत अछि। कटानक वृत्तमे वर्षक गाढ़-फीक चिह्न समयक दृश्य अभिलेख बनैत अछि। बूढ़बा भूत वृक्ष अपन उमेर खोलि दैत अछि, मनुष्य मरैत अछि तँ ओकर नाम खोलबाक चाही—एहन सम्बन्ध जोड़ैत छथि। एतय वृक्ष इतिहासक रूपक मात्र नहि; ओकर वास्तविक देहमे समयक भौतिक साक्ष्य उपलब्ध अछि। मुदा वृक्षक वलय आ मनुष्यक जीवनक लिखित अभिलेख एकहि प्रमाण-पद्धति नहि; रचना ओकरा कलात्मक सादृश्य बनबैत अछि, तथ्यात्मक समानता नहि।

धूप जखन भूतहा गाछीक बीच उतरैत अछि, लोकक भाव केवल प्रसन्नता नहि, लाज सेहो अछि। पुरान अन्हारकेँ यान्त्रिक रूपसँ असत्य आ नव उजासकेँ सत्य कहि देब कथा स्वयं सम्भव नहि बनबैत। अन्हार लोकक कथा सुरक्षित रखैत छल; उजास ओकरा सार्वजनिक बनबैत अछि, मुदा साथहि अनावृत आ असुरक्षित सेहो करि सकैत अछि। ई द्वन्द्व अगिला नगरपालिकाक पीयर पत्रक आगमनसँ ठोस रूप पबैत अछि।

## कबड्डीक नव नियम : लोकखेलसँ नैतिक अभ्यास

अध्यायक सर्वाधिक मौलिक दृश्य बच्चासभक नव कबड्डी अछि। रातिमे अदृश्य आत्मासभक खेल दिनमे नामक पाथरक पहरामे बदलैत अछि। पाथर ठोकरसँ हटत तँ खेल रुकत, पहिने नाम फेर ठामपर राखल जाएत। ‘कबड्डी’क स्थानपर ‘उपस्थित-उपस्थित’क पुकार सांस्कृतिक स्मृतिक एक नब लोकलय अछि। विजय अथवा विपक्षी पकड़बाक बदला दूसरेक नाम सुनब खेलक नियम बनैत अछि। एहि

रीति लेखक नैतिक विचारकेँ उपदेश मात्र नहि रखि बाल-शारीरिक क्रियामे रूपान्तरित करैत छथि।

तथापि ‘उपस्थित’क ई सामूहिक पुकार केवल प्रतीकात्मक मानल जाए। कोनो नाम पुकारलाक कारण गुम व्यक्ति वास्तविक रूपसँ उपस्थित भऽ गेल, एहन प्रामाणिक निर्णय नहि निकलैत। लोकखेलक ई अनुशासन स्मृतिक प्रशिक्षण अछि; इतिहासक परीक्षणक बदला नहि। एहि सीमाक स्वीकारे दृश्यकेँ अधिक महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि।

## निजता, प्रवासन आ भिन्न पीढ़ीक दृष्टि

देविका उज्ज्वल कुमार झाक पूरा नाम आ ठगीसँ घेरायल जीवनक सन्दर्भ लिखैत छथि। ई नाम-पूर्णताक आग्रह मृतककेँ एकांगी ‘हारल युवक’क छवि सँ बचबैत अछि। मीरा बच्चासभकेँ स्पष्ट करैत छली जे नामक पहराक संग चुप रहबाक अधिकार सेहो आवश्यक अछि। एहि संवादसँ सार्वजनिक स्मृतिक आन्तरिक संविधान तैयार होएबाक सम्भावना देखाइत अछि : सुनबाक दायित्व सभक अछि, मुदा बाजबाक बाध्यता सभ पर नहि थोपाल जा सकैत।

ईरा विदेशसँ घुरि चन्ना गाछीक कटायल देह देखैत छली। चमकदार अक्षरमे नाम बदलि देबाक हुनकर टिप्पणी प्रवासी स्मृतिक अलग हिंसा चिन्हैत अछि। पाठमे ईराक निजी अनुभवक विस्तार सीमित अछि; तथापि हुनकर नोटबुक बन्द करब गवाही संग्रह करबाक अकाल उत्साहपर आवश्यक संयम अछि। आरुणिक उजाससँ असहज सम्बन्ध, बाक कथन आ हुलासीक इनारक प्रतिबिम्ब एहि अध्यायकेँ अनेक पीढ़ीक दृश्य-दृष्टि दैत अछि।

## नगरपालिकाक सूचना आ नव प्रतिपक्ष

दुपहरमे लोक सामूहिक काज शुरू करैत अछि—पानिक घड़ा, अस्थायी छतरिया, चूनाक घेरा, पाथरपर नाम पूरा करबाक ठाम। छोट काजसभ सार्वजनिक स्मृतिक

सम्भावित संस्था बनएबाक वास्तविक भूमि तैयार करैत अछि। मुदा बाहर दू अनचिन्हार लोक परियोजनाक सम्भावना फोनपर बतबैत छथि। पनिडुब्बीक दृष्टिसँ बजारक फेर प्रवेशक संकेत भेटैत अछि। एहि ठाम उपन्यास नव संघर्षक आरम्भ सफलतापूर्वक करैत अछि : स्मृतिक सार्वजनिक स्थल आर्थिक अवसरक वस्तु सेहो बनि सकैत अछि।

अन्तमे चौकीदार नगरपालिकाक पीयर नोटिस ठूँठ लग अनैत अछि। एतय अधिकारीक विधिक कारण पूरा खुलैत नहि; ताहि लेल बजारक लोभ अथवा प्रशासनिक दुरभिसन्धि पहिनेसँ सिद्ध मानल नहि जाए। ई पीयर कागच अगिला अध्यायमे अलग ढंगसँ घुरि आबैत अछि। सतत कथाकाल, पत्रक वितरण आ पत्रक संख्या जाँचबाक खुलेल प्रश्न अछि। लेखकक शिल्पगत उपलब्धि ई जे हरियर अंकुरपर टिकैत तारा आशाक बिम्ब रहैतहुँ ओकर लगहि पीयर नोटिसक व्यावहारिक संकट ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

# अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात

## लोकबैठकीक वृत्त आ वस्तुक साक्ष्य

अध्याय ५४मे कटानक बादक पहिल लोकबैठकी वृत्ताकार रूपमे आरम्भ होइत अछि। ठूँठ केन्द्र अछि, लोक परिधि। एहि स्थलरचनामे मंच, मुख्य अतिथि आ पदानुक्रमक अभाव महत्त्वपूर्ण अछि। कटायल जड़िक नमी, लाल कपड़ाक रेशा, राख, काँचक गोली आ अधलिखल पाथर वस्तुक रूपमे उपलब्ध छथि; तिनका उठाबऽ चाहनिहार बच्चासभकेँ अनन्या रोकैत छली। पहिने सुनबाक आग्रह वस्तुक ऐतिहासिक अर्थ पर धैर्यसँ विचार करबाक रूपक अछि। तथापि वस्तुक स्रोत, स्थान आ संरक्षणक सावधानी बिना ओकर प्रमाणिक उपयोग सम्भव नहि; भावनात्मक सम्बद्धता आ अभिलेखीय विश्वसनीयता अलग कसौटी छथि।

आरुणिकेँ एहि गोल बैठकमे अदालतसँ पैघ अदालतक अनुभव होइत अछि। ई अनुभूति पारम्परिक न्यायिक अधिकारकेँ समाप्त करबाक सूचना नहि, लोकसुनवाईक नैतिक शक्ति चित्रित करैत अछि। बाक लाठी टेकैत आगमन, जड़ि छूब आ कुलक निरन्तरताक कथन पीढ़ीक स्मृति जोड़ैत अछि। बूढ़बा भूत स्पष्ट स्थायी गवाह नहि, दिनक इजोतमे एक झिलमिल आकृति बनि रहैत छथि। कथा एहि अंतरालमे लोकविश्वास आ सार्वजनिक निर्णयक बीच दूरी राखैत अछि; पछिला अध्यायसभक तुलनामे ई संयम अधिक अर्थपूर्ण अछि।

## नाम-पाथर, चिह्न आ मौनक अधिकार

मजदूरक बूढ़ बेटा अपन बाबूक नाम पढ़ैत काँपैत अछि; उज्ज्वलक मायसँ नाम पढ़ब देविका धैर्यपूर्वक करबैत छली। हवा, चिरई, धूप, छींक अथवा पानिक बूँदक चिह्न बच्चासभ नाम पढ़लाक बाद लिखैत अछि। एहि दृश्यकेँ पाठ-प्रमाणसँ अलग नहि करबाक चाही : ‘ठूँठ उत्तर देलक’ बच्चासभक अनुभूतिजन्य निष्कर्ष अछि,

वैज्ञानिक पुष्टि नहि। चिह्नसभक सांकेतिक सम्बन्ध लोकअनुभवक सत्य अछि; तकरा कारणात्मक प्राकृतिक प्रमाण मानल जाए तँ कथाक साहित्यिक शक्ति उलटे घटि जाइत।

सौम्या एहि बेर स्वतः सभक बात दर्ज नहि करैत छली; परिवार चाहैत अछि तखने ओ नाम लग बैसैत छली। मीरा लाल डोरी आनिक स्मृति-काजक मर्यादा स्थापित करैत छली : नाम लिखबाक संग दुखक तमाशा नहि हो। एहि दू प्रसंगमे ‘मौनक अभिलेख’क पुरान समस्या व्यावहारिक आचारमे बदलैत अछि। जिनकर नाम पूर्ण उपलब्ध नहि, हुनका सभसँ आगाँ राखबाक निर्णय अज्ञात पीड़ितक गरिमा स्वीकारैत अछि; मुदा भविष्यक शोधमे अधूरा पहिचानक आगे मनगढ़न्त नाम भरबाक अनुमति ई निर्णय नहि दैत अछि।

## दस्तावेज, स्वर आ सामुदायिक संरचना

गोप कुमारक अनुभव समीक्षात्मक दृष्टिसँ केन्द्रीय अछि। हुनका बुझाइत अछि जे कागच नाम देत, लोक स्वर देत, ठूँठ स्थान देत, बच्चा पहरा देत। एहि चौखटमे अभिलेख आ जीवन-सम्बन्धक परस्पर आवश्यकता प्रकट अछि। लिखित सूची अकेले न्याय नहि देत; मुदा लिखित सूची त्यागि केवल सामूहिक भावना पर भरोसा करब सेहो उचित नहि। नागरिक स्मृतिस्थल लेल अनुमति, प्रतिलिपि, सुरक्षित रखरखाव, निजी सूचना पर नियन्त्रण आ पाठ-संशोधनक स्पष्ट विधान आवश्यक अछि। उपन्यास एहन विधान पूरा लिखि नहि देत, मुदा पात्रक बदलैत आचरण ओकर संकेत अवश्य करैत अछि।

सत्यव्रतकेँ ककरो आगे बैसबाक अनिवार्य निमन्त्रण नहि अछि। ओ पाछाँ ठाढ़ रहि नामक लेल ठाम छोड़ैत छथि। एहि मौन आ स्वतः पाछाँ हटबमे पछिला आत्मस्वीकृतिसँ अलग नैतिक परिपक्वता देखाइत अछि। आरुणिक हाथमे पोस्टमास्टर मोट पीयर लिफाफा दैत अछि; अनन्या पहिने चलैत नाम-पाठ पूरा करबाक आग्रह करैत छली। सरकारी भाषाक ‘नाम, कुल, लोभ आ उद्देश्य’ पूछबाक

उनका प्रस्ताव प्रशासनिक कागचकेँ आलोचनात्मक ढंगसँ पढ़बाक प्रशिक्षण अछि। तथापि पत्र खोलल नहि गेल अछि; ओकर वास्तविक विषय अनुमानसँ लिखब गलत होयत।

## शिल्पगत निष्कर्ष

ठूँठक चारूकात पाथरक घेरा बनब, हरियर गाछीक पुनरागमनक आशा आ राति भरि करवट बदलैत पीयर लिफाफा—ई तीन छवि अध्यायक समय-संरचना गढ़ैत अछि। लोकगीतमे केन्द्र-परिधिक रूपक सामूहिक निर्णयक आराखड़ा बनबैत अछि। सीमा ई जे बच्चासभक लगभग सदिखन निःसंशय विवेक, लोकक शीघ्र सहमति आ प्रशासनक सम्भावित कुटिलता अपेक्षाकृत सरल नैतिक विभाजन बनबैत अछि। वास्तविक सामुदायिक संस्थामे मतभेद, रखरखाव, स्वामित्व आ सहमतिक प्रश्न कठिन होइत अछि। तइयो कथाक नब ऊर्जा स्पष्ट अछि : गाछि कटि गेल, मुदा नामक सुनवाईक लिये समाज अपन वृत्त स्वयं रचैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ५०–५४

## अलौकिक स्मृतिसँ नागरिक संस्थान धरि

ई पाँच अध्याय एक निरन्तर, मुदा एकार्थी नहि, कथा-वक्र रचैत अछि। अध्याय ५०मे देहक बाद नामक जड़ि खोजल जाइत अछि; ५१मे ओ नाम सुननिहार साक्षीक भार बनैत अछि; ५२मे स्मृतिक स्थल कटैत अछि आ सार्वजनिक चौपाल उगैत अछि; ५३मे उजास आ नगरपालिकाक नोटिस नव खतरा खोलैत अछि; ५४मे ठूँठक चारू कात लोकबैठकी नाम-पाथरक रचना करैत अछि। एहि क्रमकेँ मात्र धार्मिक मुक्ति अथवा प्रशासनिक प्रतिरोधक रेखीय कथामे सीमित करब गलत। ई मृतकक गरिमा, जीवितक अपराधबोध, वृक्षक भौतिकता आ सार्वजनिक स्मृतिक निर्माणक बहुस्तरीय गाथा अछि।

## पात्रगत परिवर्तन आ नैतिक उत्तरदायित्व

सत्यव्रत मेहताक रूपान्तरण तीन अलग दृश्यद्वारा जाँचल जा सकैत अछि : नामक पोखरिमे अपन ‘मौन’ स्वीकारब (५०), पदनाम माटिमे राखि साक्षी-पत्र लिखब (५१), आ बच्चासभक नाम-पाठक समय पाछाँ ठाढ़ रहब (५४)। एहि क्रममे स्वयंकेँ केन्द्र बनबाएबक अभिलाषा घटैत अछि। तथापि अध्याय ५३मे हुनकर अनुपस्थिति सेहो दर्ज अछि; ई अनुपस्थिति पछिलका भेंटसँ अनिवार्य विरोधाभास नहि, भिन्न समयक प्रसंग होएब सम्भव अछि। अनन्या प्रश्न पूछनिहार नेनीसँ स्मृति-रक्षक बनैत छली, मीरा निजता पर स्पष्ट मर्यादा रखैत छली, सौम्या संख्या-केन्द्रित अभिलेखक सीमा बुझैत छली, देविका भाईक नामकेँ जीवन-सन्दर्भ सहित लिखैत छली। ई परिवर्तन वास्तविक क्रियासँ देखाओल गेल अछि, जे शृंखलाक सशक्त पक्ष अछि।

## स्थान, वस्तु आ समयक बिम्ब-संयोजन

पोखरि, पात, नामक अक्षर, पदनामक पट्टी, गंगा-पुल, कटल डारि, ठूँठक वृत्त, अधलिखल पाथर आ पीयर लिफाफा—ई वस्तुसभ परस्पर सम्बद्ध, मुदा अलग प्रमाण-स्थिति रखने दृश्य छथि। पहिल दू अध्यायक अद्भुत पोखरि आ बोलैत गोहि स्वप्न-संवेगक संसार रचैत अछि; पछिलका तीनमे रस्सी, कुल्हाड़ि, नगरपालिका आ डाक-लिफाफा सार्वजनिक भौतिक संसारकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। पाठककेँ एहि दुनू संसारक अन्तर याद राखब आवश्यक अछि। भूतक कथन अथवा नामक स्वत: प्रकट होएब साहित्यिक तथ्य अछि; प्रशासकीय अतिक्रमण आ आर्थिक स्वार्थक जाँच लेल पृथक दस्तावेज चाही।

गाछीक कटानक समय-संरचनामे सेहो आलोचनात्मक सतर्कता चाही। अध्याय ५२मे कटानक आरम्भ, गाछीक प्रमुख भागक विनाश आ लोकबैठकीक अंकुर एक विस्तारित समय-धारा अछि। अध्याय ५३मे ओकर बादक भोर तथा नगरपालिकाक पहिल पीयर सूचना प्रस्तुत अछि। अध्याय ५४मे पोस्टमास्टरक आनल मोट पीयर लिफाफा दोसर दृश्य बनैत अछि। ई दूनू पीयर कागच एकहि दस्तावेजक दोसर आगमन अछि कि भिन्न प्रशासनिक सूचना, पाठ एखन निर्णायक उत्तर नहि दैत; आगामी अध्याय ५५क पूरा पत्र पढ़लाक बादे क्रमपञ्जी मिलाओल उचित होयत।

## लोकगीत, रस आ कथावाचन

अध्याय ५०क समदाउनक जड़ि, ५१क प्रायश्चित्त-मंगलक साझा रक्षा, ५२क चौपाल-गीतक अगिला स्वर, ५३क परातीक नव भोर आ ५४क जड़िक घेरा—ई पाँच गीत कथानकक विषय-परिवर्तनकेँ सुनाएबला अनुक्रम बनबैत अछि। करुण अनुभूति केवल मृतकक विलाप नहि रहि, लोकक साझ काजमे बदलैत अछि। अद्भुत दृश्य धीरे-धीरे सार्वजनिक बैठकक अधिक संयत अनुभवमे रूपान्तरित होइत अछि। लोकगीतक उद्घोषणात्मकता यदा-कदा पाठकक अर्थ-निर्णय पहिनेहि निश्चित करि

दैत अछि; तकर विपरीत अनन्याक प्रश्न, मीराक मौन-अधिकार आ हरियर अंकुरक भिन्न व्याख्या कथाकेँ बहुस्वर बनबैत अछि।

## साहित्यिक उपलब्धि आ वास्तविक सीमा

पाँचू अध्यायक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई अछि जे ‘स्मृति’केँ वैयक्तिक पश्चात्तापसँ सामूहिक आचार धरि लऽ जाओल गेल अछि। साक्षी-सुरक्षा, निजी कथनक अनुमति, नामक पूर्णता, अज्ञात व्यक्तिक लेल खाली स्थान आ सरकारक दावाक सार्वजनिक परीक्षणक विचार अलग-अलग पात्रक क्रियामे स्पष्ट होइत अछि। मुदा सामाजिक संस्था बनएबाक लागत, स्वयंसेवकक प्रशिक्षण, ऐतिहासिक स्रोतक मिलान, भिन्न परिवारक असहमति, वृक्ष-विनाशक पारिस्थितिकी आ वैधानिक प्रक्रिया एखन पर्याप्त विस्तार नहि पबैत अछि। भूत, चमत्कार आ नैतिक घोषणाक घनत्वक कारण प्रतिपक्षी पात्रक मनोवैज्ञानिक जटिलता सेहो कतहु घटैत अछि। एहि सीमाक उल्लेख रचनाक महत्त्व घटबैत नहि; ओकर अगिला विकासक कसौटी निर्धारित करैत अछि।

अन्ततः अध्याय ५०क देहक बादक नाम अध्याय ५४मे ठूँठक चारूकात लोकक घेरा पबैत अछि। पहिने नाम पानिमे तैरैत छल, आब पाथरपर लिखाएबाक पूर्व परिवारक अनुमति आ चुप्पी सुनल जा रहल अछि। पहिने पदक भाषा बोलैत छल, आब पीयर प्रशासनिक कागचकेँ सेहो अपन उद्देश्य स्पष्ट करबाक अपेक्षा अछि। एहि परिवर्तनमे न्याय अन्तिम विजयक घोषणा नहि, अधूरा साक्ष्यक प्रति सजगता, लोकस्मृतिक सामूहिक संरक्षण आ असहमतिक बीच निरन्तर चलैत रहबाक अभ्यास बनैत अछि।

# अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

## सूचना-पत्रक भाषा आ लोकस्मृतिक अस्तित्व

कटल चन्ना गाछीक ठूँठपर पड़ल पीयर लिफाफा अध्याय ५४क अन्तमे प्रतीक्षाक वस्तु छल; अध्याय ५५ ओकरा राजनीतिक आ भाषिक संघर्षक केन्द्र बना दैत अछि। रात्रिक धूप-धूरि, दियाक निभनाइ आ लिफाफाक फड़फड़ाहटसँ सरकारी कागच जीवन्त प्राणीक रूप ग्रहण करैत अछि। अध्यायारम्भक पंक्ति कागचक पाँखि आ कैंचीक आवाजक सम्बन्ध जोड़ैत अछि। ई उपमा पूर्वक गाछी-कटानक अनुभवकेँ अगिला प्रशासकीय हिंसाक सम्भावनासँ जोड़ैत अछि। तथापि प्रशासनक सभ सूचना अनिवार्यतः हिंसक होइत अछि, एहन सरल निष्कर्ष कथा द्वारा अपनाओल जाए तँ सामाजिक संघर्षक विश्लेषण कमजोर होयत; एतय वास्तविक पत्रक शब्द, उद्दिष्ट स्थल आ आपत्तिक विधि पढ़ब प्रमुख घटना अछि।

लिफाफाक तीन पन्नामे सार्वजनिक सौन्दर्यीकरण, मार्ग-सुरक्षा, चिह्नित क्षेत्रक नक्शा आ आपत्तिक औपचारिक प्रक्रिया अछि। अनन्या कागचक ‘नाम’ पूछैत छली, आरुणि ओकर पाठ करैत अछि। एहि दृश्यमे प्रश्न कागचक वैधानिक अस्तित्वक नहि, ओकर भाषाक सामाजिक बहिष्कारक अछि। ‘आम जनता’ शब्द देविकाकेँ पीड़ा पहुँचबैत अछि, कारण जकरा प्रशासन आम जनता कहैत अछि, ओहि समुदायकेँ ओकरा अपनहि सार्वजनिक स्थलसँ अलग देखाओल जा रहल अछि। गाछीक ठूँठ, नामक पाथर आ परिवारक सुनवाई सरकारी अभिधानमे बाधा, जमाव अथवा अवैधानिक चिह्न बनि जाइत अछि। लेखक भाषाक एहि उलटावद्वारा देखबैत छथि जे कोनो स्थानक सार्वजनिक मूल्य ओकर मानचित्रक खाली चौकोरसँ समाप्त नहि होइत।

## प्रमाण-विवेक : कागच फाड़ब नहि, पढ़ब

तेसर पन्नाक आपत्ति-विधिमे नाम, पता, स्वामित्वक सूचना आ प्रमाण माँगल गेल अछि। गोप कुमारक प्रश्न उचित अछि जे डूबल देह, मेटायल अभिलेख अथवा ठगीमे बिलायल पहिचानक साक्ष्य कोना उपलब्ध कराओल जाए। मुदा ई कठिनता प्रमाणक अनावश्यकता सिद्ध नहि करैत। नव्य न्याय-दृष्टिसँ एतय प्रतिज्ञा, हेतु आ प्रत्यक्ष अथवा विश्वसनीय शब्द-साक्ष्य अलग-अलग जाँचबाक चाही। अभिलेख उपलब्ध नहि भेलासँ मात्र अभिलेख मिटाओल जाएबाक अपराध स्वतः प्रमाणित नहि होइत। पत्रक किनारपर गोप द्वारा लिखल ‘प्रमाण नहि भेटल, से अपराधक प्रमाण अछि’ कथापात्रक आक्रोशक दस्तावेज अछि, प्रमाणशास्त्रीय निष्कर्ष नहि। समीक्षाक लेल ई अंतर आवश्यक अछि, किएक तँ न्याय सुनिश्चित करबाक प्रयासमे अनुमानकेँ सिद्ध तथ्यक रूप देब स्वयं अन्यायक जोखिम अछि।

पीयर कागचक खाली किनारपर आरुणि ‘खाली भू-खण्ड नहि—नामक ठाम’ लिखैत अछि; देविका परिवारक उपस्थिति, मीरा निजताक संग स्मृति आ बा जीवित जड़िक पक्ष जोड़ैत छली। बच्चासभक ‘उपस्थित’ पुकार प्रशासनक एकतरफा पाठकेँ लोकक प्रत्युत्तरमे बदलैत अछि। लेखक प्रतिरोधक दृश्यकेँ केवल आक्रोश-नारा नहि रखि एक लिखित उत्तरक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। ओत्तहि साहित्य आ नागरिक काजक उपयोगी सेतु अछि। तथापि मूल सूचनापत्रपर लिखल लोकक वाक्य कानूनी आपत्ति दायर कएलाक बराबर नहि; आपत्तिक समयसीमा, पहुँचबाक उचित कार्यालय आ प्राप्तिक प्रमाणक प्रश्न पाठमे शेष अछि।

## बटुकनाथक दूत आ स्मारकीकरणक फँस

सफेद पैंट आ चमकैत फाइल लेने बाहरी दूत संस्थागत संरक्षणक प्रस्ताव अनैत अछि। फाटक, टिकट-घर, स्मृति-दीर्घा, दान-पेटी आ आगन्तुक-पुस्तिकाक रंगीन चित्रमे ठूँठ, नामक पाथर आ परिवारक वास्तविक ठाम अनुपस्थित अछि। अनन्या ‘जेकर नाम नहि भेटल’ पाथरक ठाम पूछैत छली। प्रश्न तुच्छ दृश्य-योजनाक नहि,

स्मृतिक स्वामित्वक अछि : जँ संस्थाक सुन्दर परिसर लोकक शोक आ मृतकक अस्तित्वकेँ चित्रसँ बाहर राखत, तँ संरक्षण ककर? बटुकनाथक नाम सुनिते लोकक ठिठकनाइ कथाक पूर्व सत्ता-संबन्धसँ जुड़ल अछि, मुदा दूतक दावा मात्रसँ प्रस्तावक सभ गुप्त आशयक विधिक प्रमाण प्राप्त नहि भऽ जाइत।

सत्यव्रतक उत्तर—प्रभावित लोकक सुनवाई बिनु वैधानिकता अधूरी अछि—कथामे संस्थागत न्यायक नव भाषा बनैत अछि। दूत सात दिनमे हटएबाक धमकी दैत अछि। एहि सात दिनक अवधि आगामी संघर्षक कथाकाल निश्चित करैत अछि। लेखक एक नैतिक विरोधाभास रचैत छथि : जे संस्था सरकारी नोटिसक सम्भावित हटाओनाइ सँ स्थान बचएबाक प्रस्ताव दैत अछि, ओहि प्रस्तावमे स्थलसँ समुदायकेँ अलग करबाक आशंका बनैत अछि। मूल पत्रक तीन-पन्ना विन्यास आ दूतक संस्था-प्रस्तावक भाषाकेँ अलग राखल जाए, ताकि नगरपालिका, निजी न्यास आ बटुकनाथक सम्भावित सम्बन्ध बिना अभिलेखक पक्का निर्णय नहि बनि जाए।

## लोकनक्शाक आरम्भ : शिल्प आ मूल्यांकन

अन्तिम दृश्य नगरपालिकाक नक्शाक प्रत्युत्तर बनबाक अछि। आरुणि चटाइ बिछबैत अछि, गोप कागच खोलैत छथि, देविका लाल माटि आ मीरा कोइला अनैत छली; बच्चासभ पाथर सारि कऽ बीचमे ठाम बनबैत अछि। बा कहैत छली जे नक्शा ओहि हाथसँ बनब जे ठामकेँ सुनैत अछि। कटल ठूँठक चारूकात अनन्याक लाल वृत्त समूचा अध्यायकेँ अगले अध्यायक स्थलरचनासँ जोड़ैत अछि। एहिठाम रचनाक सबल पक्ष स्पष्ट अछि : निषेधक बदला विकल्प बनाओल जा रहल अछि।

आरम्भ आ अन्तक लोकगीत पीयर पातीक पाँखि, कैंची आ लोक-जागरूकताक सम्भावना कैँ दोसर लय दैत अछि। गीत प्रशासनक सूचना-व्यवस्था सुधरबाक कल्पना रखैत अछि, जखनकि कथा-पाठमे कागच अधिक प्रतिकूल अछि। एहि भिन्न स्वरमे एक आलोचनात्मक अवसर अछि : सरल भाषा, आपत्तिक अधिकार आ लोकपरामर्श सहित सूचना देब संभव अछि; सभ संस्थागत पत्रकेँ गोहिक दाँत

मानि लेब आवश्यक नहि। मुख्य सीमा ई जे नीतिगत विवादक तर्क प्रायः पात्रक तत्काल नैतिक प्रतिक्रियामे समाप्त होइत अछि। तथापि सात दिनक समयसीमा आ वैकल्पिक नक्शाक आरम्भ कथाकेँ ठोस नागरिक संघर्षमे प्रवेश करबैत अछि।

# अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा

## खाली भू-खण्ड आ स्थानक अनुभूत इतिहास

अध्याय ५५क पीयर सूचना-पत्रमे सरकारी नक्शा ‘खाली’ ठाम चिन्हित केने छल; अध्याय ५६ एहि ‘खाली’ शब्दक ज्ञानमीमांसात्मक परीक्षण अछि। पात्रसभ ओहि स्थानपर डूबल देह, नामक पाथर, भूतक कबड्डी, पारिवारिक स्मृति, मजदूरक बस्ती आ नदीक प्रवाह देखैत अछि। सरकारी नाप आ लोकक अनुभव परस्पर विरोधी विवरण छथि, मुदा अलग प्रयोजन राखैत अछि। सरकारक मानचित्र भूमि-विन्यास देखबैत अछि; समुदाय अपन क्षति आ सम्बन्धक इतिहास अंकित करैत अछि। साहित्यिक उपलब्धि ई जे लेखक एक विवरणकेँ दोसरक नामकरण-सत्ताक विरुद्ध ठाढ़ करैत छथि, बिना धरतीक भौतिक परिमापक वास्तविकता अस्वीकारने। पुरान पुल-योजनाक कागचक पाछूक सादा भागपर लोक अपन नक्शा रचैत अछि। एहि उलटि राखबामे गहन प्रतीक अछि : पहिले ठेकेदारक चौड़ाइ, पाया आ लागतकेँ पहिल स्थान छल, आब अनन्याक कहने पर ‘पहिने हाथ, बादमे नकल’क नियम चलैत अछि। गोप कुमारक पुरान अभिलेख नकारल नहि गेल; ओकर उपयोगक क्रम बदलबैत अछि। कागच सत्यक पूर्ण घर नहि, ओकर ओसारा मानल गेल अछि। एहि कथनक सीमित अर्थ बुझब आवश्यक अछि : अनुभव स्रोत अछि, मुदा प्रत्येक स्रोतक विश्वसनीयता आ प्रसंगक मिलान बिना इतिहास रचना सम्भव नहि।

## नदी, पगडंडी, हथेली आ अभावक दृश्यभाषा

आरुणि कमला-बलानक टेढ़ रेखा खिंचैत अछि। ओ नदीकेँ ‘फाइलक नदी’ नहि, ‘देहक नदी’ कहैत अछि। एहि ठाम टेढ़ रेखा वास्तविक जलविज्ञानक नाप नहि, पीड़ितक स्मृतिक रूपक अछि। बाक पुरान पगडंडी ‘मायक बाट’ बनैत अछि, जकर भौतिक अस्तित्व मेटायल रहितहुँ पारिवारिक स्मृति बचल अछि। श्रमिक परिवारक

घरसभ हथेली रूपमे अंकित होइत अछि; प्रत्येक हथेलीक आङुरक संख्या अलग, किएक तँ क्षतिक परिमाण परिवारानुसार भिन्न अछि। एहन बिम्बसँ लोकस्मृति एक बड़ सामूहिक नाममे विलीन नहि भऽ जाइत, ओ व्यक्तिगत हानिक भेद सेहो सुरक्षित करैत अछि।

गोप कुमार जकर ठामसँ रसीद हेराएल छल, ओतय राखमे छोट सुराख बनबैत छथि। अभिलेखक अभाव नक्शामे ‘गुमशुदा कागचक मुँह’ कहल जाइत अछि। ई सर्वाधिक मार्मिक बिम्बसभमे सँ एक अछि : जे जानकारी नहि भेटल, ओकर रिक्त स्थान सेहो इतिहासक प्रश्नक रूपमे चिन्हित रहत। ताहिसँ रसीदक गुम होएबाक कारण, ओकर वास्तविक अस्तित्व अथवा ककर हाथसँ ओ हेराएल, स्वतः स्थापित नहि होइत। नव्य न्यायमे अनुपलब्धि आ अभावक सिद्धान्तक जटिल भेदकेँ एक काव्यात्मक छेदसँ निपटा देब सम्भव नहि; वस्तुनिष्ठ जाँच लेल स्वतंत्र दस्तावेज आ गवाही चाही।

## अनुमति आ ‘अकथितक अधिकार’

उज्ज्वलक माय फोनक अन्तिम सक्रिय ठाम कारी बिन्दु बनबैत छली। देविका राखक चक्र जोड़ैत छली, मुदा मीरा हुनका मृत्युक तमाशा नहि बनेबाक आग्रह करैत छली। परिणामतः कारी गोलक भीतर उज्जर बिन्दु राखल जाइत अछि। ई संशोधन मात्र रंग-विन्यास नहि; ई प्रश्न अछि जे सार्वजनिक दृश्य ककर मनक गरिमाकेँ सुरक्षित रखत। बादमे मीरा नक्शाक कात निजताक घेरा बनबैत छली, जाहिमे किछु नाम जानि-बुझि नहि लिखल जाइत अछि। ओकर नाम ‘अकथितक अधिकार’ पड़ैत अछि। विगत अध्यायमे मीरा जे मौनक अधिकारक पक्ष लेने छली, ओ एतय सामूहिक निर्णयक प्रत्यक्ष नियम बनैत अछि।

नाम नबुझल बिन्दु खुलेल छोड़ल गेल अछि, जेना भविष्यक खोज लेल स्थान सुरक्षित अछि। ई रिक्तता भूल नहि, प्रमाणक अधूरापनक स्वीकार अछि। समीक्षा दृष्टिसँ ई वाक्य अधिक जिम्मेवार अछि बनिस्बत ओकर, जतय सभ कथा एकसाथ

तत्काल सत्य घोषित भऽ जाइत। अज्ञातक लेल नब नाम कल्पित करबाक बदला खुलल बिन्दु राखब, साहित्यक नैतिक शिल्प आ इतिहासलेखनक पद्धतिक बीच अर्थपूर्ण सम्बन्ध बनबैत अछि।

## खूँटा, आकाश आ संरक्षणक अगिला प्रस्ताव

नगरपालिकाक दू कर्मचारी मापक फीता, पीयर रंग आ लोहेक खूँटा लेने अबैत अछि। अनन्याक प्रश्न—खूँटा नामपर गड़त, पगडंडीपर कि गुमशुदा कागचक मुँहपर—स्थलक प्रशासनिक दावाकेँ लोकस्मृतिक नैतिक कसौटी पर रखैत अछि। बाक आदेशक जन्मदाता पूछैत छली। बूढ़बा भूतक अद्भुत प्रकट होएब आ फीता अपनहिसँ सिमटब कथा-जगतक लोकालौकिक घटना अछि; कर्मचारीक विधिक अधिकार वा तथ्यगत दायित्वक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि।

ईरा नक्शामे ‘आकाश’क अभाव देखबैत छली। बच्चासभ ओकर चारू कात नील घेरा आ ‘अनाम ग्रह’क प्रश्न जोड़ैत अछि। एहि अप्रत्याशित विस्तारसँ स्थानीय स्मृति भविष्यक दूरस्थ पलायनक आशंकासँ जुड़ैत अछि। तथापि ई उपन्यासक कल्पनात्मक आगाँक संकेत मात्र अछि; कोनो बाह्य ग्रहपर पात्रसभक वास्तविक गतिविधिक विवरण नहि। अन्तमे बटुकनाथक प्रतिनिधि फेर लोक-स्मृति न्यासक प्रस्ताव अनैत अछि। नोटिस, माप, नक्शा आ संरक्षणक प्रस्तावक समयक्रमकेँ आगामी समीक्षा मे संयमसँ मिलाओल जाए; पात्रक मंशा निर्णायक रूपेँ मानि लेनाइ जल्दबाजी होयत।

एहि अध्यायक महत्त्व नक्शा बनएबाक क्रियामे अछि। लोकगीत ‘स्मृतिभूमि’ सामूहिक सहमतिक आग्रह करैत अछि, आ कथामे परिवारक निजी मौन लेल अलग घेरा राखल जाइत अछि। रचनाक सीमा ई जे प्रतिकूल अधिकारीक आवाज अपेक्षाकृत अल्प अछि; मार्गसुरक्षा, सार्वजनिक यातायात आ सम्भावित पर्यावरणीय विकल्पक वास्तविक नीतिगत तौल विस्तारित नहि भेल अछि। तथापि खाली भू-

खण्ड कहला पर स्थान सचमुच खाली नहि भऽ जाइत—एहि प्रतिपादनकेँ अध्याय वस्तु, स्मृति आ रेखाक अनेक तहमे अनुभव करबैत अछि।

# अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न

## ‘न्यास’ आ ‘न्याय’ : शब्दसाम्यसँ सामाजिक विवाद

बटुकनाथ हरिहरन लाल फाइल, न्यासीमण्डलक सूची आ शोध-केन्द्रक स्वप्न लऽ कऽ चन्ना गाछी पहुँचैत अछि। आरम्भिक दृश्य जनस्मृतिपर संस्थागत संरक्षकत्वक प्रश्न उठबैत अछि। अनन्या ‘न्यास’ सुनि ‘न्याय’ पूछैत छली। दुनू शब्दक उच्चारण-साम्य आलोचनाक धार बनैत अछि : कोनो संस्था अपन नाममे संरक्षण लिखि देत, ताहिसँ ओकर कार्यप्रणाली न्यायपूर्ण सिद्ध नहि होइत। बटुकनाथक आग्रह संस्थाकेँ विधान आ विधानकेँ न्यासक अनिवार्य रूप कहैत अछि; बालिकाक प्रश्न ओहि रेखीय दलीलमे प्रभावित व्यक्ति, परिवार आ सामाजिक उत्तरदायित्वक स्थान माँगैत अछि। बा बच्चासभकेँ प्रश्न करबाक अवसर दैत छली। ईरा तत्त्वचिन्तामणि आ गंगेश उपाध्यायक उल्लेख करैत छली। एहि स्थानपर उपन्यास विदेहक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्मृति तथा नव्य न्यायक प्रमाण-विवेककेँ एक आधुनिक नागरिक विवादमे जोड़बाक प्रयास करैत अछि। प्रमाणक प्रश्न धार्मिक प्रतिष्ठाक आराधना नहि, तर्कक सार्वजनिक प्रयोग बनबाक प्रस्ताव अछि। मुदा तत्त्वचिन्तामणिक शास्त्रीय प्रमाण-संरचना आ बच्चासभक सहज प्रश्न-विधिक बीच अन्तर अछि; कथा ओहि सूक्ष्म शास्त्रीय स्थापत्यक पूर्ण विवेचन नहि करैत।

## लोकश्रुति आ ऐतिहासिक सत्यापनक अनिवार्य भेद

ईरा गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद होएबाक तथा चर्मकारणीसँ विवाह करबाक कथा ‘कहल जाइत अछि’क रूपमे सुनबैत छली। उपन्यासक भीतर ई कथन जाति, कुल आ विवाहक सामाजिक नियन्त्रणपर विमर्श करबाक साधन अछि। **समीक्षा एहि लोकश्रुतिकेँ प्रमाणित जीवनीगत तथ्य नहि मानैत अछि।** एहि विवरणक ऐतिहासिक सत्यता, मूल ग्रन्थसाक्ष्य, लोक-परम्पराक भेद आ उपलब्ध

जीवनचरितसँ स्वतंत्र मिलान आवश्यक अछि। तहिना ‘एक ग्रन्थमे बारह हजार ग्रन्थ बराबर चिन्तन’क कथन प्रतीकात्मक प्रशंसा होएब सम्भव अछि; एकरा जाँचल बिना ग्रन्थपरिमाणक तथ्य बनाओल उचित नहि।

गोप कुमार रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा ‘अशोक’ सन विद्वानक नाम लऽ गंगेशक असुविधाजनक जीवन-वृत्तान्त ओझराओल जाएबाक आरोप करैत छथि। ई कथापात्रक मूल पाठमे उपस्थित आरोप अछि, प्रमाणित ऐतिहासिक निर्णय नहि। नामोल्लेखित वास्तविक विद्वानक मंशा, लेखनक चयन अथवा अनुचित दमनबारे स्रोत-तुलना बिनु निर्णायक कथन करब अनैतिक होयत। ‘स्मृतिक सम्मान-हत्या’ एतय काव्यात्मक आलोचनात्मक पद अछि; ओकरा वास्तविक हिंसक अपराध अथवा व्यक्तिक दोषसिद्धिक पर्याय नहि बनाओल जा सकैत। एहि सावधानीसँ उपन्यासक जातिविमर्श कमजोर नहि होइत; उलटे प्रमाणक अपनहि घोषित आदर्शकेँ गंभीर बनबैत अछि।

## जाति, सहमति आ प्रमाणक सार्वजनिक पाठ

अनन्या प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आ उपमानक चर्चा उठबैत छली। ईरा आ मीरा प्रश्नकेँ जातिगत बहिष्कार आ स्त्रीक स्वायत्ततासँ जोड़ैत छली। एहि संवादमे ‘कुन व्यक्ति’ पर विश्वास करब आ ‘कुन प्रमाण’ पर निष्कर्ष निकालब अलग समस्या बनैत अछि। प्रश्नकर्ता बच्चासभक निर्भीकता रचनाक ऊर्जा अछि; तथापि उपन्यास शास्त्रीय प्रमाणसभक परस्पर सीमा, दोष आ शाब्दिक ज्ञानक विश्वसनीयता विस्तृत रूपसँ नहि खोलैत। विश्लेषणक लेल न्यायक प्रमाण-वर्गकेँ आधुनिक अभिलेखीय जाँचक सरल नामान्तर मानि लेब अनुचित अछि।

मीरा केवल सूचीमे सभक नाम लिखबाक प्रस्तावसँ सन्तुष्ट नहि छली। ओ देह, श्रम, इच्छा, प्रेम आ निजताक वास्तविक सम्मान माँगैत छली। देविका जोड़ैत छली जे न्यास स्मृतिक मालिक नहि, सेवक बनय। आरुणि लाल फाइलमे ‘न्यासक अधिकार क्षेत्र’ काटि ‘सेवाक दायित्व’ लिखैत अछि। दस्तावेजक एहि एक दृश्यात्मक

संशोधनमे अध्यायक प्रमुख नैतिक प्रतिपादन केन्द्रित अछि। लोकसभाक सहमति, वंशानुक्रमक हित, अल्पसंख्यक स्वर आ स्मृतिक बँटवारा सम्बन्धी जटिल कार्यपद्धति एखनो तैयार नहि; तथापि नामकरणक सत्ता न्यासीक हाथसँ लोकक हाथ दिस जाएबाक स्पष्ट संकेत अछि।

## अद्भुत वृक्ष, डिजिटल अगिलाहट आ पाठक सीमा

ठूँठक भीतर गंगेशक प्रश्न सन आवाज सुनाइ दैत अछि; वृक्षक वलय बारह हजार रेखाक आलोकमे देखाओल जाइत अछि। एहि दृश्यकेँ नव्य न्यायक इतिहासक साक्ष्य नहि, विचारक लोकालौकिक मूर्तिकरण बुझल जाए। बटुकनाथक प्रस्ताव तुरन्त स्वीकार अथवा अस्वीकार नहि होइत; सुनवाई लेल रोकल जाइत अछि। एहि रोकमे उपन्यासक शिल्पगत संयम अछि, कारण चरित्रगत अविश्वास निर्णयक पूर्ण विकल्प नहि। अन्तमे मोबाइलपर नव ‘डिजिटल श्रद्धांजलि मंच’क सूचना आबैत अछि। न्यासक लाल फाइल आ स्क्रीनक सेवा-सन्देशक तात्कालिक संयोग भविष्यक प्रश्न खोलैत अछि, मुदा अकेल संयोगसँ पर्दाक पाछूक स्वामित्व सिद्ध नहि होइत।

अध्यायक पाछाँ दार्शनिक अन्तर्ध्वनिक रूपमे कादम्बरी तथा ग्रन्थ-समाप्तिक प्रसंग सेहो जोड़ल गेल अछि। ओकर शास्त्रीय सूत्र आ मूल न्याय-प्रसंगक सम्बन्धक स्वतन्त्र स्रोत-जाँच आवश्यक अछि; एतय ओकरा अध्यायक सामाजिक कथानकसँ सरलीकृत ऐतिहासिक निष्कर्षक रूपमे ग्रहण नहि कएल गेल। एक समग्र दृष्टिमे अध्याय ५७क उपलब्धि शास्त्रक आभासकेँ लोकन्याय, जाति-सम्मान आ संस्थागत जवाबदेहीक बीच असुविधाजनक प्रश्न बनाओनाइ अछि। सीमा मुख्यतः अप्रमाणित जीवनी-श्रुति, नामोल्लेखित आलोचकीय आरोप आ सर्वस्वीकृत बालन्यायक त्वरित प्रस्तुति अछि। एहि दोषसभकेँ आलोचनाक स्पष्ट सीमारेखासँ अलग राखलाक बादे रचनाक वास्तविक तर्कात्मक साहस उभरैत अछि।

# अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

## शोकक डिजिटल रूपान्तरण : सेवा आ संग्रहक सीमा

पछिला अध्यायक अन्तिम मोबाइल-सूचना अध्याय ५८मे विस्तृत अनुभव बनैत अछि। ‘डिजिटल श्रद्धांजलि मंच’ मृतकक नाम अमर करबाक सुन्दर वचन दैत अछि, मुदा नाम जोड़बाक द्वार खुलिते परिवारक पता, चिन्हारि-पत्र, बैंकक विवरण, मृत्यु-कारण, मुआवजा-दावा आ सम्पर्क-सूचीक माँग शुरू होइत अछि। एहि क्रमक साहित्यिक प्रभाव केवल डिजिटल भय पैदा करब नहि; शोकक वैयक्तिक क्षणमे सूचनाक असमान आवश्यकता देखाओनाइ अछि। फूल-दिया आ नील पृष्ठभूमिक कोमल दृश्यक पाछाँ विस्तृत सूचनासंग्रहक व्यवस्था छिपल अछि। देविका मंच देखितहि ओकर शर्त जाँचैत छली; ई बदलाव उपन्यासक पहिनुक डिजिटल ठगीक अनुभवसँ पाठगत रूपेँ जुड़ल अछि।

कथावाचक चन्द्रपाल बत्राकेँ प्रत्यक्ष समुदायसँ दूर रखैत अछि। गामक परामर्शमे ओकरा प्रतिनिधि अथवा डिजिटल मंच काम दैत अछि; ओ स्वयं शहरक ठण्ढा कोठलीमे नाम भरल-अधूरा रहल अभिलेखक संख्या देखैत अछि। एहि दूरत्वक संग कथामे नियंत्रणक असममिति प्रकट अछि। परिवारक शोक ओहि ठाम जीवित सम्बन्ध अछि, मुदा परदाक पाछाँ ओ व्यवहार आ प्रतिक्रियाक आँकड़ा बनि जाइत अछि। मुख्य विरोध केवल प्रौद्योगिकी आ परम्पराक नहि—सूचनाक उपयोगक अधिकार, उद्देश्यक सीमा, नियन्त्रण आ बिश्वासक अछि।

## सहमतिक भाषा आ पीड़ितक स्वायत्तता

मीरा मंचक विस्तृत स्वीकृति-पत्र पढ़ैत छली : कथा, चित्र, स्वर, परिवारक विवरण, शोध, प्रचार, साझेदारी आ दान-आह्वान लेल उपयोग सम्भव बताओल गेल अछि। एक सहमतिक भीतर अनेक स्वतन्त्र प्रयोजन समेटबाक कारण सूचित स्वीकृतिक

प्रश्न उठैत अछि। सत्यव्रत शोकाकुल व्यक्ति सँ लेल सहमतिक स्वतन्त्रताक तुलना भूखल व्यक्ति सँ भोजनक बदला हस्ताक्षर लेबाक स्थितिसँ करैत छथि। ई तुलना न्यायिक निर्णय नहि, नैतिक विचार-प्रयोग अछि। स्वीकृति अपनहि कखनो अमान्य नहि; ओकर अर्थ निर्भर करैत अछि जे व्यक्ति स्पष्ट विकल्प पबैत अछि कि नहि, ओ अपनी सूचना हटा सकैत अछि कि नहि, आ सेवा बिना अनावश्यक सूचनाक उपलब्ध रहैत अछि कि नहि।

एक युवक उचित प्रश्न करैत अछि : डिजिटल मंचसँ नाम दूर-दूर धरि पहुँचत तँ लाभ की नहि? देविका ओकरा प्रौद्योगिकी अपनहि खराब नहि कहैत छली, बल्कि ‘नामक लगाम’ ककरा हाथमे रहत से पूछैत छली। एहिठाम उपन्यास एकरेखीय तकनीक-विरोधसँ बचैत अछि। समुदाय द्वारा सञ्चालित, न्यूनतम सूचना लेने, परिवारक अनुमति मानने आ पारदर्शी हिसाब देने डिजिटल स्मृति-पद्धति सम्भव अछि। अध्यायारम्भक लोकगीत शिक्षा, स्वास्थ्य आ आजीविका सहित शोकक सेवा-निधिक सकारात्मक कल्पना करैत अछि; कथानकक भयावह अनुप्रयोग ओकर विकृत प्रतिरूप अछि। ई दूनू स्वरक तुलना आलोचनामे अनिवार्य अछि।

## नव्य न्याय, संकेत आ पहिचानक प्रमाण-सीमा

ईरा चारि प्रमाण-श्रेणीक नाम लैत छली—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान—आ बच्चासभकेँ मंचक दृश्य, सूचनाक माँग, सेवाक भाषा तथा गोहिक रूपक अलग करबाक शिक्षा दैत छली। साहित्यिक शिक्षणक रूपमे ई अनुक्रम प्रभावी अछि। तथापि सुन्दर पन्नाक प्रत्यक्ष अनुभवसँ वित्तीय अपराधक अनुमान स्वतः सिद्ध नहि। ‘गोहि’क उपमान नीतिगत जोखिम बुझाबैत अछि, अपराधी पहिचानक साक्ष्य नहि। गोप कुमार तीन परतक मंच, सेवा-समूह आ तकनीकी संरचनाक उल्लेख करैत छथि। मूल पाठमे हुनकर आशंका कथानकक महत्त्वपूर्ण सूचना अछि, मुदा सार्वजनिक तकनीकी अभिलेख, सत्यापित लाभार्थी आ भुगतान-मार्गक प्रमाण

विस्तृत रूपसँ प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। अतः कथाक पात्रक निष्कर्ष आ आलोचकक प्रमाणित निष्कर्षकेँ एक नहि कएल जाए।

चन्द्रपालक स्क्रीनपर ‘नाम’क ठाम ‘प्रमाण’, ‘दान’क ठाम ‘दायित्व’ आ ‘स्वीकृति’क ठाम ‘ककर अधिकार?’ प्रकट होइत अछि। ‘तत्त्वचिन्तामणि मोड सक्रिय’ स्वयं कथावाचकक अनुसार प्रोग्रामरक बनाओल वास्तविक सुविधा नहि, ठूँठक लोकालौकिक हँसी अछि। ई चमत्कार नैतिक रूपकक सार्थक विस्तार अछि, डिजिटल फोरेंसिकक प्रमाण नहि। राघवक नाम अनल गुमनाम मेटाएबला सन्देश सेहो कथामे अगिला रहस्य खोलैत अछि; वास्तविक स्रोत-पहिचानक जाँच बिना ओकरा स्वतः विश्वसनीय मानि लेब अनुचित अछि।

## नाम-पाठशाला, करुणा आ अध्यायक शिल्प

चन्ना गाछीक ठूँठ लग बच्चासभ ‘नाम-पाठशाला’ शुरू करैत अछि। पहिल पाठ नाम कहब आ नाम देबक अन्तर; दोसर, शोकक फोटो व्यापारक वस्तु नहि; तेसर, स्मृति पञ्जीकृत भेला पर स्वामित्वक प्रश्न। मीरा अपन शपथमे मृतकक घरक ‘चाबी’ नहि देबाक रूपक अनैत छली। ई निजी विवरणक सम्पूर्ण अधिकार त्यागे बिना सार्वजनिक स्मृतिमे भाग लेबाक सिद्धान्त अछि। एक बूढ़ महिला बेटाक नामक पत्थरपर लौटैत छली आ ऐपपर सरकारी सहायताक वचन सुनि सावधान होइत छली। हुनकर छोट निर्णय, चन्द्रपालक दूरस्थ आँकड़ा-गणनाक विपरीत, पाठककेँ व्यक्ति-केंद्रित नैतिकता बुझबैत अछि।

अन्तिम लोकगीत शोकपर किस्त वसूलबाक तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। फूल-दियाक पवित्र बिम्ब आ दानक कोड एकहि पंक्तिमे राखि लेखक भावनात्मक शोषणक बाजारू भाषा खोलैत छथि। सीमा ई अछि जे बच्चासभक त्वरित तकनीकी विवेक आ चन्द्रपालक एकरूप स्वार्थ मनोवैज्ञानिक रूपसँ कखनो अतिसरलीकृत देखाइत अछि। तथापि ई अध्याय स्मृतिसंरक्षणक उपयोगी मापदण्ड स्पष्ट करैत अछि : दान आ सेवा

लेल पारदर्शिता, सूचना लेल न्यूनतम संग्रह, कथन लेल पृथक सहमति, आ दुखक स्वामित्व पीड़ित परिवारक हाथमे।

# अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड

## मेटाएल शब्द आ प्रमाणक अनुशासन

अध्याय ५८क गुमनाम मेटाएबला सन्देशक पाछाँ अध्याय ५९ ‘भाप’ आ ‘धुँधला पात’क रूपकसँ शुरू होइत अछि। राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक मेटाएबाक विश्वास रचनाक विरोधी धुरी अछि; ओ बुझैत अछि जे चिह्न हटत तँ अपराधक देह नहि बचत। कथा एकर उलट कहैत अछि जे मेटाएल सन्देशक स्मृति, दृश्य-चिह्न आ लोकक प्रश्न बाँचल रहि सकैत अछि। मुदा आलोचनात्मक दृष्टिसँ मोबाइलक काँचपर रहि गेल पातक धब्बा सन्देशक पूरा मूल पाठ, प्रेषकक पहिचान, समय अथवा रूपान्तरणक विश्वसनीय डिजिटल प्रमाण नहि। अध्यायारम्भक गीत विशेषज्ञक संग जाँच, सुरक्षित प्रति आ समयक छापक आग्रह करैत अछि—एहि संयमकेँ हीन करि चमत्कारक धुँआकेँ तकनीकी निष्कर्ष नहि बनाओल जाए।

## प्रमाणक चारि वर्ग आ अतिरिक्त शास्त्रीय प्रश्न

अनन्या पहिने कोडकेँ ‘प्रमाण’ बनेबाक प्रस्ताव दैत छली। बच्चासभ प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमानक संग अर्थापत्ति आ अनुपलब्धिक नाम सेहो लैत अछि। ई सूक्ष्म स्थल पर दार्शनिक सावधानी आवश्यक अछि : न्याय-दर्शनक स्वीकृत चारि प्रमाणक परम्परासँ अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि स्वतंत्र प्रमाण मानबाक विचार अन्य भारतीय दर्शनक वर्गीकरणमे अलग रूपसँ भेटैत अछि; एकरेखीय सूची बना दुनूकेँ बिना भेद नव्य न्यायमे जोड़ब शास्त्रीय सरलीकरण अछि। उपन्यासक पात्रसभ सीखबाक क्रममा छथि, अतः हुनकर उच्चारणकेँ दार्शनिक पाठ्यपुस्तकक अन्तिम निष्कर्ष नहि बुझल जाए।

बच्चासभक अनुमान जे ‘सन्देश मेटायल तँ ओ अपराध नुकाबए लेल मेटायल’ एक संभाव्य शंका अछि; वैकल्पिक कारण, सन्देशक प्रकृति आ मेटाएबाक सामान्य

सुविधा पर विचार बिनु दोष सिद्ध नहि करैत। तहिना कोनो नाम ऐपमे नहि भेटब ओकर जानि-बुझि मेटाएल जाएबाक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। एहि बिन्दुपर उपन्यासक घोषित प्रमाण-विवेक आ बच्चासभक भावावेशमे अन्तर स्पष्ट देखाइत अछि। लेखक एहि अन्तरकेँ अगिला पाठक जाँचक अवसर बनबैत छथि कि नहि, से आगेक अध्यायसभमे देखबाक विषय अछि।

## भवेशक कथन आ कथासाक्ष्यक भेद

चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोगसँ जुड़ल युवक भवेश लोकसभामे अपन काजक उल्लेख करैत अछि। ओ दान-श्रेणी आ विभिन्न चिह्नक आन्तरिक उपयोगक विवरण दैत अछि : कोठलीक चिन्ह, पातक नस, उनटा दिया आदि। एहि साक्ष्यसँ रहस्यक स्तर अधिक ठोस होइत अछि, कारण पहिल बेर कोड आ भुगतान-प्रवाहक सम्बन्धमे एक प्रत्यक्ष काम केने व्यक्ति बाजैत अछि। तथापि भवेशक स्वीकृतिओ कथाजगतक एक व्यक्तिक कथन अछि। ओकर दस्तावेज, भुगतान-लेखा, समय-चिह्न, उपकरण-प्रति आ स्वतंत्र पुष्टिक प्रश्न शेष अछि। आलोचककेँ ओकर कथनको ‘प्रमाणित दण्डनीय अपराध’क समानार्थी नहि मानबाक चाही।

मीरा भवेशक मनःस्थिति पर प्रश्न उठबैत छली : ओ जनैत छल कि परिवार अपन मृतकक स्मृति सुरक्षित मानत? युवक स्वीकार करैत अछि जे भावना मंच चलबैत अछि आ लेखा व्यापार। ई संवाद तकनीकी प्रबन्धक ‘निर्दोष औजार’ होएबाक आवरण खोलैत अछि। आधुनिक कथनमे सॉफ्टवेयरक नैतिक भूमिका देविका, गोप, मीरा आ भवेशक भिन्न आवाजद्वारा बनैत अछि। प्रत्यक्ष लाभुक, सम्भावित सहभागी, निर्दोष तकनीकी कर्मी आ बाध्य कर्मचारीक बिचक भेद यथेष्ठ विकसित नहि; एहि कारण कथाक नैतिक आरोपक वास्तविक परिमाण पाठक स्वयं जाँचए चाहैत अछि।

## मौनक स्रोत : व्यक्ति नहि, सामूहिक विधि

राघवक संदेश फोनक बाद पीयर कागच आ अन्ततः माटिक कबड्डी-रेखा पर नीला अक्षर बनि प्रकट होइत अछि। एहि क्रमानुसार डिजिटल तकनीक आ लोकमिथकक जगत एक-दोसरामे घुलैत अछि। कथावाचक राघवक दूरस्थ निगरानीक बात ‘कदाचित्’ रूपेँ कहैत अछि; ई अनिश्चितता महत्त्वपूर्ण अछि। नीला कागच अथवा जादुई रेखाकेँ वास्तविक डिजिटल संकेत, भौतिक साक्ष्य अथवा सूचनाक विश्वसनीय स्रोत मानब नहि। तिनका सत्यव्रतक पूर्व मौन आ सामुदायिक सुनवाईक विरुद्ध भयक मूर्त रूप समझल जाए।

उज्ज्वलक माय अपन बेटाक नाम पढ़ि चुप भऽ जाइत छली। अनन्या तत्काल चिह्न नहि लिखैत, प्रतीक्षा करैत छली। बादमे खेलैत एक बालक ‘कबड्डी-कबड्डी’ कहैत ठूँठ छू कऽ घुरैत अछि। बच्चासभ एकरा ‘नामक उत्तर : खेल’ लिखैत अछि। ई दृश्य विशेष कलात्मक अछि, किएक तँ मृतकक चुप्पी तत्क्षण अलौकिक निर्देश नहि बनि, जीवित नेनाक स्वाभाविक खेलसँ जुड़ैत अछि। न्याय एक व्यक्तिक चमत्कार नहि, पीढ़ीगत सतर्कता आ साझा भागीदारीक अभ्यास बनबाक सम्भावना प्रकट अछि।

अन्तिम नीला संदेश ‘स्रोत हटाउ’ कहैत अछि, मुदा अनन्या बुझैत छली जे स्रोत सत्यव्रतक एकटा देह नहि, ‘सामूहिक कान’ अछि। एहि अर्थभेदमे अध्यायक केन्द्रीय तर्क अछि। राघव यदि एक व्यक्तिक मौन नियंत्रित करितो, समुदाय सुनबाक प्रशिक्षण प्राप्त कऽ चुकल अछि। कर्तृत्वक व्यक्तिकेन्द्रितता टूटैत अछि। तथापि ई आध्यात्मिक विजय डिजिटल गोपनीयता, वित्तीय सुरक्षा आ पीड़ितक वास्तविक उपचारक स्थान नहि लऽ सकैत; नेनाक खेल आ अभिलेखीय संरक्षण दुनू जरूरी अछि।

## नैतिक परामर्श आ शिल्पगत मूल्यांकन

मीरा कोड-सूची सर्वसाधारणक सामने पूर्ण रूपमे नहि राखबाक आग्रह करैत छली, जाहिसँ सम्भावित दुरुपयोगक प्रविधि लोकसभामे नहि पसरय। साथहि सार्वजनिक चेतावनीमे अनुमति बिनु नाम चढ़एब, अपारदर्शी दान आ मेटाएल सन्देशक प्रश्न स्पष्ट लिखल जाइत अछि। सुरक्षा आ सार्वजनिक सूचना बीच ई भेद अध्यायक ठोस सामाजिक उपलब्धि अछि। एक वृद्ध चर्मकार अपन नाम केन्द्रमे लिखबाक आग्रह करैत छथि; एहि दृश्यसँ पछिला ‘गंगेशक प्रश्न’क जाति-विमर्श ठूँठक पाथरपर वास्तविक स्थान-सम्बन्ध बनैत अछि।

लोकगीत ‘मेटल कोड, बचल साँच’ प्रमाणक धैर्यशील जाँच आ स्मृतिक अवशेषक सामूहिक पाठक समन्वय करैत अछि। समापनक दार्शनिक अन्तर्ध्वनि ‘दूषण-पञ्जीक खाली पन्ना’ आरोपक स्याही आ ज्ञानक प्रमाण-विवेकक विरोध राखैत अछि। मुख्य सीमा ई जे डिजिटल साक्ष्यक वास्तविक तकनीकी कठिनता, स्क्रीनपर स्वतः प्रकट चमत्कार आ बच्चासभक शास्त्रीय भाषाक त्वरित दक्षता एकहि विचारक सुविधाक लेल प्रयुक्त होइत अछि। एहि सीमाक बावजूद ‘सुनू, फेर लिखू; लिखू, फेर पहरा दिअ’क त्रिपदीय अनुशासन रचनाक शोध-नैतिक सार अछि : सुनल कथा सहेज, जाँचि, अनुमति लऽ कऽ सुरक्षित करब।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ५५–५९

## राजकीय सूचना, लोकनक्शा, न्यास आ परदाक संयुक्त संघर्ष

एहि पाँच अध्यायमे चन्ना गाछीक ठूँठ मात्र स्मृतिस्थल नहि, परस्पर विरोधी अभिलेखीय अधिकारक प्रयोगशाला बनैत अछि। अध्याय ५५मे नगरपालिका ‘खाली भू-खण्ड’ आ अस्थायी जमावक भाषा अनैत अछि; ५६मे समुदाय पाथर, नदी आ निजी मौनक नक्शा रचैत अछि; ५७मे बटुकनाथ संरक्षणक ‘न्यास’ प्रस्ताव लऽ अबैत अछि; ५८मे चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग मृतकक नामक बदलामे बहुविध सूचना माँगैत अछि; ५९मे राघवक सांकेतिक दान-व्यवस्था आ मेटाएल सन्देशक चुनौती सुनबाक सामूहिक विधिसँ टकराइत अछि। सरकारी सूचना, निजी संस्था, डिजिटल मंच आ गुप्त सिग्नल अलग-अलग प्रकारक सत्ता छथि; सभकेँ बिना प्रमाण एकहि षड्यन्त्रक सिद्ध सदस्य घोषित करब उपन्यासक परतदार संरचना घटा देत।

## पात्रक क्रिया आ सामूहिक निर्णयक परिपक्वता

अनन्याक भूमिका पाँचू अध्यायमे परिवर्तनशील अछि। ओ पीयर पत्र पढ़बाक पहिने ओकर पहिचान पूछैत छली; नक्शापर नामक पाथर सुरक्षित राखैत छली; बटुकनाथसँ न्यायक प्रश्न करैत छली; डिजिटल मंचक सूचना-संग्रहक कारण बुझब चाहैत छली; अन्ततः कोड पढ़बाक पहिने प्रमाण जोगाबक अनुशासन माँगैत छली। मीरा सार्वजनिक नामक संग निजताक घेरा, सहमतिक सीमा आ कोड-सूचीक सुरक्षित उपयोग स्थापित करैत छली। देविका उज्ज्वलक स्मृतिक सम्मानक संग डिजिटल चेतना अनैत छली। गोप कुमार अभिलेखक असफलता आ तकनीकी जालक सम्भावना उठबैत छथि, मुदा हुनकर सभी अनुमान स्वतंत्र जाँच मांगैत अछि।

सत्यव्रत मेहता एतय नब निर्णयक सर्वाधिकारी नहि बनैत छथि। ओ पत्र सुनैत छथि, प्रभावित समुदायक उपस्थितिक पक्ष लैत छथि, शोकक क्षणक सहमति पर प्रश्न करैत छथि आ मौनकेँ एक व्यक्ति सँ हटि समाजक विधि बनबाक विचार दैत छथि। बा स्थानीय स्मृतिक अनुभवी स्वर छथि, ईरा विद्वत् प्रमाणचर्चा लऽ अबैत छली। भवेश आधुनिक तकनीकी कामक आन्तरिक जानकारक रूपमे नया साक्ष्य देबाक प्रयत्न करैत अछि। एहि पात्रगत बहुलतासँ कथा केवल सत्तासँ पीड़ित समाजक विलाप नहि रहि सार्वजनिक नैतिक जाँच बनबैत अछि।

## प्रमाण-शास्त्र आ कथाक कल्पनाशीलता

पाँचू अध्यायमे ‘प्रमाण’ शब्द बारम्बार बदलैत अर्थमे प्रकट होइत अछि : नगरपालिकाक औपचारिक आपत्ति-पत्र (५५), नक्शाक रिक्त स्थान आ स्रोत-चिह्न (५६), गंगेशक प्रमाण-चर्चा (५७), अनुप्रयोगक स्वीकृति तथा अभिलेख (५८), आ मेटाएल संदेशक फोरेंसिक सम्भावना (५९)। नव्य न्यायक प्रमाण-विवेक आलोचनाकेँ सिखबैत अछि जे कथन, विश्वसनीयता, अनुमान आ अनुपस्थित जानकारी एक नहि। विशेषत: गंगेशक जीवनसम्बन्धी लोकश्रुति आ नामोल्लेखित विद्वानपर पात्रक आरोपक बाह्य ऐतिहासिक पुष्टि अनुपस्थित अछि; तिनका साहित्यिक संवादक रूपमे सुरक्षित रखबाक चाही। तहिना चन्द्रपाल-राघवक कथाजगतक आरोप वास्तविक विधिक दोषसिद्धि नहि।

भूतक झिलमिल आकृति, मापक फीताक अपनहिसँ सिमटब, स्क्रीनपर ‘तत्त्वचिन्तामणि’ प्रकट होएब आ नीला सन्देश माटिक रेखा पर उतरब काल्पनिक आख्यानक अद्भुत स्तर अछि। एहि दृश्यसभक काव्यात्मक सार सत्ता, स्मृति आ भयक संवेदनात्मक विस्तार अछि। ओकरा तकनीकी अथवा विधिक प्रमाण मानि लेला पर साहित्य आ इतिहासक विधिक मध्य अनुचित भ्रम उत्पन्न होयत। लेखक जखन दृश्य-रूपकक बाद अनन्याक प्रश्न, भवेशक कथन, मीरा द्वारा शर्त पढ़ब

अथवा आरुणिक लिखित उत्तर राखैत छथि, तखन कथाक अनुभव विशेष विश्वसनीय होइत अछि।

## वस्तु-बिम्बक रूपान्तर आ लोकगीतक भिन्न स्वर

पीयर कागच पहले कैंचीक रूपक अछि; लोकक लिखल उत्तरसँ ओ बहसक पृष्ठ बनैत अछि। नक्शाक लाल वृत्त स्थानक दावाकेँ केन्द्र दैत अछि; कटल ठूँठ सामूहिक बैठकक आसन बनैत अछि; लाल न्यास-फाइल अधिकारक लोभक सम्भावना खोलैत अछि; नील डिजिटल पन्ना शोकक व्यापारक चिन्ह बनैत अछि; फोनक काँचपर पातक धब्बा मेटाएल स्मृतिक रूपक बनैत अछि। वस्तु जतेक बदलैत अछि, प्रश्न ओतेक सुस्पष्ट होइत अछि : मृतकक नामक उपयोगक अधिकार ककरा लग अछि?

लोकगीतसभक स्वर कथाक प्रश्नमे एक उपयोगी प्रतिपक्ष खोलैत अछि। पीयर सूचना-पत्रक गीत जनजागरूकताक सम्भावना मानैत अछि, जखनकि मूल घटना प्रशासनिक दबाव देखबैत अछि। स्मृतिभूमिक गीत विकासपूर्वक सहमति माँगैत अछि; गंगेशक प्रश्नक गीत प्रमाणक खेत जोतैत अछि; शोकक सेवा-निधिक गीत पारदर्शी दानक रचनात्मक कल्पना करैत अछि; मेटल कोडक गीत विशेषज्ञ-जाँच आ सुरक्षित प्रति माँगैत अछि। एहि भिन्न लोकलयक कारण रचनाक अर्थ केवल निषेध नहि, सकारात्मक वैकल्पिक पद्धति बनैत अछि। तइयो गीतमे घनघोर घोषणाक आवृत्ति कखनो दृश्यसभक स्वतः खुलबाक गुंजाइश घटबैत अछि।

## समेकित आलोचनात्मक निर्णय

एहि बैचक श्रेष्ठ पक्ष ‘स्मृतिसंरक्षण’क भावनात्मक अधिकारकेँ ठोस नैतिक नियममे बदलब अछि—पीड़ितक निजी मौन, सामुदायिक सुनवाई, स्रोत-पहिचान, लिखित आपत्ति, जाँच योग्य अभिलेख, न्यासीक सेवाभाव, न्यूनतम सूचनासंग्रह आ दानक खुलल लेखा। सीमा ई जे कथाक नायक बालिकाक विवेक प्रायः अचूक बनैत अछि;

निजी दान-व्यवस्था, राज्यक कार्य-सुविधा आ न्यायालयक प्रमाण-प्रक्रियाक वास्तविक भिन्नता पर्याप्त जटिलता पाबि नहि सकल अछि। पीयर सूचना-पत्रक सात दिनक अवधि, प्रस्तावित न्यासक स्वामित्व, अप्रमाणित जीवन-श्रुति आ डिजिटल हस्ताक्षरक विश्वसनीयता आगामी पाठक आलोचनामे जाँचबाक खुलल विषय छथि।

अन्ततः अध्याय ५५क पत्रपर लोक ‘उपस्थित’ लिखैत अछि, ५६मे ओ उपस्थिति नक्शा बनैत अछि, ५७मे प्रश्न बनैत अछि, ५८मे निजी सूचना देबाक मर्यादा बनैत अछि आ ५९मे सुनबाक सामूहिक कान बनैत अछि। ई केवल प्रतिरोधक जीत नहि; अनुसंधानक प्रारम्भिक शर्त अछि। स्मृतिक उचित घर ओतय बनैत अछि जतय नामक गरिमा, प्रमाणक सीमा, परिवारक अनुमति आ सार्वजनिक हित—चारू एक-दोसराक परीक्षा लैत रहैत अछि।

# अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

## दू मौनक नैतिक अन्तर : अनुपस्थिति सँ श्रवण धरि

अध्याय ६० अपन शीर्षकमे एकहि पात्रक आचरणक दू नैतिक स्थिति आमने-सामने रखैत अछि। सत्यव्रत मेहताक पहिल मौन पद, प्रक्रिया आ सुरक्षित दूरीक सहारे पीड़ितक स्वर दबाएबाक इतिहाससँ सम्बद्ध अछि; दोसर मौन प्रश्नक उत्तर देबासँ पलायन नहि, उत्तर देबासँ पहिने प्रश्नक स्वामीक अधिकार स्वीकार करब अछि। सूखल पोखरिक कात हुनकर बैसब, पाँकमे रेखा खींचब आ अनन्याक प्रश्नक प्रतीक्षा करब—ई तीनू क्रिया मनोवैज्ञानिक परिवर्तनकेँ दृश्य स्वरूप दैत अछि। उपन्यास ओकर सुधारकेँ अचानक प्रायश्चित्तक घोषणा नहि बनबैत; पहिल चरणमे ओ अपन तत्परताक भीतर नुकायल अधिकारीगत अहंकार चिन्हैत छथि।

अनन्याक प्रश्न ‘अहाँ चुप किएक छी?’ एहि अध्यायक निर्णायक परीक्षण अछि। ई प्रश्न सत्यव्रतक मौनक बाहरी रूप नहि, ओकर अभिप्राय जाँचैत अछि। हुनकर उत्तरमे एहन परिवर्तन भेटैत अछि जाहिमे निर्णयक केन्द्र अधिकारीसँ समुदाय दिस सरकैत अछि। ओ अपनाकेँ पहिने श्रोता आ पछाति विधिक व्याख्याकार बनबैत छथि। ई परिवर्तन महत्वपूर्ण अछि, कारण केवल चुप रहबाक घोषणा पर्याप्त नहि; लोकक स्वर वास्तविक निर्णय प्रक्रियामे कतेक स्वतंत्र रहल, ई ओकर कसौटी अछि। अन्तमे बच्चासभ पहिने अपन चिह्न रखैत अछि आ सत्यव्रत अन्तिम पाँतिमे केवल ‘सुनल’ लिखैत छथि। हस्ताक्षरक क्रममे सामाजिक पदानुक्रमक प्रतिलोम रचनाक सूक्ष्म उपलब्धि अछि।

## पवित्र शब्दक भीतर आर्थिक अनुबन्ध

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक कोडक कागच धर्म, श्रद्धा, पुनर्निर्माण, सहयोग आ पीड़ित-परिवारक कोष सन शब्दक ओट लैत अछि। देविका जखन कागचकेँ धूपमे राखैत छली आ पवित्र शब्दक नीचाँ हिस्सा, मार्ग, कमीशनक रेखा उभरैत देखाइत अछि, तखन ई केवल

गुप्त संकेतक उद्घाटन नहि; सार्वजनिक भाषाक नैतिक परत उघारबाक रूपकीय दृश्य अछि। कथावाचक धूपकेँ सत्यापनक प्रयोगशाला बनबैत अछि, मुदा एहि अलौकिक प्रकाशकेँ वास्तविक वित्तीय अपराधक स्वतन्त्र प्रमाण बुझब अनुचित होएत। साहित्यिक सत्य ई अछि जे धनोपार्जनक सम्बन्ध भावनात्मक शब्दावलीमे नुकाओल जा सकैत अछि; प्रशासनिक सत्यापन लेल दस्तावेज, सहमति, लेनदेन आ उत्तरदायित्व अलग सँ जाँचनीय रहत।

ठूँठक चारू कात चारि दस्तावेज राखल अछि—नगरपालिकाक सूचना-पत्र, बटुकनाथ हरिहरनक न्यास-प्रस्ताव, चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोगक प्रचार-पन्ना आ राघवक दानपत्र। रचना ओहि सभकेँ चारि गोहिक रूपमे देखबैत अछि। अलंकारक शक्ति एहि बातमे अछि जे शरीरक हिंसा आब भाषाक हिंसा बनि गेल अछि। ‘खाली भू-खण्ड’, ‘धरोहर’, ‘डिजिटल श्रद्धांजलि’ आ ‘दान’ अलग-अलग संस्थागत नाम छथि, मुदा सौम्याक तुलनात्मक पाठमे एकहि अभाव प्रकट होइत अछि: नामक पहरा ककर हाथमे रहत? एहि प्रश्नसँ उपन्यास स्मृतिक भावनात्मक दावाकेँ विधिसम्मत उत्तरदायित्वक दिशामे मोड़ैत अछि।

## स्त्रीक अनुभव, अनुमति आ आलोचनाक अधिकार

देविका रोदनक डिजिटल मापनक विरोध करैत छली; मीरा निजता-हानिक अनुभवसँ स्मारक बनएबाक पूर्व अनुमति आवश्यक बतबैत छली; सौम्या प्रस्तावसभक शब्दार्थ पूछैत छली; बा गंगेशक असुविधाजनक जीवनकेँ सम्मानक मूर्तिमे बदलि ओकर संघर्ष मेटाएबाक आशंका व्यक्त करैत छली। चारू आवाज एकहि नारा दोहरबैत नहि, चारि अलग ज्ञान-पद्धति रचैत अछि—दृश्यक बाजार, देहक अधिकार, संस्थागत भाषाक परीक्षण आ लोक-स्मृतिक विरोध। एहि अनेकस्वरता पाठककेँ बुझबैत अछि जे स्मृति-संरक्षणक न्याय केवल परम्पराक सम्मानसँ पूर्ण नहि होइत।

‘नामक समक्ष प्रस्तावक शपथ’ शीर्षक पन्ना एहि बहसक संस्थागत फल अछि। स्मारक बनबएवला मृतकक परिवार लग जाए; डिजिटल मंच चलाबएवला एक दिन अपन यन्त्र बन्द कऽ लोकक स्वर सुनए; दानदाता पुरान हिसाब खोलए; न्यास बच्चासभक अधिकार स्पष्ट करए—ई शर्तसभ प्रतीकात्मक होएतो पारदर्शिता, सहभागिता आ सूचित स्वीकृतिक

व्यवहारिक माँग रखैत अछि। मुदा एक आलोचनात्मक प्रश्न बचैत अछि: बालकक पहिल चिह्न लगब सामुदायिक स्वायत्तताक सुन्दर छवि अछि, तथापि ओकरा औपचारिक विधिक प्रतिनिधित्वक पर्याप्त पर्याय मानल नहि जा सकैत अछि। पाठ एहि अन्तरकेँ खुलल राखि आगाँक संघर्षक सम्भावना बढ़बैत अछि।

## आख्यानिक गति, लोकगीत आ सीमाक विवेचन

अध्याय घटित घटनाक संख्यासँ बेसी निर्णयक विलम्बपर आधारित अछि। पोखरिक सूखल पाँकसँ ठूँठक सभा धरि गति क्रमशः चलैत अछि, जखनकि अन्तिम ‘कबड्डी’क अस्वाभाविक ध्वनि अगिला अध्यायक खेल आ नाम-उत्सवक सेतु बनैत अछि। आरम्भक ‘मौनसँ वचन’ लोकगीत मौन, वचन आ कर्मक अनुक्रम प्रस्तावित करैत अछि; अन्तक गीत ओहि प्रस्तावक उत्तरमे लोकक स्वरकेँ अधिकारीक स्वर सँ ऊपर राखैत अछि। एहि दोहरी गीतात्मक संरचनासँ सत्यव्रतक आत्मविवेचन सार्वजनिक आचरणमे बदलैत देखाइत अछि।

अध्यायक उपलब्धि पात्रकेँ निर्दोष आदर्श बनेबाक बदला ओकर पूर्व दोष स्मृतिमे रखैत विकसित करब अछि। तथापि कथावाचक कतहु-कतहु पात्रक नैतिक अर्थ अत्यन्त स्पष्ट बजि दैत अछि, जाहिसँ पाठकक स्वतंत्र व्याख्याक अवकाश संकुचित होइत अछि। सभामे क्रमशः देविका, मीरा, सौम्या आ बाक कथनक व्यवस्थित आगमन रूपक योजनाकेँ प्रभावशाली करैत अछि, मुदा वास्तविक सामुदायिक विमर्शक अव्यवस्था ओकर अपेक्षा अधिक जटिल भऽ सकैत अछि। ई सीमा रचनाक केन्द्रीय उपलब्धि—सुननाइकेँ न्यायिक काजक आरम्भ मानब—केँ मेटबैत नहि अछि।

# अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव

## शोक आ उत्सवक बीच नव अर्थसम्बन्ध

‘पहिल नाम-उत्सव’क उद्घाटनमे मंच, नगाड़ा, पताका, माल्यार्पण आ औपचारिक वक्ताक अनुपस्थिति जानि-बुझि रचल गेल अछि। उत्सवक प्रचलित सार्वजनिक प्रदर्शनकेँ हटाओलाक बाद जे बचैत अछि, से पाथरक नाम, कटायल जड़ि, जागल बच्चा आ परिवारक प्रतीक्षा अछि। अनन्याक तर्क जे पुनः सुनल गेल नाम केवल रोदन नहि, उपस्थितिसँ जुड़ैत अछि, दुखक विस्मरण नहि करैत; ओ शोकक भीतर सामाजिक प्रत्युत्तरक सम्भावना खोलैत अछि। करुण रसक साथे संकोचपूर्ण सामूहिक आशाक सहअस्तित्व एहि अध्यायक प्रधान भावात्मक विन्यास अछि।

नाम-पाठ आरम्भ होएबासँ पहिने मजदूर, डिजिटल ठगीक पीड़ित आ अपमानित स्त्रीसभक नामक क्रमपर मतभेद होइत अछि। एक बालकक हस्तक्षेप क्रमक वर्चस्वकेँ तोड़ैत पहिल नाम ‘जिनकर नाम नहि भेटल’ निर्धारित करैत अछि। ई स्थापनाक गहनता एहि तथ्यसँ अछि जे अनुपस्थिति मात्र अब अभिलेखक असफलता नहि, उत्सवक आरम्भिक पात्र बनैत अछि। ‘उपस्थित’क सामूहिक उत्तर न्यायालयक हाजिरी-सूचक प्रयोगसँ भिन्न अर्थ लैत अछि: मृत देह उपस्थित नहि, मुदा ओकर अभाव आ ओकर प्रति दायित्व उपस्थित अछि।

## अधूरा नाम लिखबाक बौद्धिक ईमानदारी

दोसर पाथरपर ‘सर...’ लिखल अछि। बूढ़ि स्त्री सरयू, सरोज अथवा सरपन सन सम्भावित नाम बजैत छलीह; मीरा कोनो एक रूप चुनि पूरा कऽ देबाक विरोध करैत छली। एहि दृश्यकेँ केवल भावुक मार्मिकता मानब कम पड़त। अभिलेख-रचनाक मूल प्रश्न ई अछि जे जतय प्रमाण अपूर्ण अछि, ओतय सहानुभूति प्रमाणक अभावकेँ भरबाक अधिकार दैत अछि कि नहि। कथाक उत्तर नकारात्मक अछि। अधूरापनक दस्तावेजी संरक्षण असत्य पूर्णतासँ श्रेष्ठ ठहरैत अछि। विशेषतः पूर्व बैचक सरयू महतो/सरयू देवी सम्बन्धी अस्पष्टता कैँ देखैत ई दृश्य

समग्र कादम्बरीक सम्पादकीय पाठन लेल सेहो उपयोगी कसौटी अछि—अनिश्चित सम्बन्ध मनगढन्त निश्चिततामे नहि बदलल जाए।

नामसँ संग जाति, पेशा, टोला, नदी अथवा मायक नाम जोड़बाक स्वीकृति परिवारक इच्छापर छोड़ल जाइत अछि। एतय निहित सूक्ष्म भेद ई अछि जे जातिक उल्लेख स्वभावतः गरिमा नहि दैत, मुदा जाति-आधारित अपमानक इतिहास पूर्णतः हटा देलासँ अन्यायक साक्ष्य हेरा सकैत अछि। बा द्वारा गंगेशक तत्त्व आ समाजक कुल-पूछताछक तुलना एहि द्वन्द्वकेँ लोकभाषामे प्रस्तुत करैत अछि। रचना स्मृतिक समान पाँति बनबैत-बनबैत अनुभवक भिन्नताकेँ दबाएबासँ बचबाक आग्रह करैत अछि।

## जीवित स्वर, निजता आ सूची पढ़बाक गति

उज्ज्वलक नाम पढ़बाक समय माय ‘उपस्थित’ कहैत छलीह, देविका ओकर मौन सेहो उपस्थित होएबाक बात जोड़ैत छली। एक नामक पाछाँ आरो एक वाक्य जोड़लासँ मृतकक जीवनी अधिकारपूर्वक पूर्ण नहि कएल जाइत; ओकर भय आ अधूरा भविष्य लेल एक सुनबाक ठाम बनैत अछि। मीरा पहिने अपन जीवित नाम पढ़बाक पक्षमे नहि छली, मुदा स्त्रीसभक आग्रहपर अपन निजता उपस्थित होएबाक घोषणा करैत छली। जीवित व्यक्तिक अधिकारकेँ मृतक-स्मृतिक घेरामे स्थान देब उपन्यासक विस्तृत स्मृतिधारणाक संकेत अछि। तथापि सभामे नाम पढ़बाक सामूहिक आग्रह आ व्यक्तिक मना करबाक अधिकारक बीच सम्भावित तनाव पर अधिक पाठीय विस्तार सम्भव छल।

गोप कुमार जखन डिजिटल ठगी, चिकित्सकीय उपेक्षा, पुलक दुर्घटना आ वित्तीय हानिक सूची लैत छथि, बच्चासभ प्रत्येक नामक बीच ‘साँस’ माँगैत अछि। सूची पढ़बाक प्रशासनिक गति मनुष्यक जीवन-पाठक गतिसँ अलग अछि—एहि सान दृश्यमें आख्यान-समयक गहन तर्क अछि। रिकरक आख्यान-समयक सन्दर्भमे कहि सकैत छी जे घटनाक मात्र कालिक क्रम पर्याप्त नहि; अर्थ निर्माण लेल कथा-समयकेँ थमबाक आ प्रतीक्षा करबाक ठाम चाही।

## कबड्डी, अलौकिक विस्तार आ समापनक हरियर संकेत

प्रत्येक दस नामक बाद बच्चासभक कबड्डी आ साँस टूटला पर हारक बदला सुनबाक पाँतिमे बैसबाक नियम खेलक प्रतिस्पर्धी संरचनाकेँ करुणा-आधारित बनबैत अछि। धूपक रेखा पोखरि, पुल आ आकाश दिस बढ़ैत अछि; दूर राघवक परदापर गोल रेखा देखाइ देब कथाक अलौकिक स्तर अछि, तकनीकी सम्पर्कक सत्यापित विवरण नहि। ‘अनाम ग्रह’क प्रारम्भिक संकेत दीर्घ उपन्यासक भविष्यवर्ती स्थानिक विस्तारक पूर्वाभास दैत अछि।

बटुकनाथक न्यास-पत्रक घोषणा रोकल जाइत अछि, कारण उत्सवकेँ स्वार्थी संस्थागत मंच नहि बनबाक अछि। एक बूढ़ मजदूरक विधवा बेहोश भेला पर सत्यव्रत तुरन्त उठि सहायता करैत छथि; एहि क्रियासँ पछिला अध्यायक मौनक नैतिक परिभाषा व्यवहारमे परीक्षित होइत अछि। अन्तिम दृश्यमें सत्यव्रत जड़िमे झलकल हरियर बिन्दुकेँ तुरन्त छूइ नहि लैत छथि। कथाक गति राति सँ भोर धरि रोकल जाइत अछि। ई कलात्मक विलम्ब जिज्ञासा जगबैत अछि, संगहि देखल झलक आ प्रमाणित अंकुरक भेदक पाठ सेहो दैत अछि। गीतक किछु आवृत्तिपर छोट सम्पादनसँ प्रभाव आरो तीक्ष्ण भऽ सकैत अछि, मुदा शांत उत्सवक समग्र शिल्प मौलिक अछि।

# अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु

## कटायल देह आ अंकुरक द्विस्तरीय रूपक

नाम-उत्सवक बाद छोट बाती आ लगभग समाप्त तेलक बीच टिकैत लौ; नामक पाथरपर जमल ओस; आ ठूँठक सूखल गोलाइमे प्रकट भेल हरियर बिन्दु—ई तीनू दृश्य जीवनक पुनरागमनक एकहि सामान्य घोषणा नहि करैत। बाती क्षणिक प्रकाशक अवधि, ओस सामूहिक जागरणक नमी आ कोंपल जैविक भविष्यक सूक्ष्म अवसर बनैत अछि। अनन्या अंकुर देखैत पहिने ओकरा छुइ नहि लैत छली। ई स्पर्श-विलम्ब पछिला नाम-पाठक श्रवण-नियमक स्वाभाविक विस्तार अछि। कथा प्रकृतिक नव जीवनकेँ मृतकक नामक नैतिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि, मुदा समानता रूपकक स्तरपर अछि, वनस्पति विकासक प्रत्यक्ष कारणक दावा नहि।

बा कटायल देहमे रस बचल रहला पर कोंपल लागबाक बात कहैत छलीह आ स्मृतिमे नाम बचल रहला पर लोक फेर उगबाक तुलना करैत छलीह। शिक्षक सुप्त कलिकासँ अंकुरक सम्भावना समझबैत छथि; बच्चासभ ओकरा सेहो लिखैत अछि। उपन्यासक उल्लेखनीय संयम ई अछि जे विस्मयक सामने प्राकृतिक कारणकेँ निष्कासित नहि कएल गेल। यद्यपि कथामे ‘देखल वस्तु, सुनल कथा, अनुभूत पीड़ा आ स्मृति’ सभकेँ प्रमाणक भिन्न रूप कहि सरल बनाओल जाइत अछि, आलोचनामे नव्य न्यायशास्त्रक तकनीकी प्रमाण-श्रेणी आ सामाजिक अनुभवक साक्ष्यमूल्य एकहि कोटिक वस्तु नहि मानबाक चाही।

## कोंपलक चित्र आ डिजिटल स्वामित्वक प्रश्न

चन्द्रपालक अनुप्रयोगमे कोंपलक फोटो ‘पुनर्जन्मक पवित्र क्षण’ शीर्षकसँ दान-बटनसहित चढ़ब कथा-क्रमक महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। पहिले स्मृतिक नामक स्वामित्वक विवाद छल; आब जीवित कोंपलक दृश्यपर दावा आरम्भ होइत अछि। देविकाक विरोध आ उज्ज्वलक मायक आक्रोश चित्रक अनधिकृत उपयोगकेँ शोकक दोसर वाणिज्यीकरण रूपमे उजागर

करैत अछि। मीरा ‘दृष्टिक मर्यादा’क प्रस्ताव रखैत छली: देखनिहार पहिने नाम-पाठ सुनय, चित्र लैत समय प्रयोजन बताबय, बेचबाक दावापर प्रतिरोध हो।

एहि दृश्यपर नीतिगत सूक्ष्मता जरूरी अछि। कोंपल स्वयमेव मानवीय व्यक्ति नहि अछि, ताहि कारण ओकर चित्रकेँ व्यक्तिक निजता-अधिकारसँ सर्वथा समान ठहराएब सैद्धान्तिक रूपेँ सरल नहि; मुदा कोंपल जखन पीड़ितक स्मृतिस्थलक प्रतीक बनल अछि, तखन ओहिसँ जुड़ल परिवार आ समुदायक सहमति, गरिमा आ प्रतिनिधित्वक प्रश्न वास्तविक अछि। उपन्यास एहि भिन्न आधारसभकेँ एक तीव्र बिम्बमे समेटैत अछि; समीक्षामे ओकर सफल नैतिक आग्रह आ अवधारणात्मक सरलीकरण दुनू चिन्हब आवश्यक अछि।

## बूढ़बाक भूत आ कबड्डीक परिवर्तित नियम

बूढ़बा भूतक स्पष्ट उपस्थिति अध्यायक अलौकिक धुरी अछि। गाछिक कटानक बादो खेल समाप्त नहि भेल; आब कोंपल बचाएब संघर्षक लक्ष्य बनैत अछि। भूत बच्चासभकेँ नाम लऽ कऽ घुरबाक नियम दैत छथि। पात्रसभक अनुभवमे ई साक्षात्कार कथाजगतक यथार्थ अछि, मुदा बाह्य जगतक ऐतिहासिक दावा नहि। भूतक कथन कथा-परम्पराक सामूहिक नैतिक स्मृतिक सजीव रूपकक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

कबड्डीक खेल साँस टूटल बच्चाकेँ पराजित नहि करैत; ओ फेर सुनबाक अवसर पबैत अछि। सत्यव्रत अपन न्यायिक अनुभवक तारीख, स्थगन, आपत्ति आ प्रक्रियाक खेलकेँ एहि खेलसँ तुलनीय देखैत छथि। हुनका मनमे उपजल निष्कर्ष जे साँस टूटल गोटेकेँ दण्डक बदला पानि देबाक चाही, कादम्बरीक सर्वाधिक कार्यमूलक न्यायदृष्टिमे एक अछि। तथापि न्यायिक प्रक्रियाक सभ रूपकेँ एकरूप अमानवीय खेल मानब सँ वास्तविक कानूनक संरक्षणकारी पक्ष ओझराइ सकैत अछि; पात्रक अनुभवसँ उपजल रूपककेँ व्यापक तथ्यक स्थान नहि देबाक चाही।

## नव्य न्यायक शिक्षण, विद्यालय आ प्रमाणक असमान स्थिति

एक विद्यार्थी गंगेशक प्रतिष्ठा आ हुनकर जीवनक सम्भावित अन्यायक प्रश्न उठबैत अछि। बा शास्त्रक पूजाकेँ शास्त्रकारक जीवनक अपमानसँ अलग करैत छलीह। बच्चासभ ‘प्रत्यक्ष’, ‘अनुमान’, ‘शब्द’ आ ‘स्मृति’ बोलैत कबड्डी खेलैत अछि। ई क्रीड़ात्मक शिक्षण ज्ञानक प्रति सामूहिक जिज्ञासा बढ़बैत अछि, मुदा पाठककेँ स्पष्ट रहबाक चाही जे ‘स्मृति’केँ नव्य न्यायक अन्य प्रमाणसभक बराबर स्वतंत्र प्रमाण कहब शास्त्रीय वर्गीकरणक ठीक-ठीक पुनरुत्पादन नहि। स्वयं मूल कथामे शिक्षकक सम्भावित आपत्ति उल्लेखित अछि; एहि आत्मसचेत संकेतसँ साहित्यिक खेल आ शास्त्रीय परिभाषाक बीच दूरी बचैत अछि।

अध्यायक अन्त जिला-स्तरीय पदाधिकारी आ परामर्शदाताक आगमनसँ होइत अछि। ओ लोक सड़क, दर्शक-दीर्घा, व्याख्या-केन्द्र आ टिकट-व्यवस्था पर विचार करैत छथि। अनन्याक प्रश्न—नाम-पाठ पहिने सुनलहुँ कि नहि—‘पहिने निरीक्षण, फेर सहभागिता’क उलटि प्राथमिकता रखैत अछि। हरियर अंकुर जखन सार्वजनिक संवेदनासँ बाहरी योजनाक आकर्षण बनैत अछि, तखन उपन्यास अपन दृश्य-केन्द्रकेँ करुणासँ विकास-नीतिक विवाद दिस घुमबैत अछि।

## लोकगीत आ कलात्मक निष्कर्ष

आरम्भक सोहर नवजन्मक प्रसंगमे गाओल जाइत अछि, मुदा एतय नवजात मनुष्य नहि, कटल ठूँठक कोंपल अछि। जन्मगीतक ई स्थानान्तरण पुरान जड़िमे भविष्यक संवेदनात्मक प्रतिमा बनबैत अछि। अन्तक गीत ‘नामक दूध’ आ ‘लोभक छाह’क विरोध रचैत अछि। कोंपलक रंगमे कारी घाव, लाल वस्त्र, नील पानि आ ओसक उजासक मिश्रण अत्यन्त सजल प्रतीक अछि, किन्तु एकहि पातमे अनेक अर्थ समेटलासँ बिम्बक घनत्व किछु पाठक लेल अत्यधिक भऽ सकैत अछि। एहि जोखिमक बावजूद अंकुरक नाजुकता, बिना अनुमति फोटो आ बाहरी गाड़ीक आगमनक दृश्यक्रम अगिला दू अध्यायक ठोस राजनीतिक टकराव रचबाक प्रभावशाली तैयारी अछि।

# अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

## राज्यक दृष्टि : गवाहक स्थलसँ ‘विरासत’ धरि

अध्याय ६३मे कोंपलक जन्मसँ उत्पन्न सार्वजनिक उत्साह सरकारी यात्राक कारण बनैत अछि। जखन गढ़ नारिकेलक ठूँठ केवल पीड़ितक शोकक ठाम छल, तखन संस्थागत उदासीनता प्रमुख छल; जखन एकरा सांस्कृतिक विरासत आ पर्यटनक सम्भावना कहि सकल गेल, तखन गाड़ीसँ अधिकारी आ सलाहकार पहुँचैत छथि। एहि विरोधकेँ कादम्बरी प्रशासनक प्रत्येक विकास-प्रयासक स्वतः दोषसिद्धि नहि बनबैत; ओ स्मृतिस्थलक मूल्य ककर दृष्टिसँ निर्धारित होइत अछि से पूछैत अछि। दर्शकक संख्या, आकर्षक नक्शा आ सुविधा किछु लाभ देबय सकैत अछि, मुदा मूल गवाहीक अधिकार बिनु ओ लाभ असमान भऽ सकैत अछि।

सरकारी नक्शामे ‘चन्ना स्मृति-द्वार’, ‘भूत-कबड्डी रंगमंच’, ‘जलसमाधि दृश्य-दीर्घा’ आ ‘डिजिटल नाम-देबाल’ सन प्रस्ताव देखाओल जाइत अछि। लोकक पीड़ा एक-एक कऽ आगन्तुकक अनुभव-स्थलमे अनूदित भऽ रहल अछि। एहि अनुवादमे अर्थक हिंसा अछि: मृतकक अनुपस्थित देह ‘दृश्य’, जीवित व्यक्तिक काँपल स्वर ‘ध्वनि’ आ सामूहिक श्रवणक काज ‘कार्यक्रम’ बनि जाइत अछि। नक्शाक रंगीन विस्तार आ शोकक मौनक टकराव लेखकक मुख्य शिल्पिक साधन अछि।

## देविका, मीरा, सौम्या आ बाक प्रतिवादक विभिन्न धरातल

देविका ध्वनि-प्रकाश प्रस्तुति पर प्रश्न उठबैत छली जे मृतकक मायक काँपैत स्वर अभिनयमे बदलल जाएत कि नहि। मीरा अपमानित देह आ दबाएल नामक कथा बिना अनुमतिक मंचनक विरोध करैत छली। सौम्या आधिकारिक संरक्षणक भाषा आ जाति-आधारित मर्यादाक भाषा बीच एक संरचनात्मक समानता देखैत छली: दुनू व्यक्ति कैँ संस्थागत श्रेणीमे स्वीकार करब चाहैत अछि, मुदा ओकर विद्रोह कम करए चाहैत अछि। बा

नक्शामे सरयूक नाम पढ़ल गेल ठाम, मजदूरक अनभेट देह आ रातिक नाम-पाठक अनुपस्थिति देखबैत छली। एहि क्रममे गामक स्त्रीसभक आवाज पर्यटक-हितक सादा विरोध नहि, स्मृतिस्थलक वैकल्पिक अभिलेखीय नक्शा रचैत अछि।

अनन्या नव पातक फोटो खींचबाक आग्रह रोकैत ओकरा ‘प्रतीक’क बदला ‘बच्चा’ कहैत छली। ई मानवीकरण नैतिक प्रभावक दृष्टिसँ शक्तिशाली अछि, मुदा जँ कोंपलकेँ पूर्ण मानवीय व्यक्तित्व देल जाय तँ अधिकारक विधिक प्रश्न जटिल भऽ जाइत। रूपक अपन प्रभाव तखन रखैत अछि जखन ओकरा स्नेह, संरक्षण आ सामाजिक उत्तरदायित्वक भाषा मानल जाए, शाब्दिक कानूनी विधान नहि।

## विरासत, जीविका आ सहभागी निर्णयक अपूर्ण बहस

अधिकारी सभ सड़क, इजोत, प्रवेश-व्यवस्था, रोजगार आ सांस्कृतिक परिचयक लाभ गनबैत छथि। बा जड़ि काटि छाह बेचबाक आरोप लगबैत छलीह। एहि विरोधमे कथाक करुणात्मक बल स्पष्ट अछि; तथापि विकासक पक्षक कोनो विश्वसनीय स्थानीय समर्थककेँ विस्तारसँ प्रश्न रखबाक अवसर कम भेटैत अछि। स्थानीय रोजगारक वास्तविक आवश्यकता, शोकसंग्रहालयक सम्भावित शैक्षिक मूल्य आ स्वैच्छिक सार्वजनिक दस्तावेजीकरणक पक्ष चर्चा मे कने अधिक ठाम पाबि सकैत छल। एकर अनुपस्थिति सँ नीतिगत विकल्प अपेक्षाकृत द्विध्रुवीय देखाइत अछि।

सत्यव्रत आरुणिसँ पूछैत छथि जे लड़ाइ कागच पर होएत, मुदा बचएबाक वस्तु ठूँठ, पाथर, नाम कि सुनबाक अधिकार अछि। आरुणि गाछिक रक्षा चाहैत अछि, मुदा ओकर बिकएबला हाथसँ नाम बचाबयबाक प्रश्न प्रथम राखैत अछि। ई उत्तर भावुक पर्यावरणवादक सीमासँ बाहर जा कऽ अधिकारक प्राथमिकता निर्धारित करैत अछि। ठूँठ नष्ट भेलो नामक आत्मनिर्णय बचब आवश्यक अछि; तहियेसँ कादम्बरी प्राकृतिक, सांस्कृतिक आ नागरिक अधिकारक स्तर परस्पर जोड़ैत अछि।

## उजासक भीतर लोभ : दृश्य, ध्वनि आ प्रत्याशा

दिनक उजासमे भूत-कबड्डीक स्वर सुनल जाएब, बाहरी पदाधिकारी द्वारा ओकरा सम्भावित प्रस्तुति-अभ्यास बुझब आ आरुणिक उत्तर जे ई योजनासँ पुरान खेल अछि—ई दृश्य लोकस्मृतिक कालगत स्वायत्तता चिन्हबैत अछि। कथाक अलौकिक ध्वनि सरकारी कार्यक्रमक वास्तविक रिहर्सल नहि, अलग आख्यानिक स्तर अछि। बूढ़बा भूतक सन्ध्याक चेतावनी अन्हारक भयक बदला उजासमे आवरण लऽ कऽ आएल लोभकेँ केन्द्रित करैत अछि।

आधीराति नगरपालिकाक एक लोक बिना सार्वजनिक विमर्शक उज्जर निविदा-पत्र चिपकबैत अछि। पहिनुक पीयर सूचना-पत्रक पुनरावृत्ति रंग बदलि रूपान्तरित भेल अछि। गोंदक मीठ, चिपचिपाह आ कने सड़ल गन्ध ऐन्द्रिय विशेषता सँ भ्रष्ट रुचिक रूपक गढ़ैत अछि। अन्तमे अनन्याक अभिलेखमे स्मृतिपर निविदा लगबाक वाक्य अगिला अध्यायक कथा-द्वार बनैत अछि। रचनाक सीमा उएह जे ‘लोभ’क अर्थ इतबे स्पष्ट कऽ देल जाइत अछि जे पात्रसभक अन्दर सम्भावित मिश्रित प्रेरणा कम उभरैत अछि; मुदा दृश्य-विन्यासक तीक्ष्णता निर्विवाद अछि।

# अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

## शब्दक प्रशासनिक रूपान्तरण आ पुलक पुरान इतिहास

अध्याय ६४ ‘विरासत-परियोजना’क सामान्य प्रस्तावकेँ वित्तीय-प्रशासनिक निविदाक ठोस भाषामे बदलैत अछि। तहसील, नगरपालिका, बस-अड्डा आ पुलक पायापर एकरूप उज्जर कागच चिपकाएब सार्वजनिक क्षेत्रमे एकहि शब्दावलीक प्रसार देखबैत अछि। ठूँठ ‘स्थल खण्ड-क’, बच्चासभक नाम-पहरा ‘सामुदायिक सहभागिता घटक’ आ शोकक आसरा ‘भावनात्मक विरासत संसाधन’ बनि जाइत अछि। सरकारी शब्दक ई श्रेणीकरण निष्पक्ष नाप-जोखक उपकरण भऽ सकैत अछि, मुदा कथा देखबैत अछि जे कोण वस्तुकेँ वर्गीकृत कएल गेल आ ककर आवाज छोड़ल गेल, एहि प्रश्न बिनु वर्गीकरण अधूरा अछि।

आरुणिकेँ पुल निर्माणक पहिनुक ठेकाक वाक्य मोन पड़ैत अछि—सुरक्षा, मानक, श्रमिक-कल्याण आ तृतीय-पक्ष जाँच। पछिला इतिहासमे कामगारक मृत्यु आ अभिलेख सँ नाम हटाओल गेलाक कथास्मृति एहि नब कागचपर छाया दैत अछि। एतय शिल्पगत आवृत्ति सार्थक अछि: पहिने पुलक भौतिक निर्माणक ठेका छल, आब पुल-दुर्घटनाक स्मृतिक प्रस्तुतीकरणक ठेका। जे संस्थागत भाषा पहिने देहक पीड़ा नुका सकैत छल, से आब पीड़ाक प्रतिनिधित्व पर अधिकार चाहैत अछि। ई अनुगूँजक न्यायिक मूल्य साहित्यिक तुलनामे अछि; पहिनुक ठेका आ नव प्रस्तावमे वास्तविक संविदात्मक एकरूपता प्रमाणित कहबाक लेल मूल फाइलक स्वतंत्र जाँच आवश्यक होएत।

## निजताक शपथ आ श्रव्य प्रदर्शनक हिंसा

मीरा निविदाक ओहि अंशपर ध्यान दैत छली जाहिमे मौखिक सामग्री, पारिवारिक साक्ष्य, चित्र आ डिजिटल दस्तावेजक संकलनक योजना अछि। ओ प्रश्न उठबैत छली जे परिवारक फुसफुसाहट, स्त्रीक अपमान आ स्वेच्छया राखल मौन रिकॉर्ड करबाक अधिकार ककरा अछि। एहि प्रश्नकेँ सामान्य सार्वजनिक हितक नामपर खारिज नहि कएल जा सकैत।

उपस्थित परिवारसभक सहमति, सामग्रीक सीमा, उपयोगक उद्देश्य, पहुँचक नियन्त्रण आ बादमे हटएबाक प्रक्रिया अलग-अलग नैतिक निर्णयक विषय छथि।

उज्ज्वलक माय प्रस्तावित ध्वनिपट्टीमे अपन बेटाक अन्तिम फोन-सूचनाक ध्वनि उपयोगक विरोध करैत छलीह। एकटा मामूली घण्टीक स्वर एक परिवार लेल आघातक पुनरावृत्ति बनि सकैत अछि; अन्य दर्शक लेल केवल नाटकीय प्रभाव। एहि असममित अनुभवकेँ कथा विशेष संवेदनशीलतासँ उजागर करैत अछि। भूत-कबड्डीक श्वास, अदालतक हथौड़ी आ शोकगीतकेँ एक ‘अनुभव’मे मिलाएब मनोरंजनक अनुशासनमे दुखक जटिलता समेटबाक जोखिम अछि। साहित्यक दृष्टिसँ ध्वनिक ई बहस कादम्बरीक पूर्ववर्ती मौन-श्रवण-विषयकेँ नब माध्यममे विकसित करैत अछि।

## लागत-पत्र आ अनुपस्थित व्ययक विवेचन

सौम्या निविदाक मदसभ पढ़ैत छली: इजोत, पाथर, डिजिटल संग्रह, बाहरी विशेषज्ञ, प्रचार, उद्घाटन आ भीड़-प्रबन्धन। मूल कथामे श्रमिक परिवारक पुनर्वास, डूबल व्यक्तिक नामक खोज आ निजता-सुरक्षाक मद शून्य वा नगण्य देखाओल गेल अछि; ब्राण्ड-चिन्हारिक मद अपेक्षाकृत पैघ अछि। कथाक एहि संख्यात्मक विरोधक आलोचनात्मक अर्थ संसाधन-विनियोगक प्राथमिकताक प्रश्न अछि। उपन्यासमे देल संख्यात्मक दावासभकेँ कृति-जगतक काल्पनिक निविदाक विवरण मानल जाए; वास्तविक नगरपालिका बजटक प्रमाण नहि।

गोप कुमारक ध्यान लेखामे लिखल आ नहि लिखल शब्दसभ पर केन्द्रित अछि। मूल कथावाचक अनुसार ‘स्मृति’ शब्द बहु बेर, ‘नाम’ कम बेर आ ‘पीड़ित’ लगभग अनुपस्थित अछि। शब्द-आवृत्तिक ई कथात्मक दावा संस्थागत भाषामे ध्यानक असमान वितरण देखबैत अछि। ई तर्क उपयोगी अछि, तथापि वास्तविक दस्तावेजक शब्दगणनासँ मात्र न्यायिक उद्देश्य सिद्ध नहि कएल जा सकैत; मदक वास्तविक अर्थ, जवाबदेही आ लाभार्थीक स्थान सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। कथा ओहि जटिल परीक्षणक लेल पाठककेँ प्रेरित करैत अछि।

## बटुकनाथक न्यास आ बालकक प्रतिप्रश्न

बटुकनाथ हरिहरन वैधानिक न्यासक प्रारूप लऽ पहुँचैत अछि आ भावना मात्रसँ काम नहि चलबाक तर्क दैत अछि। ओकर प्रस्तावमे सरकार, विशेषज्ञ, दानदाता आ प्रतिनिधित्वक आश्वासन अछि, मुदा अनन्या जखन पीड़ित परिवार, बच्चा, मीराक निजता-शपथ आ ‘प्रमाण, हेतु, प्रयोजन’क स्थान पूछैत छली, तखन उत्तर अस्थिर पड़ैत अछि। कथाक मुख्य अन्तर ई नहि जे कानून अनावश्यक अछि; अन्तर ई अछि जे कानूनी संरचना ककरा निर्णयकारी अधिकार दैत अछि आ ककरा केवल परामर्शक स्थान। आरुणिक प्रश्न—न्यासमे गेलापर आवाज रहत कि केवल नाम—न्यास-प्रशासनक आलोचनात्मक केन्द्र अछि।

बालकसभ निविदाक पाछूक खाली भागपर कबड्डीक रेखा बनबैत अछि आ ‘प्रमाण-प्रमाण’ कहैत खेलैत अछि। न्यायशास्त्रक तकनीकी शब्दसभक खेलमे स्थानान्तरण साहित्यिक रूपेँ प्रभावकारी अछि, मुदा ‘लाभ प्रमाण नहि होइत’ सन कथनक सन्दर्भ सीमा बुझबाक चाही। लाभ अपनेमे कोनो घटना सत्य हेबाक प्रमाण नहि, मुदा वैध नीति-मूल्यांकनमे लाभ आ लागतक प्रमाणित अध्ययन अप्रासंगिक सेहो नहि। रचनाक आलोचना अधिक सशक्त तखन होइत अछि जखन ई दुनू स्तर अलग देखल जाए।

## ब्रूमक छाह : संकेत आ दोषसिद्धिक सीमारेखा

रातिमे कागचक कोना मुड़लापर ‘अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान परामर्शदाता’क अस्पष्ट छाप उभरैत अछि। गोप कुमार ओकर आकृतिक सम्बन्ध पुरान पुलक विदेशी सलाहकारक फाइलसँ जोड़ैत छथि; एडवर्ड ब्रूमक नाम सम्भावित सम्बन्ध रूपमे उठैत अछि। एतय उपन्यास जिज्ञासाक गाढ़ क्षण रचैत अछि, मुदा अदृश्य हस्ताक्षरक साम्य वास्तविक लेखकत्व अथवा आपराधिक संलिप्ततताक निर्णायक प्रमाण नहि अछि। आलोचनामे एहि अन्तरक संरक्षण आवश्यक अछि, विशेषत: जखन कथाक वित्तीय अपराध आ प्रशासनिक उत्तरदायित्वक विषय समकालीन जगतसँ संवाद करैत अछि।

अन्तिम गीत शोकक ठेकादारीक विरुद्ध स्मृतिक अधिकार प्रतिपादित करैत अछि। अनन्याक रजिस्टरमे बोली लगएनिहार अपन नाम नुकौने हेबाक वाक्य भौतिक ठेकासँ नब अनुसन्धान दिस गतिक सेतु बनैत अछि। अध्यायक शक्तिशाली पक्ष भाषा, लागत, निजता आ अधिकारक विश्लेषणकेँ पात्रक क्रियासँ जोड़ब अछि; एक सीमा ई अछि जे विपरीत पक्षक नीतिगत विकल्प अधिकतर लोभक प्रतीक बनि जाइत छथि। तथापि कृति स्पष्ट करैत अछि जे स्मृतिस्थलपर कोनो परियोजनाक नैतिक परीक्षा ओकर रंगीन नक्शासँ नहि, पीड़ितक गरिमा, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व आ सुनबाक अधिकारसँ प्रारम्भ होएत।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ६०–६४

## श्रवणक विधिसँ सामूहिक अधिकार धरि

अध्याय ६०मे सत्यव्रत मेहता अपन अधिकारीगत आवाजकेँ रोकि लोकक सुननाइ आरम्भ करैत छथि। ६१मे एहि सुननाइकेँ ‘उपस्थित’क सामूहिक प्रत्युत्तर आ नाम-पाठक लय भेटैत अछि। ६२मे नामक पहरा कोंपलक जीवन-रक्षाक नियम बनैत अछि। ६३मे बाहरी विरासत-योजना एहि सामूहिक नियमपर संस्थागत दृष्टि आरोपित करैत अछि। ६४मे वैह दृष्टि निविदा, लागत आ प्रतिनिधित्वक औपचारिक प्रश्न बनि जाइत अछि। एहि पाँच अध्यायक आन्तरिक चाप स्पष्ट अछि—व्यक्तिगत आत्मालोचना, सामूहिक अनुष्ठान, नवजीवनक दृश्य, राज्यक योजना, आर्थिक अधिकारक संघर्ष।

एहि संरचनामे चन्ना गाछीक ठूँठ लगातार केन्द्र रहैत अछि, मुदा ओकर सामाजिक भूमिका बदलैत अछि। पहिने ओ न्याय-सुनवाईक स्थान, फेर नाम-उत्सवक वलय, फेर नव अंकुरक पालना, फेर विरासतक सम्भावित प्रदर्शनस्थल आ अन्तमे निविदाक ‘स्थल खण्ड’ बनैत अछि। एकहि भौतिक वस्तुक पञ्चविध नामकरण उपन्यासक मुख्य अर्थ-प्रक्रिया अछि। ककरा लेल ठूँठ की अछि, ई प्रश्नक उत्तर पात्रक वर्ग, अनुभव, आर्थिक स्थिति आ संस्थागत हित सँ निर्धारित होइत अछि।

## सत्यव्रत, अनन्या, देविका, मीरा आ बाक विकसित भूमिका

सत्यव्रतक दोसर मौन अध्याय ६०मे सिद्धान्तक रूपमे जन्मैत अछि, ६१मे विधवाकेँ सहायता देबाक तत्काल क्रियासँ सत्यापित होइत अछि, ६२मे साँस टूटल बच्चाकेँ दण्ड नहि देबाक विचार बनैत अछि, ६३मे कागचपर संघर्षक रणनीतिक प्रश्न उठबैत अछि। अनन्या सुननाइ शुरू करैत छली, अधूरा नाम अधूरा राखैत छली, अंकुरक स्पर्श रोकैत छली आ निविदामे

हेतु-प्रमाण पूछैत छली। देविकाक भूमिका डिजिटल माध्यमक बिना अनुमतिक पुनःउपयोग चिन्हब, मीराक भूमिका देह आ स्मृतिक स्वतन्त्र स्वीकृतिपर आग्रह करब, सौम्याक भूमिका कागजक अर्थनीति पढ़ब, आ बाक भूमिका स्मृति-अनुभवक लोक-नैतिक सीमा प्रस्तुत करब अछि।

एहि भूमिका-वितरणसँ रचना सामूहिक नेतृत्वक पक्ष लैत अछि; कोनो एक विशेषज्ञ समस्त समस्याक समाधानदाता नहि बनैत अछि। मुदा बालक आ स्त्रीसभक कथन अधिकांश बेर नैतिक दृष्टिसँ एक-दोसराकेँ पुष्ट करैत अछि। यदि तर्कसंगत मतभेदक किछु दृश्य विस्तार पबितथि, तँ संवादधर्मिता आरो सघन भऽ सकैत छल। तखन समुदाय अपन निर्णयक कसौटी स्वयं अधिक कठिन परीक्षणमे उतारि सकैत छल।

## कागचक आवृत्ति, दृश्य-रूपक आ लोकगीतक भिन्न काज

पीयर प्रशासनिक पत्र, न्यासक उज्जर पत्र, स्मारक-अनुप्रयोगक स्क्रीन, दानक कोड, कोंपलक चोरी कएल फोटो, विरासतक रंगीन नक्शा आ अन्तिम निविदा—ई वस्तुसभ क्रमशः एक-दोसराक अर्थ खोलैत अछि। कागच नहि, कागचक भाषा समस्या अछि: लिखब तथ्य सुरक्षित कऽ सकैत अछि, मुदा नामकेँ संसाधन बनाकऽ ओकर अर्थो बदलि सकैत अछि। एहि कारण बच्चासभक रजिस्टर प्रतिपक्षी अभिलेख अछि; ओकरा सभक लेखन सेहो संस्थागत बनबाक आरम्भ अछि, मुदा ओ लेखन अपन अधूरापन, अनुमति आ ‘सुनल’क उत्तरदायित्व स्वीकार करैत अछि।

लोकगीतक क्रमानुसार ‘मौन-पराती’, ‘नाम-उत्सव गीत’, ‘सोहर’, ‘झिझिया-जागरण’ आ ‘करुणा-मंगल/व्यंग्य-विरहा’ एकहि विषयक पुनरुक्ति नहि। पहिल गीत आत्मविवेचनक नैतिक लय दैत अछि; दोसर नामक प्रत्युत्तरक सामूहिकता; तेसर अंकुरक नाजुक आशा; चारिम उजासक भीतर लोभ पहिचानबाक पहरा; पाँचम शोकसँ सेवाक वैकल्पिक व्यावहारिक माँग। कतिपय गीत-पंक्तिक दोहराव सम्पादकीय कसावट चाहैत अछि, मुदा लोकधुनक बदलैत प्रयोग आख्यानक विषयगत विकाससँ सम्बद्ध अछि।

## नव्य न्याय आ स्मृति-नैतिकताक प्रमाण-सीमा

अध्यायसभमे ‘प्रमाण’, ‘हेतु’, ‘प्रयोजन’, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आ स्मृतिक उल्लेख निरन्तर अछि। कथा नव्य न्यायकेँ बालकक प्रतिप्रश्न आ सार्वजनिक कागच-पाठक अभ्यासमे रूपान्तरित करैत अछि। तथापि दार्शनिक पद्धतिक अनुशासनकेँ रचनाक नैतिक आग्रहसँ अलग रखबाक चाही: प्रत्यक्ष अनुभूति, लोकश्रुति, आघातक कथन आ अभिलेखीय साक्ष्यक प्रमाण-मूल्य, विषय तथा प्रयोजन एक समान नहि। गंगेशक जन्म, जाति, विवाह अथवा जीवन-वृत्तान्तक लोकश्रुतिसभकेँ ऐतिहासिक तथ्य मानबाक पूर्व स्वतन्त्र प्रमाण अपेक्षित अछि। बूढ़बाक भूत आ ठूँठक बोलैत ध्वनि उपन्यासक अलौकिक शिल्प अछि, बाहरी परीक्षणक सामग्री नहि।

उपन्यासक न्याय-दृष्टि तखन सर्वाधिक प्रबल अछि जखन ई पाठककेँ अपूर्ण ‘सर...’ पूरा नहि करबाक संयम, बिना अनुमति कोंपलक चित्र नहि बेचबाक मर्यादा आ निविदामे खर्चक अनुपस्थित मद देखबाक क्षमता सिखबैत अछि। एक दृष्टान्तक नैतिक शक्ति ओकर ऐतिहासिक प्रमाणित होएबाक दावापर निर्भर नहि; उलटे सत्यक भिन्न स्तर अलग राखलासँ ओकर आलोचनात्मक विश्वासार्हता बढ़ैत अछि।

## पाँच अध्यायक संयुक्त मूल्यांकन आ अगिला संघर्ष

ई पाँच अध्याय दीर्घ उपन्यासक कथा-विकासमे महत्त्वपूर्ण मध्यवर्ती गाठि छथि। राघवक कोड-आधारित शोषणसँ आरम्भ भेल प्रश्न अब सार्वजनिक विरासतक नियन्त्रण धरि फैलैत अछि। नाम-पाठ आ नव कोंपलक स्मृतिशील अर्थकेँ सरकारक योजना पूर्णतः नकारबाक सरल निष्कर्ष नहि, बल्कि वैधानिक संरक्षणक शर्त बनएबाक चुनौती रूपमे पढ़ब अधिक समीचीन अछि। शोकक प्रतिनिधित्वपर वैध अधिकार, पूर्वानुमति, पीड़ितक आवश्यकता, वित्तीय लेखा आ स्थानीय निर्णय-भागीदारी एहि शर्तक घटक छथि।

संरचनात्मक सीमामे कतहु पवित्र शब्दक भीतर लोभक विरोध अपेक्षाकृत पूर्वानुमेय होइत अछि; बालकसभक उपयुक्त प्रतिप्रश्न शीघ्र सही निकलैत अछि; नैतिक शिक्षा अनेक बेर

स्पष्ट रूपमे कथित अछि। मुदा नामहीन पाथर, अधूरा ‘सर...’, सत्यव्रतक अन्तिम ‘सुनल’, नव कोंपलपर चढ़ल अनधिकृत चित्र आ उज्जर निविदाक गोंद—ई वस्तुगत दृश्यसभ दीर्घ अर्थ-विस्तार बनबैत अछि। अध्याय ६४क अन्तमे अस्पष्ट परामर्शदाता-छापसँ ब्रूमक सम्भावित सम्बन्ध उठब आगाँक अनुसंधानक प्रश्न अछि; ओकरा एखन प्रमाणित सम्बन्ध नहि मानल जाए। अगिला अध्याय ६५–६९मे एहि संकेतक कथा-आधारित परीक्षण आवश्यक होएत।

# अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन

## पुरान पुल आ नब संस्थागत मुखौटा

‘ब्रूमक पुनरागमन’ शीर्षक व्यक्ति मात्रक फेर आगमनक सूचना नहि दैत; पुलक निर्माणसँ स्मृति-परियोजना धरि लोभक संस्थागत रूपान्तरक प्रश्न उठबैत अछि। अध्याय ६४क निविदामे अस्पष्ट परामर्शदाता-चिह्न देखाओल गेल छल। अध्याय ६५मे नब संस्था ‘नव-आरोग्य आधार प्रा. लि.’ आ विदेशी साझीदारक उल्लेख कथा-क्रमक एक नब स्तर खोलैत अछि। गोप कुमारक ‘नाम नव अछि, मालिक पुरान’ कहब पात्रक अनुसन्धानात्मक निष्कर्ष अछि; आलोचनामे ओकरा बाह्य वास्तविक व्यवसायिक स्वामित्वक प्रमाण मानब नहि चाही। मूल कादम्बरीक भीतर घटना जेहन प्रस्तुत अछि, ओहिमे पुरान पुलक श्रमिक-विनाश आ नव विरासत-परियोजनाक प्रस्तावक साम्य आर्थिक शोषणक आवर्ती रूपक बनैत अछि।

एडवर्ड ब्रूम स्वयं पहिने नहि आबैत; ओकर पत्र पहिने उपस्थित होइत अछि। ई शिल्पगत चयन महत्त्वपूर्ण अछि। ‘जलसमाधि’क स्थानपर ‘जल-स्मृति खण्ड’, गोहिक स्थानपर ‘जल-जीव प्रतीक’ आ मृत श्रमिकक स्थानपर ‘श्रम-कथा दीर्घा’—ई अनुवादसभ मूल पीड़ाक ऐतिहासिक तीखापन कम करैत अछि। भाषाक विनिमयसँ उत्पन्न ई अर्थहानि उपन्यासक आरम्भसँ चलि रहल अभिलेखीय हिंसाक विस्तार अछि। कागच वास्तविकता कें केवल दर्ज नहि करैत, ओकर सार्वजनिक नामो बदलैत अछि।

## न्यास, उपचारक व्यवसाय आ दावाक प्रमाण-सीमा

ब्रूमक पत्र सामूहिक उपचार, अनुभव-केन्द्र आ अन्तरराष्ट्रीय दर्शकक भाषा बजैत अछि। एहन प्रस्तावक सम्भावित सार्वजनिक लाभ अपनेमे असम्भव नहि, मुदा समुदायसँ सहमति बिना ओकर परिभाषा बाहरी लोक ठहराबए चाहैत अछि—यही विरोध उपन्यासक केन्द्र अछि। ईरा पुरान पुलक उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत छली; देविका प्रचार-पृष्ठक भीतर

संभावित डिजिटल संग्रहण देखैत छली; मीरा परिवारक अनुमति प्राथमिक शर्त मानैत छली। एहि अनेक आवाजमे करुणा आ स्वामित्वक भेद अलग-अलग ढंगसँ प्रकट होइत अछि।

गोप कुमार कम्पनी-पुँजीक औषधि-व्यापार, पुलक सुरक्षा-परामर्श आ डिजिटल श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगसँ सम्बन्ध बतबैत छथि। ई कथाजगतक पात्रक कथन अछि; वित्तीय अभिलेख, साझेदारी दस्तावेज अथवा अभियोगक स्वतन्त्र परीक्षण नहि। साहित्यिक समीक्षा एहि आरोपक पात्रगत अर्थ पर विचार करैत अछि—गोपक पुरान अनुसन्धानक स्मृति, बजारक बहु-रूपी विस्तार आ सामाजिक अविश्वास—मुदा अनिश्चित सम्बन्धकेँ निश्चयक रूप नहि दैत। ब्रूमक पहिनुक विवादकेँ ‘गलतफहमी’ कहल जाएब आरुणिक क्रोध जगबैत अछि; ओ क्रोधक ऐतिहासिक अनुभव कथामे संगत अछि, तथापि आरोप आ प्रमाण अलग स्तर पर रहैत अछि।

## लोटाक पानि आ ‘संग्रहालय’क उलटल तर्क

एक बालक हरियर कोंपलपर लोटासँ पानि ढारैत अछि। बटुकनाथ ओकरा सम्भावित संरक्षित अवशेषक आधिकारिक नियमक डर देखबैत अछि। बालकक उत्तर जे संस्था ओकरा आधिकारिक बनाओ, मुदा ओ जीवित राखत—अध्यायक सर्वाधिक सघन वस्तु-प्रतीक अछि। जीवित कोंपलकेँ काँचमे बन्द करबाक योजनाक सम्मुख पानि ढारब संरक्षणक भिन्न अर्थ प्रस्तुत करैत अछि: देखबाक लेल वस्तु बचएब आ जीवन चलबाक लेल ओकर देखरेख करब एक बात नहि। ई बिम्ब ऐतिहासिक स्मृतिक लेल सेहो लागू होइत अछि, जतय पीड़ितक नामक प्रदर्शनक बदला परिवारक जीवनक हक आ आवश्यकताक संरक्षण अपेक्षित अछि।

सरयूक वंशक वृद्धा अपन परिवारक मृत्यु आ विस्मरणक स्मृतिसँ स्मारकमे टिकट लगबाकेँ ‘दोसर बेर मरण’क अनुभूति बनबैत छलीह। एहि कथनमे भावनात्मक सत्य अछि; ई प्रत्येक संग्रहालय अथवा टिकट व्यवस्थाक सार्वभौमिक नैतिक निर्णय नहि। पाठककेँ स्थानीय समुदायक वास्तविक लाभ, खर्च, अभिगम आ अनुमति-ब्यवस्थाक मूल्यांकनक स्थान

राखबाक चाही। तथापि बालकक लोटा आ वृद्धाक शोकक समांतर रखब लेखकक प्रभावी रचना-कौशल अछि—दू पीढ़ी स्मृतिस्थलकेँ मृत संग्रहक बदला जीवित सम्बन्ध मानैत अछि।

## शोध-दलक आगमनक पूर्वाभास आ समीक्षात्मक निर्णय

अध्यायक अन्तमे विदेशी विश्वविद्यालयक चिह्नसहित एलिना ग्रेव्सक शोध-दलक क्षेत्र-अध्ययन सम्बन्धी सन्देश आबैत अछि। ब्रूमक आर्थिक परियोजनाक पाछाँ ज्ञानक संस्थागत प्रवेशक ई कथा-विस्तार अत्यन्त विचारोत्तेजक अछि। अनन्याक प्रश्न—शोध-दल सुनए आयल अछि कि लिखए—ज्ञानक स्वामित्वक आधारभूत समस्या चिन्हबैत अछि। प्रश्नकेँ बाहरी शोध अपनेमे दूषण मानबाक निर्णय नहि बुझब; रचना पूछैत अछि जे अनुसन्धानक लक्ष्य, अधिकार आ परिणामपर प्रभावित समुदायक भूमिका की रहत।

‘पुरान पुलपर नव पग’ लोकगीत पुरान दुर्घटनाक इतिहास नहि बिसरि सुरक्षित भविष्य बनएबाक प्रस्ताव रखैत अछि; अन्तक नदी-विरहा पुरान लोभक नव रूपपर चेतावनी दैत अछि। गीतसभक ई दू ध्रुव अध्यायक आलोचनात्मक अर्थ स्पष्ट करैत अछि। पात्रसभ कतेको बेर विरोधी संस्थाक भीतरी अभिप्राय तुरन्त बुझि लैत छथि, जाहिसँ शिल्पमे पूर्वानुमेयता बढ़ैत अछि; मुदा भाषा, वित्त आ स्मृतिक जुड़ल सत्ता पर विचार करबाक दृष्टिसँ अध्याय दीर्घ कादम्बरीक प्रमुख मोड़ अछि।

# अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल

## नोटबुकसँ पहिने ‘उपस्थित’ : अनुसन्धानक समयशास्त्र

शोध-दलक आगमनमे कारी शीशाबला गाड़ी, छायाचित्र-यन्त्र, ध्वनि-यन्त्र, चिन्हारि-पत्र आ नियोजित समय-सारिणी एक समवेत दृश्य रचैत अछि। ई दृश्यक समक्ष चन्ना गाछीक नाम-पाठ अपन अलग समय लऽ कऽ उपस्थित अछि। शोधार्थी पहिल नाम सुनैत तुरन्त लिखब शुरू करैत अछि, मुदा अनन्या रोकि ‘उपस्थित’ कहबाक आग्रह करैत छली। कागचपर नोट लिखबाक गति आ नामक शोक-सुननाइ एक समान काल-प्रक्रिया नहि। एहि छोट रोकमे उपन्यास ज्ञानार्जनक अधिकारक पहिनहि उत्तरदायित्वक प्रश्न स्थापित करैत अछि।

ईरा दलकेँ स्मृति-नक्शा देखबासँ पहिने बैसि सुनबाक आग्रह करैत छली। ओ शोधार्थीक कालक्रम, जाति-संरचना, अनुष्ठान आ लोकविश्वास सम्बन्धी सूचीबद्ध प्रश्नसभकेँ अस्वीकार नहि करैत, मुदा क्रम बदलबैत अछि: पहिले नाम, पछाति वर्गीकरण। शोधक प्रश्न आवश्यक अछि, किन्तु प्रश्नक निर्धारण शोधकर्ता मात्र करए तखन अनुभव-विन्यासमे असमानता रहैत अछि। अध्यायक साहित्यिक शक्ति बाहरी अनुसन्धानक अपमानमे नहि, अनुसन्धानक प्रक्रिया पुनः विन्यस्त करबाक एहि संघर्षमे अछि।

## चलल नक्शा आ अकादमिक दूरीक चुनौती

गोप कुमारक स्मृति-नक्शामे नदी, पुल, ठूँठ, मजदूरक घर, डिजिटल ठगी आ औषधि-विवादक स्थल एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। छायाचित्र लेबाक इच्छाक बदला हुनकर पहिने पएर दऽ रेखा चलबाक आग्रह कएल जाइत अछि। दल माटि, घाम आ पानिसँ गुजरैत अछि। एहि शारीरिक यात्रामे दू प्रकारक ज्ञानक अन्तर उघड़ैत अछि: दूरसँ चिन्हित स्थल आ श्रम-विनाशक स्थलपर देहक उपस्थिति। ई यात्रा सभ घटना प्रमाणित कऽ दैत अछि, से नहि; मुदा अनुभवक नैतिक परिणामक प्रति संवेदनशील बनब शोधक अपरिहार्य शर्त भऽ सकैत अछि।

एक विधवाक घर लग चित्र-यन्त्र उठैत अछि। मीराक हस्तक्षेप चेहराकेँ ‘दुर्लभ सामग्री’ बनेबाक वस्तुकरण रोकैत अछि। एहि दृश्यमे अध्ययनक अर्थ स्वयं पद्धतिक अनुसन्धान बनैत अछि—ककर अनुमति, कोन उद्देश्य, कोन भाषा, आ परिणामक अधिकार? विश्वविद्यालयक नाम कथा-भीतर प्रयोग भेल अछि, मुदा एहि कथा-दलक चित्रणकेँ बाहरी वास्तविक विश्वविद्यालय अथवा ओकर वास्तविक अनुसन्धान-पद्धतिक प्रमाण नहि मानब चाही। ई काल्पनिक पात्रक माध्यमसँ शोध-नीतिक जटिल प्रश्न उठाओल गेल अछि।

## जाति-आधारित अनुभव आ कथा-सम्पादनक अधिकार

गंगेशक प्रसंगसँ जुड़ल प्रश्न शोध-दलक आगमनक बीच फेर उठैत अछि। स्त्रीक देह, चर्मकार समुदाय, असुविधाजनक विवाह-लोकश्रुति आ ग्रन्थीय प्रतिष्ठाक सम्बन्धक चर्चा जाति-इतिहासक सहज गौरव-कथाकेँ जटिल बनबैत अछि। समाजक पदानुक्रम जखन ककरो कथा केवल प्रमाण-सामग्री बनबैत अछि, तखन आत्मप्रतिनिधित्वक अधिकार सीमित भऽ जाइत अछि। ईरा, मीरा आ बच्चासभ एकरा शोधार्थीक प्रश्नक दिशा बदलएबाक साधन बनबैत छथि।

एहि प्रसंगमे एक आवश्यक भेद राखब चाही: गंगेशक जीवन-वृत्तान्तक जाति आ विवाह-सम्बन्धी विवरण उपन्यासमे पात्रक कथन आ लोकश्रुतिरूपेँ उपस्थित अछि, ओहि ऐतिहासिक कथनक स्वतन्त्र प्रामाणिकता एहि रचनासँ स्वतः सिद्ध नहि होइत। किन्तु जाति-आधारित अपमानक अभिव्यक्तिमे ककरा बजबाक अवसर भेटैत अछि, ई प्रश्नक नैतिक महत्त्व ओहि ऐतिहासिक सत्यापनसँ अलग अपन स्थान रखैत अछि।

## लेंसक गोहि आ अगिला अध्यायक संधि

चल-चित्र बनौनिहारक लेंसपर धूरि जमब आ ओहि धूरिमे गोहिक आँखिक झलक देखाएब अलौकिक तथा प्रतीकात्मक स्तरक घटना अछि। उपकरणक दृष्टि जखन शिकारक दृष्टि बनि जाए, तखन कैमरा स्वयं प्रश्नक पात्र बनैत अछि। अन्तमे मीरा अगिला दिन ‘दृष्टिक

अधिकार’क नियम पर चर्चा प्रस्तावित करैत छली। कथा किछु निश्चित निराकरण नहि दैत; पूर्ववर्ती नाम-पाठसँ अनुसन्धानक नैतिक अनुशासन दिस पाठककेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

अध्याय तथ्य-संग्रहक उपयोगिता नकारैत नहि; ओ शास्त्रीय उत्सुकतासँ उत्पन्न अधिकारभावकेँ नियन्त्रणक माँग करैत अछि। तात्त्विक सीमा ई जे अधिकांश शोधार्थी पहिने असंवेदनशील देखाओल गेल छथि, जाहिसँ वैकल्पिक शोध-पद्धतिक भिन्न उदाहरण कम उभरैत अछि। तथापि अनुसन्धानक समय, स्थान, अनुमति आ भाषा पर साहित्यिक चिन्तन एहि अध्यायकेँ स्वतन्त्र आलोचनात्मक मूल्य दैत अछि।

# अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार

## देखबाक इच्छा आ देखाएल व्यक्तिक स्वायत्तता

एहि अध्यायक मूल प्रश्न दर्शककेँ दृश्यपर कतेक अधिकार अछि, से नहि; देखाओल जा रहल व्यक्तिक इच्छा, गरिमा आ नियंत्रण कतेक सुरक्षित अछि, से अछि। विदेशी दल जखन दोसर दिन लौटैत अछि, ईरा हुनका बाहरी घेरामे रोकैत छली आ मीरा ‘केकरा, किएक, कतेक’ देखबाक प्रश्न उठबैत छली। धुँधल चेहराक प्रस्ताव पर मीराक आपत्ति महत्त्वपूर्ण अछि। पहिचान नुकाएब आवश्यक सुरक्षा उपाय भऽ सकैत अछि, मुदा ओ व्यक्ति द्वारा चित्रित होबाक मूल निर्णयक विकल्प नहि। उपन्यास तकनीकी समाधान आ स्वैच्छिक सहमतिक बीच एही नैतिक दूरीक विवेचन करैत अछि।

मीराक पूर्व अपमानक स्मृति भाषणक आधार अछि; ओ अपन देहक वस्तुकरण जानने छली। ‘जे देखाइत अछि, ओकरो आँखि अछि’—अनन्याक रजिस्टरक ई सूत्र दृष्टिक एकदिशात्मक सम्बन्धकेँ तोड़ैत अछि। पाठक नायक बनि केवल करुणा-नजर नहि दैत; ओकर नजरि सेहो समीक्षा योग्य बनैत अछि। एहि अर्थमे अध्याय स्वयं पाठकक दृष्टिक परीक्षा अछि, यद्यपि वास्तविक अनुसन्धानमे सहमति लिखित, परिवर्तनीय आ प्रयोग-विशिष्ट होबाक प्रश्नक आरो विस्तार सम्भव छल।

## जगदीश राम : शास्त्रक भीतर जकर आवाज नहि छल

वृद्ध चर्मकार जगदीश रामक आगमनसँ बहस केवल कैमरा आ निजतापर नहि रहैत; ज्ञाननिर्माणक सामाजिक अनुशासनपर केन्द्रित होइत अछि। ओ गंगेशक जीवनक अपमान आ शास्त्रीय प्रतिष्ठाक सम्बन्ध पूछैत छथि। अनन्या हुनकर प्रश्नकेँ स्मृति-नक्शामे स्थान देबाक पक्ष लैत छली। सत्यव्रत अपन नोटबुक जगदीश रामकेँ दैत छथि, ताकि ओ अपन दृष्टिक कथन स्वयं लिखथि। ई सान काज अध्याय ६०क दोसर मौनक अधिक विकसित रूप अछि—विशेषज्ञक स्थान खाली कऽ अनुभवधारीक लेखकीय अधिकार स्वीकार करब।

जगदीश रामक कथन ‘हमर दृष्टि सेहो प्रमाण अछि’ नैतिक दृष्टिसँ पीड़ित अनुभवक मान्यता माँगैत अछि; नव्य न्यायक कठोर परिभाषामे कोनो व्यक्तिक दृष्टि मात्र स्वतः निर्विवाद प्रमाण नहि। एहि भिन्नता बचा कऽ पढ़लासँ रचना अधिक प्रबल लगैत अछि, कारण ओ अपमानित गोटेक आवाज सुनबाक शर्त बनबैत अछि, ओकर प्रत्येक ऐतिहासिक दावा अचूक घोषित नहि करैत।

## ‘दृष्टि-पहरा’क पाँच सूत्र आ लाल डोरी

मीरा सामूहिक सहमतिसँ दृष्टि-पहराक नियम तैयार करैत छली: चेहराक चित्र लेल पहिने अनुमति; रोदनक प्रदर्शन परिवारक इच्छा पर; देहक अपमानक चित्रणमे गरिमाक भाषा; जाति-आधारित पीड़ाकेँ अनाम सामान्य उदाहरण बना कऽ इतिहास मेटाएबासँ बचब; आ देखल व्यक्तिक प्रति पछातियो उत्तरदायित्व। ई नियम रचनाक व्यावहारिक नैतिक उपलब्धि अछि। अध्ययन करएवला यन्त्रक उपयोगक विरुद्ध पूर्ण निषेध नहि, शर्ताधारित अनुमतिक विधि बनैत अछि।

मार्था मीराक कलाईक लाल डोरीक मात्र चित्र माँगैत छली। मीरा कुछ सोचि स्वीकृति दैत छली, मुदा ओकर अर्थ अपनहि शब्दमे लिखबाक शर्त रखैत छली। ई दृश्य ‘सहमति’केँ एक बेर हँ कहि देबाक घटना नहि, प्रतिनिधित्वक निरन्तर अधिकार मानैत अछि। कथाकार स्त्रीक अनुभवकेँ प्रतीक बनबैत अछि, मुदा स्त्रीक आवाज प्रतीकक व्याख्यापर नियन्त्रण राखैत अछि; एहि अर्थमे बिम्ब आ वैयक्तिक स्वायत्तता सफलतापूर्वक संग रहैत अछि।

## अलौकिक कैमरा-सन्देश आ डिजिटल संकटक सेतु

चुपचाप चित्र लऽ रहल युवकक यन्त्रपर ‘अहाँ देखलहुँ, मुदा देखल गेलहुँ कि?’ सन संदेश उभरब बूढ़बा भूतक सान्निध्यमे अलौकिक कथा-विन्यासक प्रसंग अछि। ई बाहरी प्रौद्योगिक घटनाक पुष्टि नहि, दृष्टिक प्रतिलोम प्रश्नक नाट्यरूप अछि। कबड्डीक लय आब देहकेँ पकड़बाक स्थानपर दृष्टिक पकड़सँ मुक्त होएबाक अभ्यास बनैत अछि।

अध्यायक अन्तमे चन्द्रपालक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग द्वारा घर-घर फोटो, कथा आ परिवारक विवरण माँगब शोध-दलक प्रश्नकेँ व्यापक डिजिटल समाजमे लऽ जाइत अछि। मीरा शोध-दलक कैमरा रोकबामे सफल होइत छली, मुदा निजी मोबाइलमार्गे प्रचारक आगमनक चुनौती अगिला अध्यायक केन्द्र बनैत अछि। ई आख्यानिक सन्धि सुदृढ़ अछि।

# अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

## एक स्पर्शक श्रद्धा आ शोकक वास्तविक समय

श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग मृतकक नाम, चित्र, परिवारक कथा, डिजिटल दीप आ दानक विकल्प सहित सुविधाजनक सार्वजनिक स्मरणक वचन दैत अछि। देविका विज्ञापनक ‘एक स्पर्शमे श्रद्धा’ पढ़ि विचलित होइत छली। एहि ठाम आलोचनात्मक प्रश्न डिजिटल माध्यम अपनेमे दूषण होएबाक नहि, शोकक लम्बा समयकेँ तात्कालिक बटनमे बदलि देबाक अछि। अध्याय ६१क नाम-पाठ प्रत्येक नामक बीच साँस चाहैत छल; एहि अनुप्रयोगक व्यापारिक गति नामक स्थानपर प्रविष्टि आ दानक संख्या रखैत अछि।

दूर बसैत परिजनक सहभागिता आ अभिलेखीय सुविधा वास्तविक लाभ भऽ सकैत अछि—चन्द्रपाल एहि पक्षक उल्लेख करैत अछि। ताहि कारण आलोचनामे डिजिटल स्मारक आ शोषणकारी डिजाइनकेँ एक समान नहि मानबाक चाही। मूल कथामे विवादक ठोस बिन्दु अवैध प्रयोग, अपूर्ण नामक अस्वीकृति, अनुमतिक अस्पष्टता, संवेदनशील विवरणक संग्रह आ दानक व्यवसायिक व्यवस्था अछि। एहि भेदकेँ बनाए रखलासँ रचनाक सामाजिक तर्क अधिक कठोर बनैत अछि।

## अधूरा नामक अस्वीकृति : डेटाक ‘पूर्णता’क राजनीति

देविका चन्द्रपालसँ पूछैत छली जे नाम नहि भेटल अथवा अधूरा रहल मृतकक स्मरण अनुप्रयोगमे किएक नहि स्वीकृत। चन्द्रपाल आँकड़ाक पूर्णता आ दानदाताक अपेक्षाक तर्क दैत अछि। कथाक भीतर एहि पद्धतिसँ सबसँ असहाय पीड़ित फेर हेरा जाइत छथि—जे पहिनेसँ प्रशासनिक अभिलेखमे अधूरा छल, ओकरा नब तकनीकी सूची सेहो बाहर करैत अछि। अध्याय ६१क अधूरा ‘सर...’क सम्मान आ अध्याय ६८क पूर्णता-आधारित अस्वीकृतिक तुलना उपन्यासक अत्यन्त सार्थक अन्तर्पाठीय सम्बन्ध अछि।

अपूर्ण जानकारी स्वयं खतरनाक नहि, ओकरा बिना चिह्नक पूर्ण निश्चिततामे बदलि देब अधिक खतरनाक अछि। सुरक्षाक नामपर नामक अस्वीकृति उचित भए सकैत अछि केवल जखन वैकल्पिक समावेश, तथ्य-जाँच, परिवारक सुधार-अधिकार आ गलत प्रयोगसँ रक्षा उपलब्ध हो। कथा एहि संरचनात्मक असमानताकेँ उजागर करैत अछि।

## उज्ज्वलक अभिलेख, देविकाक संयम आ सहमतिक नैतिकता

चन्द्रपालक दफ्तरक भीतर नाम टाइप करैत युवकसभक दृश्य कथाक डिजिटल कार्यप्रणालीक भितरका यथार्थ प्रस्तुत करैत अछि। कोठलीमे किछु नामक संग जाति-पिता-पतिक विवरण जोड़ल जाइत अछि; उज्ज्वलक नाम लग भावनात्मक पहुँचक उच्चता दर्शाओल गेल अछि। देविका किछु संवेदनशील प्रविष्टि देखैत छली, मुदा तकर चोरीक प्रतिवादमे स्वयं बिना अनुमतिक चित्र नहि लैत छली। ई नकारात्मक क्रिया—जाहिमे पात्र इच्छापूर्वक प्रमाणक अनुचित प्रतिलिपि नहि बनबैत—लेखकक नैतिक सूक्ष्मता देखबैत अछि।

लोकसभामे घुरि देविका अप्रामाणिक व्यक्तिगत विवरण नहि बजैत, बल्कि अनुप्रयोगक पद्धति पर चेतावनी दैत छली। एतय आलोचना अन्तरवस्तुक प्रचार नहि, प्रक्रियाक जाँच बनैत अछि। तथापि अधिकार बचएबाक लेल वास्तविक उपचार—सम्पादन, हटएबाक अनुरोध, अभिगम-नियन्त्रण आ स्वतंत्र परीक्षण—कथामे अगिला चरणमे अधिक विस्तार माँगैत अछि।

## पाथरक तीन धुँधल अक्षर : आभासी आ भौतिक चोट

अध्यायक अन्तमे पाथरक तीन नामक अक्षर धुँधला पड़ब डिजिटल चोरीसँ भौतिक अभिलेखक हानि दिस गतिमान कथा बनबैत अछि। कोंपलक चारू कात माटि खुरचल देखाओल जाइत अछि। बूढ़बाक आवाज दैत अछि जे स्क्रीनपर नाम चोरबएवला पाथर धरि पहुँचि सकैत अछि। ई अलौकिक संकेत तथ्यात्मक डिजिटल ह्याकिंग आ पाथरक वास्तविक

शारीरिक क्षतिक सिद्ध सम्बन्ध नहि करैत; पाठमे ई स्मृतिक असुरक्षाक प्रतीकात्मक उत्कर्ष अछि।

प्रारम्भक चेतावनी-बाल गीत क्लिक करबासँ पहिने प्रश्न पूछबाक शिक्षा दैत अछि; अन्तक गीत वित्तीय लेनदेन आ शोकक व्यवसायिक भाषाक विरोध करैत अछि। डिजिटल सुरक्षा आ सांस्कृतिक स्मृतिक समान्तर लेखन अध्यायक उपलब्धि अछि। सीमा ई जे चन्द्रपालक प्रतिपक्ष अधिकांश दृश्यमें लगभग निर्विवाद स्वार्थी देखाओल गेल अछि; ओकर जटिल मानसिक इतिहास पर कम प्रकाश अछि।

# अध्याय ६९ — नामक चोरी

## अक्षर नष्ट भेने समाजक उपस्थिति कोना बदलैत अछि

अध्याय ६९क आरम्भमे सरयू मण्डलक नाम रजिस्टर सँ मेटाएल भेटैत अछि, जखनकि पाथर अपन ठामपर अछि आ लाल डोरी सेहो बान्हल अछि। एहि चयनसँ उपन्यास भौतिक चोरी आ अभिलेखीय विस्मरणक अन्तर प्रभावशाली ढंगसँ रचैत अछि। वस्तु नहि गेल, वस्तुक सार्वजनिक अर्थ हेरा गेल। बा कहैत छलीह जे भयावह चोर ओ अछि जे लोककेँ विश्वास करा दे जे पाथरपर कहियो नाम छलहि नहि। ई वाक्य इतिहास-लेखनक कतेको विधिक, सांस्कृतिक आ जातिगत विवादक आलोचनात्मक केन्द्र बनि सकैत अछि।

रजिस्टरक अक्षर मेटाएब, पाथर चिक्कन भऽ जाएब आ स्क्रीनमे ‘अप्रमाणित’क चिह्न लगब —तीनू स्तर एकहि घटना नहि। कथाक शिल्प एहिसभकेँ एक साथ आवर्ती बिम्ब बनबैत अछि। मुदा वास्तविक अन्वेषणमे प्रत्येक स्तरक अपन प्रमाण, सम्भावित कारण आ प्रतिपरीक्षण आवश्यक अछि। एहि सावधानी बिनु उपन्यासक प्रतीकक तीव्रताकेँ विधिक निष्कर्षमे बदलबाक दोष होएत।

## सरयू मण्डल आ पूर्व पात्र-पहिचानक निरन्तरता

कथामे ‘सरयू मण्डल’क नाम मेटल देखाओल जाइत अछि; पूर्व बैचसभमे ‘सरयू देवी’ आ ‘सरयू महतो’ सन नाम सेहो पाठगत प्रश्न बनि चुकल अछि। एहि स्थिति कैँ सबटा एकहि व्यक्तिक निश्चित भिन्न नाम मानब अथवा अवश्य भिन्न व्यक्तिक सूची बनाबब—दुनू अनुमान हएत। अध्याय ६९क राखी पहिरल बहिन, नाव खेने पिता आ सरयूक वंशक स्मृतिक उल्लेख समग्र पात्र-पञ्जी सँ संगति जाँचबाक ठोस स्रोत बनि सकैत अछि। लेखकक शब्द सुरक्षित रखैत समीक्षककेँ नाम, सम्बन्ध, लिंग, घटनाकाल आ मृत्यु-विवरणक तुलनात्मक अभिलेख तैयार करबाक चाही।

देविका डिजिटल पञ्जीमे मुन्ना पासवानक बाबू, उज्ज्वलक घटना आ मजदूरक मृत्यु सम्बन्धी अप्रामाणिक श्रेणी देखैत छली। गोप कुमारक पुरान दस्तावेजक निशान सेहो कथामे पानिक बून्द जकाँ बहैत अछि। एहि अलौकिक अनुभूतिसँ मूल उपन्यास प्रश्न पूछैत अछि जे सत्ताद्वारा ‘अप्रमाणित’ कहल गेल जीवनक साक्ष्य कोना बचाओल जाय। मुदा स्मृति, मौखिक कथन आ लिखित सामग्रीक परीक्षणक विधिसभ अलग अछि; ओहि भिन्नता राखबहि न्यायपूर्ण पुनर्पाठक शर्त अछि।

## न्यासक ‘सार्वजनिक हित’ आ सात दिनक नाम-पाठ

बटुकनाथ हरिहरन वैधानिक लोक-स्मृति न्यासक प्रस्ताव फेर दैत अछि। अनन्या नाम हटाएल गोटेक पहिल प्राथमिकता पूछैत छली, आरुणि स्मृतिक मौखिक साक्ष्य पर बल दैत अछि आ देविका नामक स्वामित्व प्रश्न उठबैत छली। बटुकनाथक ‘सार्वजनिक हित’क सामान्य उत्तर परिवारक विशिष्ट अधिकारक प्रश्न हल नहि करैत। संस्थागत संग्रहण उचित होएब लेल स्थानीय प्रतिनिधित्व, सत्यापनक पारदर्शिता आ पीड़ितक मना करबाक अधिकार आवश्यक अछि। एहि खण्डमे बहस ‘भावना बनाम प्रमाण’क सरल विभाजन सँ बाहर जा जीवन-साक्ष्यक गुण पर केन्द्रित होइत अछि।

बच्चासभ कुल सात नामक पुनःपाठ लेल सात दिन निर्धारित करैत अछि। एक नामक संग परिवार, घर, श्रम, गीत, गलती, लाज, हँसी आ रोदन सुनबाक प्रस्ताव नामकेँ एकल डेटा-संकेतसँ सम्बन्धक वृक्षमे पुनर्स्थापित करैत अछि। ई सामाजिक अभिलेखक वैकल्पिक पद्धति अछि, मुदा भिन्न परिवारक निजताक इच्छा आ प्रमाण-पहिचानक सीमा ताहिमे निरन्तर विचारणीय रहत।

## पानिक चिह्न, पोखरिक संकेत आ अगिला कथाकाल

सरयू मण्डलक पाथरक नीचाँ भीजल माटिमे पोखरिक नक्शा-जकाँ आकृति भेटब अध्यायक अन्तक अनपेक्षित दृश्य अछि। रातिमे ओहि रेखामे जल चमकैत अछि आ बूढ़बा भूतक कथन ‘नाम जखन मेटाओल जाए, पानि ओकरा राखि लैत अछि’ स्मृति आ नदीक

सम्बन्धकेँ पुनर्जीवित करैत अछि। ई उपन्यासक अलौकिक काव्य-जगत अछि; एकरा भौतिक भूगर्भीय अभिलेख अथवा न्यायिक प्रमाण नहि बुझबाक चाही। आगामी पनिडुब्बीक गवाहीक पूर्वाभास एहि दृश्यद्वारा बनैत अछि।

आरम्भक पनिघट-मंगल नामक कमल बनेबाक रूपक दैत अछि, समापनक विरहा खोआइल अक्षरक विरुद्ध पानिक प्रतिरोध रचैत अछि। पाँच अध्यायक बीच डिजिटल दृश्यसँ जैविक पात, कागचसँ पाथर, आ पाथरसँ पानि दिस अर्थ-यात्रा चलैत अछि। अध्याय ६९ एही दीर्घ अर्थ-यात्राक नब कड़ी बनैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ६५–६९

## ठेकासँ शोध, दृष्टिसँ डिजिटल पञ्जी धरि

अध्याय ६५मे ब्रूमक प्रस्ताव स्मृतिक व्यापारिक अधिकारक नब चेहरा बनैत अछि। ६६मे बाहरी शोध-दल नामकेँ अनुसन्धानक सामग्री बनएबाक सम्भावित दबाव आनैत अछि। ६७मे मीरा देखबाक अधिकार आ स्वीकृत प्रतिनिधित्वक सीमा निर्धारित करैत छली। ६८मे चन्द्रपालक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग नाम, चित्र आ दानकेँ एक डिजिटल रूपरेखामे रखैत अछि। ६९मे नामक मात्र वस्तु नहि, ओकर कागजी आ सामुदायिक अस्तित्व पर आघात देखाओल जाइत अछि। एहिसँ बाहरी संग्रहणक प्रश्न धीरे-धीरे समुदायकेँ अपन अभिलेखक अधिकार कोना बचाएब चाही, एहि मूल विषयमे बदलैत अछि।

एहि क्रमक अन्त:संगति विशेष उल्लेखनीय अछि: नामक मालिक के, चित्रक व्याख्या के करत, शोधक लेखनक अधिकार ककरा, डिजिटल सूचीमे अधूरा नामक स्थान कतय, आ मेटायल नामक पुन:सुननाइ के करत? ई पाँच प्रश्न अलग संस्था सँ उठैत अछि, मुदा उत्तरक केन्द्र प्रभावित व्यक्तिक स्वायत्तता अछि।

## देविका, मीरा, अनन्या, सत्यव्रत आ गोपक विभिन्न काज

मीरा अध्याय ६५ सँ अनुमति माँगैत छली आ ६७मे ओकरा विस्तृत दृष्टि-पहराक रूप दैत छली। देविका ६५मे दानक हिसाबक सार्वजनिकता पूछैत छली, ६८मे स्वयमेव गोपनीय नामक चित्र नहि लऽ कऽ विरोधक नैतिक मर्यादा प्रत्यक्ष करैत छली। अनन्या ६६मे बाहरी शोधार्थीकेँ ‘उपस्थित’ बजबैत छली, ६९मे सात नामक सात दिनक सुननाइ प्रस्तावित करैत छली। सत्यव्रत अपन दोसर मौनकेँ जगदीश रामकेँ लेखन-स्थान देबाक काजमे परिणत

करैत छथि। गोप कुमार मूल योजनाक सम्भावित आर्थिक सम्बन्ध बतबैत छथि, मुदा ओकर कथनकेँ स्वतन्त्र प्रमाणसँ अलग चिन्हब समीक्षा-पद्धतिक दायित्व अछि।

एहि पात्रसभक भूमिका-वैविध्य कथाकेँ अनेकस्वरी बनबैत अछि। तथापि प्रतिपक्षी पात्रक आन्तरिक तर्क अधिकतर लोभक निश्चित रूपमे प्रस्तुत अछि। कथाक बहस अधिक जटिल तखन बनितथि जँ स्वैच्छिक डिजिटल स्मृति-संरक्षण, सार्वजनिक शोध आ वास्तविक स्थानीय जीविकाक हितक दू-चारि स्वतन्त्र पात्रकेँ अपन विवेकपूर्ण प्रतिवाद रखबाक अवसर भेटितथि।

## प्रमाण, लोकश्रुति आ तकनीकी डेटा : तीन स्तर

अध्याय ६५मे गोपक वित्तीय सम्बन्धक कथन जाँच योग्य अनुसन्धानक सुराग अछि, दोषसिद्धि नहि। ६६–६७मे बाहरी शोध-दलक गतिविधि उपन्यासक कल्पित घटनाक्रम अछि, वास्तविक शैक्षिक संस्थाक व्यवहारक स्वतन्त्र साक्ष्य नहि। ६८मे ऐपक कथित संग्रहणक पद्धति कथाजगतक आलोचनात्मक प्रतिमान अछि। ६९मे पाथर आ रजिस्टरक अक्षर रहस्यमय ढंगसँ मेटब कथाक अद्भुत शिल्प अछि। एहि चारि स्तरकेँ एकहि सामान्य ‘प्रमाण’क छत्रमे राखि देब नव्य न्यायक नामपर नब वैचारिक अस्पष्टता उत्पन्न करत।

गंगेशक जीवन सम्बन्धी लोकश्रुतिक उल्लेख सेहो पुनरावृत्त होइत अछि। मूल पाठक चर्मकारणीसँ विवाह आ जन्म-कथा आदि ऐतिहासिकरूपेँ स्वतः सत्यापित नहि; हुनका सभक पात्रगत प्रयोग आ जाति-स्मृतिक नैतिक अर्थ पर विश्लेषण सम्भव अछि। ‘हमर दृष्टि सेहो प्रमाण अछि’क नैतिक आग्रहकेँ जाँचक अधिकार आ सम्मानक माँग रूपमे ग्रहण करब, सभ कथनक अचूकत्व घोषित करबाक बदला अधिक उचित अछि।

## वस्तु-शृंखला : लोटा, लेंस, डोरी, बटन आ पाथर

अध्याय ६५क लोटा जीवित कोंपलक देखरेखक प्रत्युत्तर अछि; ६६क लेंस बाहरी दृष्टिक वस्तुकरणक संकट; ६७क लाल डोरी मीराक आत्मव्याख्याक अधिकार; ६८क बटन शोकक तीव्र बाजारीकरण; ६९क नामहीन पाथर अभिलेखीय विस्मरणक भय। पाँच वस्तुक शृंखला

एकहि नारा दोहरबैत नहि, अनुभवक अलग पक्ष दृश्य बनबैत अछि। लोटा आ डोरी व्यक्ति-नियन्त्रित काजक प्रतीक, जखनकि अनधिकृत लेंस आ संग्रहक बटन बाहरी कब्जाक संकेत अछि। पाथर ओहि संघर्षक शेष संकट बनैत अछि जे डिजिटल नियन्त्रणक बादो वास्तविक स्मृतिस्थल असुरक्षित रहि सकैत अछि।

लोकगीतसभ क्रमशः नदी-बटगबनी, दृष्टि-गीत, स्त्री-संवाद, डिजिटल चेतावनी आ पनिघट-विरहामे बदलैत अछि। स्थानिक लोकधुनक सहारे नब तकनीकी दुविधा व्यक्त करबाक ई प्रयत्न कादम्बरीक विशिष्ट कलात्मक उपलब्धि अछि। गीतक कतिपय अन्तिम पंक्ति पुनरावृत्त भऽ गेल अछि, जकर सम्पादकीय कसावट उपयोगी होएत, मुदा मूल काव्यगत धुरी स्पष्ट अछि।

## पाँच अध्यायक समेकित मूल्यांकन

एहि खण्डमे साहित्यिक आलोचनाक सबसँ उपयोगी निष्कर्ष ई नहि जे संस्थागत अनुसन्धान, डिजिटल अभिलेख वा विकास सब खराब अछि। ई जे एहन काजक नैतिक मूल्यांकन परिवारक सहमति, अपूर्ण नामक अधिकार, स्रोतक परीक्षण, स्थानीय भाषाक सम्मान, आर्थिक पारदर्शिता आ प्रतिनिधित्वक स्वायत्ततासँ होएत। कथामे पाठक बारम्बार देखैत अछि जे ककरो अनुभव बिनु अनुमति ‘सार्वजनिक हित’क नामपर सार्वजनिक कएल गेल तँ न्याय स्वयं दोसर अपमान बनि सकैत अछि।

अध्याय ६९क सात नाम आ पोखरिक संकेत अगिला अध्याय ७०–७४क अनिवार्य पाठाधार बनत। विशेषतः सरयू मण्डल, सरयू महतो, सरयू देवीक सम्भावित सम्बन्ध, ब्रूम-सम्बन्धी वित्तीय आरोपक क्रम आ चन्द्रपालक आवेदनक नियंत्रण संरचना मूल उपन्यासक आगामी दृश्यसभसँ मिलाएब आवश्यक अछि। एहि पाँच अध्यायक सामर्थ्य विवरणक सघनता, स्मृति-नैतिक प्रश्नक ठोस दृश्य आ अधिकारक बहुस्तरीय विमर्शमे अछि; मुख्य सीमा कतिपय नैतिक पक्षक अत्यधिक स्पष्ट विभाजन अछि।

# अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही

## नामक अक्षरसँ उच्चारण धरि : अभिलेखीय चोरीक दोसर स्तर

अध्याय ६९मे रजिस्टर आ पाथरक नाम मेटाएबाक आशंका जे संकट बनल छल, ‘पनिडुब्बीक गवाही’ ओकरा आवाजक संकटमे परिणत करैत अछि। कागच बचल रहितो नाम उच्चारित नहि भऽ सकब कतेक गंभीर बात अछि, एकर बोध अनन्याक जिह्वा अटकि जेबाक दृश्यमे होइत अछि। चोरी एकटा वस्तु हटाएब मात्र नहि; स्मृतिक सामाजिक उच्चारणमे सन्देह भरब सेहो अछि। एहि तरहेँ उपन्यास लिखित अभिलेख, सामूहिक कण्ठ आ व्यक्तिक चिन्हारि केँ तीन परस्पर निर्भर, मुदा अभिन्न नहि, स्तरमे राखैत अछि।

अनन्या रजिस्टरमे पानिक दाग देखैत छली आ गोप कुमार संग्रहित डिजिटल नकलसभ मोन पाड़ैत छथि। दाग, नकल आ नामक भ्रमणक ई तुलना कथाकारक समकालीन आख्यान-कौशल अछि। आनन्दक लेल जादुई दृश्य राखबाक बदला कथा पूछैत अछि जे प्रमाणक स्रोत पर नियन्त्रण ककर अछि। तथापि पानिक दागसँ वास्तविक नामक पुनःप्राप्ति स्वतः सिद्ध नहि; ई मूल उपन्यासक प्रतीकात्मक कथाजगतमे घटैत अछि।

## पोखरि, बुलबुला आ पात : अद्भुत रसक साक्ष्य-व्याकरण

पोखरिक पहिल बुलबुला फुटैत नहि, सतह पर ठहरैत अछि; दोसरा नामक उत्तरमे भीजल पात ऊपर उठैत अछि। एहि दू सूक्ष्म भौतिक प्रसंगक समय-व्यवस्था कथाक अद्भुत रसक आधार अछि। लेखक पाठककेँ तुरन्त ‘ई चमत्कार अछि’ कहल नहि छोड़ैत; भीड़मे भ्रम, जादू आ गवाहीक भिन्न सम्भावना व्यक्त होइत अछि। किंतु आश्चर्यक कथा-समय आ सत्यापनयोग्य अनुसन्धानक समय एक नहि। सत्यव्रत जखन प्राकृतिक प्रतिबिम्बकेँ प्रमाण मानबाक सम्भावना उठबैत छथि, तखन नव्य न्याय दृष्टिसँ अधिक सावधानी चाही—प्रतिबिम्बक प्रत्यक्षता, ओकर विषयक ग्रहण आ वस्तु-सिद्धि अलग प्रश्न छथि।

पनिडुब्बीक स्वर न स्त्री, न पुरुष, न बालक, न वृद्धक एकल स्वर; अनेक स्वरक समवाय जेकाँ सुनाइत अछि। ई वर्णन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण नाम-विहीन लोकक स्मृतिक एकमात्र प्रतिनिधि केओ एक गोट व्यक्ति नहि बनैत। ध्वनिक बहुवचन सामूहिक गवाहीक काव्यात्मक रूप लैत अछि।

## मीराक निजता-नियम आ अनलिखल नामक भार

पोखरि पर गवाही लेबाक पहिने मीरा मृतकक परिवारक स्वीकृति, चेहराक प्रदर्शन आ रोदनक व्यवसायीकरण पर रोकक नियम दोहरबैत छली। पनिडुब्बी सेहो उत्तर दैत छली जे नामक रक्षा करब पीड़ाक प्रदर्शनी लगाओल नहि। लोककथा आ आधुनिक निजताक नैतिकता एकहि दृश्य-क्रममे भेटैत अछि। ई संयोजनक शक्ति एतबे नहि जे अलौकिक पात्र आधुनिक भाषा बाजैत अछि; बल्कि कथा देखबैत अछि जे स्मृति-संरक्षणक प्राचीन लोकरीति सेहो अनुमति आ अस्वीकारक अधिकारसँ जुड़ि सकैत अछि।

अनन्याक प्रश्न—जे नाम कखनो लिखले नहि गेल, ओकर स्थान कतय—अध्यायक नैतिक केन्द्र बदलि दैत अछि। अनाम पाथरक महत्व केवल व्यक्तिगत शोक नहि; अभिलेख बनबैत संस्था किनका सभकेँ आरम्भहि सँ छोड़ि देलक, ई पूछब सेहो अछि। मुदा ‘अनलिखल नामक भार’क नैतिक प्रतिपादनक अर्थ ई नहि जे बादमे बनल प्रत्येक स्मृति-बयान जाँचबिनु ऐतिहासिक तथ्य अछि। लेखकक करुण आग्रह आ समीक्षकक प्रमाण-विवेक एक-दोसराक विरोधी नहि, पूरक छथि।

## नाम-उद्धारसँ तमाशाक नव लोभ धरि

बूढ़बा भूतक वचनमे कबड्डी नामक पहरादारी सँ जुड़ैत अछि; साँस रोकि पुकारब आ उपस्थितिक उत्तर देब सामूहिक प्रशिक्षण बनि उठैत अछि। मुदा पोखरिक कात ठाढ़ बाहरी लोक एहि असाधारण दृश्यकेँ टिकटबला तमाशामे बदलबाक हिसाब लगबैत अछि। घटनाक ई अन्त अत्यन्त सटीक अछि: मुक्तिक लोक-कर्म बाजार लेल नव सामग्री सेहो बनि सकैत

अछि। एहि प्रकार कथा नामक पुनर्प्राप्तिक विजयपर थमैत नहि, ओकर प्रतिलोम खतरा जन्मबैत अछि।

अध्यायक सीमा ई जे पनिडुब्बीक कथन अनेक बेर पूर्ण नैतिक समाधानक रूपमे सुनाइत अछि, जकरा कारण पात्रसभक वास्तविक मतभेद कम देखाइत अछि। मुदा पोखरिक पानिसँ उठल स्वर, खाली पात, अनाम पाथर आ दर्शकक टिकट-कल्पना एक साथ स्मृति, प्रमाण आ लोभक त्रिकोण स्पष्ट करैत अछि।

# अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

## विज्ञापनक ‘अनुभव’ आ गामक शोक

पनिडुब्बीक गवाहीक दोसर दिन कार्यक्रमबला गाड़ीपर ‘भूत-कबड्डी’क दृश्य सजाएल जाइत अछि। नगरपालिकाक अनुमति, धुँआक डिब्बा, कलाकारक वेश, बाँसक मंच आ टिकट-जेकाँ पर्ची—ई सभ विवरण अध्यायकेँ विशिष्ट सामाजिक स्थल दैत अछि। स्थानीय लोकक शोक पर्यटन-व्यवसायक ‘अनुभव’ बनैत अछि। देविका जे घाव आ सजावटमे अन्तर करैत छली, ओ प्रतिवादक तर्क अछि; यद्यपि प्रत्येक सांस्कृतिक प्रस्तुति अपमानजनक नहि, एहि आयोजनमे परिवारक अनुमति आ कथाक मूल अर्थक अनुपस्थिति प्रत्यक्ष अछि।

मीरा आयोजकसँ मृतकक नाम नहि लेबाक निर्णयक बादो प्रश्न करैत छली जे पीड़ाक ‘वातावरण’क मालिक के? ई सूक्ष्म बिन्दु मूल्यवान अछि। नाम गोप्य राखलासँ निजताक सभ समस्या समाप्त नहि होइत; दृश्य, ध्वनि आ स्थल सेहो कोनो समुदायकेँ चिन्हबा सकैत अछि। गामक बेरोजगार कलाकारसभक उपस्थिति आयोजनक आर्थिक जटिलता बढ़बैत अछि—ओसभ मात्र छलक पात्र नहि, रोजीक आवश्यकता वाला लोक सेहो छथि।

## भूतक नकल आ कबड्डीक साँस : ध्वनिक कथाशास्त्र

मंचीय ‘कबड्डी’मे स्वर टूटैत अछि, ताहि सोझाँ कथाकार वास्तविक भूत-कबड्डीक साँस, पुकार आ अदृश्य नामक सम्बन्ध स्मरण करबैत अछि। धुँआ बनाम भीजल माटिक गन्ध, अभ्यासक चीत्कार बनाम परिवारक पुकार, चूनाक पुताइ बनाम जड़िक घाव—ई इन्द्रियगत द्वन्द्व रचनाक नाटकीयता बनबैत अछि। अनन्याक रजिस्टरमे साँस टूटल, नाम नहि आ माटिक अनुत्तरित रहबाक नोंद होइत अछि। तर्कक भाषा बच्चासभक खेल-व्यवहारमे बदलल अछि।

ई अन्तर ‘असल’ भूतक बाह्य वैज्ञानिक अस्तित्व सिद्ध नहि करैत। उपन्यासक जादुई-यथार्थवादी विन्यासमे असल कहल अनुभव समुदायक नाम-स्मृतिसँ जुड़ल अछि; नकली

कहल प्रदर्शन पूर्वनिर्मित भावनात्मक उपभोग अछि। आलोचनामे दुनू स्तरक अर्थ अलग राखलासँ लेखकक व्यंग्यक सूक्ष्मता बचैत अछि।

## कलाकारक अपन पिताक नाम : अभिनयसँ गवाहीक मोड़

मंचक जड़ि छूबिते एक कलाकार अभिनयक संवाद छोड़ि अपन खदानमे मरल बाबाक नाम बजैत अछि। एहने क्षणमे कार्यक्रमक निर्देशक लिखित संवादपर लौटबाक आदेश दैत अछि, मुदा कलाकारक व्यक्तिगत रोदन मंचक अधिकार बदलि दैत अछि। फेर विधवा-पेंशनसँ हटाओल मायक नाम, अस्पतालमे रोकल परिजनक देह, आ दबाओल प्रेमक कथा दोसर कलाकारसभक मुँहसँ उघड़ैत अछि। जे ‘दर्शक’ छल, ओ सुननाइमे भाग लेबए लगैत अछि। ई बाहरी मंचक सामुदायिक पुनरधिग्रहण अछि।

नव मृतकक नाम मूल गामक अभिलेखक बाहरक अछि। ओकरा स्थान देलासँ गढ़ नारिकेलक स्मृति-समुदाय भौगोलिक सीमा पार करैत अछि, मुदा ककरो गवाहीक लिखित प्रमाण बनाओलाक पहिने ओकर इच्छा आ पहिचानक स्वीकृति आवश्यक रहत। कथामे करुणा ओकर आरम्भ करैत अछि, निर्णायक सत्यापन नहि।

## नकली मुखौटाक ‘उपस्थित’ आ व्यंग्यक उपलब्धि

बाल कलाकारक मुखौटा पाछाँ बूढ़बा भूतक झलक आ ओकर मुँहसँ ‘उपस्थित’क अनायास उच्चारण मंचक व्यंग्यकेँ उलटैत अछि। नियोजित डर लोकक प्रत्यक्ष गवाहीक सोझाँ टिकि नहि सकैत। ‘असल भूत चिन्हू’ लोकगीत लोभ आ अफवाहकेँ वास्तविक सामाजिक भयक रूपक मानैत अछि। ई लोकव्यंग्य कार्यक्रमक चटक दृश्यसँ अधिक गहिर अछि; ओ प्रश्न करैत अछि जे दर्शककेँ डेराएब जरूरी अछि कि ओकरा सुनबाक योग्यता देब?

सीमा एतय सेहो अछि जे आयोजनक संभावित रोजगार आ सामुदायिक सांस्कृतिक प्रस्तुति लेल वैकल्पिक न्यायपूर्ण विधि विकसित नहि कएल गेल। तथापि अभिनयक भीतरसँ असल शोक निकललाक दृश्य, कलाकारक स्वतन्त्र मुँह आ टिकटबला मंचक नाम-पाठमे रूपान्तरण अध्यायकेँ स्मरणीय बनबैत अछि।

# अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

## घावक हँसी आ प्रशासनिक भाषाक असमर्थता

नकली भूतक जुलूस समाप्त भेलाक बाद हँसी ठूँठक खोखल कोटरमे गूँजैत रहैत अछि। हवा बन्द भेलाक बादो कंपन चलब कथा-जगतमे अद्भुत प्रभाव रचैत अछि। नाम-पाथरक अक्षर गाढ़ भऽ उठब, अनन्याक अंगुरीपर ठंढा ओस आ खरखर सतहक एकसंग अनुभव—ई सघन स्पर्श-बिम्ब छथि। बा हँसीकेँ केवल मनोरंजन नहि, दुख बिकबाक विरोधक रूपमे बुझैत छलीह। एहि प्रकार करुण रसक भीतर हास्य प्रतिरोधक रूप लैत अछि।

नगरपालिकाक कर्मचारी एहि हँसीक सामाजिक अर्थ बुझबाक बदला ओकरा ‘अवैज्ञानिक अफवाह’ आ भीड़ नियन्त्रणक समस्या मानैत छथि। ई संस्थागत भाषा आ समुदाय-निर्मित अर्थक असामंजस्य अछि। मुदा आलोचककेँ प्रशासनक सम्भावित वास्तविक सुरक्षा-चिन्ताकेँ सरासर नकारबाक आवश्यकता नहि; उपन्यास खास ओहि क्षणकेँ देखबैत अछि जतय दफ्तरक भाषा लोकक पीड़ा सुनबाक क्षमता हेरा दैत अछि।

## जीवित ठूँठ : स्मृति जड़ि अछि, संग्रहालय नहि

ठूँठक हरियर बिन्दु पहिनुक अध्यायसभसँ जीवित रहबाक सूक्ष्म चिह्न रहल अछि। एहि अध्यायमे हँसी आ कोंपलक संग उभरब संकेत दैत अछि जे कटानक अर्थ अन्तिम विनाश नहि। सुखल गाछक भीतर रसक सम्भावना लोकक सामूहिक पुनर्निर्माणक प्रतीक बनैत अछि। ‘ठूँठक हँसीसँ कोंपल’ गीत चित्रक भावनाकेँ सुनबाक लय दैत अछि। मुदा केवल प्रतीकात्मक पुनर्जन्म पर्याप्त नहि; पानि, नमी, पहरा आ जीवनक रक्षणक भौतिक श्रमक उल्लेख एही कारण सार्थक अछि।

जादुई गाछक प्रतिक्रिया जँ संवेदनहीन शक्ति-संस्थाक कागचकेँ काँपबैत अछि, तकरा कथा-दृष्टि मानब चाही, वास्तविक प्रशासनिक अभिलेखक घटनाक्रम नहि। सजीव आ

निर्जीवक सीमा जतेक कलात्मक रूपसँ हिलैत अछि, ओतेक समाजक निराकार शोककेँ देह देल जाइत अछि।

## बटुकनाथक भीतर उठैत प्रतिप्रश्न

हँसीक असर बटुकनाथ हरिहरन पर पहुँचैत अछि। ओकर मनमे समिति, न्यास, हस्ताक्षर आ कोषक पुरान व्यावसायिक भाषा फेर जागैत अछि; तत्क्षण प्रश्न उठैत अछि—ओ न्याय बुझैत अछि कि संस्थागत अधिकार? ई अन्तर्द्वन्द्व पूर्ववर्ती अध्यायसभमे बनल एकरेखीय खलनायकक रूपमे दरारि आनैत अछि। रचनाक दृष्टिसँ ई निर्णायक विकास अछि, कारण अब संघर्ष बाहरी संस्था बनाम गाम मात्र नहि, अपराधमे भाग लेनिहार व्यक्तिक चेतनाक भीतर प्रवेश करैत अछि।

बच्चा सभक सुनबाक काज बटुकनाथक पढ़ल कानूनसँ कठिन अनुभव होइत अछि। एहिमे लेखक अध्ययनक विरोध नहि करैत; भाषा आ अनुभवक बीच सत्ता-संबंधक प्रश्न राखैत अछि। गंगेशक प्रश्नक पुनरागमन कानून, ज्ञान आ जाति-आधारित विशेषाधिकारक दावाकेँ एकसंग अस्थिर करैत अछि।

## हँसीक गोल पाथर आ स्वप्न-दरबारक संधि

नामविहीन गोल चिह्नबला पाथर हँसीक स्थान बनैत अछि। पाथरपर व्यक्तिक नाम नहि, बेचाएबासँ इनकार करैत सभ स्मृतिक सामूहिक संकेत अछि। एहि बिम्बमे सार्वजनिक स्मृति आ निजी स्वामित्वक तनाव दृश्य बनैत अछि। हँसी बटुकनाथक घर, आलमारी आ स्वप्न धरि पहुँचबाक भूमिकामे समाप्त होइत अछि। कथा अध्याय ७३क ‘स्वप्न-दरबार’ लेल मनोवैज्ञानिक द्वार खोलैत अछि।

अध्यायक एक शिल्पगत दुर्बलता ई जे ठूँठक हँसी अनेक पात्रक भीतर तुरन्त अर्थपूर्ण नैतिक शिक्षा पहुँचा दैत अछि, जाहिसँ कारणात्मक जटिलता किछु कम होइत अछि। तथापि विनाशक वस्तुसँ प्रतिरोधक हास्य उत्पन्न करबाक ई प्रयोग दीर्घ आख्यानमे स्वरक सार्थक परिवर्तन अछि।

# अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

## बहिरंग अदालतसँ अन्तःकरणक न्यायालय

एहि अध्यायक प्रारम्भ बटुकनाथक अनिद्रा आ अनिच्छित हँसीसँ होइत अछि। आलमारीक भीतर सँ अबैत आवाज, दरबारक कल्पित देहरी आ गरीबक हँसीक पीछा करब ओकर मानसिक स्थितिक नाटकीय रूपांकन अछि। बटुकनाथ जीवन भरि विधिक प्रक्रिया, स्थगन आ प्रतिष्ठाक सहारे छल—स्वप्नमे वैह भाषा निर्बल भऽ जाइत अछि। एतय न्यायालयक विधिक वास्तविकता नहि, आत्मावलोकनक रूपक उपस्थित अछि। गंगेश न्यायाधीश-जेकाँ प्रश्न राखैत छथि; उत्तर देबाक अवसर अपराध-रक्षा करैत रहल व्यक्तिकेँ मिलैत अछि।

अनुभवक कालक्रम स्वप्नमे उलटि जाइत अछि। अदालतमे जकर सुनवाई बरखों टारल गेल, ओकर प्रतीक्षा एकहि क्षणमे आँखिक सोझाँ आबि जाइत अछि। स्त्रीक बिकायल गहना, गवाहक मृत्यु, अधूरा पढ़ाइ आ मजदूरक असफल आवेदन ‘प्रत्यक्ष’क प्रतीकात्मक दृश्य बनैत अछि। जँ एकरा नव्य न्यायक तकनीकी प्रत्यक्ष प्रमाण मानल जाए तँ समस्या उठत; ई स्वप्नक भीतरक नैतिक साक्षात्कार अछि, बाह्य दोषसिद्धिक वैधानिक प्रक्रिया नहि।

## प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्दक प्रश्नक नाट्यरूप

बटुकनाथ ‘बिनु प्रमाण न्याय नहि’क पुरान भरोसा व्यक्त करैत अछि। न्यायाधीशक प्रश्न—ई देरीक दृश्य देखल, तकर अनुमान की—ओकर पेशागत शब्दावलीकेँ ओकरा विरुद्ध ठाढ़ करैत अछि। पनिडुब्बी, चन्ना गाछी, बच्चा सभ, गोप, मीरा, देविका, आरुणि आ सत्यव्रतक मौन सामूहिक शब्द-साक्ष्य बनैत अछि। ‘उपस्थित’क उच्चारण स्वप्न-दरबारक स्वतन्त्र विधान जेकाँ बजैत अछि।

एहि संरचनामे भारतीय प्रमाण-शास्त्रक शब्द केवल सजावट नहि, पात्रक नैतिक उत्तरदायित्वक परीक्षणक साधन अछि। तथापि प्रमाणक दार्शनिक प्रकार आ कानूनी तथ्यक

नियम समान नहि; समीक्षककेँ एहि दोसर भेदक चेतना रखबाक चाही। गंगेशक ऐतिहासिक जीवन-प्रसंगक प्रयोग सेहो कथा-जगतक पुनर्रचना अछि, स्वतन्त्र प्रमाणित जीवनी नहि।

## चर्मकारणीक बाँस आ जातिक घरुआ आरम्भ

स्वप्नमे जातिक ऊँच बाड़ बनैत अछि—एक कात ग्रन्थीय प्रतिष्ठा, दोसर कात श्रम; चर्मकारणी स्त्री एक बाँस उखाड़ि विभाजनक दृश्यात्मक आधार हिला दैत छली। ई क्रिया उपन्यासक जाति-आलोचनाकेँ स्थिर विचारसँ ठोस नाटक बनबैत अछि। बटुकनाथ अपन बचपनक इनार लग अलग राखल लोटा, ककरो घरमे भोजनक निषेध आ पारिवारिक प्रशिक्षण स्मरण करैत अछि। ई चिन्ह ओकर पेशागत व्यवहारकेँ केवल व्यक्तिगत लालच नहि, पहिने सँ बनल सामाजिक पदानुक्रमक प्रतिफल बनबैत अछि।

एकर उपादेयता दोषक सामाजिक उत्पत्ति देखाएबमे अछि; एकर सीमा ई जे स्वप्नक एक दृश्य अन्त:करणक गहिर परिवर्तनक पर्याप्त कारण नहि होइत। वास्तविक परिवर्तनक प्रमाण पुनर्वितरण, क्षति-पूर्ति, पुरान अन्यायपर सार्वजनिक उत्तरदायित्व आ व्यवहारक सतत जाँचमे भेटत।

## उपाधिक क्षरण आ अपूर्ण प्रायश्चित्त

भूत-कबड्डीक सीमा पार करबाक प्रयासमे बटुकनाथक साँस अटकि जाइत अछि। वरिष्ठ, अध्यक्ष, विद्वान आ संरक्षक सन उपाधि झड़ैत-झड़ैत अन्तमे ‘बटुक’ बाँचैत अछि। बाहरी पदवी हटि बाल्यकालक भय उघड़बाक ई मानसिक दृश्य आत्मपरिचयक पुनर्समीक्षाक प्रभावी उपकरण अछि। भोरमे न्यासक मसौदाक शब्द बदलल देखाएब अलौकिक शिल्प अछि; ओकर अर्थ सत्ता-केन्द्रित ‘अध्यक्ष’सँ सेवा-केन्द्रित श्रोताक भूमिका दिस प्रश्नक स्थानान्तरण।

अध्याय अधिकार-संस्थाक ध्वंसमात्रक आग्रह नहि करैत; न्याय बचाबए लेल संस्थाक उत्तरदायित्व नवसँ परिभाषित करबाक आवश्यकता सूचित करैत अछि। मुदा सपना पाप

धुलि जेबाक प्रमाण नहि। बटुकनाथक आगाँक काजक निरन्तरता जाँचे बिना ओकरा ‘सुधरल’ घोषित करब आलोचनात्मक हड़बड़ी हएत।

# अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

## प्रतिशतसँ नाम धरि : डिजिटल गणनाक नैतिक विघटन

चन्द्रपाल बत्राक कोठरीमे तीन मोबाइल, विदेशी वस्तु, काँचक टेबुल आ आँकड़ाक पंक्तिसभ छन। पहिने लोक ओकरा लेल प्रति-क्लिक, प्रति-डर, दान आ डिजिटल सहभागिताक गणना मात्र छल। नाम-पाथरक स्मृति ओकर आभासी संसारमे प्रवेश करिते प्रत्येक अङ्क जीवित व्यक्तिक संकेत बनि उठैत अछि। ई उलटब अध्यायक मूल कथात्मक आविष्कार अछि। वित्तीय शोषणक भाषामे ग्राहकक मानवीयता मेटाएब आ फेर ओकर चेहरा घुरि आबब—दुनूक तनाव स्पष्ट अछि।

चन्द्रपाल आरम्भमे स्वयंकेँ निर्दोष ठहराबैत अछि किएक तँ ओकरा प्रत्यक्ष देह-हिंसा करबाक स्मृति नहि। कथाकार मध्यस्थताक नैतिक प्रश्न उठबैत अछि: डर, निजता, दानक प्रदर्शन आ ऋणक जालमे सहभागी व्यवस्था बनबाएब जिम्मेवारीसँ मुक्त नहि करैत। तथापि साहित्यिक आत्मकथन वास्तविक अदालतक दायित्वक स्वतन्त्र प्रमाण नहि, ई भेद आवश्यक अछि।

## अएना, अनेक आँखि आ भयक पहिल दरारि

अएनामे चन्द्रपालकेँ एकक बदला अनेक पीड़ितक आँखि देखाइत अछि—उज्ज्वल, मजदूर, विधवा, चर्मकार बस्तीक बच्चा, निजता गुमौने स्त्री। ई अलौकिक दृश्य ओकर आत्मकेंद्रित दृष्टिक विखण्डन अछि। जकरा ओ डेटा कहैत छल, ओ लोक ओकरा ताकैत अछि। एतय दृश्य-आलोचना अध्याय ६७क मीराक ‘दृष्टिक अधिकार’सँ सम्बद्ध बनैत अछि: जे दूसराकेँ अनधिकृत देखैत छल, से स्वयं देखल जाएबाक भय अनुभव करैत अछि।

कथाकार सावधानीसँ लिखैत अछि जे अपराधीक पहिल डर स्वयंकेँ बचएबाक डर होइत अछि, पश्चात्ताप नहि। ई मनोवैज्ञानिक सीमा स्वीकार करबाक कारण दृश्य नीरस उपदेशमे

नहि बदलैत। सामूहिक अपराधक हर साझेदार जँ एकहि प्रकार भीतरसँ टूटत तँ शिल्प एकस्वरी होएत; एतय पहिल डर आ पश्चात्ताप बीचक अन्तर रखल गेल अछि।

## ‘चन्दू’ कहबाक क्षण आ समुदाय द्वारा सुननाइ

गढ़ नारिकेल पहुँचि चन्द्रपाल पहिने कारक भीतर बैसल रहैत अछि। लोक ओकरा देखि शोर नहि मचबैत, नाम-पाठ जारी राखैत अछि। एहि मौन प्रतिरोधमे समुदायक आत्मविश्वास अछि। अनन्या ओकरा जन्मक नाम पूछैत छली, आ ‘चन्दू’ नामसँ एक निर्बल बाल्यस्मृति उघड़ैत अछि। उच्चारणक ई क्षण ओकर बनाओल सार्वजनिक प्रतिष्ठाकेँ हिलबैत अछि। मुदा रोदन पर मीराक अविश्वास उचित अछि: भावना स्वयं तथ्यक प्रमाण नहि; जिम्मेवारी विशिष्ट काज, पीड़ितक पहचान आ सुधारक प्रतिज्ञा सँ परखल जाएत।

चन्द्रपाल स्वीकार करैत अछि जे लोकक डरकेँ उत्पाद आ शोककेँ संख्या बनौलक। ई आत्मस्वीकृति पात्रक नैतिक विकासक आरम्भ अछि, अन्तिम निर्णय नहि। कथा क्षमा, सार्वजनिक दण्ड आ क्षति-पूर्ति तीनूक भेद सुरक्षित रखैत अछि—कमसँ कम एहि अध्यायमे केओ ओकरा तुरन्त क्षमा नहि दैत।

## सन्देश विफल होएब आ राघव दिस कथा-सेतु

साँझमे चन्द्रपाल राघव ‘सिग्नल’ सोमानीकेँ सन्देश पठाबए चाहैत अछि, मुदा सभक फोन चलैत रहितो ओकर सन्देश नहि पहुँचैत। स्क्रीनपर पातक अक्षर उभरब तकनीकी घटना रूपमे सत्यापित निष्कर्ष नहि; कथाक नैतिक विधान अछि जे केवल जालक पहुँच आ वास्तविक सम्बन्धक पहुँच एक नहि। दानक कोड जखन नामक सार्वजनिक सुननाइमे बाधित होइत अछि, तखन सामूहिक आवाज निजी गोपनियतासँ अधिक प्रभावी बुझाइत अछि।

‘पहिल स्वीकार’ लोकगीतमे स्वीकृति दण्डक अन्त नहि, दरबाजाक पहिल कुंडी मात्र अछि। एहि पंक्तिक आलोचनात्मक महत्त्व बड़ अछि: कृति आपराधिक उत्तरदायित्वकेँ भावनात्मक

प्रायश्चित्तमे समेटबाक जोखिमसँ किछु दूरी बनबैत अछि। अगिला अध्याय ७५क ‘बिना नेटवर्क’क आधार एहि क्षण तैयार होइत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ७०–७४

## पोखरिसँ मंच धरि : गवाही बनाम अनुभव-बजार

७०मे पनिडुब्बी पानि सँ मेटल नामक गवाहीक अलौकिक रूप आनैत छली; ७१मे आयोजनकर्ता भूत-कबड्डी कैँ टिकटवाला ‘अनुभव’ बनबए चाहैत अछि। एहि दू अध्यायक विरोध असाधारण बनाम साधारण नहि, समुदाय-नियन्त्रित अर्थ बनाम बजार-नियन्त्रित प्रदर्शन अछि। पोखरिक कछारपर मीरा पहिने निजताक नियम बनबैत छली, जखनकि कार्यक्रमक आयोजक मृतकक ‘वातावरण’ लेल परिवारसँ अधिकार नहि माँगैत अछि। बच्चा सभक प्रत्यक्ष-जाँच आ कलाकारक अनायास गवाही एहि अन्तरकैँ दृश्य बनबैत अछि।

फेर ७२क हँसी प्रदर्शनक बनावट पर प्रतिवाद अछि। रोदनक सार्वजनिक व्यापारक प्रतिकूल हँसी जीवित जड़िक उत्तर मानल जाइत अछि। अर्थक तीन चरण—गवाही, नकल, प्रतिहँसी—कथा-क्रमकैँ स्वतंत्र आ संगत रूप दैत अछि।

## सामूहिक सुननाइसँ अपराधीक भीतर धरि

७०–७२क प्रधान स्थान पोखरि, मंच आ ठूँठ अछि; ७३मे दृश्य बटुकनाथक स्वप्नक भीतर पहुँचैत अछि, ७४मे चन्द्रपालक महानगरीय कोठरी आ अन्ततः गामक नाम-पहरा धरि घुरैत अछि। कथास्थानक ई आवर्तने सामाजिक न्यायकैँ मात्र सार्वजनिक नारा बनलासँ बचबैत अछि। जे संस्था, न्यास, फोन, अदालत आ दानपात्रक माध्यमसँ शक्ति चलबैत अछि, ओकरो भीतर आत्मप्रतिप्रश्न उठि सकैत अछि।

तथापि बटुकनाथक स्वप्न आ चन्द्रपालक भयकैँ समान सुधरबाक घोषणा नहि मानब चाही। एकमे न्यायशास्त्रक भाषा भीतरक दरबार बनैत अछि, दोसरमे डिजिटल अङ्क जीवित नाममे बदलैत अछि। दूनू काज अधूरा, भविष्योन्मुख आ परीक्षणयोग्य रहैत अछि।

## प्रमाण-चेतना : नव्य न्याय, लोककथा आ विधान

पानिक बुलबुला, मेटल अक्षर, भूतक झलक, हँसैत ठूँठ, बदलैत मसौदा आ पातक सन्देश—ई सभ मूल कादम्बरीक जादुई आख्यानक अवयव छथि। नव्य न्यायक ‘प्रत्यक्ष’, ‘अनुमान’ आ ‘शब्द’क प्रयोग पीड़ाक प्रश्न पूछबाक उपकरण बनैत अछि, मुदा अलौकिक घटनाकेँ दस्तावेजीय तथ्य बना देबाक अनुमति नहि दैत। ७३क स्वप्न-दरबारमे ‘प्रमाण’ प्रतीकात्मक अन्तःकरणक साक्षात्कार अछि; ७४मे आत्मस्वीकार कथापात्रक वाणी अछि, विधिक दोषसिद्धि नहि।

एहि भेदक आग्रह रचनाक महत्त्व कम नहि करैत। उलटे समकालीन साहित्यिक पुनर्पाठमे ककरो स्वर सुनबाक नैतिक कर्तव्य आ ओकर कथनक सत्यापनक बौद्धिक कर्तव्य एक साथ रहि सकैत अछि, एकर व्याख्या सम्भव बनैत अछि।

## वस्तु-बिम्ब आ लोकधुनिक क्रमिक बदलाव

७०क पोखरिक बुलबुला आ भीजल पात, ७१क मुखौटा आ कृत्रिम धुँआ, ७२क गोल पाथर आ कोंपल, ७३क अलग लोटा आ स्वप्न-अदालत, ७४क अएना आ असफल सन्देश—ई वस्तुसभ सामाजिक स्मृतिक अलग दुविधा देखबैत अछि। पानि नामक अविरलता, मुखौटा प्रतिनिधित्वक चोरी, ठूँठ जीवित प्रतिरोध, लोटा जातिगत अनुशासनक आरम्भ आ अएना आत्मनिरीक्षणक टूटल व्यवस्था बनैत अछि। गीतसभमे पोखरि, लोक-व्यंग्य, हरियरनी, स्वप्न आ स्वीकारक लय बदलैत अछि।

एक सम्भावित शिल्पगत सीमा अनेक अध्यायक नैतिक उपसंहारक अत्यधिक स्पष्टता अछि। बालकक प्रश्न, भूतक संकेत आ लोकगीत एकहि दिशा दर्शबैत रहला पर कथाकारक अन्तरविरोधक बहुवचन किछु दबि जाइत अछि। ताहूसँ ई पाँच अध्याय कथाक स्वरक्रममे विशेष व्यवस्थित मोड़ छथि।

## अगिला चक्रक पाठगत प्रश्न

अध्याय ७४क अन्तिम सन्देश विफल भेलाक बाद अध्याय ७५मे राघवक ‘बिना नेटवर्क’क अनुभव आबए वाला अछि। एहि सन्धि पर पाठककेँ पूछबाक चाही: चन्द्रपालक स्वीकारक बाद ओकर ठगी-जालमे वास्तविक परिवर्तन भेल कि नहि? बटुकनाथक मसौदाक स्वप्न-परिवर्तन व्यवहारमे कोना उतरैत अछि? अनाम नामक पहरा सम्बन्धी समुदाय अपन लिखित, मौखिक आ पारिवारिक स्रोत केना जाँचैत अछि? नकली प्रदर्शनमे रोजगार चाहनिहार कलाकारक अधिकार केना सुरक्षित होएत?

ई प्रश्न रचनाक कथित पूर्ण नैतिक समाधानक बदला ओकर आगामी शिल्पक कसौटी बनैत अछि। पाँच अध्यायक समेकित उपलब्धि संकटकेँ पोखरिसँ अभिनेता, अभिनेता सँ गाछि, गाछि सँ वकील आ वकील सँ डिजिटल व्यापारीक भीतर पहुँचाएब अछि।

# अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

## जालक चारि पट्टी आ पहुँचक शून्यता

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक फोनमे सम्पर्कक सभ चिह्न देखाइत रहितो ओकर सन्देश ककरो लग नहि पहुँचैत। ई स्थितिक महत्त्व तकनीकी सेवा-बाधासँ बहुत आगाँ अछि। राघवक शक्ति आधा सत्य, अप्रत्यक्ष आदेश, मिटाएल संदेश आ प्रतिशतक संकेतसँ बनल छल। आब ओ संकेत लक्ष्य धरि नहि पहुँचैत अछि। बाहरी संचार-जाल अक्षुण्ण देखाइत अछि, मुदा सामाजिक असर समाप्त भऽ रहल अछि। कथाकार उपकरणक सफल अवस्था आ संवादक विफल अवस्थाक विरोध रचैत अछि।

ओ क्रमशः बटुकनाथकेँ न्यास रोकबाक, चन्द्रपालकेँ स्वीकार दबएबाक, ब्रूमकेँ जुलूसक संकट बतएबाक आ लाउकेँ नाम पसारबाक संकेत पठबैत अछि। एहि क्रमसँ बुझाइत अछि जे राघवक शक्ति स्वतंत्र नहि, विभिन्न प्रकारक प्रतिष्ठा, धन आ भयक मध्यस्थतापर आधारित अछि। ओकर प्रत्येक असफल संदेश जालक एक नब सिरा उघाड़ैत अछि। मुदा उपन्यासक नैतिक-जादुई अवरोधकेँ वास्तविक दूरसंचारक स्थापित घटना नहि मानब चाही।

## बन्द स्क्रीनपर पात : मेटायल नामक प्रत्यावर्तन

बन्द फोनक कारी सतहमे चन्ना गाछीक ठूँठ आ नामबला पात देखाएब अध्यायक मुख्य दृश्य अछि। उज्ज्वल, सरयू, मुन्ना, मजदूर आ सूचीसँ मेटायल स्त्रीक नाम राघवक निजी यन्त्रमे आबि ठाढ़ होइत अछि। जे यन्त्र आन लोकक जीवन आँकड़ाक रूपमे समेटैत छल, वैह ओकर हातमे जड़िक खरखर स्पर्श आनैत अछि। डिजिटल चिक्कन सतहपर गाछक छाल अनुभव करब तकनीक आ प्रकृति बीचक साधारण तुलना नहि; ओ अपराधक अमूर्त हिसाबकेँ देहक अनुभवमे बदलैत अछि।

पुरान कागजी नोटबुकमे कूटनाम, दान, मध्यस्थता आ प्रतिशत अछि। ‘प्रतिशत’क ‘प्रतिश्रुत’ बनि जेबाक चमत्कारी बदलाव लाभक भाषा सँ उत्तरदायित्वक भाषामे

अर्थपरिवर्तन अछि। ई शिल्पगत रूपान्तरण प्रभावी अछि, मुदा अंकक बदलल देखब स्वयं अपराधक वित्तीय प्रमाण नहि।

## बच्चाक ‘उपस्थित’ आ खाली संदेशक प्रतिवाद

गाममे बच्चा सभ कबड्डीक साँसक लयमे ‘उपस्थित’ बजैत अछि। शहरमे राघवक फोन अज्ञात प्रेषकसँ खाली स्थानबला सन्देश देखबैत अछि। ई समांतर दृश्य मनोवैज्ञानिक आ प्रतीकात्मक कथास्तर जोड़ैत अछि। खाली सन्देशकेँ राघव अपन पुरान बचावक वाक्यसँ भरए चाहैत अछि—ओ केवल सन्देशवाहक छल, ओकरे हाथ नहि लगल, ओकरा केवल शुल्क भेटल। प्रत्येक वाक्य खाली स्थानमे टूटि जाइत अछि।

एहि दृश्यमे मौन एक प्रकारक प्रतिप्रश्न बनैत अछि: आदेश दैत रहल व्यक्ति स्वयं चिन्हारि देबाक प्रश्न सँ जूझैत अछि। कथाकार निर्दोष तकनीकी मध्यस्थ आ सक्रिय अपराध-सहयोगीक नैतिक भिन्नता पर विचार करबैत अछि। वास्तविक दायित्वक निर्धारण लेल ओकर काज, ज्ञान आ लाभक स्वतंत्र साक्ष्य चाही; आत्मग्लानि एकर विकल्प नहि।

## राघवक परिवार आ कथानिरन्तरताक शेष प्रश्न

राघवक चरित्र पहिनुक अध्यायसभमे पत्नी, पुत्र आ बेटी सम्बन्धी अलग-अलग प्रसंगसँ उभरल छल। एहि अध्यायमे मुख्य ध्यान ओकर निजी संचार-व्यवस्था आ मानसिक भय पर अछि। तेँ परिवारक पहिनुक विरोधाभास एतय हल भेल मानब नहि चाही। राघवक एकान्त कोठरीक विवरणक अर्थ चरित्रक अकेलापन अछि, वैवाहिक घटनाकालक अन्तिम प्रमाण नहि।

‘बिना नेटवर्क’ शीर्षक उपन्यासक समूची स्मृति-राजनीतिकेँ नब दार्शनिक प्रश्न दैत अछि—जालमे रहब आ जिम्मेदार सम्बन्धमे रहब दू अलग बात। तथापि नैतिक रूपेँ बाधित सन्देशसभ किएक केवल चुनेल पात्रक लग अटकैत अछि, एहि तर्कक स्पष्टता आगे बढ़ि कऽ चाही।

# अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

## बाइसहम तलाक दृष्टि आ श्रमक अदृश्य संसार

लाउ किन-हंगक समुद्र दिस खुलैत काँचक भवन, जहाजक पाँति आ व्यापारिक तालिका उपन्यासक वैश्विक पूँजीक दृश्य रचैत अछि। लाउ लेल देश मार्ग, लोक संख्या आ सामाजिक संकट निवेशक जोखिम छल। गढ़ नारिकेलक नाम-पाथर तकर नक्शामे लाभकारी बिन्दु नहि, मिटाएब कठिन नैतिक उपस्थिति बनैत अछि। सलाहकारसभ प्रतिरोधकेँ समयसँ शान्त होयत अथवा दानसँ नियन्त्रित कएल जा सकैत मानैत छथि। एहि भिन्न आवाजमे संस्था स्थानीय पीड़ाकेँ कोना गणना करैत अछि, तकर व्यंग्य अछि।

लेखक लाउक चेतना केवल बाहरी लालचधरि सीमित नहि रखैत। ओकर स्वप्नमे गोहि सभ गोपनीय करार, ठेका आ जोखिमक कागच चिबबैत अछि; नामक प्रश्न ओकर व्यक्तित्वमे प्रवेश करैत अछि। स्वप्नक दृश्य बड़का पूँजीक इतिहासक वैधानिक तथ्य नहि, ओकरा अनुभव करबाक साहित्यिक विधान अछि।

## सार्वजनिक यात्राक कारण आ निजी कारणक अन्तर

औपचारिक कारण ‘संस्कृति आ पुनर्वास निवेश’क समीक्षा अछि; निकटवर्ती कारण राघवक अटकल संकेत, चन्द्रपालक स्वीकार, बटुकनाथक संकट आ ब्रूमक दानक विफलता। मुदा अन्तःकरणक कारण ओ स्वयं स्पष्ट रूपसँ स्वीकार नहि करैत। ई त्रिस्तरीय उद्देश्य रचनाकेँ एकरेखीय दुष्ट पात्रक यात्रासँ बचबैत अछि। ‘जोखिम आ अवसर’ लिखल फोल्डरमे स्थानीय जाति, परिवार, पुल, धर्म, राजनीतिक पहुँच आ गंगेशक दार्शनिक छवि सेहो संभावित प्रबन्धनीय संसाधन बनैत अछि।

गंगेशकेँ ‘दार्शनिक प्रतीक’क रूपमे रणनीतिक वर्गीकरण करब ज्ञानक औजारकरणक उदाहरण अछि। गंगेशक जीवन-लोकश्रुति आ ऐतिहासिक नव्य न्यायक वास्तविक ग्रन्थीय परम्परा एक नहि; कादम्बरी एहि भिन्नताक साहित्यिक उपयोग करैत अछि।

## विमानक कबड्डी आ लाउक बाल्यस्मृति

बादलमे जहाज स्थिर रहितो लाउकेँ कबड्डीक लय सुनाइत अछि। श्रम, पूँजी आ अपराध-जालक ऊपर उठि जाएब द्वारा अतीतक दोष छोट कऽ देबाक भ्रम पर ई आक्रमण अछि। हवाई यात्रा सामाजिक दूरीक भौतिक बिम्ब बनैत अछि। लाउ अपना बचपनक ऋणी दुकानदार पिताक झुकल पीठ मोन करैत अछि। धनिक होएबाक ओकर संकल्प सामाजिक अपमानसँ जन्मल छल, मुदा ओ कथित मुक्ति दोसराक नाम मेटएबाक व्यवस्था बनि गेल।

एहि मनोवैज्ञानिक पाछाँक कथा चरित्रमे गहराइ आनैत अछि। तथापि गरीब बचपन अपराधक औचित्य नहि, ओकर एक सम्भावित प्रेरणा मात्र अछि। पाठ ओकरा संवेदना दैत अछि, स्वचालित क्षमा नहि।

## अखबारक नाम-उत्सव आ स्मृतिक दोसर जीवन

विमानमे मैथिली अखबार पढ़ैत वृद्ध यात्री लाउकेँ गढ़ नारिकेलक नाम-उत्सवक चित्र देखबैत छथि। लाउ भाषा नहि पढ़ि सकैत, मुदा नाम-पाठ करैत बच्चासभक दृश्य बुझैत अछि। सर्वर बन्द होएब आ कागच जरि जेबाक प्रश्नक बदला वृद्ध सामूहिक कण्ठमे नामक दोसर जीवनक सम्भावना रखैत छथि। ई छोट संवाद स्थानीय भाषाक अनुवाद-असमर्थता आ सामूहिक स्मृतिक प्रसारण दुनू चिन्हबैत अछि।

एहि प्रसंगक कलात्मक उपलब्धि ई जे जातीय-भौगोलिक दूरी समाप्त नहि होइत, मुदा दृश्य आ सुननाइक माध्यमसँ प्रश्नक आदान-प्रदान शुरू होइत अछि। यात्राक अन्तिम अर्थ आगमनक स्थान नहि, गणनापर आधारित दृष्टिसँ नामपर आधारित दृष्टि दिस अनिश्चित संक्रमण अछि।

# अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

## अन्तरराष्ट्रीय प्रवेशद्वार आ गोहिक प्रतीक

लाउक हवाई अड्डापर उतरब उच्च तकनीक, पासपोर्ट, सुरक्षा-जाँच, काँचक गलियारा आ सार्वजनिक विज्ञापनक बीच घटैत अछि। एहि स्थानकेँ कथाकार सीमापार व्यापारक सामान्य प्रवेशद्वार मात्र नहि, वैश्विक मार्गक नैतिक परीक्षा बनबैत अछि। लाउ जे देशसभकेँ लागत, श्रम-बजार आ लाभक आँकड़ासँ चिन्हैत छल, ओकर देह भारतक माटि, पसेना, नमी आ भीजल कपड़ाक गन्धक सामना करैत अछि। ई इन्द्रियगत टकराव ओकर अमूर्त व्यवसायिक दृष्टिक विरुद्ध कहानीक यथार्थ उपस्थित करैत अछि।

काँचमे गोहिक आँखिक झलक उपन्यासक अद्भुत बिम्ब अछि, सीमा-जाँचक वास्तविक दृश्य नहि। गोहि एतय बाहरी पशु सँ अधिक ओहि इतिहासक आवर्तन अछि जकरा लाउक योजनासभ केवल रिपोर्टमे समेटने छल।

## सुरक्षा, चिन्हारि आ अनाम ग्रहक विज्ञापन

हवाई अड्डाक सुरक्षित अतिथि-क्षेत्र लाउकेँ सामान्य लोकक अभाव-संसारसँ पृथक राखैत अछि। मुदा काँचक देबाल आ यात्री-सरणीक बीच ओकरा बारम्बार नामक प्रश्न भेटैत अछि। यात्रा-पथ आ व्यवसायिक पोस्टरक चमकक भीतर भविष्यक ‘अनाम ग्रह’ सन निवेश-कल्पना मानव स्मृतिसँ पलायनक दुस्साध्य लालसा देखबैत अछि। ग्रह बदललासँ लोकक नामपर कएल अन्याय धुलि नहि जाइत, ई दृश्यात्मक तर्क लेखक रखैत अछि।

एहि प्रसंगमे विज्ञान-कथा आ नैतिक रूपकक छोर भेटैत अछि। अनाम ग्रहक परियोजना उपन्यासक कथा-संसारक निवेश-प्रसंग अछि; वास्तविक अवकाश-विज्ञान वा वैधानिक ठगीक स्वतंत्र अभिलेख नहि। तथ्य आ कल्पनाक सीमारेखा रखलासँ उपन्यासक समकालीन व्यंग्य अधिक स्पष्ट होइत अछि।

## बाहरी निवेशकक देहमे उत्पन्न भीतरी दूरी

उतरबाक बाद शीतल वातानुकूलित हवासँ बाहरक माटिक गन्ध धरि लाउक यात्राक छोट परिवर्तन ओकर आत्मबोधक प्रारम्भिक अवस्था अछि। ओ गन्धकेँ पहिने असुविधा बुझैत अछि, फेर ओकर भीतर ‘नाम’क अनुभूति चिन्हैत अछि। इन्द्रियक ई पुनर्शिक्षा अध्याय ७६क अखबार आ जहाजक कबड्डी-स्वरसँ जुड़ैत अछि। कथाकार स्थान-परिवर्तनक माध्यमसँ दृष्टि-परिवर्तनक संभावना रचैत अछि।

तथापि ई परिवर्तन एखन केवल अनुभव अछि। लाउक निर्णय, धनक प्रवाह आ अपन कम्पनीपर नियंत्रणक रूपान्तरण एखन सिद्ध नहि। आलोचनामे हर काव्यात्मक कम्पन केँ नैतिक सुधारक पूर्ण परिणाम मानि लेब पात्रक जटिलता घटाएत।

## शीशाक चमक आ देखबाक सत्ता

अध्याय ६६–६७मे शोध-दलक लेंस आ मीराक दृष्टि-अधिकारकेँ जे प्रश्न बनाओल गेल छल, हवाई अड्डाक शीशा ओकर नब संस्करण अछि। लाउक पूँजीक आँखिमे देश एक प्रदर्शित वस्तु छल; आब परावर्तित गोहिक आँखि ओकर देखबाक अधिकारकेँ प्रश्न करैत अछि। ई उलटल दृष्टि उपन्यासक लम्बा वस्तु-प्रतीक-क्रमक सुसंगत कड़ी अछि।

अध्याय किछु दृश्यसभमे उपदेशात्मक संकेतक भरोसा बेसी करैत अछि, मुदा वातावरणक विस्तृत वर्णन—विज्ञापनक उजास, पासपोर्टक बेचैनी, गन्ध आ काँच—चरित्रक अस्थिर मनस्थितिकेँ अनुभवगम्य बनबैत अछि।

# अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

## वैधानिक बहसक बदला नामक सार्वजनिक सभा

लाउक सहायक औपचारिक सुरक्षित भेट चाहैत अछि, मुदा सत्यव्रत नाम-पाठक ठाम आबबाक आग्रह करैत छथि। एहि स्थल-निर्धारणमे सत्ता-संबंध बदलि जाइत अछि। काँचक बोर्डरूमक बदला चन्ना गाछीक माटि, गोपनीय करारक बदला पाथरक नाम, अनुभवी प्रतिनिधिक बदला नाम पढ़ैत बच्चा सभ केन्द्रमे अछि। सत्यव्रत पहिने आरोपक सूची नहि खोलैत छथि; ओ लाउकेँ सुनबाक समय दैत छथि। संवादक पहिल भाग मौन होएब लेखकक सचेत शिल्प अछि।

सत्यव्रतक कथन अनुसार आरोप अदालतक काज अछि, एतय नाम पढ़ल जाइत अछि। एहि विभाजनमे लेखक पीड़ितक स्मृतिसभाकेँ विधिक दोषसिद्धिक बदला सार्वजनिक नैतिक उपस्थितिक स्थान दैत अछि। यद्यपि पात्र पीड़ाकेँ ‘चारिम’ स्वररूपमे बुझबैत छथि, एकरा नव्य न्यायमे स्वतन्त्र प्रमाणक स्थापित तकनीकी कोटि मानल नहि जा सकैत।

## लाभक तालिका आ नामक भार

लाउ लागत, जोखिम, मुकदमा आ देश सभ गनि सकैत अछि, मुदा एक-एक नामक संग घर, देह, शोक आ संतानक सम्बन्ध जुड़ल बुझिते ओकर गणनाक सहजता टूटैत अछि। अनन्या ओकरा अपन नाम पाथरपर लिखबाक कहैत छली। विदेशी लिपिमे नाम लिखब आ कातमे देवनागरी उच्चारण जोड़ब दृश्यकेँ भाषा-राजनीतिक अर्थ दैत अछि—अपराध-प्रश्नक सोझाँ उपस्थित होएब लेल एक भाषा छोड़ब नहि, स्वयंकेँ सार्वजनिक रूपसँ पहिचानब जरूरी अछि।

पाथर भारी बुझाएब भौतिक तथ्यक प्रमाण नहि, नैतिक भारक अलौकिक चित्र अछि। सत्यव्रतक घोषणा जे ई क्षमा नहि, केवल उपस्थिति अछि, अध्यायक विशेष सावधानी

अछि। कथाकार चरित्रकेँ सुननाइमे शामिल करैत अछि, मुदा पीड़ितक स्थानपर क्षमा देबाक अधिकार नहि लैत।

## अनुवादक नियंत्रण, सहायकक नोटबुक आ जाँचक अधिकार

लाउक सहायक गंगेशक प्रश्न नोट करए चाहैत अछि, मुदा सत्यव्रत रोकी कहैत छथि जे ई उद्धरणक सामग्री नहि, प्रश्न अछि। एहि एक रोकमे अध्याय ६६क बाहरी शोध-दलसँ उठल ज्ञान-संग्रहक अधिकार फेर उभरैत अछि। नोट बनाओल स्वतः गलत नहि; प्रश्नकेँ उसक नैतिक परिस्थिति सँ काटि प्रतिष्ठा वा जोखिम-नियंत्रण लेल उपयोग करब संकट अछि।

लाउक दान-प्रतिज्ञा अस्थायी रोकक उल्लेख ओकर सुननाइक किछु व्यवहारगत असर सुझबैत अछि। मुदा पुरान व्यवसाय, पुरान पीड़ित आ धनक उत्तरदायित्वपर विस्तृत परिणाम एखन नहि देखाओल गेल। समर्पणक मुद्रा आ वास्तविक आर्थिक परिवर्तन अलग स्तर छथि।

## विद्यालयक कोठली आ स्वप्नक अनाम ग्रह

अन्तमे लाउकेँ गामक बाहरक पुरान विद्यालयक कोठलीमे ठहराओल जाइत अछि। खद्दरक बिछौना, अटकैत पंखा, बेंगक स्वर आ झड़ैत चूनाक स्पर्श ओकर परिचित रेशमी संसारसँ तीखा अन्तर रचैत अछि। एहि रातिक स्वप्नमे ‘अनाम ग्रह’क चमकदार गुंबदबीच चन्ना गाछी उगि उठैत अछि। जकरा ओ शाश्वत नब बजार मानैत छल, ओतहुँ नामक प्रश्न ओकरा छोड़ैत नहि।

स्वप्नक अद्भुत दृश्य लाउक आत्मसंघर्षकेँ गहिर करैत अछि, मुदा उपन्यासक आगामी घटनामे हुनकर काजक निरन्तरता देखनाइ अत्यावश्यक रहत। एहि अध्यायक सर्वाधिक स्पष्ट उपलब्धि आरोपक शोरक बदला सुनबाक नैतिक अनुशासन रचब अछि।

# अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र

## करुणाक कागच आ शर्तक सूक्ष्म अक्षर

ब्रूमक मोट दान-पत्र सुनहर मोहर, सुघड़ सजावट आ पुनर्वासक भाषा संग गाम पहुँचैत अछि। गामक गरीबी आ अधूरा सड़कक यथार्थक कारण किछु लोक सहयोग लेबाक पक्षमे छथि। एहि विरोधी मतकेँ स्थान देलासँ अध्याय दानक सामान्य अस्वीकार नहि, शर्तक जाँचक विवेचन बनैत अछि। मीरा पूछैत छली जे पहिल पंक्तिमे अधिकार देल गेलाक बाद पछिलका गरिमा कोना सुरक्षित रहत। आरुणि पुरान पुल-ठेकाक उत्तरदायित्व अलग राखि दान स्वीकार करबाक तर्कपर प्रश्न उठबैत अछि।

दानक सूक्ष्म अक्षरमे साझा सञ्चार-सामग्रीक प्राथमिक उपयोगाधिकारक बात गोप कुमार पढ़ैत छथि। ई कादम्बरीक भीतरक ठोस शर्त अछि, जे नाम, छवि, आवाज आ शोकक प्रतिनिधित्वपर नियन्त्रणक आशंका उठबैत अछि। शर्त-पाठन स्वयं शोधनीय आलोचनाक विधि बनैत अछि।

## पानिक बून्द आ पहिनुक ठेकाक उद्भासन

अचानक खसल बून्द दान-पत्रक सुनहर मोहर भिजबैत अछि, आ भीतर सँ पुरान पुल-ठेकाक श्रमिक सुरक्षा, उपचार आ क्षतिपूर्तिक अनुच्छेद देखाएब शुरू होइत अछि। ई दृश्य कथा-जगतक अद्भुत उपाय अछि; सामान्य कागचपरीक्षणमे लुकाएल दस्तावेज एना उभरै, एकर वास्तविकता स्वतः मानल नहि जा सकैत। मुदा साहित्यिक रूपमे दानक उज्जर परतनीचाँ दबल श्रम-इतिहास उघाड़बाक बिम्ब प्रभावी अछि।

बा कागचक गन्धसँ पवित्र दानक बदला बन्द फाइलक सीलन अनुभव करैत छली। लेखक दृश्य आ गन्धक द्वैध सहारे सार्वजनिक छविक विपक्षमे अनुभवक स्मृति ठाढ़ करैत अछि। गोपक विधिक शर्त-पाठ आ बाक नैतिक अनुभूति भिन्न प्रकारक गवाही छथि; दुनूकेँ एक श्रेणीक प्रमाण मानब गलत हएत।

## अनुमति लेल छायाचित्र आ न्यायपूर्ण अभिलेखन

दान-पत्रक अक्षर बदलल देखैत देविका फोटो लेबाक इच्छासँ यन्त्र उठबैत छली। मीरा हाथ रोकि पहिने परिवारक सहमति माँगैत छली। उपस्थित परिवार सभ स्वीकृति देलाक बाद चित्र लेल जाइत अछि। एहि विशेष दृश्यसँ अध्याय ६७क ‘दृष्टि-पहरा’क नियम व्यवहारमे उतरैत अछि। कैमरा स्वयं शोषणक उपकरण नहि; अनुमति, उद्देश्य, अभिगम आ मर्यादाक प्रश्न एकर नैतिकता निर्धारित करैत अछि।

तथापि दान-पत्रक छवि कैद करब अलौकिक पुनर्पाठक साहित्यिक प्रमाण अछि; अदालतमे उपयोग लेल दस्तावेजक मूल, समय, संरक्षक शृंखला आ सत्यापन अलग चाही। कथा एहि भेदपर विचार करबाक मौका दैत अछि।

## बटुकनाथक पुत्रक प्रश्न आ पीढ़ीगत उत्तराधिकार

दान-पत्रक प्रसंग बटुकनाथक घरमे पहुँचैत अछि। ओकर बेटा न्यासक कागच पढ़ि पूछैत अछि जे ई न्याय बचाबए लेल अछि कि पेशा। ई प्रश्न अध्याय ७३क स्वप्न-दरबारक अन्तःकरणक आवाजकेँ पारिवारिक वास्तविक संवादमे परिणत करैत अछि। परिवार केबल सामाजिक प्रतिष्ठाक उत्तराधिकारी नहि; पुरान व्यवसायिक नैतिकताक समीक्षक सेहो भऽ सकैत अछि।

खाली लिफाफा ठूँठ लग रखब, ओकरा पर करुणासँ अधिकार माँगबाकेँ परीक्षणाधीन कहब आ भीजल दागक बचि रहब—ई वस्तुसभ धनक अभावमे सेहो समुदाय अपन स्मृतिपर स्वामित्व न छोड़बाक विचार बनबैत अछि। दानक पूर्ण मूल्यांकन लेल वास्तविक सहायता, वैकल्पिक स्रोत आ सहमतिक प्रक्रिया देखबाक प्रश्न बाकी अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ७५–७९

## सन्देशहीन नेटवर्कसँ नामक सार्वजनिक उपस्थिति

अध्याय ७५मे राघवक सम्पर्क-चिह्नसहित फोन सन्देश नहि पहुँचा पबैत अछि। ७६मे लाउ लेल चन्ना गाछीक नाम-पाथर अन्तरराष्ट्रीय नीतिपत्रक ‘जोखिम’ सँ अधिक ठोस उपस्थिति बनैत अछि। ७७मे हवाई अड्डाक प्रतिबिम्बक गोहि लाउक दृष्टिक प्रश्न उठबैत अछि। ७८मे सार्वजनिक नाम-पाठ ओकरा वास्तविक सुननाइक स्थितिमे रखैत अछि; ७९मे ब्रूमक दानक शर्ते नामक प्रतिनिधित्वपर संस्था-द्वारा नियन्त्रणक नब प्रयास देखाओल जाइत अछि। एहि क्रममे व्यापारिक जालक अमूर्त बिन्दु जीवनक नाम, देह, माटि आ उच्चारणसँ टकराइत अछि।

पाँचू अध्याय एकहि नारा मात्र नहि दोहरबैत: पहिले संकेत विफल, फेर निवेशक चलैत अछि, पाछाँ स्थल देहपर प्रभाव करैत अछि, तकर बाद सुननाइ होइत अछि, आ अन्ततः आर्थिक अधिकारक वास्तविक प्रश्न फेर आबैत अछि।

## अद्भुत दृश्य आ प्रत्यक्ष सामाजिक प्रक्रिया

राघवक बन्द स्क्रीनपर पात, लाउक जहाजमे कबड्डीक स्वर, हवाई अड्डाक काँचमे गोहि, पाथरक भारी होएब आ दान-पत्रक भीजल परतनीचाँ पुरान ठेका—ई सभ कादम्बरीक अलौकिक दृश्य-विधान छथि। ओहि संग अपन नाम लेखब, अनुवादक सहायतासँ संवाद, दानक शर्त पढ़ब आ फोटो लेल अनुमति माँगब ठोस सामाजिक प्रक्रियासभ छथि। आलोचना जँ एहि दुनूकेँ एकहि प्रमाण-स्तरमे मिला देत तँ कथा-शिल्पक सीमारेखा मिटि जाएत।

नव्य न्यायक शब्द स्मृति-प्रश्नक कठोरता बढ़बैत अछि, मुदा दान-पत्रक अद्भुत उद्भासनक वास्तविक कानूनी वैधता तकर आधारपर सिद्ध नहि होइत। साहित्यिक न्याय आ वैधानिक न्यायक सम्बन्ध राखि भेद सुरक्षित रखनाइ एही चक्रक प्रमुख पद्धतिगत आवश्यकता अछि।

## राघव, लाउ, ब्रूम आ बटुकनाथक शक्ति-संबंध

राघव गुप्त संकेतक माध्यम अछि; लाउ निवेश आ मार्गक केन्द्र; ब्रूम शर्तवला दानक सार्वजनिक चेहरा; बटुकनाथ कानूनी न्यासक भाषा दैत अछि। चन्द्रपालक पहिनुक स्वीकारक असर एहि सभकेँ अलग-अलग प्रकारसँ हिलबैत अछि। पात्रसभक परस्पर सम्बन्धक दृश्य-कसावट उपन्यासक दीर्घ विस्तारक शक्ति अछि, मुदा गोपक अनुमान अथवा कोनो पात्रक मनोवैज्ञानिक आरोप स्वतन्त्र स्वामित्व-अभिलेख अथवा वास्तविक अपराधक निश्चित प्रमाण नहि।

अध्याय ७९मे बटुकनाथक पुत्रक हस्तक्षेप संस्थागत जालक भीतर पीढ़ीक प्रतिवादक नब संभावना प्रस्तुत करैत अछि। माता-पिता आ संतानक मूल्य-भेद अगिला ८०–८४ खण्डमे अधिक परीक्षण माँगत।

## भाषा : प्रतिशत, जोखिम, उद्धरण आ उपस्थिति

‘प्रतिशत’ लाभ-हिसाब अछि, ‘जोखिम’ दूरस्थ प्रबन्धकीय वर्गीकरण, ‘उद्धरण’ शोधक सामग्री, ‘उपस्थित’ एक नामक नैतिक स्वीकृति, आ ‘दान’ अधिकारसहित शर्तक सम्भावित आवरण। पाँच अध्यायक शब्द-संरचना एही परिवर्तनक वस्तुपरक मानचित्र बनैत अछि। लाउक अपन लिपिमे नाम लिखब आ अनन्याक देवनागरी उच्चारण जोड़ब बहुभाषिक संवादक कलात्मक अवसर अछि।

कथाकारक कतेको उपसंहार नैतिक अर्थ बहुत स्पष्ट कहल दैत अछि। एहि स्पष्टताक कारण प्रतिपक्षी तर्कक वैकल्पिक विश्वसनीयता किछु दबैत अछि; मुदा शर्त-पाठ आ नाम-पाठक समानान्तर दृश्य दीर्घ आख्यानमे एक महत्त्वपूर्ण विचार-क्रम रचैत अछि।

## समेकित निष्कर्ष आ अगिला बैचक जाँच

७५–७९क सामूहिक संदेश संस्थागत धन अथवा उपकरणकेँ स्वतः निषिद्ध मानब नहि अछि। प्रश्न ई जे ककर अनुमति, कोन प्रमाण, कोन आर्थिक उत्तरदायित्व आ कोन भाषा पर स्मृति बनत। लाउ द्वारा दान-प्रतिज्ञा रोकब, ब्रूमक प्रस्तावक नियन्त्रणकारी शर्त आ बटुकनाथक घरमे उठल न्याय-पेशा प्रश्न आगाँक घटनासँ पुनः मिलान चाहैत अछि।

विशेष ध्यान राघवक परिवारक पूर्ववर्ती कालक्रम, लाउक पुत्र/नातिन/मेइ-लताक अलग सम्बन्ध, बटुकनाथक सन्तानक पहचान, आ ब्रूमक पुरान पुल-सम्बन्धी कथनक स्रोतपर रहत। जतेक नव गवाही जोड़ल जाए, ओतेक संवेदनशीलतासँ आरोप आ सत्यापन अलग राखल जाए।

# अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

## बरामदाक भीतर कानूनक दोसर सुनवाई

बटुकनाथ हरिहरनक घरक ऊँच ओसारा, बार परिषदक सम्मान-पत्र आ विधि-पुस्तकसभक आलमारी बाहरी प्रतिष्ठाक संरचना अछि। ओहि संरचनामे संतान तारिणीक प्रवेश आत्मीय सम्बन्धकेँ आलोचनात्मक प्रश्नमे बदलैत अछि। तारिणी कानून पढ़ैत छली, मुदा पिताक पेशागत चतुराईकेँ न्याय नहि मानैत छली। ओकर प्रश्न केवल व्यक्तिगत दोषक आरोप नहि; प्रक्रिया, स्थगन, तकनीकी दोष आ पीड़ितक आवाज दबाएबाक काजमे कानूनक उपयोगक नैतिक परीक्षा अछि।

उपन्यास एतय संस्थागत कानूनकेँ अनिवार्य रूपसँ अन्याय नहि कहैत। ओ कानूनक दुरुपयोग करनिहार पात्रकेँ न्यायसम्बन्धी उत्तरदायित्वक प्रश्नसँ टकरबैत अछि। तारिणीक वचनमे रोष अछि, मुदा घृणा नहि। एहि अन्तरसँ संवाद भावनात्मक विद्रोहक बदला विवेकपूर्ण असहमतिक रूप लैत अछि।

## गंगेशक प्रश्न आ कुलक प्रतिष्ठाक संकट

तारिणी तत्त्वचिन्तामणिक प्रशंसात्मक भाषण-पुस्तिका उठाकऽ पूछैत छली जे विचारककेँ सम्मान देल गेल कि हुनकर प्रश्न बन्द कएल गेल। जाति, जीवन-लोकश्रुति आ ग्रन्थीय गौरवक बीच ई तनाव पूर्ववर्ती स्वप्न-दरबारक पुनर्विस्तार अछि। गंगेशक जन्म आ चर्मकारणीसँ विवाहक विवरण उपन्यासक कथाजगतमे लोकश्रुति रूपेँ प्रयुक्त अछि; एहि विवरणसँ ऐतिहासिक जीवनीक निश्चित निष्कर्ष निकालब अनुचित होएत। मुदा परम्परागत ज्ञानक प्रतिष्ठा आ सामाजिक जीवनक अपमानक बीच विरोध प्रश्न रूपमे यथावत रहैत अछि।

तारिणी समाजक अनुत्तरित प्रश्न पिताक घरक भीतर आनैत छली, जाहिसँ सार्वजनिक आलोचना आत्मीय उत्तराधिकारक परीक्षा बनैत अछि। एहि स्थल-परिवर्तनमे कथा अपना दीर्घ नैतिक संघर्षकेँ नव स्वर दैत अछि।

## पिता-पुत्रीक उत्तराधिकार आ लाभक अस्वीकार

स्वप्न-जकाँ घरक फर्श ठूँठ होइत अछि आ पुस्तकरूप पातसभ उनटि पीड़ितक नाम देखबैत अछि। तारिणीक बाल्यकालक खाली चप्पल न्यायासनक स्थान लैत अछि। ई अलौकिक विन्यास संतानक प्रश्नक नैतिक भार रचैत अछि। अपन बापसँ प्रेम करबाक अधिकार आ बाप-द्वारा कमाओल लाभक अपराध नहि ढोएबाक इच्छा—एहि दू अलग आकांक्षाक बीच तारिणी अपन स्थान स्पष्ट करैत छली।

ई प्रसंग भारतीय पारिवारिक उत्तराधिकारकेँ केवल धनक हस्तान्तरण नहि, स्मृति, काज आ दोषक अन्तरपीढ़ीगत सम्बन्धक रूपमे देखैत अछि। मुदा अपराधक उत्तरदायित्व प्रत्येक व्यक्तिक अपन काजक अनुसार निर्धारित होएत; संतान स्वतः दोषी वा स्वतः निर्दोष प्रमाणित नैतिक प्रतिनिधि नहि।

## ‘स्थगित’ काटि लोक-पहरा समक्ष : पाठगत विरोधाभासक जाँच

बटुकनाथ न्यासक मसौदामे ‘स्थगित’ लिखि काटैत अछि आ ‘प्रस्ताव लोक-पहरा समक्ष सुनल जाए’ लिखैत अछि। ई सूक्ष्म पाठ-संशोधन निर्णायक अछि: एकतर्फी नियन्त्रणक बदला सामुदायिक सुनवाई स्वीकारबाक प्रारम्भिक संकेत। मुदा कागचपर शब्द बदललासँ पूर्व पीड़ितक क्षति-पूर्ति नहि भेल; व्यवहारक निरन्तरता आगाँ जाँचबाक चाही।

एक महत्त्वपूर्ण पाठगत प्रश्न सेहो उठैत अछि। अध्याय ७९क अन्तमे बटुकनाथक कागच पढ़ैत ‘बेटा’ कहल गेल अछि, जखनकि अध्याय ८०मे संवादक प्रधान संतान कानून पढ़ैत

तारिणी बेटी अछि। ई अन्तर उपन्यासक समग्र पात्र-पञ्जी देखिकऽ स्पष्ट कएल जाए; बिना प्रमाण दुनूकेँ एकहि व्यक्ति अथवा अलग-अलग घटना कहि सुलझाएब अनुचित होएत।

# अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

## उज्जर कागच आ नामक स्थानपर प्रतिशत

चन्द्रपाल बत्रा उज्जर कागच पर अपन नाम लिखबाक प्रयास करैत अछि, मुदा कलम लाभ, कमीशन आ प्रतिशतक चिह्न उकेरैत अछि। ई दृश्य अध्याय ७४क ‘चन्दू’ कहि जन्मक नाम स्वीकारबाक कठिनाईक अधिक सघन रूप अछि। व्यापारिक पदनाम, निदेशकक उपाधि आ मध्यस्थताक लाभसँ बनल बहुरूपता ओकर एकल व्यक्तिगत चिन्हारि ढाँकि देलक अछि। कथाकार नाम लिखबाक साधारण काजकेँ आत्मपरिचयक दार्शनिक परीक्षा बनबैत अछि।

अद्भुत घटना कागचपर स्वयं प्रतिशत उतरब अछि। एहि प्रतीककेँ वास्तविक लेखन-यन्त्रक असाधारण घटना मानबाक बदला लाभक भाषाद्वारा व्यक्तिक आत्म-संज्ञान विस्थापित होएबक दृश्यरूप मानब उचित अछि।

## बाल्यस्मृति, मायक नामकरण आ उजासक भय

चन्द्रपाल अपन बचपनक तख्ती, पिताक व्यापार आ मायसँ भेटल नामक अर्थ स्मरण करैत अछि। ‘चन्द्र’क उजास जिम्मेदारीक सम्भावना अछि, जकरासँ दूर भागि ओ लाभक अन्हार चुनने छल। ई स्मृति शुद्ध नैतिक उपदेश नहि, चरित्रक आर्थिक चयनकेँ व्यक्तिगत जीवनक समयमे पुनःस्थापित करैत अछि।

मायक स्वर, मेरठक उपाधि, व्यवसायिक कागच आ स्क्रीनक संख्यात्मक भाषा अलग-अलग कालखंडमे पात्रक बनल आत्मछविक अंश छथि। ताहिसँ पाठककेँ बुझाइत अछि जे छलक ‘मध्यस्थ’ एक दिनमे नहि बनैत। मुदा विनम्र बाल्यस्मृति अपनेमे पश्चात्तापक विश्वसनीय प्रमाण नहि; वास्तविक निर्णय आ हानि-पूर्तिक प्रश्न शेष रहैत अछि।

## अनन्याक रजिस्टर आ डिजिटल प्रतिलिपिक जाँच

चन्द्रपालक कागचपर प्रतिशत उभरबाक समांतर गढ़ नारिकेलमे अनन्याक रजिस्टरक कोनामे एहनहि चिह्न देखाएब दू दूरस्थ स्थानक जादुई कथात्मक संयोजन अछि। देविका स्मारक-अनुप्रयोगक पुरान प्रतिलिपि जाँचैत छली। गामक मौखिक स्मृति आ डिजिटल संग्रहक बीच जे अन्तर अछि, ओ पुनः उभरैत अछि।

डिजिटल प्रविष्टि कथित अनुचित लाभक संकेत देबए सकैत अछि, मुदा एक प्रतिशतचिह्न, छविक रूपान्तरण वा लोकक मानसिक अनुभवसँ आर्थिक दोष सिद्ध नहि होइत। नव्य न्यायक प्रमाण-विवेक एहि बिन्दुपर दृश्य, अनुमान आ संग्रहीत अभिलेखक अलग परीक्षण माँगैत अछि।

## नायकक अधूरापन आ आत्मस्वीकृतिक दीर्घ यात्रा

शीर्षक ‘अधूरा नाम’ रचनाक कार्यशील नैतिक नियम अछि। केओ एक बेर रोएला वा जन्मक नाम कहला मात्र सँ अपन पुरान जीवन बदलबाक क्षमतामे पूर्ण नहि भऽ जाइत। चन्द्रपालक आधा लिखा नाम ओकरा अपराधक जालसँ मुक्त करैत नहि; उलटे ओकर अधूरा उत्तरदायित्व पाठककेँ देखबैत अछि।

अध्याय जे नैतिक दबाव रचैत अछि, ओकर बल निरन्तरतामे अछि: प्रतिशतक चिह्न पहिने दान आ कोडमे छल, आब व्यक्ति अपनहि नामक स्थानपर ओकरा देखैत अछि। शिल्पगत सीमा मात्र ई जे अक्षरक चमत्कार पुनरावृत्त भेलापर भविष्यक जटिल सामाजिक प्रक्रिया विस्थापित नहि होए।

# अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

## पौराणिक आख्यानक अन्तःकरणमे पुनर्स्थापना

गज-ग्राहक पुरान आख्यान एहि अध्यायमे बाहरी पशुक संघर्ष नहि रहैत। बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ आ ब्रूमक भिन्न-भिन्न मानसिक अवस्थासँ गजक रूप बनैत अछि; जाति, लोभ, प्रक्रिया, डेटा आ भय अनेक जबड़ावला ग्राहक रूप लेइत अछि। ई संरचना मिथककेँ आधुनिक आर्थिक आ सामाजिक संस्थाक आलोचनामे रूपान्तरित करैत अछि।

कथाकारक रचनात्मक उपलब्धि ई जे गोहि केँ केवल शिकार करएवला बाहरी जीव नहि राखैत; ओ मनुष्यक भीतरक लोभ, भय आ अज्ञानक गहन प्रतीक बनैत अछि। पुराणक पुनर्पाठ ऐतिहासिक पशु-घटना अथवा धार्मिक आख्यानक यथार्थताक दावा नहि, समकालीन नैतिक आख्यान अछि।

## नाम-उच्चारणसँ ग्राहक दाँत ढील पड़ब

गजक मुँहसँ पहिले एक, फेर अनेक दबाओल नाम निकलैत अछि। किनार पर बच्चा सभ ‘उपस्थित’ बजैत अछि, आ प्रत्येक उत्तर ग्राहक एक दाँत ढीला होएबाक बिम्ब बनैत अछि। मीराक देहक गरिमा, देविकाक डिजिटल पीड़ित आ बाक पुरखा-स्मृति अलग-अलग हस्तक्षेपक रूपमे उपस्थित होइत अछि। एहि दृश्यसँ सामूहिक उच्चारण व्यक्तिगत अन्तःकरणक लड़ाइमे भागीदार बनैत अछि।

मिथकीय दृश्य सामाजिक प्रतिरोधक एकरूप दृश्य-व्यवस्था बनबैत अछि, मुदा संकटक वास्तविक समाधान लेल श्रमक भुगतान, न्यायालयक जाँच, निजताक सुरक्षा आ सार्वजनिक संस्थाक सुधार सेहो चाही। पाठककेँ रूपकक विजय आ ऐतिहासिक परिणामक भेद राखबाक चाही।

## बच्चाक खेल आ नैतिक परीक्षण

भूत-कबड्डी पहिने नामक पहरादारीक सामूहिक अभ्यास छल। एहि अध्यायमे खेलक सीमा आ गज-ग्राहक पौराणिक संघर्ष एक नब शिक्षणात्मक दृश्य बनैत अछि। चन्द्रपाल अपन बाल्यकालक ‘चन्द्र’, ‘पाल’ आ ‘बत्रा’ लिखबाक प्रयास करैत अछि, मुदा ग्राह शब्दकेँ प्रतिशत, दलाली आ धनक संकेतमे विकृत करैत अछि। नामक अर्थक ई विखण्डन ओकर आत्मदोषक देहधारी चित्र अछि।

कादम्बरी बालकसभकेँ निष्क्रिय साक्षी नहि, विवेकक सक्रिय सहचर बनबैत अछि। मुदा कथा जँ प्रत्येक उत्तरक बाद ग्राहक दाँत सहज ढील करबैत अछि, तँ पीड़ितक दीर्घ संघर्षक व्यावहारिक कठिनाईक तुलनामे नैतिक उपचार किछु सरल देखाइ सकैत अछि।

## मुक्ति प्रश्न रूपमे, निष्कर्ष नहि

अन्तिम प्रश्न—गज मुक्त भेल कि नहि—कथा तुरन्त हल नहि करैत। एही कारण अध्याय उपदेशात्मक समापनसँ कुछ दूरी बनबैत अछि। भीतरक गोहि पराजित देखाएब आ वास्तविक आर्थिक अपराधकेँ समाप्त घोषित करब भिन्न कुरा अछि। एहि भिन्नताक चेतना लेखकक काल्पनिक दृश्यकेँ अधिक गहिर बनबैत अछि।

समूची त्रयीमे गज-ग्राहक पुनरागमन काल, समाज आ व्यक्तिक परिवर्तनक चिन्ह अछि। एहि अध्यायमे बाहरी नदीक भय सँ भीतरक उत्तरदायित्व धरि ओकर अर्थ यात्रा करैत अछि। मिथकक ई प्रयोग दीर्घ उपन्यासक संरचनात्मक उपलब्धि अछि।

# अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

## मृत स्मारक नहि, जीवित शिक्षा : ठूँठक नव प्रयोजन

भीतरक गज-ग्राहक रात्रिक बाद अनन्या ठूँठक पाछाँक बालु साफ करि पाठशाला बनएबाक निर्णय लैत छली। चन्ना गाछीक ओ स्थान, जतय नकली जुलूस, निविदा आ नामक पहरा छल, आब शिक्षा आ सार्वजनिक संवादक केन्द्र बनैत अछि। कुम्हारक खपड़ा, नदीक पाथर, झड़ल नारिकेल पात आ पुरान नक्शाक पछिला भाग—ई सामग्री छोट लागतमे वैकल्पिक संस्थान बनबाक ठोस विवरण दैत अछि।

ई पाठशाला सरकारी विद्यालयक सम्पूर्ण विकल्प घोषित नहि; मूल कथा पहिने ओहि ठाम मनुष्यक नाम, गरिमा आ आवाज सुनबाक नियम रचैत अछि। भवनक बदला शर्त, डिग्रीक बदला सामाजिक जिम्मेदारी प्राथमिक अछि। मुदा औपचारिक शिक्षा, गणित आ दीर्घकालिक संसाधनक जरूरत समाप्त नहि होइत, ई आलोचनात्मक सीमा जाँचब आवश्यक अछि।

## चारि कोना : नाम, निजता, श्रम आ साँस

पाठशालाक योजनामे चारि कोना ठहरैत अछि—नाम, निजता, श्रम आ साँस—बीचमे खाली कटोरा आ ठूँठ। देविका बिनु अनुमति दुख नहि लिखबाक, मीरा देहक अपमान नहि करबाक, गोप स्वरबिनु कागचक अपूर्णताक, आ सत्यव्रत डरक बदला सुनबाक मौनक नियम लिखैत छथि। एहि प्रकार पूर्ववर्ती अध्यायसभक नैतिक प्रश्न एक प्रयोगात्मक संस्थानक नियममे परिवर्तित होइत अछि।

चारि नियम एक-दोसरासँ स्वतन्त्र नहि। नाम सुरक्षित रखबाक इच्छा निजताक अधिकारसँ टकरा सकैत अछि; श्रमक इतिहास सुनब शोषित परिवारक मना करबाक इच्छाकेँ दबा नहि सकैत। खाली कटोरा एहि अनिर्णीत स्थितिक प्रतीक बनैत अछि—जे नाम एखन नहि कहल गेल, ओकर लेल स्थान रखब।

## पातपर संकेत आ खुलल पाठक सिद्धान्त

पाठशालामे झड़ल पात चुनि ओहिपर ‘पुलक पाया’, ‘ऑक्सीजनक राति’, ‘मीराक अनुमति’ आ ‘गंगेशक प्रश्न’ सन संकेत लिखल जाइत अछि। सम्पूर्ण कथा पहिने सँ बन्द नहि कएल जाइत; अगिला वक्ताक लेल खाली स्थान छोड़ल जाइत अछि। ई सम्पादन-पद्धति इतिहासक सामूहिकता आ अपूर्णताक स्वीकृति अछि।

पातक अस्थायित्व कागचक क्षणभङ्गुरतासँ टकरैत अछि। ओ बचत तखन जखन अगिला पीढ़ी पढ़त आ सुनत। लोकधुन आ पाठशालाक वस्तु-बिम्ब इतिहासक अर्जित ज्ञानकेँ जीवित सामाजिक अभ्यास बनबैत छथि। मुदा मौखिकता मात्र पर्याप्त नहि; विविध साक्ष्यक सुरक्षित, सहमतिपूर्ण अभिलेख सेहो अनिवार्य अछि।

## शिक्षाक विरोधी प्रश्न आ अध्यायक सीमा

शहरक मास्टर किछु पंक्ति लिखि पाठशाला बनबाक घोषणापर शंका करैत अछि; बादमे अपन हाजिरी-पञ्जी आनैत अछि। एतय कथा संस्थागत शिक्षाकेँ शत्रु घोषित नहि करैत, ओकर भीतर सुधारक सम्भावना रखैत अछि। बच्चासभकेँ जाति, डिजिटल ठगी आ देहक गरिमा सन विषय पढ़ेबाक पक्षमे देविकाक तर्क ई जे ई संकट सभ पहिने सँ बच्चासभक जीवनमे पैसल अछि।

युवा पाठकक आयु-अनुकूलता, संवेदनशील गवाही सुनबाक मानसिक सुरक्षा आ गोपनीयता लेल विशेष प्रक्रिया चाही। एहि प्रश्नक व्यवस्थित उत्तर आगामी अध्यायसभमे अपेक्षित अछि। नारिकेल पात पाठशाला तखनहि साहित्यिक आदर्शसँ आगाँ बढ़त जखन कठिन अवस्थामे ओकर नियम लागू देखाओल जाए।

# अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

## उपस्थित : हाजिरीसँ नागरिक अस्तित्व धरि

पहिल पाठमे बच्चासभ वर्णमाला वा पहाड़ा नहि, ‘उपस्थित’क अर्थ सीखैत अछि। सीतामोनि नानीक नाम घरक सामान्य अपमानजनक सम्बोधनसँ बाहर आबैत अछि; सोनकिक मामा भोलारामक नाम दिनक उजासमे पहिल बेर बजैत अछि; चर्मकार पूर्वज मंगलू दासकेँ परिवारक इतिहासमे स्थान भेटैत अछि। तीनू उदाहरण नामक भिन्न प्रकारक अनुपस्थिति देखबैत अछि—घरक अवमानना, मृत्यु-प्रवासक अस्पष्टता आ जातिक लाज।

‘उपस्थित’ एक सहमतिपूर्ण सामाजिक उच्चारण अछि, प्रमाणित नागरिक प्रमाणपत्र नहि। एहि भेदक बावजूद नामक सार्वजनिक सम्मान पात्रक जीवनमे अर्थपूर्ण परिवर्तन बनबैत अछि। कथा तखन बड़ गहिर होइत अछि जखन बच्चा स्वयं अपन पितरक दबाओल नाम बजैत अछि, न कि कोनो प्रभावशाली वक्ता ओकर प्रतिनिधि बनैत अछि।

## मंगलू दासक नाम आ जाति-व्यवस्थाक विरोध

मंगलू दासक नाम रजिस्टरक हाशियामे नहि, पृष्ठक आधार-जेकाँ मध्य भागमे लिखल जाइत अछि। ई लिपिकीय निर्णय सामाजिक सत्ता-विन्यासपर दृश्यात्मक टिप्पणी अछि। मीराक कथन शोषित श्रमक नामकेँ नीचाँ रखबाक परम्पराक प्रतिवाद करैत अछि। गंगेशक जीवनक कथित असुविधाजनक प्रसंग सेहो प्रश्न रूपमे उठैत अछि, मुदा सौम्या तुरन्त उत्तर देबाक बदला प्रश्नक उपस्थिति स्वीकार करैत छली।

एहि पद्धतिमे नव्य न्यायक ऐतिहासिक प्रतिष्ठा आ जातिगत बहिष्कारक नैतिक संकट एक स्थानपर भेटैत अछि। मूल उपन्यासमे आएल लोकश्रुतिक कथन आ प्रमाणित जीवनीक अन्तर सुरक्षित रखबाक आवश्यकता एहि अध्यायमे विशेष रूपसँ अछि।

## पाथरक ‘म’ : प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्दक खेल

अनन्या खाली पाथर उलटि अधलिखल ‘म’ देखबैत छली। बालकसभ ओकरा प्रत्यक्ष चिन्ह, सम्भावित नामक अनुमान आ बाक मौखिक स्मरणक श्रेणीमे विभाजित करैत अछि। ज्ञानमीमांसाक कठोर प्रश्न खेलक माध्यमसँ उपस्थित होइत अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे अक्षर ‘म’ स्वयं मंगलू दासक सम्पूर्ण पहिचान नहि; अनेक नामक प्रथम ध्वनि भऽ सकैत अछि। एहि प्रकार बालक निश्चित जानकारी आ संभावित अर्थक अन्तर सीखैत छथि।

नव्य न्यायक सूक्ष्म परिभाषासँ ई विद्यालयी अभ्यासक सम्बन्ध सरलीकृत अछि, मुदा पाठ्य उपकरण रूपेँ प्रभावी। संदर्भकेँ दार्शनिक शास्त्रक सम्पूर्ण सिद्धान्त मानब नहि चाही; ओ प्रश्न पूछबाक पहिल अनुशासन अछि।

## दिनक सार्वजनिकता आ रातिक स्त्री-सभा

पहिल दिनक नाम-पाठमे सामाजिक उपस्थितिक विस्तार होइत अछि, मुदा सभ नाम दिनमे सुरक्षित रूपसँ बाजल नहि जा सकैत। मीरा रातिक स्त्री-सभाक लेल रजिस्टरक खाली पन्ना राखैत छली। घरेलू हिंसा, दहेज, जातिक उत्पीड़न आ देहक अपमानसँ जुड़ल कथा सार्वजनिक करबाक समय, श्रोता आ अधिकार समान नहि। दिनक पाठक उपलब्धि रातिक गोपनीय सुननाइक आवश्यकता मिटाबैत नहि।

एहिमे अध्यायक विशेष परिपक्वता अछि। सर्वसाधारणक ‘उपस्थित’ कहब आवश्यक होइतहुँ प्रत्येक व्यक्तिक पहिचान जबरदस्ती उद्घाटित नहि होयब चाही। दिनक खुलल पृष्ठ आ रातिक सुरक्षित सभा बीचक तनाव अगिला अध्याय ८५क आधार बनैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ८०–८४

## संतानक प्रतिप्रश्नसँ सार्वजनिक पाठशाला धरि

अध्याय ८०मे तारिणी पिताक विधिक प्रतिष्ठाकेँ प्रश्न करैत छली। ८१मे चन्द्रपालक निजी कागच पर नामक स्थानपर लाभक प्रतिशत उभरैत अछि। ८२मे भीतरक गज-ग्राहक पौराणिक दृश्य सामाजिक लोभक अनेक रूप एकसंग देखबैत अछि। ८३मे प्रतिरोध पाठशालाक संस्थात्मक आकार लैत अछि, आ ८४मे ‘उपस्थित’ नामक नियम बच्चासभक व्यवहारमे उतरैत अछि। ई क्रम निजी अन्तःकरणसँ सामूहिक शिक्षाधरि चलैत अछि।

पहिनुक बैचमे जे श्रवण आ अनुमतिक प्रश्न छल, से एहि पाँच अध्यायमे नियम आ पाठ बनैत अछि। एहि परिवर्तनकेँ कथानकक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचनात्मक उपलब्धि मानब चाही।

## वस्तु-क्रम : सम्मानपत्र, प्रतिशत, जबड़ा, पात आ पाथर

बटुकनाथक आलमारीक सम्मान-पत्र संस्थागत प्रतिष्ठा, चन्द्रपालक अधूरा कागच गणनाक पराधीनता, गज-ग्राहक जबड़ा लोभक अन्तःकरण, नारिकेलक पात सामूहिक पाठ आ खाली पाथर अनलिखल व्यक्तिक स्थान बनैत अछि। पाँच प्रतीक अलग सामाजिक स्तर पर काज करैत अछि, मुदा सभक प्रश्न ई जे व्यक्ति वा संस्थाक अधिकारक पहिने मनुष्यक नामक मान कोना सुरक्षित रहय।

अध्यायसभक लोकगीत परिवारक प्रश्न, अधूरा नाम, मिथकीय संघर्ष आ सामूहिक शिक्षाक रूपमे अलग-अलग भाव विकसित करैत अछि। प्रतीकक किछु अधिक स्पष्टता कलात्मक अस्पष्टता घटबैत अछि, मुदा कथा-क्रमक निरन्तरता सुदृढ़ करैत अछि।

## प्रमाणक स्तर आ पात्र-पहिचानक विशेष असंगति

अध्याय ७९मे बटुकनाथक कागच उठबैत संतानकेँ ‘बेटा’ कहल गेल, जखनकि ८०मे कानून पढ़ैत तारिणी ‘संतान’ रूपेँ स्पष्ट स्त्री पात्र छथि। ई वास्तविक पाठगत अन्तर अछि, जकरा मूल समग्र अध्याय-पञ्जी सँ जाँचब आवश्यक अछि। कथा जे मञ्च-परिवर्तनक संकेत दैत अछि, तकर आधारपर दुनू प्रसंग निश्चित रूपसँ समान घटना अछि कि नहि, कहब कठिन अछि। साहित्यिक समीक्षा एहि बिन्दुकेँ सुधारक प्रश्न रूपमे राखैत अछि, मूल उद्धरण नहि बदलैत।

एहि बैचमे दस्तावेजपर स्वयं प्रतिशत लिखब, ठूँठक नैतिक प्रश्न, गज-ग्राहक रूपान्तरण आ पातक स्वर—सभ जादुई कथा-स्थितिसभ छथि। विधिक/ऐतिहासिक निष्कर्ष लेल प्रमाणक स्वतन्त्र जाँच जरूरी रहत।

## बचपन, जाति, निजता आ शिक्षाक त्रिसन्धि

तारिणीक प्रतिवाद आ चन्द्रपालक बाल्यस्मृति उत्तराधिकारक दू विपरीत रूप छथि। एक सन्तान पिताक धन-सम्मान सँ स्वतन्त्र विवेक चुनैत अछि, दोसर पात्र अपन बाल्यकालक नामसँ फेर सम्बन्ध बनएबाक प्रयास करैत अछि। ८३–८४मे बच्चासभ एहि पीढ़ीगत प्रश्नकेँ विद्यालयी अभ्यास बनबैत अछि—नाम, निजता, श्रम आ साँस।

जाति-आधारित अपमानक प्रश्न आ निजी पीड़ाक सार्वजनिकता बीच संतुलन रखनाइ कठिन अछि। ‘उपस्थित’क मूल्य तखन अधिक होइत अछि जखन ओकरा स्वयं नाम बाजबाक वा नहि बाजबाक अधिकारक संग जोड़ल जाए। रातिक स्त्री-सभा एहि चिन्ताक अगिला परीक्षण होयत।

## समेकित निर्णय

अध्याय ८०–८४ उपन्यासक गतिशील संरचनामे प्रतिरोधक संस्थाक जन्म देखबैत अछि। नामक पाथर जे पहिने केवल शोकक चिन्ह छल, एखन पाठशालाक वस्तु आ प्रश्नक आधार

बनैत अछि। शिल्पक उपलब्धि स्मृतिक राजनैतिक अर्थकेँ सीखबाक व्यवहारमे बदलब अछि; सीमा संस्थाक दीर्घकालिक व्यवहार, बाल-सुरक्षा आ दस्तावेजीय सत्यापनक अपूर्णता अछि।

अगिला अध्यायसभमे रातिक स्त्री-सभाक वास्तविक सहमति-प्रक्रिया, मजदूरक देह-साक्ष्य आ डिजिटल दृष्टिक पुनर्परीक्षणपर विशेष ध्यान देबाक आवश्यकता अछि।

# अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

## दिनक उपस्थिति आ रातिक गोपनीय स्वर

नारिकेल पात पाठशालाक पहिल पाठ दिनमे सामूहिक ‘उपस्थित’क उच्चारण छल। मुदा रातिमे स्त्री सभ जुटिते एहि शब्दक सीमा स्पष्ट होइत अछि। किछु जीवनक कथा दिनक उजासमे कहब सुरक्षित नहि; घरेलू हिंसा, जाति, प्रेम, निजता आ दहेजक अपमानसँ जुड़ल नामसभ पर सुननाइक अधिकार विशेष सावधानी माँगैत अछि। मीरा, देविका, सौम्या, बा आ आन स्त्रीसभक उपस्थितिमे सभा सार्वजनिक नारा नहि, परस्पर विश्वासक कठिन क्रिया बनैत अछि।

ई अध्याय एक महत्त्वपूर्ण भेद स्थापित करैत अछि: मौनक अर्थ सदिखन दमन नहि, कखनो स्वेच्छासँ अपन कथाक समय चुनब सेहो होइत अछि। दिनक रजिस्टरक सन्दर्भमे ई रातिक अलग परिप्रेक्ष्य आलोचनात्मक परिपक्वता दैत अछि।

## देहक गरिमा, लाल डोरी आ भीजल कमीज

स्त्रीसभ अपन संग देह, श्रम आ हिंसाक ठोस स्मृति लबैत छथि। मीराक लाल डोरी, भीजल कमीज, फाटल एड़ी आ बिनु नामक घरुआ श्रमक बिम्ब घटना-संग्रहक सामूहिक नक्शा बनैत अछि। पुरुषक नाम पुलक पायामे लिखल रहबाक संग घरमे प्रतीक्षा, भोजन, उपचार, ऋण आ लाज झेलने स्त्रीक काज अदृश्य रहैत अछि। सभा एहि अदृश्य श्रमकेँ न्यायिक प्रश्नक योग्य बनबैत अछि।

लोकगीतमे स्त्रीक स्वरक सामूहिकता भावपूर्ण अछि; मुदा प्रत्येक वक्ताक अलग अनुभव आ चुप रहबाक अधिकार बचनाइ आवश्यक। एकर बिना सामूहिक शक्ति नया दबाव बनि सकैत अछि। लेखकक नैतिक नीति तखन प्रभावी अछि जखन ओ अनुमति पर जोर दैत अछि।

## पाँच निर्णय : स्मृति-राजनीतिक व्यावहारिक नियम

भोरसँ पहिने पाँच बात निर्धारित होइत अछि—बिनु अनुमतिक देहक कथा नहि; जाति-जन्य हिंसाकेँ न्यायक प्रश्न बनाओल जाए; डिजिटल ठगीक लाज पीड़ित पर नहि; मजदूरक संग परिवारक स्त्रीक नाम सेहो; निजता स्मृतिक प्रतिद्वन्द्वी नहि। ई सार केवल घोषणापत्र नहि, पछिला अध्यायसभक शोक-संग्रहक व्यवहारगत संशोधन अछि।

सभामे ‘प्रस्ताव पारित’क औपचारिक युक्ति नहि होइतहुँ सहमतिक अभ्यास देखाओल गेल अछि। तथापि वास्तविक संरक्षण लेल सूचना-रक्षा, पीड़ितक मन बदलबाक अधिकार आ अभिलेखक सीमित पहुँचक स्पष्ट व्यवस्था अपेक्षित अछि। एहि प्रश्नसभ पर अगले अध्यायसभक प्रक्रिया देखब लेखकीय उपलब्धिक कसौटी बनत।

## समकालीन स्त्रीवादी आलोचना आ शिल्पगत प्रश्न

स्त्री-सभा उपन्यासक पुरुष-केन्द्रित आपराधिक जालक आलोचनासँ आगाँ बढ़ि समाजक घरेलू इतिहास खोलैत अछि। विभिन्न वर्ग आ जातिक स्त्री एक साथ बैसल छथि, मुदा हुनकर अनुभव समान नहि। ई भिन्नता जतेक सूक्ष्मतासँ विकसित होयत, कृतिक स्त्रीवादी अर्थ ओतेक सशक्त होयत।

राति-अन्हार, लाल डोरी आ नामक पन्नाक रूपक अत्यन्त प्रभावी अछि; सीमा ई जे सामाजिक समाधानक पाँच सूत्र त्वरित निकलैत अछि। वास्तविक मतभेद, भय आ संरक्षणक आर्थिक काज पर अधिक दृश्य कथा कैँ अझ विश्वसनीय बनबितए। ताहूसँ ई अध्याय त्रयीक स्मृति-पद्धतिक जरूरी आत्मसुधार अछि।

# अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

## नामसँ देहक चाल धरि : पुलक यात्रा

पाठशालाक बच्चासभ ‘उपस्थित’ कहलाक बाद प्रश्न करैत अछि जे उपस्थित व्यक्तिक पएर कोन माटि पर पड़ल, श्रम कोना कएल आ पुलक भीतर ककर काज दबल अछि। गामसँ अधबनल पुल धरि पैदल यात्रा नामक अमूर्त सम्मानकेँ देहक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। बच्चासभ रजिस्टर, काजर, पाथर आ पात लऽ कऽ पायक लग पहुँचैत अछि। एकर फल केवल अतीतक शोक नहि, वर्तमान श्रमिकक कामक मानक शिक्षण अछि।

पुल औद्योगिक विकासक प्रतीक रहितहुँ दुर्घटना, श्रमक शोषण, अटकल पगार आ मृतकक अनुचित अनुपस्थितिक साक्षी बनैत अछि। कथाकार सार्वजनिक निर्माणक कथामे हाशियाक देहकेँ केन्द्रमे आनैत अछि।

## पएरक निशान, पातक पथ आ कबड्डीक सीमा

मजदूरक पएरक अनुभव पातपर चिह्नित कएल जाएब रचनाक प्रभावी दृश्य-विधान अछि। पुलक पाया लग बनल पातक बाट नदीसँ फेर चन्ना गाछी दिस मुड़ैत अछि। जे लोक नदी पार करबाक वास्तु बनबैत छल, ओकर स्मृति फेर गाममे प्रवेश करैत अछि। पानिक गर्जन आ कबड्डीक साँसक लय ओहि यात्राकेँ अविच्छिन्न बनबैत अछि।

पएरक बिम्ब नामक पाथरसँ भिन्न अछि; पाथर स्थिर, पएर गतिशील। इतिहासक स्थिर शिलालेख आ श्रमक चलल जीवनक अन्तर्गत तनाव एहि रूपकमे अछि। शारीरिक श्रमक विवरण बिनु केवल राजनैतिक नारा लिखल गेल होइत तँ अध्याय कमजोर पड़ितए।

## श्रम-इतिहासक प्रमाण आ रूपकक सीमा

मजदूरक नामक संग कामक स्थल, भुगतान, ठेकाक शर्त, दुर्घटनाक स्थल आ परिवारक जीवन जोड़बाक प्रश्न पाठमे उभरैत अछि। नव्य न्यायक प्रमाण-विवेक सँ देखल जाए तँ

पएरक निशान आ मौखिक कथन सर्वथा पर्याप्त दस्तावेज नहि; ओ जाँचक मार्ग देखबैत अछि। पुलक पुरान ठेका, सुरक्षा-रिपोर्ट, मजदूरक रजिस्टर आ उपचार-साक्ष्यक तुलनात्मक जाँच भिन्न चरण अछि।

रातिमे अनदेखल मजदूरक चप्पलक आवाज कथाक अद्भुत लोक-स्मृति अछि, स्वतंत्र भौतिक गवाही नहि। तथापि अदृश्य श्रमक उपस्थितिक एहने श्रव्य संकेत साहित्यिक शक्तिक कारण अछि।

## श्रमिक-प्रतिकृति बनाम सामूहिक श्रम

अध्यायमे एकल महान शहीदक बदला कतेको मजदूरक पएरक सामूहिक मार्ग रचब अधिक अर्थपूर्ण अछि। मनुष्यक नाम भिन्न रहितहुँ श्रमक स्थान जुड़ल अछि। स्त्री-सभाक माग अनुसार मजदूरक परिवारक काज जोड़बाक सम्भावना सेहो एहि यात्रामे निहित अछि।

अध्याय पाठककेँ ई नहि कहैत जे विकास-निर्माण त्यागू; ई पूछैत अछि जे निर्माणक लागतक हिसाबमे देह, जीवन आ परिवारक क्षति कोना देखाओल जाए। एहि नैतिक प्रश्नक यथार्थता कला आ सामाजिक समालोचनाक बीच सेतु बनैत अछि।

# अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास

## दृष्टिक विराम : तकनीक-विरोध नहि, चयनक अधिकार

मजदूरक पएरक यात्राक बाद बच्चासभ एक दिन स्क्रीनक उपवास प्रस्तावित करैत अछि। उपवास भोजनक नहि, दृष्टिक—माटि, पानि, चेहरा आ नाम फेर प्रत्यक्ष देखबाक प्रयास। गाउँक लोक एक मत नहि: फोन सम्पर्क, काम, शिक्षा आ आपतकालक साधन सेहो अछि। ई भिन्नता महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ सर्वाधिक उपयोगी पाठ एतय यन्त्रक निषेध नहि, देखबाक अभ्यस्त ढंगक पुनर्विचार अछि।

अनन्या कपड़ाक थैली आ माटिक ‘स्क्रीन-घड़ा’ लग स्वेच्छासँ यन्त्र रखबाक व्यवस्था करैत छली। ककरो बाध्य नहि कएल जाएब एहि प्रयोगक नैतिक केन्द्र अछि। बलजोरीक सदाचार पुरान नियन्त्रणक नब रूप बनि सकैत अछि, ई जोखिम पाठ चिह्नैत अछि।

## काँचसँ बाहर देहक ध्वनि

दिन भरि यन्त्रक विराममे लोक साँस, चरखी, चूल्हि, पाँव आ कबड्डीक कण्ठ सुनबाक अवसर पबैत अछि। कादम्बरीक पहिनुक स्क्रीन, एप, डेटा आ कोडक प्रतीक एहि अध्यायमे ध्वनिक विपरीत संसार रचैत अछि। सुनब यन्त्रहीन होएब नहि; सुनबाक प्राथमिकता चयन करब अछि।

कथा आंखिक गहन आसक्तिक आलोचना करैत अछि, मुदा दृष्टिहीन अथवा स्क्रीनपर निर्भर लोकक सहायता आ डिजिटल अभिलेखक वास्तविक उपयोग सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। नैतिक उपवास सब गोटेक लेल एक समान सहज नहि; एहि सामाजिक भिन्नताक स्थान रहबाक चाही।

## स्वैच्छिक सामूहिक नियम आ स्मृतिक स्वायत्तता

स्क्रीनक उपवास केवल व्यक्तिगत संयम नहि। बच्चासभ अपन सामूहिक अभिलेखक स्रोतक परीक्षा करैत अछि—यन्त्र बन्द भेलासँ नाम समाप्त होइत अछि कि मौखिक पाठक रूपमे जीवित रहैत अछि? ई प्रश्न अध्याय ७५क राघवक ‘बिना नेटवर्क’सँ व्यंग्यात्मक सम्बन्ध रखैत अछि। ओतय शक्ति-चालित सन्देश बाधित छल; एतय लोग स्वेच्छासँ सन्देशक विराम चुनैत अछि।

दुनू घटनाक अन्तर स्पष्ट अछि: राघवक अवरोध अलौकिक नैतिक बाधा अछि; गामक उपवास सामाजिक निर्णय। एहि भेदक आधारपर ‘जाल’क नकारात्मक आ सकारात्मक उपयोगक विवेचन सम्भव बनैत अछि।

## एक दिनक विधि आ दीर्घकालिक उपयोग

एक दिनक विराम मनक शोर घटा सकैत अछि, मुदा ठगीक डिजिटल संरचनाकेँ समाप्त नहि करैत। उपवासक बाद वित्तीय अभिलेख, निजताक सुरक्षा, दूरक सम्बन्ध आ बाहरी समुदायसँ संवाद लेल स्क्रीन पुनः चाही। अध्याय ८८मे ईरा विदेशक बच्चासभकेँ पत्र लिखब द्वारा एहि सीमाकेँ प्रत्यक्ष स्वीकार करैत छली।

यन्त्रक समय घटाएब आ यन्त्रद्वारा अन्यायकारी संस्था पर प्रश्न उठाएब पूरक काज छथि। लेखकक उपलब्धि सामुदायिक आत्मनियन्त्रणक प्रारम्भ देखब अछि; वास्तविक फल बाहरी संवादमे जाँचल जाएत।

# अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

## गामक अनुभवसँ समुद्रपारक सम्बोधन

स्क्रीनक उपवासक बाद ईरा विदेशमे रहनिहार बच्चासभकेँ पत्र लिखैत छली। ई परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि: दृश्य-यन्त्रक विरामक बाद संवादक अन्त नहि, बल्कि अधिक विचारपूर्ण रूप बनैत अछि। पत्रक कथावाचक स्थानीय स्मृति-परम्पराकेँ अपन गामक सीमासँ बाहर पठबैत अछि। विदेशक बालकक प्रश्न, घरसँ दूरी आ नामक स्मरणक अधिकार पाठकक नव कल्पित समुदाय बनबैत अछि।

पत्र लिखब अनुपस्थित श्रोतासँ सम्बन्धक प्रयास अछि। प्राप्तकर्ता वास्तवमे पढ़लक कि नहि, तत्क्षण प्रमाण नहि; लेखक एहि अनिश्चिततासँ बनौने रखैत अछि। एहि कारण पत्र एकतरफा घोषणासँ अधिक सन्देश-बिस्वासक नैतिक प्रयोग बनैत अछि।

## मिथिलाक गौरव संग असुविधाजनक इतिहास

ईरा विदेशक बालकसभकेँ लिखैत छली जे मिथिलाक इतिहास केवल गौरवक कथा नहि; जाति-आधारित अपमान आ दबाओल जीवनक प्रश्न सेहो। गंगेश उपाध्याय आ तत्त्वचिन्तामणिक उदाहरण एहि विमर्शक केन्द्र बनैत अछि। नव्य न्यायक दार्शनिक उपलब्धि प्रमाणित बौद्धिक इतिहासक विषय अछि, मुदा जन्म आ विवाहक विशेष लोककथा मूल कादम्बरीक साहित्यिक पुनर्रचना रूपमे विचारणीय अछि।

ईरा अन्ध गौरव-विरोध नहि, आत्मालोचनासहित सांस्कृतिक पहचानक प्रस्ताव करैत छली। परदेशमे चिन्हारि बचएबाक अर्थ अपन गामक अन्याय ढाँकब नहि; ओकरा प्रश्न करबाक भाषा अपने संग लेब अछि।

## पत्र, पात आ नक्शाक बहुमाध्यम सम्बन्ध

नारिकेल पात पाठशालाक संकेत, कागजी पत्र, नामक रजिस्टर आ दूरक बच्चाक सम्भावित उत्तर—ई सभ सञ्चारक अलग-अलग माध्यम छथि। पत्र उपन्यासमे तकनीक-विरोधी स्थिति कैँ संतुलित करैत अछि: डिजिटल यन्त्र विरामक बाद लेखक विश्वसँ संवादक इच्छा समाप्त नहि देखबैत।

अध्याय भावात्मक रूपसँ सघन अछि, मुदा विदेशक बच्चासभकैँ एकसमान ‘मूल गामसँ कटायल’ अनुभवमानब सरलीकरण होएत। प्रवासी जीवनक भिन्न भाषा, वर्ग, समुदाय आ पीढ़ीक अन्तर कतेको महत्त्वपूर्ण अछि। कृति आगामी प्रत्युत्तरक माध्यमसँ एहि बहुवचनकैँ विकसित करए, तकर अवसर अछि।

## संवादक नैतिकता आ अनुत्तरित प्रश्न

विदेशक बच्चासभक नाम संबोधित करब मात्रसँ शोकक अन्तरराष्ट्रीय न्याय नहि मिलैत। पत्रक प्रस्तावक व्यावहारिक प्रगति तखन होयत जखन ओसभ अपन प्रश्न, अपन स्मृति आ अपन असहमति लिखि पठाओत। दूरक श्रोतासभकैँ श्रोता मात्र नहि, स्वतन्त्र वक्ता बनबाक स्थान भेटबाक चाही।

ई अध्याय एक महत्वपूर्ण सेतु अछि। गामक छोटे पाठशालाक शब्द विदेशी पत्रक माध्यमसँ फैलैत अछि, आ अगिला अध्याय ८९क जन-सुनवाई लेल आवाजक नब सम्भावना खोलैत अछि।

# अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

## दूरक बच्चाक नक्शा आ सुनवाईक नब ढाँचा

ईराक पत्रक उत्तर पहिने ई-मेल अथवा धनादेश नहि, दूरक बच्चाक बनाओल नक्शारूपेँ अबैत अछि। ई कथात्मक चयन अर्थपूर्ण अछि। नक्शामे दूरक शहर आ गढ़ नारिकेलक कल्पना एक पन्नापर आबैत अछि। भौगोलिक दूरी सार्वजनिक पीड़ासँ सम्बन्धक बाधा रहितहुँ संवादकेँ असम्भव नहि बनबैत। सत्यव्रतक जन-सुनवाई एही नब प्रश्नक प्रति खुलैत अछि।

सुनवाईक अर्थ लोकसभकेँ सरकारी आदेश सुनाएब नहि, हुनकर अनुभव ध्यानसँ सुनब अछि। सत्यव्रतक पहिनुक ‘दोसर मौन’ एहि बिन्दुपर संस्थागत विधिमे बदलैत अछि। मुदा सुनल कथनक आधिकारिक जाँच, राहत आ निर्णय लेल अलग प्रावधान चाही, जकर अभावकेँ आलोचना चिन्हि राखैत अछि।

## खाली कुर्सी, नामक ऋण आ अनुपस्थित साक्षी

जे व्यक्तिक स्वर दबल अथवा जे भौगोलिक रूपेँ उपस्थित नहि भऽ सकल, ओकर काज आ ऋण सार्वजनिक विचारमे कोना जीवित रहय—ई प्रश्न जन-सुनवाईक केंद्र अछि। पत्र, पाथर, बच्चाक नक्शा आ मौखिक कथा अलग रूपक साक्षी बनैत अछि। ‘उपस्थित’क पुनरुच्चारण आब शिक्षा सँ सामूहिक सार्वजनिक उत्तरदायित्व धरि पहुँचैत अछि।

एहि स्थानपर नव्य न्यायक ‘प्रमाण’ शब्दक सटीकता जरूरी अछि। समाजक वचन सुनबाक नैतिक मान्यता आ तथ्य जाँचबाक प्रक्रिया भिन्न अछि। उपन्यासक सशक्ततम तर्क दुनूकेँ आमने-सामने रखैत अछि, कोनो एककेँ सम्पूर्ण समाधान नहि मानैत।

## सत्यव्रतक भूमिकाक परिवर्तन

सत्यव्रत पहिने तत्काल भाषण, प्रक्रिया आ अधिकारीक चापसँ काम करनिहार व्यक्ति छलाह। एखन ओ साक्षीसभक समय स्वीकार करैत छथि। सुनवाईक मध्य ओ स्वयं नायक वा एकमात्र निर्णायक नहि बनबाक प्रयत्न करैत छथि। ई रूपान्तरण धीरे-धीरे अध्याय ६०क दोसर मौनसँ विकसित भेल अछि।

ओकर विश्वसनीयता केवल चुप रहबमे नहि, दबाओल लोकक गवाहीकेँ बिनु तोड़ने सुनबाक व्यवहारमे अछि। न्यायिक दृष्टिसँ एकर पछाति लिखित विवरण, जाँचक योग्यता आ पक्षकारक उत्तरक अधिकार सेहो आवश्यक; साहित्यिक दृष्टिसँ सुननाइक सार्वजनिक रूप अपनेमे प्रगतिशील मोड़ अछि।

## जन-सुनवाईसँ लोक-विधान धरि

अध्याय ८९क समापन अगिला ‘नामक संविधान’क तैयारी करैत अछि। जे बात पहिने व्यक्तिगत कथन छल से सामूहिक नियम बनबाक आकांक्षा धरैत अछि। कथा पाठककेँ कानूनक आधिकारिक संवैधानिक अधिकार आ स्थानीय सभाक नैतिक आचार-पत्रमे अन्तर बुझबाक अवसर दैत अछि।

समेकित दृष्टिसँ ई अध्याय उपन्यासक स्मृति-प्रयासकेँ संस्थागत सार्वजनिकता दैत अछि, यद्यपि प्रशासनिक प्रतिपक्षक पूर्ण जटिलता, कानूनी प्रक्रिया आ सुनवाईक फैसिलाक आगेक पड़ाव पर अधिक विस्तार आवश्यक अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ८५–८९

## पाँच चरण : सुरक्षित कण्ठसँ सार्वजनिक सुनवाई

८५मे स्त्रीसभ रातिक सुरक्षित सभा बनबैत छथि। ८६मे मजदूरक नामकेँ पएर आ पुलक भौतिक स्थलसँ जोड़ा जाइत अछि। ८७मे स्वैच्छिक स्क्रीन-विराम ध्वनिक संवेदना पुनः जागरित करैत अछि। ८८मे ईराक पत्र अन्तरराष्ट्रीय श्रोताक कल्पना करैत अछि, आ ८९मे दूरक बच्चाक नक्शा जन-सुनवाईक सार्वजनिक स्थलमे प्रवेश करैत अछि। ई पाँच चरणक साझा धुरी प्रत्यक्ष उपस्थितिक अधिकार अछि, मुदा अलग-अलग स्थान पर ओकर रूप बदलैत अछि।

राति गोपनीयता माँगैत अछि, पुल श्रमक भौतिक हिसाब, स्क्रीन-विराम चयनक अधिकार, पत्र भाषान्तरित सहभागिता आ जन-सुनवाई जवाबदेहीक सार्वजनिक ढाँचा माँगैत अछि। एही भिन्नता से कथा एकहि अनुष्ठानक नकल नहि बनैत।

## माध्यमक राजनीति : लाल डोरी, पएर, घड़ा, पत्र आ नक्शा

लाल डोरी स्त्रीक अनुभवक स्वायत्तता, मजदूरक पएर भौतिक श्रम, माटिक स्क्रीन-घड़ा ध्यानक स्वेच्छिक अनुशासन, पत्र दूरक सम्बन्ध आ बालकक नक्शा श्रोताक प्रत्युत्तरक प्रतिमान बनैत अछि। कादम्बरीक दीर्घ वस्तु-शृंखला डिजिटल उपकरणक नकार मात्र नहि; कागच, पात, देह, पाथर आ यन्त्रक भिन्न गुण पहिचानबाक अभ्यास अछि।

एहि वस्तु-बिम्बसभक समीक्षामे अर्थक सीमा सेहो राखब जरूरी अछि। प्रत्येक डोरी प्रमाण नहि, प्रत्येक पएरक रूपक ठेका-पत्र नहि, प्रत्येक पत्र वास्तविक प्राप्ति नहि; तथापि सभ एक जाँचयोग्य सामाजिक प्रश्न आरम्भ करैत अछि।

## स्त्रीवादी स्वायत्तता आ जाति-श्रमक समेकन

स्त्री सभक राति-सभामे देहक कथा बिनु अनुमति सार्वजनिक नहि करबाक आग्रह अछि। मजदूरक पएरक यात्रामे पारिवारिक स्त्रीक नाम जोड़बाक आवश्यकता अछि। एहि दुनू अध्यायक मेल श्रम-इतिहासक परम्परागत पुरुषकेन्द्रित क्रम कैं चुनौती दैत अछि। गामक सामूहिक स्मृतिमे जाति आ स्त्रीत्वक अनुभव अलग असमानता लऽ कऽ उपस्थित अछि, तैँ एकहि समाधानसभक बिना भेद लागू करब कठिन अछि।

कथा जतेक ‘सुनू’ कहैत अछि, ओतेक ‘ककर सुनबाक अधिकार’ आ ‘ककर मना करबाक अधिकार’ पर विचार करब चाही। एहि नैतिक भिन्नताक स्वीकार उपन्यासक महत्त्वपूर्ण प्रगति अछि।

## जादुई दृश्य आ सार्वजनिक तथ्यक अन्तर

पुलसँ सुनाइत अदृश्य चप्पल, पातक स्मृति आ दूरक पत्रक अद्भुत प्रत्युत्तर रचनाक कल्पनात्मक अभिव्यक्ति छथि। सामाजिक तथ्य लेल दस्तावेज, प्रत्यक्ष अनुभव, पारिवारिक अभिलेख आ प्रशासनिक जानकारीक स्वतंत्र मिलान चाही। नव्य न्यायक प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्दक कठोर विवेक एहि बिन्दुपर उपयोगी अछि, मुदा कथा-पात्रक दाबीकैं सर्वथा प्रमाणित इतिहास घोषित नहि कएल जाए।

८९क सुनवाईक मूल्य तथ्यक तत्क्षण समाधानमे नहि, अनसुना आवाजकैं न्यायपूर्ण प्रक्रियाक प्रवेश देबामे अछि। ई प्रक्रिया एकर आगेक ‘संविधान’क यथार्थता जाँचब आवश्यक करैत अछि।

## समेकित समीक्षा आ आगामी कसौटी

एहि पाँच अध्यायमे उपन्यासक नैतिक दर्शन अनुभवसँ नियम दिस बढ़ैत अछि। गामक महिला, श्रमिक, बच्चा आ प्रवासी अपन स्वरक माध्यम खोजैत छथि। प्रमुख साहित्यिक

उपलब्धि दृश्य-संरचनाक गतिशीलता आ लोकधुनक प्रयोग अछि; सीमा वास्तविक प्रतिरोध, आर्थिक सहयोग आ कानूनी परिणामक कम विस्तार अछि।

अगिला बैच ९०–९४मे नामक संविधान, शक्तिशाली लोकक अनुपस्थिति, ठूँठक छाँह आ बाढ़िक संकट द्वारा एहि नियमसभक वास्तविक परीक्षण होएत।

# अध्याय ९० — नामक संविधान

## जन-सुननाइसँ स्थानीय आचार-विधान धरि

अध्याय ८९क जन-सुनवाईक बाद नारिकेल पात पाठशालामे मास्टर बच्चासभसँ अपन नाम-पहराक नियम लिखए कहैत छथि। नियम ऊपरसँ नहि, स्मृतिक चोटसँ बनेत—ई आग्रह औपचारिक कानून आ स्थानीय नैतिक आचारक भेदकेँ स्पष्ट करैत अछि। बाक कथन जे अपराध पहिचानले बिना गौरवक वंशावली लिखब संविधान नहि, रचनाक आत्मालोचनात्मक भूमिका बनैत अछि। सत्यव्रत अपन विशेषज्ञ ज्ञानक बोझ बच्चासभक आवाजपर नहि थोपैत छथि।

‘संविधान’ शीर्षक राष्ट्रक विधिक दस्तावेजक प्रतिलिपि नहि, स्थानीय समुदाय अपन अधिकारक कतेक शर्त स्वयं तय करैत अछि, तकर साहित्यिक रूप अछि। एकर अधिकार-क्षेत्र, विवाद-निराकरण आ राज्यक औपचारिक कानूनसँ सम्बन्ध आगामी प्रश्न छथि।

## नाम, निजता आ देहक गरिमा : पहिल तीन नियम

देविका नाम नहि मेटबाक नियमकेँ घरक बोली, मजदूरी-पुस्तिका, अस्पतालक पर्ची आ पाथर धरि पसारैत छली। मीरा निजताकेँ डरक बन्द कोठली नहि, अनधिकृत चित्र, रोदन आ प्रेमक बाजारीकरणसँ मुक्त रहबाक अधिकार मानैत छली। सौम्या देहक अपमानक विरुद्ध नियम आनैत छली, जाहिमे मृत देहक गरिमा सेहो शामिल अछि। ई तीनू नियम एक-दोसराक पूरक होइतहुँ तनाव पैदा करैत अछि—सार्वजनिक नाम-पठन आ निजी जीवनक सहमति हर अवस्था समान नहि।

अध्याय एहि तनावकेँ पूरासँ हल नहि करैत, मुदा ‘दृष्टिक पहिने अनुमति’ सन तत्त्वक माध्यमसँ स्मृति-संरक्षणकेँ अधिकारक अधीन रखैत अछि। ई दीर्घ कादम्बरीक प्रमुख सिद्धान्तात्मक उपलब्धि अछि।

## स्मृतिक ठेका, जातिक न्याय आ कागचक सीमा

आरुणि स्मृतिपर ठेका नहि लगबाक, अनन्या जातिक नामपर न्यायक हत्या नहि होएबाक, आ गोप कुमार कागचक कथनकेँ लोकक स्वरबिनु अपूर्ण मानबाक नियम रखैत छथि। विरासत-परियोजना, भूत-जुलूस, ब्रूमक दान आ श्रमक पीड़ा एतय एकत्र उपस्थित अछि। कागच, माटि आ आवाजक त्रिसन्धि कथाकारक अभिलेखीय पद्धतिक रूपक अछि।

गंगेशक ऐतिहासिक ग्रन्थीय कीर्ति आ मूल कादम्बरीक विशेष जन्म-विवाह लोकश्रुतिक भेद एतयो सुरक्षित राखल जाए। ‘कागचक सत्य अधूरा’क अर्थ कागच असत्य नहि; ओकर निर्माण, उद्देश्य, पाठक आ भौतिक परिस्थिति बुझबाक कर्तव्य अछि।

## यन्त्रक स्वामित्व आ कबड्डीक साँस : अगिला संकटक पूर्वाभास

सातम नियम तकनीककेँ साधन मानैत अछि, स्वामी नहि। नाम बचाबएवला उपकरण उपयोगी, अधिकार हरण करएवला अनुप्रयोग आलोचनायोग्य। आठम नियम कबड्डीक साँस सँ निकसल—सीमा पार करू, मुदा संगी छोड़ि नहि। कथा एतय स्थानीय खेलक नियमकेँ वैश्विक व्यापार, विदेशी शोध आ भविष्यक ग्रह-परियोजनाक नैतिक माप बनबैत अछि।

प्रतीकक ई विस्तार कल्पनात्मक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि; तथापि प्रत्येक पार कएल सीमा अन्यायपूर्ण नहि, प्रत्येक विदेशी प्रयोग दोषपूर्ण नहि। नियमसभक वास्तविक मूल्यांकन तखन सम्भव हएत जखन बाढ़ि, अनुपस्थिति आ पुनःआबएवला धनक प्रस्तावक समय ई कतेक प्रभावी रहैत अछि।

# अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

## अपराधीकेँ केन्द्रमे नहि बैसाएब : सभाक निर्णय

नामक संविधानक बाद सभा निर्णय करैत अछि जे बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ आ ब्रूमकेँ मंचपर नहि बजाओल जाए। किछु युवक सार्वजनिक आरोप चाहैत अछि, किछु स्त्री पुनःओहि चेहरासभकेँ देखबाक बोझसँ बचबाक आग्रह करैत छली। अनन्या तेसर बाट चुनैत छली—पीड़ितक नाम पहिने, प्रभावशाली पात्रक अनुपस्थिति सेहो दर्ज। ई निर्णय कथा-कला दृष्टिसँ विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण खलनायकक प्रदर्शन स्वयं पीड़ितक आवाजकेँ हाशियापर धकेलि सकैत अछि।

कादम्बरी सभा आ औपचारिक अदालतक उद्देश्य अलग रखैत अछि। सार्वजनिक स्मृति-सभामे मंच नहि देब एक निर्णय; कानूनी अभियोगमे प्रतिपक्षक उत्तरक अधिकार दोसर। एकर भेद बिनु आलोचना पूर्ण नहि।

## अभावक दार्शनिक शब्द आ सामाजिक दूरी

अनन्या ‘अनुपस्थिति’केँ दर्ज करबाक बात नव्य न्यायक अभाव-विचारसँ जोड़ैत छली। किन्तु कोनो व्यक्तिक सभा-मंचपर नहि बैसल रहब प्रत्यक्ष तथ्य, ओहि अनुपस्थितिक नैतिक अर्थ सामाजिक अनुमान अछि। एतय प्रमाणक कठोर परिभाषा आवश्यक अछि। सत्यव्रत लिखैत छथि जे प्रभावशाली लोक नहि बजाओल गेलापर पीड़ितक स्वर बढ़ल। ई साहित्यिक प्रसंगक भीतरक फल अछि, सार्वभौमिक तथ्य नहि।

यथार्थमे कखनो अभियुक्तक सार्वजनिक उपस्थिति पीड़ितकेँ भयभीत करए सकैत अछि, कखनो पारदर्शी प्रतिपरीक्षणक लेल जरूरी होइत अछि। पाठ एक विशिष्ट सामुदायिक सभाक प्राथमिकताकेँ कथा बनबैत अछि।

## न बोलाओल लोकक अलग-अलग प्रतिक्रिया

बटुकनाथ दू भाषण तैयार रखैत अछि, चन्द्रपाल लाइव गवाहीक आशामे अनुप्रयोग देखैत अछि, राघव कोडित सन्देशक प्रतीक्षा करैत अछि, लाउ अपनाकेँ किनारपर राखल अनुभव करैत अछि आ ब्रूम निधि-ब्राण्डविहीन सभा देखिकऽ चकित होइत अछि। एहि पाँच अलग प्रतिक्रियासँ शक्तिक पाँच जाल भिन्न रूपमे उघड़ैत अछि। समांतर दृश्य-विधान अध्यायक उपलब्धि अछि।

अपराधीसभ अनुपस्थित छथि, तथापि कथाकारक दृष्टि हुनकर कोठलीसभमे जाइत अछि। ई जानि-बुझि रचल विरोधाभास अछि: मंच पीड़ितक, मुदा पाठककेँ प्रतिपक्षीक मानसिक दुनिया सेहो देखाओल जाइत अछि।

## पाथर सँ छाह भगएबाक अलौकिक दृश्य

राति अपराधीक छाहजेकाँ आकृति सभा-दिशा बढ़ैत अछि; बच्चासभ नामक पाथर रखिते ओ पाछाँ हटैत अछि। एकरा वास्तविक मनोवैज्ञानिक बाधाक पुरावली नहि, नामक सामूहिक स्मृतिद्वारा भयकेँ सीमित करबाक अद्भुत दृश्य बुझबाक चाही।

अध्याय संसदीय नियम नहि रचैत, सामुदायिक सभाक मर्यादा रचैत अछि—पीड़ितक स्वर सुनबाक पहिल अधिकार। ई अन्तर रचनाक विवेकपूर्ण अध्ययन लेल अपरिहार्य अछि।

# अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह

## कटल गाछिक लहरदार छाह : स्मृतिक नब भूगोल

ठूँठक शरीर कटि चुकल, मुदा दुपहरियामे ओकर छाह असामान्य रूपसँ नमहर पसरैत अछि। छाह कमला-बलानक पुरान धाराक दिशामे लहरदार रेखा बनबैत अछि। आरुणिक अभियान्त्रिक मापनक सम्भावना आ अनन्याक नामक पाथर रखबाक क्रिया दू ज्ञान-पद्धतिकेँ सोझाँ आनैत अछि। ई भौतिक प्रकाश-विज्ञानक स्थापित घटना नहि; कथा-जगतमे स्मृति देहसँ अलग भऽ कऽ भूगोल बनि रहल अछि।

गाछि विश्राम दैत छल; कटल ठूँठक छाह उत्तरदायित्व जगबैत अछि—बाक वाक्यमे उपन्यासक सामाजिक-दर्शनक सार देखाइत अछि।

## खेलक नियम आ मोन सँ नाम दोहराएब

छाहक सीमान भीतर बच्चासभ ‘उपस्थित’ बजैत छथि आ बाहर आबि एक नाम मोन सँ दोहरबैत छथि। जे नाम बिसरि जाए, ओकरा फेर भीतर जाएबाक पड़ैत अछि। एतय खेल विजय-पराजयसँ हटि स्मृतिक व्यायाम बनैत अछि। कबड्डीक पुरान साँसक शर्त सामाजिक उत्तरदायित्वक अभ्यास बनैत अछि।

एहन खेलक कल्पनात्मक शक्ति स्पष्ट अछि, मुदा वास्तविक अनाम मृतकक पहिचान करबाक लेल नामक शुद्ध उच्चारणक संग दस्तावेज, परिवारक सम्बन्ध आ मौखिक स्रोतक जाँच चाही। कण्ठस्थ स्मृति प्रामाणिक संग्रहणक एक सहयोगी विधि होइत अछि, एकमात्र आधार नहि।

## कलम, अधूरा नाम आ बाहरी रेखाक न्याय

बटुकनाथक संतान पुरान कलम लऽ कऽ अबैत अछि; अनन्या पूछैत छली जे दोषी कलम अछि कि ओकर प्रयोग करएवला हाथ। कलम नामक पाथरक बराबर नहि, पाछाँ माटिपर

राखल जाइत अछि। चन्द्रपालक प्रतिशत बनैत अधूरा नामक कागच सेहो छाहक बाहरी रेखापर राखल जाइत अछि। वस्तुक एहन स्थान-विन्यास सामाजिक प्रतिष्ठाक तर्कसँ भिन्न नैतिक व्यवस्थाक प्रतीक अछि।

सन्तानक पहिचानपर पूर्व प्रश्न एतयो विचारणीय अछि—अध्याय ७९मे ‘बेटा’, ८०मे तारिणी बेटी; एहि अध्यायमे सामान्य ‘संतान’ कहबाक कारणेँ विरोधाभास स्वतः हल नहि भेल। मूल पात्र-पञ्जी मिलान जरूरी अछि।

## छाँहक प्रकाश आ विधिक जाँचक सीमा

रातिमे सेहो छाँहक चाँदी-जेकाँ चमक रहल अद्भुत दृश्य सामाजिक स्मृतिक निरन्तरता सूचित करैत अछि। सत्यव्रत चप्पल उतारि सम्मानक संकेत दैत छथि। ब्रूम, राघव आ लाउ अपन-अपन बन्द उपकरणमे छाह अनुभव करैत छथि। एहि समांतर चित्रसँ ठूँठक उपस्थिति आर्थिक शक्ति द्वारा नियन्त्रित स्थलसँ दूर धरि पसरैत अछि।

छाहक रूपक विशिष्ट अछि, मुदा एहन नैतिक चेतावनी अहाँकेँ संस्थागत प्रत्यक्ष परिणामक बदला नहि देत। पाठक लेल प्रश्न ई रहैत अछि जे असली बाढ़ि आएलापर नाम-पाठक नियम कतेक उपयोगी सिद्ध होयत।

# अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि

## कथा-प्रतीकसँ वास्तविक आपदा-व्यवहार धरि

कमला-बलानक पानि फेर चढ़बाक सूचना अध्यायक आरम्भसँ वातावरण बदलि दैत अछि। भीजल कादो, टूटल बाँस, बिजली, मचान आ पशु-बचावक चिन्ता सामूहिक स्मृतिक विमर्शकेँ ठोस आपदा-प्रबन्धनक संकटसँ जोड़ैत अछि। बच्चासभ पहिने नामक रजिस्टर, पाथर आ कोंपल बचएबाक योजना बनबैत छथि। मुदा घर, जीवित व्यक्ति, औषधि आ रास्ताक सुरक्षा सेहो अत्यावश्यक अछि; साहित्यिक रूपमे स्मृति-धरोहरक रक्षा एहि मानवीय प्राथमिकतासँ जुड़ल रहबाक चाही।

उपन्यासक कथात्मक उपलब्धि ई जे बाढ़ि केवल भयक पुनरावृत्ति नहि; पहिनुक नैतिक नियमसभक वास्तविक परीक्षा बनि अबैत अछि।

## यन्त्रक ‘उपवास’ आ आपदा-सूचनाक सावधानी

पूर्व अध्याय ८७मे मोबाइलक स्वैच्छिक विराम छल, एतय देविका आ निशान्त जरूरी खबर लेल ओकर नियन्त्रित उपयोग करैत छथि। ई कथाक आत्मसुधार अछि: यन्त्र स्वयं दोषी नहि, ओकर उपयोगक सन्दर्भ महत्त्वपूर्ण अछि। चन्द्रपालक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग सहायता आ दानक बहाना लऽ कऽ फेर सक्रिय होइत अछि। देविकाक चेतावनी कि जे लिंक नाम माँगय ओकर नाम पहिने पूछू—आपदा-समयक डिजिटल ठगीक भयक सटीक साहित्यिक रूप अछि।

कथा वास्तविक आपदा-परामर्शक दस्तावेज नहि; तथापि सूचना-स्रोतक परीक्षण, निजी विवरणक रक्षा आ सामुदायिक सहयोगक नैतिक प्रश्न उठबैत अछि।

## जलरोधी थैली, कण्ठस्थ नाम आ अधूरा सुननाइ

मीरा स्त्रीसभक संग पन्नासभ जलरोधी थैलीमे रखैत छली, प्रत्येक नामक अधिकार परिवारसँ जोड़ैत छली। विदेशी शोध-दलक युवती कैमरा छोड़ि कागच बचएबाक श्रममे हाथ बँटबैत छली। गोपक नकल-संरक्षण आ अनन्याक कण्ठस्थ नामक प्रस्ताव संयुक्त रूपमे अभिलेखक बहुस्तरीय रक्षाक सम्भावना खोलैत अछि। सत्यव्रत नाम, मौन, अपराधक संग ‘अधूरा सुननाइ’क चौथ बण्डल बनबैत छथि—ई अपूर्णताक संवेदनशील स्वीकृति अछि।

एकहि संस्करणक प्रतिलिपि वा केवल मौखिक स्मृतिपर निर्भर रहब जोखिमपूर्ण अछि। कागच, सुरक्षित डिजिटल प्रति, परिवारक सहमति आ अनेक स्थानमे संरक्षणक विचार एहि दृश्यसँ विकसित कएल जा सकैत अछि।

## पुरान पुलक उत्तरदायित्व आ बाढ़िक नब दोहन

पुरान पुलक पाया पर पानिक धक्का आवबाक सम्भावना आरुणि देखैत अछि। एतय पूर्व औद्योगिक शोषण आ वर्तमान प्राकृतिक संकट एकहि स्थलपर भेटैत अछि। बाढ़िमे घरक भीत खसब, राहत-सामग्री बहब आ आपदाकेँ नब लाभक अवसर मानबाक प्रस्ताव कथा केँ असुविधाजनक यथार्थ दैत अछि।

उपन्यासक जादुई छाह आ वास्तविक बाढ़ि-हानिक दू स्तर एतय साथ उपस्थित अछि। बाढ़ि ‘शुद्धि’क केवल सुन्दर रूपक नहि; ओ जान-मालक संकट अछि। एहि कठोर भेदकेँ लेखक जतेक समय दैत अछि, ओतेक कथाक सामाजिक उत्तरदायित्व बढ़ैत अछि।

# अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी

## नदीक देह आ भयक पुनर्परीक्षा

बाढ़िक दोसर राति पानिमे कारी लमछर रेखासभ उठैत अछि आ गोहि सभक आकृति बनैत अछि। ठूँठ लग नामक पाथर आधा डूबल रहितहुँ अक्षर ऊपर छैक। देह पहिने ठंढा हिलकोर अनुभव करैत अछि, आँखि बादमे जीवक आभास पबैत अछि। ई इन्द्रियक्रम कथाकारक सफल शिल्प अछि: पाठक देखबाक पहिने उपस्थितिक डर महसूस करैत अछि।

लोक पाछाँ हटैत छथि, मुदा अनन्या गोहिक चाल, साँस आ गोल बनबाक क्रम पर ध्यान देबाक कहैत छली। भयक स्वतः प्रतिक्रिया सँ निरीक्षणक विवेक दिस गति कथाक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अछि। तथापि वास्तविक वन्यजीवक नजदीक मानव-सुरक्षा अनिवार्य; कादम्बरीक अलौकिक प्रतीककेँ व्यवहारिक सुरक्षा-निर्देश नहि मानब।

## गज-ग्राहक पुनर्पाठ : हिंसा, सीमा आ मुक्ति

बड़ गोहि कटल जड़ि लग रुकैत अछि; बा ओकरा केवल शिकारक जीव नहि, सीमाक पहरुआ बुझैत छली। पुराणक गज-ग्राह एतय पुनःआविष्कृत होइत अछि—ग्राहक पकड़ब सदा केवल दुष्टता नहि, जीवन-मृत्यु आ मुक्तिक सीमाक असुविधाजनक अनुभव सेहो। एहि पुनर्पाठसँ गज-ग्राहक पुरान श्वेत-श्याम नैतिक विभाजन जटिल बनैत अछि।

गोहि प्राकृतिक शिकारी छथि; मानव दुःखक प्रतीक भऽ जेबाक कारण वास्तविक पर्यावरणीय व्यवहार बदलि नहि जाइत। लेखकक कथाक भूत-लोक आ नदी-जीवक जीववैज्ञानिक दुनियाँक भेद रखलासँ पाठक प्रतीकक शक्ति अधिक स्पष्ट बुझि सकैत अछि।

## भोरक घाट आ प्रतिरोधक अगिला अर्थ

भोरसँ पहिने गोहि नजरिसँ ओझल भऽ जाइत अछि। लोक न पाथर फेकैत अछि, न पूजा करैत अछि; घाट साफ करैत अछि। ई सान दृश्य नदीक संसर्गसँ निकलल उत्तरदायित्वक श्रेष्ठ उदाहरण अछि। भयक अनुभव पाछाँ व्यवहारक विनम्र देखरेख मे परिणत होइत अछि।

ईराकेँ समुद्रपारसँ नब परियोजनाक सन्देश पहुँचैत अछि। जल-सुरक्षा आ भविष्य-निवासक नामपर स्मृति-क्षेत्र कीनबाक प्रस्ताव लाउ, ब्रूम आ चन्द्रपालक पहिनुक शक्ति-जालक सम्भावित पुनरागमन देखबैत अछि। कादम्बरी बाढ़िक बाद कथाकेँ समाप्त नहि करैत; लोभ प्राकृतिक संकटकेँ सेहो अवसर बनए सकैत अछि, एहि प्रश्नसँ अगिला चक्र खोलैत अछि।

## पानि बिकत कि स्मृति बचत : अध्यायक समेकित निर्णय

अनन्याक प्रश्न जे आब लोक पानियो कीनए चाहत, समकालीन पर्यावरणीय न्याय आ सांस्कृतिक स्वायत्तताक सेतु अछि। पानि, स्मृति आ भूमि सार्वजनिक हितक नामपर निजी नियन्त्रणमे जा सकैत अछि; एहि सम्भावनाक विश्लेषण कादम्बरीक दीर्घ आर्थिक-आलोचनाकेँ नब दिशामे बढ़बैत अछि।

आख्यानक सामर्थ्य इन्द्रियप्रधान नदी-वर्णन, मिथकीय रूपान्तरण आ समुदाय-केंद्रित प्रश्नमे अछि। सीमा ई जे नब प्रस्तावक आर्थिक, पर्यावरणीय आ विधिक विवरण आगाँक अध्यायमे परीक्षण चाहैत अछि। कथापात्रक नाम जोड़ल गेल मात्रसँ वास्तविक स्वामित्व अथवा दोषसिद्धि स्वतः स्थापित नहि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ९०–९४

## आचार-पत्रसँ बाढ़िक परीक्षण धरि

अध्याय ९०मे आठ स्थानीय नियम बनैत अछि। ९१मे पीड़ितक सभामे प्रभावशाली प्रतिपक्षीकेँ केन्द्र नहि देबाक चयन कएल जाइत अछि। ९२मे ठूँठक छाह स्मृतिक नाम-बोधक नया मैदान बनैत अछि। ९३क वास्तविक बाढ़ि नाम बचएबाक आ जीवित लोकक रक्षा करबाक कठिन प्रश्न आनैत अछि। ९४मे गोहि सभक वापसीक मिथकीय दृश्य पुरान भयक नब अर्थ रचैत अछि आ जल-सुरक्षा परियोजनाक व्यापारिक खतरा उघाड़ैत अछि।

ई पाँच अध्यायक गति नियम–सुननाइ–स्मृति-अभ्यास–आपदा–नव पूँजीगत संघर्षक क्रम बनैत अछि। नैतिक घोषणाक शुद्धता आपदा-समयक उपयोगितासँ जाँचल जाए, ई प्रमुख आलोचनात्मक निष्कर्ष अछि।

## समुदाय, पीड़ित आ अधिकारक भिन्न स्तर

नामक संविधानक स्थानीय नैतिक अधिकार, सभामे निमन्त्रणक स्वायत्तता, बाढ़िमे मानवीय जीवनक प्राथमिकता आ नदीक प्राकृतिक सीमा—ई सभ एक प्रकारक अधिकार नहि। एकर बीच सन्तुलन जरूरी अछि। स्त्रीक निजी अनुभव स्वैच्छिक रहबाक चाही; अभियुक्तक विधिक उत्तरक अधिकार अदालतमे रहत; बाढ़िक बचावमे असहाय जनक तात्कालिक सुरक्षा सर्वोपरि होएत।

कथाकारक उपलब्धि अलग संस्थासभकेँ सामूहिक स्मृतिक एक केन्द्रपर भेटाएब अछि। दूषणक सम्भावना तखन जे साहित्यिक नैतिकता वास्तविक कानूनक स्वतः विकल्प मानल जाए।

## प्रमाण, अद्भुत आ पर्यावरण

ठूँठक छाहक लहर, अन्हारमे ओकर इजोत आ गोहि सभक सीमापहराक दृश्य कादम्बरीक अद्भुत स्तर छथि। बारिश, राहत, भासैत सामग्री, फाइल सुरक्षित रखबाक प्रयास आ ठेकाक शर्त तर्काधारित घटनाक स्तर पर बिचारयोग्य छथि। नव्य न्यायक प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्दक प्रयोग एही स्तरसभक परीक्षा करबाक विवेक विकसित करैत अछि, मुदा प्रतीकात्मक दृश्यकेँ वैज्ञानिक तथ्य नहि बनबैत।

पर्यावरणीय आलोचनामे नदीक वास्तविक जीव, पुल, भूमि आ मानव बस्ती सभक सम्बन्ध पढ़ब आवश्यक अछि। गोहि पर देवत्व वा दोषक अतिशयोक्ति दुनू प्राकृतिक सहजीवनक जटिलता घटबैत अछि।

## भाषा आ वस्तु-बिम्बक अनुक्रम

नियम लिखल पात, बाहर रखल खाली मंच, छाहपर रखल नामक पाथर, जलरोधी थैलीक बही आ बाढ़िक बीच गोहिक आँखि—ई पाँच भिन्न वस्तु-परिदृश्य सामाजिक अभिलेखक क्रमशः नव अवस्था खोलैत अछि। लोकगीतसभ संविधान, अनुपस्थिति, छाँह, बाढ़ि आ जीवक वापसीक स्वर विकसित करैत अछि।

एकहि प्रतीक अनेक बेर फेर आएलासँ आवृत्तिक खतरा अछि। मुदा एहि खण्डमे ओ प्रतीक स्थिति बदलिते अर्थ सेहो बदलैत अछि—ठूँठ पूर्व स्मारक छल, एखन बाढ़ि-संकटमे जीवित नाम बचएबाक केन्द्र। ई रूपान्तर कथा केँ गति दैत अछि।

## अगिला बैचक परीक्षण

अध्याय ९४क अन्तमे जल-सुरक्षा आ भविष्य-निवासक प्रस्ताव पूर्व पूँजीगत शक्ति-जालक नब संस्करण बनैत अछि। अगिला ९५–९९ अध्याय पढ़ैत काल नब प्रस्तावक अधिकार, प्रभावित परिवारक स्वीकृति, पुरान दान-पत्रक सम्बन्ध आ वास्तविक आपदा-सहायताक व्यवस्था जाँचब जरूरी रहत।

एहि पाँच अध्यायक समेकित निर्णय ई अछि जे जीवनक सुरक्षा, नामक गरिमा, आर्थिक उत्तरदायित्व आ प्राकृतिक सीमाक मान्यता अलग-अलग कर्तव्य होइतहुँ परस्पर निर्भर छथि। कृति जँ एहि तनावकेँ स्वतंत्र पात्रगत मतभेदक माध्यमसँ बढ़ाओत, तँ ओकर नैतिक तर्क अधिक समृद्ध होएत।

# अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

## बाढ़िक मचान आ खरीदबाक सीमा

गोहि सभक वापसीक बाद कमला-बलानक पानि गामक देहरी छूबैत रहैत अछि। बच्चासभ नाम-पाथर, पात आ हरियर कोंपल बाँसक मचानपर राखैत छथि। एहि आपदा-परिदृश्यमे लाउ किन-हंगक ‘अन्तिम सौदा’क प्रयत्न एतेक कारणेँ तीक्ष्ण अछि जे सामाजिक स्मृतिक वस्तु अब स्वच्छ, स्थिर स्मारक नहि, संकटग्रस्त जीवनक सहारा अछि। लाभक प्रस्तावक सोझाँ कागचक अधिकार आ लोकक सुननाइ बीच विरोध उभरैत अछि।

लाउ पुल, देह, दवाई आ स्मारककेँ करारक विषय मानैत आयल अछि; किन्तु बच्चासभक नाम-पहराकेँ ओकर संख्यात्मक व्यवस्था पूर्णतः अपन सीमा भीतर नहि आनि पबैत। नामक ‘कीमत’क प्रश्न एहि कारणेँ वाणिज्यिक सौदाक मूल आधार पर चोट करैत अछि।

## बाल्यकालक नामक घाव आ व्यवसायिक चयन

लाउ अपन पासपोर्टमे बचपनक नाम देखैत शरणार्थी शिविरमे गलत क्रमांकसँ पुकारल जेबाक अपमान स्मरण करैत अछि। एहि निजी इतिहाससँ ओकर गुप्तता आ नियन्त्रणक लालसा कने बुझबामे अबैत अछि। मुदा उपन्यास स्पष्ट भेद रखैत अछि: भोगल अपमान दोसरा लोकक नाम छीनबाक निर्णयक कारण बुझाएबामे सहयोग कऽ सकैत अछि, ओकरा न्यायसंगत नहि बनबैत।

एहि स्थलपर पात्रक मानसिक जटिलता पहिनुक बहुतेक धन-केंद्रित दृश्यसँ अधिक मानवीय अछि। कथा न लाउकेँ शुद्ध राक्षस बनबैत अछि, न ओकर दुखकेँ निर्दोषताक प्रमाण। आलोचनामे ई द्वैध अक्षुण्ण रहबाक चाही।

## दानक अवशेष आ नाम-पाठक शर्त

लाउक प्रस्तावक चर्चा आर्थिक क्षतिपूर्ति, संस्था, नियंत्रण आ स्मृति-संग्रहणक अधिकार धरि पहुँचैत अछि। मुदा सामुदायिक पक्ष लेल प्राथमिक शर्त नामक पूर्ण सुननाइ रहैत अछि। धनक प्रस्ताव स्वीकारब अथवा अस्वीकारब तत्काल नैतिक सरलीकरणसँ संभव नहि—बाढ़िक लोकक वास्तविक राहत, पीड़ितक सहमति आ अधिकार-हस्तान्तरणक शर्त जाँचे बिना समाधान नहि।

सत्यव्रतक मुस्कान आ मीराक सुननाइ-संबंधी कथनक अर्थ ई नहि जे कानूनक दण्ड पूरा भऽ गेल। साहित्यिक रूपमे आर्थिक शक्तिधारी व्यक्ति कैं धनहीन सुननाइक समयमे बैसाएब महत्त्वपूर्ण प्रतिवाद अछि; वास्तविक न्याय लेल क्षतिक हिसाब आ सुधारक काज जरूरी रहत।

## अंतिम सौदाक असफलता आ बटुकनाथक आगमन

लाउक कागचक विफलता पाछाँ बाढ़िक बीच बटुकनाथक छाहजेकाँ आगमन अगिला अध्यायक नाटकीय संधि अछि। जाहि व्यक्तिक पेशा सुनवाईकैं टारब छल, ओ स्वयं नाम सुनबाक अनुमति माँगए अबैत अछि। एहि क्षणमे न्याय-प्रक्रियाक समयदण्ड उलटि जाइत अछि।

अध्यायक नाम ‘अंतिम सौदा’ अन्तिम नैतिक निर्णयक घोषणासँ अधिक वस्तु पर नियंत्रणक निरर्थकता दर्शबैत अछि। मूल घटनाक वित्तीय दावासभ कथाजगतक हिस्सा छथि; वास्तविक संस्थाक दोषसिद्धि अथवा बाहरी धनक प्रवाहक निश्चित प्रमाण एहि आलोचनासँ नहि बनैत।

# अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

## देर सँ सुननाइ आ समयक अपूरणीय हानि

बटुकनाथ गढ़ नारिकेलमे राति भरि नाम-पाठ सुनैत अछि। जकरा लेल न्यायालयक तारीख पेशागत औजार छल, ओकरा आब बीतल समयक नैतिक भार अनुभव होइत अछि। क्षमा माँगबाक क्षण कथा विजय-घोषणा नहि बनबैत; पानि उतरबाक थाकनि, भीजल पाथर आ प्रतीक्षा करणिहार घरसभक आवाज ओकर पाछाँ रहैत अछि।

एहि नाटकीय परिवर्तनमे समयक विशिष्ट प्रश्न उठैत अछि—न्यायिक विलम्बक कारण जे जीवन-क्षण, शिक्षा, उपचार वा अन्तिम भेंट हेरा गेल, ओ क्षमा शब्दसँ नहि घुरत। ताहि लेल देरसँ माँगल क्षमा स्वतः समाधान नहि, सुधारक दायित्वक आरम्भ अछि।

## खाली हाथक भार : पदक बदला श्रोता

पूर्व अध्यायसभमे बटुकनाथ न्यासक अध्यक्षता, विधिक संरक्षण आ दानक रचना पर बल दैत छल। आब ओ ऊँच पदक बिना, श्रोता बनि लोकक बीच ठाढ़ होइत अछि। ओ आस्ते-आस्ते नाम, पीड़ा आ अपूर्ण न्याय सुनैत अछि। ई स्थान-परिवर्तन स्त्री-सभा आ नारिकेल पात पाठशालाक नियमसभसँ जुड़ैत अछि, जतय वरिष्ठतासँ अधिक जिम्मेदारी आवश्यक मानल गेल।

कथामे ‘खाली हाथ’क बिम्ब प्रभावी अछि: बाहरी अधिकार घटल, मुदा उत्तरदायित्वक बोझ बढ़ल। अद्भुत वातावरणक बावजूद साँच परिवर्तनक कसौटी भविष्यक व्यवहार अछि—अधूरा केस, खोएल समय आ परिवारक वास्तविक हितपर कदम।

## ‘अनाम’क उच्चारण आ कण्ठक कठिनता

अन्तिम नामक रूपमे ‘अनाम’ पढ़ल जाइत अछि। ई नाम ओ सभक प्रतिनिधि अछि जे फाइलसँ कटि गेल, नदीमे बहि गेल, डिजिटल अन्हारमे हेरायल अथवा जातिक कारण

अदृश्य कएल गेल। बटुकनाथ ‘उपस्थित’ बजए चाहैत अछि, मुदा पहिने स्वर अटकि जाइत अछि। एहि असफल उच्चारणमे अपराध-साझेदारीक दीर्घ मौनक देहधारी रूप अछि।

आखिरकार आवाज निकलैत अछि, मुदा ई आवाज एखन निर्दोषताक मुहर नहि। साक्षी बनबाक पहिल क्रिया आ अपने पूर्व दायित्वक विशिष्ट स्वीकार अलग चरण छथि। एहि भेदक कारण रचनाक क्षमा-विमर्श अर्थपूर्ण बनैत अछि।

## लोकगीतक संदेश आ शिल्पगत विसंगति

अध्यायारम्भक लोकगीतमे अनजान धन, अपन खाता, वित्तीय सावधानी आ ‘म्यूल’ सन शब्द आबैत अछि। अध्यायक मुख्य घटना बटुकनाथक विलम्बित क्षमा अछि; गीतमे अगिला चन्द्रपालक आर्थिक प्रकरणक पूर्वाभास मिलैत अछि। ई उपन्यासक अध्यायान्तर-सेतु रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा गीत आ समीक्ष्य अध्यायक विषयक आंशिक असंगति सेहो चिह्नित करबाक चाही।

अध्याय अन्तमे चन्द्रपालक ‘माध्यम’क बचावक उल्लेख करैत अछि, जाहिसँ ९७क म्यूल-खाताक प्रसंग बनैत अछि। एहि क्रममे क्षमा, कागज आ वित्तीय दायित्वक बहस परस्पर जुड़ैत अछि।

# अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

## खाताक माध्यम आ व्यक्तिक कानूनी-नैतिक जिम्मेदारी

चन्द्रपाल अपन पुरान खाता-बही, बन्द मोबाइल आ लेन-देनक चिह्न देखैत बुझैत अछि जे पैसा दोसराक खातासँ घुमाएबामे ओकर भूमिका निष्पक्ष सन्देशवाहकक नहि छल। ‘म्यूल अकाउण्ट’ (Mule Account)क अवधारणा कथामे आर्थिक प्रवाहक ओ माध्यम बुझबैत अछि जतय वास्तविक लाभार्थी आ लेन-देनक स्रोत जानि-बूझि नुकाओल जा सकैत अछि। मुदा कोनो वास्तविक व्यक्तिक अपराध प्रमाणित करबाक लेल लेन-देन, सहमति, जानकारी आ कानूनक विशिष्ट तत्त्वक जाँच आवश्यक रहत।

कथाकारक उपलब्धि ई जे रकमकेँ निर्जीव संख्या मानबाक भ्रम तोड़ि ओकरा प्रभावित परिवारक जीवनसँ जोड़ैत अछि। ‘माध्यम’क शब्द नैतिक जिम्मेदारीसँ स्वतः मुक्ति नहि दैत।

## नाम बिगाड़ल बालक आ नाम बिगाड़निहार व्यापारी

चन्द्रपाल अपन पहिल विद्यालय-दिनक अपमान स्मरण करैत अछि, जखन शिक्षक नाम बिगाड़ि पढ़लनि आ कक्षा हँसल। एहन पीड़ा जाननिहार व्यक्ति पछाति हजार लोकक नाम खाता, प्रतिशत आ पहिचान-संख्यामे बदलि देलक। ई आत्मविरोध अध्यायक मनोवैज्ञानिक सघनता बढ़बैत अछि।

स्मरण पात्रकेँ निर्दोष नहि करैत; बल्कि ओकर आत्म-छलक तर्क कमजोर करैत अछि। उपन्यास एतय पीड़ितक अतीत आ अपराधमे सहभागी वयस्कक काजक भेद स्पष्ट करैत अछि। ई साहित्यिक आलोचना लेल महत्त्वपूर्ण, किएक तँ लेखक सहानुभूतिक माध्यमसँ जबाबदेहीक प्रश्न मेटाबैत नहि।

## तीन बही, दू फोन आ माटिक धूलि

बन्द कोठलीमे तीन पुरान बही, दू फोन, फाटल मोहर आ चन्ना गाछीक धूलिक कण रचनाक वस्तुपरक व्यवस्था बनबैत अछि। कागजक हिसाब आ पाथरक धूलि एकहि मेजपर आबैत अछि। डिजिटल पैसा आ भौतिक श्रमक बीच दूर बुझाइत सम्बन्ध एहि सान दृश्यसँ स्पष्ट होइत अछि।

चन्द्रपाल पानिमे ठेहुन धरि चलि ठूँठ दिस अबैत अछि। ओकर अपन नामक संग लाभक प्रतिशत सेहो दर्ज करबाक इच्छा महत्त्वपूर्ण अछि—पश्चात्ताप जँ वास्तविक हो तँ ओ अपना आर्थिक भागीदारीकेँ अलग नहि करि सकैत। मुदा ई कथापात्रक घोषणा अछि; स्वयं दंडनिर्धारण नहि।

## अनुभवसँ वित्तीय शिक्षाक सामाजिक प्रस्ताव

पूर्व लोकगीतमे अपन खाताक उपयोग, अनजान धनक प्रस्तावपर सावधानी आ परिवारमे वित्तीय ज्ञानक बात उठल। कथा आर्थिक ठगीक जालकेँ केवल महानगरक अपराध-रहस्य नहि राखि गामक सामान्य निर्णयक प्रश्न बनबैत अछि। नान्हि लाभ, अनजान करार आ अघोषित खाता व्यक्तिक जीवनकेँ जटिल जोखिममे राखि सकैत अछि।

तथापि पीड़ितक अर्थ-सुरक्षा केवल व्यक्तिगत सावधानी पर नहि छोड़ल जाए। बैंकिंग प्रक्रियाक पारदर्शिता, शिकायतक मार्ग, दोषक निष्पक्ष अनुसन्धान आ सामूहिक सहायता जरूरी अछि। अध्यायक सामाजिक संदेश एहि व्यापक संस्थागत प्रश्नसँ जुड़ला पर अधिक सशक्त बनैत अछि।

# अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

## मिटाएल संदेश आ माएक अन्तिम स्वर

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक जीवन मेटाएबला संकेत, आधा आदेश आ अभिलेख नष्ट करबाक अभ्याससँ बनल छल। मुदा ओकरा अपन माएक अन्तिम रेकर्डिंग अजानमे मेटि देबाक दुख मोन पड़ैत अछि। ई निजी अनुभव कथाकार बड़ सूक्ष्म ढंगसँ राखैत अछि—जे व्यक्ति स्वरक नष्ट होएबाक पीड़ा जनैत अछि, वैह दोसराक पुकार मेटाबैत रहल। ई विरोध तकनीकक दोषसँ अधिक सुनबाक नैतिक विफलताक व्याख्या करैत अछि।

माएक आवाजक अनुपस्थिति अपराधक कारण स्वीकार करबाक एक मानसिक द्वार अछि, मुदा पहिनुक असहाय-पीड़ा राघवक पुरान काजक क्षमा नहि। स्मृतिक पीड़ा आ जाबदेहीक प्रमाण अलग रहत।

## चन्द्रपालक प्रतिशतसँ राघवक संकेत धरि

अध्याय ९७मे चन्द्रपाल आर्थिक माध्यमक भूमिका पर प्रश्न करैत अछि; ९८मे राघव ओकर संदेश-प्रणालीक जोड़ देखैत अछि। बटुकनाथक तारीख, लाउक लाभ आ ब्रूमक दानक भीतर राघवक संकेत कतेक बेर चलल, एहि बातक मानसिक अनुभव ओकरा होइत अछि। कथामे ओ स्वयं मुख्य आयोजकसँ अधिक गुप्त संचारक ‘साँस’ बनैत अछि। ई रूपक सुस्पष्ट अछि: सन्देश केवल सूचना नहि, काजकेँ सम्भव बनएबाक साधन होइत अछि।

लेकिन सहयोग, ज्ञान, उद्देश्य आ लाभक स्वतंत्र स्तर छोड़ि केवल रूपकसँ विधिक दोष निर्धारित नहि करब चाही। कृति जे प्रश्न उठबैत अछि, ओ वास्तविक जाँचक प्रेरणा बनि सकैत अछि, स्वयं जाँचक विकल्प नहि।

## फोनसँ निकलल हरियर पात : अभिलेखक अविनाशिता

सन्देश हटाएबाक पुरान क्रियाक बदला स्क्रीनपर कोंपलक हरियर रेखा उभरैत अछि, पात बनैत अछि आ अन्ततः चन्ना गाछीक ठूँठ धरि कथा पहुँचैत अछि। डिजिटल उपकरणक भीतर जैविक पातक ई अद्भुत दृश्य नाम-स्मृतिक रूपकात्मक अमिटता रचैत अछि। यथार्थमे डिजिटल सामग्री मिटि सकैत अछि, तथा कतेको नकलो अदृश्य रहि सकैत; लेखकक दृश्य साहित्यिक चेतावनी अछि, तकनीकी फॉरेन्सिक प्रमाण नहि।

अनन्याक नाम-पहरा आ सत्यव्रतक बहीक संग पातक सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। मुख-मौखिक, डिजिटल आ प्रकृतिक अभिलेख तीनू कथा-दृष्टिमे जुड़ैत अछि।

## पहिल स्पष्ट वाक्य आ अधूरी आत्मगवाही

राघव साधारण कागच पर लिखैत अछि जे ओकर चुप रखल बात अपराध छल। एहि पहिल पाँति पर हाथ थमि जाइत अछि। ई अधूरापन महत्त्वपूर्ण: कोडित जीवन जीबनिहार व्यक्ति पूर्ण सत्य सहजतासँ नहि लिखि सकैत। आत्मस्वीकृतिक प्रक्रियाकेँ लेखक अधूरा राखि आगामी गवाहीक आवश्यकता पर बल दैत अछि।

लोकगीत ‘मौनमे उपस्थित जन’ बिना जबरदस्ती स्वर निकालबाक नैतिकता चिन्हबैत अछि, मुदा राघवक मौन पीड़ितक भयजनित मौनसँ भिन्न अछि। इमानदार आलोचनामे एहि भिन्न अवस्थाकेँ एकहि करुण अर्थमे नहि मिलाएल जाए।

# अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

## सुनबाक ऋणक बाद साक्षीक अपन मौन

राघवक हरियर पातपर बचल संदेशसँ अनन्या प्रश्न उठबैत छली जे आत्मा खुलबाक साँच कसौटी गवाही देब अछि। सत्यव्रत अपन पुरान कागज मोड़ि-मोड़ि देखैत छथि; हुनका डर अछि जे सत्य बजला पर पद, मित्रता आ पहिनुक निर्णयक प्रतिष्ठा पर आघात पहुँचत। एहि निजी आशंकासँ अध्याय अधिकार-संस्थाक भीतर बैठल साक्षीक मौनक उत्तरदायित्व खोलैत अछि।

जन-संहिताक नियम जे सुननिहार अपन मौनक नामो लिखत, एतय व्यवहारमे उतरत अछि। न्याय लेल दोषीकेँ नामित करब जरूरी रहितहुँ तटस्थ देखनिहारक भूमिका पर प्रश्न आवश्यक अछि। तथापि चुप रहबाक सभ अवस्था नैतिक अपराध नहि—भय, सुरक्षा आ वास्तविक ज्ञानक सीमा सेहो विचारणीय अछि।

## गलती काटल कापी आ इतिहासक सुधार

अनन्याक रजिस्टरमे बच्चासभ गलती काटि सही शब्द लिखैत छथि। सत्यव्रत एहि अभ्याससँ बुझैत छथि जे गलती सुधारल पन्नाकेँ खराब नहि करैत, नहि सुधारब इतिहास खराब करैत अछि। ई अत्यन्त सान शिक्षणात्मक दृश्य अध्यायक आलोचनात्मक केन्द्र अछि। आत्मस्वीकृति ज्ञानक पुरान प्रतिष्ठाक विरोध नहि, ओकर साक्ष्याधारित संशोधन अछि।

कागचक तह, कलमक द्विधा आ पातक निबहब वस्तु-बिम्ब बनि समयक भार व्यक्त करैत अछि। कथा साक्षीकेँ नायकक मंच नहि बनबैत; ओ अपन पूर्व मौनकेँ लोकक सोझाँ जाँचेल जोड़ैत छथि।

## गंगेशक प्रमाण-विवेक आ जनसुनवाई

सत्यव्रत गंगेशक प्रश्न स्मरण करैत छथि। प्रत्यक्ष देखल घटना, सुनल कथन, अनुमानित सम्बन्ध आ स्वयं बीतल निर्णयक बीच विभाजन आवश्यक अछि। कादम्बरी न्यायकेँ व्यक्तिगत अपराध-बोधसँ आगे सार्वजनिक अभिलेखक परीक्षणक रूपमे देखबैत अछि।

आलोचना लेल ध्यान देबाक बात ई जे बाढ़िक हवा सँ पात नहि उड़ब अलौकिक घटना अछि; गवाहीक साहित्यिक अमिटताक प्रतीक बनैत अछि। सत्यव्रतक कथनक वैधानिक असर लेल बाहरी पुष्टिकरण, प्रतिपरीक्षण आ प्रक्रिया अलग आवश्यक।

## बच्चाक ‘उपस्थित’ आ अन्तिम गज-ग्राहक संधि

गवाहीक बाद बच्चासभ सामूहिक ‘उपस्थित’ बजैत अछि। गज-ग्राहक मिथकीय संघर्षमे बच्चाक हाथद्वारा हस्तक्षेपक लोकगीत अगिला अध्याय १००क सेतु अछि। ई शिल्पत: महत्त्वपूर्ण अछि—एक अधिकारीक बयानपर कथा समाप्त नहि, सामूहिक उत्तरदायित्वक नब दृश्य उठैत अछि।

सत्यव्रत एहि बैचमे जतेक सच स्वीकार करैत छथि, ओतेक पुरान विलम्बक क्षति स्वत: नहि मिटैत। ओकर पहिल काज अनसुना नामक रक्षा बनैत अछि। ई अनिश्चित, अपूर्ण सुधारक चित्र उपन्यासक दीर्घ नैतिक विमर्शकेँ अधिक विश्वसनीय बनबैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ९५–९९

## बाढ़िक सौदासँ विवेकक गवाही धरि

९५मे लाउ किन-हंग नामक सार्वजनिक स्मृति कीनबाक असमर्थताक सामना करैत अछि। ९६मे बटुकनाथ पुरान विलम्बक भार लऽ सुनब शुरू करैत अछि। ९७मे चन्द्रपाल आर्थिक माध्यमक भूमिका पहिचानबाक प्रयास करैत अछि। ९८मे राघव मेटाओल संकेतक नैतिक अर्थ स्वीकारब दिस बढ़ैत अछि। ९९मे सत्यव्रत अपन साक्षी-मौनकेँ सार्वजनिक प्रश्न बनबैत छथि। ई पाँच चरण बाहरी सौदासँ भीतरी उत्तरदायित्व, तकर बाद सार्वजनिक गवाही धरि एक क्रम विकसित करैत अछि।

तथापि पाँचू पात्रक परिवर्तन समान नहि। लाउक आर्थिक प्रस्ताव, बटुकनाथक विलम्ब, चन्द्रपालक खाता, राघवक संदेश आ सत्यव्रतक अधिकारी-मौन सब अलग प्रकारक व्यवहार छथि; ओकरा सामान्य क्षमा-वृत्तान्तमे मिला देब समीक्षा कैं कमजोर करत।

## पाँच वस्तु : सौदा-पत्र, खाली हाथ, बही, पात, गवाहीक पन्ना

लाउक कागज अधिकारक लालसा, बटुकनाथक खाली हाथ सत्ता-त्यागक शुरुआत, चन्द्रपालक पुरान बही आर्थिक मार्गक प्रश्न, राघवक हरियर पात मेटाओल सूचना पर स्मृतिक दावेदारी, आ सत्यव्रतक मोड़ल पन्ना सार्वजनिक सत्यक भयक दृश्यरूप अछि। वस्तु-प्रतीकसभ कथाक संस्था-आलोचना कैं अमूर्त विधान बनबाक बदला अनुभवगम्य रेखा दैत अछि।

लोकगीतसभमे देरक क्षमा, खाता-सावधानी, पातपर संदेश, मौन-उपस्थिति आ बच्चाक हाथक आशाक स्वर देखल जाइत अछि। कतिपय गीत अगिला अध्यायक विषयक पूर्वाभास आगाँ आनैत अछि, जकर क्रमक जाँच सम्पादकीय स्तरपर उपयोगी अछि।

## पीड़ितक क्षमा बनाम अपराधीक सुधार

सौदा अस्वीकार कएलाक बादो वास्तविक सहायता आवश्यक अछि; बटुकनाथ एक रात सुनलाक बादो विलम्बक घाव भरि नहि सकैत; चन्द्रपाल अपन प्रतिशत लिखलाक बादो खाताक प्रत्येक स्रोत स्पष्ट नहि कएलक; राघव एक पाँति लिखि रुकि जाइत अछि; सत्यव्रतक गवाही केवल आरम्भ अछि। एहि सभ उदाहरणक साझा शिक्षा ई जे नैतिक आत्मजागरण दण्ड, क्षतिपूर्ति आ संस्थागत सुधारक विकल्प नहि।

कादम्बरीक पात्रसभक अन्तरद्वन्द्व मानवीयता बढ़बैत अछि, मुदा पीड़ितक निर्णयाधिकार कम नहि कए। पीड़ित चाहे तँ क्षमा नहि देबाक अधिकार राखैत अछि। एहि भेदक कारण सुधारक संभाव्यता करुणा सँ जोगाएल रहैत अछि, दोष-मुक्ति नहि बनैत।

## नव्य न्याय आ कथित आर्थिक दावाक प्रमाण-सीमा

लोकगीतमे वित्तीय सावधानी आ उपन्यासमे खाता, प्रतिशत, संचार-जाल तथा दानक प्रयोगक विवरण अछि। एहिसँ साहित्यिक आर्थिक अपराधक कथा बनैत अछि; एहि विवरणकेँ वास्तविक कम्पनीक स्वामित्व वा विशिष्ट व्यक्तिक अपराधक बाह्य प्रमाण मानब अनुचित। प्रत्यक्ष अभिलेख, लेन-देनक क्रम, कथनक स्रोत, अनुमापक सीमा आ प्रतिपरीक्षणक प्रामाणिक प्रक्रिया अलग अछि।

इसी तरह पानिसँ बोलैत नाम, स्वचालित प्रतिशत आ मोबाइलसँ उगैत पातक अद्भुत दृश्य नैतिक-सत्यक रचनात्मक प्रतिमान छथि; यथार्थ विश्वमे प्रमाण-जाँचक विधि नहि। लेखकक शिल्प एहि अलग-अलग स्तरक तनावसँ बल पबैत अछि।

## अगिला अध्यायक प्रतीकात्मक समापन

९९क बच्चाक हाथक लोकगीत अध्याय १०० ‘गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ’क सीधा पूर्वाभास अछि। ई पहिल मुख्य खण्डक एक महत्त्वपूर्ण मोड़ बनि सकैत अछि, जतय व्यक्तिगत स्वीकारक कथा सामूहिक रक्षाक मिथकमे पुनःसंगठित होयत।

आगाँक समीक्षा लिखैत काल मूल अध्याय १००मे गज-ग्राहक संघर्षक वास्तविक कथा-क्रम, बच्चासभक हस्तक्षेप आ ओकर सामाजिक अर्थ स्वतंत्र रूपसँ पढ़ब चाही; केवल एहि बैचक लोकगीतसँ समापनक कल्पना नहि कएल जाए।

# अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

## मिथकक प्रश्न-पद्धति आ बचाबक उलटल अर्थ

गज-ग्राहक परिचित आख्यान कहला पर बा बच्चासभकेँ तैयार धार्मिक उत्तर नहि दैत छथि। अनन्याक प्रश्न—गज के आ ग्राह के—पर आरुणि फँसल प्राणी आ ओकरा पकड़निहारक सम्बन्ध देखबैत अछि; देविका तेसर पद जोड़ैत अछि, पुकार सुननिहार हाथ। मीराक चेतावनी, बिना अनुमतिक कथित उद्धार दोसर ग्राह बनि सकैत अछि, अध्यायक निर्णायक आलोचनात्मक वाक्य अछि। एतय मिथकक उद्धारक-सत्ता परिवर्तित भेल: मुक्तिक अधिकारी ऊपरसँ उतरनिहार चमत्कारिक व्यक्तित्व नहि, पीड़ितक कथन सुनबाक अनुशासन अछि।

रातिक परिदृश्यमे नाम-पाथरक बीच ‘जेकर नाम नहि भेटल’ लिखल पाथर केंद्रमे राखल जाइत अछि। ई व्यवस्थामे अनाम व्यक्ति खाली स्थान नहि, सभा आरम्भ करबाक आधार बनैत अछि। कथावाचक निरन्तर सुनबाक काजकेँ नायकत्वसँ ऊपर रखैत अछि। एहि मोड़पर लोकमिथकक पुनर्पाठ केवल रूपकात्मक अभ्यास नहि, जनसुनवाईक एकटा नैतिक रूपरेखा बनि उभरैत अछि।

## तीन पुकार : स्क्रीन, पुल आ देहक निजता

उज्ज्वलक माय डिजिटल धमकीक जालमे फँसल बेटाक पुकार देरिसँ सुनबाक पीड़ा कहैत छथि। ओहि पछाति पुलक पाया लग मृत्यु आ ठेकाक कागजमे बदलल मजदूरक नामक चर्चा अबैत अछि। आरुणिक टिप्पणी—‘ग्राह केवल जबड़ा नहि, भाषा सेहो होइत अछि’—संस्थागत अमानवीकरणक बिम्ब रचैत अछि। मृतकक संख्या, मजदूरीक पाँति आ ठेकाक जोखिमक शब्द व्यक्तिक अपूरणीय जीवनकेँ प्रबन्धकीय मापमे बदलि दैत अछि।

मीराक तेसर प्रतिपादनमे निजी छविक दुरुपयोग, प्रेमक अपमान आ लज्जाक सार्वजनिक दबाव ‘ग्राह’ बनैत अछि। एहि तीन खण्डमे कथाकार पीड़ाक भिन्न रूपसभकेँ एकसार नहि

करैत, बल्कि अपन-अपन सामाजिक तन्त्रक संग देखबैत अछि। डिजिटल ठगीक तकनीक, निर्माण-श्रमक असुरक्षा आ स्त्रीक निजताक प्रश्न परस्पर जुड़ैत छथि, मुदा एक-दोसरक विकल्प नहि बनैत। साहित्यिक प्रभाव ई जे पौराणिक जीवक दाँत संस्था, शब्द आ दृष्टिक रूप ग्रहण करैत अछि।

## अपराधीक भीतरक गज : आत्मस्वीकृति आ दण्डक अन्तर

बूढ़बा भूतक कथन जे अपराधीक भीतर सेहो फँसल गज भऽ सकैत अछि, सहानुभूतिक कठिन परीक्षा बनैत अछि। बटुकनाथ पहिने पद-उपाधि आ वंश बजैत अछि, अपन नाम ‘बटुक’ अबेरसँ कहैत अछि। चन्द्रपाल पहिने ‘कमिशन’ कहैत अछि; राघव कबड्डीक साँसक नियममे मुँह नहि खोलि पबैत। एहि सब दृश्यक उद्देश्य अपराधीकेँ पीड़ित घोषित करब नहि, ओकर आत्मपहिचानपर लोभ, पद आ गुप्त संदेशक कब्जा देखाएब अछि।

अनन्या चन्द्रपाल लेल लिखैत अछि—नाम कहब पर्याप्त नहि, नामक ऋण सुनब बाँकी। ई अन्तर्वाक्य कृतिक नैतिक सीमा रेखांकित करैत अछि। आत्मपरीक्षण दोषमुक्तिक प्रमाण नहि, पीड़ितक कथा सुनबाक पहिल अनिवार्य स्थितिमात्र अछि। स्वप्नसदृश जल-दृश्य, नामक उच्चारण पर तरंग आ ग्राहक छाह न्यायालयक प्रस्तुत साक्ष्य नहि; ई पात्रक विवेकक रूपकात्मक नाट्यरचना अछि। एतय आलोचककेँ प्रतीकात्मक सत्य आ बाहरी प्रमाणक स्तर अलग राखब आवश्यक अछि।

## कबड्डीक साँस, गलतीक काटल अक्षर आ भविष्यक दरबाजा

अनन्या ‘ग्राह’ लिखैत मात्रा गलत करैत अछि आ काटि ठीक करैत अछि। बाक सहज उत्तर —गलती नुकाएब नहि, सुधारब—एकटा छोट पाठशालाक दृश्यकेँ सार्वजनिक न्याय-प्रक्रियासँ जोड़ैत अछि। पछाति कबड्डीक रेखा पृथ्वी, पानि आ आकाश धरि फैलैत अछि। खेलमे साँस, सीमा, फेरा आ सहखेलाड़ी पर भरोसा आवश्यक अछि; ताहिसँ ई निजी पराक्रम नहि, साझा उत्तरदायित्वक रूपक बनैत अछि।

अध्यायक अन्तमे बच्चाक हथेली ग्राहक छाहकेँ पकड़ि वशमे नहि करैत; ओ पहिने नाम पूछैत आ उत्तरक प्रतीक्षा करैत अछि। ‘उपस्थित’क सामूहिक ध्वनि उद्धारक चमत्कारक बदला जिअल मानवीय उपस्थितिक घोषणा अछि। ठूँठपर दू हरियर पात आ आकाशमे झुकल पीयर तारा अगिला स्वप्न-क्रमक संकेत दैत अछि। ओहि बिन्दुपर कृति गामक जाँचकथासँ एक व्यापक दार्शनिक आख्यान दिस बढ़ैत अछि। विस्तार प्रभावपूर्ण अछि, मुदा सामाजिक संघर्षक ठोस आधार खोएबाक सम्भावना सेहो एहि विस्तारसँ पैदा होइत अछि; अगिला अध्यायसभ एहि जोखिमक परीक्षा छथि।

# अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

## विज्ञापनसँ स्वप्न धरि : कथास्तरक स्पष्ट सीमा

अध्याय १००क राति गहिराइत आरुणि चन्ना गाछीक ठूँठ लग रजिस्टर, फोन आ अधखुलल फाइलक बीच बैसल अछि। फोनपर ‘नव-क्षितिज मानव-निवास’क विज्ञापन चमकैत अछि; पढ़ैत-पढ़ैत ओकर निन्न स्वप्नमे बदलि जाइत अछि। कथा स्वयं ई सीमा बतबैत अछि, तेँ उज्जर ग्रहक वर्णनकेँ वास्तविक अन्तरिक्ष-यात्रा मानब पाठ-विपर्यास होयत। गामक पुरान मुकदमा, खाताक जाल, मृतकक नाम आ पीड़ाक थाकनि एकसाथ स्वप्नक पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि।

ग्रहपर नदी, श्मशान आ जड़ि अनुपस्थित अछि; घरपर नाम नहि, संख्या अछि। किछु उन्मुक्त मुस्कानक मूल्य व्यक्तिगत हानिक विस्मृति अछि। एहि विरोधाभाससँ कल्पित आदर्शलोकक केन्द्रीय आलोचना उभरैत अछि: दुखक स्मृति मेटा देलाक बादो दुख पैदा करनिहार हिंसा अथवा असमानता आपसँ नहि मिटैत। कथाकार प्रश्न करैत अछि जे शान्ति कहाबयवला अनुभव कतय न्यायसँ अलग भऽ जाइत अछि।

## बेनाम समानता आ अनुमति-विहीन संग्रह

अनन्या पूछैत अछि जे सभ लोक सचमुच समान छथि कि सभकेँ एकसाथ बेनाम कएल गेल अछि। एहि प्रश्नक तुरन्त पछाति काँचक गुम्बदमे दरार उभरैत अछि। मीरा ‘सांस्कृतिक स्मृति-नमूना’ लिखल देखि लाल डोरी कसैत छथि आ अपन कथा उपयोगमे अनुमति मागबाक अधिकार प्रकट करैत छथि। स्वप्नक दृश्य अधिकार-विमर्शकेँ केवल अपराधक प्रतिकार नहि, निज अनुभवक अभिलेखीकरणक न्यायसँ जोड़ैत अछि।

समानता जँ व्यक्तिगत जीवनी, सहमति आ स्मृतिक भिन्नता मेटा देत, तँ ओ समान गरिमा नहि, एकरूपता थोपबाक विधि बनि सकैत अछि। मीराक अस्वीकार एहि भेदक केन्द्र अछि।

स्वप्नक काँचक चमक कथानकमे सुखद भ्रम पैदा करैत अछि; ओकर कातर दरार प्रतिवादी आवाजक रूप लेत अछि।

## लाउक स्वच्छ खाता आ स्वच्छ अपराधक असम्भवता

लाउ किन-हंगक लेल स्मृतिहीन ग्रह आदर्श बाजार अछि, कारण ओतय पीड़ितक परिवार, पुरान करार आ उत्तराधिकारक दावा नहि उठत। मुदा हस्ताक्षर करबाक क्षण ओकर अपन नाम मेटा जाइत अछि। चन्द्रपालक प्रतिशत बचैत अछि, व्यक्ति-नाम नहि; बटुकनाथक उपाधि रहैत अछि, ‘बटुक’ बिलाइत अछि; राघवक संकेत बचैत अछि, ओकर कण्ठ नहि। ई क्रम अनाम व्यवस्थाक आत्मविनाशक स्वभाव खोलैत अछि।

कथा धनक लेखांकन आ मनुष्यक चिन्हारि बीच एकटा उलटल अनुपात बनबैत अछि—हिसाब जतेक चमकदार, उत्तरदायित्व ततेक अदृश्य। तथापि ई पात्रसभक वास्तविक पश्चात्तापक प्रमाण नहि, आरुणिक स्वप्नक नैतिक नाट्य अछि। आलोचना लेल एहि कथास्तरक भेद अत्यावश्यक अछि।

## रेखाक परीक्षा आ कथाक गति

आरुणिक पएरक नीचाँ कबड्डीक सीमा चमकैत अछि। एक कात बिसरायल इतिहासक आकर्षण, दोसर कात गढ़ नारिकेलक भीजल माटि। अनन्या कहैत अछि—रेखा पार करब, मुदा एक नाम संग घुरब। एहि वाक्यसँ ग्रहक भविष्यवादी प्रस्ताव परीक्षा बनि जाइत अछि: ककरा बचाकऽ आगाँ बढ़ल जाएत? आगाँ बढ़बाक अधिकार किनक स्मृति पर निर्भर अछि?

अध्याय छोट अछि आ प्रश्नमुखी गति राखैत अछि। दार्शनिक अन्तर्ध्वनि स्मृतिक अनुपस्थितिक अर्थ पर ध्यान देबैत अछि, मुदा वास्तवमे कोनो अनुपस्थित तथ्य अपने-आप दोषक पूर्ण प्रमाण नहि। साहित्यिक रूपमे अनुपस्थिति सन्देह जागबैत अछि; अभिलेखीय तर्क लेल स्रोत, कारण आ विकल्पक पृथक परीक्षण आवश्यक होयत।

# अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

## खेलक नियममे स्मृतिक न्याय

अनाम ग्रहपर बच्चासभक छाह उतरैत अछि, देह पृथ्वीपर रहैत अछि। कथा साफ कहैत अछि जे यात्रा केवल चेतनाक अछि; एहि कारण कोनो यान वा भौतिक अन्तरिक्ष-साक्ष्य प्रस्तुत नहि होइत अछि। अनन्याक नियम अछि जे रेखा पार करनिहार एक विस्मृत नाम खोजि घुरत। जे नाम बिसरत, ओकर पारी समाप्त। कबड्डीक परिचित साँस, सीमा आ घुरबाक नियमकेँ याद राखबाक दायित्वमे बदलि देल गेल अछि।

अध्याय १००मे खेलक व्यापक प्रतिमान देल गेल छल; एतय ओ संचालन-नियम पबैत अछि। नामक उद्धार व्यक्तिगत वीरताक उपलब्धि नहि, उच्चारित आ बाँचल संबंधक सामूहिक काज बनैत अछि। एतय लोकखेलक पुनर्पाठ उत्तराधुनिक यन्त्र-जगतक अनाम दृष्टिक विरुद्ध उभरैत अछि।

## काँपैत घुट्ठी : अनन्याक व्यक्तित्वक जटिलता

अनन्याक कण्ठ सुखब, घुट्ठी काँपब आ प्रथम डेगसँ पहिने ‘उज्ज्वल’ उच्चारण करब अध्यायक विशेष प्रभावकारी सान दृश्य अछि। बच्चाकेँ निर्भय उद्धारकर्ता बनाकऽ मिथकीय दूरीपर नहि राखल गेल अछि। डर उपस्थित रहैतहुँ कर्तव्यक चयन कएल जाइत अछि। मायक स्मृतिवाक्य—डर लगए तँ नाम बाजू—व्यक्तिगत स्नेहकेँ सार्वजनिक नियममे बदलैत अछि।

ई बालपात्रक जटिल चित्रणक संकेत अछि: साहस भयक अभाव नहि, भयक बीच धैर्यपूर्ण क्रिया अछि। अगिला स्वप्नदृश्यसभक अद्भुतता बीच अनन्याक देहगत अनुभूति कथाकेँ धरतीसँ जोड़ि राखैत अछि।

## मीरा आ सत्यव्रत : अस्तित्वकेँ उपाधिसँ अलग करब

गुम्बदक पहरुआक छातीपर क्रमांक अछि, चेहरा नहि। ओ सभ नाम छोड़बाक सलाह दैत अछि। मीराक उत्तर—दुःख नामसँ नहि, नामपर कएल अत्याचारसँ जन्मैत अछि—मूल प्रश्नकेँ धरि लैत अछि। ओ स्वप्नक दीवारपर अपन निजी छवि देखिकऽ मुँह नहि फेरैत छथि; निज देहकेँ तमाशा नहि, अधिकार-सम्पन्न साक्ष्य मानबाक आग्रह करैत छथि।

सत्यव्रत ‘अधिकारी’, ‘साक्षी’ आ ‘विधि’ बजैत छथि, मुदा रेखा नहि खुलैत। अपन पुरान मौन स्वीकारला पर सीमा सरकैत अछि। पदनामकेँ व्यक्तिगत ज्ञान-सीमाक स्वीकारसँ जोड़लाक बादे कानूनक भाषा उपयोगी होइत अछि। ई कथाक विधिक आलोचना अछि, वास्तविक न्यायिक कसौटीक विकल्प नहि।

## दरारक पार पानिक गन्ध

आरुणि स्वप्नक माटि गन्धहीन पबैत अछि—स्वच्छ, मुदा जीवहीन। ओकरा पुलक पाया, मजदूरक गमछा आ हटाओल संदेश मोन पड़ैत अछि। ओ बुझैत अछि जे प्रत्येक साक्ष्य-शृंखलाक पाछाँ व्यक्ति अछि। नाम खोजबाक खेल तेज नहि, धीमा होइत जाइत अछि; एतय नाटकीय गति घटब नैतिक धैर्यक प्रतीक बनैत अछि।

अनन्या गुम्बदक खाली दीवार छू कऽ ‘उपस्थित’ फुसफुसबैत अछि। दीवारमे दरार आ जलक गन्ध धरतीक अनुभवकेँ स्वप्नमे घुसबैत अछि। लोकगीतक साँस आ नामक जोड़ सहज बिम्ब अछि; तथापि स्वप्नमे उच्चारित ‘उपस्थित’क प्रभावकेँ बाहरी तथ्यक स्वतन्त्र पुष्टिकरण नहि मानल जा सकैत।

# अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

## संख्यासँ सम्बन्ध धरि

स्वप्नक सभागारमे ३०, ३००, ७९१ आ ० सन क्रमांक चमकैत अछि। अनन्या रजिस्टरसँ नाम पढ़िते दीवारपर केवल चेहरा नहि, सम्बन्ध प्रकट होइत अछि—देहरीपर प्रतीक्षारत माए, नाव सिखबैत पिता, अधूरा मजदूरी-पर्चा पकड़ेने पत्नी। संख्या मनुष्यक प्रसंगक सूचक बनैत अछि, मनुष्यक सम्पूर्ण अर्थ नहि। कथाकार संकेत करैत अछि जे अभिलेखमे गणना आवश्यक भऽ सकैत अछि, मुदा संबंधक कथन बिनु न्यायिक-सामाजिक चिन्हारि अधूरी रहैत अछि।

अध्यायक नाम-पाठ मृत्यु-सूची पढ़बाक काजसँ अधिक अछि। परिवारक आवाज, श्रमक अधूरापन आ जीवित लोकक अपेक्षा संग नाम वापस अबैत अछि। एहि बिम्बमे गामक पुरान पाथर-पहरा अन्तरिक्षक उज्जर गुम्बदपर पुनः आरोपित होइत अछि।

## मीरा आ कथाक स्वामित्व

मीरा निजी चित्रसँ धमकायल स्त्रीसभक नाम पढ़ैत छथि आ प्रत्येकक पछाति कहैत छथि जे हुनकर अनुमति बिना कथा नहि। एहि पुनरावृत्तिसँ सभागारक कृत्रिम चमक घटैत अछि, मुदा हवा साँस लेबाक योग्य बनैत अछि। स्वीकृतिक ई मूल्यांकन शैलीगत दृष्टिसँ सार्थक: दृश्य-सौन्दर्य घटितो नैतिक श्वास बढ़ैत अछि।

एहि दृश्यक सीमा सेहो स्पष्ट रखबाक चाही—नामक पाठ सेहो पीड़ितक इच्छाक अनुकूल होयत। सार्वजनिक उच्चारण यदि अनुपस्थित सहमतिक स्थान लऽ लेत, तँ सामूहिक स्मृति पुरान हिंसाक पुनरावृत्ति करि सकैत। मीरा स्वयं एहि दुविधाक सुरक्षाक स्वर छथि।

## पदक डरसँ खाताक प्रतिशत धरि आत्म-विरोध

बटुकनाथ अपन नातिक प्रश्नक सोझाँ सम्मान छिनि जाएबाक भय देखैत अछि। चन्द्रपाल शिक्षकद्वारा नाम बिगाड़ल जेबाक बाल्यकालक अपमान स्मरण करैत अछि, जाहिसँ हजारो लोकक नाम प्रतिशतमे बदलबक ओकर पुरान काजक विरोध उघार होइत अछि। राघवक मेटाओल संदेश सभ दोसरक अधूरा पुकार बनि स्वप्नक दीवारपर फेर लिखाइत अछि।

ई तीनू दृश्य नैतिक मनोविश्लेषणक समान पाठ नहि। बटुकनाथक केन्द्र पेशागत प्रतिष्ठा आ विलम्ब अछि; चन्द्रपालक केन्द्र खाता, लाभ आ नामक क्षरण अछि; राघवक केन्द्र सूचना मेटाएब आ सुनबाक अस्वीकार। स्वप्न एहि सबकेँ नामपाठक साझा मंच पर लबैत अछि, मुदा जिम्मेदारीक अलग प्रकृति सुरक्षित रखैत अछि।

## रिक्त पाँति, टूटल क्रमांक आ भ्रमभंग

लाउ किन-हंग कहैत अछि—नाम बाजार रोकैत अछि; अनन्या उत्तर दैत अछि—किएक तँ नाम हिसाब माँगैत अछि। आरुणि रजिस्टरक खाली पाँतिमे ‘जेकर नाम एखन नहि भेटल’ लिखैत अछि, आ सभसँ पैघ क्रमांक टूटैत अछि। जे नहि भेटल ओकर सम्मानपूर्वक उल्लेख करब, बिना कल्पित परिचय गढ़ने, एतय अभिलेखीय विवेकक सूक्ष्म पक्ष अछि।

नामपाठक बाद ग्रह नष्ट नहि होइत; बस चमक उतरि जाइत अछि आ साधारण माटि देखाइत अछि। ई नाटकीय विकल्प उल्लेखनीय अछि—विरोधक लक्ष्य जीवनक नाश नहि, विस्मृतिक आवरण हटाएब। चमत्कारक अन्ते माटि देखाइ पड़ब अगिला जागरणक अर्थ खोलैत अछि।

# अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

## साझा स्वप्नक अनिश्चितता आ कथावाचकीय विश्वसनीयता

भोरमे आरुणि ठूँठ लग जागैत अछि। फोन बुझल, रजिस्टर खुलल अछि; अनन्या, मीरा, सत्यव्रत आ बच्चासभ ओतहि छथि। कथावाचक स्पष्ट करैत अछि जे सभ एकहि स्वप्न देखल अथवा एक-दोसरक कथनसँ समान दृष्टान्त रचल, एकरा निश्चित कहब कठिन अछि। ई अनिश्चितता अलौकिक दृश्यकेँ वस्तुगत इतिहासक स्तरपर बलात् स्थापित नहि करैत। साझा स्मृतिक बिम्ब आ सामूहिक कल्पनाक बोध खुलल रहैत अछि।

अनन्याक हथेलीपर अलौकिक नील धूलि नहि, साधारण खड़िया अछि। ई सूक्ष्म परिवर्तन स्वप्नक चमत्कारी प्रमाणक अपेक्षाकेँ चुनौती दैत अछि। बाक वाक्य—देह बहुत दूर नहि गेलो तर्क यात्रा करि सकैत अछि, मुदा जागलापर पृथ्वीपर डेग रखबाक चाही—कथाक नैतिक सीमा बनैत अछि।

## कथाक उपस्थिति आ निजताक अनुमति

मीरा लाल डोरी खोलि पुनः बान्हैत छथि। स्वप्न हुनकर पीड़ा मेटौने नहि; ओ अपन कथाक उपयोगमे अनुमति अनिवार्य मानैत छथि। सत्यव्रत ‘विस्मृति कोनो पुनर्वास नहि’ लिखैत छथि आ परिचयमे पदक बदला नाम राखैत छथि। एहि दू क्रियामे निजी स्वायत्तता आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बनैत अछि।

अनन्याक रजिस्टर, मीराक डोरी आ सत्यव्रतक संशोधित परिचय—ई तीन साधारण वस्तु स्वप्नक विशाल ग्रहसँ अधिक स्थिर नैतिक प्रमाणक रूप लैत अछि। शिल्पगत रूपमे लघु दृश्यक ई प्रत्यावर्तन अध्यायकेँ धरतीक व्यावहारिक समस्यासँ फेर जोड़ैत अछि।

## नव-क्षितिज प्रचारक जाँच : स्वप्न आ कथाजगतक कारण

आरुणि जागि विज्ञापनक स्रोत देखैत अछि। मूल पाठ स्पष्ट करैत अछि जे ‘नव-क्षितिज’ वास्तविक ग्रह-परियोजना नहि, अपराध-जालक डिजिटल प्रचार-परीक्षण अछि। कथामे ब्रूमक नैतिक भाषा, लाउक पूँजी, चन्द्रपालक पंजीयन आ राघवक संदेश-डोर एक संग जोड़ल गेल अछि। एहि विवरणक अर्थ उपन्यासक भीतरी कथानकमे अछि। बाहरी संस्थासभक वास्तविक अपराधक स्वतन्त्र प्रमाण एहि साहित्यिक दृश्यसँ उत्पन्न नहि होइत।

एहि मोड़सँ कथा स्वप्नकेँ केवल मनोवैज्ञानिक स्वच्छन्दता नहि रखैत; ओकर स्रोतमे प्रचार, भय आ पलायनक बाजार देखबैत अछि। तथापि आरुणिक डिजिटल निष्कर्ष कतेक प्रक्रियासँ स्थापित भेल, तकर अधिक सूक्ष्म दृश्य पाठककेँ अतिरिक्त विश्वसनीयता दऽ सकित।

## पृथ्वी चुनब : विस्मरण नहि, कारणक परिवर्तन

बच्चासभ निर्णय लिखैत अछि—दुःख नहि मेटाएब, दुखक कारण बदलाएब। नाम फेर लिखब, निज देहपर अधिकारक अनुमति सुनब, दबाओल श्रमक हिसाब खोलब। कथा एहि संकल्पमे बाढ़ि, आर्थिक शोषण आ निजताक हिंसाकेँ पुनः स्थलीय जिम्मेदारी बना दैत अछि। अत्यल्प शब्दमे समग्र स्वप्न-चक्रक निष्कर्ष एतय मूर्तिमान अछि।

बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ राघव लेल निर्णय क्षमा-पत्र नहि। हुनका फाइल खोलब, खाता जोड़ब, आवाज सुनब आ पीड़ितक समक्ष उत्तर देब आवश्यक कएल जाइत अछि। ठूँठक कोंपलपर ओस आ ‘पृथ्वी चुनैत छी’ लिखल पाँति भविष्यक जिम्मेदारीक आशा जगबैत अछि। अध्यायक सीमा ई जे सामूहिक प्रतिज्ञासँ ठोस संस्थागत बदलाव स्वयमेव नहि होइत; आगाँक रचनामे एहि संकल्पक सामाजिक कार्यान्वयन देखब समीक्षाक अगिला कसौटी रहत।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १००–१०४

## लोकमिथकसँ स्वप्न-प्रयोग धरि : पाँच अध्यायक कथात्मक चक्र

अध्याय १०० गज-ग्राहक कथा बच्चाक सुननाइ आ कबड्डीक हाथमे पुनर्गठित करैत अछि। १०१मे विज्ञापनसँ अनाम ग्रहक स्वप्न खुलैत अछि। १०२मे बच्चासभ स्वप्नक भीतर नाम घुराएबाक कबड्डी खेलैत अछि। १०३मे संख्या भंग होइत अछि आ व्यक्तिगत सम्बन्धक नाम-पाठ उभरैत अछि। १०४मे जागरणक बाद पृथ्वी चुनबाक निर्णय सामाजिक उत्तरदायित्वक रूपमे लिखल जाइत अछि। एहि क्रममे मिथक, स्वप्न, खेल, अभिलेख आ जागरण पाँच भिन्न कथात्मक पद्धति क्रमशः एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि।

प्रत्येक अध्यायक आरम्भमे लोकगीत अथवा स्वप्नगीत अछि। बाल-कबड्डीक गति १०२मे धीमा भऽ प्रश्न-दर-प्रश्न चलैत अछि; १०३मे ‘एक-एक नाम’क करुण लय अबैत अछि; १०४क भोरक सोहर माटिक स्वीकृति चिन्हैत अछि। लयक ई क्रम केवल संगीतक अनुक्रम नहि, कथाक नैतिक गतिशास्त्र अछि।

## काँच, पानि, खड़िया आ कोंपल : दृश्य-प्रतीकक परिवर्तन

१००क नाम-पाथर आ कोंपल स्मृतिक पृथ्वीगत आधार छथि। १०१क काँचक गुम्बद दुख-रहित किन्तु नाम-रहित कृत्रिम संसारक प्रतिमा अछि। १०२मे दरारक पार पानिक गन्ध अबैत अछि; १०३मे साफ ग्रहक सतह साधारण धूसर माटिमे बदलैत अछि। १०४मे अनन्याक हथेलीपर खड़िया भेटैत अछि, नील धूलि नहि। एहि दृश्यक्रमसँ बाहरी चमक हटि स्थानीय माटि, श्रम आ शिक्षा उभरैत अछि।

डिजिटल काँच आ नदीक पानिक विरोध पूर्ण तकनीक-विरोध नहि। समस्या ओ तकनीक अछि जे व्यक्ति इतिहास मेटाकऽ निर्दोष कहि छोड़ैत अछि; समाधान स्रोत-परीक्षण, अनुमति आ सामूहिक नाम-पञ्जी सहित तकनीकक जवाबदेह उपयोग अछि।

## अनन्या, मीरा, सत्यव्रत आ आरुणिक भिन्न भूमिकासभ

अनन्या भयक बीच नियम बनबैत अछि, नाम संग घुरबाक आग्रह करैत अछि। मीरा कथा, छवि आ देहपर स्वीकृतिक अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। सत्यव्रत पद-उपाधिक बदला पुरान मौन स्वीकार करैत छथि। आरुणि विज्ञापनक कारण जाँचि स्वप्नक परे डिजिटल प्रचार-संरचनाकेँ कथाजगतमे रखैत अछि। एहि सबकेँ एकहि नैतिक आवाज बनाबैक बदला पाठ अलग-अलग जिम्मेदारी सौंपैत अछि।

अपराधमे संलग्न पात्रसभक स्वप्न-दृश्य—लाउक बिनामूल्य साफ खाता, चन्द्रपालक प्रतिशत, राघवक मेटाएल संदेश, बटुकनाथक उपाधि—व्यक्तिगत स्वीकृतिक संभाव्यता देखबैत अछि। मुदा ई संभाव्यता पीड़ितक वास्तविक क्षति अथवा विधिक अनुसन्धानक स्थान नहि लेत।

## नव्य न्यायक परीक्षण : प्रत्यक्ष, स्वप्न आ अभाव

कथाक स्वप्नमे दीवारक दरार, ग्रहक काँच, स्वयं मेटाएल नाम आ पानिक गन्ध अनुभव बनैत छथि। प्रामाणिक विवेचन लेल एहन अनुभवक कथास्तर पहिचानब जरूरी: स्वप्नक प्रत्यक्ष जाग्रत घटनाक प्रत्यक्षक समान प्रमाणिकता नहि रखैत। १०४मे कथावाचक एके स्वप्नक सामूहिक अनुभवक अनिश्चितता उद्घाटित करैत अछि। एहि संशयकेँ रचना कमजोरी नहि, प्रमाण-विवेकक सम्भावना बना सकैत अछि।

१०१क दार्शनिक अन्तर्ध्वनिमे ‘अनुपस्थित स्मृति’सँ अपराधक अनुमानक बात अबैत अछि; ओकर तर्कक सीमा ध्यानयोग्य। कोनो अभिलेख अनुपस्थित रहबाक अनेक सम्भावित कारण होइछ। अपराधक निश्चित निर्णय हेतु अनुपस्थिति, कारण, नियन्त्रण आ वैकल्पिक

व्याख्याक परीक्षण अपेक्षित। एहि भेदक बिना नैतिक प्रभाव आ प्रमाणिक निष्कर्ष एकमेव भऽ जेत।

## उपलब्धि आ कलात्मक सीमा

पाँच अध्यायक उपलब्धि ई जे स्थानीय लोकखेल आ लोकमिथकक माध्यमसँ स्मृति-सत्ता, पीड़ितक स्वीकृति आ न्यायिक विलम्ब सन जटिल प्रश्न पठनीय बनैत अछि। बालपात्रक काँपैत घुट्ठी, गलती काटल अक्षर आ खड़ियाक रंग विशाल स्वप्न-योजनाकेँ मानवीय ठोसपन दैत अछि। पृथ्वी चुनबाक निर्णय ओहि कारण भावात्मक घोषणासँ अधिक मूल कथाक स्थलपर घुरबाक संकल्प होइत अछि।

सीमा सेहो अछि: कतेको पात्रक आत्मबोध स्वप्नक काँच पर अत्यन्त शीघ्र लिखाइत अछि; नैतिक वाक्यसभ कखनहु कथात्मक क्रियाक अपेक्षा प्रत्यक्ष उपदेश बनि जाइत अछि। १०४क प्रचार-स्रोत जाँचक प्रक्रिया संक्षेपमे आबैत अछि, जाहिसँ आपराधिक जालक बाहरी विवरण कम भेटैत अछि। आगेक अध्यायमे सामाजिक व्यवहार आ अभिलेखीय प्रक्रिया जँ विस्तृत होयत, तँ एहि स्वप्न-चक्रक नैतिक उपलब्धि अधिक विश्वसनीय भऽ सकैत अछि।

# अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

## स्वप्नक नील धूलि आ धरतीक भीजल छाल

अनन्या जागरणक बाद चन्ना ठूँठक छाल छूबैत छथि; स्वप्नक नील धूलि भीजल जड़िमे मिलि जाइत अछि। ई स्पर्श अध्याय १०४क पृथ्वी चुनबाक घोषणाकेँ जीवनक ठोस भूगोलमे रूपान्तरित करैत अछि। ग्रहक गन्धहीन धूलि आ जड़िक भीजल खुरदुराहट एक-दोसरक विरोधी मात्र नहि; अनाम स्मृतिकेँ स्थानीकृत इतिहासमे बदलबाक दृष्टान्त अछि। बिनु नामक विदेशी उजास अपन अर्थ धरतीक जीवित सम्बन्धमे पाबैत अछि।

उज्ज्वलक आत्माक पानिपर इजोत बनब अद्भुत कथातत्त्व अछि। देविका ओकरा पुकारि रोकबाक बदला मनमे नामक पहरा स्वीकार करैत छथि। एहि संयममे पीड़ित परिवारक दुखकेँ पुनः सार्वजनिक तमाशा बनाबासँ बचबाक आग्रह देखाइत अछि। आत्माक इजोत साहित्यिक प्रतीक अछि; ओकरा बाहरी अनुभवक स्वतन्त्र सत्यापन मानल नहि जा सकैत।

## समाचारक संशय आ अभिलेखक पाठ

शहरक अखबार ग्रहपर कबड्डीक चर्चाकेँ अन्धविश्वास कहैत अछि। गामक लोक न त तुरन्त आक्रोश करैत अछि, न स्वप्नक घटनाकेँ स्थापित तथ्य घोषित करैत अछि। मूल पाठक भाव जे छपल कथन अनिवार्य प्रमाण नहि, एतय आलोचनात्मक केंद्र अछि। कादम्बरी स्वयं कथाक अद्भुत दृश्य आ गवाहीक स्रोतक बीच तनाव बनौने रखैत अछि।

बा मृतक, अपराध, भाषा, नदी आ असफलतासहित धरती स्वीकारबाक अर्थ कहैत छथि। सामूहिक ‘उपस्थित’क उत्तर तालिक स्थानपर अबैत अछि। सार्वजनिक स्मृति एहि प्रकार भावोच्छ्वाससँ परे सुनबाक सहमतिक अभ्यास बनैत अछि। शपथपत्रपर सत्यव्रतक नब वाक्य एहि अभ्यासकेँ व्यक्तिगत जवाबदेहीक लेखामे बदलैत अछि।

## चारि पात्रक उत्तरदायित्वक वितरण

बटुकनाथकेँ बच्चासभ पुरान फाइलमे दबल नाम खोजबाक काज दैत अछि; चन्द्रपाल लिखब नहि आबैत कहला पर सुनबाक अनुशासन सीखैत अछि; राघवक रहस्यमय पातक नीचाँ ककरा अदृश्य कएल, हुनका पहिचानबाक शर्त लिखल जाइत अछि। लाउ किन-हंग विदेश गेल कि एखन भारतमे अछि—मूल पाठ ई स्थिति अनिश्चित राखैत अछि। एहि अनिश्चितताकेँ अनुमानसँ पूरा करब उचित नहि।

तीनू पहिल पात्रकेँ क्षमादान नहि, सुधारक विशिष्ट श्रम सौंपल जाइत अछि। तथापि बटुकनाथक कानूनी दोष, चन्द्रपालक लेन-देन आ राघवक मेटाएल संचारक समग्र परीक्षण केवल सामुदायिक आदेशसँ पूरा नहि भऽ सकैत। सामाजिक सीख आ संस्थागत न्यायक अन्तर कृति पढ़बाक एक आवश्यक सीमा अछि।

## धरतीक सोहर, कबड्डीक नियम आ पहराक निरन्तरता

लोकगीत धरतीकेँ नवजात शिशु बनबैत अछि: ओसक दूध, सूरुजक अँचरा, नदीक नाल आ पवनक लोरीक बिम्ब श्रवणपरक घरेलूपन रचैत अछि। बच्चासभक नब कबड्डी नियममे हारल खिलाड़ी अलग-थलग नहि होइत; ओ दोसरक नाम सुनबाक जिम्मेदारी पबैत अछि। प्रतियोगिता सुननाइक विद्यालय बनि जाइत अछि।

भोरक अन्तिम लिखित प्रतिज्ञामे अगिला बाढ़ि, छल, स्मृति-चोरीक सम्भावना स्वीकारल गेल अछि। ई एहन विजय नहि जे संकट समाप्त भऽ गेल; तैयारीक आरम्भ अछि। अध्यायक शक्तिशाली पक्ष ई निरन्तरता अछि। सीमा ई जे पृथ्वी स्वतः पहरा स्वीकार कएलक सन अद्भुत छवि प्रश्नक अनुभवात्मक समाधान दैत अछि, मुदा वास्तवमे पर्यावरणीय सुरक्षा लेल ठोस संसाधन आ स्थानीय अधिकारक व्यवस्था बाँकी रहैत अछि।

# अध्याय १०६ — बीजक गवाही

## नामक पहरासँ बीजक पहरा

बा बच्चासभकेँ नामक बाद बीजक पहरा रखबाक निर्देश दैत छथि। नारिकेल पात पाठशालाक चटाइपर धान, तिल, मड़ुआ, कोदो-कुटकी, मखान, कुसियार, आमक गुठली, नीम, पीपर आ चन्ना कोंपलक पासक दाना रखल जाइत अछि। प्रत्येकक संग बोएबाक ऋतु, संग्रह करनिहार हाथ, गीत आ भूखक इतिहास पूछल जाइत अछि। एहि पद्धतिमे बीज केवल कृषिवैज्ञानिक नमूना नहि, लोकज्ञानक जीवित सम्बन्ध अछि।

अध्याय पहिनुक मृतक-नामक पञ्जीकेँ भविष्यक जीवनक पञ्जीसँ जोड़ैत अछि। अनाम ग्रह पर बेनाम मनुष्यक खतरा छल; एतय जँ बीजकेँ केवल क्रमांक देल जाए तँ ओकर माटि आ किसान अदृश्य होएबाक प्रश्न उभरैत अछि। विज्ञानक उपयोगिताकेँ अस्वीकारब कथाक आवश्यकता नहि, ज्ञानसँ समुदायकेँ अलग करबाक प्रवृत्तिक समीक्षा अछि।

## स्त्रीसभक डिब्बा आ अकालक स्मृति

स्त्रीसभ पुरान पीतल कटोरी, माटिक हाँड़ी, बटुली आ कपड़ाक गठरीमे बचा कऽ राखल बीज लैत छथि। ककरो सासुसँ भेटल, ककरो बाढ़ि अथवा अकालक वर्षसँ बाँचल। एहि वस्तुसभक नामसँ अधिक हुनकर उपयोगक सामाजिक सन्दर्भ बीजक प्रामाणिक इतिहास बनैत अछि। संग्रहक मुख्य वाहक स्त्रीक अघोषित श्रम अछि; अध्याय ओकरा शोधक अग्रभागमे राखैत अछि।

ईरा विदेशमे बैसल मैथिली बच्चासभ लेल धानक फोटो आ किसानक वास्तविक नाम, ऋतु आ श्रमक ज्ञान बीच भेद स्पष्ट करैत छथि। प्रवासी स्मृति एहि प्रकार केवल सांस्कृतिक चित्र-संग्रह नहि रहि, वर्तमान खेतीक प्रति उत्तरदायित्वक प्रश्न बनैत अछि।

## संरक्षणक कागजमे अधिकार-हस्तान्तरणक जोखिम

‘उन्नत बीज-संग्रह आ जलवायु-सुरक्षा प्रकल्प’ लिखल सरकारी जीप, वैज्ञानिक वेशधारी अधिकारी आ परामर्शदाता पहुँचैत छथि। परामर्शक भाषामे संरक्षणक आश्वासन अछि; गोप कुमारक देखल सूचीमे बीजक कोड, भू-स्थान, परिवार, जाति, उत्पादन, आपदा-सहनशक्ति आ व्यावसायिक सम्भावना एकसाथ भरल अछि। कथानक प्रश्न करैत अछि जे एहन विस्तारक स्वामित्व ककरा भेटत आ जानकारीक नियन्त्रण कोन हस्तमे रहत।

बादमे सत्यव्रत छोट अक्षरक अनुच्छेदमे हस्तान्तरणक शर्त देखैत छथि। बा अधिकारीसँ बीजक गीत, आवश्यक पानि, ऋतु आ बिसरायल नाम पूछैत छथि। लोकज्ञानक ई परीक्षण बाहरी शोधकेँ पूर्ण निषिद्ध नहि, सहमति आ स्थानीय भागीदारीक कसौटी पर राखैत अछि। मुदा कागजक वास्तविक विधिक स्थिति अलग जाँच चाहैत अछि; कथाक पात्रक आशंका दोषसिद्धि नहि।

## पातपर सफेद धूलि आ नव संघर्षक सेतु

जीप घुरलाक बाद कोंपलपर सफेद रेखा देखाइत अछि; अनन्या एकरा नव-क्षितिजक बीज-अँकड़ासँ जोड़ैत अछि। मध्यराति दानासभ ‘माटि चाही’क स्वरमे मानो बजैत अछि। ई जैविक रूपक कृषि-भविष्यक स्वायत्तताकेँ शब्द दैत अछि, तथ्य-जाँचक प्रत्यक्ष पद्धति नहि।

अध्याय अन्तमे ‘बीजक चोरी’ शीर्षकक अगिला कड़ीक पूर्वाभास दैत अछि। दार्शनिक अन्तर्ध्वनिमे विशेषण आ उपलक्षणक भेद अबैत अछि। ओकर उपयोग तखन सार्थक होएत जखन बीजक जाति-सूचक कागज, भौगोलिक स्थान आ किसानक वास्तविक सम्बन्ध बीच स्पष्ट व्यावर्तक भेद देखाओल जाए। शाब्दिक सिद्धान्तक उल्लेख मात्र खेतक स्वामित्व प्रश्न नहि सुलझबैत।

# अध्याय १०७ — बीजक चोरी

## सुरमणी काकीक पीतल डिब्बी आ भविष्यक दाना

सुरमणी काकी ‘डूबल-साँस’ नामक बाढ़ि-सहन धान पुरान पीतल डिब्बीमे नेने अबैत छथि। मायसँ भेटल बीजक स्मरणमे केवल पादपक गुण नहि, आपदासँ परिवार बचबाक इतिहास अछि। काकीक फाटल पएर आ थरथराइत हाथ बीजक अनुभवक देहगत मूल्य प्रत्यक्ष करैत अछि। एहि कारण ‘बीजक चोरी’ भविष्यक थारी चोरबाक रूपक बनैत अछि, केवल गोदामक माल निकालनाइ नहि।

डिब्बी सुरक्षित स्थान अछि, मुदा कथा चेतबैत अछि जे सुरक्षित संग्रहमे बीज स्थिर रहि सकैत अछि; ओकर जीवन ऋतु आ माटिक संग पुनः सम्बन्ध बनौलासँ पूर्ण होइत अछि। एहि द्वैधसँ स्थलीय बीज-बचत आ सुरक्षित वैज्ञानिक संग्रहक बीच संतुलनक प्रश्न उठैत अछि।

## अनामिकीकरणक अनुच्छेद : सूचना आ अधिकारक संरचना

शोधक नामपर आएल दल ‘देशज बीज’क नमूना माँगैत अछि। कागजमे केन्द्रीय संग्रह, बाह्य आवासीय परियोजना लेल अनुकूलन आ ‘अनामिकीकरण’ सन प्रावधान अछि। मीरा ई पढ़ैत छथि जे बीजक गाम, श्रम, ऋतु, बाढ़ि आ समुदाय हटाओल गेल तँ कोड शेष रहत, ओकर उपयोगक इतिहास नहि। गोप कुमार ‘संरक्षण’ आ सम्भावित अधिग्रहणक अन्तर पर प्रश्न रखैत छथि।

नाविक स्रोत वा स्थानीय किसानक सहमति बिना नमूना लेबाक नैतिक जटिलता अछि। तथापि वास्तविक वैज्ञानिक अनामिकीकरणक उद्देश्य कखनो निजताक रक्षो होइत अछि; कादम्बरीक विशिष्ट प्रावधानकेँ सभ शोधक सर्वकालिक निन्दा मानब उचित नहि। स्थानीय अधिकार, उपार्जित लाभ आ जानकारीक नियन्त्रणक पृथक जाँच अपेक्षित अछि।

## विदेशी शोधार्थिनी आ सुनबाक नैतिक रूपान्तरण

दलसँ आयल विदेशी शोधार्थिनी स्वीकार करैत छथि जे हुनका एहि बीजकेँ केवल आनुवंशिक सामग्री कहि चिन्हाओल गेल छल। सुरमणी काकी डिब्बाक दानाकेँ मायक स्मृतिसँ जोड़ैत छथि। एहि संवादमे विज्ञानक शब्द आ लोकक शब्द शत्रु नहि बनैत; एक-दोसरक सीमाक साक्षात्कार करैत अछि। शोधार्थिनी नमूना तत्काल नहि लेबाक आ पहिने सुनबाक निर्णय करैत छथि।

ई पात्र-परिवर्तन रोचक अछि कारण अधिकारीक परामर्शक भाषा बरकरार रहैतहुँ एक सदस्य अपन सूचना-स्रोतक अपूर्णता स्वीकार करैत अछि। तथापि एक व्यक्तिक सहानुभूति मात्रसँ संस्थागत अधिकारक हस्तान्तरणक समस्या समाप्त नहि। संहिताक आवश्यकता बनी रहैत अछि।

## तीन घेराक पहरा आ माटिक प्रश्न

बच्चा, स्त्री आ जोतनिहार मजदूर बीजक तीन रक्षा-घेरा बनबैत छथि। कबड्डीक गोल सीमा पर सरकारी जूता रुकि जाइत अछि—लोकखेल प्रशासनिक अधिकारक नैतिक परीक्षण बनैत अछि। सामुदायिक निर्णय अछि जे कोनो बीज ओकर नाम, घर, ऋतु, कथा आ समुदाय स्पष्ट कएने बिना बाहर नहि जायत।

मध्यराति पात्रक माटि ‘हम कतऽ उगब?’ पूछैत अछि। कथा यहीं दानाक बचावसँ खेतीक स्थान आ भूमि-अधिकार दिस घूमैत अछि। बीज सुरक्षित रखबाक विजय अधूरी अछि जँ किसानक पास रोपबाक ठाम नहि। एहि दार्शनिक रूपकेँ वास्तविक कृषि-अर्थव्यवस्थाक साक्ष्यक संग जोड़बाक सम्भावना आगाँक अध्यायमे खुलैत अछि।

# अध्याय १०८ — माटिक मुँह

## खेतक नाम-पाठ आ भूगोलक सामाजिक पञ्जी

बीजक ‘कतऽ उगब’ प्रश्न गामकेँ खेतसभक नाम फेर पढ़बाक दिशामे अनैत अछि। बरगदाही, मुसहरी किनार, उज्जर डिह, कमला पारक चौर, बेलाहीक निचला परती आ बटाई खेत नामित होइत छथि। खेतक पहिचानक संग स्वामी, बटैयादार, जाति, श्रम, बाढ़ि आ परतीक इतिहास जुड़ैत अछि। एहि सूचीसँ भूमि केवल अचल सम्पत्ति नहि, बहुस्तरीय स्मृतिक भूगोल बनैत अछि।

अध्यायक कलात्मक उपलब्धि ई जे १०७क काल्पनिक माटि-बोलक प्रश्नकेँ वास्तविक सामाजिक सम्बन्धक नक्शामे बदलबैत अछि। नामक पहरा मृतकसँ खेत आ खेतसँ जीवित मजदूर धरि विस्तारित होइत अछि।

## धीरमतीक माटिक ढेला आ बहिष्कारक प्रतिवाद

जगेसर मोचीक नातिन धीरमती माटिक ढेला लऽ चर्मकार टोला पाछाँक उपेक्षित परती पर बीज रोपबाक प्रस्ताव दैत अछि। ओहि जगह प्लास्टिक, राख, फूटल बरतन, बाढ़िक मलवा आ परतीक दाग अछि। किछु लोक नाक सिकोड़ैत छथि; धीरमती ओकरा सभक समक्ष जीवनक सम्भावना रखैत छथि। ई दृश्य सामाजिक अशुद्धताक विचारक विरुद्ध साधारण श्रमक ठोस प्रतिवाद अछि।

गंगेशक जीवन-सम्बन्धी जनश्रुति अध्यायमे फेर उठैत अछि, मुदा ओकरा बिनु बाह्य अभिलेख प्रमाणित जीवनी मानब असावधान होयत। माटिक प्रयोगक उपलब्धि एहि ऐतिहासिक दावापर निर्भर नहि; वर्तमान धीरमतीक आवाज अपन ठोस साहित्यिक बल रखैत अछि।

## पाँच क्यारी : न्याय, प्रयोग आ विकल्प

बच्चासभ पाँच प्रकारक माटि चुनैत अछि—चर्मकार टोलाक परती, मुसहरीक बाढ़ि-धोआ चौर, विधवाक बाड़ी, मजदूरक बटाई खेत आ ठूँठक सामूहिक क्यारी। ई चयन कृषिवैज्ञानिक विविधताक संग सामाजिक बहिष्कारक पाँच दृश्य प्रस्तुत करैत अछि। अनन्याक नियम जे प्रत्येक दानाक नाम पढ़ल जाए, रोपनीकेँ अभिलेख-सुधारक काज बनबैत अछि। सुरमणी, बा, धीरमती, मीरा आ सत्यव्रत एकहि दानाकेँ भिन्न अनुभवक भाषामे पहचानैत छथि।

ई प्रयोगक सीमा ई जे प्रतीकात्मक पाँच क्यारीसँ विभिन्न माटिक वास्तविक उत्पादकता सिद्ध नहि होइत। कृषि-विज्ञानक जाँच लेल ऋतु, माटिक अवस्था, पानि, रोग आ उत्पादनक दीर्घ परीक्षण चाही। कथा स्वयं धीरमतीक ‘जँ बीज नहि उगल’ प्रश्नसँ अपूर्णताक स्वीकार करैत अछि।

## मेड़पर कील आ स्वामित्वक अगिला प्रश्न

पाँचो क्यारीमे रोपनी भेला पर अन्हारमे माटिक सूक्ष्म स्वर सुनाइत अछि; लोक ओकरा स्वीकृतिक बिम्ब मानैत अछि। मुदा भोरमे मेड़पर लोहाक कील, लाल दाग आ माप-फीताक निशान देखाइत अछि। एहि ठोस वस्तुसभसँ कथाक संकट फेर भौतिक अधिकारक धरातलपर आबैत अछि।

‘बीज उगबाक ठाम भेटल, मुदा स्वामित्वक गोहि आयल’—अनन्याक लिखित पाँति भूमि-संबंधी सत्ता प्रश्नकेँ सूक्ष्म बनबैत अछि। मालिक, जोतनिहार, राज्य, कम्पनी आ समुदायक दावामे कोनो एकटा सरल घोषणा अन्तिम समाधान नहि। अभिलेखक प्रमाण, काबिज स्थिति, ऐतिहासिक बहिष्कार आ जीविकाक आवश्यकताक पृथक विवेचन जरूरी अछि।

# अध्याय १०९ — जलक स्मृति

## पाथरक नामसँ पानिक मार्ग धरि

बाढ़िक जल उतरितो ठूँठक चारू कात छोट पोखर बनैत अछि। सतहपर पातक बदला नामक छवि तैरैत अछि; रजिस्टरक पन्ना भीजल अछि, मुदा स्याही मेटल नहि। अनन्या पहिने पानि छूबाक बदला कान लगबैत छथि। ई संकेत दृश्य-केंद्रित अभिलेखसँ श्रवणक कर्तव्य दिस कथाकेँ बढ़बैत अछि। पानि केवल नष्ट होइत देहक स्थल नहि, स्मृतिक काल्पनिक साक्षी बनैत अछि।

पनिडुब्बी आबि कहैत छथि जे माटि नाम धरैत अछि, पानि गति। घरसँ उठाओल व्यक्ति, नावक घाट, पुलक ढहल पाया, अस्पतालक साँस आ स्क्रीनमे डूबल किशोरक अनुभव—ई सभकेँ जलमार्गक भिन्न अर्थ देल गेल अछि। सरकारी नक्शाक सोझ रेखाक बदला जीवल स्मृतिक सम्पर्क-नक्शा बनबाक उपक्रम एतय महत्त्वपूर्ण अछि।

## सत्यव्रतक हाथ धोएब आ मौनक ऋण

पनिडुब्बी सत्यव्रतकेँ आइ लिखबाक बदला हाथ धोएबाक कहैत छथि। पानिमे हुनकर आँगुरपर ‘मौन’, ‘विलम्ब’, ‘साक्षी’ आ ‘ऋण’ सन अक्षर उठैत अछि। ओ सूखिते छाप छोड़ि जाइत अछि। एहि अद्भुत दृश्यक अर्थ विधिक दस्तावेज नहि, आत्मजवाबदेहीक देहगत अनुभव अछि। हाथ धोएब एतय निर्दोष भऽ जाएब नहि; उलटे पुरान मौनक स्मृतिसँ स्पर्श बनैत अछि।

अध्याय ९९क गवाही आ १०५क शपथपत्र एहि दृश्यक पूर्वपीठिका छथि। कथाकार सुनबाक शपथकेँ बारम्बार नब माध्यममे राखैत अछि—कलम, हाथ, पानि। आवृत्तिक गुण स्मृतिक सघनता अछि; सीमा ई जे किछु नैतिक अर्थ एकाधिक प्रतीकमे दोहराएल बुझि सकैत अछि।

## चर्मकारक लोटा आ सार्वजनिक स्मृतिक बहिष्कार

एक वृद्ध चर्मकार लोटामे पानि लऽ उपस्थित होइत छथि। ओ कहैत छथि जे हुनकर पुरुखासभ जूता, डोली आ चमड़ाक काज करैत रहल, मुदा सामुदायिक स्मृतिमे नाम नहि भेटल। घरवाली नामित परिवारक पएर धोएबाक बात जोड़ैत छथि। बच्चासभ नाम-पाथरक घेरामे नव स्थान बनबैत अछि।

बटुकनाथक लोक-स्मृति न्यासक कागजमे ‘जातीय-सामंजस्य’ सन शब्द रहलो, ई सान जल-अर्पण सार्वजनिक भाषाक खोखलापन प्रश्न करैत अछि। समावेशक घोषणा केवल कागजमे नहि, पहिने बाहर राखल व्यक्तिक नाम उच्चारब आ ओकर श्रम सम्मान देबमे परिणत होएबाक चाही।

## बोतलबन्द स्मृति-जलक व्यापार

साँझ धरि पोखरसभ जुड़ि पानिक वृत्त बनबैत अछि। तखने ‘पवित्र स्मृति जल: बोतलबन्द श्रद्धा’ लिखल गाड़ी अबैत अछि। विपणनक काँचक बोतलपर चन्ना गाछीक चित्र आ स्वीकृति अपेक्षित रहल परियोजनाक संकेत अछि। अध्याय बाढ़ि, नदी, मृतकक स्मृति आ सहमतिक भावनाकेँ उत्पादमे बदलबाक संकट एतय सघन करैत अछि।

अनन्याक प्रतिक्रिया जे पानि बाजैत अछि आ बाजार ओकरा बन्द करब चाहैत अछि, अध्यायक प्रतिपक्ष स्पष्ट करैत अछि। मुदा पानि सब रूपमे वस्तुकरणसँ अलग होयत, एहन व्यापक सामान्यीकरण आवश्यक नहि; वास्तविक समस्या सामुदायिक जलाधिकार, सुरक्षित पानिक पहुँच, पीड़ितक स्मृतिक व्यावसायिक उपयोग आ नियंत्रणक न्यायसंगत शर्त अछि। आगामी अध्यायमे ई संघर्ष अधिक स्पष्ट होएबाक सम्भावना अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १०५–१०९

## पृथ्वीक पहरासँ जलक पहराक पाँच कड़ी

१०५मे स्वप्नक धूलि माटिमे मिलैत अछि आ बच्चासभ धरतीक पहरा लिखैत अछि। १०६मे बीजकेँ नाम आ खेतीक संबंधक संग सुरक्षित रखबाक पाठ शुरू होइत अछि। १०७मे शोध-संग्रहक नम्र भाषामे अधिग्रहणक सम्भावना प्रश्नित होइत अछि। १०८मे बीजक रोपबाक माटि आ ओकर भूमि-अधिकार सामने अबैत अछि। १०९मे पानि मृतकक मार्ग आ समुदायसँ जुड़ल स्मृतिक प्रतिमा बनैत अछि, मुदा ओहि पानिक बोतलबन्द बिक्रीक प्रस्ताव उभरैत अछि। एहि पाँच अध्यायमे संरक्षणक अर्थ वस्तु जोगाएब भरि नहि, ओकर उपयोगक अधिकार आ जीवन-सम्बन्ध सुरक्षित राखब अछि।

## डिब्बी, टेबलेट, मेड़, लोटा, बोतल

सुरमणी काकीक डिब्बी पीढ़ीगत आपदा-ज्ञानक संग्रह अछि। परियोजनाक टेबलेट संरक्षण आ व्यावसायिक सूचनाक दोहरा सम्भावना रखैत अछि। धीरमतीक मेड़ जातिगत उपेक्षा आ खेतीक अधिकारक सीमा दर्शबैत अछि। वृद्ध चर्मकारक लोटा बहिष्कृत श्रमक नाम-पाठमे प्रवेशक वस्तु अछि। बोतल सामुदायिक जल-स्मृतिक निजी उपयोगमे बन्द होएबाक प्रतिमा बनैत अछि।

वस्तुसभ एकहि नैतिक अर्थ नहि रखैत; डिब्बी स्थानीय संरक्षणो अछि आ बंदीकरणक जोखिमो, टेबलेट शोधक साधनो भऽ सकैत अछि आ दुरुपयोगक माध्यमो। एहि अस्पष्टताकेँ सुरक्षित राखला पर आलोचना नारा बनबाक बदला बहुअर्थी रहैत अछि।

## स्त्रीक ज्ञान, समुदाय आ आधुनिक विज्ञानक संवाद

बा, सुरमणी, ईरा, मीरा, देविका, धीरमती आ पनिडुब्बी अलग-अलग प्रकारक ज्ञान-स्रोत छथि। बा ऋतु आ गामक अनुभव, सुरमणी बीज-संग्रह, ईरा प्रवासी जिम्मेदारी, मीरा सहमति, धीरमती भूमि-असमानता, पनिडुब्बी जलमार्गक स्मृति सामने अनैत छथि। वैज्ञानिक शोधार्थिनीक पहिने सुनबाक स्वीकृति एहि संवादक एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि।

कथा आधुनिक विज्ञानक प्रतिपक्ष बनबाक आवश्यकता नहि बतबैत, बल्कि ज्ञानक स्रोत चिन्हब, लाभक वितरण आ सहमतिक प्रश्न पूछैत अछि। बाहरी शोधार्थिनीक एकटूक भावनात्मक परिवर्तन पर्याप्त संस्थागत सुधार नहि; लिखित करार आ वास्तविक निगरानी एहि सामाजिक बहसक आवश्यक अगिला स्तर अछि।

## प्रमाणविवेक : उपलक्षण, प्रत्यक्ष आ अनुपस्थितिक कसौटी

मूल पाठक दार्शनिक अन्तर्ध्वनिसभमे विशेषण, उपलक्षण, व्यावृत्ति आ साक्षात् सम्बन्धी विशेषणक चर्चा अछि। एहि सूक्ष्म न्यायशास्त्रीय विभाजनकेँ बीजक नाम, खेतक ठाम, जातिगत पहचान आ मालिकीक दावाक बीच सोझे समकक्ष मानि नहि चलि सकैत। तार्किक पदक स्वतन्त्र अर्थ अछि; सामाजिक उदाहरण ओकर समझमे सहयोग कऽ सकैत अछि, मुदा सिद्धान्तक प्रमाण नहि।

पानिमे नाम तैरब, दानाक स्वर आ माटिक स्वीकृति कथाजगतक अद्भुत अनुभव छथि। वास्तविक कृषिक फल, जीन-संरक्षणक अधिकार, जमीनक नाप आ जलक गुणवत्ता प्रत्यक्ष अध्ययन आ प्रमाणित दस्तावेज माँगैत अछि। प्रतीक आ सत्यापनक एहि द्वैतक कारण उपन्यासक नैतिक ताकत आ ज्ञानमीमांसीय सीमा दुनू पहिचानल जा सकैत अछि।

## उपलब्धि आ अपूर्ण प्रश्न

एहि चक्रक सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि नामक अभिलेखसँ पारिस्थितिकी, बीज-स्वराज्य, जातिगत श्रम आ जल-अधिकार धरि स्मृतिक विस्तार अछि। पाँच क्यारीक विभाजन, सुरमणी

काकीक डिब्बी आ चर्मकारक लोटा पाठकेँ मानवीय गहिराइ दैत अछि। लोकगीतमे सोहर, रोपनी-मंगल आ पनिहारिन-मलारक शैली क्रमशः धरती, बीज आ पानिक विषयसँ जोड़ल अछि।

मुदा अधिकारीक प्रस्तावसभमे बारम्बार समान प्रकारक अधिग्रहणक आशंका अबैत अछि, जकर वास्तविक दस्तावेजी भेद स्पष्ट होयत तँ कथा अधिक परिष्कृत बनत। भूमि-स्वामित्वक कील, माप-फीता आ स्मृति-जलक बोतलक आगमन अगिला संघर्षक विश्वसनीय भौतिक संकेत छथि। आगाँक आलोचनाकेँ एही ठोस वस्तुसभक क्रम आ सामाजिक परिणाम पर केन्द्रित रहबाक चाही।

# अध्याय ११० — आगिक साक्षी

## दू आगिक अन्तर : दहन आ दीयाक इजोत

अध्याय बीज, माटि आ पानिक पछाति आगिक साक्षीक प्रश्न लैत अछि। गाममे आगि चुल्हि जरबैत अछि, दाह-संस्कारक संस्कार निभबैत अछि, दीयाक उजास बनैत अछि; तथापि वैह आगि कागच आ अभिलेख जराकऽ साक्ष्य मेटाएबाक साधन बनि सकैत अछि। ई द्वैध पाठककेँ आगिक पदार्थगत शक्ति आ मनुष्यक उद्देश्य अलग करबाक अवसर दैत अछि।

कागजमे लागल आगिक दृश्य नाटकीय अछि। आरुणि पानि देबाक लेल बढ़ैत छथि, मुदा मीरा बचल राखिक साक्ष्य सुरक्षित राखबाक प्रश्न उठबैत छथि। ओ सभ आगि फैलनाइसँ रोकबो चाहैत छथि आ जे जरल ओकर चिन्ह सुरक्षित राखबो। ई संयोजन व्यावहारिक नैतिकता अछि—साक्ष्य बचएबाक लेल आगि फैलए देब उचित नहि, मुदा सब किछु बुझाएबक नामपर प्रमाण मेटा देबो नुकसानदेह अछि।

## कागचक राखि आ प्रमाणक भौतिक मर्यादा

सत्यव्रत देरिसँ धुँआ लग पहुँचैत छथि। हुनकर पुरान अदालती मुद्रा राखिसँ झाँपल थाकल मनुष्यक रूप धरैत अछि। रजिस्टर आ जन-संहिताक दावासभ आगिक सामने कमजोर देखाइत छथि; लिखल नामक रक्षा लेल कागजक अचल रहब पर्याप्त नहि। शेष राखिक कण तीन ठाम राखल जाइत अछि—नाम-पाथर लग, नव कोंपल लग आ माटिक कटोरामे। एहि वितरणमे मृत्यु, भविष्य आ संग्रह तीन अर्थ अलग-अलग दृश्य बनैत अछि।

राखिमे बचल अक्षर अथवा धुँआमे कथा उभरब उपन्यासक अद्भुत शिल्प अछि, वास्तविक फॉरेन्सिक पद्धति नहि। वास्तविक जाँचमे अभिलेखक शेष पृष्ठ, स्याही, ताला, पहुँच आ अन्य भौतिक स्रोतक जाँच होएत। एतय कथाकार स्मृति नष्ट करबाक असफल इच्छाक नाटकीय रूपक रचैत छथि।

## चाबी देबाक दोष आ पुनर्स्थापनात्मक निर्णय

मूल पाठमे चाबी देल गेल छल, ई सामूहिक निर्णयक कठिन परीक्षा बनैत अछि। नामक संविधान निजता, नाम आ शोकक व्यापारक विरुद्ध अछि; मुदा नियम माननिहारकेँ दण्ड देबाक स्थिति आब समाजक सोझाँ अछि। बाक वाक्य—मनुष्य बचय आ झूठ मरय—दण्डक दिशा स्पष्ट करैत अछि। अपराधक क्रिया, ओकर मंशा आ जिम्मेदारीक समुचित भेद आवश्यक अछि।

दोषक सार्वजनिक परीक्षणमे बच्चासभक भूमिका नैतिक रूपमे प्रभावकारी अछि, मुदा न्यायिक प्रक्रिया, सुनवाईक अधिकार आ साक्ष्यक निष्पक्ष परीक्षण वास्तविक संस्थागत विषय छथि। कथा जखन नैतिक गलतीक संशोधनक रूप देखबैत अछि, तखन ओकरा निजी प्रतिशोधक जगह सामूहिक उत्तरदायित्वक आरम्भ पढ़ब उचित अछि।

## राखिसँ हवाक प्रश्न : तत्त्वक्रमक सेतु

छोट बच्चा पूछैत अछि जे आगि, पानि आ माटि बाजि चुकल, हवा कखन बाजत। ई पूछनाइ कथावाचककेँ नव तत्त्वक विषयमे प्रविष्ट करैत अछि। सत्यव्रत हवाकेँ कठिन गवाह कहैत छथि—ओ ककरो हाथमे नहि ठहरैत, मुदा सभ ठाम पहुँचैत अछि। एहि प्रश्नसँ अध्याय १११क दिशामे कथा बढ़ैत अछि।

लोकगीत ‘राखसँ अंकुर’ विनाशक बाद जीवित सम्भावनाक प्रतिमा अछि। राखि, कोंपल आ धुँआक त्रिकोण सघन अछि; मुदा गवाहक रूपमे अग्निक अस्पष्ट भाव तखनहि तर्कसंगत होएत जखन प्रत्यक्ष अग्नि, भस्मक भौतिक निशान आ आध्यात्मिक कल्पनाक भेद सुरक्षित राखल जाए।

# अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

## धुँआक गन्ध आ सार्वजनिक स्मृतिक संचार

आगिक साक्षीक बाद धुँआ गामक गली-गली घूमैत अछि। लोककेँ आँखि जरबाक बदला पुरान घटनासभ मोन पड़ैत अछि। वायु एतय न लोकगीतक केवल प्राकृतिक अंश अछि, न निष्क्रिय आकाशीय माध्यम। स्मृतिक प्रसार आ अफवाहक प्रसार दुनूक वाहक भऽ सकबाक कारण ओ नैतिक दुविधाक केन्द्र बनैत अछि।

अध्याय कहैत अछि जे हवा केकरो निजी वस्तु नहि, ताहि लेल ओकर लूट आसान अछि। साझा सम्पदाक ई प्रश्न पर्यावरणीय होइतहुँ संचारक माध्यमपर सेहो लागू होइत अछि। जहिना गन्ध नियन्त्रणसँ बाहर घुमैत अछि, तहिना अपुष्ट आरोप एक बेर पसरला पर पीड़ितक प्रतिष्ठा पर चोट करि सकैत अछि।

## वायु-पहराक नियम आ निजताक अनुशासन

बच्चासभ वायु-पहरा बनबैत अछि—अपुष्ट बात नहि उड़ाएब, गुमनाम आरोप नहि दोहराएब, मृतकक नामक संग अपमान नहि जोड़ब, स्त्रीक कथा अनुमति बिना प्रसारित नहि करब। आगिक राखिक ठोस संरक्षणक बाद एहि अमूर्त सामाजिक अनुशासनक स्थापना कथात्मक रूपसँ सार्थक अछि।

मीरा आ देविकाक पुरान निजता-विमर्श एतय लोक-अफवाहक विमर्शमे बदलैत अछि। सोशल माध्यमक वास्तविक काजक तकनीकी चर्चा कम अछि, मुदा सत्यापन, स्रोत आ प्रसारक अधिकारक प्रश्न स्पष्ट अछि। वायु-पहरा केवल चुप रहबाक नियम नहि; प्रमाणित लोकसाक्ष्य सार्वजनिक करबाक न्यायसंगत मार्गो चाही। एहि दोहरी आवश्यकता पर विवेचन आवश्यक अछि।

## शीतल कार्यालय, बन्द शिकायत आ खुलल साँस

चन्द्रपालक वातानुकूलित कार्यालयमे शिकायत छानबाक नामपर स्मृति-अनुप्रयोगक नब रूप तैयार होइत अछि। स्वच्छ, ठंढा, गन्धहीन कार्यालयक हवा आ गामक अनुभव-समृद्ध हवा बीच विरोध सूचना-नियन्त्रणक प्रतीक बनैत अछि। सुनबाक असुविधाजनक अवसरकेँ मात्र शिकायत हटाएबक काममे बदलि देब, कथा एहि मनोवृत्तिक आलोचना करैत अछि।

बच्चासभ ‘सत्य’, ‘नाम’, ‘निजता’, ‘श्रम’, ‘जल’, ‘माटि’, ‘बीज’, ‘अग्नि’, ‘वायु’ लिखल झंडीसँ सार्वजनिक भाषा बनबैत अछि। झंडी दृश्यरूप अछि, मुदा ओकर अर्थ नियमक वास्तविक पालनपर निर्भर अछि।

## कबड्डीमे बालकक स्वीकार आ हवाक पहरा

नकली नाम भरबाक आरोपमे पहिने पकड़ायल बालक खेलमे उतरत डेराइत अछि। अनन्याक कथन—साँस रोकब सरल, झूठ रोकब कठिन—एहि प्रसंगमे आचारक सान मगर प्रभावकारी कसौटी बनैत अछि। खेलक मध्य बालक अपन गलती स्वीकार करैत अछि। लोकखेल फेर अपराधक स्वीकार, संशोधन आ सहकारक विद्यालय बनैत अछि।

अन्तमे हवा स्वयं पूछैत अछि जे साँसक पहरा के करत। ई अलौकिक वाणी जीवनक शर्तक प्रश्न उभारैत अछि: स्वच्छ हवा आ सत्यक साझा अधिकार अलग रहितहुँ एक-दोसराकेँ अर्थ दैत अछि। एतय भीतरी जिम्मेदारीक साथ पर्यावरणक ठोस कारक—धुँआ, प्रदूषण, भूमि उपयोग—पर विस्तार आगाँक सम्भावना अछि।

# अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

## रिक्ति : दस्तावेजक खाली कोष्ठकसँ आकाश धरि

आकाशक विशाल रिक्तता अनन्याक लेल सुनबाक पात्र अछि। मुदा कथा रिक्त शब्दक सामाजिक इतिहास खोलैत अछि—चन्ना गाछीकेँ रिक्त भू-खण्ड कहल गेल, मृत मजदूरक पञ्जीमे नाम खाली रहल, आदेशमे सत्यक स्थान अधूरा, डिजिटल खातामे मनुष्य संख्या बनल। एहि सब उदाहरणमे रिक्ति तटस्थ स्थान नहि, कखनो-कखनो मिटाएल उपस्थितिक परिणाम अछि।

आकाशक खालीपन एहि कारण दोसर अर्थ ग्रहण करैत अछि। प्रश्न उठैत अछि जे जकर नाम आधिकारिक कागजमे अनुपस्थित अछि, ओकर स्मृतिक ठाम कतय? अध्याय मानवक बनाओल रिक्ति आ प्रकृतिक विशाल शून्यकेँ समान नैतिक प्रतीक बनबैत अछि। तथापि दुनू पूर्णतः समान वस्तु नहि; एतय रूपकक सीमा मानि चलब समीक्षात्मक सावधानी अछि।

## ऊपर ताकबाक विधि आ मौनक समय

नव नाम-पाठ विधानमे नाम पढ़लाक पछाति क्षणभरि ऊपर ताकल जाइत अछि—न मन्त्र, न फोटो, न नाटकीय मुद्रा। सामूहिक विराम व्यक्तिगत स्मृतिपर दावा नहि करैत; ओकरा लेल खुलल समय दैत अछि। एहि दृश्यकेँ धार्मिक कर्मकाण्डक पुनरुत्पादनक बदला जिम्मेदार सार्वजनिक शोकक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

सत्यव्रत आ अनन्याक पहिनुक सुननाइ-अनुशासन एतय आकाशक व्यापक बिम्ब पबैत अछि। मुदा नाम लिखबाक व्यावहारिक व्यवस्था आ रिकॉर्डक सुरक्षा केवल मौनक समयसँ पूरा नहि होयत; ओकरा विशिष्ट कानूनी-सामुदायिक कर्म चाही।

## पठाओल संदेशक अनिश्चितता आ प्रमाणक प्रश्न

आकाश दिस पठाओल संकेतक पहुँच सुनिश्चित नहि होइत; सन्देश पर प्रामाणिक प्राप्तिक चिह्न नहि अबैत। ई अनिश्चितता डिजिटल संकेतक पहिल कथाक पुनरागमन अछि। स्वप्नक आकाश एखन खुलल अछि, मुदा तकनीकी ‘पठायल’ आ ‘भेटल’क बीच दूरी बनल रहैत अछि।

नव्य न्यायक दृष्टिसँ ई विशेष महत्त्वक बिन्दु अछि: प्रेषणक ज्ञान आ प्राप्तिक ज्ञान समान नहि। संदेशक चिह्न अनुपस्थित होएब अपने-आप प्राप्ति-नहि-हेबाक निश्चित प्रमाण नहि; ओ केवल ज्ञानक सीमा बतबैत अछि। कल्पना आ प्रमाणक एहि अन्तरकेँ लेखक जँ अधिक विस्तृत करथि तँ तार्किक शिल्प सघन होएत।

## ताराक बीच खेल आ जड़िक आमन्त्रण

कबड्डीक रेखा माटि सँ उठि ताराक बीच देखाइत अछि; एक बालकक छाह उलटा आकाशमे दौड़ैत अछि। ई अद्भुत छवि आकाशकेँ स्मृति-प्रक्षेपणक विशाल पट बनबैत अछि। ईरा प्रवासी बच्चासभकेँ लिखैत छथि जे साझा आकाशक रिक्तता दूरीक बीच संबंधक संकेत अछि।

अन्तमे ठूँठक ओसक बून्दमे तारा उलटल देखाइत अछि आ धरतीक भीतरसँ ढोलकक थाप उठैत अछि। आकाशक बाद जड़ि आ पातालक प्रश्न उभरैत अछि। शिल्पगत सुसंगति ई जे विशालतम स्थलसँ अतिसान बून्द, फेर भूमिगत ध्वनि धरि यात्रा एक क्षणमे घटैत अछि। एहि परिवर्तनक कथार्थ आगामी अध्यायक मूल पाठसँ जाँचल जाएबाक चाही।

# अध्याय ११३ — शब्दक देह

## झूठक कागजी देह आ साँचक श्रम

‘शब्दकेँ सेहो देह चाही’ शीर्षकक मूल तर्क ई अछि जे झूठ करार, मुहर, निविदा आ भाषणक संस्थागत आकार तुरन्त धारण करि लैत अछि, मुदा साँचक शब्द जँ क्रियामे नहि उतरत तँ ओकर प्रभाव उड़ि सकैत अछि। अध्याय कागजक भाषा बनाम जीवित अनुभवक संघर्षकेँ दार्शनिक ऊँचाइ दैत अछि।

एहि प्रतिपादनमे एक सावधानी चाही: लिखल कागज अपने झूठ नहि, मौखिक स्मृति अपने सत्य नहि। मूल संकट शब्दक माध्यम नहि, ओकर स्रोत, सम्वाद आ काजसँ सम्बन्ध अछि। कथाकारक गम्भीर आशय सेहो एहि भेद दिस निर्देशित अछि।

## नामक देहक चारि उत्तर : पाथर, कण्ठ, कान, समय

पाठशालामे बच्चासभ नामक देह पाथर, उच्चारित मुँह, सुननिहार कान आ प्रतीक्षा करैत समय रूपमे पहिचानैत अछि। चारूक उत्तर मिलाकऽ स्मृतिक सामाजिक क्रियाक्रम बनैत अछि: अभिलेख, वाणी, ग्रहण आ धैर्य। एहि सरल बालसंवादमे अमूर्त तर्क सहज होइत अछि।

सत्यव्रत कानूनक शब्दक मजबूत देह—धारा, आदेश, शपथपत्र—मानैत छथि, मुदा पीड़ितक जीवनसँ कटला पर वैधानिक भाषा नीरस होएबाक आशंका उठबैत छथि। ई स्थिति कानूनक अनावश्यकता नहि, नैतिक प्रयोजनसँ ओकर सम्बन्धक आग्रह अछि।

## न्याय, पृथ्वी आ वस्तुक अग्रभाग

ईरा ‘पृथ्वी’ शब्दक आगाँ बीज राखैत छथि; पृथ्वी वैचारिक गोल आकृति नहि, श्रम उठबैत पएर अछि। आरुणि ‘न्याय’ शब्दक आगाँ तुलसीक पात रखैत छथि; न्यायकेँ केवल दण्डसँ

अलग जीवन-संरक्षणक अर्थ दैत छथि। शब्दक सामने वस्तु राखबाक ई शिक्षण-पद्धति बालपाठशालाक रूपेँ सुगम अछि।

मुदा शब्दक अर्थ कोनो एक वस्तुसँ पूर्णतः सीमित नहि होइत। ‘न्याय’क अगाँ तुलसी रखला परो प्रक्रिया, साक्ष्य, अधिकार आ दण्डक प्रश्न बने रहैत अछि। साहित्यिक बिम्ब अर्थक प्रवेश-द्वार अछि, पूर्ण परिभाषा नहि।

## करारक अदृश्य देहक खतरा

रातिमे अनिश्चित स्रोतसँ उतरैत किरिणक भीतर ‘करार’ शब्द उभरैत अछि। ओकर चिन्ह चमकैत अछि, मुदा कोनो पाथर, पात अथवा साधारण देह नहि। अनन्या कहैत अछि जे देहहीन करार दोसरक देह कीनए चाहैत अछि। बूढ़बा भूत ‘करारक पेट’ खोजबाक चेतावनी दैत छथि।

कथानक एतय आगामी आर्थिक-अधिकारक प्रश्नक पूर्वाभास दैत अछि—कागज वा शब्दक पाछाँ लाभार्थी, शर्त, श्रम आ जमीनक स्थितिक खोज। ई रचनाक महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। केवल चमकैत शब्दसँ वास्तविक करार अस्तित्वमे अछि अथवा वैध अछि, से सिद्ध नहि; दार्शनिक शंका आ स्रोतगत निरीक्षणक भेद राखब जरूरी।

# अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

## एकहि ‘उपस्थित’ शब्दक तीन प्रसंग

अध्याय सरकारी ‘उपस्थित अभियान’क झंडी देखाकऽ एकहि शब्दक अर्थ बदलएबाक प्रश्न उठबैत अछि। बच्चासभ तीन गोल बनबैत अछि—मृतक परिवारक उत्तर, सरकारी अभियान आ स्वप्नक अनाम ग्रहक दीवार। अक्षर समान, मुदा पहिलमे नोर आ सम्बन्ध, दोसरमे कार्यक्रमक हिसाब, तेसरमे रिक्तता। एतय शब्दक सन्दर्भगत अर्थक स्पष्ट पाठ अछि।

भाषा केवल अक्षरक अभिन्नता नहि। के बजैत अछि, कोन उद्देश्यसँ, ककर उत्तरदायित्वमे, आ श्रोता के छथि—ई सब अर्थनिर्माणक भाग अछि। अनन्याक ‘देह वैह, आत्मा बदलि सकैत’ सम्बन्धी टिप्पणी शब्दक सामाजिक उपयोग पर केन्द्रित अछि।

## सम्मानक दावाक परीक्षण

अधिकारी ‘सम्मान’ देबाक बात कहैत अछि, मुदा अनन्या पूछैत अछि जे एहि सम्मानमे सत्य हटाओल गेल कि नहि, आ उपस्थितिक घोषणा ककर अनुमति पर अछि। अधिकारीक नियम-पुस्तिका अर्थक सामाजिक स्रोतक सम्पूर्ण उत्तर नहि दैत अछि। एहि प्रश्नोत्तरमे कार्यक्रमक भाषा आ पीड़ित परिवारक वास्तविक अनुभवक दूरी प्रकट होइत अछि।

कथाकार केवल शासकीय कर्मक अवमानना नहि करैत। प्रश्न प्रशासनिक अभियानक शब्दक सत्यता अछि: अगर सम्मानक दावाक संग सुन्नाइ, सुधार आ अधिकार जुड़ि जाए तँ संस्था उपयोगी भऽ सकैत अछि। खाली झंडी बिम्बात्मक समाधान नहि।

## सत्यव्रतक विलम्बित न्याय आ शब्दक काल

‘न्याय’ शब्दक परीक्षणमे सत्यव्रत स्वीकार करैत छथि जे कतेको बेर शब्दक सेवा करैत-करैत पीड़ितक समय नष्ट कएल गेल। एहि वाक्यसँ पुरान अदालती विलम्बक कथा फेर

उभरैत अछि। न्याय शब्द तखने जीवित अछि जखन ओकर प्रक्रियाक समय मनुष्यक जीवनक संग न्याय करैत अछि।

नव्य न्यायक अभाव-संबंधी प्रश्न एतय सामाजिक अर्थ पबैत अछि, मुदा विशिष्ट दार्शनिक पदक उपयोग बिना समुचित तार्किक सन्दर्भक प्रदर्शनक रूप बनि सकैत अछि। समयपर सुननाइ आ देरीक उत्तरदायित्वक ठोस दृश्य ही एहि अध्यायक सर्वाधिक प्रभावी पक्ष अछि।

## पुनर्व्याख्याक भीजल पर्चा आ अगिला संघर्ष

पनिडुब्बीक पोखरिसँ बच्चा भीजल पर्चा आनैत अछि। ‘उपस्थित अभियान’क छाप बहि गेल अछि, मुदा ‘पुनर्व्याख्या’ शब्द बचल अछि। एतय अर्थ बदलबाक प्रस्ताव पर सीधा विवाद आरम्भ होइत अछि। छपल अक्षरक नील-लाल रंग बालकक आँगुरपर लागैत अछि; भाषा शरीरपर दाग बनि उतरैत अछि।

अध्याय अपन दार्शनिक निष्कर्षकेँ नव कथावस्तुमे परिणत करैत अछि: करारक अर्थ ककर नियंत्रणमे रहत, पुनर्व्याख्या किनका लाभ देत, आ पीड़ितक नामक सहमति कोना सुरक्षित रहत। बूढ़बाक ‘अर्थक हत्या’ कथन भयानक बिम्ब अछि, मुदा आगामी अध्यायमे विशिष्ट पर्चा आ प्रावधान देखला परे ओकर ऐतिहासिक/विधिक अर्थ स्पष्ट होयत।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ११०–११४

## राखि, हवा, आकाश, शब्द आ अर्थक परिवर्तित साक्ष्य

११०मे आगिक विनाशक बाद राखि बचैत अछि। १११मे धुँआ वायुमे फैलि सार्वजनिक स्मृति आ अफवाहक बीच रेखा खींचैत अछि। ११२मे रिक्त आकाश मेटायल नामक स्थान पर प्रश्न करैत अछि। ११३मे शब्दक सामाजिक देह पाथर, कण्ठ, कान, समय आ करारक रूपमे परखल जाइत अछि। ११४मे ‘उपस्थित’क एकहि अक्षर तीन प्रसंगमे भिन्न अर्थ ग्रहण करैत अछि। पाँच अध्यायक मुख्य प्रवाह पदार्थक साक्षीसँ भाषिक नियन्त्रण धरि चलैत अछि।

## सामुदायिक पाठशालाक क्रमिक नव अभ्यास

कबड्डी ११०मे राखिक पहराक पछाति हवाक प्रश्न उठबैत अछि; १११मे बालक अपन झूठ स्वीकार करैत अछि; ११२मे खेलक रेखा तारा धरि फैलैत अछि; ११३मे प्रत्येक दौड़ एक शब्दक देह खोजबाक अभ्यास बनैत अछि; ११४मे तीन गोल शब्दक सन्दर्भगत परीक्षणक रूप धारण करैत अछि। लोकखेल निरन्तर पद्धति बनि रहल अछि।

बच्चाक प्रयोगशील सोच गंभीर प्रश्नकेँ सरल बनबैत अछि। तथापि लगातार अलौकिक उत्तर वा प्रतीकात्मक अभियान वास्तविक संस्थागत परिवर्तनक विवरणक स्थान नहि लेबाक चाही। एहि दुविधाकेँ रचनाक उपलब्धि-संग सीमा रूपमे देखल जा सकैत अछि।

## स्रोतक परीक्षण : राखिक निशान बनाम आलंकारिक गवाही

राखिमे शेष अक्षर, धुँआमे स्मृति, ताराक बीच उलटल छाह, करारक चमकैत शब्द आ भीजल पर्चाक उभरैत अर्थ एकहि स्तरक प्रमाण नहि। किछु दृश्य शुद्ध अद्भुत कथा, किछु

सामाजिक अनुभवक बिम्ब, आ किछु ठोस दस्तावेज-संकेत छथि। एहि भेदकेँ परिभाषित करब नव्य न्यायक प्रमाण-विवेकक उपयोगी अभ्यास अछि।

११४क भीजल पर्चा वास्तविक कथाजगतक वस्तु अछि; ओकर लेखन, अधिकार आ सन्दर्भ जाँचल जा सकैत अछि। ११२क आकाशमे नामक ठाम साहित्यिक कल्पना अछि। दूनूकेँ एकहि प्रमाण-स्तरपर राखला पर आलोचनाक तर्क कमजोर होएत।

## निजता, सार्वजनिक सत्य आ करारक प्रच्छन्न अर्थ

वायुमे नुका प्रसारित गुमनाम आरोप आ पीड़ितक छविक दुरुपयोगक विरुद्ध १११क नियम ११४क सरकारी ‘सम्मान’ अभियानक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि। कथाकार याद करबैत अछि जे सार्वजनिक सत्यक हकक संग निजी कथाक सहमति आवश्यक अछि। करारक शर्त आ लाभार्थी अस्पष्ट रहला पर समुदायकेँ केवल श्रद्धांजलिक भाषा सँ आश्वस्त नहि कएल जा सकैत।

सत्यव्रतक स्वीकृति जे विलम्ब न्यायक अर्थ बदलि दैत अछि, एहि चक्रक सघन नैतिक अंश अछि। लिखित शब्दक प्रामाणिकता लेल स्रोत, समय, हकदारक आवाज आ परिपालन चारू जाँच जरूरी अछि।

## शिल्पगत उपलब्धि, पुनरावृत्ति आ आगाँक जिज्ञासा

तत्त्वक क्रम—आगि, वायु, आकाश—एक परिचित सांस्कृतिक संरचनाकेँ आधुनिक अभिलेख, निजता आ पर्यावरणक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। पाठमे राखि सँ उड़ल धुँआ, हावामे फड़फड़ाइत झंडी, ओसक बून्दमे उलटल तारा आ पर्चाक नील दाग एहन चित्र छथि जे विचारकेँ दृश्यक आधार दैत अछि।

तथापि प्रत्येक अध्यायक अन्तमे अगिला ‘पहरा’ वा ‘प्रश्न’क पूर्वसूचना सन आवृत्ति कथावस्तुकेँ कखनो कार्यक्रमात्मक बनबैत अछि। तत्काल परिणाम, विरोधीक विशिष्ट

कारण आ निर्णायक वैधानिक बहस अधिक विस्तार पाबि सकैत छल। ‘पुनर्व्याख्याक दरबार’क संकेत एहि अपूर्णताकेँ अगिला कथात्मक परीक्षामे रूपान्तरित करैत अछि।

# अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

## आवाजक देह आ संग्रहक दुविधा

‘श्रवण-संरक्षक’ नामक मंडली नाम-पाठक आवाज रिकार्ड करबाक यन्त्र लैत अछि। ओकर पहिल तर्क व्यवहारत: उचित बुझाइत अछि—भविष्यक पीढ़ी जँ मूल कण्ठ सुनि सकत तँ लोकस्मृतिक एक स्रोत सुरक्षित रहत। मुदा कथा पहिने दिनहि प्रश्न रखैत अछि जे कण्ठक अधिकार ककरा भेटत, ध्वनि ककर स्वामित्वमे जमा होयत आ शोकक स्वरक भविष्यक उपयोग के तय करत।

आवाज हवा मे फैलला परो अनाम वस्तु नहि बनैत। ई अध्यायक मूल नैतिक आग्रह अछि। शारीरिक कण्ठ, परिवारक स्मरण आ संस्थागत ध्वनि-अभिलेखक बीच अन्तर रखला पर संरक्षणक प्रस्ताव अपन वास्तविक परीक्षा पबैत अछि।

## उज्ज्वलक माय आ उपकरणक अधैर्य

यन्त्र लगाओल मंडली उज्ज्वलक मायकेँ साफ आवाज देबाक लेल सोझाँ बैसाबय चाहैत अछि। मीरा तुरन्त पूछैत छथि जे स्वर साफ चाही कि मन साफ। माय अपन बेटाक नाम धीरे उच्चारबाक इच्छा रखैत छथि। उपकरण जँ धीर स्वर नहि सुनि सकय, तँ दोष अभिभाविकाक नहि, उपकरणक सीमा अछि।

एक बालक अपन पुल-निर्माणमे हेरायल दादाक नाम बजबैत गला रुँधि लेत अछि। यन्त्रक लोक स्पष्ट उच्चारणक आग्रह करैत अछि, जबकि अनन्या रोदन सेहो स्वर हेबाक बात कहैत छथि। रचना एतय अभिलेखक तकनीकी गुणवत्ता आ जीवित दु:खक स्वायत्तता बीच कठिन विरोध दिखबैत अछि। पीड़ितक थाकल कण्ठसँ प्रदर्शनकारी स्पष्टता माँगब दोसर बेर चोट पहुँचा सकैत अछि।

## सहमतिक विधि आ सार्वजनिक स्मृति

सत्यव्रत पहिने सुनैत छथि, फेर एक सीमा निर्धारित करैत छथि: भविष्यक नामपर वर्तमानक अधिकार छीनल नहि जा सकैत। संग्रह सम्भव अछि, मुदा पीड़ित परिवार, समुदाय आ नाम-पहरुआक शर्तपर। ई निष्कर्ष डिजिटल अभिलेखक सम्पूर्ण निषेध नहि, बल्कि सहभागी नियन्त्रणक माँग अछि।

सहमति कखनो एक बेर हस्ताक्षर लेलाक बाद सर्वकालिक हस्तान्तरण नहि बनबाक चाही। भावी प्रसारण, संपादन, व्यावसायिक उपयोग आ वापसीक अधिकार स्पष्ट भेनाइ आवश्यक। एहन प्रश्न आलोचनात्मक विस्तार छथि; मूल कथा एही दिशा खोलैत अछि, प्रत्येक प्रक्रियात्मक समाधान नहि दैत।

## लोभक कान बनाम सुननाइ

मंडली यन्त्र समेटैत अछि; अनन्या ओकर नाम रजिस्टरमे ‘लोभक कान’ लिखबबैत छथि। रातिक नाम-पाठ उपकरण बिनु होइत अछि। लोक समीप बैसैत अछि, धीमा, काँपैत, अटकल कण्ठ आ चुप्पीक बीच एक-दोसराकेँ सुनैत अछि। कथाकार तकनीकी निकटताक बदला मानवीय निकटता केँ एतय प्रतिष्ठित करैत अछि।

मुदा यन्त्रक सीमाकेँ हर रिकॉर्डिंगक दोष मानब उचित नहि। दूर बैसल प्रवासी आ पछिला पीढ़ी लेल ध्वनि-संग्रह लाभकारी भऽ सकैत अछि। अध्यायक कलात्मक बल अधिकारक प्रश्न अछि, तकनीकक एकरेखीय अस्वीकार नहि। अन्तमे ‘लेखनी’क चमकैत शीर्षक अगिला भाषा-संघर्षक पूर्वाभास बनैत अछि।

# अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

## दू प्रकारक मौनक नैतिक भेद

अध्याय आरम्भमे मौनक दू रूप अलग करैत अछि: सत्ताक संरक्षण करनिहार मौन, आ घावक सुरक्षा करनिहार मौन। पहिल मौनक हिसाब पूछब न्याय अछि; दोसरकेँ जबरदस्ती तोड़ब हिंसा भऽ सकैत अछि। एहि मूल भेदसँ पहिनुक सत्यव्रतक ‘पहिल मौन’ आ ‘दोसर मौन’क प्रश्न फेर व्यापक सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

आवाज-संग्रहक मंडलीक दाबासँ मौन विक्रययोग्य अथवा कृत्रिम रूपेँ निर्मित होएबाक जोखिम उभरैत अछि। रचना अब केवल ध्वनि-स्वामित्व नहि, चुप रहबाक अधिकार पर विचार करैत अछि।

## रिक्त पन्ना, कटोरा आ निःशब्द उपस्थिति

नाम-पञ्जीमे ‘जे नहि बाजल, मुदा उपस्थित छल’ लिखल खाली पन्ना राखल जाइत अछि। उज्ज्वलक माय ओकरा पर हाथ राखि बैसैत छथि; देविका प्रश्न करबाक बदला कटोरा लगा दैत छथि। रिक्त कटोरा निष्क्रियता नहि, कथा कहबाक बाध्यता स्थगित करबाक सजीव वस्तु-प्रतीक अछि।

एतय बालपाठशालाक नियम जटिल होइत अछि: चुप्पी केँ तुरन्त सन्देह मानि प्रतिक्रिया माँगब नहि; पहिने व्यक्ति स्वयं कतेक कहए चाहैत अछि से बुझब। स्मृति-रक्षाक आग्रह पीड़ितक इच्छा पर बलात् लागू होए तँ ओ सेहो दोसर प्रकारक नियंत्रण बनि सकैत अछि।

## अवाक् बालिकाक संकेतभाषा आ खेल

नकली भूतक जुलूसमे मुखौटा उतारने बालक अपन अवाक् बहिनकेँ अनैत अछि। शहरक लोक हुनका तमाशा अथवा दयाक पात्र बना देने छल; बच्चासभ हुनकर पातपर खींचल

रेखाक अर्थ बुझबाक प्रयत्न करैत अछि। मौनक कबड्डीमे स्वरक अनुपस्थिति खेलक अभाव नहि बनैत, वैकल्पिक सञ्चारक सम्भावना देखबैत अछि।

एहि दृश्यपर समावेशनक पक्की आलोचना आवश्यक: नहि बजि सकनाइ मानवीय सोचक अभाव नहि। संकेत, स्पर्श, लेखन वा सहमति व्यक्त करबाक अन्य विधिक प्रति संवेदनशीलता बचब आवश्यक अछि। कृति एहि पक्षमे सही दिशा दैत अछि।

## बजारक रिक्त वृत्त आ दृष्टिक अगिला संकट

लाउ किन-हंगक स्वप्नमे आवाज-संग्रहक अपेक्षित प्रतिध्वनि नहि अबैत; केवल मौनक कबड्डीक खाली वृत्त अछि। स्वप्नक ई दृश्य बजारक ओ सीमा चिन्हबैत अछि जतय न बिकबाक निर्णय स्वयं अधिकार बनैत अछि। तथापि ई आर्थिक व्यवस्थाक वास्तविक रूपक मात्र अछि, स्वप्नसँ बाह्य लेन-देन सिद्ध नहि होइत।

अध्याय अन्तमे दृष्टिक पहराक संकेत देत अछि: जे बोलय नहि चाहत ओकर चेहरा, नोर आ देह व्यावसायिक दृश्य बनाओल जाएत। एहि संक्रमणसँ कण्ठ, चुप्पी आ छविक नियन्त्रणक सामूहिक समस्या बनैत अछि।

# अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

## सुनल नामक देनदारी : संस्कार नहि, काज

अध्यायक मूल प्रश्न अछि जे नाम सुनला पर केहन उत्तरदायित्व जन्मैत अछि। केवल पुष्प, स्मारक वा समारोहसँ ऋण नहि उतरैत। ईरा बच्चासभकेँ ओहन व्यक्ति खोजबाक कहैत छथि जकर नाम घरक भोजन, श्रम आ सेवा मे उपस्थित रहितहुँ सम्मानक उच्चारणसँ अनुपस्थित अछि। सन्दूक, बही आ कोठीक भीतरक नाम खोजबाक अभ्यास स्मृतिकेँ व्यवहारक सुधारसँ जोड़ैत अछि।

ऋणक शब्द धार्मिक संस्कारक छाया लैत अछि, मुदा कथा एकरा अपूर्ण सामाजिक कर्तव्यक संकेत बना दैत अछि। जकर नाम सुनल गेल ओकर परिवारक इच्छा, वर्तमान जोखिम आ जीविकाक दुरुस्ती देखब ओहि ऋणक भाग बनैत अछि।

## गंगेशक मूर्ति आ असुविधाजनक जीवन

बाकेँ प्रतीत होइत अछि जे विचारकक बुद्धि पूजि ओकर जीवनक कठिन प्रश्न बाहर राखल जाए तँ सम्मान अधूरा रहैत अछि। गंगेशक कथा एहि संदर्भमे पुनः अबैत अछि। जन्म, कुल आ जातिक प्रश्नक जनश्रुति रचनाक भीतर सामाजिक विसंगतिक प्रतीक अछि; ओकर ऐतिहासिक सत्यापन नहि भेने आलोचककेँ निश्चित जीवनीक दावा नहि करबाक चाही।

एहि प्रसंगक सार ई जे विचारककेँ शुद्ध मूर्ति बनाकऽ एक आधा जीवन मेट देब स्मृतिक सम्मान नहि। वैचारिक ज्ञान आ सामाजिक बहिष्कारक परस्परविरोधकेँ देखब नैतिक पाठक काज अछि।

## रकमक योजना आ अधिकारक सम्भावित विक्रय

‘स्मृति-ऋण मुक्ति योजना’क पत्र परिवारकेँ सम्मान-राशि देबाक प्रस्ताव रखैत अछि, बदलामे आधिकारिक स्मारकक कथा स्वीकारब आ स्वतन्त्र नाम-पाठक आवश्यकता

घटेबाक शर्त अछि। ई खण्ड पुस्तकक पुरान ‘स्मृति पर निविदा’क प्रश्न नव रूपमे अनैत अछि। परिवारक वास्तविक आर्थिक आवश्यकता आ स्मृतिक स्वायत्त अधिकार एक-दोसरक विरोधी बनाओल जाइत छथि।

आर्थिक सहायता लेनाइ अपन आपमे अनुचित नहि; समस्या जँ सहायता स्वीकार करबाक शर्त पीड़ितक कथन बदलनाइ अथवा अधिकार छोड़ब होय। मीरा, देविका, सौम्या, ईरा आ आरुणिक भिन्न प्रतिक्रियासभ एकरे व्यापक रूपक बनैत अछि।

## ऋण-मुक्ति ककर? लेखांकनक उलटल सवाल

गोप कुमारक पुरान अभिलेखमे मजदूरक मृत्यु, ठगीक खाता, अस्पतालक बिल आ दानक हिसाब अनेक उलटा नामेँ लिखल अछि। जे शोषण करैत अछि ओ कभी देनदार नहि, जे पीड़ित अछि ओकरा पर खर्च लिखल जाइत अछि। कथा लेखांकनक भाषा पर सामाजिक तर्कक प्रतिवाद करैत अछि।

कबड्डीक रेखा नाम-पाथरसँ खेलाड़ीक पएर धरि पहुँचैत अछि; ऋणक भार सहयोगक रूपेँ देहमे प्रवेश करैत अछि। मध्यरातिक भीजल पत्रपर ‘मुक्ति ककर?’ बचि रहब योजनाक मूल आलोचनात्मक सूत्र अछि। उत्तर लेल राहतक रकम, अधिकार-पत्र आ समुदाय-सहमतिक पृथक परीक्षण जरूरी होयत।

# अध्याय ११८ — देहक अधिकार

## नामक पञ्जीसँ शारीरिक स्वायत्तता धरि

अध्याय कहैत अछि जे नाम आ स्वर बचल रहितहुँ देहपर स्वायत्त अधिकार सुरक्षित नहि भेल तँ स्मृतिक न्याय अधूरा। गोहि द्वारा नष्ट देह, पुलक पाया तर दबायल मजदूर, अस्पतालक उपचार, जाति-आधारित अपमान आ निजी चित्रक दुरुपयोग एकहि नैतिक प्रश्नक अलग सामाजिक स्थल छथि। रचनाक नैतिक विकास एतय नामसँ देहक पूर्ण व्यक्तित्व धरि पहुँचैत अछि।

देहपर अधिकारक प्रश्न केवल भावनात्मक स्मरण नहि; जीवित व्यक्ति लेल अनुमति, सुरक्षित जीवन आ निजी निर्णयक अधिकार अछि। मृतकक अवशेष आ परिवारक स्मृतिगत अधिकारक स्थिति भिन्न अछि। समीक्षामे एहि भेदकेँ राखब आवश्यक।

## संग्रहालयक डिब्बा आ परिवारक अधिकार

ब्रूमक प्रतिनिधि स्मृति-वस्तु संग्रहालयक काँचक भीतर राखबाक प्रस्ताव केँ संरक्षण कहैत अछि। देविका स्मरण करबैत छथि जे टिकट बेचबाक लेल दुखक संग्रह दोसर बेर वस्तुकरण भऽ सकैत अछि। अभिलेखीय संरक्षण आ व्यावसायिक प्रदर्शन बीच अनुमति आ लाभक स्पष्ट शर्त चाही।

कपड़ा, माटि अथवा अस्थि जकाँ वस्तु परिवारक अनुभूतिक केन्द्र छथि। ओकरा हटेबा पूर्व परिवारक सहमति आ गरिमाक विचार आवश्यक अछि। कथा वस्तु वापस परिवारक घर राखबाक क्रियासँ ई अधिकार दृष्टिगोचर करैत अछि।

## बच्चासभक पाँच नियम आ विधिक मर्यादा

कादम्बरी देहक अधिकारक पाँच प्रकारक नियम तैयार करैत अछि—व्यक्तिगत स्वायत्तता, परिवारक गरिमा, जातिगत अपमानक निषेध, शोध-दान-प्रदर्शनमे अनुमति, आ मौन रखबाक

अधिकार। ई विवेचन मीराक निजता-संघर्षसँ जुड़ैत अछि। अनन्या कहैत अछि जे बिना अनुमति फोटो, कपड़ा, दुःख वा अस्थि छूएवला हाथ पहरुआ नहि, चोर होइत अछि।

नियम नैतिक दावा रूपमे प्रभावकारी छथि; विधिक प्रसंगमे नाबालिग, मृतक, सामुदायिक स्मृति आ सार्वजनिक हितक भिन्न स्थिति अलग प्रक्रियाक माँग करैत अछि। कथा एहन प्रश्न उठबैत अछि, अन्तिम विधिक संहिता नहि दैत।

## कपड़ाक घर-फेर आ जाति-पञ्जीक खतरा

साँझक विधिमे प्रदर्शनी लेल लऽ जाएबाक कपड़ा परिवारक घर फेर पहुँचैत अछि, माटि ठूँठक जड़िमे राखल जाइत अछि। देहक सम्मान अमूर्त भाषणक बदला सान लौटनाइक काजमे देखाइत अछि। गोहि सभक पानिमे वृत्त बनब अद्भुत प्रतीकक रूपमे अबैत अछि।

अध्याय अन्तमे पुरान जाति-रजिस्टर उघड़बाक संकेत अछि। एतय नैतिक संघर्ष स्पष्ट: देहक आधुनिक स्वायत्तता आ पुरान सामाजिक वर्गीकरणक बीच असंगति। ऐतिहासिक पञ्जीकेँ केवल प्रतीक मानि छोड़ला पर वास्तविक सामाजिक अधिकारक प्रश्न छोट भऽ सकैत अछि; अगिला अध्यायमे ओकर परीक्षण अपेक्षित।

# अध्याय ११९ — श्रमक देह

## फाटल जूता, सिमेन्टक नह आ नामहीन पर्ची

आरुणि तीन वस्तु रखैत छथि—मजदूरक फाटल जूता, सिमेन्टमे अटकल नह, आ नामक बदला संख्या लिखल मजदूरी-पर्ची। एहि त्रयीमे श्रमक शरीरक ठोस साक्ष्य अछि। संख्या ‘पुरुष ४७’, ‘स्त्री ९’, ‘अन्य ३’ सामग्री प्रबन्धनक सूचना होइतहुँ व्यक्तिक निजी चिन्हारि नहि। अनन्याक प्रश्न जे संख्या नामक स्थान लऽ सकैत अछि कि नहि, कृतिक सामाजिक तर्ककेँ धार दैत अछि।

एकटा आँकड़ाकेँ स्वतः अमानवीय मानब उचित नहि; आवश्यक प्रश्न ई जे डेटा व्यक्तिक जीवनक अधिकारक संग जुड़ल अछि कि ओकर नाम मेटाएबाक उपाय बनल। गोप कुमार अपन सुरक्षित रखल अधूरा अभिलेखक सीमा बुझैत छथि।

## स्त्री श्रमिक आ अदृश्य कामक वितरण

मीरा पूछैत छथि जे जखन देहक लिंग वर्गीकृत कएल जा सकैत अछि तँ व्यक्तिक नाम किएक नहि। ई प्रश्न केवल गणनाक सिद्धान्त नहि, स्त्री-श्रमक अधिकारक अधूरापन खोलैत अछि। जीवित श्रमिकक विश्राम, मृत्यु-पछाति परिवारक सहायता आ श्रमक मूल्य एकहि न्याय-विमर्शक भाग बनैत अछि।

लोकगीत ‘पसीनाक अक्षर’ श्रमकेँ लिखित दस्तावेजसँ आगे मानवीय देहक गवाही बनबैत अछि। कविता-जेकाँ भाषा भावनात्मक आधार बनैत अछि, मुदा मजदूरीक रकम, कामक शर्त आ सुरक्षा-नियमक ठोस हिसाब आगाँक शोध लेल आवश्यक रहत।

## चन्द्रपालक ‘म्यूल खाता’क श्रमिक उपमा

भगेलू पासवान कहैत छथि जे श्रमिकक देह सेहो माध्यमक खाता बनि गेल—पसीना हुनकर, लाभ आनक; करार आनक, मृत्यु हुनकर। एहि कथनमे चन्द्रपालक आर्थिक जालक

रूपक श्रमिक शोषणक नब अर्थ ग्रहण करैत अछि। ई तुलना सघन अछि, कारण दूनू ठाम श्रम अथवा रकमक स्रोत आ वास्तविक लाभार्थी अलग होइत अछि।

तथापि वैधानिक अर्थमे म्यूल-खाता आ शोषित मजदूरी एकहि श्रेणी नहि। काव्यात्मक उपमा समान अनुभवक संकेत मात्र अछि; आर्थिक जाँचमे अलग कारण-क्रम आवश्यक रहत।

## जीवितक विश्राम आ अदृश्य श्रमक पहरा

सत्यव्रत कहैत छथि जे न्याय केवल मृतकक नाम नहि, जीवितक थाकल देहक विश्राम सेहो पूछत। बच्चासभ शब्दक उत्तर देबाक बदला मजदूरसभक पएर धोबाक लेल पानि अनैत अछि। ई विधि प्रतीकात्मक रहितहुँ सामूहिक व्यवहारमे परिवर्तनक सान संकेत अछि।

अध्यायक अन्तमे ‘जे काज करैत अछि, मुदा देखाइ नहि पड़ैत’ लिखल खाली पाथर राखल जाइत अछि। ई रिक्त पाथर भविष्यक शोधक सूचक अछि: घरेलू काम, जातिगत श्रम, अस्थायी मजदूरी, अवैतनिक सेवा आ श्रमिक सुरक्षा सब मे नामक पुनर्वितरण आवश्यक अछि। अगिला अध्यायक ‘न्यायक देह’क संकेत एहि प्रश्नक तार्किक विस्तार बनैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय ११५–११९

## कण्ठसँ मौन, ऋणसँ देह आ श्रम धरि

अध्याय ११५मे संग्रहित आवाजक स्वामित्व प्रश्नित होइत अछि। ११६मे मौनक दू रूप आ निःशब्द संचारक अधिकार उभरैत अछि। ११७मे स्मरणक ऋण धनक बदलामे मौन-समर्पण बनेबाक जोखिम देखाओल जाइत अछि। ११८मे शारीरिक स्वायत्तता आ निजी वस्तुक स्वामित्व महत्त्वपूर्ण होइत अछि। ११९मे मजदूरक फाटल जूता आ नामहीन पर्ची स्मृतिकेँ जीवित श्रमक न्यायसँ जोड़ि दैत अछि। ई चक्र व्यक्तिक आवाजसँ ओकर देहक वास्तविक परिस्थितिधरि नैतिक विमर्शक विस्तार अछि।

## माय, अवाक् बालिका, सुरमणी आ भगेलूक भिन्न दावासभ

उज्ज्वलक माय धीमा स्वर देबाक अधिकार चाहैत छथि; अवाक् बालिका शारीरिक ध्वनिक अभावमे संकेतक सम्मान माँगैत अछि; पूर्व बीज-बैचक सुरमणी स्त्रीक संग्रहित ज्ञानक स्थान चाहैत छथि; भगेलू श्रमक मूल्य आ देहक विश्रामक प्रश्न उठबैत छथि। ई पात्रसभ अभिन्न पीड़ित-समूह नहि। हुनका सभक काज आ आवश्यकतासभ भिन्न छथि।

आलोचनामे एहि भिन्नताकेँ मानि चलब आवश्यक अछि। केवल ‘शोषितक आवाज’ सन व्यापक शब्दसँ प्रत्येक पात्रक अधिकारक विशेषता अदृश्य भऽ सकैत अछि।

## काँचक डिब्बासँ फाटल जूताधरि वस्तुक क्रम

ध्वनि पकड़निहार यन्त्र ११५मे स्मृतिक नियन्त्रणक सम्भावना अछि; ११६मे खाली कटोरा चुप रहबाक अधिकारक प्रतिमा; ११७क सम्मान-राशिक पत्र अधिकारक आर्थिक दबाव; ११८क कपड़ा आ माटि निजी गरिमाक प्रतीक; ११९क फाटल जूता आ सिमेन्टक नह श्रमक

ठोस इतिहास अछि। एहि वस्तुसभक भिन्नता रचनाक क्रमिक विकासकेँ प्रभावी बनबैत अछि।

कथाकार अमूर्त न्यायकेँ प्रत्येक अध्यायमे एक नया वस्तु-समूह दैत छथि। मुदा वस्तुसभक अर्थ अत्यधिक स्पष्ट नैतिक वाक्यमे कहला पर पाठकक स्वतन्त्र व्याख्याक अवसर घटि सकैत अछि।

## नव्य न्याय आ नैतिक निर्णयक प्रमाण-सीमा

सुनल आवाज, रिकार्ड कएल ध्वनि, लिखल श्रमिक संख्या आ भुगतानक कागज भिन्न साक्ष्यरूप छथि। एकरेखा बराबरी सम्भव नहि। निःशब्द बालिकाक अधिकार लेल गैरमौखिक संचारक मान्यता चाही; मृतकक परिवारक शोक लेल स्वतन्त्र सहमतिक विधि चाही; श्रमक खाता लेल सत्यापित काम-घण्टा, रकम आ सुरक्षित अभिलेख चाही।

दार्शनिक अन्तर्ध्वनिमे काकक रंग, अन्योन्याश्रय, अर्थापत्ति आ हेतु सन पद पर चर्चा अछि। एहि पदसभक सटीक तर्करचना अलग; साहित्यिक रूपकक संग ओकर सम्बन्ध प्रमाणित कएने बिना केवल नामक उद्धरण पर्याप्त नहि। आलोचना लेल ई सीमास्वीकृति आवश्यक अछि।

## समीक्षात्मक उपलब्धि आ अवशिष्ट दुविधा

एहि पाँच अध्यायक महत्त्व ई जे स्मृति-रक्षा आ पीड़ितक अधिकारक बीच सम्भावित संघर्षकेँ स्पष्ट कएल गेल अछि। संग्रह कखन अधिकारहरण बनैत अछि; मौन कखन सुरक्षा, कखन दोष; सहायता कखन मोल-तोल; सम्मान कखन प्रदर्शन; आँकड़ा कखन नामक प्रतिस्थापन—ई प्रश्न पाठककेँ सतर्क करैत अछि।

विरोधी प्रस्ताव बारम्बार संस्था-नाम आ मीठ भाषा लऽ अबैत अछि; वास्तवमे अलग-अलग प्रस्तावक शर्त आ विधिक परीक्षणक पूर्ण विवरण भेटत तँ कथा अधिक जटिल बनत।

अगिला ‘न्यायक देह’ प्रसंगमे कथाक आशा यही अछि जे नैतिक घोषणासँ आगे सामाजिक प्रक्रिया देखाओल जाए।

# अध्याय १२० — न्यायक देह

## माटिक मूर्ति आ न्यायिक अनुपस्थिति

पुलक मजदूरक फाटल जूता, सिमेन्टमे अटकल नह आ नामहीन पर्चीक पछाति बच्चासभ न्यायकेँ देह देबाक प्रस्ताव करैत अछि। कुम्हारक गूँथल माटिमे स्त्री मजदूरक हथेलीक छाप जुड़ैत अछि। ई काज कानूनक अमूर्त भाषाकेँ श्रमक शरीरसँ जोड़ैत अछि। आरुणि अपन अभियन्ता हाथ अगाँ बढ़बैत हिचकैत छथि; श्रमिक महिलाक आग्रह जे गलतीक हाथो सुधारक श्रममे चाही, उत्तरदायित्वक सान किन्तु सघन दृश्य अछि।

न्यायक मूर्ति देवता वा न्यायाधीशक निश्चित रूप नहि लैत। झुकल कान धरती दिस, हाथ पानि दिस, पएर पुल आ ठूँठ दिशामे, छाती खाली अछि। प्रत्येक अंग प्रतीकात्मक अनुशासन बतबैत अछि; खाली छाती नब नाम लेल स्थान राखैत अछि। एहि प्रकार न्यायक रूप शासन-सत्ताक मूर्तिभन्दा श्रवण आ प्रातिनिधिक अधूरेपनक रूप लैत अछि।

## अभिलेखसँ पहिने पएर

गोप कुमार फाइलमे भुगतान, अनुपस्थित, बकाया, दुर्घटना, मृतक आ अज्ञातक सूची देखबैत छथि। बच्चासभ पहिने पएर देखबाक आग्रह करैत अछि। ई संकेत कागज असत्य कहैत अछि से नहि, बल्कि डेटा जीवनक सम्पूर्ण पीड़ा समेटि नहि सकैत। कामक ठेहुन, घाव, थाकनि आ स्त्री श्रमिकक हथेली संख्याक पाछाँ स्थित व्यक्ति उघाड़ैत अछि।

कथाकार न्यायक देह बनबैत ऐतिहासिक अदृश्यताकेँ दृश्य बनबैत छथि। मुदा न्यायिक निष्कर्ष लेल अभिलेख, सुरक्षा-प्रावधान, गवाही आ दायित्वक तथ्यगत मिलान आवश्यक अछि; माटिक आकृति प्रामाणिक उपमाक स्थान रखैत अछि, विधिक निर्णयक नहि।

## खाली छाती आ नामक घुरि-घुरि प्रवेश

कुम्हार बतबैत अछि जे न्यायक छाती खाली राखल गेल, जाहिमे लोकक नाम फेर-फेर बसि सकय। ई निष्कर्ष स्मारकक स्थिर नामावलीक विरुद्ध खुलल सूचीक प्रस्ताव अछि। जे अनाम अछि अथवा जकर परिचय फेर प्रमाणित होएत, ओकर स्थान पूर्वनिर्धारित नहि बन्द कएल जाए।

सामुदायिक नाम-पहरा एखन श्रमिकक जीवनसँ जुड़ैत अछि; प्रति-पहर कान माटि लगाबयबला परम्परा अद्भुत प्रतीकक रूपमे उभरैत अछि। माटि बजैत अछि अथवा मानवक देहक लय सुनाइत अछि—कथावाचक एकरा अनिश्चित रखैत अछि। ई अनिश्चितता बहुअर्थी शिल्पक बल अछि।

## न्यायक छाहक अगिला प्रश्न

राति न्यायक आकृतिक छाह नमहर होइत अछि। प्रश्न उठैत अछि जे छाह केवल गाछक होइत अछि अथवा ओ सभ व्यक्तिक सेहो जकर नाम एखन पूरा नहि सुनल गेल। अध्याय अन्तमे अगिला ‘छाहक विधान’क संकेत अछि।

अध्यायक उपलब्धि संवेदनात्मक वस्तुसँ राजनीतिक अवधारणा रचब अछि। ओहि संग चेतावनी ई जे जीवित श्रमिकक भौतिक अधिकार मूर्तिक रक्षणमे सीमित नहि रहय। काजक भुगतान, सुरक्षित निर्माण आ उपचारक अधिकार पूरा होएब वास्तविक न्यायिक देहक कसौटी रहत।

# अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

## परम्पराक सलाख आ दैनिक बहिष्कार

अध्याय जातिगत विभाजनकेँ लोहाक पिंजरा नहि, कुल, गोत्र, रसोइ, विवाह, स्पर्श, श्मशान आ भोजनक रीति सँ बनल पिंजरा कहैत अछि। एहि सूचीक खासियत अछि जे सामाजिक शासन केवल शास्त्रक कथनसँ नहि, दैनिक व्यवहारक पुनरावृत्तिसँ बनैत अछि। पिंजराक केवाड़ीपर ‘परम्परा’ लिखल रहब अधिकारक प्रश्नकेँ सांस्कृतिक स्वीकृतिक आवरणमे नुकेबाक रूपक अछि।

नारिकेल पात पाठशालाक बच्चासभ रीति-रिवाजक प्रति स्वतः दंडात्मक व्यवहार नहि करैत; ओ पूछैत अछि जे परम्पराक परिणामक भार ककर देह उठबैत अछि। एहि परीक्षा लेल स्पर्श, इनार, भोजन आ साझा श्रमक ठोस प्रसंग अत्यन्त महत्वपूर्ण छथि।

## गंगेशक जीवनक कठिन कथा आ इतिहासक सीमा

उपन्यास गंगेश उपाध्यायक जन्म, वंश, चर्मकारणी स्त्रीक संग सम्बन्ध आ तत्त्वचिन्तामणिक विरासतकेँ एक लोकश्रुतिपरक ऐतिहासिक प्रश्न बनबैत अछि। एहि कथनसभक साहित्यिक प्रयोजन सामाजिक पाखण्डक प्रतिवाद अछि: विचारकक तर्क मानि ओकर जीवनक अपमानक प्रश्न छोड़ि देब।

लेकिन रचनाक पात्रद्वारा कहल प्रत्येक प्रसंगकेँ स्थापित ऐतिहासिक तथ्य कहब उचित नहि। अध्याय स्वयं तर्क आ लोकस्मृतिक सम्बन्ध जटिल रखैत अछि। समीक्षामे पुस्तकक कथन आ स्वतंत्र विद्वत् इतिहासक प्रमाणक भेद स्पष्ट राखब चाही।

## स्पर्शक दृश्य आ श्रमक समानता

चन्ना ठूँठ लग दू भिन्न सामाजिक पृष्ठभूमिक हाथ पर एकहि माटि लगैत अछि। कोनो शुद्धि-विधि नहि होइत, कोनो जाति नहि पूछल जाइत। दुनू हथेलीपर एके रंग आ खुरदुराहट

सामाजिक भिन्नताक अपरिहार्यता पर प्रश्न उभारैत अछि। ओ सान दृश्य उपदेशसँ अधिक दृश्यात्मक तर्क प्रस्तुत करैत अछि।

बच्चासभ लिखैत अछि जे जाति पूछबासँ पहिने नाम, कुलक पहिने दुख, पवित्रताक पहिने श्रम, न्यायक पहिने स्पर्श स्वीकार हो। एहि क्रममे संवेदनात्मक अनुभूति नैतिक निर्णयक अभ्यास होइत अछि। मुदा हाथ लगाबय देबाक एक क्षण ऐतिहासिक बहिष्कारक संस्थागत रूप अपने-आप समाप्त नहि करैत।

## बटुकनाथक गुप्त चिट्ठी

बटुकनाथ स्मृति-न्यासक नियंत्रण कठिन होएबाक आशंकासँ गंगेशक प्रसंग सीमित रखबाक चिट्ठी लिखैत अछि। कादम्बरी एहि क्रियाक माध्यमसँ इतिहासक नियन्त्रण आ संस्थागत अधिकारक सम्बन्ध बनबैत अछि। जे विचारकक नाम सार्वजनिक चाहैत छथि, ओ हुनकर असुविधाजनक जीवनप्रसंग हटाबय चाहैत छथि—एहि विरोधक साहित्यिक बल प्रखर अछि।

फेरो गुप्त चिट्ठीक अस्तित्व कथा-जगतक प्रमाण अछि; बाहरक व्यक्तिसभ लेल आरोपक आधार नहि। अध्याय भविष्यक ‘प्रमाणक दरार’क सेतु बनैत अछि।

# अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

## मुक्तिक अर्थ : प्रश्न पुछबाक अधिकार

‘गंगेशक मुक्ति’क शीर्षक ग्रन्थक पूजासँ प्रश्न करबाक अधिकारक दिशा बदलैत अछि। अनन्या ‘जातिक पिंजरा’क नीचे खाली पाँति देखि चाबी पूछैत अछि। बा लाठीसँ माटिमे लकीर बनबैत आ ओ मेटाइत अछि। एहि आवृत्तिसँ सामाजिक परिवर्तनक कठिन गति देखाओल गेल अछि—एकटा प्रश्न उठब पर्याप्त नहि, फेर-फेर उठाएब पड़ैत अछि।

कृति विचारकक प्रतिष्ठित तर्कक मूल्य अस्वीकार नहि करैत; ज्ञानक सामाजिक उपयोग, इतिहासक पाठ आ स्त्री-जाति सम्बन्धी जनश्रुतिक कठिनाईक प्रति सजग बनबाक माँग करैत अछि।

## दर्पणमे जन्मक कथा आ चर्मकारणीक उपस्थिति

ठूँठक फाँकिसँ झरल बून्द दर्पण बनैत अछि, जाहिमे गर्भवती स्त्री आ चर्मकारणीक छवि देखाइत अछि। ई अद्भुत शिल्प कतिको दबल कथा एकसंग सामने अनैत अछि। पाठक अनुभव करैत अछि जे ग्रन्थकारक जीवनक प्रसंग केवल पुरुष विद्वानक उपलब्धिसँ निपटि नहि सकैत।

तथापि दर्पणक दृश्य कथानकक रूपक अछि, न ऐतिहासिक फोटोग्राफ। जकरा लोककथा कहैत अछि, ओकर स्रोत, पाठान्तर आ ऐतिहासिक विश्वसनीयता स्वतंत्र शोधविषय रहबाक चाही।

## दू विद्वानक नामक प्रसंग आ आरोपक विवेक

रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा ‘अशोक’क नाम कथाभूमिमे उभरैत अछि। कथा आरोपक वातावरण बनबैत अछि, मुदा समीक्षाक दायित्व ई पहचानब जे साहित्यिक नामोल्लेख

बाहरी ऐतिहासिक व्यक्तिक सत्यापित दोष नहि होइत। सत्यव्रतक सावधानी आ अनन्याक ‘ई सभ कोना आयल’ सन प्रश्न अनुसन्धानक प्रक्रियाक आवश्यकता प्रत्यक्ष करैत अछि।

एहि अंशक आलोचना तथ्यक सीमासहित करब सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अछि: रचनाक भीतर सम्पादकीय विलोपनक विषय नाटकीय रूपमे उठल अछि; वास्तविक अकादमिक दोषारोपण बिना ग्रन्थ, संस्करण आ स्पष्ट उद्धरणक उचित नहि।

## प्रमाणक खेल आ अपूर्ण मुक्ति

कबड्डीक साँसक संग ‘प्रमाण’ शब्द जुड़ैत अछि। बच्चासभ सीमा पार करैत एक-दोसरासँ पूछैत अछि—नाम, प्रमाण आ दबायल स्मृतिक सम्बन्ध की। एहि दृश्यसँ लोकखेल नव्य न्यायपरक प्रश्नशैली ग्रहण करैत अछि।

अध्याय अन्तमे ‘प्रमाणक दरार’क अगिला प्रश्न उठैत अछि: जखन पुरान दस्तावेज स्वयं सत्ताक नियंत्रणमे हो, तखन वंचित लोक अपन सत्य कोना बचाएत? उपलब्धि प्रश्नक स्पष्ट स्थापना अछि; सीमा ई जे विशिष्ट ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन एखन अधूरा अछि।

# अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

## चारि गोला : प्रमाणक बाल-अध्ययन

नारिकेल पात पाठशालामे बच्चासभ माटिपर प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आ अनुपलब्धिक चारि गोला बनबैत अछि। कठिन दार्शनिक भेद खेलक रूपमे उतरैत अछि। प्रत्यक्षक चर्चा अनुभवक सन्दर्भसँ, अनुमानक चर्चा अभिलेखमे गायब नामसँ, शब्दक चर्चा लोकगवाहीसँ, अनुपलब्धिक चर्चा अनुपस्थितिक प्रश्नसँ जोड़ल गेल अछि।

एहि शिक्षण-पद्धतिक सरलता उपयोगी अछि, मुदा न्याय-दर्शनक दार्शनिक पारिभाषिकता सावधानी माँगैत अछि। न्यायमतक प्रमाणविभागमे ‘अनुपलब्धि’क स्वतन्त्र प्रमाणत्व विवादास्पद/मतभेदयुक्त अछि। कृतिक शिक्षणात्मक चार-गोला पद्धति कैं सभ न्यायशास्त्रीय परम्पराक अन्तिम सिद्धान्त नहि मानब चाही।

## अनुपस्थितिक अर्थक प्रमाण-विवेक

बारम्बार एकहि प्रकारक नाम अभिलेखसँ गायब भेटला पर अनन्या प्रश्न उठबैत अछि जे विलोपन योजनाबद्ध अछि कि नहि। पाठककैं नैतिक रूपेँ संवेदनशील करबाक एहि विधिक बल अछि। मुदा अनुपस्थिति मात्रसँ विशेष व्यक्ति द्वारा अपराध निश्चित नहि होइत। अभिलेखक पूर्णता, लेखक, नकल, समय आ अन्य संभावित कारणक परीक्षण आवश्यक।

अध्यायक दार्शनिक प्रयोजन तखन सफल होइत अछि जखन प्रश्न स्वयं निर्णय नहि, जाँचक आरम्भ बनैत अछि। एतय बच्चासभक तर्क-अभ्यासकैं वास्तविक अनुसन्धानक सीमासहित देखनाइ जरूरी अछि।

## पातक छाहरि, विद्वानक प्रश्न आ चर्मकारणीक नाम

नव कोंपल एखन छाहरि देबा जोगर नहि, तैयो बच्चासभ ओकर लग बैसैत अछि—भविष्यक छाहरि पहिनेसँ स्वीकार करबाक बिम्ब। आगन्तुक विद्वान गंगेशक प्रसंगक

‘नियन्त्रित’ प्रस्तुति चाहैत अछि; अनन्या पूछैत अछि जे चर्मकारणीक नाम हटला पर गम्भीरता बचैत अछि कि नहि। ई संवाद प्रतिष्ठाक भाषा आ ज्ञानक नैतिक खुलापन बीच संघर्ष रचैत अछि।

कथाक विचार सामाजिक रूपेँ प्रभावी अछि। तथापि विद्वानक सावधानी कखनो असत्यापित जनश्रुतिक प्रति उचित सन्देह सेहो भऽ सकैत अछि; प्रत्येक शंका समाज-विरोधी सेन्सरशिप नहि। यथार्थ आलोचनाकेँ एहि दू सम्भावना अलग करबाक चाही।

## पातक अक्षर आ धरतीक ज्ञान

रातिमे हवा बिनु पात काँपैत अछि, छाह अक्षर बनबैत अछि आ भीतरसँ अनाम स्त्रीक स्वर सुनाइत अछि। एहन अद्भुत शिल्प अध्यायक नैतिक आग्रहक संवेदनात्मक रूप अछि, स्रोत-पाठक बाहरी अभिलेख नहि।

तत्त्वचिन्तामणिक पात प्रतीकात्मक ग्रन्थ अछि—तर्क माटिमे, विद्यालयमे आ मानवक जीवनमे उतरैत अछि। ई कलात्मक उपलब्धि आ दार्शनिक अधिकरणक मिश्रण अछि। आगामी समीक्षा केँ देखबाक चाही जे प्रश्न पुछबाक विद्यालय समाजमे व्यवहारिक शोधनक कतेक सशक्त माध्यम बनैत अछि।

# अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

## पातपर अक्षर आ आगिक नव प्रकार

अध्याय तत्त्वचिन्तामणिक पातपर उभरल कथनकेँ अग्निक प्रतीकसँ जोड़ैत अछि। कागज जराओल आगि पुरान अध्यायमे साक्ष्य-नाशक छल; आब ‘प्रमाणक अग्नि’ सत्य-असत्यक परीक्षणक दृष्टान्त बनैत अछि। शीर्षक दाहक बदला उजासक पक्ष चुनैत अछि।

कथावस्तुमे पात, माटि आ पुरान सामाजिक खंडनक छवि मिलैत अछि। मूल प्रश्न ई जे ककरो महान कहि ओकर मानविक असुविधा हटाइ देब से सम्मान होइत अछि कि हिंसा। माला गरदनि पर कसब सन बिम्ब प्रतिष्ठाक नियन्त्रणक तीक्ष्ण आलोचना अछि।

## संभावित ऐतिहासिक आ साहित्यिक कथनक स्तर

गंगेश-संबंधी कथा तथा विद्वानक सार्वजनिक दावासभ विविध स्रोतक जाँच चाहैत अछि। शास्त्रक ग्रन्थ, मौखिक जनश्रुति आ स्वप्न-दृश्यक अलग प्रमाण-परम्परा अछि। एहि अध्यायक कल्पनात्मक आगिक सहायता नैतिक व्याख्या करैत अछि, तथ्यगत दोषसिद्धि नहि।

उपन्यास अपने जँ निश्चित दस्तावेजी उद्धरण नहि दैत, तँ आलोचनामे पृष्ठ-संख्या, प्रामाणिक पत्र वा वास्तविक आरोपक अभिप्रमाण मनमाने नहि जोड़ल जायत। सत्यक प्रति प्रतिबद्धता साहित्यिक असर घटब नहि, ओकरा अधिक अनुशासित बनबैत अछि।

## बालप्रश्नक कठिन संरचना

अनन्याक पात उठेबाक चेष्टा आ अक्षरक अद्भुत परिवर्तन बच्चासभक जिज्ञासाकेँ प्रत्यक्ष दृश्य बनबैत अछि। सत्यक ताप वस्तुक भीतर नहि, प्रश्नक पुनः परीक्षणमे खोजल जा सकैत अछि। समुदाय जँ लेखन, कथा आ स्मारकक अर्थ घुरि-घुरि जाँचैत रहत तँ सम्मानक कठोर मूर्ति नरम होएत।

नव्य न्यायक तर्कविधानमे पक्ष, हेतु, उदाहरण, व्याप्ति आ विरोधी अनुमानक सुक्ष्म भेद अछि। साहित्यिक आगिक रूपककेँ एहि सभक पूर्ण प्रतिस्थापन मानब अनुचित; एतय ई नैतिक अनुसंधानक प्रेरक छवि अछि।

## परम्पराक सम्मान आ आलोचनाक स्वतन्त्रता

कृतिमे बारम्बार विद्वत्ताक आदर आ सामाजिक विवेकक प्रश्नक विरोध पैदा होइत अछि। अध्याय १२४ एहि विरोधकेँ एक नाटकीय सीमा धरि अनैत अछि: प्रश्न करबाक अधिकारकेँ परम्पराक अपमान समझब गलत अछि।

समीक्षात्मक स्तरपर उपलब्धि असुविधाजनक इतिहासक पुनर्पठन अछि। सीमा ई जे किछु विरोधी मत अत्यन्त सरल अवरोधक रूपमे उपस्थित होइत अछि। यदि मूल स्रोतरूप आ भिन्न विद्वानक तर्क आगाँ खुलत, तँ सामाजिक आलोचनाक जटिलता आरो बढ़त।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १२०–१२४

## न्यायक माटिक देहसँ प्रमाणक अग्नि धरि

१२०मे मजदूरक हाथ माटिक न्याय-आकृति बनबैत अछि। १२१मे जातिगत बहिष्कारक दैनिक नियम पिंजरा बनैत अछि। १२२मे विचारकक सम्मान आ जीवनक दबल कठिन कथाक पुनर्पाठ उठैत अछि। १२३मे प्रमाणक बाल-अध्ययन प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आ अनुपलब्धिक चार गोला बनबैत अछि। १२४मे प्रमाणक अग्नि प्रतिष्ठा आ सत्यक बीच तनावक प्रतिमा बनैत अछि। पाँचू अध्याय सामाजिक देहसँ ज्ञानक विधि धरि एक दीर्घ प्रश्न बनैत अछि।

## माटि, पिंजरा, दर्पण, पात आ अग्निक वस्तु-विधान

न्यायक माटिक खाली छाती नब नामक स्थान बनैत अछि। जातिक पिंजरा लोहारक बनल नहि, दैनिक व्यवहारक रूप अछि। पानिक बून्दक दर्पण ऐतिहासिक जनश्रुतिक मंच बनैत अछि। तत्त्वचिन्तामणिक पात तर्ककेँ विद्यालयक छाहरिमे लबैत अछि। प्रमाणक अग्नि नाशक दहन नहि, संशोधनक प्रतीक बनैत अछि।

ई क्रम साहित्यिक सुसंगति दैत अछि, मुदा बारम्बार स्वयं उभरैत अक्षर आ भूतस्वरक उपयोग कखनो सामाजिक तथ्यक दृश्यसँ प्रतियोगिता करैत अछि। मूल रचनाक अनिश्चितता बनौने रखब आलोचनात्मक पठनीयताक शर्त अछि।

## गंगेश : लोकश्रुति, इतिहास आ आलोचनाक उत्तरदायित्व

गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिक महत्त्व दार्शनिक इतिहासमे अलग जाँच चाहैत अछि; उपन्यासमे हुनकर जन्म, विवाह, जाति आ चर्मकारणीक प्रसंग लोकश्रुति, प्रतीकात्मक दृश्य

आ पात्र-वचनक माध्यमसँ प्रस्तुत अछि। कृति एहि अंतरकेँ अकादमिक मूल्यांकनक चुनौती बनबैत अछि।

सत्यापित ग्रन्थस्रोत आ कथानकक कल्पनात्मक आरोपणक अन्तर राखब आवश्यक अछि। नामोल्लेखित विद्वानसभक वास्तविक आचरणपर दोषारोपण लेल प्रमाणित लिखित स्रोत आ प्रतिपरीक्षण चाही। बिना एहन स्रोतक साहित्यिक संवादकेँ ऐतिहासिक अभियोग बनाउ असंगत होयत।

## प्रत्यक्ष आ अनुपलब्धिक भेद

माटिक हाथछाप दृश्य-आधारित साक्षी अछि; पिंजराक जातीय रीति सामाजिक अनुभवक विवरण; पानिदर्पण अद्भुत कथा; पातपर स्वयं उभरैत अक्षर कल्पनात्मक संकेत। प्रत्येक स्तरक प्रमाणिक मूल्य अलग अछि। एहि भेदक जाँच नव्य न्यायक प्रामाण्य-विचारसँ प्रेरित आलोचनाक उपयोगी अभ्यास अछि।

बारम्बार अभिलेखमे नाम अनुपस्थित रहब योजनाबद्ध विलोपनक आशंका पैदा करैत अछि, मुदा ठोस कारणसिद्धि लेल अन्य साक्ष्य चाही। उपन्यासक नब पीढ़ी जँ ई विवेक सीखैत अछि, तँ ओकर पहरा केवल भावनात्मक स्मृति नहि, जाँचक अनुशासन बनि सकैत अछि।

## प्रगति आ अपेक्षित साहित्यिक कसौटी

एहि चक्रक मानवीय केन्द्र मजदूरक हथेली आ बच्चाक प्रश्न अछि। व्यक्तिगत श्रम, स्पर्शक असमानता आ इतिहास लिखबाक अधिकारक बीच संबंध स्पष्ट होइत अछि। लेखक विचारककेँ मूर्ति बनबाक बदला कठिन मानवीय प्रश्नक केन्द्र बनबैत छथि।

कमजोरी ई जे किछु दार्शनिक सूत्रक तकनीकी रूपक सामाजिक विवादसँ पूरा जुड़ि नहि पबैत; वास्तविक ग्रन्थपाठक ठोस सन्दर्भ वा संवाद विस्तार पबिते समीक्षा आरो पुष्ट होएत। आगाँक अध्यायमे प्रमाणक नैतिक आग्रह जीवनक संस्थागत नीतिमे कतेक उतरत, से देखब आवश्यक अछि।

# अध्याय १२५ — माटिक निर्णय

## प्रमाणक बहससँ खेतक निर्णय धरि

अध्याय १२४क ‘प्रमाणक अग्नि’ पछाति कथा माटिक निर्णय दिस मुड़ैत अछि। जतेक देर धरि स्मृतिपर भाषिक विवाद चलैत अछि, ओतेक खेत, बीज आ श्रमक प्रश्न स्थगित नहि रहि सकैत। कादम्बरी न्यायक सामाजिक देहक कसौटी कृषि-जीवनमे खोजैत अछि। कटल ठूँठ, माटिक नम आ बाँचल बीज एतय प्रमाणक अमूर्त शब्दक सोझाँ ठोस प्रत्यक्ष अनुभव बनैत अछि।

निर्णयक स्वर तात्कालिक घोषणाक नहि, रोपनीक धैर्यक अछि। माटिक भीतर बनैत हरियर सम्भावना ओहि भविष्यक संकेत अछि जकर दृश्य तत्काल उपलब्ध नहि। मूल पाठक एहि प्रतिमानकेँ निश्चित उपजक प्रमाण नहि, काज जारी राखबाक संकल्प रूपमे पढ़ब उचित अछि।

## श्रम, भूमि आ सामाजिक स्थानक प्रश्न

अगिला अध्यायसभमे भूख आ अन्नक न्यायक प्रश्न उठबाक पूर्वभूमि एतय बनैत अछि। बीज सुरक्षित रहबाक बावजूद ओकरा उगबाक ठाम, पानि आ श्रम चाही। किसान, बटैयादार, उपेक्षित टोला आ जमीनक दावासभकेँ अलग-अलग प्रमाणित करबाक आवश्यकता अछि।

केवल ‘धरती सभक’ सन आकर्षक घोषणासँ व्यक्तिगत जीविका आ सामाजिक बहिष्कारक जटिलता समाप्त नहि। सार्वजनिक अधिकारक दाबी, जोतनिहारक श्रम आ दस्तावेजमे लिखल स्वामित्व कखन-कखन परस्पर संघर्ष करैत अछि। कृतिक नैतिक तर्क एहि विवादकेँ दृश्य बनबैत अछि।

## राखि, बीआ आ पानिक तात्पर्य

मूल घटनामे खेतमे राखि, बीआ आ पानि एक संग रहि जाइत अछि। एतय आगिक पुरान विनाश, बीजक पुनर्जन्म आ जलक स्मृति साझा कृषि-प्रतिमान बनेबाक प्रयत्न करैत अछि। तीन तत्त्व परस्पर-सहयोगक बिम्ब छथि; तथापि रासायनिक माटि-परीक्षण अथवा उत्पादकता संबंधी वैज्ञानिक निष्कर्ष एहि प्रतीकसँ नहि निकलैत।

लोकगीतक प्राकृतिक अर्थ समाजक जटिल अधिकार प्रश्नक बदला नहि, ओकरा प्रति जागरूक करबाक साधन बनबाक चाही। अध्यायक अपेक्षित उपलब्धि एहि दिशा मे अछि।

## मौन निर्णय आ अगिला अन्नक प्रश्न

अन्तमे कोनो निर्णय-पत्र वा निर्णायक भाषण नहि, माटिक भीतर हलचल देखाओल गेल अछि। कथानकक एहन मौन अन्त आगामी ‘अन्नक न्याय’क विषयक सुसंगत प्रवेश अछि: प्रयोगक वास्तविक परिणाम अभीक नहि, भविष्यक काजमे भेटत।

आलोचनात्मक सीमा ई जे प्रक्रियाक ठोस विवरण कम होए तँ नैतिक प्रतीकक प्रभाव व्यावहारिक निर्णयसँ दूर जा सकैत अछि। आगाँक समीक्षा लेल जाँचब आवश्यक जे माटिक निर्णय भूखल परिवारक थारीमे कोना पहुँचैत अछि।

# अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

## न्यायक देह थारीमे : शास्त्र आ भूखक तनाव

कथा भुखायल पेटक सोझाँ लिखित न्याय, शास्त्र आ संविधानक सीमाक प्रश्न उठबैत अछि। चन्ना ठूँठक निकट लोक खाद्य-संग्रहक व्यवहारिक चिन्ता करैत अछि। स्त्रीसभ माप-बाट, बाँसक सूप, माटिक हँड़िया आ खाली कटोरा आनैत छथि। मृतकक नामक अभिलेख अछि, मुदा जीवित भूखक नाम-पञ्जी कतए अछि—एहि प्रश्नसँ सामाजिक न्यायक केन्द्र पुनर्व्यवस्थित होइत अछि।

कथाकार कोनो दार्शनिक ग्रन्थक वास्तविक महत्त्व अस्वीकार नहि करैत; ओ बतबैत अछि जे शब्दक परिणाम मानवक भोजन-सुरक्षामे देखाओल जाए। भात आ अधिकारक ई सम्बन्ध जनकल्याणक नैतिक तर्क बनैत अछि।

## नब बीआक प्रस्ताव आ स्रोत-ज्ञान

लाउ किन-हंगक तरफसँ बाढ़ि-सहन, सुखाड़-सहन आ अधिक उपज देबयवला विदेशक बीआक प्रस्ताव अबैत अछि। आरुणि ओकर स्थानीय स्मृतिक स्रोत पूछैत छथि; परामर्शदाता विज्ञान आ स्मृतिक विरोधक भाषा दैत अछि। ईरा स्वामित्व आ इतिहासक प्रश्न उठबैत छथि।

समीक्षामे सावधानी आवश्यक: वैज्ञानिक कृषिविधि अपने-आप शोषक नहि, आ स्थानीय स्मृतिक अधिकार अपने-आप वैज्ञानिक कार्यक विकल्प नहि। समस्या आयातित बीजक विशिष्ट शर्त, बीज बचएबाक पुनः अधिकार, लागत, अनुकूलता आ साझा लाभक वितरण अछि। कादम्बरी एहि बहसक एक नैतिक आरम्भ करैत अछि।

## जाति आ साझा कोठी-बखारी

साझा अन्नभण्डारक प्रस्तावपर वृद्ध पण्डित जाति-रीतिक प्रश्न करैत छथि। बच्चासभ भूखक समान अनुभवक आधारपर भातमे जातिगत विभाजनक औचित्य जाँचैत अछि। अन्न भोजनक वस्तु मात्र नहि, सामाजिक संगति अथवा बहिष्कारक माध्यम होइत अछि।

स्त्रीसभक संग्रह, श्रम आ वितरणक ज्ञानक सार्वजनिक स्थान एतय प्रमुख अछि। कोठी-बखारी निजी परिवारक सीमा पार कए सामूहिक सुरक्षा बनि सकैत अछि; मुदा ओकर प्रबन्ध, मात्रा आ निर्भर व्यक्तिक चिन्हारि पारदर्शी होएब जरूरी।

## खाली थारी आ भूखक अगिला अभिलेख

अध्याय अन्तमे कोठी-बखारी भरल नहि, थारी एखन खाली अछि। एहि अधूरेपनक स्वीकार नाटकीय विजयक बदला सत्यनिष्ठा दैत अछि। अनन्या ‘भूखक नाम’क शीर्षक लिखैत अछि, जे अगिला अध्यायक क्रियात्मक प्रश्न बनत।

उपन्यासक शिल्प कखनहुँ अत्यधिक घोषणात्मक होइत अछि, मुदा एतय खाली थारीक दृश्य स्वयं विचार कहि दैत अछि। गरीबक लाज, भौतिक असुरक्षा आ राहतक समयक अन्तरपर आगेक कथा अधिक ठोस साक्ष्य दऽ सकैत अछि।

# अध्याय १२७ — भूखक नाम

## जीवित भूखक नाम लिखबाक कठिनता

मृतकक स्मृतिक अपेक्षा जीवित भूखक पञ्जी अधिक कठिन अछि, कारण भूखल व्यक्ति लाज, जाति, प्रतिष्ठा वा परिवारक दबावसँ अपन अभाव लुकबैत अछि। सत्यव्रतक कलम काँपब एहि कठिनताक प्रतिमा अछि। बा याद करबैत छथि जे भूखक नाम लिखब किसी देहकेँ उघाड़ि तमाशा बनाउ नहि, ओकरा सहायताक अधिकार संग पहचानब अछि।

ई अध्याय कृतिक पूर्व अभिलेख-प्रयोगकेँ वास्तविक जीविकाक दावामे परिवर्तित करैत अछि। पात्रक अधिकार सुरक्षित राखि जानकारी लेबाक गोपनीय तरीका आवश्यक; सार्वजनिक सूची बनबो अपमान बढ़ा सकैत अछि।

## कुलक मान आ भूखक लाज

एक वृद्धा कहैत छथि जे ऊँच कुलक प्रतिष्ठाक कारण हुनका परिवार दोसरक अन्न नहि माँगल, जद्यपि घरमे भूख छल। एहि सान प्रसंगसँ जातिक अहंकार आ जीविकाक असुरक्षा बीच जटिल सम्बन्ध उघार होइत अछि। बा ओकरा दण्डित करबाक बदला सहायताक सम्भावना बनबैत छथि।

समुदायकेँ गरीबक प्रतीक्षा ‘अहिले माँगय’ धरि नहि करबाक चाही। सहायता मानविक अधिकार भऽ सकैत अछि, सामाजिक कृपाक प्रदर्शन नहि। एहि विचारकेँ कथा सामूहिक भोजनमे मूर्त करैत अछि।

## भोजन कखन : स्मृतिक कर्मक परीक्षा

देविका पूछैत छथि जे नाम लिखि लेलहुँ, भोजन कखन भेटत। ई आलोचनात्मक प्रश्न संग्रह-परियोजनाक सीमा उघार करैत अछि। श्रद्धा, अभिलेख आ नीतिक घोषणा कखन भोजन-

सुरक्षा बनत, तकर समयबद्ध योजना जरूरी अछि। पहिल ढेकची खाली होइत दोसर, तेसर भोजन बनैत अछि।

बाक वाक्य जे भरल कोठी-बखारीक बीच भूखल गाम अन्याय अछि, वितरणक राजनीतिक अर्थ खोलैत अछि। वास्तविक सञ्चालन लेल योगदान, सङ्ग्रह, स्वच्छता, पोषण आ नियमित आपूर्ति पर प्रश्न सम्भव अछि, मुदा कथा पहिल पंगत द्वारा नैतिक जड़ता तोड़ैत अछि।

## राघवक कोड आ जलक पूर्वाभास

राघवक उपकरणमे ‘अन्न’ बदलि ‘ऋण’, ‘दाता’ बदलि ‘दायित्व’ बनबाक अद्भुत दृश्य समर्पणक भाषा पर प्रश्न करैत अछि। कादम्बरी स्वयं एहन स्वचालित अक्षर-परिवर्तनकेँ दार्शनिक प्रतीक रूपमे उपयोग करैत अछि; वास्तविक डाटा-परीक्षणक आधार नहि।

मध्यराति थारीक दाना उत्तर दिस ठहरैत अछि जतय सूखल इनार अछि। भूखक बाद पियासक प्रश्न अनिवार्य बनैत अछि। अध्याय भोजनक वास्तविक शुरुआत पर रुकैतहुँ सम्पूर्ण जीवन-सुरक्षाक संघर्षक अगिला कड़ी संकेत करैत अछि।

# अध्याय १२८ — प्यासक नाम

## खाली लोटाक ध्वनि आ अदृश्य पियास

एक बालक खाली लोटा अनैत अछि, ओकर टुनटुनाहट अभावक ध्वनि बनैत अछि। भूखक पञ्जी बनल, मुदा पियासक नाम कतए—एहि प्रश्नसँ जलक अधिकार भोजनोपरान्त नैतिक विचार बनैत अछि। कथा खाली पात्रक सान वस्तुसँ उनटा क्रम रचैत अछि: पहिने पानि नहि, तकर अभावक आवाज सुनाइत अछि।

पियास अक्सर मौन रहैत अछि, विशेषतः जखन लोक अपन अपमानक इतिहाससँ डरैत अछि। अनन्याक पञ्जी व्यक्तिगत पियासकेँ स्रोत-प्रवेशक सामाजिक अधिकारसँ जोड़ैत अछि।

## पुरान इनारपर जातिगत निषेधक इतिहास

गामक आधा धँसल इनार चर्मकार टोलाक स्त्रीसभ लेल प्रतिबन्धित रहबाक कथा लैत अछि। हुनका सभकेँ दूरक पोखरिसँ दुर्गन्धयुक्त अथवा कीचड़मिश्रित पानि लबय पड़ैत छल। इनारक मेड़पर घैल, नह आ पाथरक खरोंच अनुभवक भौतिक संकेत छथि।

उपन्यासमे इतिहासक एहन विवरण पात्रक कथनसँ आयल अछि; वास्तविक स्थानीय जाँच लेल जलस्रोतक पुरान अभिलेख आ साक्षी आवश्यक। मुदा साहित्यिक अर्थ स्पष्ट अछि: पियास केवल प्राकृतिक अभाव नहि, सामाजिक पहुँचक असमानता सेहो होइत अछि।

## लाउक जल-परियोजना आ निजी बाजार

लाउ किन-हंग दूरसँ दीर्घकालीन जल-आपूर्ति अधिकारक रिपोर्ट देखैत अछि; स्क्रीनपर ‘ककर पियास बेचब’ सन प्रश्न चमकैत अछि। ग्लासमे गोहिक आँखिक अद्भुत दृश्य नाफाक लालसाक मनोवैज्ञानिक रूपक अछि।

जल-आपूर्ति परियोजनाक निजी सहायताक सभ रूप अनुचित नहि; दाम, पहुँच, स्रोत-सुरक्षा, प्रभावित घरक अधिकार आ शिकायतक उपाय निर्णायक होयत। कादम्बरी मुख्य रूपसँ जीवनक बुनियादी आवश्यकता कैं असहाय लोकक विरुद्ध नियन्त्रणक साधन बनएबाक आलोचना करैत अछि।

## साझा पानि आ अगिला पहरा

गोप कुमार प्रत्यक्ष पियास, जातिगत कारणक अनुमान आ वृद्धाक शब्दगवाहीक आधार पर प्रश्न करैत छथि। बच्चासभ पानि सभक अधिकार हेबाक उत्तर दैत अछि। सामूहिक पानि वितरणक दृश्य एहि बौद्धिक तर्ककैं व्यवहारक दिशा दैत अछि।

अनन्या इनार, पोखरि, नदी आ नोर धरि पियासक पहराक विस्तार लिखैत अछि। एतय भाषा काव्यात्मक, मुदा वृहत्तर अभिप्राय स्वच्छ पानिक वास्तविक पहुँच अछि। एहि जाँचमे स्रोतक गुणवत्ता, दूरी आ नियमित उपलब्धताक ठोस योजना आगेक सामाजिक आवश्यकता रहल।

# अध्याय १२९ — नूनक शपथ

## स्वादक समानता आ मानव देह

भोजन आ जलक बाद नूनक अनुभव कहैत अछि जे मायक दूध, मजदूरक पसीना, स्त्रीक नोर आ बच्चाक खेलक बादक ठोरमे शरीरक साझा पदार्थक स्मृति अछि। समुद्रसँ दूर मिथिलाक गाममे नूनक कटोरी देहसभक समान आवश्यकताक प्रतीक बनैत अछि।

एहि प्रतीकक मुख्य अर्थ जातिगत स्पर्श-अभेदक प्रतिवाद अछि। मीरा नूनक कटोरी जातिक पाँतिमे सजाबय अस्वीकार करैत छथि, किएक तँ स्वाद जन्मसँ भेद नहि बनबैत।

## श्रमक पसीनाक हिसाब

मजदूरसभ हाथ आगाँ बढ़बैत छथि; हथेलीपर पसीनाक महीन रेखा गामक श्रमक नक्शा बनैत अछि। मुन्ना पासवानक भाइक कथन नूनकेँ शारीरिक पदार्थसँ श्रमिकक जीवित अधिकारक प्रश्नमे बदलैत अछि। पुलक श्रमिकक थाकनि आ स्मृतिपर आधारित पहराक पहिल प्रसंगसभ एतय फेर लौटैत अछि।

समान स्वादक नैतिक चित्रणक संग वर्गगत असमानता स्वीकारब आवश्यक अछि। सभ देहक नून समान होए, मुदा मजदूरी, भोजन-सुरक्षा आ स्वास्थ्यक स्थिति समान नहि; कथा एहि अन्तरकेँ उठएबाक अवसर दैत अछि।

## बाँटबाक प्रतिज्ञा आ संसाधनक मर्यादा

अनन्या नूनक कटोरी ठूँठ लग रखि एकरा लोकसाझाक शपथसँ जोड़ैत छथि। ‘नून बिकत नहि, बाँटल जाएत’क कथन साहित्यिक प्रतिरोध अछि। वास्तविक समाजमे नूनक उत्पादन, व्यापार आ वितरणक विवेकपूर्ण व्यवस्था सेहो आवश्यकता अछि; शाब्दिक बाजारनिषेध एहि जटिल प्रश्नक पूर्ण उत्तर नहि।

भोजन, पानि आ नून सभ जीवनक आवश्यक तत्व छथि। रचना अपन नैतिक दृष्टिकेँ सादगीसँ समेटैत अछि—बुनियादी जरूरतक पहुँच समुचित हो।

## ओसक उज्जर रेखा आ गन्धक अगिला प्रश्न

भोरमे ठूँठक कोंपलपर ओस सुखला पर उज्जर रेखा रहि जाइत अछि, जनु पृथ्वी स्वयं नूनक शपथक चिह्न धरि गेल। ई अद्भुत दृश्य स्वादक स्मृतिकेँ माटि आ गाछसँ जोड़ैत अछि।

कथा अगिला संघर्ष गन्धक बाजारक रूपमे संकेत करैत अछि। ई विषयगत शृंखला अन्न, पानि, नून, गन्ध आदि इन्द्रियगत अनुभवकेँ सामाजिक न्यायसँ जोड़बाक व्यापक प्रयास अछि। एकर शक्ति संवेदनशीलता अछि; सीमा दोहरावक जोखिम।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १२५–१२९

## माटिक निर्णयसँ थारी आ कण्ठ धरि

१२५मे खेतक मौन निर्णयक रूपमे बीज, राखि आ माटिक सम्बन्ध विकसित होइत अछि। १२६मे अन्नक अधिकार लिखित न्यायक सोझाँ ठाढ़ होइत अछि। १२७मे जीवित भूखक नाम पञ्जीकृत करब आ भोजनक तत्काल आयोजन आवश्यक बनैत अछि। १२८मे पुरान इनारक जातिगत निषेध पियासक सामाजिक इतिहास कहैत अछि। १२९मे नूनक स्वाद श्रम, नोर आ साझा देहक सम्बन्ध चिन्हैत अछि। ई पाँच अध्याय जीवित शरीरक बुनियादी आवश्यकताक आधारपर न्यायक नव क्रम रचैत अछि।

## पात्रक परिवर्तन : देविका, मीरा, ईरा, अनन्या

देविका भोजन कखन भेटत से पूछैत छथि; मीरा नूनक पाँतिक जातिभेद तोड़ैत छथि; ईरा विदेशक बीज प्रस्तावमे स्थानीय स्वामित्वक प्रश्न उठबैत छथि; अनन्या नाम-पञ्जी कैं भूख-पियासक नब जरूरतपर लागू करैत अछि। ई स्त्री आ बालपात्र एकहि आवाजक पुनरावृत्ति नहि, कार्यक भिन्न प्रकार प्रस्तुत करैत छथि।

बा सामाजिक अपमानक पुरान अनुभव आ सामूहिक सहायताक नैतिक मार्ग बीच संबंध बनबैत छथि। गामक पुरान ज्ञानक आलोचना सम्भव रहितहुँ एहि पात्रक व्यावहारिक उत्तरदायित्व स्पष्ट अछि।

## खाली थारी, लोटा आ नूनक कटोरी

भूखक खाली थारी भोजनक प्रतीक्षा आ लाजक चिन्ह अछि; पियासक लोटा जलस्रोतपर अधिकारक प्रश्न बजबैत अछि; नूनक कटोरी साझा स्वादक माध्यम अछि। तीनू वस्तुक अर्थ

वस्तुगत रूपमे अत्यन्त सरल, मुदा राजनीतिक अर्थ जटिल। कथाकार एहि सरलताक सहायता सँ पाठककेँ सामान्य जीवनक न्यायिक संकटपर ध्यान देबैत छथि।

## प्रमाणक सीमा आ वास्तविक जीवनक दायित्व

भूखक नाम गनबाक पहिले परिवारक सहमति आ गोपनीयता; नब बीजक दावाक लेल परीक्षण; जलस्रोतक पहुँच लेल मानचित्र आ परख; जाति-विभेदक साक्ष्य लेल संगत गवाही —ई सब व्यवहृत प्रमाणक अलग स्तर छथि। कादम्बरीक प्रतीकात्मक स्वतः बदलैत अक्षर अथवा लोटाक ध्वनि अहाँक मनकेँ प्रश्न देत, निर्णायक विज्ञान-सिद्धि नहि।

श्रम आ अधिकारक रूपमे संसाधनक सतत उपलब्धता ई चक्रक वास्तविक नैतिक कसौटी अछि।

## शिल्पगत उपलब्धि आ शेष समस्या

भात बनबाक पंगत, लोटाक टुनटुनाहट आ नूनक स्वाद जेकाँ दृश्य स्मृतिकेँ जीवित शरीरक अनुभवमे उतारैत अछि। यथार्थवादी वस्तुक साथ लोकगीत आ अद्भुत गोहि-प्रतिमा कादम्बरीक विशेष शैली बनैत अछि।

पर नून-बाजारक निषेध वा पृथ्वी द्वारा शपथक स्वीकृति सन संकेतक शब्दशः सामाजिक नीति बनब उचित नहि। आगामी अध्यायमे सामूहिक सुरक्षा-व्यवस्था, अधिकार आ पारदर्शी वितरणक विवरण भेटत तँ ई चक्रक प्रभाव आरो दृढ़ होयत।

# अध्याय १३० — स्वादक न्याय

## जीहक स्मृतिमे लुकायल सामाजिक इतिहास

‘नूनक शपथ’क बादक ई अध्याय भोजनक स्वादकेँ केवल निजी पसिन्न नहि, अपन घर, माय, श्रम आ इतिहास चिन्हबाक माध्यम बनबैत अछि। बच्चा सभ जखन नाम-पाठ आ पहराक बाद भोजनक स्मृतिपर ध्यान दैत अछि, तखन कथाक न्याय अमूर्त घोषणासँ जीहक अनुभव धरि उतारल जाइत अछि। सरिसों तेलक छौंक, चूड़ा, दही, साग आ घरक रसोइक गन्ध लोकजीवनक जीवित अभिलेख बनैत अछि।

जकर घरक रसोइ जरि गेल अथवा खेत सुखा गेल, ओकरा लेल स्वाद अभावक स्मृति सेहो अछि। ई विरोध कथा केँ सामान्य भावुक ‘घरक भात’क उत्सव बनबाक बदला विस्थापन आ अभावक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। भोजनक अनुभूति सभ पात्रमे एकसमान नहि—जेकरा दिनभरि रान्हबाक बाद अन्तमे खेबाक अवसर भेटैत अछि, ओकर स्वाद आ प्राथमिकता दूनू प्रभावित होइत अछि।

## स्मृति-भोजक थैली आ बजारक नव चाल

विरासत-परियोजनाक दल ‘स्मृति-नून’, ‘जलसमाधि साग’ आ ‘भूत-कबड्डी चूड़ा’ नामसँ चमकैत थैली अनैत अछि। वस्तुक पैकेजपर दुःख, स्थानीय स्मृति आ लोकविश्वासक नाम चिपकाकऽ बेचनाइ कथाक ठोस तनाव अछि। स्वादक कुटुम्बीय अर्थ आ उपभोक्ता-वस्तुक विज्ञापन एक-दोसरासँ टकराइत अछि।

उपन्यासक विरोध समस्त खाद्य व्यापारक विरुद्ध सामान्य निर्णय नहि देबाक चाही। मूल आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे ककर श्रम आ शोकक नामपर ब्राण्ड बनल, अनुमति के देलक, आ लाभ कोना बाँटल जाएत। बनावटी सुगन्धि आ माय-हाथक पकवानक अन्तर एहि स्वामित्वक प्रश्नकेँ देहक स्मृतिमे स्थापित करैत अछि।

## रान्हनिहारक पहिल अधिकार

मीरा जखन स्त्रीसभक भोजन-अनुभव सुनैत छथि, तखन सार्वजनिक न्याय घरेलू श्रम-विभाजनक भीतर प्रवेश करैत अछि। देविकाक पञ्जीमे ‘स्वादक न्याय बिनु परोसबाक न्याय अधूरा’ लिखल जाइत अछि। परोसबाक पहिल अधिकार ओकरा देबाक प्रस्ताव, जे दिनभरि पकबैत अछि, भोजनमे लिंगाधारित अवैतनिक श्रमक महत्त्व खोलैत अछि।

ई छोट नियमक असर कतहु घोषणापत्रसँ अधिक अछि, कारण भोजनक समय बदललाक बाद श्रमक सामाजिक प्रतिष्ठा बदलि सकैत अछि। तथापि नियम बनल मात्रसँ परिवारक दीर्घकालीन अधिकार-सन्तुलन स्वतः परिवर्तित नहि होइत; रसोइक काज आ विश्रामक बँटवारा देखब आवश्यक अछि, जकर उत्तर अगिला दू अध्यायमे खोजल जाइत अछि।

## लोकगीत, गन्ध आ अधूरा परिवर्तन

‘स्वाद घर घुरल’ आ ‘माय केर हाथक भात’क गीतमे भोजनक माध्यमसँ घर घुरबाक कल्पना आयल अछि। तकर संग मूल गद्य भोजनक कौरसँ गन्ध, गन्धसँ घर आ घरसँ इतिहास दिस बढ़ैत अछि। आख्यानिक संक्रमणक ई संवेदी क्रम प्रभावी अछि, मुदा स्मृतिक हर गन्धकेँ विशिष्ट ऐतिहासिक प्रमाण मानब उचित नहि।

अन्तिम स्थितिमे विरासत-दलक लोक पराजित नहि, असमंजसमे घुरैत अछि। बजारक अगिला चाल शेष अछि; न्याय सेहो सम्पन्न विजय नहि, सामूहिक काजक प्रारम्भ अछि। ई अपूर्णता अगिला ‘साझा थारी’क आवश्यकता रचैत अछि।

# अध्याय १३१ — साझा थारी

## सुनबाक स्वीकृतिसँ छूबाक कठिन निर्णय

पाछुक नाम-पाठमे संग बैसि सुनब सम्भव भेल, मुदा संग भोजन करबाक क्षण एक वृद्ध ब्राह्मण ठिठकि जाइत छथि। युवक चर्मकार टोलासँ आयल अछि; वृद्धक अधूरा वाक्य—ओ सुनि सकैत छथि, मुदा खाइ...—समाजिक निषेधक व्याकरण खोलैत अछि। कादम्बरी विचारक औपचारिक स्वीकृति आ शरीरक अभ्यासक बीचक दूरीकेँ एहि अधूरा उच्चारणमे संकुचित करैत अछि।

अहाँसँ पूछल गेल कि कुलक मान केकर भूखसँ पैघ अछि, तखन जातिगत मर्यादा सार्वजनिक नैतिक प्रश्न बनैत अछि। कथाकार वृद्धक हिचकिचाहटकेँ सोझे दानवीकरण नहि करैत; ओकरा अनुभवजन्य भय आ सुधारक असुविधाक रूपमे देखबैत अछि। ई संयम पात्रकेँ उपदेशक कठपुतली बनबाक सँ बचबैत अछि।

## दान नहि, सहभागिताक रजिस्टर

चूड़ा, दही, गुड़, भात, साग, तरकारी, माटिक चूल्हिक आगि, पानि आ पात धोब—गामक घरसभ अपन सामर्थ्य अनुसार योगदान दैत अछि। बच्चा सभ प्रत्येक योगदान नामसहित लिखैत अछि। एहि सूचीमे वस्तुक मूल्य मात्र नहि, योगदान देबाक अलग-अलग सामर्थ्य शामिल अछि। जकरा लग अन्न नहि, ओ पानि दऽ सकैत अछि; जकरा लग पानि नहि, ओ पात धोइत अछि।

ई व्यवस्था दानकर्ता आ लाभार्थीक स्थायी श्रेणी बनएबाक बदला साझा आयोजनक उत्तरदायित्व बाँटैत अछि। मुदा जे किछु दऽ नहि सकैत अछि, ओकर भोजनक अधिकार सेहो अपरिवर्तित रहबाक चाही—ई नैतिक निहितार्थ कथा पाठकसँ निकालबाक अपेक्षा राखैत अछि।

## साग आ गुड़क आदान-प्रदान

वृद्ध जखन भोजन छुबैत छथि तखन चर्मकार टोलाक युवक अपन मायक बनाओल साग बढ़बैत अछि आ वृद्ध नाति द्वारा आनल गुड़ दैत छथि। बरखोंक दूरी दूटा वस्तुक छोटे आदान-प्रदानमे काँपि उठैत अछि। एतय कियो विजयक नारा नहि लगबैत; नाटकीय ध्वनि कम रहबाक कारण दृश्यक सामाजिक अर्थ पैघ बनैत अछि।

बटुकनाथ कानूनी शब्दावलीसँ निबाहल विवादक समाधान नहि देखैत, किएक तँ साझा भोजन न अपराध अछि, न कानूनी अवमानना। ओकर पेशागत असुविधा प्रतीकात्मक अछि: विधिक चाल सामाजिक व्यवहारक सरल, स्वैच्छिक परिवर्तनपर तुरन्त नियन्त्रण नहि पबैत अछि।

## कबड्डीक स्पर्श आ थारीक स्पर्श

बच्चाक उक्ति—‘कबड्डीमे छू कऽ घुरय पड़ैत अछि; थारीमे छू कऽ रहय पड़ैत अछि’—कृतिक एकटा सार्थक अन्तर्पाठीय गाँठि अछि। पहिने कबड्डीक स्पर्श खेलक सीमा पार कऽ घुरबाक क्रिया छल; एतय स्पर्श भोजनक बाद संग रहबाक कठिन नैतिक अभ्यास बनैत अछि।

सामा-चकेवा गीतमे साझा थारी चन्द्रमाक गोल आकार पबैत अछि। लोकगीतक समरसताक आकांक्षाक संग गद्यक वृद्धक काँपैत हाथ राखि कृति आदर्श आ वास्तविक असुविधाक अन्तर देखबैत अछि। अध्याय जाति-विभेद समाप्त भऽ गेल, एहन ऐतिहासिक दावा नहि करैत; एकटा सान घटनाक परिवर्तनशील सम्भावना देखबैत अछि।

# अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

## भोजनक समानतासँ श्रमक समानता

‘साझा थारी’क बाद कथा कठिन प्रश्न पूछैत अछि—खाएलाक बाद उच्छिष्ट बासन के धोएत? ई प्रश्न घरक भीतरक अलिखित श्रम-विभाजनकेँ सार्वजनिक न्यायपर बहसक केन्द्रमे आनैत अछि। एकहि पाँतिमे बैसब सहज उत्सवी क्षण बनि सकैत अछि; चूल्हि जरब, तरकारी काटब, पानि अनब, बासन माँजब आ आगि सम्हारब दैनिक उत्तरदायित्व अछि।

कथाकार एहि दृश्यक माध्यमसँ सेवा आ दासत्वक अन्तर खोजैत छथि। ‘रसोइक गणराज्य’ पद सजावटी रूपक मात्र नहि; श्रमक दर्जा आ भोजनक अधिकार दुनूक पुनर्विन्यासक कल्पना अछि। जखन तक रान्हनिहारक विश्राम आ भोजन सुनिश्चित नहि हो, साझा थारी अधूरा रहत।

## बाढ़िक चूड़ा आ उपेक्षित हाथक साग

विधवा स्त्री बतबैत छथि जे ओ चूड़ासँ तीन बच्चाकेँ बाढ़िक बरखमे बचौने छलीह। चर्मकार बस्ती सँ आयल युवती अपन मायक बीआसँ उपजल साग लऽ अबैत अछि, मुदा ओकर मायक हाथक बनाओल भोजन कतेको घर स्वीकार नहि कएल गेल छल। एतय भोज्य पदार्थ व्यक्तिगत इतिहास आ सामाजिक अस्वीकारक दुइहरा भार वहन करैत अछि।

कादम्बरीक नैतिक बल एहि विशिष्ट स्मृतिसभमे अछि। विधवाक जीवन-रक्षा आ दलित स्त्रीक कृषि-ज्ञानकेँ उपहार-मात्र नहि बनाओल जाए; ओ सभ भोजन-व्यवस्थाक निर्मात्री छथि। एहि कारण किचेनक साझेदारी स्त्री आ श्रमिकक स्वायत्त योगदान मानबाक अभ्यास बनैत अछि।

## घीक छन्न-सन आवाज आ अनाम पात

वृद्ध ब्राह्मण द्वारा आनल घी कड़ाहीमे पड़िते उठल छन्न आवाज कथाकारकेँ सामूहिक असहजताक ध्वनि दैत अछि। धुँआ पुरान जातिगत देबालपर जमल काजर खुरचैत उठबाक रूपक बनैत अछि। बच्चा सभ ‘प्रमाण: गन्ध बदलल’ लिखैत अछि; ई वाक्य जीवनक परिवर्तित सम्बन्धक संवेदनात्मक साक्ष्य अछि, कोनो वैज्ञानिक प्रमाण-प्रक्रियाक पूर्ण विकल्प नहि।

परोसबाक क्रममे अनन्या ‘जकर नाम कतहु नहि लिखल गेल’ तकरा पहिल भोजन देबाक बात कहैत अछि। अनाम पाथरक सोझाँ राखल पहिल पात प्रतीकात्मक अछि, जकरा कोनो जीवित देह नहि खाइत। एकर मर्यादा ई जे स्मरणक साथ वास्तविक भूखल देहक भोजनक अधिकार सदैव प्राथमिक रहबाक चाही।

## नव-क्षितिजक पोषक गोलिका आ घरेलू गन्ध

लाउ किन-हंगक ‘नव-क्षितिज’ भोज-योजनाक स्वप्नमे भोजन अंकित पोषक-गोलिका बनि जाइत अछि। रसोइक गन्ध ओहि स्वप्नमे प्रवेश कऽ नामविहीन, केवल पोषण-गणनाक सीमाकेँ चुनौती दैत अछि। स्वप्नक एहन विधान जीववैज्ञानिक पोषणक अवमूल्यन नहि, स्वाद-सम्बन्ध-स्वायत्तता रहित भोजनक अनुभवक आलोचना अछि।

अन्तिम भागमे बूढ़बा भूतक सूखल पात आ नूनक महीन रेखा लोकमिथकीय प्रतीक छथि। ऊ रेखा बचल काजक चिन्ह अछि, जे सामाजिक सम्बन्धमे किछु अंश तक बदलबाक बावजूद अगिला परीक्षा शेष रहबाक बतबैत अछि। कृतिक प्राप्ति घरेलू श्रमक राजनीतिक दृश्यता; सीमा ओहि व्यवस्थाक दीर्घकालीन सञ्चालनक विवरणक कमी अछि।

# अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

## रसोइसँ रंगमंच धरि : माध्यमक परिवर्तन

अध्याय १३२ धरि कथा साझा रसोइक भीतर लोक-न्यायक अभ्यास करैत अछि; १३३मे विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट एहि स्मृतिकेँ अभिनयक सार्वजनिक भाषामे लए जाएबाक चुनौती बनैत अछि। निमन्त्रण केवल उत्सवक गौरव नहि, प्रश्न अछि—जकर इतिहास सार्वजनिक मंचपर पहिने गलत ढंगसँ कहलगेल, ओकर आवाज आब के रचत? कथाक रूपान्तरणमे स्रोतक अधिकार, सम्पादकीय चयन आ दर्शकक दूरी जटिल भऽ जाइत अछि।

‘बुलाहटक उत्तर ढोलसँ नहि—तैयारीसँ’ अध्यायक उद्घाटन सूत्र अछि। एहि कारण उत्सवक आवेगक संग व्यावहारिक रचना, पात्रक सहमति आ चयनक श्रम पर जोर अछि। बाँचल सामग्री मात्र मंचपर राखब पर्याप्त नहि; मंच आ कथा दुनूक विधा भिन्न अछि।

## कबड्डीक शरीर आ गंगेशक लोकश्रुति

कबड्डी खेलनिहार बच्चा सभक साँस, दौड़, सीमा छू कऽ घुरब आ सामूहिक लय संभावित नाट्यरचनाक देह प्रदान करैत अछि। गंगेशक प्रश्नक प्रसंगकेँ मंच पर आनबाक अर्थ दार्शनिक प्रमाण-विवेकक दृश्यात्मक प्रस्तुति होइत अछि। मुदा उपन्यासक लोकश्रुतिमे वर्णित जन्म-विवाह-साधनाक कथा प्रमाणित इतिहास नहि—एहि भेदकेँ अभिनयमे सेहो चिह्नित करब आवश्यक अछि।

लोकगीत आ पमरिया नाचक संकेत समुदाय आधारित रंगकर्मीपरम्पराक उपयोग करैत अछि। एकर आलोचनात्मक कसौटी ई जे लोक-स्वर केवल विदेशी दर्शक लेल सजावट नहि, सहभागी रचनाधिकार बनय।

## मृतकक नाम आ प्रदर्शनक अनुमति

जलसमाधि, दबाओल नाम, मजदूरक मृत्यु आ स्त्रीक निजताक प्रसंग कलात्मक अभिनयमे आसानीसँ तमाशा बनि सकैत अछि। कादम्बरी पूर्व अध्यायसभमे स्मृति-बाजारपर जे प्रश्न उठौने अछि, से नाट्यउत्सवमे सेहो फेर लौटैत अछि। पीड़ितक दारुण घटना दर्शनीय चमत्कार बनाओल जाए कि ओहिसँ साक्ष्य-उत्तरदायित्वक प्रश्न उठाओल जाए—एहिमे कला-कौशलक नैतिक परीक्षा अछि।

ऐतिहासिक नाम आ निजी विवरणक प्रतिनिधित्वमे स्वीकृति, उपयुक्त गोपनीयता आ प्रत्यक्षदर्शीक कण्ठक सम्मान अनिवार्य अछि। मंच जखन साक्षीक अधिकारक स्थान बनैत अछि, तखन नाटकक लक्ष्य अपन प्रभावक बदला लोकक उत्तरदायित्वमे स्थापित होइत अछि।

## आमन्त्रण आ प्रस्तुति बीचक अन्तर

एहि अध्यायमे उत्सवक बुलाहट आ तयारी प्रधान अछि, सम्पूर्ण नाटकक मंचन नहि। एहि कालक्रमक भेद जोगाएब जरूरी अछि, नत्रे ‘नाट्य-पाठ’ आ पछिला ‘अभिनय’क ऐतिहासिक क्रम बिखरि जाएत। निमन्त्रण भविष्यक रचनात्मक सम्भावना खोलैत अछि, उपलब्धि घोषित नहि करैत।

शिल्पगत दृष्टिसँ उपन्यासक लम्बा लोक-अभिलेख नाटकक संक्षिप्त दृश्य-समयसँ टकराएत। रचनाकार एहि तनावकेँ स्वयं नाट्यविचारक विषय बनबैत छथि। अतिरिक्त गीत आ भाषणक मात्रा कम भऽ दृश्य अपन नाटकत्व अर्जित करत तँ अगिला अध्यायक प्रतिफल अधिक सघन होयत।

# अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

## दर्शककेँ साक्षी कहबाक भाषिक हस्तक्षेप

कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ बनैत काल ‘दर्शक’ आ ‘साक्षी’ शब्दक बीच फेर विचार होइत अछि। दर्शक घटना देखैत अछि; साक्षी अपन देखलाक जिम्मेदारी सेहो वहन करबाक स्थितिमे अबैत अछि। मंचक भाषामे ई परिवर्तन नैतिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण, मुदा विधिक अर्थमे प्रत्येक दर्शक स्वतः प्रत्यक्ष साक्षी नहि बनि जाइत। कलात्मक नैतिक साक्षित्व आ न्यायालयक प्रमाणिक गवाहीक भेद आवश्यक अछि।

अध्याय पूर्व ‘नामक पहरा’ केँ नाटकक रूपमे फेर गढ़ैत अछि। साक्षी शब्दक चयन दर्शकक निष्क्रिय दूरी कम करबाक कलात्मक प्रस्ताव अछि, कोनो न्यायिक निष्कर्ष नहि।

## गोल मंच, कटल ठूँठ आ काल्पनिक पानिक रेखा

मंच-योजनामे मध्यक गोल घेरा, कटल ठूँठ, पानिक कारी रेखा, रसोइक धुँआ, खाली जातिगत पिंजरा आ नाम-पात भिन्न घटनाकेँ एकहि स्थानिक संरचनामे आनैत अछि। कबड्डीक गोलक संग दर्शकक कातक बैठकी सेहो एक सामाजिक लय गढ़ैत अछि। वस्तु-चयनक एहन मितव्ययितामे गद्यक दीर्घ कथाकेँ संक्षिप्त दृश्य-भाषा भेटैत अछि।

तथापि एकहि प्रतीकमे अनेक इतिहास समेटबेक जोखिम अछि। ठूँठक अर्थ पर्यावरण, मृत्यु, उखड़ल अधिकार, नव हरियर अंकुर सभ बनि रहल अछि; मंचनमे अलग कृति-विन्यास नहि भेला पर प्रतीकसभ एक-दोसरासँ गड्डमड्ड भऽ सकैत अछि।

## लोकश्रुति, भूतक प्रदर्शन आ समुदायिक स्वीकृति

गंगेशक प्रश्न, नकली भूतक जुलूस, गज-ग्राहक बालरूप, पानिक स्मृति आ नाम-पाठक दृश्य मंचीय कल्पनाक भिन्न स्तर छथि। भूत अथवा देवीक कथनकेँ रंगमंचपर सत्यापित ऐतिहासिक घटना मानब अनुचित; एहन दृश्य मूल कादम्बरीक लोकमिथकीय शिल्पक कलात्मक रूपान्तरण छथि।

प्रदर्शनक सामग्री जखन मृतक अथवा पीड़ित परिवारक अनुभवपर आधारित हो, तखन प्रतिनिधित्वक नैतिक मर्यादा सेहो लिखित नाट्य-पाठमे तय होएब चाही। मंचक स्वामित्व केवल आयोजकक नहि, कथाकेँ बनौनिहार लोकक कण्ठक संग बाँटल रहबाक सम्भावना अछि।

## लिखित पाठ अभी नाटकक अन्तिम प्रदर्शन नहि

१३३क निमन्त्रणक बाद ई अध्याय लिखित नाट्य-विन्यास तैयार करैत अछि। संवाद, प्रवेश, अभिनेताक देह आ दर्शकक व्यवस्था रचि गेलो पर वास्तविक मंचन आ ओकरा पाछाँ उठनिहार प्रश्न अगिला अध्यायसभक विषय छथि। कथा एहि अन्तरकेँ नब रूपक सीमा रूपमे उपयोग करैत अछि।

उपन्यासक शिल्पक उपलब्धि ई जे ओ अपन पहिनुक १३२ अध्यायक सामग्रीपर भीतरसँ आत्मालोचना करैत अछि—कतेक देखाएब, कतेक सुनाएब, ककर बात नहि दोहराएब। ओकर सीमा मूल कथानकसँ मेटा-नाट्यक दिस अधिक विस्तार लऽ सकबाक खतरा अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १३०–१३४

## स्वादसँ रंगमंच धरि : अनुभवक सार्वजनिक यात्रा

१३०मे घरक भोजन आ माय-हाथक स्वाद स्मृतिक संवेदनात्मक आधार अछि; १३१मे वही भोजन साझा पाँतिक नैतिक परीक्षा बनैत अछि; १३२मे रसोइक परिश्रम आ बासन धोबाक उत्तरदायित्व सामूहिक न्यायक आधार बनैत अछि। १३३मे कथा विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट पबैत अछि, आ १३४मे ओ अनुभव लिखित नाट्य-पाठमे रूपान्तरित होइत अछि। पाँच अध्याय इन्द्रियानुभवसँ सामाजिक व्यवहार, तकर बाद कलात्मक प्रतिनिधित्वक यात्रा अछि।

## स्त्री आ बच्चा : रान्हनिहारसँ पाठ-रचनाकार

देविकाक पञ्जीमे परोसबाक समान अधिकार दर्ज होइत अछि; मीरा स्त्रीसभक भोजनक असमान अनुभव सुनैत छथि; विधवा आ चर्मकार बस्तीक स्त्री भोजन-सामग्रीक संग अपन जीवन-स्मृति लैत छथि। अनन्या आ बच्चा सभ योगदानक रजिस्टरसँ मंचीय पाठक चयन धरि भाग लैत छथि। एहि क्रममे स्त्री आ बच्चा केवल भावुक कथा-पात्र नहि, स्मृतिसँ सार्वजनिक पाठ रचबाक सहकर्मी बनैत छथि।

## बाजार आ अभिलेख : ब्राण्ड बनाम अधिकार

१३०क पैकेटबन्द स्मृति-भोज आ १३३–१३४क नाट्यरूपान्तरण दुनू बाहरी प्रस्तुतीकरणक माध्यम छथि, मुदा नैतिक अन्तर उद्देश्य आ नियन्त्रणक अछि। ब्राण्ड शोकक नाम बेचि सकैत अछि; नाट्य-पाठ यदि स्थानीय कथन, सहमति आ सम्मानपूर्वक आलोचना जोगबैत अछि तँ सार्वजनिक स्मृति रचि सकैत अछि। केवल मञ्च होएब पर्याप्त नहि; प्रतिनिधित्वक अधिकार आ सामुदायिक हिस्सेदारी निर्णायक अछि।

## रंगमंचक विधा आ प्रमाण-विवेक

कबड्डीक स्पर्श, भोजनक छन्न ध्वनि, ठूँठक हरियर बिन्दु आ लोकगीत अलग माध्यममे अलग अर्थ ग्रहण करैत छथि। उपन्यासमे गद्य रूपमे लिखल बूढ़बा भूतक दृश्य मंचपर अभिनेता, प्रकाश आ ध्वनिसँ बनत; ओ ऐतिहासिक सत्यक प्रमाण नहि। गंगेशक लोकजीवनसम्बन्धी आख्यानक संग वास्तविक अभिलेख-सत्यापनक आवश्यक भेद यथावत रहत। जखन कथाक पात्र दर्शककेँ ‘साक्षी’ कहैत अछि, तखन नैतिक सहभागिता बढ़ैत अछि, विधिक साक्षित्व स्वतः सिद्ध नहि होइत।

## उपलब्धि, सीमासभ आ आगाँक कसौटी

पाँच अध्यायक सबसँ पैघ उपलब्धि ई जे कादम्बरी घरक रसोइक अदृश्य काजकेँ सार्वजनिक लोकतान्त्रिक मूल्यसँ जोड़ैत, तकर नैतिक भार रंगमंच धरि पहुँचबैत अछि। जातिगत असुविधाक क्षण, साझा साग-गुड़क आदान-प्रदान आ बासन धोबाक प्रश्न विशिष्ट दृश्य छथि। मुदा गीत, भाषण आ प्रतीकक पुनरावृत्ति किछु ठाम घटनाक विश्लेषणक तीक्ष्णता कम कऽ सकैत अछि। अगिला ‘अभिनय’ आ ‘दर्शकक गवाही’मे समाजक व्यावहारिक बदलावक परीक्षण सँ ई रचनात्मक शृंखला पूर्ण बल पबैत अछि।

# अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

## स्क्रिप्टसँ देह धरि : अभिनयक पहिल परीक्षा

पछिला अध्यायमे लिखल कबड्डी-नाट्य-पाठ एतय सार्वजनिक मंचनक रूप ग्रहण करैत अछि। सूत्र ई अछि जे मंच आ दर्शकक बीच ऊँच-नीचक भेद बनितहि कथा तमाशा बनबाक जोखिम बढ़ैत अछि। पहिल दृश्यमे बालकक ‘कबड्डी’ उच्चारण ‘नाम’मे बदलैत अछि; साँस, खेल आ मृतकक नामक एकहि क्रियामे समावेश कएल जाइत अछि।

नाटकमे एकल वीर नायक नहि रहब कृतिक सामूहिक आख्यान-रचना अनुरूप अछि। तथापि दर्शकक प्रतिक्रिया देखि ई निष्कर्ष नहि निकालब जे सभी वास्तविक अन्याय समाप्त भऽ गेल। मंच केवल परखबाक दृश्यक अवसर प्रदान करैत अछि।

## पाथरक आसन आ पानिविहीन जलसमाधि

मंचपर एकटा पाथर अनाम व्यक्तिक आसन होइत अछि; दर्शक ‘उपस्थित’ कहैत छथि। जलसमाधि दृश्यकेँ वास्तविक पानि बिना कबड्डी खेलनिहारक गोल साँससँ रचल गेल अछि। जे कलाकार डूबल, से उठि पाथर लग बैसि जाइत अछि। देहक गतिक माध्यमसँ मृत्यु आ मुक्ति बीचक सम्बन्ध पर विचार उभरैत अछि।

दृश्य अपन कलात्मक प्रतीकक सीमा स्वीकारय; ककरो असल मृत्यु, डूबबाक भौतिक अवस्था अथवा परलोकक सिद्धि अभिनयसँ प्रमाणित नहि होइत। प्रतीक मृत्यु-शोकक सम्मान तथा अनामक उपस्थितिक प्रश्न उठबैत अछि।

## गंगेशक असुविधाजनक इतिहास आ दूरक ग्रह

गंगेशक जीवनसम्बन्धी लोकश्रुति मंचपर आलोचनात्मक प्रश्न बनि अबैत अछि। किछु दर्शक असहज होइत छथि, किएक तँ परम्परागत सम्मानक संग जातिगत बहिष्कारक

असुविधाजनक स्मृति जोड़ल गेल अछि। एहन कथनकेँ मूल कादम्बरीक लोककल्पना आ आलोचनात्मक प्रस्ताव बुझब उचित, स्वतंत्र जीवनी-साक्ष्य नहि।

चन्द्रपालक नकली फोनमे श्रद्धांजलि आ लाभक भाषा उजागर होइत अछि; लाउ आ ब्रूमक ‘अनाम ग्रह’क प्रस्तुति स्वच्छ किन्तु जीवनहीन यूटोपियाक रूपक बनैत अछि। कबड्डीक रेखा पृथ्वी छोड़बाक प्रलोभनक विरोधमे आकाश दिस फेंकल जाइत अछि।

## सत्यव्रतक खाली कुर्सी आ अधूरा समापन

सत्यव्रत मेहताक चरित्र लेल खाली कुर्सी रहैत अछि, जखन कि वास्तविक सत्यव्रत पाछाँ दर्शकमे बैसल छथि। एहि नाटकीय दूरीमे सामाजिक प्रतिष्ठा आ वास्तविक सुननाइ अलग होइत अछि। अनन्याक कथन नामकेँ कुर्सीपर नहि, रजिस्टरमे राखबाक आग्रह करैत अछि।

आयोजक तालीक अन्त चाहैत छथि; बच्चा सभ नाटक समाप्त भऽ गेल एहन सार्वजनिक घोषणा टारैत अछि। भोरक ओस क्रीड़ा-रेखा पर जमबाक दृश्य कथाक निरन्तरता दर्शबैत अछि। शिल्पगत जोखिम छवि आ नैतिक निष्कर्षक पुनरावृत्ति अछि, मुदा खाली कुर्सीक सघनता एहि दृश्यक शक्ति अछि।

# अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

## तालीक ध्वनि आ उत्तरदायित्वक सन्नाटा

अध्याय आरम्भ होइत अछि मंचनक बाद उठल तालिक ध्वनिसँ। जे अभिनय क्षण भरि उत्साह जगौलक, से दर्शकक भीतर जवाबदेहीक प्रश्न छोड़ि गेल। गजक भूमिका निभौनिहार बालक अपन हाथ ताकैत अछि; ठूँठक कोंपल बनल लड़की घुट्ठी मोड़ि माटि छूबैत अछि। देह पर भूमिकाक असर कलाकारक मनोस्थितिक चित्रण अछि।

कथाकार प्रसिद्धिक तत्काल पुरस्कारक बदला आत्मपरीक्षणक दीर्घ क्षण चुनैत छथि। ई विस्तार प्रभावी अछि, मुदा अभिनयक अपराधबोधकेँ वास्तविक अपराधमे स्वीकृति बुझि नहि पढ़बाक चाही।

## मृतकक सूचीसँ जीवितक दबल नाम धरि

एक वृद्धा अपन पतिक अनुपस्थित नामक प्रसंग अनैत छथि, युवक अपन भाइक ऋण आ मद्यसंकट, घोघमे बैसल स्त्री अपन जीबैत बेटीक दबल नाम। अनन्याक उत्तर जीवित व्यक्तिक सामाजिक अदृश्यताकेँ मृतकक अभिलेख-संकटसँ जोड़ैत अछि। ई अर्थपूर्ण विस्तार अछि, मुदा जीवित बेटीक नाम सार्वजनिक लिखबाक पहिने हुनकर स्वीकृति जरूरी —उपन्यासक आन्तरिक निजता-नीतिक ठोस परीक्षा एहिठाम होइत अछि।

मृत्यु आ सामाजिक बहिष्कारक अन्तर मिटा देब कथाक उद्देश्य नहि; दुनू स्थिति ‘नाम मेटब’क भिन्न प्रविधिसँ सम्बन्धित छथि।

## सत्यव्रतक वास्तविक सुननाइ आ चन्द्रपालक शीशा

मंचपर सत्यव्रतक भूमिका छोट बालक निभेलक, जे बेसीकाल सुनैत रहल। पाछाँ बैसल वास्तविक सत्यव्रत अभिनय आ दीर्घकालीन सुनबाक उत्तरदायित्वक अन्तर स्पष्ट करैत

छथि। हुनकर विचार कतिको पुरान असफलता, मौन आ पछतावासँ बनल अछि; ताली एहन नैतिक हिसाब बन्द नहि करैत।

चन्द्रपाल सभागारक बाहर टिकट-खिड़कीक शीशामे अपन चेहरा देखैत अछि। फोनपर चमकल वाक्य ओकर आत्म-आरोपक अद्भुत रूपक अछि। वास्तविक खाताक हेराफेरीक प्रमाण ओहि स्क्रीनक अलौकिक लिखावट नहि, स्वतंत्र जाँच होएत।

## स्थिर स्क्रिप्ट बनाम जीवित स्थानीय पाठ

ईरा आ रंगकर्मीसभक चर्चा नाटकक लेखकत्वपर केन्द्रित अछि: पाठ छापल जाए, कि प्रत्येक प्रदर्शनमे स्थानीय नामक लेल स्थान खुजल रहय? ईरा नदीक तुलना दऽ विविध ग्रामक योगदानक बात करैत छथि। साझा लेखकत्वक ई आशय आकर्षक अछि, मुदा वास्तविक लिखित रचना, नाम, योगदान आ सहमतिक अभिलेख सेहो आवश्यक अछि।

अन्तमे धूलिमे ‘जतय नाटक समाप्त, ओतय गाम शुरू’क पंक्ति अलौकिक रूपमे उभरैत अछि। एकरा नाटकक वास्तविक इतिहासक घटना नहि, रूपकात्मक संक्रमण मानल जाए।

# अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

## कुर्सीपर बैसल व्यक्ति : भूमिका होइन, नाम

आरम्भक प्रश्न ई नहि जे मंचपर कियो केकर अभिनय केलक, बल्कि जे देखनिहार अपन जीवनमे की करैत रहल। तालीक बादक सामूहिक सन्नाटामे एक वृद्ध पुल-निर्माणक मुंशी अपन चुप्पी स्वीकार करैत छथि। फाइलमे मजदूरक संख्या घटा कऽ लिखल जे गेल, तकर अनुभव आ पुरान पीयर कागज ओकर कथनकेँ दृश्य विश्वसनीयता दैत अछि।

कागजक अस्तित्व ओहि कथनक स्वतंत्र जाँचक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा मात्र कथन पूरा संस्थागत अपराध सिद्ध नहि करैत। कादम्बरीक प्रमाण-विवेक एहि अन्तरकेँ सुरक्षित राखबाक अपेक्षा करैत अछि।

## दवाइ-भण्डारक चाभी आ छोट अपराधक गोहि

अस्पतालमे दवाइ बाँटनिहार स्त्री महामारीक समय गरीबक दवाइ निजी दुकानदारक नाम चढ़ेबाक दबाव, अपन विरोध न करबाक पश्चात्ताप आ बेटाक मृत्यु कहैत छथि। ओ अनन्याकेँ पुरान भण्डारक चाभी दैत छथि। चाभी अपराधक खोज लेल स्मृति-वस्तु अछि; आरोप जाँचबाक लेल भण्डारक अभिलेख आ जिम्मेदार व्यक्तिक अलग साक्ष्य आवश्यक।

एहि गवाहीसभक संग जातिक नामपर विवाह रोकबाक, बेटीपर झूठा कलंकमे चुप रहबाक आ दलाली देखि हटि जेबाक अनुभव सेहो अबैत अछि। सान सहभागितासभ मिलि अन्यायक पैघ ‘गोहि’ बनैत अछि—कृतिक केन्द्रीय रूपकक नव सामाजिक अर्थ।

## बटुकनाथक कानूनी सुविधासँ बाहर जन-स्वीकार

बटुकनाथ अपन सीटमे धँसैत अछि जखन ओकर नामपर मुकदमा लम्बा करबाक कारीगरी सीखल गेल कहि एक युवक स्वीकार करैत अछि। मंचक अधिकृत प्रस्तुतिक बाद दर्शकक स्वत: कथन ओकर नियन्त्रित विधिक छविसँ बाहर अछि।

एतय ककरो व्यक्तिगत दोषसिद्धि घोषणा नहि भेल; कथा देखबैत अछि जे सार्वजनिक स्वीकारोक्ति व्यक्तिगत नैतिक परिवर्तनक आरम्भ भऽ सकैत अछि। वास्तविक अदालतमे प्रमाण, साक्षीक विश्वसनीयता आ प्रतिपरीक्षण अपरिहार्य रहत।

## कलाकारसभ साक्षीक सहायक बनैत छथि

कबड्डी खेलनिहार युवक जे मंचपर भूत-मजदूर-गोहि बनल छल, आब गवाही दैत लोकक साँस सम्हारैत छथि। जखन कियो कानैत शब्द बिसरि जाए, हुनका सभक धीरज दृश्यकेँ तमाशासँ बचबैत अछि। आयोजकक स्वर नहि, सुननिहारक शांत उपस्थिति एहि नाट्यसन्दर्भक असल नैतिक परिणाम बनैत अछि।

रातिमे लोक अपन ‘मौनक नाम’—भय, लोभ, जाति, लाज, वेतन—लिखबैत अछि। ई श्रेणीसभ कारणक सटीक विश्लेषणक आरम्भ छथि, सम्पूर्ण कारणशास्त्र नहि। अगिला अध्यायमे ई गवाही सार्वजनिक बाटपर उतरैत अछि।

# अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

## सभागारसँ चाह-दुकान : पाठक नव ठाम

विदेह नाट्य उत्सवक भीतर सम्पन्न अभिनय बाहरक चाह-दुकानपर प्रथम नव रूप धारण करैत अछि। टिकट नहि कटौनिहार चाहबला एक स्त्रीक ‘हमर भाइयो कोनो अभिलेखमे नहि’ कथन सुनि अपन उधार-पुस्तकक पन्ना पर नाम लिखैत अछि। आर्थिक लेनदेनक खाता क्षणभरि स्मृतिक रजिस्टर बनि जाइत अछि।

ई परिवर्तन प्रभावी अछि, कारण दर्शक आ मंचक औपचारिक सीमा भंग होइत अछि। कतेको अनौपचारिक नाम-पञ्जी बादमे प्रमाणित अभिलेख बनत कि नहि, से अलग संस्थागत प्रश्न अछि।

## भेषक पाछाँक जीवनक कण्ठ

मंचक पछिला दरबाजा लग गोहि, भूत, डाइन, मजदूर आ न्यायाधीश बनल कलाकारसभ अपन असली नाम बजैत छथि। जकरा मजदूरक भूमिका भेटल, ओकर दादा पुलमे हराएल; जकरा डाइनक अभिनय भेटल, हुनकर नानीकेँ विधवा होबाक कारण अलग कएल गेल। भूमिका आ असल अनुभवक अप्रत्याशित साम्य कलाक सामाजिक पृष्ठभूमि देखबैत अछि।

मुदा एहि साम्यक अर्थ ई नहि जे प्रत्येक कलाकार स्वयं ओहि अनुभवक पूर्ण प्रतिनिधि अछि। अन्यक पीड़ाक अभिनयमे सेहो सुनब, परामर्श आ अनुचित दावासँ संयम आवश्यक अछि।

## ‘दुखक टुकड़ा बेचू नहि’ : दृश्य-सम्पादनक मर्यादा

किछु दर्शक नाटकक टुकड़ा काटि छोट चलचित्र-प्रदर्शन बनाबय चाहैत छथि। देविका ‘दुखक टुकड़ा बेचू नहि; पूरा सन्दर्भ सुनू’ नियम दैत छथि। एतय मूल कृतिक डिजिटल स्मृतिबाजारक आलोचना रंगमंचक पुनर्प्रसारणपर लागू होइत अछि।

चन्द्रपालक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग फेर सक्रिय होएबाक चेष्टा करैत अछि। तकनीकक संभावित सहायता आ पीड़ितक नामपर आर्थिक लाभक अन्तर पहचानब आवश्यक अछि। पूर्ण सन्दर्भ, स्रोत-स्वीकृति आ व्यक्तिक अधिकार जोगाकऽ प्रस्तुति करब एहि अध्यायक व्यावहारिक कसौटी अछि।

## जुलूसक माटि आ परदेशक लिफाफा

दर्शकसभक नाम, ‘ककरा लेल उपस्थित’ आ ‘ई कथा अहाँ संग कतय जाएत’ शीर्षक तीन प्रश्न गवाहीकेँ भविष्यक क्रियामे बदलैत अछि। अनन्या मध्यरेखाक माटि रजिस्टरमे राखैत अछि; भूमिकाक रेखा गामक देहमे फैलबाक रूपक बनैत अछि।

अन्तिम भागमे दूरदेशी टिकटबला लिफाफा अबैत अछि, जाहिमे परदेशक बच्चा सभ पहिने नाम सुनि नाटक खेलबाक बात कहैत अछि। ई संवाद नाट्यरचनाक सांस्कृतिक प्रसारक सम्भावना अछि, मुदा सभ वास्तवमे प्रदर्शन कऽ चुकल, एहन दावा नहि।

# अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

## मंचक स्थिर सीमा बनाम सड़कक चलैत सीमा

‘बाटक रंगमंच’मे अभिनेता आ दर्शकक निर्धारित सीट समाप्त भऽ जाइत अछि। दूध लऽ कऽ जाएवला, तरकारी तौलनिहार, रिक्शाचालक आ पुलिस चौकीक कात ठाढ़ लोक क्षण भरि दृश्यसँ जुड़ैत छथि। कबड्डी खेलनिहार बच्चा सभ चौक, पुलिया, दवाइ-दुकान आ अदालतक बरामदा साँस गनि पार करैत अछि। माटिमे बनल प्रवेशक सीमा पएर लागितहि मेटि जाइत अछि।

ई अस्थायित्व मंच-सज्जाक अभाव नहि, रचनात्मक शक्ति अछि। सड़कपर सहभागी मनुष्य अपना वास्तविक श्रमसँ अलग नहि पड़ैत; भूमिका आ जीवन एक दोसरा पर असर करैत अछि।

## बस-अड्डाक परचा आ अदालतक बरामदा

बस-अड्डा पर बच्चा सभ पूर्व एक सय बत्तीस पहराक संक्षिप्त पात बाँटैत अछि। परिचालक टिकट आ मानवीय पहचानक विरोधी अर्थ सँ जुड़ल पंक्ति पढ़ि सुनबैत अछि। पाँच मिनटक ठहरावमे यात्रा-स्थल सामूहिक पाठशाला बनि जाइत अछि।

अदालतक बरामदामे अभिनेता तेज नाटकीय चीत्कार नहि करैत छथि। सत्यव्रत पहिने लिखबाक बदला सुनब पसिन्न करैत छथि। अधिकृत न्याय-भवनक सीमा आ न्यायसम्बन्धी सार्वजनिक चेतना बीच अन्तर कृतिक पुरान विषयकेँ नब दृश्य-स्थान प्रदान करैत अछि।

## नियन्त्रणक प्रश्न : व्यापारी, अधिकारी, बटुकनाथ

व्यापारी ग्राहक भागबाक शंका करैत छथि, नेता सांस्कृतिक अनुमतिक बात करैत छथि आ अधिकारी लोकभावना भड़कबाक सम्भावना कहैत छथि। बच्चा सभ उत्तर दैत अछि जे ओ

नाम पढ़ैत अछि, उकसाबैत नहि। बाहरी समाजक प्रतिक्रियासभसे कला आ सार्वजनिक अधिकारक वास्तविक तनाव बनैत अछि।

बटुकनाथक कागजमे अदृश्य हाथसँ ‘उपस्थित’ लिखाएब अलौकिक शिल्प अछि; ओकरा प्रशासनिक वास्तविक घटना नहि मानब। ऐतिहासिक अर्थ एतबे अछि जे लोकक स्वतन्त्र कथा अधिकृत नियन्त्रणकेँ चुनौती देत।

## राघवक ‘चल-नाटक’क विघटन

राघव एहि प्रवाहकेँ ‘चल-नाटक’ कोडमे बाँधय चाहैत अछि, मुदा शब्द दू भागमे टूटि जाइत अछि। जखन कोनो एक मालिक, नेता वा आर्थिक खाता नहि, तखन केन्द्रित षड्यन्त्र लेल लक्ष्य चिन्हब कठिन—ई अध्यायक अन्तिम राजनीतिक रूपक अछि।

कथा एहि रूपकसँ समुदायिक बहुस्वरिकताक बचाव करैत अछि। तथापि बिनु केन्द्रक सामाजिक आन्दोलनमे उत्तरदायित्व, व्यक्तिक सहमति आ संसाधन-सञ्चालनक प्रश्न शेष रहत। एहि सीमा सहित बाटक नाटक अर्थवान अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १३५–१३९

## मंचन, सन्नाटा, गवाही, जुलूस, बाट

अध्याय १३५ मे लिखित नाट्य-पाठ देहधारी मंचन बनैत अछि; १३६ मे ताली समाप्त भेलाक बादक मौन व्यक्तिगत प्रश्न जगबैत अछि; १३७ मे दर्शक अपन चुप्पी आ सहयोगक कथन कहैत छथि; १३८ मे गवाही सभागारसँ चाह-दुकान आ सड़क धरि पहुँचैत अछि; १३९ मे सड़क स्वयं परिवर्तनीय रंगमंच बनैत अछि। ई पाँच चरण प्रस्तुति, भावात्मक असर, निजी स्वीकार, सार्वजनिक प्रसार आ आन्दोलनक सम्भावनाक क्रम रचैत अछि।

## कबड्डीक बदलैत अर्थ

१३५ मे कबड्डीक साँस मंचपर मृतकक नामक स्वर बनैत अछि; १३६ मे कलाकारक देह पर किरदारक नैतिक असर रहि जाइत अछि; १३७ मे खेलाड़ी गवाहक सँभाल करैत छथि; १३८ मे खेलक रेखा मंचक बाहर मिट्टीमे उतरैत अछि; १३९ मे ओ चौक आ अदालतक बरामदा पार करैत अछि। क्रीड़ा-कायाक एहन विकास उपन्यासक दीर्घ शिल्पक महत्त्वपूर्ण निरन्तरता अछि।

## लोकप्रमाण आ न्यायिक प्रमाणक सीमा

पुलक मुंशीक कथन, दवाइ भण्डारक पुरान चाभी आ सामाजिक बहिष्कारक स्वीकारोक्ति अपरोक्ष जाँचक बाट खोलैत अछि। एहन आत्मस्वीकृति कादम्बरीक नैतिक तर्कक सामग्री अछि; स्वतंत्र अभिलेख, गवाहीक प्रतिपरीक्षण आ विधिक प्रक्रिया बिनु कोनो दोषसिद्धि नहि। गंगेशक लोकश्रुति, भूतक झलक आ अदृश्य लिखावटकेँ आलौकिक दृश्य-बोधक स्तरपर पढ़ब उचित अछि।

## स्मृति-बाजारक नब अवतार

चन्द्रपालक छोट-छोट ‘भावुक दृश्य’क प्रचार-प्रयास, बटुकनाथक भीड़ मापबाक जिज्ञासा आ राघवक कोडसभ नाटकक सामूहिक असरकेँ वाणिज्यिक अथवा नियन्त्रित संकेतमे बदलय चाहैत अछि। देविकाक पूरा सन्दर्भ जोगबाक नियम आ अनन्याक खुला रजिस्टर एहि प्रयासक आलोचनात्मक प्रतिवाद छथि।

## कलात्मक उपलब्धि आ अधूरा संगठन

खाली कुर्सी, चाह-दुकानक उधारखाता, मंचक पसीना, पुरान चाभी आ बस-अड्डाक पाँच मिनट दृश्य-विशेषक रूपमे याद रहैत अछि। मुदा प्रत्येक अध्यायमे सार्वजनिक नैतिक उद्घोषक पुनरावृत्तिसँ पात्रक जटिलता किछु सीमित होएबाक जोखिम अछि। सड़कक रंगमंच जखन बिनु केन्द्रीय नेता फइलैत अछि तखन संसाधनक प्रबन्ध, स्थानीय मतभेद आ गोपनीयता नीकसँ सम्हारबाक प्रश्न भविष्यक अध्ययन लेल खुलल अछि।

# अध्याय १४० — चल चौपाल

## खेलक नियममे न्यायिक हाशियाक प्रश्न

‘बाटक रंगमंच’क बाद बच्चासभ ‘चल चौपाल’ नामसँ खुलल स्थानक नब आयोजन करैत अछि। कबड्डीक साँस रोकि सीमा पार करबाक अभ्यास अब पूरा नाम सुनबाक परीक्षा बनैत अछि। खेलमे जीत-हार घोषित नहि होइत; लक्ष्य सामनेक व्यक्तिसँ एकटा अधूरा नाम पूरा सुनब अछि। एहि नियममे सामूहिक खेलक प्रतिस्पर्धात्मक सीमा सुनबाक नैतिक अनुशासनमे बदलैत अछि।

उद्घाटनमे खेतक मेड़, पोखरिक कगार आ फाइलक हाशियाक तुलना आकस्मिक नहि। जे नाम कागजक रेखाक भीतर, ओकरा वैध मानल जाए; बाहर, ‘निरस्त’ कहल जाए—एहन संस्थागत वर्गीकरण कथा खेलक माटिसँ चुनौती दैत अछि। नाम सुनबाक नैतिक अधिकार आ प्रशासनिक वैधानिकता भिन्न विषय छथि; दुनूक भेद सुरक्षित राखब आलोचनाक दायित्व अछि।

## मंच बिना चौपाल, जीवनक घरमे प्रवेश

चल चौपाल लेल तीन वस्तु प्रस्तावित—खुलल ठाम, सुननिहार कान आ एहन नाम जे एखन धरि पूरा नहि सुनल गेल। एहि न्यूनतम शर्तमे लोकतान्त्रिक सहभागिताक नब रूप अछि। सभा सभागारक स्वामित्व, टिकट आ प्रकाशसज्जा पर निर्भर नहि रहैत।

बा बाल कलाकारसभकेँ बतबैत छथि जे असली रंगमंच अब रसोइ, ओसारा, खेत, कार्यालय, अदालत, मोबाइल आ निन्नमे अछि। ई कथन पूर्वक रसोइक गणराज्यक संग सेतु बनैत अछि। नैतिक आन्दोलक प्रभाव तभी मापल जाएत जखन घरक भीतर व्यवहार सेहो बदलय।

## सत्ताक प्रदर्शन-स्पष्टीकरण आ कागचक कबड्डी

चलैत जुलूस देखिकऽ सरकारी भाषा ‘प्रदर्शन-सदृश गतिविधि सम्बन्धी स्पष्टीकरण’क पत्र अनैत अछि। पत्रक स्वर कला कैं अनुशासनक विषय बनाबय चाहैत अछि। बच्चासभ पत्र ठूँठ लग राखैत अछि, जतेक पहिने नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र राखल छल। प्रतीकात्मक रूपमे जनकथा प्रशासनिक कागचक समक्ष ठाढ़ अछि।

सत्यव्रतक सुझाव ई जे पत्र काल्हि पढ़ल जाए। तुरन्त क्रोधक बदला पाठ आ तर्कक प्रक्रिया अपनाएब कृतिक प्रमाण-सम्बन्धी धारणाक संग सुसंगत अछि। अन्तिम ‘कागचक कबड्डी’क पूर्वाभास अगिला अदालत-समीक्षाक दुआर खोलैत अछि।

## शिल्पगत अन्तराल

जुलूस साँझमे ठूँठ लग घुरैत अछि, आ अनन्या लिखैत अछि ‘आइ कथा बाट सीखि आयल’। ई घुरनाइ रचनाक केन्द्र नहि छोड़बाक संकेत अछि। बूढ़बाक भूतक स्वर लोकमिथकीय स्मृति मात्र, खेलक वास्तविक मार्गदर्शक हेबाक ऐतिहासिक दावा नहि।

अध्यायक उपलब्धि क्रीड़ाक नियमकैं प्रश्न करबाक नियममे परिवर्तित करब अछि। सीमा ई जे खुलल चौपालक सहभागिता कखन वैधानिक अधिकार हासिल करत, तकर संस्थागत विवरण एखन अधूरा रहैत अछि।

# अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

## तारीख देहक समयकेँ कोना खाइत अछि

न्यायालयक बरामदामे एक वृद्ध मुवक्किल तेइस बरख लम्बल मुकदमाक अनुभव कहैत छथि। परिवारक पीढ़ी, बेटाक जवानी आ घरक जीविका सुनवाईक पर्चीसभमे टुकड़ा-टुकड़ा भऽ गेल अछि। कथा समयकेँ निर्जीव तिथि नहि, जीवित देहक अपूरणीय ह्रास मानैत अछि। ‘तारीख’क पुनरावृत्ति कादम्बरीक गोहि-प्रतीककेँ कागजी विलम्बक संरचनामे स्थापित करैत अछि।

तेइस बरखक अवधि पात्रक कथनक अंश अछि; वास्तविक न्यायालयक खास मुकदमाक सत्यापित विवरण बुझब उचित नहि। कृतिक नैतिक प्रश्न व्यापक अछि—प्रक्रियामे भेल विलम्ब समाजक कमजोर लोकपर कतेक असमान भार रखैत अछि।

## पर्चीसभक सामूहिक पाठ

बरामदाक पाथरपर पुरान तारीख-पर्ची राखि क्रमशः पढ़ल जाइत अछि। ककरो पिताक अस्पताल, ककरो जमीनक नीलामी, ककरो बेटी विद्यालय छोड़बाक तिथि ओहि अदालती तारीखसभक संग जुड़ैत अछि। एहि संग्रहमे समयक इकाई स्वतन्त्र दिन नहि, जीवनक क्षयक ठोस कथा बनैत अछि।

लोकक स्मरण, कागजी सन्दर्भ आ स्वतंत्र प्रमाणक स्तर परस्पर अलग रहबाक चाही। तथापि कलात्मक रूपमे अदालतक सरकारी कैलेण्डरकेँ मानवीय आयु-सूची बनएबाक ई उपक्रम प्रभावकारी अछि।

## न्यायक भवन बाहरक सुनवाई

न्यायालयक फाटक बन्द होएतो चाह-दुकानक आगि आ बरामदाक सामूहिक पाठ जारी रहैत अछि। एहि दृश्यमे ‘सुनवाई’ कानूनक वास्तविक आदेशक स्थान नहि लैत, मुदा जे बात

न्यायिक प्रक्रियामे अनसुनी रहल, ओकर सामाजिक उच्चारण बनैत अछि। वृद्ध मुवक्किल अन्तमे कहैत छथि—फैसला नहि भेटल, मुदा प्रतीक्षाक नाम भेटल।

यही अन्तर नैतिक जीतक मर्यादा अछि: नामकरण कानूनी उपचारक पर्याय नहि। अध्याय एहि अधूरेपनक कारण सस्तो समाधान नहि रचैत।

## रेकर्ड-घरक पूर्वाभास

अन्तमे फाइलसभ फड़फड़ाएबाक आ धूलिक अक्षर बनबाक दृश्य कथा-जगतक अलौकिक शिल्प अछि। मृत फाइलक भीतर दबायल नामक खोजकेँ ओ दृश्यात्मक करैत अछि; वास्तविक अदालतमे एहन घटना प्रमाणित भेल, ई निष्कर्ष नहि।

बरामदासँ रेकर्ड-घर धरि गतिक अर्थ सार्वजनिक आवाजसँ संस्थागत साक्ष्यक खोज दिस आगाँ बढ़ब अछि। नाटकक पुरान मंच अब कागचक गहिर कोठलीमे प्रवेश करबाक तैयारी करैत अछि।

# अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

## अलमारीमे ठाढ़ समय : प्रशासनिक विस्मृति

भिखारी लाल पुरान ताला खोलैत अटकि जाइत अछि। ओकर कहब जे ताला भारी नहि, भीतरक साँस भारी अछि, न्यायिक कागचक जमावकेँ मानवीय प्रतीक्षाक भार बनबैत अछि। अलमारी, टूटी डोरी, दीमक लागल पन्ना आ ‘अगिला सुनवाई’क नील पेंसिल लिखावट बन्द समयक वस्तुगत बिम्ब छथि।

रेकार्ड-घरकेँ ‘न्यायालयक पेट’ कहल गेल अछि—कागज न्याय बनत कि विस्मृति, ई आगाँक प्रश्न। एहि रूपकक शक्ति अछि, मुदा सभ कर्मचारी कैँ एकरूप अपराधी मानब अनुचित; भिखारी लाल आ लिपिकक वैयक्तिक मनोदशामे फरक देखाओल गेल अछि।

## जमीनक विवादमे छूटल विवाह आ छात्रवृत्ति

जमीन-विवादक फाइलमे फाटल विवाह-निमन्त्रणक अंश भेटैत अछि; मुकदमाक कारण बेटीकेँ बिआहमे बाधा आ परिवारक सामाजिक संकटक स्मृति उठैत अछि। दोसर फाइलमे अर्जीक ऊपर बेर-बेर ‘प्राप्त’ मोहर छैक, मुदा उत्तर नहि। तेसर फाइलमे कुलनाम बिगड़बाक कारण छात्रवृत्ति, प्रमाणपत्र आ रोजगारमे रोकक कथन भेटैत अछि।

मूल फाइल, परिजनक गवाही आ परिणामी हानिक सत्यापन अलग-अलग होएत। कृति स्पष्ट करैत अछि जे सरकारी वर्गीकरण वास्तविक जीवनक परिणामक केवल एक अंश लिखैत अछि, पूरा परिणाम नहि।

## गुम अभिलेखक व्यावहारिक खोज

वृद्धाक पतिक फाइलक नाम, वर्ष आ वर्तनी बारम्बार बिगड़ल अछि। आधा नाम बचल पन्ना भेटलापर वृद्धा ओकरा माथपर धरैत छथि। एहि भावुक दृश्यकेँ बच्चासभ केवल प्रतीक

बनाकऽ नहि छोड़ैत: देविकाक प्रस्ताव गुम फाइलक पृथक सूची, नामक वैकल्पिक वर्तनी आ व्यक्तिक गवाहीक रजिस्टर अछि।

मीरा पहिने गिनब, फेर पढ़ब आ तकरा बाद सम्बन्धित लोकक खोज करबाक निर्देश दैत छथि। एहन क्रम सामाजिक उत्तरदायित्व आ अभिलेखीय संरक्षणक मिलित उदाहरण अछि।

## सुनवाईक नैतिकता आ आदेशक सीमा

सत्यव्रतक उपस्थिति आ आदेशक उल्लेख कथाक भीतर संस्थागत सम्भावना खोलैत अछि। मुदा फाइलक पुनर्गणना तुरन्त फैसला, भूमि-वापसी वा दोषसिद्धि नहि। कथा एहि भेदपर टिकैत अछि। चपरासीक धूलि, वृद्धाक पाथरपर बैसब आ कनिष्ठ अधिवक्ताक बिना शुल्क फाइल उठाएब सेवा आ प्रतिष्ठाक व्यावहारिक विरोध रचैत अछि।

अद्भुत हिलैत कागज लोकमिथकीय रूपक अछि। समीक्षामे संस्थागत सुधारक उपयोगी प्रस्ताव आ अलौकिक प्रदर्शनक साक्ष्यक भेद जरूरी अछि।

# अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

## रद्दी बनाओल मनुष्य : दस्तावेजक नैतिक श्रेणी

रेकर्ड-घरक एक बोरामे आवेदन, बयान, अस्वीकृत निवेदन, हस्ताक्षरहीन प्रतिलिपि आ औंठाक धुँधल निशान भेटैत अछि। ‘वादी उपस्थित, सुनवाई स्थगित’ अथवा ‘मूल अभिलेख अनुपलब्ध’ सन सूत्रात्मक वाक्य कागजक गोदाममे मानवक जीवन मिटाबय लगैत अछि। बोराक पुनः परीक्षण सामाजिक असमानताक लेखा-जोखाकेँ फेर खोलैत अछि।

अनन्या कागज बचबैत अछि, मुदा एतय प्रत्येक पन्नाकेँ स्वतः सत्य घोषित करब आवश्यक नहि। रद्दी घोषित होएब संभावित अन्याय अछि; दस्तावेजक प्रामाणिकता फेर अलग जाँचक विषय।

## औंठाक छाप आ बहिष्कृत लेखन

जकरा लिखबाक शिक्षा नहि भेटल, ओकर औंठाक छाप शारीरिक साक्षरता आ अधिकारक तनाव रचैत अछि। व्यवस्था जखन एहन निशानकेँ ‘अस्पष्ट’ कहैत अछि, तखन व्यक्तिक सामाजिक स्थानक बाधा फेर तकनीकी त्रुटिक रूपमे लौटैत अछि।

एहि सन्दर्भमे काव्यात्मक कथन जे छाप अनुकृति नहि भऽ सकैत अछि, ओकरा वैज्ञानिक अपरिवर्तनीयता मानब उचित नहि; दस्तावेजी प्रमाणीकरणमे त्रुटि आ धोखाक सम्भावना सदैव रहैत अछि। साहित्यिक अर्थ छाप देनिहार देहक गरिमा अछि।

## भिखारी लालक झाड़ू आ लाउक पत्र

भिखारी लाल अपन झाड़ू देबाल लग राखैत अछि: बरखों धरि धूलि हटबैत ओ कतेको गवाही मेटबाक प्रक्रियामे अवधानहीन सहभागी रहल हो सकैत अछि। एहि स्वयं-परीक्षणमे निम्नपदस्थ कर्मचारीक agency आ भय जटिल रूपमे उभरैत अछि।

फाइलमे लाउक नाम, लाल मोहर आ किछु अभिलेख ‘अप्रासंगिक’ घोषित कएल जाएबाक संकेत भेटैत अछि। ई कथागत सन्देह जाँचक आधार बनि सकैत अछि, निर्णायक दोषसिद्धि नहि। देवीक प्रश्न जे जीवन बदलनिहार प्रमाण अप्रासंगिक कोना, संस्थागत वर्गीकरणक नैतिक परीक्षा करैत अछि।

## खुजल पन्ना आ प्रमाणक पहरा

अन्तमे अनन्या रजिस्टर बन्द नहि करैत अछि, किएक तँ अनेक कागज पढ़बाक शेष अछि। बोरासँ निकलल कथासभकेँ न्यायालयमे पहुँचएबाक लेल क्रम, संरक्षण, मूल-प्रति आ प्रतिलिपिक मिलान आवश्यक। ‘रद्दी’क पुनर्जन्म एतय केवल चमत्कार नहि, संगठनात्मक काजक आह्वान अछि।

उपन्यासक प्रतीकात्मक वाक्य ‘जीवित फाइल’ भावनात्मक सत्य अछि; प्रशासनिक श्रेणी रूपमे ओहि शब्दक विशिष्ट अर्थ नहि मानल जाए।

# अध्याय १४४ — नामक यात्रा

## कागजसँ घर धरि : स्मृतिक द्विदिश सम्बन्ध

रेकार्ड-घरमे नाम भेटि गेलाक बाद बच्चासभ निर्णय करैत अछि जे ओकरा घर-परिजन धरि खबर देल जाए। अनन्या, आरुणि, देविका आ मीरा सूचीकेँ जीवित व्यक्ति, मृतकक परिजन आ धुँधल घर-पताबला नामक तीन श्रेणीमे बाँटैत छथि। एहि वर्गीकरणमे प्रत्यक्ष सूचना, परिजनक सहमति आ सार्वजनिक स्मृति-पाठक अलग मर्यादा निश्चित अछि।

आरुणिक सूत्र ‘अनुमति बिनु चेहरा नहि, सन्दर्भ बिनु उद्धरण नहि, गरिमा बिनु गवाही नहि’ पूर्व डिजिटलक निजता-आलोचनाकेँ व्यावहारिक यात्रा-नीतिमे बदलैत अछि।

## जसोदा देवीक घरक खोज

फाइलमे जसोदा देवीक गामनाम अधमेटल अछि। खेतक खाता, पुरान हाटक स्मरण, नदीपारक बाट आ स्थानीय नाविकक जानकारी जोड़ि खोजदल हुनकर गाम पहुँचैत अछि। जसोदा नहि रहलीह; हुनकर भतीजी वृद्धा भऽ गेल छथि। देविका भीड़ जमा नहि होबय दैत छथि, तखन अनुमति लऽ कऽ जसोदाक कथा सुनबैत छथि।

खेतक वर्तमान कब्जापर कठोर आरोप तुरन्त दर्ज नहि कएल जाइत; दल स्मृति आ देहाती सूचना अलग लिखैत अछि। एहि संयममे करुणा आ प्रमाणक न्यायक वास्तविक मेल अछि।

## सहायक अधिवक्ता आ सेवा-नियन्त्रणक अन्तर

एक कनिष्ठ अधिवक्ता न्यायालयक कागजसँ घर खोजबाक सहायता प्रस्तावित करैत अछि। आरुणि ओकरा ‘मदति करू, पर मालिक नहि बनू’ कहैत अछि। कागजी विशेषज्ञता उपयोगी अछि, मुदा पीड़ितक आवाज आ निर्णयक स्थान पर नियंत्रणक फेर नवीन रूप नहि बनबाक चाही।

भिखारी लाल आ लिपिक अपन पुरान काजसँ जुड़ल डर व्यक्त करैत छथि। सत्यव्रत डरक नाम सेहो सूचीमे दर्ज करबाक सलाह दैत छथि। जिम्मेदारीक अर्थ केवल बड़ा पदाधिकारीक अपराध नहि, संस्थागत भयक शृंखलाकेँ देखबो अछि।

## तीन प्रतिलिपि आ यात्रा जारी रहबाक सच

पहिल नामसूची रेकर्ड-घर, बरामदा आ चन्ना गाछी लेल तीन प्रतिमे राखल जाइत अछि। एहि बहुस्थलीय संरक्षणसँ स्मृतिसभ केन्द्रित नियन्त्रणसँ बाहर रहबाक सम्भावना अछि। तथापि निजी पहचानक खुला प्रसारक खतरा, सूची-प्रवेश अधिकार आ संशोधनक प्रक्रिया स्पष्ट राखब जरूरी।

अन्तमे किछु नामक घर नहि भेटबाक सम्भावना स्वीकारल गेल अछि। ई असमाप्ति कृतिक यथार्थपरक नैतिक उपलब्धि अछि—स्मृति-पाठ समाधानक एक अंग, कानूनी उपचारक स्थानापन्न नहि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १४०–१४४

## खेलक सीमा सँ कागजक सीमा

१४०मे कबड्डीक साँस आ अधूरा नामक उच्चारण सामाजिक सुननाइ बनैत अछि। १४१मे न्यायालयक बरामदामे सुनवाईक तारीख मनुष्यक आयुक हानि बनि देखाइत अछि। १४२मे अभिलेखक अलमारी भीतर दबायल जीवन खोजल जाइत अछि। १४३मे रद्दीक बोरासँ पन्ना, औंठा आ अस्वीकृत निवेदन घुरैत अछि। १४४मे भेटल नाम अपन घर-परिजनक बाट पकड़ैत अछि। खुलल चौपालसँ प्रशासनिक कागज, फेर घरक देहरी धरि एहन यात्रा कथाक संस्थागत केन्द्र बदलैत अछि।

## प्रमाण-विवेक : पाठ, मिलान, अनुमति

बरामदाक तारीख-पर्ची, रेकार्ड-घरक पुरान फाइल, रद्दीक आवेदन, अँगूठाक निशान आ जसोदाक घरमे भेटल मौखिक स्मृति सभ अलग-अलग साक्ष्य-माध्यम छथि। एकरा एकहिसाथ पढ़ब उपयोगी, मुदा कोनो अकेला दस्तावेज अन्तिम निर्णय नहि। कागजक वर्तनी, नकलक शुद्धता आ पीड़ित परिवारक अधिकार अलग परीक्षण चाहैत अछि।

## बच्चा आ वृद्धक ज्ञानक सहयोग

अनन्याक रजिस्टर, आरुणिक सावधानी, देविकाक सहमति-बोध, मीराक अधिकारक चेतावनी, भिखारी लालक पुरान कार्यस्मृति, वृद्ध मुवक्किलक बरखोंक प्रतीक्षा आ सत्यव्रतक आत्मपरीक्षण कथा सँ संस्थागत ज्ञानक विविधता रचैत अछि। कादम्बरीक दार्शनिक पुनर्पाठ एही विविध कथनकेँ तर्कक केन्द्रमे आनैत अछि।

## अलौकिकता आ दायित्वक स्पष्ट भेद

फड़फड़ाइत कागज, धूलिमे उभरैत अक्षर, ठूँठक दूर तक पहुँचि गेल छाया कथाक लोकमिथकीय संवेदना छथि। कियो कानूनी आदेश बिना हस्ताक्षर स्वतः बनि गेल वा फाइल स्वयं प्रमाणित भेल, एहन तथ्य ई दृश्य नहि दैत। उपयोगी सामाजिक दिशा कागजक सुरक्षित सूची, स्रोत-मिलान, सही नाम आ मर्यादित प्रसारणमे अछि।

## सीमा आ आगाँक प्रश्न

तारीखक लम्बल यन्त्रणा आ मानवीय सावधानीक सघन चित्रण पाँच अध्यायक उपलब्धि अछि। तर संस्थागत सुधारक कार्यक्षेत्र, निजी अभिलेखक पहुँच, मूल फाइलक सुरक्षा आ कर्मचारिसभक भय सँ निबटबाक विधि एखन प्रश्न बनि रहैत अछि। अगिला ‘डरक दरार’, ‘मुहरक दाग’ आ ‘मिलावटक पहिचान’क अध्ययन एहि अधूरा प्रक्रिया पर रोशनी देत।

# अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

## नामक यात्रासँ भयक केन्द्र बदलनाइ

अध्याय १४४क तीन प्रतिलिपि—रेकर्ड-घर, न्यायालयक बरामदा आ चन्ना गाछी—एहि अध्यायमे घटनाक नब कारण बनैत अछि। कागजक प्रतिलिपि आब निष्क्रिय सूचना नहि; ओकर गतिशीलता चन्द्रपाल, राघव, लाउ आ बटुकनाथक उत्तराधिकारीसभक अलग-अलग परिसरमे बेचैनी पहुँचबैत अछि। चन्द्रपालक हाथसँ चाह छलकब, राघवक खोखल हँसी आ लाउक पुरान पर्चीक स्मरण भयक मनोवैज्ञानिक तीन रूप खोलैत अछि। कथा दृष्टिबिन्दु एक ठाम नहि रोकैत; गामक लोकसभा सँ सत्ता-संरक्षित कोठली धरि दृश्य बदलैत अछि। एहि विन्यासमे प्रश्न केवल अपराधक प्रदर्शन नहि, अपराधी गठबन्धनक भीतर असहमतिक आरम्भ अछि।

बटुकनाथक हवेलीमे उत्तराधिकारीसभ नाम, संकेत आ प्रतिष्ठाक रक्षापर अलग-अलग तर्क रखैत छथि। मूल पाठ स्पष्ट कहैत अछि जे बटुकनाथ स्वयं ओहि बैसकीमे नहि छथि। अतएव हुनका प्रत्यक्ष उपस्थित देखायब वा हुनकर नामसँ चलैत उत्तराधिकारकेँ स्वयं बटुकनाथक नब आदेश बुझब अनुचित होयत। चित्र, घण्टी आ दान-पत्र हुनकर संस्थागत उपस्थिति रचैत अछि—कथामे जीवित व्यक्तिक बराबर नहि।

## कर्मचारीक मौनसँ सार्वजनिक गवाही

न्यायालयक अधिकारी जखन बिनु अनुमतिक फाइल देखेबाक आरोप लगबैत छथि, तखन लिपिक ‘कर्मचारीक मौनक बयान’ नामक पर्ची निकालैत अछि। भिखारी लाल सेहो पहिने ‘रद्दी’ कहल कागजमे मनुष्यक निवेदन देखबाक स्वीकारोक्ति करैत अछि। एकर अर्थ सरकारी कर्मचारीकेँ तत्क्षण निर्दोष घोषित करब नहि; अपन पूर्व निष्क्रियताक नाम लेब गवाहीक पहिल अवस्था अछि। सत्यव्रतक वाक्य—प्रक्रियाकेँ ओकर मनुष्य घुराएब—कथा भीतर संस्थागत प्रक्रियाक नैतिक सीमा पर प्रश्न अछि, वास्तविक न्यायालयक आदेश नहि।

लिपिकक नोकरीपर धमकी आ छापा मारबाक अफवाह कथाक भय-व्यवस्था रचैत अछि। भयकेँ केवल बाहरी अत्याचार नहि, साक्षीक बोलबाक अवसर दबेनिहार प्रशासनिक वातावरणक रूपमे देखाओल गेल अछि। भिखारी लालक श्रमिक पद आ लिपिकक लिखित बयान एकहि अभिलेखक भीतर अलग शक्ति-स्तरपर उपस्थित छथि।

## निजता, लोकसाक्ष्य आ कथावाचकीय संयम

बूढ़ मुवक्किलक अपन पोतासँ पुनः नाम सुनब आ विधवाक बेटी द्वारा मायक टेढ़ लिखावटक पक्षमे बजब अध्यायक सशक्त मानवीय दृश्य अछि। मुदा चन्ना गाछीक दल सूची सार्वजनिक करबाक बदला परिवारक अनुमति लेल प्रतिबद्ध रहैत अछि। मीरा प्रतिष्ठित परिवारक दूतकेँ स्पष्ट करैत छथि जे पीड़ितक नाम प्रचारक वस्तु नहि। एहि ठाम स्मृति-संरक्षण आ निजताक अधिकार परस्पर विरोधी नहि, एक-दोसराक मर्यादा बनैत अछि।

भूतक छाह, माटिक फुलनाइ आ ठूँठक छालमे हरियर बिन्दु कथा-संसारक अलौकिक सम्भावना आ सामाजिक आशाक बिम्ब छथि। आरुणि तुरन्त निष्कर्ष नहि लिखैत अछि; बच्चा सभ अंकुर छूबैत नहि। ई ठहराव नव्य न्यायक प्रमाण-विवेकक अनुरूप साहित्यिक अनुशासन बनैत अछि: अनुभूतिक मूल्य स्वीकारू, मुदा संकेतकेँ तात्कालिक प्रमाणित तथ्य नहि बनाउ।

## अन्तर्विरोध आ कलात्मक सीमा

अध्यायक आरम्भमे प्रश्नोत्तरात्मक सूक्ति अधिक अछि, तकर बाद चारि सत्ता-पक्ष आ ग्राम-समुदायक दृश्य तीव्रतासँ बदलैत अछि। एहि संरचनासँ व्यापक जालक अनुभूति तऽ बनैत अछि, मुदा एकेक पात्रक भीतरी मनोविज्ञान किछु ठाम सूचक चेष्टामे सीमित रहि जाइत अछि। कथा पुनः-पुनः भयकेँ ‘दरार’ कहि रूपकात्मक अर्थ दैत अछि; ई आवृत्ति प्रभावी थीम रचैत अछि, मुदा किछु ठाम प्रसंग स्वयं जे कहि रहल अछि, ओकर व्याख्या अनावश्यक रूपसँ अग्रसर भऽ जाइत अछि।

तथापि अन्तक घर-घर जाएबाक निर्णय अगिला अध्यायक कारण बनैत अछि। ई खुलल अन्त अध्यायकेँ स्वतन्त्र नैतिक उपदेश होएबसँ बचबैत अछि आ कार्यवाहीक विशिष्ट अगिला चरण निर्धारित करैत अछि।

# अध्याय १४६ — मुहरक दाग

## दफ्तरक वृत्ताकार चिह्न आ मनुष्यक दबायल रेखा

एहि अध्यायक केन्द्रमे कागजपर लगल मोहर आ ओकर नीचे दबायल औंठाक निशानक दृश्य अछि। शासकीय सत्यापनक वृत्त मनुष्यक व्यक्तिगत रेखा ढाँपि दैत अछि—ई दृश्य रूपक मात्र नहि, मूल उपन्यासक खास पन्नामे देखाओल गेल भौतिक परिवर्तन अछि। किसानक सीमाना, विधवाक अरजी, प्रवासीक बयान, छात्रवृत्तिक रोक, नापी-विवाद—एहि विविध अभिलेखसभकेँ एकहि कोठलीमे आनल गेल अछि। एतय अन्यायक पद्धति एकटा नाटकीय फैसला नहि, छोट-छोट कागजी निर्णयक संचय बनैत अछि।

सुरमणी नामक हस्ताक्षर आ एकहि सन्दर्भक भिन्न-भिन्न हाजिरी, अनुपस्थिति आ अपर्याप्तताक टिप्पणी प्रमाणक परस्पर विरोधी स्तर खोलैत अछि। मीरा एक कथित तथ्यपर नैतिक क्रोध देखेबासँ पहिने एकहि दिनक विपरीत प्रविष्टि मिलबैत छथि। ई तथ्य-जाँचक दृश्य नव्य न्यायक बाधक आ प्रमाण-विरोधक प्रश्नसँ प्रतिध्वनित होइत अछि।

## भिखारी लाल, पुरान मुंशी आ जिम्मेदारीक क्रम

भिखारी लाल पहिने चपरासी रहल आ पाछाँ अस्थायी लिपिकक काज कएने—अध्याय एहि दोसर स्थितिक उल्लेख करैत अछि। पुरान मुंशी अलग पात्र अछि, जे तारीख, नकल आ मोहरक दलालीसँ जुड़ल रहल। एहि दुनू भूमिकाकेँ एक व्यक्ति मानब कथा-पञ्जीमे त्रुटि उत्पन्न करत। मुंशीक ‘ऊपर देलहुँ’ बला उत्तर अस्पष्ट आदेश-शृंखलाकेँ प्रश्न बनबैत अछि; मात्र एही कथनसँ ‘ऊपर’ ठाढ़ निश्चित व्यक्तिक दोष सिद्ध नहि होइत।

सत्यव्रत मुंशीकेँ बाजबाक अवसर दैत छथि, मुदा क्षमा वा दोषमुक्ति तत्काल नहि दैत छथि। बचल मुड़ल कागज, नाम, रकम आ संकेत सामूहिक मिलानक नब आधार बनैत अछि। ई दृश्य अपराधक मनोवैज्ञानिक बोझ आ दस्तावेजी परीक्षणक सम्बन्ध देखबैत अछि।

## मोहर-सूची : वस्तुसँ प्रक्रियाक इतिहास धरि

देविका हाजिरी, स्थगन, अस्वीकृति, गुम अभिलेख आ लाल मोहरक अलग-अलग ढेरी बनबैत छथि। प्रस्ताव छनि जे मोहरक तारीख, अरजीदार आ लाभान्वित व्यक्तिक विवरण एक संग जाँचल जाए। एहि संग पुस्तकक अभिलेखीय सौन्दर्य कागजक देहसँ प्रक्रिया-इतिहास दिस बढ़ैत अछि। धारावाहिक संरचनामे ई महत्वपूर्ण संक्रमण अछि: दस्तावेज भेटब पर्याप्त नहि, दस्तावेजक उपयोगक इतिहास पुनर्निर्मित करब आवश्यक अछि।

मूल अध्यायक अन्तमे सूखल लाल स्याही चूर्ण बनि पसरैत अछि आ रेकर्ड-घरमे दीप जरैत अछि। सूखल स्याही कैं प्रमाण मिटि गेलाक प्रतीक मानब सहज अछि, मुदा पात्रसभ ओकरा उलटे प्रकाशमे दाग स्पष्ट होएबाक छवि बनबैत छथि। यथार्थक स्तरपर दीप कानूनक फैसला नहि; कथा-स्तरपर ओ न्यायिक दृश्यताक रूपक अछि।

## मूल्याङ्कन आ सीमा

मोहरक वस्तुगत बिम्ब आ औंठाक निशानक विपर्यास अध्यायक सभसँ सघन कलात्मक उपलब्धि अछि। तथापि बहुत विविध अभिलेख एकहि कोठलीमे तुरन्त भेटलासँ संस्थागत दस्तावेज-संरक्षणक व्यवहारिक जटिलता कम देखाइ पड़ैत अछि। ‘ऊपर’क आदेश-श्रृंखला आ मुंशीक भूमिका एखन अपूर्ण साक्ष्य अछि। आलोचनाकैं अंशत: उजागर जाल आ अन्तिम दोषनिर्धारणमे स्पष्ट भेद राखय पड़त।

# अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

## आदेशक बदला अनुमति : घरक देहरीक नब राजनीति

रेकर्ड-घरक सूची घर-घर पहुँचेबाक निर्णयक बाद मीरा सभकेँ स्मरण करबैत छथि जे ओ प्रचार नहि, सुनबाक लेल जा रहल छथि। अनन्या, आरुणि, देविका, भिखारी लाल आ बूढ़ मुवक्किलक पोताक टोली घरक देहरीपर अनुरोधक भाषा अपनबैत अछि। दफ्तरमे आवाजक अधिकार मोहरसँ प्राप्त होइत छल; घरमे पीड़ितक अनुमति सँ भेटैत अछि। एहि तत्त्वगत उलटबदलमे नैतिक कथाशास्त्रक गहिर बिन्दु अछि—जकर कथा लिखल जा रहल अछि, कथनक अधिकार पहिने ओकर होयबाक चाही।

मूल पाठ स्वयं ‘बन्द दुआर’ केँ अर्थवान मौन मानैत अछि। बन्द केवाड़ीकेँ डर, थकान वा असह्य दुःखक अलग-अलग सम्भावना रूपमे रखल गेल अछि। टोली ओकरा तोड़ैत नहि; फलतः चुप्पी स्वतः सहमति मानल नहि जाइत। ई सूक्ष्मता दृश्यकेँ नायक-मण्डलीक विजय-यात्रा होएबसँ बचबैत अछि।

## सुरमणी, रामेश्वर, फुलकुमारी : समयक तीन अभिलेख

सुरमणी देवीक माटि, रामेश्वर साहक कैलेंडर आ फुलकुमारीक अधूरा पेट अनन्याक अन्तिम दैनिक नोंदमे एक संग उपस्थित अछि। ई वस्तुसभ दफ्तरक तिथिकेँ घरक अनुभूत समयसँ मिलबैत अछि। न्यायालयक तारीख बगलमे घरेलू प्रतीक्षा, भूख, श्रम आ अपमानक काल चलैत रहल—पश्चिमी आख्यान-समयक अध्ययन लेल एहि दू काल-स्तरक अन्तर उपयुक्त अछि।

भिखारी लालक हाथमे झाड़ूक बदला कपड़ाक थैली आ नकल लेल खाली पन्ना आएब पात्रगत परिवर्तन देखबैत अछि, मुदा ओकर पहिनुक चुप्पी मेटैत नहि। टोलीक श्रम नैतिक पुनरारम्भ अछि, पूर्व भूमिकाक इतिहासक उन्मूलन नहि।

## मुरारीक अतिरिक्त प्रति आ प्रमाणक स्वामित्व

घर-घर सुननाइक अन्तमे मुरारीक अतिरिक्त प्रति आ झूठ मिलेनिहारक सम्भावित चाल आगाँक कथाक कारण बनैत अछि। दल एखन दावासभकेँ स्वतः सत्य मानि नहिँ लै रहल; ओ सभ वस्तु, कथन, दस्तावेज आ अनुमतिक अलग खाताक व्यवहार सीखि रहल अछि। सन्दर्भ-रहित फोटो वा घरक स्मृति सामग्री सार्वजनिक नहि करबाक नीति, पहिनुक डिजिटल-निजता विवादसँ एक नया व्यावहारिक सम्बन्ध बनबैत अछि।

बूढ़ मुवक्किल चेतावनी दैत छथि जे अत्यधिक सावधानीमे फेर पीढ़ी बीति सकैत अछि। ई संवाद महत्व रखैत अछि: विधिसम्मत जाँच आ समयोचित उपचार एक-दोसराक विरुद्ध नहि, किन्तु दूनूक असन्तुलन सम्भव अछि।

## कथाशिल्पक उपलब्धि आ सीमांकन

दस्तकक पुनरावृत्ति एक सुगठित ध्वनि-प्रतीक बनैत अछि। मुदा अधिसंख्य घरक परिचय छोट दृश्य अथवा वस्तुक माध्यमसँ भेटैत अछि; प्रभावित परिवारसभक आन्तरिक बहुस्वरिता एखन विस्तार चाहैत अछि। किताब ई कमी आंशिक रूपसँ बूढ़क वाक्य आ बन्द केवाड़ीक मौनक माध्यमसँ स्वयं स्वीकार करैत अछि।

अध्यायक अन्तमे गोहिक पानिमे सरकबाक ध्वनि सुनाइ देबाक वर्णन मुख्य रूपसँ लोकमिथकीय वातावरण अछि; एकरा वास्तविक अपराधीपर स्वतन्त्र भौतिक साक्ष्य ठहरायब सम्भव नहि।

# अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

## विश्वासक रक्षा लेल प्रतिपरीक्षण

घर-घरक दस्तकक बाद चन्ना गाछीमे तीन ढेरी बनैत अछि—स्वीकृत कथन, अधूरा कथन आ मिलावट-सन्देह। नव चरणमे मीरा सुननाइक संग परीक्षण अनिवार्य मानैत छथि। एहि अध्यायक नायक केवल कोनो एक मनुष्य नहि; एक सामूहिक परीक्षण-विधि अछि। सुननाइकेँ अविश्वास नहि, पीड़ितक विश्वसनीयताक रक्षाक अभ्यास बनाओल गेल अछि।

‘भोला मण्डल’ नामसँ आएल व्यक्तिक सधा कथा जाँचलाक बाद ओकर भीखन साह हेबाक खुलासा होइत अछि। एहि घटनासँ सामाजिक करुणाक भाषामे अभिनयक प्रवेश देखाओल जाइत अछि। मुदा ई निष्कर्ष नहि निकलैत जे काँपैत आवाज सदिखन सत्य आ धाराप्रवाह आवाज सदिखन झूठ होइत अछि। कृतिक प्रारम्भिक सूक्तिमे एहि मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तिक सामान्यीकरणक जोखिम अछि; कथा भीतर वास्तविक मिलानसँ प्राप्त विरोधाभासक महत्त्व अधिक मानल जाएबाक चाही।

## कागजक देह, पुरान मोड़ आ मुरारीक खरोंच

पुरान कागजक तेलाहा किनार, मोड़ आ कृत्रिम धूलि जाँचक वस्तुगत रूपक छथि। मुरारी फोटोकॉपीवाला स्वीकार करैत अछि जे दबावमे तीन नकली प्रति बनौने छल आ प्रत्येकमे छोट खरोंच छोड़ने छल। ई स्वीकारोक्ति अपन अपराधकेँ हलुक नहि करैत; बनाओल नकली प्रतिक भेद चिन्हबाक सम्भावित चिन्ह मात्र दैत अछि। सत्यव्रतक प्रश्न आ मीराक टिप्पणी दुनू पक्षकेँ साथ राखैत अछि।

जगमायक रसीद आ हरिमोहनक स्मृतिसँ जुड़ल तेल-दाग घरक मूल वस्तुक भिन्न महत्त्व देखबैत अछि। मीरा मूल वस्तु जगमायक अधिकारमे रहय दैत छथि आ नकल बनबय चाहैत छथि। एहि ठाम ज्ञानक आवश्यकता व्यक्तिक स्मृति-संपत्तिपर कब्जाक औचित्य नहि बनैत।

## तीन ढेरीक न्यायदर्शन

स्वीकृत कथन, अधूरा कथन आ मिलावट-सन्देहक भेद तात्कालिक सत्य/झूठक दू कोठलीसँ अधिक उपयुक्त आलोचनात्मक मॉडल बनैत अछि। नव्य न्यायक परिभाषामे प्रमाण, बाधक आ ज्ञानक सीमाक बोध आवश्यक अछि; एहिमे साहित्यिक तादात्म्य अछि, यद्यपि पात्रसभ औपचारिक न्यायशास्त्रीय निष्कर्ष तैयार नहि करैत छथि। आरो महत्त्वपूर्ण ई जे सन्देहक पन्ना नहि फेँकल जाइत, अलग लाल धागाबला बक्सामे राखल जाइत अछि। झूठा कथन ओकर निर्माण-पद्धतिक सम्भावित गवाही बनि सकैत अछि।

बक्सापर ताला नहि, लाल धागा लगेनाइ समूहक साझा निगरानीक रूपक अछि। वास्तविक अभिलेख-सुरक्षा लेल केवल प्रतीकात्मक धागा पर्याप्त नहि होयत; कथा भीतर ओकर अर्थ खुलापन आ सामूहिक उत्तरदायित्व अछि।

## कलात्मक आ प्रमाणगत सीमा

राघवक तीन युवकक बनाओल कथा, भीखनक अभिनय, मुरारीक खरोंच आ जगमायक पुरान रसीदक माध्यमसँ लेखकीय कथन एक ठोस परीक्षा प्राप्त करैत अछि। तथापि आवाजक टूटन, कागजक गन्ध वा पुरानपन स्वयं निर्णायक प्रमाण नहि। स्रोत, समय, बनावट आ स्वतन्त्र मिलानक आधारपर मात्र दावाक दृढ़ता बढ़ि सकैत अछि। एहि भेदकेँ चिन्हलासँ रचना भीतरक करुणा आ पद्धति दुनू अधिक विश्वसनीय होइत अछि।

# अध्याय १४९ — जालक नक्शा

## अलग-अलग चिह्नसँ सम्बन्धक संरचना

मिलावट-सन्देहक बक्सा खोलबाक पहिने मीरा समूहकेँ नामक सार्वजनिक आरोपसँ रोकैत छथि। कागजक काटल कोन, मुरारीक खरोंच, नकली मोहर, अगरबत्तीक गन्ध, रेकर्ड-घरक चाबी आ भीखन साहक बयान—एहि सभ संकेतकेँ समान प्रकारक प्रमाण नहि मानि परस्पर सम्बन्ध जाँचल जाइत अछि। कागजक दृश्य आकृति नक्शामे बदलैत अछि, मुदा मीराक आग्रह अछि: जे निश्चित नहि, ओकरा संकेत लिखू। ई अवच्छेदक-विवेक कृतिक सामाजिक न्याय-बोधकेँ दार्शनिक गहिराइ दैत अछि।

जगमायाक पुरान फोटो, हरिमोहन झाक दवाईक पर्ची आ मनीआर्डरक आधा टुकड़ा स्मृतिक निजी आधार बनैत अछि। फोटो उपयोगक पहिने अनुमति लेल जाइत अछि, मूल जगमायक हाथमे घुराओल जाइत अछि। एतय सार्वजनिक जाँच आ परिवारक स्वामित्व परस्पर सन्तुलित छथि।

## कैलाश प्रसादक बयान आ अभिलेखक आवागमन

पहिने अनाम ‘लिपिक’ एहि अध्यायमे अपन नाम कैलाश प्रसाद बतबैत अछि। ओ स्वीकार करैत अछि जे किछु फाइल राघवक लोकक कहलापर ‘अस्थायी रूपेँ अनुपलब्ध’ लिखल गेल। हुनकर विवरणमे घूस सदिखन रुपैया नहि; बदली रोकबाक भरोसा, सन्तानक नोकरीक आशा आ मुकदमा बिगाड़बाक धमकी सेहो प्रशासनिक दबावक साधन छथि। ई जटिलता लोकक उपार्जनक विवशता देखबैत अछि, मुदा जिम्मेदारी निरस्त नहि करैत।

लकड़ीक पटराक नीचाँ भेटल फाइल, रसीद-बहीक पन्ना आ आश्रमक मोहरसँ युक्त सूचीपत्र जालकेँ गाढ़ करैत अछि। ‘भ्रमण’ शब्द फाइल रेकर्ड-घर सँ बाहर जाएबाक कोड छल—एहन कथन स्वयं कैलाशक अछि। ई विवरणक स्वतन्त्र पुष्टि करब एखन बाकी रहैत

अछि। आश्रमक मोहर आ अदालतक संख्या एक पन्नापर भेटब संस्थागत सम्बन्धक सन्देह बढ़बैत अछि, दोषसिद्धिक अन्तिम निष्कर्ष नहि।

## चारि संस्था आ नब न्यायिक नक्शा

राघवक ओसार, मुरारीक दोकान, रेकर्ड-घर, बटुकनाथक आश्रम आ चन्द्रपालक दफ्तर धीर-धीरे एकहि माटिक नक्शामे जुड़ैत अछि। आरुणिक ‘चारि संस्था’ बला टिप्पणी गोहिक लोकमिथकीय देहकेँ आर्थिक-सांस्थानिक अवतार दैत अछि। गोहि एखन केवल पानिक जीव नहि, नाम रोकेनिहार परस्पर निर्भर कामकाजक रूपक अछि।

भीखन साह दू सय रुपैयाक नोट आनैत अछि आ अपन झूठा बयानक दबाव-परिस्थिति कहैत अछि। मुरारी अपन खरोंचक उपयोग बतबैत अछि। न्यायिक दृष्टिसँ दुनूक कथन जाँचयोग्य अछि; सहयोग दर्ज करब आ अपराध पखारि देब दू भिन्न क्रिया छथि। सत्यव्रत आ मीरा एहि भेदपर अडिग छथि।

## खुलल मानचित्रक सीमा आ अगिला कथा-दिशा

चन्द्रपालक दफ्तरक नील कमीज आ उज्जर छाताबला अनाम व्यक्ति, जकर दहिना कानपर पुरान कटाक निशान अछि, नक्शाक अनुत्तरित चिन्ह बनैत अछि। मूल पाठ हुनकर नाम नहि बतबैत; एकरा निश्चित अपराधी ठहराएब कल्पना होयत। माटिक नक्शा ‘जालक प्रथम रूप’ नाम पबैत अछि—अर्थात् अनुसन्धान प्रारम्भ भेल अछि, पूर्ण नहि।

अध्यायक घन संकेतसभ कथाक रहस्यक लय तेज करैत छथि, मुदा किछु पदार्थक गन्ध वा कागजक चमकसँ संस्थागत दोषक निष्कर्षपर पहुँचेबाक लोभ आलोचककेँ रोकय पड़त। रचनाक उपलब्धि यही सावधानीक नाट्यरूपमे अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १४५–१४९

## प्रतिलिपिक यात्रा सँ जालक नक्शा

१४५मे तीन प्रतिलिपि सत्ता-कक्षधरि भय पहुँचबैत अछि; १४६मे मोहरक दाग अलग-अलग अन्यायकेँ एक अभिलेखीय प्रश्न बनबैत अछि; १४७मे सूची पीड़ितक घर धरि पहुँचि मानव अनुभवसँ मिलैत अछि; १४८मे सुनल कथासभ मिलावट-परीक्षामे प्रविष्ट होइत अछि; १४९मे चिन्हसभक पारस्परिक रेखा प्रारम्भिक नक्शामे बदलैत अछि। एहि क्रममे घटना आगाँ बढ़बाक प्रत्येक चरण प्रमाणक एकटा नब रूप मांगैत अछि।

कथाक संरचना ‘नव कागज भेटल—तुरन्त विजय’ नहि; ‘भेटल कागज—घरक पुष्टि—विरोधी कथन—नव मिलान’ अछि। एहि कारण दीर्घ उपन्यासक धारावाहिकता केवल रहस्य लम्बेनाइ नहि, परीक्षणक कठिनता अनुभव करेनाइ बनैत अछि।

## सत्ता-भाषा : मोहर, आदेश, दान आ अनुमति

अधिकारीक नियम-भाषा, मुंशीक ‘ऊपर’क अस्पष्टता, उत्तराधिकारीक प्रतिष्ठा-चिन्ता, राघवक भय आ मीराक अनुमति-प्रधान भाषा भिन्न नैतिक विश्व प्रस्तुत करैत अछि। बाख्तिनक संवादधर्मिताक दृष्टिसँ ई अनेक कण्ठ एकहि स्थिर नायक-वाणीमे नहि समबैत। तथापि लेखकक व्याख्यात्मक समापन कई ठाम पात्रक विशिष्ट अनिश्चितताकेँ कम करैत अछि—विशेषतः जतय एकटा रूपकक अर्थ फेर साफ-साफ कहल जाइत अछि।

## नव्य न्याय : संकेत, अनुमान आ बाधक

मोहरसँ दबायल औंठाक निशान, एकहि दिनक विरोधी टिप्पणी, कागजक खरोंच, अनधिकृत फाइल-‘भ्रमण’ आ अनाम छाताधारी—एहि सभक प्रमाण-मूल्य समान नहि।

प्रत्यक्ष, दूसराक कथन, कारण-संकेत आ अनुमानक बीच भेद राखब एही खण्डक बौद्धिक उपलब्धि अछि। अपराधक जालकेँ समग्र कल्पना कहि देखाएब कलात्मक कार्य अछि; वास्तविक उत्तरदायित्वक निर्धारण लेल प्रत्येक रेखाक स्वतन्त्र मिलान आवश्यक रहैत अछि।

## देह, स्मृति आ परिवारक स्वामित्व

बूढ़ मुवक्किलक पोताकेँ नाम वापस भेटनाइ, विधवाक बेटी द्वारा मायक लिखावटक बचाव, सुरमणीक दबायल हस्ताक्षर आ जगमायक फोटो—सभ अभिलेखमे व्यक्तिक देह आ समयक प्रतिरोध बनैत अछि। अनुमति बिनु प्रचार नहि करब, मूल घरमे राखब आ नकलक उपयोग करब सामूहिक शोधक सीमारेखा बनैत अछि। एहि ठाम स्मृति संग्रह करब आ स्मृति पर स्वामित्व जमाएबक भेद स्थापित होइत अछि।

## पुनरावृत्त बिम्बक बल आ साहित्यिक जोखिम

धूलि, लाल स्याही, हरियर बिन्दु, ठूँठ, लाल धागा, चाबी आ कागजक देह खण्डकेँ एक दृश्य-परिवारमे जोड़ैत छथि। मुदा वस्तु अपन प्रतीकात्मक अर्थ तुरन्त बजय लगैत अछि, जे पाठकक व्याख्या-स्वतन्त्रता किछु कम करैत अछि। बहुते दस्तावेजक सन्निकट आविष्कारक प्रायिकता पर सेहो प्रश्न बनैत अछि। एहि सीमा बावजूद सभसँ महत्त्वपूर्ण विकास ई अछि जे पहरुआसभ निर्दोषता आ दोषक दू कोठलीक बदला अधूरा कथन आ अलग प्रश्नक लेल स्थान छोड़ैत छथि।

# अध्याय १५० — मुहरक छाया

## नक्शाक बाद औजारक वंशावली

अध्याय १४९मे कागजक जालक प्रथम रूप बनैत अछि; एहि अध्यायमे शोधक केन्द्र माटिक रेखासँ सुथरि कऽ मोहरक बनावटपर आबि जाइत अछि। सूचीपत्रपर गोल मोहरक सूक्ष्म कटान अदालतक वर्तमान मोहरसँ नहि मिलैत; कैलाश प्रसाद दशक पहिनुक ‘खो गेल’ अस्थायी मोहरक स्मरण करबैत अछि। एतय मूल रहस्य कोनो अद्भुत चिह्नसँ नहि, धातु, रबर, काठ आ दफ्तरक उपयोग-इतिहाससँ बनैत अछि। नकली वा पुरान उपकरणक भेद स्थापित करबाक लेल दृश्य तुलना एक प्रारम्भिक साधन अछि, किन्तु केवल स्मरण पर्याप्त नहि।

आश्रमक फाटल दान-पुस्तिका, छेदी कबाड़ीक दोकान आ घुमन्तू धातु-कीनार ‘सिक्का’क सूचना एक छोट भौतिक आपूर्ति-शृंखला उद्घाटित करैत अछि। वस्तु कहाँ बनल, के राखलक, कहाँ बेचायल—ई प्रश्न अलग-अलग दावाक रूपमे उपस्थित अछि; चिह्न भेटिते अपराधक सुनिश्चित उत्पत्ति नहि भेटैत। कथा अपन पाठककेँ उपकरणक जीवनी पढ़बाक अभ्यास करबैत अछि।

## भानु लालक रजिस्टर, रमेशक हत्था

रमेश मुहरिया पिता भानु लालक रजिस्टर खोलैत अछि। ओहिमे ‘विशेष गोल मोहर’ आ अस्थायी न्यायालयसँ आश्रम-उपयोग दिस फेर काटबाक उल्लेख देखाओल गेल अछि, मुदा तिथि अस्पष्ट अछि। एहि अस्पष्टताक कारण कैलाशक स्मृति, रजिस्टरक लिखावट आ छेदीक दान-पुस्तिका केँ तत्काल एकहि दोषसिद्ध शृंखला मानब नहि चाही। पात्रसभ प्रतिलिपि, अलग बयान आ तुलनात्मक सूची बनेबाक दिशा चुनैत छथि।

अन्तमे रमेश रबर-विहीन काठक हत्था लऽ अबैत अछि। रबर रहितो हत्थाक हाथे पकड़निहार भाग कथा-कथनमे बचल जिम्मेदारीक केन्द्रीय बिम्ब बनैत अछि। ओ काठ

वास्तविक आदेशक दस्तावेज नहि, मुदा औजारकेँ देवत्व दऽ दोष नहि मेटबाक दृश्य घोषणा अवश्य अछि।

## सुरमणी देवी आ हरिचरण : जीवित प्रश्नक केन्द्र

सुरमणी देवी खाली लोटा नेने पानि लेल निकलल अवस्थासँ नामक खबर सुनि जाँचक दिशा पकड़ैत छथि। खाली लोटा अभावक बहुअर्थी चिह्न अछि—घरक दैनिक काज स्थगित होइत अछि, कारण अब अभिलेखमे परिवारक पहिचान पुनः उभरि रहल अछि। दान-पुस्तिकामे चन्द्रपाल आ राघवक नाम भेटब, तथा ‘कानूनी सेवा मंडल’ सन अस्पष्ट उल्लेख संस्थागत प्रश्न खोलैत अछि, पर हर पन्नाक अभिलेखीय स्रोत अलग परखबाक अछि।

हरिचरण लिखित प्रतिवादक भाषा चुनैत अछि। मीरा घोषणा वा आरोपमे जल्दी नहि करैत, खण्डन लिखि देबाक अवसर दैत छथि। ई न्यायिक उदारता केवल सज्जनता नहि; आरोपक स्रोत आ प्रतिवादक दस्तावेज एक संग रखबाक शर्त अछि।

## आलोचनात्मक सीमा : वस्तुक उपस्थिति आ पुष्टि

कबाड़ीक बोरा, दान-पुस्तिका, अस्थायी मोहर आ मुहरियाक पुरान रजिस्टरक क्रमिक आविष्कार रोमांचक अछि, मुदा एहि तीव्र संयोगशृंखलासँ शोध-पद्धतिक श्रम अपेक्षाकृत सहज बुझाइ पड़ैत अछि। प्रमाणक विश्वसनीयता ओकर भेटलाक नाटकीयतासँ नहि, बचल क्रमिक अभिरक्षा आ अन्य स्रोतक मिलानसँ तय होयत। कृतिक पक्षमे ई जे पात्रसभ एकटा साधनक अर्थ घोषणा करबाक बदला ओकर ‘छाया’ नापबाक आवश्यकता स्वीकार करैत छथि।

# अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

## औजारसँ कर्ताक प्रश्न

पिछला अध्यायक खाली काठक हत्था एहि अध्यायमे संकेत करैत अछि जे मोहर अपराधक स्वतन्त्र कर्ता नहि। रबर उखड़ि गेलो पर पकड़बाक स्थान शेष अछि। एहि बिम्बक माध्यमसँ कथा वस्तुक प्रमाण-मूल्य आ मानव निर्णयक नैतिक प्रश्नक बीच भेद स्थापित करैत अछि। रामलखन सहाय धरि पहुँचबाक अभियान जालक नक्शाक अनाम छाताधारीक खोजक एक परिणाम अछि। पहिने नील कमीज, उज्जर छाता आ कानक कटाक निशान मात्र छल; आब रामलखनक नाम आ बदलैत कार्यभूमिका सामने अबैत अछि।

रामलखन कखनो अदालतक मुंशी, कखनो चन्द्रपालक हिसाबक सहायक आ आश्रमक वाहन-संग जुड़ल व्यक्ति कहल जाइत अछि। ई सब कथामे वर्णित सामाजिक जानकारी अछि; कथित पदसबन्धकेँ अलग नियुक्ति-पत्र समकक्ष मानब अशुद्ध होयत। अस्पष्ट रोजगार-भूमिकाक कारण आदेशक वास्तविक मार्ग अधिक कठिन बुझाइत अछि।

## भानु लालक ‘अ’, ‘च’, ‘र’, ‘आ’ : क्रमक परीक्षण

रमेश मुहरिया अपन पिताक रजिस्टरक कोड-पृष्ठ देखबैत अछि। ‘अ’ बला तिथि पर अदालतक फाइल अनुपलब्ध कहल जाएब, ‘च’ बला समय चन्द्रपालक दफ्तरक अर्जी आ ‘र’ बला राति राघवक ओसारक गाड़ीक उल्लेख मिलैत अछि। एहि तीन मिलानसँ नब सम्बन्ध-सन्देह बल पबैत अछि, मुदा ‘आ’क निश्चित अर्थ वा प्रत्येक घटनाक कारण-क्रम एखन निर्धारित नहि। संयोग, पूर्वनियोजित समन्वय आ पश्चात्कथनक सम्भावना बीच विवेक राखब आवश्यक अछि।

सत्यव्रतक प्रश्नसभ कर्ताक नाम लिखबाक आग्रह करैत छथि। नवयुवकक ‘सुविधा लेल’ उत्तर कर्ता-अस्पष्ट प्रशासनिक शब्द अछि; आरुणिक ‘सुविधा: अज्ञात उपयोग’ लिखनाइ अन्वेषणक सूक्ष्म रूप दर्शबैत अछि।

## रामलखनक अधूरा स्वीकार आ हरिचरणक प्रतिरोध

खाली हत्था देखिते रामलखनक बेचैनी बनैत अछि, मुदा ओकर शारीरिक प्रतिक्रिया अकेले अपराधक प्रमाण नहि। ओ ‘बटुकनाथक समयमे मोहरक पूजा’ आ बादमे ‘कारोबार’क भेद कहैत अछि; एहि वाक्यमे संस्थाक कालक्रमक कथा भेटैत अछि, प्रत्यक्ष दस्तावेज नहि। हरिचरण आश्रमक अपमानक आरोप लगबैत अछि, देविका आश्रम-नामक उपयोग पर प्रश्न उठबैत छथि। ई संवाद धर्मक अवधारणा आ धार्मिक संस्थाक वित्तीय-कागजी निर्णयकेँ अलग रखबाक चुनौती बनैत अछि।

अन्तमे रामलखनक बयान अधूरा रहैत अछि; आदेश देनिहारक स्तरक दिशा भेटल, सभ नाम नहि। एहि अपूर्णता केँ लेखक विजय नहि कहैत, अगिला अध्यायक केन्द्र ‘आदेशक स्रोत’ बनबैत छथि।

## प्रतीक आ सीमा

खाली लोटामे नमी देखायब आ बूढ़बा भूतक झिलमिलाहट दृश्य-कल्पनाक छाया छथि। मीरा ‘कारण अनिश्चित’ लिखब चुनैत छथि। एहि संयमक विपरीत कतिपय संवाद हाथक दबावकेँ लगभग भौतिक स्मृति जेकाँ प्रस्तुत करैत अछि—ई कथात्मक रूपक होयत, स्वतन्त्र वैज्ञानिक विधि नहि। अध्यायक साहित्यिक बल उपकरणक पवित्रीकरणक बदला कर्ताक जवाबदेहीपर जोर देबमे अछि।

# अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

## स्थानक नक्शा सँ भाषाक नक्शा

राघवक ओसार, आश्रम, दफ्तर आ अदालतक भौतिक स्थान जोड़लाक बाद एहि अध्यायमे ‘सेवा’, ‘प्रक्रिया’, ‘व्यवस्था’, ‘समझौता’ आ ‘ऊपर’ शब्दक पुनरावृत्ति जाँचल जाइत अछि। भाषा सामाजिक क्रियाकेँ कोना निष्क्रिय अथवा हितकारी रूप दैत अछि, से मूल प्रश्न अछि। रामलखनक ‘मोन दिलौनाइ’ शब्द आदेशक उत्तरदायित्व टारबाक सूक्ष्म माध्यम बनैत अछि। कथावाचक, मीरा आ सत्यव्रत एहि रूपान्तरणकेँ देखबैत छथि जे निर्णय पहिने होइत छल, अभिलेख बादमे अनुकूलित कएल जाइत छल—ई कथापात्रक अनुसन्धानाधीन निष्कर्ष अछि।

भिखारी लालक लाल किनारवला पर्ची पर ‘फाइल रोकू’, ‘नकल देरी’ सन निर्देश मिलैत अछि; एकहि वक्र-रेखा चिह्न भानु लालक कोड आ दान-पुस्तिकामे आंशिक रूपसँ देखल जाएबाक उल्लेख अछि। ‘चिह्न पूरा नहि मिलैत’ ई मूल पाठक महत्त्वपूर्ण सीमा अछि, जकरा आलोचनामे नहि मेटाओल जा सकैत।

## महावीर पाठकक तीन बही आ निजी अभिलेखक मर्यादा

रामलखन महावीर पाठकक नाम लैत अछि। वृद्ध महावीरक घरमे लोहेक संदूक अछि, मुदा मीरा हुनकर घरेलू निजी कागज नहिँ छीनैत। लिखित सहमति भेलापर ‘बैसकी-स्मृति’, ‘सेवा-विचार’ आ ‘समझौता-सूत्र’ नामक बही खोलल जाइत अछि। ‘दक्षिणक किसान’, ‘नदीक पारक विधवा’ आ ‘गाछीक टुकड़ा’ सन संकेत नामक स्थान भरि रहल अछि। अनाम श्रेणीसभ आब व्यक्तिक अधिकार ढाँपि देबाक भाषिक औजार बुझाइत अछि।

‘लोकहितक वाक्य चले’, ‘पुरान नामक प्रति विलम्बित हो’ सन प्रविष्टि कथाक संस्थागत छल-शंका कैँ सघन करैत अछि। मुदा बहीक प्रत्येक पंक्ति प्रत्यक्ष अपराध-आदेश नहि;

कर्ता, समय, लागू निर्णय आ परिणामक पृथक सम्बन्ध चाही। सत्यव्रतक ‘प्रारम्भिक मिलान’ लिखनाइ एहि अन्तरकेँ सम्मान दैत अछि।

## गोलबैसकी, सामूहिक दायित्व आ पीड़ितक प्रतिवचन

महावीरक कथनमे ओहि प्रक्रियाक उत्पत्ति गरीबक मुकदमा समेटबाक कथित लोकहितसँ जोड़ल जाइत अछि। सुरमणी देवी तत्काल पूछैत छथि जे एहि ‘समझौता’मे ककर जमीन गेल। एहि प्रतिवादसँ उद्धारक सार्वजनिक भाषा सामाजिक परिणामक कसौटीपर आबैत अछि। क्षमाक सम्भावना गवाहीक बदला नहि—मीरा एहि सीमापर स्पष्ट रहैत छथि।

चौठम पन्नापर अदालत, दफ्तर, ओसार आ आश्रमक बीच तीर आ ‘स्वेच्छा’ शब्द व्यवस्था-भाषाक नक्शा बनबैत अछि। हरिचरणक लिखित स्वीकार वा अस्वीकारक उत्तर ‘स्थगित’ लिखल जाइत अछि। ‘स्थगित’ शब्द गरीबक समयसँ उलटि संस्थाक उत्तरक प्रतीक्षा पर लागू भेल—ई व्यंग्य अध्यायक प्रभावी भाषिक प्रतिफल अछि।

## रूपात्मक सीमा

शब्दसूची, चिह्न आ बहीक त्रिक्रम प्रभावी अनुसन्धान-नाट्य रचैत अछि, मुदा वाक्यक समानता अपने-आप साझा षडयन्त्रक कानूनी प्रमाण नहि। पात्रसभ एहि सीमाक बारम्बार घोषणा करैत छथि, जे कथा भीतरक उपदेशात्मकता कखनो बढ़बैत अछि। तखनहुँ निजी अभिलेख वापसी आ स्रोत-वाक्यक अलग नोंद कारणसहित नैतिक पद्धतिक कलात्मक रूप विकसित करैत अछि।

# अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

## रिक्त स्थान कैं प्रकाशित करब

‘बैसकी-स्मृति’क संकेतसभक लेल अनन्या चन्ना गाछी लग खूँटी गाड़ैत अछि। प्रत्येक खूँटी पर सामान्य श्रेणी लिखल अछि; प्रश्न अछि एहि श्रेणीक पाछाँ वास्तविक व्यक्ति के छथि। नाम न भेटलापर रिक्तता बचौने राखब कथा भीतर नैतिक निर्णय अछि। आरुणि आ मीरा ‘स्मरण’, ‘संकेत’ आ ‘प्राथमिक नाम’क अलग अवस्था बनबैत छथि। ई सम्पूर्ण निश्चयक अभिनय नहि, जानल-अनजानल प्रमाण-सीमा संरक्षित करबाक साहित्यिक विधि अछि।

पश्चिमी आख्यानशास्त्रमे अनुपस्थित पात्रक उपस्थिति प्रायः दस्तावेज, स्मृति आ दोसराक कथन सँ रचल जाइत अछि। एतय रिक्त खूँटी दृश्यरूपेँ एही अनुपस्थितिक प्रतिनिधित्व करैत अछि; नाम न भेटब कथा-शून्यता नहि, सक्रिय खोजक कारण बनैत अछि।

## देवन पासवान आ फूलकली देवी : अनिश्चितताक भिन्न अवस्था

रामपरीक्षित पासवान दक्षिण टोला सँ जुड़ल संकेतकेँ अपन काका देवन पासवानक सम्भावित नामसँ मिलबैत छथि, मुदा स्वयं ‘शायद’ कहैत छथि। मीरा एहि नामकेँ पहिने ‘स्मरण’मे रखैत छथि आ प्रमाण प्रतीक्षाक नोंद जोड़ैत छथि। एहि सावधानीक कारण आत्मीय कथन अपमानित नहि होइत, मुदा बिना स्वतन्त्र मिलान अन्तिम घोषित सेहो नहि होइत।

नदीक पारक विधवाक सन्दर्भमे फूलकली देवीक नामक सम्भावना, पुरान दान-पत्रपर औंठाक उल्लेख आ नातिन कमलाक पोटली/माटिक स्मृति जुड़ैत अछि। सुरमणी देवीक प्रतिवाद—भूख, डर अथवा घेराबन्दीमे लेल सहमति स्वतन्त्र सहमति नहि—कथामे स्त्री-अधिकारक केन्द्रीय मानदण्ड बनैत अछि। पत्रक लिखित ‘स्वेच्छा’ आ व्यक्तिक जीवनगत स्वायत्तताक अन्तर उद्घाटित होइत अछि।

## अनाम मुकदमा, ‘ब’ कोड आ श्रद्धाक शब्द

‘पुरान मुकदमा’क स्थान एखन अज्ञात रहैत अछि, किन्तु भानु लालक ‘ब’ कोडसँ सम्बन्धक प्रश्न उठैत अछि। चन्ना गाछीक टुकड़ा पर ‘बाबाक वचन’क संकेत आरो धार्मिक-संस्थागत शक्ति दिस निर्देश करैत अछि। महावीर पाठकक ‘बाबाक वचन सभ लिखल नहि जाए’ कहब विवादकेँ एकदम नब स्तरपर लऽ जाइत अछि: जे वचन लिखल नहि जाए, ओकर आदेश-शक्ति केना समझल जाए?

जगमायाक हरिमोहन-संबन्धी पत्र आ माटिक स्मृति व्यक्ति-इतिहासक सूक्ष्म आधार बनैत अछि। मुदा कविता-सदृश वाक्य अथवा मौखिक स्मरणकेँ स्वतन्त्र रूपेँ विधिक स्वामित्वपत्र मानब त्रुटिपूर्ण होयत। एहि अन्तरपर मीरा आग्रह रखैत छथि।

## नाम रक्षाक नैतिकता

अन्तमे अनन्या कपड़ामे बान्हल सूची माथ पर नहि, छाती लग राखैत अछि। ई क्षुद्र देहगत क्रिया पूजासँ संरक्षण दिस सम्पूर्ण अध्यायक नैतिक परिवर्तन खोलैत अछि। तखनहुँ श्रेणीकेँ व्यक्तिमे बदलैत काल अतिरिक्त संयोगसँ सावधान रहब चाही। कृतिक सीमा एतबे अछि जे सबैत भावप्रवण वस्तु दृश्यक सहायता देइत अछि, मुदा जटिल भू-अभिलेखक पूर्ण ऐतिहासिक पुनर्निर्माणक विवरण एखन अपूर्ण अछि।

# अध्याय १५४ — बाबाक वचन

## श्रद्धाक आसनसँ जाँचयोग्य कथन धरि

पिछला अध्यायक प्रश्न ‘बाबाक वचन सभ लिखल नहि जाए’ एहि अध्यायमे तीन स्तम्भ—वचन, कर्ता, परिणाम—बनबैत अछि। मीरा पहिनेहि कहैत छथि जे बाबा कहि मान देब वा अपराधी कहि निर्णय देब दुनू टारि वास्तविक कथनक मार्ग देखल जाए। एहि नीति सँ गुरु-प्रतिमाक अपमान वा पूजा नहि, सार्वजनिक प्रभावक उत्तरदायित्व आलोचनाक केन्द्र बनैत अछि।

महावीर पाठकक बैसकीक बही, भानु लालक ‘ब’ कोड, तिथि-मिलान आ रामलखनक मौखिक आदेशक स्मरण एक सङ्ग जाँचल जाइत अछि। दू तारीख मिलब महत्त्वपूर्ण संकेत अछि, मुदा तेसरक अस्पष्ट बिन्दु बुझबाक बाकी रहैत अछि। कृतिक बौद्धिक बल एहन अनिश्चितताकेँ ज्योंक-त्यों लिखबामे अछि।

## शारदा झाक रसोई-स्मरणक ज्ञानात्मक मूल्य

पुरान रसोइया शारदा झा गवाही दैत छथि जे आश्रममे ‘बाबा’ संबोधन बटुकनाथ हरिहरनक लेल प्रयुक्त होइत छल। ई स्पष्ट स्मरण ‘बाबा’ शब्दक व्यक्तिसँ सम्बन्ध बनबैत अछि, मुदा मीराक नोंद एखन आदेशक प्रत्यक्ष हस्ताक्षर अनुपस्थित बतबैत अछि। शारदा जे आश्रमक रसोई-पाछाँ कहल गेल संकेतसभ सुनैत छलीह, हुनकर श्रम-स्थान कथा भीतर साक्ष्यक महत्त्वपूर्ण दृष्टिबिन्दु बनैत अछि। शक्तिशाली लोक जेकरा असंगत श्रोता मानैत छल, ओ अर्थपूर्ण सामाजिक स्मृतिक संरक्षिका निकलैत छथि।

हरिचरणक ‘रसोईवालीक स्मरण पर इतिहास बनत?’ बला आक्षेप श्रम-आधारित ज्ञानक अवमूल्यन खोलैत अछि। एहि ठाम स्त्रीक सुनल वाक्यकेँ स्वतन्त्र प्रमाण मानि तुरन्त निर्णय करब गलत होयत, मुदा हुनकर साक्ष्यकेँ सामाजिक पदक आधारपर अस्वीकार करब सेहो ज्ञान-अन्याय होयत। दूनूसीमाक बीच आलोचना चलैत अछि।

## तेल-दाग पर्ची, तिथि-पलट आ दानक नैतिक भेद

रामलखन तेलक दागवला पुरान पर्ची अनैत अछि, जाहिमे ‘बाबाक वचन’ कहि दान-पत्रक तिथि पिछला मासमे रखबाक निर्देश उल्लेखित अछि। ओकर कथन अछि जे ओ स्वयं तिथि नहि बदललक। पर्ची पर भानु लालक जेकाँ अक्षर देखाइत अछि, मुदा प्रमाणिकता जाँच बाकी अछि। एहि घटनाक सम्बन्ध देवन पासवानक अनुपस्थिति आ फूलकलीक सम्भावित दबावसँ जोड़बाक आवश्यकता पात्रसभ बतबैत छथि—सन्देह बिना मिलान सिद्धि नहि।

महावीर बटुकनाथक पोखरि सफाइ, पाठशाला आ गरीब विवाहमे योगदानक उल्लेख करैत छथि। सुरमणी देवी स्पष्ट करैत छथि जे दानक कथित उजास कागजी अन्याय लेल छूट नहि बनैत। एतय चरित्रक पूर्ण कारी/पूर्ण उज्जर वर्गीकरणक बदला काजक पृथक नैतिक परीक्षण प्रस्तुत अछि।

## तीन पीढ़ीक देह आ बिम्बक अनुशासन

कमलाक माटिक कण, रामपरीक्षितक लाठीक अग्रभाग आ शारदाक आटाक दरारवला हाथ पुरान आसनक कात मिलैत अछि। दृश्य अत्यन्त अर्थगर्भित अछि: पीड़ित-वंशक स्मृति, वृद्ध श्रमिकक अनुभव आ स्त्रीक अदृश्य श्रम ओहि ऊँच आसनक बराबरीमे ठाढ़ होइत अछि जे पहिने प्रश्नसँ ऊपर मानल जाइत छल।

हरियर बिन्दु आ भूतक झिलमिलाहट एखनहुँ अनुभवक प्रतीक रहैत अछि, इतिहासक प्रमाण नहि। वचन-मानचित्र आलोचनात्मक साधन अछि, दण्डादेश नहि। एहि अध्यायक सीमा अछि जे सुनल कथनसभक क्रम अतिशय अनुकूलतासँ जुड़ैत बुझा सकैत अछि; तखनहुँ पारदर्शी नोंद आ अनुत्तरित प्रश्न ग्रन्थक आलोचनात्मक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १५०–१५४

## मोहरक छाह सँ बाबा-वचन धरि

१५०मे औजारक बनावट आ आश्रम-अदालतक सम्भावित सम्बन्ध जाँचल जाइत अछि। १५१मे ओ औजार चलौनिहार रामलखन सहायक भूमिका सामने अबैत अछि। १५२मे व्यक्तिगत हाथक पाछाँ बैसकी आ आदेशक भाषा जाँचक केन्द्र बनैत अछि। १५३मे गुप्त संकेतसभकेँ देवन पासवान आ फूलकली देवी सन सम्भावित व्यक्तिक इतिहाससँ मिलबैत कथा ठहरैत अछि। १५४मे ‘बाबा’ संबोधनक स्मरण-आधारित सम्बन्ध बटुकनाथ हरिहरन धरि पहुँचैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष हस्ताक्षरक अभाव स्पष्ट राखल जाइत अछि। एहि क्रमक विशेषता तर्कक प्रत्येक सीढ़ीपर शेष असिद्ध प्रश्न चिन्हब अछि।

## भौतिक, मौखिक आ सामाजिक प्रमाणक भेद

काठक हत्था, फाटल दान-पुस्तिका, कोड-रजिस्टर, महावीरक बही आ रामलखनक तेल-दाग पर्ची भौतिक सामग्री छथि; कैलाश, रमेश, रामलखन आ शारदाक कथन मानवीय स्मृति-आधारित स्रोत छथि। सुरमणी, रामपरीक्षित आ कमलाक अनुभव अन्यायक सामाजिक परिणामक साक्षी छथि। तीनू आधारक अर्थ एक नहि। ई भेद बिना आलोचकक कथन भावुक आरोप अथवा अति-विधिक दम्भ बनि सकैत अछि।

## ‘सेवा’, ‘ऊपर’, ‘स्वेच्छा’ : भाषा-समीक्षा

बटुकनाथक संस्थाक नामपर कहाओल ‘सेवा’, पदविहीन ‘ऊपर’ आ दबावमे लिखाओल सम्भावित ‘स्वेच्छा’ एक अर्थ-राजनीतिक वर्ग बनबैत अछि। सेवाक वाक्य जँ पीड़ितक देह आ जमीनक स्थिति बदलिए बिना कागजक दाबी बदले, तँ भाषा वास्तविक पीड़ाक विस्थापन करैत अछि। एहि भाषिक जाँचमे पश्चिमी विमर्श-विश्लेषण आ भारतीय औचित्य-

विचारक उपयोग सम्भव अछि, मुदा मूल पाठक संवादकेँ ऐतिहासिक संस्था-विषयक बाहरी प्रमाणक स्थान पर नहि राखल जाएबाक चाही।

## अनुमति आ श्रमक साक्षित्व

छेदी कबाड़ी, भिखारी लाल, रमेश मुहरिया आ शारदा रसोइया सभ प्रायः अदृश्य श्रम-भूमिकासँ अभिलेखीय साक्षित्व धरि पहुँचैत छथि। महावीरक घरक निजी कागज अनुमति सँ देखल जाइत अछि; जगमाया आ प्रभावित परिवारक मूल स्मृति-वस्तु जबरदस्ती नहि लेल जाइत। विधि-नीति कथा भीतर एतय प्राणवान बनैत अछि जे साक्ष्य हासिल करबाक खातिर फेर अधिकार-हरण नहि कएल जाइत।

## कथाशिल्प, पुनरावृत्ति आ अपूर्ण निष्कर्ष

काठक हत्था, खाली लोटा, धूलि, हरियर बिन्दु, कागजक गन्ध आ छायाक चित्र पाँच अध्यायकेँ एक दृश्य-गुच्छ बनबैत छथि। विशेष बल शारदा झाक रसोई-स्मरण आ कमलाक माटिक कणमे अछि, जे सत्ता-विमर्शकेँ देहगत इतिहास घुरा दैत अछि। सीमा एतय अछि जे लगातार नब बही आ पर्चीक क्रमिक उपलब्धता अभिलेख-खोजक कठिनता अपेक्षाकृत कम देखबैत अछि। अन्तिम पंक्ति धरि बटुकनाथपर विशिष्ट आदेशक प्रत्यक्ष हस्ताक्षर अनुपस्थित अछि—एहि अपूर्णता केँ दोषसिद्धि कहि पाटब साहित्यिक आ प्रमाणगत दुनू स्तरपर अनुचित होयत।

# अध्याय १५५ — सेवाक खाता

## दान, सेवा आ मौन : अभिलेखक नव चारि स्तम्भ

अध्याय १५४क ‘बाबाक वचन’ आब लोकजीवनमे ओकर वास्तविक परिणामक परीक्षण माँगैत अछि। चन्ना गाछीक ठूँठ लग देविका ‘दान’, ‘सेवा’ आ ‘मौन’ नामक तीन पन्ना खोलैत छथि; आरुणि चौठ पन्ना ‘बदलामे की गेल?’ जोड़ैत अछि। एहि चौठ प्रश्नसँ अध्याय अपन मूल आलोचनात्मक आकार प्राप्त करैत अछि। देल वस्तुक सूचीकेँ स्वयंसिद्ध परोपकार मानबाक स्थानपर कथा ओहि सहायता-पाछाँक दाबी, चुप्पी आ जमीनक गति जाँचैत अछि। अनन्याक ‘वचनक बाद परिणाम’ शीर्षक कारण आ परिणामक सम्बन्ध खोजबाक आग्रह अछि, पहिले सँ दोष निर्धारित कऽ देबाक घोषणा नहि।

महावीर पाठकक ‘सेवा-व्यय’ बहीमे फूलकलीक धान, देवनक चिकित्सा-सहायता आ दक्षिण टोलाक कीर्तन-भोज सन प्रविष्टि अछि; मुदा जमीनक स्वामित्व, न्यायालयक कथित उपस्थिति आ बाटक दाबी ओही पन्नामे अनुपस्थित अछि। कागज एतय उपस्थिति आ अनुपस्थिति दुनूक सामग्री बनैत अछि। मीरा जे तिथि, बही, स्मरण आ स्वार्थ-सम्बन्ध अलग लिखबैत छथि, ताहिसँ कथाक जांच-भाषा विकसित होइत अछि। देवनक चिकित्सासहायता आ विवादास्पद उपस्थितिक समय मिलैत अछि, मुदा सत्यव्रत सम्भावित संयोगक गुंजाइश स्पष्ट छोड़ैत छथि। ई संयम नव्य न्यायक प्रमाणभेदक सार्थक साहित्यिक उपयोग अछि।

## मौन-भोज आ भूखक नैतिक अर्थ

शारदा झाक तेल-लागल भोज-सूची आ ‘चन्ना सेवा-संकीर्तन’क अधूरा ‘नव संकल्प’ दानक सामाजिक आयोजनकेँ विवादित अधिकारसँ जोड़ैत अछि। शारदा एहि बातक अनुभव प्रस्तुत करैत छथि जे चाउर पाबि चुकल घरसभमे प्रश्न कम उठैत छल; किन्तु अनुभव आ लिखित शर्तक बीच अन्तर रहैत अछि। दीमकसँ खायल अक्षरमे ‘विवाद न करब’ पढ़बाक

सम्भावना पर मीरा अधूरा पाठ पूरा नहि करबाक निर्देश दैत छथि। एतय सूत्र ‘भोज अपराध अछि’ नहि, बल्कि ‘भोजनकेँ मौनक विनिमय बनाओल गेल कि नहि’ अछि।

रामलखन सहाय अपन बेटीक औषधिक लेल ओही खातासँ सहायता लेने छल, आ एही निर्भरता अपन चुप्पीक एक कारण कहैत अछि। हुनकर आत्मस्वीकारकेँ पूर्ण निर्दोषता वा पूर्ण अपराधसिद्धि दुनू रूपमे पढ़ब गलत होयत। कमला नानी फूलकलीक माटिक डल्ला बहीक लग रखैत अछि; ओकर प्रश्न—धान भेटल, मुदा जमीनक लेखा कतय?—अर्थगत दृष्टिसँ अध्यायक केन्द्रीय प्रतिप्रश्न अछि। भूखक विवशता आ सहायताक शर्त बनाबयवला शक्तिक बीच भेद कथामे नैतिक असमानताकेँ परिभाषित करैत अछि।

## सामुदायिक साक्ष्य, निजता आ रूपक

दक्षिण टोलाक कैलाश मंडल, सकुनी खातुन आ हरिबल्लभ दास तीन भिन्न प्रकारक गवाही आनैत छथि—दवा, अनाज आ कीर्तन-दक्षिणाक सामाजिक प्रतिफल। सकुनीक माय सँ भोजक उपस्थितिपत्र पर औंठा लऽ बादमे ओकरा संकल्प-पत्रसँ जोड़बाक कथन सहमतिक स्रोतक प्रश्न खोलैत अछि; रामलखन एहन बान्हल फाइल देखनेक बात कहैत अछि, स्वयं सभ जोड़बाक दावा नहि। भिखारी लाल आ अनन्या अलग-अलग कपड़ामे स्रोत बाँधि सूची बनबैत छथि। ई संग्रह-विधान दस्तावेजक अभिरक्षा आ साक्षी-सुरक्षाक रूपक दैत अछि।

ठूँठक दरारमे हरियर बिन्दुक विस्तार, माटिक डल्ला, उज्जर थारी आ कारी मौन चारि परस्पर-संवादी बिम्ब अछि। हरियर बिन्दुकेँ मीरा ‘दृश्य पुनः; अर्थ लोकानुभव’ रूपमे लिखबैत छथि। साहित्यिक अन्तर्ध्वनि प्रमाणक बदला नहि लेत—एहि सीमारेखाकेँ कथाक भीतर पात्र स्वयं रेखांकित करैत छथि। लोकगीत ‘मौन भोजमे बोलक दाना’ भोजनक प्रतीककेँ वाणी-सम्मानसँ जोड़ैत अछि।

## कथात्मक उपलब्धि आ सीमा

अध्यायक उपलब्धि ई अछि जे उदारताक बाहरी प्रदर्शनक भीतर निर्भरता रचबाक जटिल पद्धति आँखिक सोझाँ अबैत अछि। हरिचरणक प्रतिवादकेँ सेहो उपस्थित कएल गेल अछि,

तेँ पाठ एकतरफा अभियोग मात्र नहि रहैत। मुदा सेवा-खातामे विवादग्रस्त परिवारसभक क्रमबद्ध भेट किछु अत्यन्त अनुकूल संयोग जेकाँ लगैत अछि; तिथि-स्रोतक स्वतन्त्र पुष्टि एखन अधूरी अछि। सूक्ति-प्रधान आरम्भ आ एकहि नैतिक सूत्रक पुनरावृत्ति सेहो पात्रगत अनिश्चितताकेँ किछु सीमित करैत अछि। तइयो अन्तक ‘मौन-भोज’ प्रविष्टि अगिला अध्यायमे ऋण-साक्षीक प्रश्नक स्वाभाविक आधार बनबैत अछि।

# अध्याय १५६ — दानक ऋण

## आधा उठल हाथ : प्रमाणक नव इकाई

पिछला अध्यायमे लोकसभा दौरान जे हाथ आधा उठल छल, लेखक ओकरा भय वा झूठक एकरेखीय चिह्न नहि मानैत छथि। मीरा ओहि हाथसभक अलग सूची बनबैत छथि। कैलाश मंडलक पिताकेँ भेटल औषधि, सकुनी खातुनक माय केँ भेटल अनाज, हरिबल्लभक पिताक कीर्तन-दक्षिणा आ रामलखनक बेटी लेल खर्च—ई चारिटा प्रसंग स्मृतिक ऋण आ निर्णयक स्वातन्त्र्य बीचक संघर्ष खोलैत अछि। गवाहीक केन्द्र कागजक दृश्य रूपसँ साक्षीक देह-भाषा दिस बढ़ैत अछि: उठबाक बेर रुकल हाथ स्वयं एक सामाजिक इतिहासक रूपक बनैत अछि।

सत्यव्रत घोषणा करैत छथि जे पहिने ऋण देहक भीतर कोना बसल, से बुझल जाए। एहि प्रक्रियामे ‘उपकार’क भाव केकरा प्रश्न करबासँ रोकैत अछि, तकर श्रवण होइत अछि। सकुनीक माय केँ अनाज भेटलाक बाद पंचायतक निर्णयसँ दूर रखल जाएब, अथवा हरिबल्लभक परिवारक धार्मिक ऋण मानि असहमति नहि उठाएब—एहि घटनाक सामाजिक रूप अलग-अलग अछि। ई भेद राखलासँ रचना सहायता-स्वीकारकेँ पीड़ितक नैतिक दोष बनाबय सँ बचैत अछि।

## निर्मला कुम्हारिन : देनिहार केँ ऋणी बनाबबाक उलटपाठ

निर्मला कुम्हारिनक प्रवेश अध्यायक अर्थमे एक निर्णायक परिवर्तन करैत अछि। हुनकर परिवार आश्रमकेँ माटिक घड़ा आपूर्ति करैत छल; मुदा कागजी वाक्य-विन्यास एहन जे सेवा देनिहार परिवार स्वयं कृपापात्र बनि उठैत अछि। भिखारी लालक प्रश्न—घड़ा अहाँ देलहुँ, ऋणी अहाँ?—एहि उलटबाँसी केँ सामान्य पाठकक सामने स्पष्ट करैत अछि। श्रमक मूल्य धनिक कृपामे रूपान्तरित भेलापर इतिहासक कर्ता बदलि जाइत अछि। ई प्रसंग वर्ग, जाति, लिंग आ श्रमक घालमेलकेँ एकहि वस्तु—माटिक घड़ा—सँ देखबैत अछि।

निर्मलाक चरित्रक महत्त्व केवल करुणा जगाएब नहि; ओ पूर्व अर्थ-व्यवस्थाकेँ उल्टा देखबाक बौद्धिक साधन बनैत छथि। आरुणि ‘ऋण-साक्षी’ रजिस्टरमे की भेटल, कहिया भेटल, तकर बाद की रोकल गेल आ रोकबाक कारण के कहलक, एहि प्रश्नसभक क्रम बनबैत अछि। अभिलेख आब क्रियावाचक काज करैत अछि; पूर्व बहीमे जे ‘सहायता’ छल, नब पञ्जीमे ओ ‘आदान-प्रदानक शर्त’ बनि जाँचल जाएत।

## स्वीकारोक्ति, जिम्मेदारी आ संदूकक पूर्वसूचना

रामलखन ‘हम अपराधी छी, मुदा अकेला अपराधी नहि’ कहैत छथि। मीरा एकरा क्षमादान बनाबैत नहि, ‘स्वीकार सहित संलग्नता’ लिखबैत छथि। हरिचरण प्रश्न करनिहारसभ पर लाभ उठाकऽ आरोप लगएबाक दोष लगबैत अछि; सत्यव्रत उत्तरमे भूखल परिवार आ भूखकेँ साधन बनाबयवला पक्षकेँ एक तराजूमे नहि रखबाक विवेक प्रस्तुत करैत छथि। निःसन्देह नैतिक उत्तरदायित्वक स्तर अलग अछि, मुदा ककरो विशिष्ट विधिक दोषक अंतिम निर्णय कथामे एखन नहि होइत।

भानु लालक स्मरणमे ‘सहमति’ नामक छोट कापी आ महावीरक घरक ऊपरका कोठलीमे राखल लोहेक संदूकक सूचना अगिला घटनाक आधार बनैत अछि। सुरमणी देवी तुरन्त संदूक नहि खोलबाक आग्रह करैत छथि: पहिने निजता, प्रतिलिपि, उपस्थिति आ प्रमाणक नियम बनत। ई विलम्ब कथाक रोचकता बढ़ाबैत अछि, संगहि सन्देहक वस्तु भेटिते ओकर स्वामित्वमे हस्तक्षेप नहि करबाक नैतिक अनुशासन देखबैत अछि।

## आलोचनात्मक दृष्टि : बोझ आ स्वर

आधा उठल हाथसँ पूर्ण गवाही धरि गति अध्यायक कलात्मक उपलब्धि अछि। लोकगीतक उज्जर कपड़ा आ भीतरक कारी धागा सामाजिक ऋणक दू तह प्रकट करैत अछि। तइयो साक्षीसब लगभग क्रमसँ अर्थ-सूत्रक पुष्टि करैत छथि; प्रतिपक्षी स्रोतक पर्याप्त विस्तार नहि भेल अछि। कथा एकटा घन दृष्टान्त बनैत अछि, जाहिमे ‘दान’क बारीकी सेहो प्रश्नक अधीन

रहैत अछि। अन्तमे बन्द संदूकक बिम्ब रहस्य-नाट्यक परम्परागत औजार अछि, मुदा ओकरा खोलबाक पहिने बनल नियम बिम्बकेँ नैतिक गहराइ दैत अछि।

# अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

## गृहक गुप्त कोठलीसँ सामुदायिक दृष्टि धरि

अध्याय १५६क अन्तमे जे संदूक केवल भानु लालक स्मरण आ महावीरक घरक सूचना छल, एहि अध्यायमे ओ मूर्त वस्तु बनि सामने अबैत अछि। घरक ऊपरका कोठली, पूजा-घरमे राखल कुंजी, ताला पर जमल धूरि आ बन्द काठक देह कुल-गौरवक छिपाएल इतिहासक सघन स्थल रचैत अछि। महावीरक संग सत्यव्रत, मीरा, सुरमणी देवी, भिखारी लाल, अनन्या, आरुणि, देविका आ दू स्त्री-साक्षीक उपस्थिति निजी निर्णयकेँ सामूहिक निरीक्षणमे बदलैत अछि। स्रोतक सूची, ताला-कुंजीक छाप आ वस्तुकेँ कोन क्रममे खोलल गेल, तकर नोंद कथा भीतर साक्ष्य-अभिरक्षाक विधि बनैत अछि।

भिखारी लाल ताला पर तेल देबाक प्रस्ताव करैत अछि, मुदा सुरमणी देवी पहिने ओकर वर्तमान दशाक नोंद करय चाहैत छथि। छोट व्यावहारिक रोक नव्य न्यायक बोधक साहित्यिक रूप अछि: जँ वस्तुकेँ पहिनहि बदलि देल जाए तँ पछिला निरीक्षणक मूल आधार अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। कोठलीक अन्हार सार्वजनिक उजासमे बदलैत अछि, मुदा उजास सत्यापनक स्थानापन्न नहि।

## भोजन-वितरण, ‘वचन’ आ सहमतिक कारी कापी

संदूकसँ भेटल ‘भोजन-वितरण’ बहीमे नाम, अवसर, वस्तुक संग ‘वचन’ नामक अतिरिक्त स्तम्भ अछि। कैलाशक पिताक रोगक बाद सीमा-विवादपर मौन, आ आन परिवारक संकट-सहायताक बाद आश्वासनक प्रविष्टि दानसँ सहमतिक रास्ता देखबैत अछि। दोसर, कारी जिल्दवाली ‘सहमति’ कापीक पहिल नियममे सहायता उपरान्त आश्वासनक उल्लेख अछि। लेखक कागजक भाषा बदलैत तरीका देखबैत छथि—पहिने दान, तकर बाद वचन, फेर अधिकारक दाबी।

फूलकली देवीक अस्थायी शरणक बदला सीमा-विवाद स्थगित करबाक प्रविष्टि विशेष रूपसँ तीख अछि। शारदा झा बरखाक राति फूलकलीकेँ बरामदामे सुतल देखनेक बात कहैत छथि। मीरा कमलाकेँ तुरन्त भीतर बजबैत नहि; संबंधित परिवारक तैयारी आ अनुमति लेल प्रतीक्षा करैत छथि। एतय साक्ष्यक संकलन आ जीवनक निजी पीड़ाक सार्वजनिक प्रदर्शनक बीच मर्यादा स्थापित होइत अछि।

## अधिकार-चिह्न, अंगूठा-पैड आ आरोपक सीमा

तामाक डिबियामे सुखल स्याही आ अंगूठा-पैड; लाल कपड़ामे बँधल नक्सा; बटुकनाथक त्रिशूल-सदृश तीन रेखावला अधिकार-चिह्न—एहि सभ वस्तु एक संग भेटैत अछि। चिह्नक पुनरावृत्ति बहीसभक परस्पर सम्बन्धक जाँच योग्य संकेत अछि, मुदा चिह्न होएब मात्र मूल हस्ताक्षर वा व्यक्तिगत आदेशक निश्चित प्रमाण नहि। महावीरक भीतर बाबाक प्रतिष्ठा आ लिखित अभिलेखक विरोधाभास तीव्र होइत अछि। रामलखनक नाम गवाह आ ‘समझाओल’ दुनू ठाम अछि; एहि द्वैध स्थानसँ कथित मध्यस्थता आ दबावक भेद पहिल बेर ठोस बनैत अछि।

हरिचरण गवाह रहबकेँ अपराध नहि मानबाक आग्रह करैत अछि। ई प्रतिवाद सिद्धान्ततः उचित प्रश्न खोलैत अछि—गवाहक उपस्थिति आ गलत सहमति रचबाक सक्रिय काज समान नहि। मीरा एहि कारण अंतिम फैसला रोकैत छथि आ वस्तुक सूची तथा सुरक्षित प्रतिलिपि पर जोर दैत छथि। कथाक भीतर पात्रक उतावलापन शांत करब अन्वेषणक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

## संदूकक खाली पेट : रूपक आ सीमा

संदूक खाली भेलापर ओकर अन्हारक गन्ध कोठलीमे शेष रहल, ई कथाक सर्वाधिक स्मरणीय दृश्य-रूपक अछि। गुप्त अभिलेख बाहर आबितो ओकर सामाजिक घाव तुरन्त भरैत नहि। संदूककेँ ठूँठ लग खोलल मुँह रखब व्यक्तिगत संग्रहसँ लोकसाक्ष्य धरि यात्राक संकेत अछि; कारी कापी पहरासहित सुरक्षित रहैत अछि। तथापि भीड़-सहित दस्तावेज

खोलबाक दृश्य वास्तविक अभिरक्षाक दृष्टिसँ प्रश्नाकुल अछि: कोन मूल पत्र ककर हाथमे रहल आ कतेक प्रति बनल, एकर लगातार नोंद आवश्यक अछि। लेखक स्वयं ‘आइ केवल सूची आ प्रति’ कहलाबैत छथि, जे एही जोखिमक आंशिक स्वीकृति अछि।

# अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

## कागजी सहमति आ चयनक स्वतन्त्रता

लोहेक संदूकसँ भेटल सहमति-कापी एहि अध्यायमे परिवारक मौखिक स्मृति आ अन्य लिखित अभिलेखसँ मिलाओल जाएत। मीरा पहिने प्रत्येक परिवारक अलग गवाही, फेर कागचक मिलान, तकर बाद त्रुटि-सूची आ अन्तमे सामूहिक सुनवाईक क्रम निश्चित करैत छथि। एहि अनुक्रममे भीड़ आक्रोशक स्थाने परीक्षक समुदाय बनैत अछि। सत्यव्रतक ‘मिलान बदला नहि, सत्यक माप’ बला सूत्र अनुसंधानक पद्धति पर केन्द्रित अछि। स्वेच्छा शब्दकेँ मात्र औंठाक उपस्थितिसँ प्रमाणित नहि मानबाक तर्क फूलकली, सकुनी आ कैलाशक परिवारक अलग अनुभवसँ उभरैत अछि।

कैलाशक पिता रोगक दौरमे दवा लेने छलाह; कापी एहिकेँ सीमाक प्रश्नपर मौन बनबैत अछि। सकुनीक माय बरखा-समय अनाज लेने छलीह; कापीमे ‘पंचायत-वचन’ दर्ज अछि। फूलकली आश्रमक बरामदामे अस्थायी शरण लेने छलीह; कागज ओहि स्थितिक संग जमीनक सीमा-विवाद जोड़ैत अछि। एहि तीन भिन्न घटनामे सहायता पर्याप्त होयत कि सहमति? ई प्रश्न नैतिक आ आख्यानिक अर्थमे खुलल रखल गेल अछि।

## कमलाक वाक्य आ जीवन-साक्ष्यक स्वायत्तता

शारदा झाक बरखाक स्मरण, रामपरीक्षितक रोग-समयक गवाही आ कमलाक नानीक कथाक पुनर्पाठ दस्तावेजक अर्थ बदलबैत अछि। कमला ‘नानी शरण लेलीह, खेत नहि छोड़लीह’ कहैत अछि। एक वाक्यमे आश्रयक अनिवार्यता आ सम्पत्ति-अधिकारक अलग अस्तित्व स्पष्ट भऽ जाइत अछि। कैलाश ‘पिता दवा लेलनि, मौन नहि’ आ सकुनी ‘माय अनाज लेलनि, बाट नहि छोड़लीह’ कहैत छथि। ई तीन प्रतिवाक्य मूल कापीक कर्ता-निरसनक प्रतिरोध बनैत अछि।

एहि दृश्यकेँ मात्र भावुक विजय मानब पर्याप्त नहि। मीरा स्पष्ट करैत छथि जे रोदन साक्ष्यक मानवीय अंश भऽ सकैत अछि, मुदा निष्कर्ष लेल तिथि, कथन आ अन्य स्रोत चाही। कमलाक व्यक्तिगत स्वर महावीरक वंशगत मौनकेँ भेदैत अछि; महावीर मूल अभिलेखक प्रति सार्वजनिक करबाक पक्ष लैत छथि, मुदा निजी विवरणक संरक्षणक मर्यादा सुरमणी देवी याद करबैत छथि।

## मध्यस्थक भाषा आ गलत उपस्थितिक प्रश्न

हरिबल्लभक पिता कीर्तनमे गेलाह; कापीमे ‘उपस्थिति-सम्मति’ अछि। रामलखन सहाय गवाही दैत अछि जे कखनो हरिचरण, कखनो मुनीम, कखनो आश्रमक चिट्ठीक आधारपर लोककेँ समझाबय गेल। एहि कथनसभमे आदेशक विशिष्ट स्रोत आ वास्तविक अनुमतिक शब्द अलग पड़ैत अछि। हरिचरण स्वयंकेँ संदेशवाहक बतबैत अछि; मीरा ‘संदेशमे विकल्प छल?’ पूछैत छथि। असहमति देबाक वास्तविक अवसर छल कि नहि, ई प्रश्न सहमतिमे शक्ति-संबन्धक उपस्थिति देखबैत अछि।

कापीक किछु पन्नामे अस्पतालमे रहल व्यक्ति, गामसँ दूर व्यक्तिक उपस्थिति, आ मृतकक नाम पर तथाकथित सहमति जेकाँ विरोधी सूचना भेटैत अछि। मीरा एहिसँ स्वतः अंतिम निर्णय नहि निकालैत, बल्कि मृत्यु-तिथि, अनुपस्थिति आ झूठा गवाह अलग सूचीमे राखबैत छथि। ई महत्वपूर्ण अछि, कारण एकटा असंगति कखनो गलत स्मरणो भऽ सकैत अछि; अनेक पृथक प्रमाण मिलला पर अनुमानक बल बदलैत अछि।

## अभिलेख-पद्धति आ कथाक अनुपात

अठारह नामक मिलान, दबाव, चुप्पी-वचन, सहायता-सँ-दाबी, पुनरावृत्त गवाह आ मृतकक नामक पृथक गणना अध्यायकेँ लगभग जाँच-पञ्जी बनबैत अछि। ई पद्धतिसँ कथा विश्लेषणात्मक घनत्व पबैत अछि, मुदा अधिकाधिक सूची पाठकक भावात्मक ठहराव कम करैत अछि। स्वप्न वा भूतक चर्चा देखि मीरा बच्चा सभकेँ लोक-दृष्टि आ दस्तावेजी प्रमाण अलग लिखबैत छथि। एहि भेदक कारण उपन्यासक अद्भुत तत्त्व सुरक्षित रहैत अछि, मुदा

ऐतिहासिक तथ्यक दावा नहि बनैत। अन्तमे लाभार्थीक प्रश्न चन्द्रपालक दिशामे खुलैत अछि, पर आरोप एखन परोक्ष आ परीक्षणाधीन अछि।

# अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

## असम्भव तिथि : मौनक विरुद्ध दस्तावेज

अध्याय १५८मे चिन्हित असम्भव उपस्थितिक प्रश्न एहि अध्यायमे केंद्र ग्रहण करैत अछि। जगदीश महतोक कथित सहमति-तिथि हुनकर मृत्यु-पाछाँक अछि; परमानन्द अपन स्मरणक संग मृत्यु-रजिस्टरक मिलानक आग्रह करैत अछि। सोना झाक नाम आश्रममे कथित उपस्थितिक रूपमे अछि, मुदा हरिनारायणक पत्र हुनकर काशीमे रोगावस्थाक विवरण दैत अछि। रुक्मिणी देवीक हस्ताक्षरक रेखा हुनकर पुरान चिट्ठी सँ मेल नहि खाइत। लेखक तीन अलग प्रमाण-स्थितिक तुलना करैत छथि—मृत्यु, दूर रहबाक बाधा आ लिपि-साम्यक शंका।

मीरा स्मृति, श्राद्ध-संबन्धी गवाही, लिखित अभिलेख आ हस्ताक्षरक तुलना अलग खम्भामे रखैत छथि। कथामे सावधान पात्र स्पष्ट कहैत छथि जे ओ स्वयं अदालत नहि छथि। अतएव एतय उभरल सन्देह उपन्यासक प्रबल नैतिक घटना अछि, वास्तविक न्यायिक दोषसिद्धिक विकल्प नहि। मृतकक औंठा-चिह्नक बिम्ब दुःखक बादो कागजी अपहरण चालू रहबाक भय रचैत अछि।

## अधिकार-सूचना आ मोहरक रूपान्तरण

महावीरक घरक बक्सामे भेटल ‘अधिकार-सूचना’ पोथी, दान-रजिस्टर आ सेवा-खाता सहमति-कापीक संग तुलना लेल खुलैत अछि। पोथीमे बटुकनाथक अधिकार-चिह्न प्राप्त व्यक्तिक मध्यस्थता स्वीकृत मानबाक वाक्य बारम्बार अछि, मुदा बीचक पन्ना काटल गेल अछि। ई कटान लेखककेँ अनुपस्थित साक्ष्यक प्रश्न अनिवार्य रूपसँ उपस्थित करबाक अवसर दैत अछि। एहन अपूर्ण पन्नाकेँ कल्पनासँ भरब कथा भीतर सेहो निषिद्ध अछि। महावीर घरक अभिलेख लोक-सोझाँ रखबाक जिम्मेदारी स्वीकार करैत छथि; संगहि कुलक पहचान पर पड़ल प्रश्न सँ जूझैत छथि।

भानु लाल द्वारा आनल मुनीमक नकल-मोहरक डिब्बीमे छाप आ सुखल लाल रंग अछि। अर्धचन्द्रक दाहिना कोना हलुक टेढ़ भेटब, आ सहमति-कापीक किछु पन्नामे वैह टेढ़ चिह्न देखाइ पड़ब एक जाँच योग्य प्रतिरूप अछि। देविकाक दृश्य तुलना प्रारम्भिक साक्ष्य बनैत अछि; मोहरक मूल स्रोत, तारीख आ प्रयोगकर्ता एखन स्वतंत्र सत्यापन चाहैत अछि। कथाक उल्लेखनीय बात ई जे मीरा तत्काल नाम-विशेषक अंतिम आरोप रोकैत छथि।

## लाभ-सूत्र आ परोक्ष सम्बन्धक जोखिम

भिखारी लालक जमीन-नक्शा, पछिला कीन-पत्र आ चन्द्रपालक भानिज तथा मुनीमसँ जुड़ल क्रेताक कथन आरुणिक लाल सूतक नक्शामे एकत्र होइत अछि। सूत जगदीश, सोना, रुक्मिणी आ कीन-पत्रक नव नामकेँ पुरान गोदाम दिशामे जोड़ैत अछि। लेखक ‘लाभ-सूत्र’ शब्दक माध्यमसँ दस्तावेजमे प्रत्यक्ष नाम नहि भेटलो पर आर्थिक परिणामक दिशा परखैत छथि। एहि संग सावधानी चाही: गोदाम दिस जुटैत रेखा अपराधक निश्चित कर्ता बतबैत नहि; ओकरा मानचित्र, स्वामित्व-पत्र आ आदेशक अलग मिलान चाही।

हरिचरण बारम्बार कहैत अछि जे कीन-पत्रमे चन्द्रपालक नाम नहि अछि। मीराक उत्तर लाभ, आदेश, सहयोगी आ सम्पत्तिक मार्ग जाँचबाक आग्रह अछि; ई बिना प्रत्यक्ष नामक दोषनिर्धारणक स्वीकृति नहि। रामलखन अपन द्वारा मोहर देखाकऽ परिवारसभ कैँ चुप करेनाइक पूर्व काज स्वीकार करैत अछि, जे उत्तरदायित्वक एक पृथक स्तर बनैत अछि।

## लोकदृष्टि आ अध्यायक नैतिक उपलब्धि

ठूँठक छाल पर उल्टा चिह्न चमकबाक लोक-कथन, बूढ़बा भूतक छाह आ पानिक स्मृति अध्यायक कथाजगतमे उपस्थित अछि। बच्चासभ एकरा ‘लोक-दृष्टि’ रूपमे लिखैत अछि, निरीक्षणजन्य प्रमाणक बराबर नहि। एतेक घन दस्तावेजी विमर्शक बीच अलौकिक संकेतक अन्तःस्थापन उपन्यासक मौलिक मिश्रित आख्यान-शैली देखबैत अछि। सीमाक रूपमे लगातार नव रजिस्टर, बक्सा, मोहर आ नक्शाक सहज उपलब्धता जाँच-प्रक्रियाक कठिनता अपेक्षाकृत संक्षिप्त करैत अछि। तथापि मृत्यु-पाछाँक कथित सहमतिसँ लाभ-सूत्र धरि गति

पाठककेँ सिखबैत अछि जे व्याख्या संवेदनशील भऽ सकैत अछि, मुदा निष्कर्ष बाधा-प्रमाणक सामना कएल बिना पूर्ण नहि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १५५–१५९

## सेवा-खातासँ सहमति-कापी धरि कारण-क्रम

१५५मे सेवा-व्ययक बही आ मौन-भोजक पन्ना सामाजिक सहायता कैँ जाँचक विषय बनबैत अछि। १५६मे आधा उठल हाथक अर्थ खोलैत दानक ऋण, लाज आ निर्भरता अलग रजिस्टर पबैत अछि। १५७मे बंद संदूकक भीतर भोजन-वितरण आ सहमतिक लिखित कापी भेटैत अछि। १५८मे परिवार-परिवार मिलान भऽ सेवा, शरण आ कीर्तनकैँ स्वतंत्र निर्णयसँ अलग कएल जाएत। १५९मे मृत्यु-पाछाँक तिथि, अनुपस्थित व्यक्ति आ नकल-मोहरक असंगति आर्थिक लाभक सूत धरि पहुँचैत अछि। ई क्रम ‘दोषी भेटल’ सन तुरन्त अन्त नहि, प्रश्नसँ प्रतिपरीक्षण धरि ढाँचागत विकास अछि।

## वस्तु-बिम्ब : थारी, आधा हाथ, संदूक, कापी आ औंठा

उज्जर भोजन-थारीक भीतर मौनक शर्त, आधा उठल हाथमे भीति आ ऋण, खाली संदूकमे लुकायल इतिहासक शेष गन्ध, सहमति-कापीमे औपचारिक वचनक जबरन निर्माण, आ मृतकक औंठाक अनुपस्थित देह—ई पाँच केन्द्र-वस्तु एकटा बिम्ब-परम्परा रचैत अछि। बिम्बसभक अर्थ केवल लेखकक कथनसँ नहि, पात्रक काजसँ बदलैत अछि। कमलाक माटिक डल्ला आ नानीक कम्बलक कोर कागजी शब्दसँ बचल वास्तविक जीवनक वस्तु-साक्ष्य छथि।

## बाख्तिनक संवादधर्मिता आ साक्षीक स्तर

मीरा, सत्यव्रत, सुरमणी, अनन्या, आरुणि, कमला, शारदा, कैलाश, सकुनी, निर्मला, रामलखन, हरिचरण आ महावीरक आवाज एकहि प्रश्नपर अलग अनुभव रखैत अछि। बाख्तिनक दृष्टिसँ एहि बहुकण्ठमे अधिकारिक भाषा, धार्मिक ऋणक भाषा, श्रमिकक

व्यवहार-भाषा आ पीड़ित परिवारक बोली एक-दोसराकेँ काटैत अछि। मुदा किछु प्रसंगमे पात्रसभ अत्यधिक सुथर आलोचनात्मक सूत्र बाजैत अछि, जाहिसँ हुनकर व्यक्तिगत स्वर अलग-अलग रहब कठिन होइत अछि। ई कलात्मक सीमा अपेक्षित आलोचनात्मक प्रतिविचार मांगैत अछि।

## नव्य न्यायक प्रमाण-विवेक आ कथाजगतक अलौकिकता

प्रत्येक चरणमे दृष्टि, स्मरण, लिखित बही, तिथि, हस्ताक्षर, मोहर, अनुपस्थिति, साक्षी आ सम्भावित आर्थिक लाभ अलग प्रमाणिक श्रेणी बनैत अछि। मीरा कखनो-कखनो पात्रसभकेँ जे रोकैत छथि, से कथा भीतर अनुमानक व्याप्ति जाँचबाक रूपक अछि। मृतकक असम्भव सहमति आदि प्रबल विरोधक संकेत छथि, मुदा अनुपस्थित पन्ना आ अज्ञात कर्ताकेँ अनुमानसँ पूरा नहि कएल गेल अछि। ठूँठक हरियर बिन्दु, छालक चमक आ भूतक छाह कृतिजगतक वैध कलात्मक प्रसंग छथि; हुनका बाहरी घटनाक अभिलेखीय प्रमाण नहि मानल जाएत।

## स्मृतिक अधिकार, निजता आ दीर्घ-कथाक शिल्प

कापी खोलबाक नियम, परिवारक अनुमतिक प्रतीक्षा आ पीड़ितक निजी कथा सार्वजनिक तमाशा नहि बनायबक आग्रह अध्यायसभकेँ साक्ष्य-संकलनसँ आगाँ स्मृति-न्याय दिस लऽ जाइत अछि। घटनाक क्रम सघन अछि, मुदा अनेक अभिलेखक लगातार भेटब कथानक-सम्भावनाक प्रश्न उठबैत अछि; वस्तुक अभिरक्षा आ विरोधी स्रोतक परीक्षण आओर स्पष्ट भेलासँ विश्वासनीयता बढ़ित। एहि सीमा सहित खण्डक मुख्य उपलब्धि ई अछि जे दानक बाहरी उदारता आ दबावक भीतरी पद्धतिक प्रश्न केन्द्रीय बनि जाइत अछि, आ न्याय-प्रक्रिया भावनात्मक प्रतिशोधक बदला परीक्षणक अनुशासन धरि पहुँचैत अछि।

# अध्याय १६० — गोदामक छाया

## लाभक सूत आ गोदामक भौतिक भूगोल

मृतकक सहमति-पन्नासभक लाभ-सूत्र चन्द्रपालक पुरान गोदाम धरि पहुँचैत अछि। बाजारक पाछाँ सूखल पोखरिक कात स्थित गोदामक दोसर नाम लोक-स्मृतिमे ‘कागच निगलनिहार कोठली’ अछि। एहि दू नामक विरोध—व्यापारक सामान्य ठाम आ गुप्त अभिलेखक भय-स्थल—अध्यायकेँ सामुदायिक अनुभवक भूगोल बनबैत अछि। मीरा दस्तावेज देखबासँ पहिने चिन्हक उपयोगक हिसाब जाँचबाक बात रखैत छथि, चिन्हकेँ पवित्र कहि निरपराध मानबाक नहि।

गोदामक देबालपर खेतक सीमाक बहुरंगी नक्शा, बही आ धानक बोराक पाछाँक पेटी एकहि ठाम देखल जाइत अछि। आरुणिक लाल सूतबला लाभ-मानचित्र एहि रेखासभसँ मेल खेनाइ एक संगठित सम्बन्धक आशंका मजबूत करैत अछि, मुदा स्वतन्त्र नापी-अभिलेख आ समय-जाँचक स्थान नहि लै सकैत।

## असली, नकल आ छाह-मोहर

गोदामक बहीमे ‘छाह मोहर’ शब्दक प्रयोग आ अभ्यास-छापक सामग्री भेटब पहिनुक नकल-मोहर विषयकेँ भौतिक रूप दैत अछि। देविका छापक तुलना बनबैत छथि; अनन्या पृष्ठ-संख्या, तिथि आ टिप्पणी अलग लिखैत अछि। असली, नकल आ मृतक-पन्नाक चिह्नक सूक्ष्म अन्तर जाँचक एहन भाषा अछि जतय रूपक व्यवहारिक वस्तु-समीक्षासँ मिलैत अछि। तीनू निशानक दृश्य समानता मिलब प्रारम्भिक संकेत अछि, स्वतः लेखकीय दोषसिद्धि नहि।

लाउक हस्ताक्षरसँ युक्त ‘चन्द्रपाल बाबूक मौखिक निर्देश’ सन कागज आ धीरू नौकरक रातिक बैठक-स्मरण गोदामकेँ सक्रिय लेनदेनक स्थल देखबैत अछि। धीरूक ‘भीतर हँसी, बाहर रोदन’ बला छवि संस्थागत लाभक सामाजिक मूल्यक मार्मिक सूक्ष्मचित्र अछि।

## कथावाचकीय प्रमाण-सीमा आ संस्थागत उपस्थिति

सत्यव्रत, मीरा, सुरमणी, महावीर, भिखारी लाल आ बच्चासभक संयुक्त यात्रा दृश्यकेँ सामूहिक जाँच बनबैत अछि। परमानन्दक सहभागिता सेहो उल्लेखित अछि; ओकर पहिनुक मौन आ बादक भूमिका पर अलग प्रश्न बनैत अछि। कथा अनेक वस्तु एक जगह जुटबैत अछि, जाहिसँ गुप्त जाल प्रकट होएबाक लय तेज बनैत अछि।

चन्द्रपाल एहि अध्यायमे प्रत्यक्ष उपस्थित नहि; हुनकर नाम पुरान गोदाम, मौखिक निर्देश आ लाभक सम्बन्धक माध्यमसँ उभरैत अछि। गोहिक बिम्ब आ ठूँठक नमी कथाक लोकमिथकीय संवेदना छथि, वैज्ञानिक जाँचक स्रोत नहि।

## सीमा

अध्यायक प्रमुख उपलब्धि कागजक निर्जीव गवाहीकेँ भौतिक भूगोलक सामाजिक इतिहाससँ जोड़ब अछि। मुदा मिलान-बही, गोदामक ताला खोलबाक अधिकार, मूल प्रमाणक अभिरक्षा आ दस्तावेजक स्वतंत्र परीक्षणक व्यवहारिक विवरण आरो सूक्ष्म होइत तँ दृश्य अधिक विश्वसनीय बनितथि। मूल पाठ जँ प्रतिलिपि आ मूल अलग राखबाक सावधानी देखबैत अछि, तखन आलोचनाकेँ एहि सावधानीकेँ ठोस उपलब्धि मानबाक चाही।

# अध्याय १६१ — फोनक कैद

## गोदामसँ फोन धरि : अन्यायक माध्यम-परिवर्तन

गोदाम खुललाक बाद कथा अचानक मौखिक धमकी आ फोनक गोपनीय आवाजपर केन्द्रित होइत अछि। बूढ़ मुवक्किलकेँ कानून, बैंक अथवा जाँचक स्वरक नकल करैत डराएबाक प्रसंग पुरान कागजी अन्यायक नब माध्यम अछि। आवाज निजी मुकदमा-संख्या आ घरक परिस्थिति जनैत अछि, ताहिसँ ठगीक तकनीक मात्र बाहरी अनजान फोन नहि रहैत; आन्तरिक जानकारीक सम्भावित रिसाव सेहो बनैत अछि।

कथाक ‘ककरो नहि कहू’ बला वाक्य व्यक्तिगत भयक कारागार अछि। सामूहिक सुननाइ एहि कारागारक पहिल तोड़ अछि। मीराक प्रतिरोध—कार्यालयक नाम, पद आ लिखित आदेश पूछब—गवाहीकेँ आचरणक नियम बनबैत अछि।

## बैंकक भाषा आ स्वत्वक उल्लंघन

फोनक ओहि पारसँ सुरक्षित खातामे रकम देबाक दबाव, घर सील करबाक धमकी आ नाम सार्वजनिक करबाक भय संग-संग प्रयुक्त होइत अछि। एहि संयोजने कथामे वित्तीय ठगीक सामाजिक मनोविज्ञान खुलैत अछि—धन गमएबाक भयक संग प्रतिष्ठा आ पारिवारिक गिरफ्तारीक भय। मीरा समय, संख्या, शब्द, माँगल रकम दर्ज करबाक आ गोपनीय विवरण नहि देबाक सलाह दैत छथि। ई कथा भीतरक समाधान अछि; कानूनक वास्तव मे लागू प्रक्रिया स्वयं प्रकाशित प्रमाण नहि।

सुरमणी देवी खेतपर ऋणक डर आ फोनपर खाताक डरकेँ एक सामाजिक इतिहासक दू चरण रूपमे देखैत छथि। एहिसँ तकनीकी ठगी स्थानीय शक्ति-असमानतासँ विच्छिन्न नहि रहैत।

## मधुकर प्रसाद आ प्रवेश-पुस्तक

रेकर्ड-घरक प्रवेश-पुस्तकमे मधुकर प्रसादक तीन प्रविष्टि भेटैत अछि—लाउक सिफारिश, हरिचरणक कागज आ चन्द्रपालक प्रतिनिधि रूपमे। ई आन्तरिक सूचना बाहरी फोन धरि पहुँचनाइक मार्गक प्रश्न उठबैत अछि। मधुकर गायब हेबाक खबरि आ ओकर भाड़ाक कोठलीक कथित कागज एखन आधिकारिक स्रोतसँ प्रस्तुत नहि; मीरा स्पष्ट रूपसँ खबरि कैँ गवाही नहि मानैत छथि।

ई भेद एतय महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ‘सी. बाबू’ सन संकेत पाठकमे चन्द्रपालक नाम जोड़बाक प्रवृत्ति उत्पन्न करैत अछि, मुदा कथाक अनुसन्धान एखन पूरा नहि भेल अछि।

## भाषिक शिल्प आ सीमा

फोनक अज्ञात आवाजमे सत्ता-स्वरक अभिनय कथाक रहस्यक नव स्तर उत्पन्न करैत अछि। एकटा छोट फोनक काँच गोदामक विशाल ताला-जेकाँ भयकारी होइत अछि—आकारक उलटबदल प्रभावी अछि। मुदा ठगीक क्रियाविधिक सभ दावाकेँ वास्तव विधिक अथवा तकनीकी स्थितिक रूपमे स्वीकार करब अनुचित; कथा सामाजिक भय-व्यवहारक रूपकात्मक पुनर्रचना करैत अछि।

# अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

## अधिकारक स्वरक नकल आ जवाबदेही

पिछला अध्यायक गोपनीय फोन एतय चन्ना गाछीमे सामूहिक सुनवाईक विषय बनैत अछि। अदालत, बैंक आ जाँच शाखाक धीमा स्वर, सूखल प्रशासनिक शब्द आ तत्काल भुगतानक माँग—सब मिलि आवाजक ‘मोहर’ रचैत अछि। कागजक मोहरक गोलाई जेकाँ कण्ठक लय नकल कएल जा सकैत अछि, मुदा लिखित आदेश आ सत्यापनक जिम्मेदारीक नकल सरल नहि। मीरा नकली अधिकारक सामने प्रश्नकेँ औजार मानैत छथि।

बूढ़ मुवक्किलक फोन सार्वजनिक सुनवाइमे रखलासँ निजी भय समुदायसँ साझा होइत अछि; तखनहुँ निजताको जोखिम अछि। कथा सामूहिक भागीदारी चुनैत अछि, पर सम्भावित पीड़ितक सहमति आ सुरक्षाकेँ प्रत्येक चरणमे ध्यान रखबाक अछि।

## प्रवेश-पुस्तक, किरायाक कोठली आ स्वर-अभिनय

मधुकरक रेकर्ड-घरमे तीन प्रवेशक पुरान सूची फेर जाँचल जाइत अछि। सकुनी द्वारा हरिचरण-संबद्ध व्यक्तिक भाड़ाक कोठलीक नजदीक उपस्थितिक स्मरण आरोपक नब सम्भावना अछि; ओकरा स्वतः अंतिम प्रमाण बनायल नहि गेल। कोठलीमे भेटल ‘बूढ़, बाहर बेटा, खेत, खाता’ सन संक्षिप्त विवरणकेँ सुरमणी देवी शिकारक नाप कहैत छथि। ई सूची मानवीय जीवनकेँ अपराधक उपयुक्ततताक वर्गमे घटेबाक निष्ठुरता देखबैत अछि।

भूतक अभिनय कएनिहार लोकक नकलवला आवाजक प्रसंग रंगमंच आ ठगीक विपरीत उपयोग खोलैत अछि। नाट्यक अभिनय दर्शककेँ सच देखेबाक साधन भऽ सकैत अछि; धोखाक अभिनय दर्शककेँ असत्यक विवश स्वीकृतिदिस धकेलैत अछि। एहि अन्तरक अध्यायगत विवेचन प्रभावी अछि।

## साझा रजिस्टरक उद्भव

मीरा सुनल वाक्य, समय, फोन संख्या, कागजक प्रति आ अलग साक्षीक सूची बनबाबैत छथि। सत्यव्रत दस्तावेजक अलग-अलग प्रतिलिपि सुरक्षित ठाम रखबाक प्रस्ताव करैत छथि। सूचना सामूहिक करब आपात प्रतिक्रिया अछि, मुदा निज जानकारी सार्वजनिक वितरणकेँ स्वतः उचित नहि बनबैत; कथाक पहिने स्थापित अनुमतिक नीति एहि नव माध्यममे सेहो लागू करबाक अछि।

भयक भाषा जखन खुलल सभामे प्रश्नक सामना करैत अछि, तखन ठगीक कथित देववाणी साधारण छलकपट बनि जाइत अछि। कथा आवाजक भावात्मक सत्ता घटेबाक अनुभव सफलतासँ रचैत अछि।

## सीमा आ अगिला कारण

मधुकर एखन अनुपस्थित अछि, हरिचरणक सम्बन्ध अधूरा आ ‘सी. बाबू’क अर्थ अनिर्णीत। एकरा पूर्ण खुलासा कहब मूल पाठक सीमा तोड़ब होयत। उलटे अगिला अध्यायमे ‘कागज हटाउ’ सन निर्देशक प्रतिध्वनि स्रोत-जाँचकेँ फोनसँ फेर अभिलेखागार धरि घुरा दैत अछि।

# अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

## अनुपस्थित पन्नाक भौतिक उपस्थिति

फोनक नकलसँ उत्पन्न डर ‘कागज हटाउ’ बला सम्भावित निर्देशमे बदलैत अछि। अदालतक ताला पर ताजा खरोंच, सत्रह नम्बर अलमारीक धूरिमे पएरक चिह्न, खाली डोरीक वलय आ पाछाँ अटकल कार्बन-छाप कथा भीतर अभावक दृश्य-सामग्री बनैत अछि। अपूर्ण अभिलेख केवल रिक्तता नहि; हटाओल गेल कागजक आकार आ लिखावट सँ प्रश्न उठि सकैत अछि। अनन्या धूरिक निशानक आगे प्रश्नचिन्ह जोड़ैत अछि—पएर नांगट छल अथवा मोलायम चप्पल, निष्कर्ष एखन खुलल अछि।

कार्बनक पाछुक उनटा अक्षरमे ‘मृतक प्रमाण-पत्र संलग्न’, ‘उत्तराधिकारी अनुपस्थित’ आ ‘एम. प्रसाद सेवा’क धुँधल संकेत देखल जाइत अछि। ई वस्तु अध्याय १५९क मृत्यु-तिथि विवादसँ जुड़ैत अछि, मुदा कार्बन-छाप स्वयं मुख्य कागजक पुनःप्राप्ति नहि।

## नागेश्वर झाक जीवित देह आ ‘मृत’ लिखित कागज

नागेश्वर झाक फाइल बन्धक, उत्तराधिकार, बाहर बसल पुत्र आ पोखरिक कातक जमीनसँ जुड़ल बताओल जाइत अछि। फोनक कथित शिकार-वर्ग ‘बूढ़, बाहर बेटा, खेत, खाता’ एहि व्यक्तिगत फाइलमे फेर देखाइत अछि। एहि साम्यसँ आन्तरिक अभिलेखक दुरुपयोगक प्रश्न गाढ़ होइत अछि।

जीवित मनुष्यकेँ कागजमे मृत कहबाक सम्भावना केवल आर्थिक अपराधक संकेत नहि, सामाजिक पहिचानक अस्थिरता सेहो अछि। तथापि वास्तविक नागेश्वरक मूल अभिलेखक श्रृंखला जाँचब बाकी अछि; लेखकीय दृश्यकेँ बाहरी न्यायिक निर्णय मानब नहि।

## परमानन्द, भिखारी लाल आ प्रमाणक मौन

परमानन्द नब लिपिक अछि; ओकर रात्रि-पहराक भूमिका आ हटाओल नामक प्रश्न उठैत अछि। भिखारी लालक ताला देखबाक पुरान अनुभव आ कैलाश-संबद्ध स्मरण अभिलेखीय सामूहिकता बुनैत अछि। मीरा हरिचरणक अनुपस्थितिक सम्बन्धमे अफवाह स्वीकार नहि करैत; केवल ‘अनुपस्थित’ लिखब चुनैत छथि। एहि एक शब्दक संक्षिप्ततामे बड़का प्रमाणगत संयम अछि।

रजिस्टरमे ‘१७/सी’क छोट चिन्ह आरुणि द्वारा ‘सत्रह नम्बर अलमारी’ आ ‘सी बाबू’सँ जोड़ि देखल जाइत अछि। एहि द्व्यर्थता कैं अध्याय शेष रखैत अछि; अगिला अध्यायमे संस्थागत खण्ड-नामक जाँचतले एक सम्भावित अर्थ स्पष्ट होयत।

## रूपक, आवृत्ति आ सीमा

धूरिक ‘पुरान मुंशी’ रूपक आ कार्बनक दबाव-धारण स्मृति-विषयकैं वस्तु-स्तरपर सघन करैत अछि। मुदा धूरि पर चिह्न वा कागजक गोंदक आकृति समय, कर्ता वा घटना निश्चित नहि करैत; ओ केवल नब मिलानक आधार बनैत अछि। कथा लोक-भूतक संकेतकैं जाँचक साधनसँ अलग रखैत अछि, जे एकर मुख्य बौद्धिक उपलब्धि अछि।

# अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

## १७/सी : संकेतक दू सम्भावित अर्थ

अध्याय १६३क ‘१७/सी’ एतय अदालतक आन्तरिक अभिलेख-संरचनाक सन्दर्भमे पढ़ल जाइत अछि। पुरान वर्गीकरणमे ‘सी’ खण्ड विवादित उत्तराधिकार, बन्धक आ मृत्यु-प्रमाण सम्बन्धी फाइलक ठाम कहल जाइत अछि। आरुणि एहि सूचना-कठिनताकेँ बाहरी फोनकरनिहारक भीतरक ज्ञानक सम्भावना मानैत अछि, संगहि कोनो आन्तरिक सहायकद्वारा मार्गदर्शनक विकल्प खुलल रखैत अछि। ‘सी’ केँ तुरन्त चन्द्रपालक आद्याक्षर घोषित नहि करब स्रोत-पाठक सावधानी अछि।

सत्रह नम्बर अलमारी, कार्बनक छाप आ बूढ़ व्यक्तिक जीवित बयान एक संग जाँचला पर अन्तःसंगति बढ़ैत अछि, मुदा प्रत्येक स्तरक स्वतन्त्र स्रोत देखेनाइ आवश्यक रहैत अछि।

## परामर्श-केन्द्र आ मधुकरक एजेंसी-नाम

नागेश्वरक घरक पुरान रसीदपर ‘चन्द्रपाल परामर्श केन्द्र’क मोहर आ मेजक भीतर ‘एम. प्रसाद सेवा’ मुद्रित लिफाफा भेटब फोन-धमकी आ कागजी भूमि-दावाक सम्भावित साझा पथ बनबैत अछि। ई रसीद तथा लिफाफा कथाक भौतिक संकेत छथि; सम्बन्धक पूर्ण ठोस प्रमाण अभी पूरा नहि।

हरिचरणक दृष्टि दराजपर ठहरबाक नोंद अनन्या करैत अछि; नजरक दिशा सन्देहक प्रश्न उठबैत अछि, अन्तिम दोषनिर्धारण नहि। एहि छोट मनोवैज्ञानिक भेद पर आलोचनाक विश्वसनीयता निर्भर अछि।

## डरक तीन डोरी आ श्रमिक साक्षित्व

नाम काटि देबाक डर, पेंशन रुकबाक डर आ मृत घोषित कऽ देबाक डर—आरुणिक त्रिविध वर्गीकरण सामाजिक नियन्त्रणक अलग-अलग साधन खोलैत अछि। सुरमणी देवी पुरान

लोक-ज्ञान ‘सभ जनैत अछि’केँ साक्ष्यमे बदलबाक आग्रह करैत छथि: जे जनैत अछि, से स्रोत सहित कहल जाए। परमानन्दक सी-खण्ड स्मरण, गृहिणीक रसीद आ अन्य बूढ़ स्त्रीक बयान गामक श्रम-स्मृतिसँ जुड़ैत अछि।

लोकसभा रसीद, लिफाफा, प्रवेश-पुस्तक आ मौखिक कथन अलग-अलग पढ़ैत अछि; ओ निर्णय नहि सुनबैत। एहि रूपमे चन्ना गाछी न्यायालयक स्थानापन्न नहि, न्याय लेल प्रमाण-संग्रहक सामाजिक स्थल अछि।

## छाया-पेटक संरचना आ मूल्याङ्कन

अध्यायक ‘पेट’ रूपक अपराधक कई बाहरी मुँहक पाछाँ एक सम्भावित केन्द्रक खोजकेँ नाटकीय बनबैत अछि। तथापि ‘एकहि पेट’क सूक्ति जालक वास्तविक बहुकेन्द्रित जटिलताकेँ किछु सरल करैत अछि। मूल पाठ स्वयं चन्द्रपालक अनुपस्थिति स्वीकार करैत अछि; ओकर नाम अनेक कागजक रेखामे आएब अन्तिम आरोपपत्र नहि। ई अपूर्णता सार्थक रहैत अछि, कारण सामाजिक क्रोध दस्तावेजी क्रम सँ नियन्त्रित रहैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १६०–१६४

## मृतक-सहमति सँ नव डिजिटल दाँत

१५९क नकल औंठा आ असम्भव तिथि १६०मे गोदामक कर्ज-बही आ छाह-मोहरसँ मिलैत अछि। १६१मे कथा आकस्मिक रूपसँ कागजक जालकेँ धमकीभरल फोनक स्वरमे देखबैत अछि; १६२मे आवाजक सामाजिक नकल सामूहिक सुनवाईमे प्रश्नक सामना करैत अछि। १६३मे नब माध्यम फेर पुरान अभिलेख हटेबाक प्रयत्नसँ जुड़ैत अछि, आ १६४मे ‘१७/सी’क वर्गीकरण कागजी/फोन-जालक मध्यस्थ कड़ी बनैत अछि। कथा माध्यम बदलैत अछि, मुदा अधिकारक नकलक मूल युक्ति बनी रहैत अछि।

## मोहरक रूपसँ स्वरक अभिनय

असली आ छाह-मोहरक भेद, बैंक-जाँचक बनावटी आवाज, लिखित अधिकारक माँग आ रेकर्ड-घरक ‘सी’ खण्ड—सभ माध्यममे मान्यता प्राप्त रूपक दुरुपयोग देखल जाइत अछि। एहि तुलनामे अनुपस्थित उत्तरदायित्व मुख्य कसौटी बनैत अछि। नकलक चिन्ह देखब प्रमाण-खोजक प्रारम्भ अछि, जँ कि अफवाह आ रंगमंचक अलौकिक छाया कथाक अनुभवात्मक स्तरपर रहैत अछि।

## व्यक्तिगत भयक सामूहिक रूपान्तरण

बूढ़ मुवक्किल फोन अकेले सुनि स्तब्ध होइत अछि; सामूहिक सुनवाईमे ओकर स्वर गवाही बनैत अछि। सुरमणी, शारदा, सकुनी आ अन्य श्रमिक-पात्र घरेलू अनुभवक माध्यमसँ अज्ञात ठगक गुप्त सूचना-स्रोत पर प्रश्न उठबैत छथि। एहि स्त्री आ वृद्धक उपस्थितिसँ कथाक नायकत्व एकल अधिकारीक हाथमे नहि सिमटैत।

## आन्तरिक पहुँच आ अनुमानक मर्यादा

मधुकर प्रसादक प्रवेश-पुस्तक, परमानन्दक कार्यभूमिका, नागेश्वर झाक जीवित स्थिति आ ‘एम. प्रसाद सेवा’क लिफाफा एक प्रश्नमालाक सामग्री छथि। ‘सी बाबू’ आ ‘सी-खण्ड’क सम्भावित सम्बन्धकेँ निर्णायक एकार्थमे बाँधब स्रोतकेँ विकृत करत। मूल पाठमे मीरा आरुणिक दू व्याख्याक बीच खाली ठाम छोड़ैत छथि। ई खाली ठाम नव्य न्याय-प्रेरित आलोचनाक नैतिक केन्द्र अछि।

## उपलब्धि आ अवशिष्ट प्रश्न

गोदामक अचानक खुलासा, मधुकरक गायब होएब, कार्बन-छाप भेटब आ सी-कक्षक दस्तावेज सघन रहस्य उत्पन्न करैत अछि। कतिपय सहायक घटना अत्यधिक अनुकूल क्रममे घटैत अछि, जकर कारण शोधक वास्तविक कठिनताक अनुभूति कुछ कम भऽ सकैत। तथापि पाँच अध्याय एक नब प्रश्न ठोस करैत अछि: ककर लाभ लेल ककर निजी नाम, वित्तीय भय आ न्यायालयी अभिलेख एक संग उपयोग भेल? एहि प्रश्नक निष्कर्ष एखन बाकी अछि।

# अध्याय १६५ — छायाक देह

## सी-कक्षसँ सी-१७ पेटी धरि

अध्याय १६४क ‘१७/सी’क बाद एहि अध्यायमे दफ्तरक पिछुआरी गली, पुरान संग्रह-कक्ष आ नदी-पार ढुलाइ प्रश्नक केन्द्र बनैत अछि। संख्या उलटि ‘सी-१७’ लिखल जाएब अंकगत छलक एक सम्भावना रूपमे आएल अछि। मीराक आग्रह पहिने रोशनदानक ऊँचाइ, दिशा आ दृश्य लिखबाक अछि; आरुणि देबाल चढ़ि कागज निकालबाक जल्दबाजी नहि करैत। एहि छोट अनुशासनसँ कथा बाल-जिज्ञासा आ अभिलेख-जाँचक सावधानी एकत्र करैत अछि।

मधुकरक कथित कोठलीक चटाइ नीचाँ भेटल ‘चारि पेटी’क ढुलाइ-रसीद, ‘सी गोदाम’क गन्तव्य आ ‘मूल प्रति सुरक्षित’ लिखल टुकड़ा हर चरणमे प्रश्न बढ़बैत अछि। रसीदक धुँधल हस्ताक्षर स्वयं दोषी चिन्हैत नहि; तथापि पुरान कार्यालयक फाइल आ नदीपारक बखारीक सम्भावित सम्बन्ध सघन बनैत अछि।

## मल्लाहक श्रम-स्मृति आ नदीक भूगोल

धरनी महतोक मल्लाह-बयान तेतरि घाटक पुरान कोठी-बखारीक दिशा देखबैत अछि। नाव चलनाइ, रस्सीक गाँठि आ भारी पेटी घिसिटबाक निशान नदीक श्रम-भूगोलक गवाही बनैत अछि। ई ग्रामीण ज्ञान प्रशासनिक नक्शाक बाहर रहितो महत्त्वपूर्ण संकेत दैत अछि। चन्ना गाछीक ठूँठपर कागजक रेशा अटकल रहबाक दृश्य प्रतीकात्मक अछि; ओकरा वस्तुगत अपराध-प्रमाण मानि नहि, साधारण कागजक सम्भावित दिशानिर्देशक रूपमे पढ़बाक चाही।

## व्याख्याक सीमा आ अगिला प्रश्न

अध्यायक अन्तमे सी-कक्ष, सी-१७ पेटी, सम्भावित सी-गोदाम आ तेतरि घाटक श्रृंखला बनैत अछि। ‘इमली घाटक कोठार’ अगिला अध्यायक प्रामाणिक शीर्षक अछि, जबकि एहि

अध्यायक कथामे तेतरि घाट कहल गेल अछि; एहि नाम-संबन्धक समाधान मूल पूर्ण भूगोल-जाँचक बादे होयबाक चाही। गोहिक मुख घाट दिस होयबाक लोककथा संकेतकेँ सत्यव्रत दर्ज नहि करैत, मल्लाहक कथन दर्ज करैत छथि। ई भेद अनुकरणीय अछि।

# अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

## धानक बखारीमे मृतकक कागज

चन्ना गाछीसँ नदीक घाट पर पहुँचल टोलीक लक्ष्य पुरान कोठी-बखारीक भीतरक वस्तु देखब अछि। कोठारक पुरान धान-भण्डारणक सामाजिक उपयोग आ एखन भय-दस्तावेज रखबाक सम्भावना एक तीव्र विरोध रचैत अछि। वस्तुकेँ हात-पात कऽ उठेबाक बदला पेटीक रंग, रेखा, तिथि आ फाइलक क्रम लिखल जाइत अछि। ‘सी-१७’ अंकित पेटी भेटला पर पहिनुक ढुलाइ-रसीदक आशंका ठोस दृश्य भेटैत अछि, मुदा पेटीमे प्रत्येक वस्तुक मूल स्रोत स्वतंत्र परखबाक अछि।

गोदामक कादोमे पेटी घिसिटबाक निशानक आयु संबंधी भिखारी लालक अनुमान सीमित उपयोगक छेक; वर्षाक बादक आ पुरातन चिह्नक अनुभवी भेद ठोस तिथि नहिँ बनैत।

## पाँच बही आ आवाजक अभ्यास

बूढ़ स्त्रीसभ औंठा अथवा नामक वर्तनीपर आपत्ति करैत छथि। मेजक दराजमे पुरान ध्वनि-रिकार्डिंग साधन आ ‘अहाँक खाता जाँचमे अछि’, ‘ककरो नहि कहू’ सन अभ्यास-वाक्य फोन-कैद प्रसंगसँ सीधा जुड़ैत अछि। धानक कोठार एखन लिखित सहमति आ नकल आवाजक समानान्तर कार्यशाला बनि देखाइ पड़ैत अछि।

पाँचम पातर बहीक अन्तिम ‘नब ध्वनि सूची तैयार। अगिला खेप: नदी पार’ कथाकेँ नव भौगोलिक स्तरपर लऽ जाइत अछि। यन्त्रक उपस्थिति नकल आवाज ककर बनौलक से स्वयं सिद्ध नहि करैत, मुदा पाठकक ध्यान संस्थागत तैयारीक सम्भावनापर केन्द्रित करैत अछि।

## निजता आ नाम-संग्रहक मर्यादा

मीराक सार्वजनिक पाठमे अपराधक पद्धति कहल जाइत अछि, पीड़ितसभक पूरा नाम अनुमति बिनु नहि। ई अध्यायक नैतिक उपलब्धि अछि जे दृश्यात्मक खोज रोमांच बनैत होइतो प्रभावित परिवारक निजी जानकारीक तमाशा नहि बनैत। नामक भिन्न वर्तनीपर स्त्रीक आपत्ति ईहो कहैत अछि जे गलत अक्षर केवल व्याकरणक दोष नहि, जीवित व्यक्तिक अस्तित्वपर चोट अछि।

## शीर्षकगत प्रश्न

‘इमली घाटक कोठार’ शीर्षकक भीतरक अध्याय-घटनाक अधिकांश वर्णन ‘तेतरि घाट’पर केन्द्रित अछि। भूगोलमे ई दुनू नाम समान स्थानक स्थानीय पर्याय छथि कि रचना-निरन्तरताक भिन्न बिन्दु, एखन स्रोतक भीतर स्पष्ट नहि। समीक्षा ई तथ्य चिह्नित रखैत अछि; अपनासँ कोनो काल्पनिक स्थल-समीकरण नहि बनबैत।

# अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज

## भूगोलक सीमा पार कएल नकल स्वर

पाँच लाल बहीक ‘अगिला खेप: नदी पार’क संकेतपर टोली नावसँ पार जाइत अछि। यात्रा बीच आरुणिक फोन पर अज्ञात आवाजक भय-दावा—‘लोकेशन देखाइत अछि’—तकनीकी सर्वज्ञताक अभिनय बनैत अछि। भिखारी लालक उत्तरमे नकल आवाजक वास्तविक सीमाक व्यंग्य देखाइत अछि। नदी शरीरकेँ रोकेनिहार दूरी अछि, मुदा फोनक धमकी बिना नावक कान धरि पहुँचैत अछि।

कथामे नकली बेटाक कण्ठ सुनि भयभीत कमला देवीक अनुभव महत्त्वपूर्ण अछि। हुनका पहिने पानि देल जाइत अछि, फेर हुनकर इच्छा अनुसार बयान लेल जाइत अछि। एहि मानवीय गति सँ तकनीकी अपराधक विवेचन पीड़ितक गरिमासँ विच्छिन्न नहि रहैत।

## नामक परिस्थितिजन्य नाप आ जनसेवा केन्द्र

एक युवक लग भेटल नाम-पर्चीमे ‘माय कानत’, ‘बाप जल्दी टूटत’, ‘बेटा दुबई’ सन लिखावट शिकारक सामाजिक अलगावकेँ व्यापारिक संकेत बना दैत अछि। नदी-पारक जनसेवा केन्द्रमे सरकारी योजना-पोस्टर, कम्प्यूटर आ माइक्रोफोनक दृश्य सेवामूलक ढाँचाक सम्भावित दुरुपयोग देखबैत अछि। सेवा-व्यवस्था स्वयं अपराध नहि; ओकर निजी सूचना ककर हाथ पहुँचल, से जाँचक प्रश्न अछि।

फोनपर पग-पग डेराबयबला आवाज आ पीड़ितक मूल बेटाक वास्तविक संवादक भेद कथा भीतर भावात्मक पुनर्स्थापन अछि। मुदा आवाजक साँस अथवा लय अकेले पहचानक निर्विवाद वैज्ञानिक कसौटी नहि होइत; स्वतन्त्र पुष्टि आवश्यक रहल।

## उपलब्धि आ शेष दूरी

कथाक विशिष्ट बल सार्वजनिक सुनवाईसँ निजी भरोसाक पुनर्निर्माणमे अछि। नकली आवाज पकड़ायल, जनसेवा केन्द्र जाँचतले आएल, मुदा ‘असल गला’ एखन दूर कहल गेल अछि। भूतक कान चमकबाक दृश्य लोकमिथकीय संकेत छथि, यथार्थ कथित अभियुक्तक चिन्हारि नहि।

# अध्याय १६८ — शहरक गला

## गामक निजी नामक शहरी यात्रा

नरेशक कथन अनुसार मोबाइल कम्पनीक चिन्हधारी व्यक्ति नि:शुल्क कम्प्यूटर-सफाइ आ कागज स्कैनक वचन दऽ गामक प्रतिलिपिसभ शहर लऽ गेल। एकटा साधारण डिजिटल सेवा-प्रस्ताव कथामे सूचना-संग्रहक प्रवेश-द्वार बनैत अछि। मीरा प्रश्न बदलैत छथि: नकल आवाज कोना बनल, ताहिसँ पहिने निजी मुकदमा, परदेशी पुत्र, बैंक आ पेंशनक सूचना शहर धरि कोना पहुँचल? ई परिवर्तन तकनीक-निन्दाक बदला संस्था-उत्तरदायित्वक समीक्षा प्रस्तुत करैत अछि।

## एम. सर्विसेज आ सी-ग्रुपक परत

शहरक काउण्टरक ‘पुरान कम्पनी बन्द’ बला उत्तरकेँ मीरा पते, कम्प्यूटर आ रजिस्टरक निरन्तरतासँ परखैत छथि। अधिकारीक नकल स्वर, डेटा-दलाली आ ‘सी-ग्रुप’क सामग्री जाँचमे अबैत अछि। स्थानीय पुलिस प्रारम्भमे साधारण साइबर घटना मानैत अछि; सत्यव्रतक पृष्ठभूमि-क्रम सुनलाक बाद मामला व्यापक सूचना-दुरुपयोग दिस विकसित होइत अछि। कथापात्रक एहि अनुभवकेँ वास्तविक पुलिसक विधिक निर्णय रूपमे नहि, उपन्यासक घटनाक्रम रूपमे पढ़ब उचित अछि।

शहरक शोरक चित्र गामक सन्नाटाक उलटा अछि—नगरे अपराधक कारण नहि, किन्तु अनाम भीड़ सूचना-चोरीक चिन्हारि कठिन करैत अछि।

## पीड़ितक कथा आ अपराधक मानचित्र

मीरा सार्वजनिक राति-पाठमे निजी दुखक विवरण हटाकऽ जनसेवा केन्द्र, प्रतिलिपि, डेटा-दलाल, आवाज-अभ्यास आ ‘चन्द्र २’क सम्बन्धक नक्शा प्रस्तुत करैत छथि। ई अभिलेखीय नैतिकताक स्पष्ट उदाहरण अछि। नामक अधिकार व्यक्ति लग, अपराधक

पद्धतिक खुलासा समुदाय लग—ई समीक्षाधीन परियोजनाक दोसर चरणक प्रमुख सिद्धान्त बनैत अछि।

‘चन्द्र २’ एखन एक कोड अछि; चन्द्रपालक व्यक्तिगत अपराधक तत्काल निष्कर्ष एहि आधारपर नहि निकालल जाए सकैत। कथाक अन्तिम ‘असली कण्ठ एखन पूरा उजागर नहि’ बला स्वीकृति उपयोगी अपूर्णता अछि।

# अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

## अंक जोड़ल नामक द्व्यर्थता

‘चन्द्र २’ नामक खोजमे चन्द्र सेवा कार्यालयक नब कोठली भेटैत अछि। कागजक कोडमे अंकक प्रयोग एक साथ चिन्हारिक संकेत आ आत्मरक्षाक बहाना बनैत अछि। चन्द्रमोहनक तर्क—‘चन्द्र’ अनेक लोकक नाम—कथा भीतर वास्तविक भाषिक बहुलताकेँ याद करबैत अछि; केवल नाम-साम्यसँ दोष निर्णय अनुचित अछि। सत्यव्रत एहि तर्कक जाँच पदार्थ, भूमिका आ अन्य अभिलेखक सहायतासँ बढ़बैत छथि।

## भावनात्मक संकेत आ संस्था-स्वर

वृद्ध सहायता, भूमि-विवाद आ परदेशी पुत्र शीर्षकवला फाइलमे मुकदमा-संख्या, बैंक-शाखा आ ‘भावनात्मक संकेत’क अलग स्तम्भ देखाओल गेल अछि। पाछुक कोठलीमे ‘अदालत अधिकारी’, ‘बैंक सत्यापन’, ‘पुलिस चेतावनी’ आ ‘पुत्र संकट’ स्वरक अभ्यास पन्ना कथा भीतर संस्थागत विश्वासकेँ निजी शोषणक सामग्री बनबैत अछि। एहि दृश्यक अर्थ केवल डिजिटल साधनक भय नहि; पहिनेसँ लम्बल मुकदमाक मानसिक घावकेँ अपराधक पुँजी बनाओल जाएब अछि।

पीड़ितसभकेँ स्वयं तय करबाक अधिकार अछि जे ओकर कथा सार्वजनिक लिखल जाय कि ‘गोपनीय’ रहय। एहि अभ्याससँ अनुसन्धान अपन नैतिक सीमाक बोध देखबैत अछि।

## चन्द्र १क अनुत्तरित दरबाजा

कोठलीक भीतर ‘चन्द्र १’क उल्लेख दोसर स्तरक जाँच खोलैत अछि। ई चन्द्रपालक पक्का संक्षिप्त नाम अछि वा ककरो आन व्यक्तिक पहिचान, मूल पाठ उत्तर नहि दैत। कृतिक कथात्मक शक्ति एहि असम्पूर्णतामे अछि; चन्द्रमोहन बाहरी दरबाजा, भीतरी निर्णयकर्ता एखन अनाम रहैत अछि।

गोहिक एकटा चमकैत आँखि आ कारी/उज्जर प्रेतक छवि अध्यायक नैतिक द्वन्द्वक लोकरूप अछि, दस्तावेजी प्रमाण नहि। बहुते संकेतक संयोग सघन अछि, मुदा इनका नाम-बोधक तुरन्त निश्चयमे बदलि देब मूल पाठक अनुसन्धान-धैर्यक विरुद्ध होयत।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १६५–१६९

## सी-कक्ष, पेटी, कोठार आ शहरक काउण्टर

१६५मे ‘सी-१७’क ढुलाइ-संकेत नदी घाट दिस प्रश्न बढ़बैत अछि। १६६मे कोठारक पेटी आ पाँच बही भेटैत अछि। १६७मे नदी पारक जनसेवा केन्द्र नकली परिवार-स्वरक प्रयोगसँ जुड़ैत अछि। १६८मे ग्राम-निजता शहरक स्कैन आ डेटा-दलालीसँ प्रभावित होइत अछि। १६९मे ‘चन्द्र २’क कार्यालय व्यक्तिगत नामक बाजारीकरणक नब चरण बनैत अछि। एहि क्रममे कागजक यात्रा अधिक व्यापक अछि, केवल एक अपराधीकेँ पकड़बाक दौड़ नहि।

## नदी : सीमा आ सम्पर्कक प्रतिलोम

नदी पहिले गामक देहकेँ दूरीमे रखैत छल; फोन ओ दूरी तत्काल पार करैत अछि। नाविकक रस्सी, घाटक कादो, कोठारक नमी आ डिजिटल फोनक घण्टी एकहि भौगोलिक अनुभवक बहुविध वस्तु छथि। लोकमिथकीय गोहि एहि विविध माध्यमक बीच जुड़ल रहैत अछि, मुदा ओकर छपाक कखनो दस्तावेजी जाँचक स्थान नहि लैत।

## नामक निजता आ सामुदायिक शोधक सीमा

कमला देवीक बैंक-विवरण सार्वजनिक नहिं पढ़ल जाएब, अनिच्छुक लोकक नाम ‘गोपनीय’ लिखब आ अपराधक पद्धति मात्र साझा करब—एहि सीमासभसँ उपन्यास सामूहिक न्याय-बोधकेँ सनसनीसँ अलग करैत अछि। जाँचक नामपर पीड़ितक निजी सामग्रीक नव चोरी नहि होय, ई अध्यायसभक दोहराएल, मुदा महत्त्वपूर्ण अनुशासन अछि।

## मुख्य संशय आ पाठगत निरन्तरता

‘इमली घाटक कोठार’क शीर्षक भीतर तेतरि घाटक नामक पुनरावृत्ति स्थान-जाँच चाहैत अछि। ‘सी-१७’क उलट-लिखावट, ‘सी-ग्रुप’, ‘चन्द्र २’ आ अन्ततः ‘चन्द्र १’क अर्थ चरणबद्ध स्पष्ट होइत अछि, मुदा सबकेँ एकहि व्यक्तिक हस्ताक्षर मानबाक प्रमाण नहि। कथा अपन पाठककेँ एही अनिश्चितताक साथे राखैत अछि।

## सौन्दर्य आ सीमा

पुरान घाटक बखारीसँ शहरक ध्वनि-कार्यालय धरि वस्तु-परिवर्तन उपन्यासक व्यापक सन्दर्भ निर्माण करैत अछि। तथापि प्रत्येक चरणमे नब सामग्री एकदम समयपर भेटबाक कारण संयोगक घनता बहुत बढ़ैत अछि। आलोचनात्मक मूल्य ई नहि जे प्रत्येक खुलासा अन्तिम सत्य अछि; मूल्य ई जे पात्रसभ प्रत्यक्ष, स्मरण, अनुमान आ लोकप्रतीककेँ अलग रखबाक चेष्टा छोड़ैत नहि।

# अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

## पितृ-स्वर : अधिकारक नाम आ तकनीकी पुनर्निर्माण

चन्द्र २क कार्यलयसँ उठल प्रश्न एहि अध्यायमे ‘चन्द्र १’क निश्चित व्यक्तिनाम खोजबाक बदला ओकर कार्यप्रणाली पहिचानबाक दिशामे बढ़ैत अछि। ‘पुरान भरोसा-सूची’क भीतर न्याय-प्रतीक्षा, परदेशी सन्तान आ पारिवारिक निर्भरता कमजोर ठामक रूपमे चिन्हित अछि। चन्द्रमोहन जे सूची छापल कागज, सन्देश अथवा स्मृति-साधनसँ पहुँचनाइक बात कहैत अछि, ओ अपने जालक ऊपरक नायकक नाम नहि बतबैत। बीचक पन्नापर ‘चन्द्र १: पितृ-स्वर’ मिलनाइ व्याख्याक परिवर्तन अछि—कोड व्यक्ति सेहो भऽ सकैत अछि, मुदा ‘बाबू’, ‘काका’, ‘पण्डित’ अथवा अदालतक स्वर जेकाँ सामाजिक अधिकारक नकल सेहो।

सत्यव्रतक शंका आ आरुणिक प्रतिप्रश्न एतय सार्थक बहुकण्ठ अछि। बटुकनाथ अथवा चन्द्रपालक नामक प्रतिष्ठा एहि जालमे उपयुक्त हो सकैत अछि, मुदा केवल प्रतिष्ठित नामक श्रव्य प्रयोगसँ ओहि नामक व्यक्तिक प्रत्यक्ष सहभागिता सिद्ध नहि होइत। एहि भेदक आधारपर मिथकीय पितृ-अधिकार आ डिजिटल फान्दक सम्बन्ध आलोचनात्मक रूपसँ देखाओल गेल अछि।

## मोहनलालक कमरा सात आ भय बनाबयवला पाण्डुलिपि

पुरान टाइपिंग गलीक कमरा सातमे मोहनलाल झाक मोहर, स्कैनर, माइक्रोफोन, स्पीकर, लाल ‘सी-एक’ फाइल आ ‘पिता’ एवं ‘अधिकारी’ लिखल स्मृति-साधन भेटैत अछि। कथामे लिखल नकल-वाक्य—अकेला करू, पुरान मुकदमा याद दिअ, सम्बन्धीक नाम लिअ, अधिकारक आवाज बनाउ, धन माँगू—भय-निर्माणक क्रम प्रस्तुत करैत अछि। ई सूची ठगीक तकनीकी विधि बताबय लेल नहि, शोषणक भाषा पहिचानबाक लोक-शिक्षाक रूपमे कथा भीतर अबैत अछि।

मोहनलाल अपन काज केवल आलेख तैयार करब कहि अलग रखबाक प्रयत्न करैत अछि। मीरा शब्द-निर्माणक सामाजिक परिणति पर प्रश्न उठबैत छथि। मोहनलालक स्वीकारमे चन्द्रमोहन, मधुकर आ आन दलालक उल्लेख अछि; ई पात्रक कथन अछि, स्वतंत्र न्यायिक निष्कर्ष नहि। लेखन स्वयं नैतिक मूल्यसँ शून्य तकनीक नहि रहि जाइत—ई अध्यायक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रतिपादन अछि।

## नदीक गोहि, सार्वजनिक प्रतिपाठ आ सीमा

चन्ना गाछीपर धौंसक वाक्यक उलटा अर्थ लोकक सोझाँ पढ़ल जाएत। कमला देवी अपन रकमक हानिसँ अलग भय पर नियंत्रण घुरबाक अनुभव बतबैत छथि। भूतसभक कबड्डी आ स्क्रीनक हरियर झिलमिलाहट नदीक गोहिक आँखिमे उतरब पुरातन भय आ नब तकनीकी संसारक लोक-अलौकिक सेतु अछि। मुदा नाटकीय कमरामे जालक लगभग पूरा लेखनसामग्री एक संग भेटबाक सुविधा सम्भावना सम्बन्धी प्रश्न उठबैत अछि। तइयो ‘चन्द्र १’कैं मुखौटा मानबाक संभावना खुलल रखब घटनाक अनिश्चितता आ कथात्मक गहराइ दुनू सुरक्षित करैत अछि।

# अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

## कानवाली अदालत : सरकारी न्यायालयक समांतर स्थल

अध्यायमे चन्ना गाछीक ठूँठ लग तीन पाथर राखल जाइत अछि—‘नाम’, ‘डर’ आ ‘गवाही’। बीचमे कोनो ऊँच आसन अथवा मोहर नहि। मीरा पहिने घोषणा करैत छथि जे एतय सरकारी फैसला वा अपराधक दण्ड नहि सुनाओल जाएत। जे पीड़ित बाजय नहि चाहैत, ओकर मौनक सेहो अधिकार रहत। कथा न्यायालयक प्रतिरूप रचैत अछि, मुदा ओकर विधिक अधिकारक अनुकरण नहि करैत; ई श्रवणक सामुदायिक ढाँचा अछि। सत्यव्रत किनारपर बैसि सुनबाक अभ्यास करैत छथि, ताहिसँ पात्रक पहिनुक अहंकारसँ अनुवर्ती आत्म-संशोधनक गति स्पष्ट होइत अछि।

कमला देवी मोबाइलमे कैद भयक विवरण सुनबैत छथि, लक्ष्मण यादव खेतक बदलल नाप, परदेशी पुत्र मातृ-संवादक दूरी, आ शिवनारायण मिश्र भयकारक नमूना-पत्र रचबाक पूर्व भूमिका स्वीकार करैत छथि। एक अनाम स्त्रीक देहरीक दबावपर कोनो कैमरा नहि आ नामक सार्वजनिक उद्घोषणा नहि—ई दृश्य सामूहिक न्याय आ व्यक्तिगत निजताक आवश्यक दूरी बनबैत अछि।

## रंगक गाँठि : साक्ष्यक श्रेणी-विभाजन

अनन्या लाल धागा स्वयं देखल घटना लेल, पीयर सुनल कथन लेल, आ कारी भय वा अनुमान लेल बँटैत छथि। ‘लाल कम, पीयर बेसी, कारी सभसँ बेसी’क अन्तिम दृश्य लोकसभाक ज्ञानगत दशा उद्घाटित करैत अछि। कारी धागा झूठ नहि, भयक इतिहास अछि; मुदा ओकरा प्रत्यक्षक बराबर मानल नहि जा सकैत। ई नव्य न्यायक प्रमाण-विवेककेँ मूर्त शिल्पमे परिवर्तित करबाक सफल उदाहरण अछि।

भिखारी लाल अपन पुरान चाबी सुनबाक प्रतीक रूपमे टाँगैत अछि; शिवनारायणक ‘बचाव-पत्र’ अपराध-भाषाक लोकभाषीय प्रत्युत्तर बनेबाक प्रयत्न अछि। कारी आ उज्जर भूतक

दृश्य पाठककेँ अलौकिक कथा-जगतमे रखैत अछि, पर घटना-आधारित जांचसँ पृथक। एहि स्तरभेदक संग लेखकक सामुदायिक नायकत्व प्रकट होइत अछि।

## दण्डबिना सुधार आ आलोचनात्मक जोखिम

मीरा शिवनारायणसँ त्वरित दण्डक बदला आगाँक जिम्मेदारी पूछैत छथि। ई सुनवाई स्वीकारोक्ति आ सुधारक सम्भावना जनमबैत अछि; तथापि प्रत्यक्ष पीड़ितक क्षति-पूर्ति, औपचारिक जाँच आ वास्तविक विधिक उपचार स्वयं सामुदायिक घेरासँ पूरा नहि भऽ सकैत। बालपात्रसभक प्रत्येक कथन तीक्ष्ण सूत्र बनि उठैत अछि, जे कखनो अत्यधिक शिक्षात्मक सुनाइत अछि। मूल दृश्य एही सीमा बावजूद सशक्त अछि: जे भय घरमे फुसफुसाइत छल, से आब साक्ष्यक अलग-अलग प्रकारमे बोलबाक अवसर पबैत अछि।

# अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

## पहिने सुनब, तकर बाद वर्गीकरण

पछिला अध्यायक रंगीन गिट्ठऽसभ एहि अध्यायमे पुनः खोलल जाइत अछि। मीरा प्रत्यक्ष, श्रुत आ भयक बीच भेद रखैत छथि, अनन्या तीन अलग टोकरी बनबैत अछि। लाल धागामे लक्ष्मण यादवक बदलल खेत-नक्शा आ एक स्त्रीक अस्पतालवाला दिनक विवादित औंठा छाप जाँचल जाइत अछि। पीयर धागामे मधुकर बाबाक सर्वेक्षणक सुनल बात अछि, जकर कथन-स्रोत अलग लिखब अनिवार्य कहल गेल अछि। कारी गिट्ठऽमे थानाक नाम सुनितहि देह काँपबाक स्मृति अछि—एतय भय सत्य अनुभूति होयतो बाहरी घटनाक प्रमाणक बदला नहि।

आरुणि आ अनन्याक सूचीमे कियो शंकाकेँ दोष सिद्ध करैत नहि। कथाक अनुशासन विशेषतः ई अछि जे पीयरकेँ लाल मानि लिखलासँ पछिला जाँच कठिन होयत। सत्यव्रतक प्रश्न पूछबाक अधिकार सिद्धान्तात्मक प्रस्तुति अछि, मुदा माटि, कागज आ धागाक दृश्य ओकरा अमूर्त रहय नहि दैत।

## श्रमिक बालक फुलेसर आ भीतिक व्यापक अर्थ

फुलेसरक अनुभव—मोबाइलसँ नहि, बाबूजीक पढ़ाइ वा मजदूरीक धमकीसँ डर—अध्यायक अर्थ ठगीक सीमासँ बहार लऽ जाइत अछि। भयक सामाजिक पुनरुत्पादन आर्थिक, पारिवारिक आ संस्थागत सम्बन्धमे होइत अछि। देविका ओकर भयकेँ कारी आ लाल दुनू रूपमे बुझबैत छथि: अनुभव भीतरक अछि, मुदा ओकर वर्तमान परिस्थितिक दृश्य साक्षी सभक सामने अछि। ई द्विविधा वर्गीकरणक अपवाद नहि, जटिल अनुभवक प्रामाणिक चिन्ह अछि।

धूरिक डिब्बा आ पुरान रेकर्ड-घरक याद प्रतीक बनैत अछि। भिखारी लाल कहैत अछि जे धूरिक भीतर दबायल अक्षरक छाह भेटि सकैत अछि; कारी गिट्ठऽक अनाम भय सेहो

कथाविस्तारक स्रोत भऽ सकैत अछि। तथापि भयक हर सामाजिक कथनकेँ एकहि अपराध-जालसँ जोड़ब अनुचित—कथा जे भेद-रेखा बनबैत अछि, आलोचनाकेँ सेहो ओही अपनाबय पड़त।

## रामकेवलक पञ्जी आ जाँचक नब ठोस आधार

पंचायत-सेवक रामकेवल पासवान पन्द्रह बरख पुरान सर्वे-पञ्जी लऽ अबैत छथि। एतय बूढ़, विधवा, परदेशी-सन्तान, अधूरा मुकदमा आ बन्धक जमीनक विवरण भेटैत अछि, जे मधुकर बाबूक पूर्व उपस्थितिक कथनसँ मिलानयोग्य बनैत अछि। मीरा त्वरित निष्कर्ष रोकैत मूल पन्नाक संरक्षण, प्रतिलिपि आ रामकेवलक अलग बयानक निर्देश दैत छथि। घटना कथा केँ भावनात्मक गवाहीसँ लिखित पुष्टिक सम्भावना दिस बढ़बैत अछि।

कृतिगत सीमा ई जे रंगक स्पष्ट वर्गीकरण जीवनक अनेक मिश्र स्थितिमे टूटि सकैत अछि, जकरा फुलेसरक दृश्य स्वयं दिखबैत अछि। मुदा रंग-रचना पाठककेँ जनसुनवाईक प्रत्येक कथनक स्थिति सोधबाक अभ्यास करबैत अछि। अन्तक पुरान पञ्जी अगिला अध्यायक कारण-बीज बनैत अछि।

# अध्याय १७३ — पंजीक पहरा

## सुविधाक सूची सँ शिकारक नाप धरि

रामकेवल पासवानक पन्द्रह बरख पुरान पञ्जी एहि अध्यायमे केन्द्रस्थ वस्तु अछि। सर्वेक्षणमे विधवा, वृद्ध, परदेशी परिजन, मुकदमा, ऋण, जमीन आ ‘विशेष ध्यान’ सन चिन्ह उपस्थित अछि। प्रशासनिक आशय सुविधा पहुँचेबाक छल, एहन रामकेवलक प्रारम्भिक स्मरण अछि; मुदा ओहि सूचनाक सुरक्षा नहि रहला पर ओ जोखिमक नक्शा सेहो बनि सकैत अछि। कमला देवी फोनक डरमे पुछल प्रश्नसभसँ एही प्राचीन सर्वेक तुलना करैत छथि। सूचनाक उपयोगक उद्देश्य बदलिते एकहि पन्नाक सामाजिक अर्थ उलटि जाइत अछि।

अनन्या प्रत्येक नामक वर्तमान स्थिति, फोनक घटना, जमीन-विवाद आ अनुमति लेल अलग स्तम्भ बनबैत अछि। नीलमणि स्कैनक सुरक्षित प्रति, सार्वजनिक सन्देशमे फोटो नहि पठेबाक नियम आ अलग प्रतिपर चिन्ह राखबाक सुझाव दैत अछि। एहि विवरणसँ कथाक पुरान ‘पञ्जी’ डिजिटल युगक गोपनीयता आ अभिलेख-सुरक्षाक प्रश्नमे प्रवेश करैत अछि।

## ध्रुवेशक प्रस्ताव आ संरक्षकक अधिकार

चन्द्रपालक लोक ध्रुवेश पञ्जी पंचायत कार्यालयमे जमा करब कहैत अछि। मीरा जमा-रसीद, कारण, मूल अभिरक्षा, नामधारी व्यक्तिक अनुमति आ निरीक्षणक मार्ग स्पष्ट करबाक प्रश्न पूछैत छथि। एहि प्रश्नसभसँ ‘सामाजिक शान्ति’क सुन्दर शब्दमे सम्भावित नियन्त्रणक अर्थ खुलैत अछि, मुदा प्रत्येक संस्थागत संरक्षणकेँ स्वतः दमन मानल गेल नहि।

रातिमे देविकाक घर लग अज्ञात छाह आबि धमकीक पर्ची छोड़ैत अछि। मीरा पर्ची केँ मूल पञ्जीसँ अलग सील करबैत छथि। भयावह घटनाकेँ प्रमाणक शत्रु नहि, अगिला साक्ष्यक संभावित स्रोत बनाबयबला ई रूपान्तरण कथात्मक रूपसँ तीख अछि। पर अज्ञात छाहक वास्तविक परिचय एखन निश्चित नहि।

## सामूहिक पहरा आ नैतिक जटिलता

मूल पञ्जी केकर घर राखल जाए, कतेक प्रति बनत, कीड़ा, नमी, चोरी आ सूचना-लीकक जोखिम कोना घटत—ई प्रश्नसभ कथा कैँ वास्तविक पुस्तकालय-शास्त्रीय आ अभिलेखीय अनुभूति दैत अछि। बालपात्रकैँ पहराक काजमे लाबैत काल मीरा ओकरा सभपर भयक अनावश्यक भार नहि रखबाक कोसिस करैत छथि। तथापि रातिक सुरक्षा, धमकी आ गैर-राजकीय प्रतिलिपि बनाबयक व्यवहारिक मान्यतासँ अनेक अनसुलझल प्रश्न शेष अछि। अन्तिम बिम्ब पञ्जीक पन्नापर भोरक इजोत अछि—उघाड़बाक साहस आ बचाबबाक श्रम दुनू एक संग।

# अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट

## खाली पन्ना, दस पाथर आ लोकक न्यायाधिकार

अध्याय १७३क प्रमाण-सुरक्षा पाछाँ चन्ना गाछीक ठूँठपर फेर सुनवाईक दृश्य खुलैत अछि। अनन्या खाली पन्ना बीचमे राखैत छथि, आरुणि नाम, देह, जल, जमीन, कागज, डर, मौन, प्रतीक्षा, फाँस आ स्मृतिक दस पाथर सजबैत अछि। एतय कानूनक धारा नहि, जीवनक वर्गीकरण उपस्थित अछि। मीराक लेखन एकटा अनौपचारिक नोंद बनैत अछि; ओ एहि सुनवाईकेँ राज्यक न्यायालयक औपचारिक निर्णयक विकल्प नहि कहैत छथि।

सोना नामक पुतोहु अदालतमे उपस्थित रहितो ‘अनुपस्थित’ लिखायल अनुभव सुनबैत छथि। वृद्ध भोलाराम तेइस बरखक तारीखसभकेँ बेटाक स्कूल, पुतोहुक मृत्यु आ घरक घटनासँ मापैत छथि। सरकारी अभिलेखक समय आ व्यक्तिगत जीवनक समयक बीच दूरी स्पष्ट होइत अछि। रिकरक आख्यान-समयक दृष्टिसँ दिनांकक निर्जीव पुनरावृत्ति स्मृतिगत जीवनीक असाधारण भारी अनुभवमे परिवर्तित होइत अछि।

## मौन काकी, लिपिक आ नामक शुद्ध पाठ

‘मौन काकी’ कहल एक वृद्ध स्त्री अपन भिन्न लिखल नामकेँ फेर उच्चरैत छथि; लेखक एक अक्षरक विकृतिकेँ मनुष्यक भूमि, उत्तराधिकार आ सामाजिक पहिचानसँ जोड़ैत छथि। पुरान रेकर्ड-घरक लिपिक रामबल्लभ जेबसँ निजी नोटबुक निकालि गायब मानल फाइलसभक सम्भावित मार्गक विवरण देबाक साहस करैत अछि। ‘डरल, मुदा उपस्थित’ सन शब्दक मानवीय प्रभाव ई अछि जे भय समाप्त भेलाक बादे गवाही देल जा सकैत अछि एहन अनिवार्यता टूटैत अछि।

राजकीय अधिकारक प्रश्न करनिहार व्यक्ति अपन नाम नहि कहैत, जे लेखकक नैतिक विपर्यास रचैत अछि। मुदा सुनवाईमे सार्वजनिक नाम खोलबाक अधिकार आ निजी सुरक्षाक

बीच सन्तुलन अनिवार्य अछि; तकरा सदिखन भावनात्मक सामूहिक जयघोषसँ तय नहि कएल जा सकैत। एही कारण मीराक संयमकेँ आलोचनात्मक रूपसँ केन्द्रीय मानब चाही।

## अलौकिक छाया, जनसुनवाईक परिणाम आ सीमा

बूढ़बा भूत, कारी भूत आ उज्जर प्रेतक दृश्य जनसमुदायक अदृश्य नीतिगत संघर्षकेँ रूपकक देह दैत अछि। साहित्यिक जादुई यथार्थक ई स्तर प्रमाणित इतिहास नहि। अध्याय मुकदमा समाप्त करबाक दावा नहि करैत; नाम उच्चार, डरक पहिचान आ साक्षी-नोटबुकक आरम्भ होइत अछि। बालपात्रसभक भाषिक सूत्र पुनरावृत्ति पबैत अछि, मुदा अदालतक ‘अनुपस्थित’ शब्दक सामने जीवित देहक गवाही अध्यायक विशिष्ट सौन्दर्य अछि। रामबल्लभक नोटबुकक खुलैत पन्ना अगिला क्रमक ठोस कथा-सूत्र बनैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १७०–१७४

## प्रतिरूप बदलैत भयक संस्था

१७०मे प्रतिष्ठाक आवाज ‘चन्द्र १’ नामक अभिनय बनैत अछि; १७१मे एकल पीड़ितक डर सामूहिक अदृश्य अदालतमे उतरैत अछि; १७२मे लाल, पीयर आ कारी गिट्ठऽक द्वारा सुनल/देखल/अनुमान अलग होइत अछि; १७३मे पन्द्रह बरख पुरान ‘सहायता’ पञ्जी व्यक्तिगत सूचना-सुरक्षाक प्रश्न बनैत अछि; १७४मे सरकारी ‘अनुपस्थित’क शब्द जीवित उपस्थितिक विरोधी अनुभवसँ टकराइत अछि। एहि क्रममे कृतिक मूल गतिक्रिया अछि—विश्वासक चोरी सँ सुननाइक अधिकार धरि।

## पितृ-स्वर आ जन-सुनवाईक बाख्तिनीय बहुकण्ठ

मोहनलाल झाक टाइपिंग-कक्ष अधिकारक एक निर्मित आवाज प्रस्तुत करैत अछि। चन्ना गाछीक घेरामे कमला, लक्ष्मण, शिवनारायण, रामकेवल, सोना, भोलाराम, अनाम स्त्री आ बालपात्रसभ अनेक कण्ठ बनि उठैत छथि। एतय राज्यीय ठंढी शब्दावली—मृत, अनुपस्थित, सत्यापन, सेवा—अलग-अलग निजी जीवनसँ उत्तर पबैत अछि। तथापि लेखकक सूक्ति-प्रधान संवाद किछु पात्रसभक शैलीकेँ एक-दोसरासँ अत्यधिक मिलैत बनबैत अछि, जे आलोचनात्मक सीमा अछि।

## नव्य न्याय : गिट्ठऽक प्रमाणभेद आ अनुपस्थितिक विवेक

प्रत्यक्ष देखल पन्ना, श्रुति-आधारित मधुकरक सूचना, अनाम भय, पुरान सर्वे-पञ्जी, फोटो, धमकीक पर्ची आ लिपिकक नोटबुक सभक प्रमाण-मूल्य भिन्न अछि। रंगक गिट्ठऽ उपयोगी दृश्य-शिक्षा अछि, मुदा जटिल अनुभवक मिश्र स्थिति सरल तीन रंगसँ पूरा नहि धरेल जा सकैत। हर पन्ना पर तिथि, अभिरक्षा, हस्ताक्षर, संदर्भ आ निजता जाँचब देरीसँ सेहो

आवश्यक अछि। ई पद्धति सामाजिक शंका कैं विधिसम्मत शोधक आरम्भ बनबैत अछि, अन्तिम न्यायिक दोषसिद्धि नहि।

## कागजक संरक्षण, निजता आ कलात्मक जोखिम

जकरा सार्वजनिक रूपसँ बाजबाक इच्छा नहि ओकरा गोपनीय राखब, पञ्जीक मूल सुरक्षित करब, प्रतिलिपिक मार्ग चिन्हित करब, धमकीक पर्ची अलग सील करब—ई सभ अभिलेखीय नैतिकताक पैघ बिन्दु अछि। कृतिक बल ई जे स्मृति-न्याय केवल कागज खोलब नहि, लोकक व्यक्तिस्वातन्त्र्य बचायब सेहो अछि। कलात्मक जोखिम अनेक सहयोगीक क्रमबद्ध उपस्थितिसँ विवाद शीघ्र खुलनाइ, बालपात्रक असामान्य विश्लेषण-क्षमता आ अलौकिक छविक बारम्बार अर्थ-दोहराव अछि। तइयो चौखटक दृश्य लोकजीवन आ कानूनी लेखनक बीच गम्भीर आलोचनात्मक दूरी चिह्नित करैत अछि।

# अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम

## दीनबंधुक नाम आ भूमिकाक अनिश्चितता

रामबल्लभ लिपिकक बचल नोटबुकमे ‘दीनबंधु झा, मोहरबाहक’ पढ़ल जाइनाइ एहि अध्यायक आरम्भिक घटना अछि। न्यायालय आ सेवा-संस्थाक बीच कागज चलौनिहार लोककेँ कथा एखन धरि लगभग अदृश्य रखने छल; एकहि नाम लिखल भेला पर सरकारी प्रक्रिया आ निजी भरोसाक बीचक ओ व्यक्ति देखाइ पड़ैत अछि। मुदा मीरा भीड़ रोकि स्पष्ट करैत छथि—नाम भेटल अछि, आरोप नहि। एहि वाक्यक कारण कथा अपराध-रहस्यक सनसनीसँ हटि स्रोतक क्षमता आ सीमाक विवेचन दिस बढ़ैत अछि। सत्यव्रतक पुरान परिचय सेहो स्मरण अछि, दोषसिद्धि नहि।

नाम सुनि भीड़मे अलग-अलग उत्तर उठैत अछि—दीनबंधु जीवित छथि कि मरि गेलाह, कोना काज करैत छलाह, हुनकर परिवार कतय अछि। एहि परस्पर-विरोधी स्मृतिसभकेँ एकटा सहमतिक कथा मानब उचित नहि। अनन्याक रजिस्टरमे ‘देखल’, ‘सुनेल’ आ ‘जाँचल’क पृथक पाँति बनब नव्य न्यायक प्रमाण-विवेकक ठोस साहित्यिक रूप अछि: सूचनाक अस्तित्व आ सूचनाक सत्यता अलग प्रश्न छथि।

## शशिभूषणक पितृस्मृति आ सामग्रीक साक्ष्य

दीनबंधुक पुत्र शशिभूषण थैलीमे सूखल मोहर-पैड, घिसल पीतलक मोहर आ डायरी लऽ कऽ आबैत अछि। पुत्रक पहिल प्रतिवाद पिताक गरीबी आ आदेश मानबाक विवशतापर आधारित अछि। भोलारामक प्रत्युत्तर एहि सरल बचावकेँ चुनौती दैत अछि: गरीबक हाथक उपयोग कएल गेल हो सकैत अछि, मुदा ओकर द्वारा कएल काजक अनुसन्धान एही कारण बन्द नहि भऽ सकैत। ई संवाद व्यक्ति, श्रम-निर्भरता आ संस्थागत उत्तरदायित्वक बीच नैतिक तनाव रचैत अछि।

पीतलक मोहर पर ‘हरिहरन सेवा निकेतन’क आधा बचल अक्षर, डायरीमे ‘लाल’, ‘कारी’, ‘तीन प्रति’, ‘बी. ह.’ आ ‘च. पा.’ सन संकेत अछि। आरुणि किछु तिथि रामकेवलक पञ्जीसँ मिलबैत अछि। तिथि-साम्य सम्बन्धक सूत्र थिक, मुदा संक्षिप्ताक्षरक निश्चित अर्थ, मोहरक वैधता अथवा कागज बदलने व्यक्तिक पहिचान एखन सिद्ध नहि। एहि सूक्ष्म भेदकेँ बनौने राखब मूल पाठक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

## वस्तु-अभिलेखक सुरक्षा आ निजताक प्रश्न

नीलमणि मोहर, डायरी आ कागजक अलग-अलग तस्वीर बनबैत अछि; कमला देवी व्यक्तिगत फोटोकेँ तमाशा नहि बनाबय देबाक चेतावनी दैत छथि। प्रमाणक प्रतिकृति बनब आ पीड़ितक निजताक संरक्षण एकहि सामूहिक प्रक्रियाक दू शर्त बनैत अछि। ध्रुवेश शशिभूषणकेँ पुरान सामान बेचि देबाक सुझाव देइत अछि, मुदा ओ वस्तु सुरक्षित रखबाक निर्णय करैत अछि। एहि मोड़पर पितृभक्ति सत्य नुकायब नहि, पिताक भूमिकाकेँ यथार्थमे समझबाक जिम्मेदारी बनैत अछि।

अन्तमे डायरीक ‘अन्तिम सूची’ पृष्ठ अगिला अध्यायक घटना-बीज थिक। ठूँठक ओटमे प्रेतक आभास आ नदीमे गोहिक हलचल अपराध-जालक रूपकीय विस्तार अछि; एकरा स्वतन्त्र ऐतिहासिक अथवा विधिक प्रमाणक रूपमे पढ़ब अनुचित होयत। अध्यायक सीमा ई अछि जे मोहरक अधछापसँ संस्था-सम्बन्धक संकेत तीव्र बनैत अछि, मुदा मूल मोहरक उत्पत्ति, उपयोगक अधिकृतता आ हस्तलिखित संकेतक स्रोत-श्रृंखला एखन अपूर्ण अछि।

# अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

## मंचक उजास आ सूची-प्रणालीक दुटा अर्थ

दीनबंधुक डायरीमे भेटल ‘अन्तिम सूची—सेवा-समारोह पूर्व’ चन्ना गाछीमे खोलल जाइत अछि। ‘लाभार्थी’, ‘प्रार्थी’ आ ‘विशेष’ सन प्रशासनिक श्रेणी पहिने गरीबक सम्मान जेकाँ प्रतीत होइत अछि। भोलाराम समारोहमे ताली बजौनाइ स्मरण करैत छथि, मुदा पछिला कागजमे ‘स्वेच्छा’, ‘दान’ आ ‘समझौता’ भेटैत अछि। कथा एहिठाम सार्वजनिक उत्सवक भावमय दृश्य आ निजी अधिकारक परिवर्तित अर्थक प्रतिपक्ष बनबैत अछि। स्मृति-समारोहक सफलता ताली अथवा मालाक संख्यासँ नहि, ओकर बाद व्यक्तिक अधिकार सुरक्षित रहल कि नहि, एहिसँ परखल जाइत अछि।

रामबल्लभ अस्थायी मेजपर मोहर, आवेदन आ फोटो एक संग रखल गेलाक स्मरण करैत छथि; हुनकर अपन वाक्य पृष्ठ फेरबदल सम्बन्धी प्रश्न उठबैत अछि। मूल पाठ एहि स्मरणकेँ तुरन्त निष्कर्ष नहि बनबैत—तिथि, पञ्जी आ समारोहक दृश्य मिलाबय कहैत अछि। फोटोक भीतर मेज, लाल मोम आ कपड़ाक छाप देखब दृश्य-साक्ष्यक एक प्रकार अछि, किन्तु तस्वीर देखकऽ कागज पर लिखल अदृश्य विषय अपने-आप तय नहि कएल जा सकैत।

## शान्तिक स्त्री-पाँति आ सहमतिक स्वर

भोलारामक पत्नी शान्ति कहैत छथि जे समारोहमे स्त्रीसभकेँ ‘महिला सहायता योजना’क नामपर अलग पाँतिमे ठाढ़ कएल गेल छल; नाम सुनि हाथ उठेबाक, फोटो खिंचेबाक आ औंठा लगबेबाक प्रक्रिया छल, मुदा सब कागज पढ़बाक अवसर नहि भेटल। कथामे स्त्री-पाँति केवल मंचक व्यवस्था नहि, असमान सूचनाक सामाजिक रूप बनैत अछि। ‘स्वेच्छा’ लिखल दस्तावेज आ वास्तवमे बुझि-समझि देल सहमति बीच अन्तर एही अनुभवसँ खुलैत अछि।

मीराक कड़ी भाषा असमान शक्तिक प्रतिरोध अछि; मुदा आलोचना लेल ई सेहो मानब आवश्यक जे शान्तिक गवाही प्रत्यक्ष अनुभवक महत्त्वपूर्ण स्रोत भेला पर विशिष्ट प्रत्येक दस्तावेजक विषय निर्धारित करबाक लेल तिथिक मिलान, मूल पन्ना आ प्रसंग चाही। स्त्री-वाणीकेँ प्रमाणक श्रेणीसँ बाहर करब अन्याय होयत, आ बिना जाँच कागजक सभ पाँति ओकरा सँ भरब सेहो अनुचित।

## कारी चादर, मोमक दाग आ ‘बी. ह.’

अभिलेख-घरक बोरा सँ लाल किनारीक मटमैला चादर निकलैत अछि, जाहिपर मोमक गोल निशान, कारी स्याही आ औंठाक छाप बचल अछि। भिखारी लालक स्मरण, फोटोक दृश्य आ भेटल वस्तु परस्पर मिलैत अछि। ई भौतिक वस्तु मंचक सजावटक अंश होइतहु अभिलेखीय स्मृतिक आधार बनैत अछि: जे चादर मंचपर सम्मानक पृष्ठभूमि छल, ओ पछिला समयमे दस्तावेज जाँचबाक वस्तु बनल।

शशिभूषण डिब्बाक तलीसँ ‘मंच-पठनक बाद मूल बदलू। बी. ह. सँ संकेत भेटत’ लिखल पर्ची निकालैत अछि। ई पर्ची कथाक सभसँ तीख तथ्य-संकेत अछि, मुदा ‘बी. ह.’क अर्थ एखन अनुसन्धानाधीन अछि। एहन संक्षिप्ताक्षरकेँ पाठक अनुमानसँ निश्चित व्यक्तिमे बदलैत छथि तँ कथा अपन विवेक खोइ देत। नाटक-जेकाँ आयोजनक कारी छाया प्रभावी अछि; ओकर सीमा यैह जे अलग वस्तुसभ समयोचित क्रममे भेटबाक सहजता अभिलेखीय यथार्थक जटिलता कने घटबैत अछि।

# अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

## चौपालसँ घरक देहरी धरि न्याय-यात्रा

सेवा-समारोहक सूची आब घर-घरक पथ बनैत अछि। टोली तीन भागमे बँटि परिवारक निजी दस्तावेज, समारोहक स्मृति आ भूमि-हक सम्बन्धी कागजक तुलना करैत अछि। ई परिवर्तन आख्यानक स्थान-विन्यासमे निर्णायक अछि: न्याय-सभा स्थिर मंच नहि, पीड़ितक देहरी धरि पहुँचबाक प्रक्रिया बनैत अछि। मीरा मूल कागज छीनबाक बदला अनुमतिक संग प्रति लेबाक नियम राखैत छथि। एहि नियमक साहित्यिक अर्थ अछि जे अन्यायक विरोधमे प्रमाण जुटेबा लेल सेहो लोकक अधिकार कुचलल नहि जाए।

भोलाराम आ शान्तिक समारोह-स्मरणक संग घरमे बचल प्रमाण-पत्रक अर्थ भिन्न निकलैत अछि; सुभद्रा झाक प्रवासी सन्तानक स्थिति सरकारी भाषाक एकरूपताकेँ चुनौती दैत अछि। जीवित परिवारक टूटल-दूर भेल सम्बन्धक सामने सूचीमे ‘लाभार्थी’ लिखब बहुत छोट परिभाषा बनि जाइत अछि। एहि कारण उपन्यासक लोकजीवन कागजक संज्ञाकेँ प्रश्न करैत अछि।

## चमरू महतोक चारि नाम : पहिचानक अस्थिरता

चमरू महतोक प्रसंगमे समारोह, पदक, डायरी आ दान-पत्र पर ‘चमरू’, ‘चन्दू’, ‘चन्द्रमोहन’ आ ‘चमरू उर्फ चन्द्रमोहन’ सन रूप भेटैत अछि। कथा पहिचानक ई असंगतिकेँ केवल वर्तनी-दोष नहि बनबैत; एक जीवनकेँ अलग अभिलेखमे अलग तरीकासँ नियन्त्रित करबाक सम्भावना देखबैत अछि। मुदा ‘चन्द्रमोहन’ शब्द भेटलाक कारण अन्यत्र वर्णित शहरक चन्द्रमोहन नामक व्यक्तिसँ स्वतः एकत्व घोषित करब अनुचित अछि। एकेक दस्तावेजक व्यक्तिसम्बन्ध स्वतंत्र सत्यापन चाहैत अछि।

अनन्या बच्चासभक संग नाम-भ्रमक पञ्जी बनबैत अछि। नामक बहुरूपता सुरुआतमे सूची-सुविधाक रूप बुझाएल जा सकैत अछि, मुदा अधिकार-हस्तान्तरणक कागजमे ओ

वैयक्तिक स्वायत्तताक गंभीर प्रश्न भऽ उठैत अछि। एतय लोकज्ञानक रोजमर्राक सावधानी नव्य न्यायक व्यक्तिविशेष चिन्हबाक अनुशासनसँ व्यावहारिक सम्बन्ध बनबैत अछि।

## रागिनीक फाटल पत्र आ ऊपरक कोठरी

दीनबंधुक विधवा रागिनी झा अधूरा पत्र सुरक्षित रखने छथि, जाहिमे ‘मूल ऊपर राखू’ सन वाक्य आ अस्पष्ट संकेत बचल अछि। ललित नामक पहिनुक स्वयंसेवक समारोहक मूल कागज आयोजन-समितिक नियंत्रणमे रहलाक बात कहैत अछि। ई दुनू स्रोत कथाकेँ ‘ऊपरक कोठरी’ दिस बढ़बैत अछि। तथापि ‘ऊपर’ कोन स्थानक निर्देश अछि, ओ पहिनेहि निश्चित नहि; प्रसंगसभ जाँचबाक बादे स्थान-संबन्ध निर्धारित होइत अछि।

अध्यायक कला नान्हि घरेलू वस्तु, फाटल पत्र आ मौखिक स्मृतिसभकेँ समान कथा-मूल्य देबामे अछि, मुदा विधिक प्रमाण-मूल्य समान मानल नहि गेल अछि। गामक बच्चासभक यात्रा कथासूत्रकेँ विस्तार दैत अछि, ताहिमे स्मृति आ दस्तावेजक बीच अपन-अपन अपूर्णता देखाइत अछि। ई सामाजिक ज्ञानक बहुध्वन्यता बाख्तिनीय अर्थमे संवादधर्मिता जगबैत अछि, हालाँकि किछु संवाद अनुसन्धानक नियम सीधे कहबाक कारण स्वाभाविक नाटकीयता घटबैत अछि।

# अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

## दरबाजा खोलबाक पहिने साक्षीक व्यवस्था

अदालतक ऊपरक कोठरी तक पहुँचब एहि अध्यायक केन्द्रीय दृश्य अछि। बाहर न्यायालय, तहसील आ निजी सेवा-समितिक तीन तरहक मोहर पुरान दरबाजापर छाप छोड़ने अछि। ई त्रिस्तरीय चिह्न संस्थागत सीमाक धुँधलाएबक रूपक अछि; मुदा मात्र साथ-साथ छाप रहब परस्पर सहमतिक निश्चित प्रमाण नहि। सत्यव्रत बिना साक्षी दरबाजा नहि खोलब कहैत छथि, आ कर्मचारी, स्त्रीसभ तथा बच्चाक प्रतिनिधिक उपस्थिति सूचीबद्ध होइत अछि। एहि संयुक्त साक्षित्वसँ रहस्योद्घाटन एकल नायकक विजय नहि, सामूहिक उत्तरदायित्व बनैत अछि।

कमराक भीतर ‘मूल प्रतिलिपि’ लिखल पैकेट शब्दक आत्मविरोधक कारण तुरन्त प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। मूल आ प्रति एकहि स्थिति नहि; कागजक शीर्षकमे ई विरोध प्रशासनिक भाषाक विश्वसनीयतापर सन्देह बनैत अछि। उपन्यास एहि शब्दगत विसंगतिकेँ वस्तुक भौतिक गन्ध आ धूलिक दृश्यसँ जोड़ैत अछि।

## चारि बक्साक श्रेणी आ स्त्री-अभिलेख

नील सेवा-निकेतन मोहर लगल सरकारी आवेदन, बादमे जोड़ल अधिकार-त्याग पन्ना, समारोहक फोटो आ स्त्रीसभक अलग गट्ठर क्रमशः खोलल जाइत अछि। मीराक प्रश्न ‘के बुझौलक?’ ओहि पंक्तिक पाछाँ उठैत अछि जाहिमे केवल ‘बुझा देल गेल’ लिखल अछि। एतय निष्क्रिय क्रियारूप कर्ताकेँ अदृश्य करैत अछि। स्त्रीक भाषा, सहमतिक अर्थ आ दस्तावेज बनोनिहारक उत्तरदायित्वकेँ ओ शब्द-रचनासँ फेर सामने अनबाक प्रयास अछि।

सोना फोटो-क्रम लिखैत अछि, नीलमणि फाइल-क्रम, अनन्या मिलान-सूची। एहि सूक्ष्म श्रम-विभाजनसँ सामूहिक ज्ञानक रचना देखाइत अछि। न्यायिक अभिलेखक दमनक बिम्ब

शक्तिशाली अछि, मुदा वास्तविक प्रमाण-श्रृंखलाक प्रश्न—दरबाजा खोलबाक अधिकार, मूल कागजक अभिरक्षा आ बादक प्रमाणन—कथानकमे पूर्ण समाधान पबैत नहि देखाइत।

## ‘विशेष सुरक्षित अभिलेख’ आ कोडक सीमा

कारी रजिस्टरक कोड-सूचीमे ‘क = कमला’, ‘उ = उज्ज्वला’, ‘वि = विधवा समूह’ आ ‘च = चमरू-पाँति’ लिखल भेटैत अछि। व्यक्तिक नामकेँ संक्षिप्त श्रेणीमे बदलि देल गेल अछि। अध्याय १७७क चमरू नामक बहुरूपता एहि कोड-संक्षेपसँ जुड़ि कऽ अधिकार छीनेबाक व्यवस्था-सम्बन्धी आशंका अधिक तीव्र करैत अछि। तथापि पञ्जीमे ‘क’ भेटनाइ प्रत्येक कमला नामक पात्र अथवा सभ कमला-संबंधी दस्तावेजक एकहि व्यक्ति होएबाक गारंटी नहि।

‘बटुक बाबूक निर्देश’ आ ‘चन्द्र... देखत’ सन अधूरा वाक्य महत्त्वपूर्ण सूत्र छथि, पूरा आदेश-पत्र नहि। कर्मचारी-अभिरक्षाक बीच ध्रुवेशक लोकक हस्तक्षेप आ भूतक धूलि-चिह्न कथा भीतर तनाव बढ़बैत अछि; भूतक कथन दस्तावेजक प्रमाणीकरण नहि करैत। कोठरी बन्द कऽ सामग्रीकेँ मालिक-चिन्हारियोग्य, अपराध-सूत्र आ अज्ञात तीन श्रेणीमे रखनाइ एहि अध्यायक वास्तविक नैतिक निष्कर्ष अछि—सब भेटल वस्तुक अर्थ तत्काल एकरूप नहि।

# अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह

## वस्तु-चिह्नसँ संस्थागत मार्ग धरि

ऊपरक कोठरीमे भेटल सेवा-निकेतनक मोहर, तहसीलक जेकाँ मोहर आ नाम बदलय योग्य खाली रबरक छाप अलग-अलग उतारल जाइत अछि। ई वस्तुक स्थिर परीक्षणक बाद टोली कार्यालय-कार्यालयक यात्रा करैत अछि: सेवा-समारोह, तहसीलक भूमि-पञ्जी, शहरक निबंधन-कार्यालय आ बैंक। घटना-क्रममे ई संक्रमण महत्त्वपूर्ण अछि, कारण अब प्रमाणक प्रश्न ‘कागज कतय?’सँ ‘कागजक प्रभाव कोन संस्थासँ गुजरल?’ भऽ गेल अछि।

तहसीलमे कमला देवीक भूमि-हस्तान्तरण तिथि सहायता-समारोहक तिथिसँ जुड़ैत अछि; उज्ज्वलाक परिवारक भूमि अभिलेख पर विशेष सत्यापन लिखल रहितो हस्ताक्षर अपूर्ण अछि। ‘च-समूह’ नामक सामूहिक श्रेणी चारि अलग जीवनकेँ छोट संकेतमे सीमित करैत अछि। सत्यव्रत प्रमाणित प्रति लेल आवेदनक रसीद कटबैत छथि; एहि व्यवहारमे अभिलेखक प्रत्यक्ष अध्ययन आ आधिकारिक प्रमाणित प्रतिक भेद स्वीकारल गेल अछि।

## तस्वीरमे उपस्थिति, सहमति आ एक देहक दू स्थान

शहरक निबंधन-कक्षमे कमला देवीक फोटोमे कान्हपर ककरो हाथक दबाव-जेकाँ स्थिति अछि। फोटो उपस्थितिक एक चिह्न दैत अछि, मुदा स्वतन्त्र इच्छा अथवा लिखल शर्त बुझबाक पुष्टि नहि। कथामे छविक मौन एहि तरहें सहमतिक वाचिक अभाव खोलैत अछि। शान्तिक अस्पताल-भर्ती तिथि आ एक दोसर कागजक उपस्थितिक तिथि मिलेनाइ सूचना-विरोध बनैत अछि, जेकरा खातापञ्जी आ चिकित्सकीय विवरणसँ फेर जाँचब आवश्यक अछि।

मीराक प्रश्न ‘रजिस्टरमे आवाज कतय अछि?’ भावुक नारा मात्र नहि, दस्तावेजी सत्ता आ अनुभवक अन्तरक आलोचना अछि। तथापि फोटोक शारीरिक मुद्रा मात्रसँ बलप्रयोगक

कानूनी निष्कर्ष निकालब अथवा अस्पतालक पर्चीक सहारे सभ दस्तावेज फर्जी घोषित करब पाठगत सावधानीसँ बाहर जेत। कथा एखन प्रश्न खोलैत अछि, निर्णय नहि।

## बैंक-प्रवाह, लाभक प्रश्न आ नैतिक निष्कर्ष

भूमि हस्तान्तरणक पाछाँ ऋण, बकाया आ कब्जाक श्रृंखला देखाओल गेल अछि। बैंकक मुद्रित विवरणमे सेवा-निकेतन, निर्माण-सामग्री आपूर्तिकर्ता आ ‘हरिहर कल्याण ट्रस्ट’ नामक अलग-अलग खाता उभरैत अछि। ई वित्तीय मार्ग ककरा लाभ भेटल, एहि प्रश्नकेँ कागजक मोहरसँ आगू आनैत अछि। मुदा एकहि नाम बला न्यास, खाताक अस्तित्व वा आर्थिक प्रवाह मात्रसँ विशेष व्यक्तिक अपराध प्रमाणित नहि; लेनदेनक स्वीकृति, नियन्त्रक आ वास्तविक उपयोगक मिलान अलग आवश्यक अछि।

मीराक निर्देश पर कार्यालयमे भीड़ नहि लेबाक, कर्मचारीकेँ नहि डराएबाक, कागजक अस्वीकृति सेहो लिखबाक अनुशासन जाँचक मानवीय मर्यादा स्थापित करैत अछि। अन्तमे पाथरपर बनल कार्यालय-मार्गक नक्शा आ हर मोड़पर दीप आख्यानक केन्द्रीय बिम्ब अछि। अलौकिक गोहि ओहि मार्गक प्रतीक-व्यवस्थामे अछि, दोषीकेँ चिन्हौनिहार प्रत्यक्ष साक्षी नहि। भिन्न दस्तावेजकेँ एकहि नक्सामे रखबाक नाटकीय गति प्रशंसनीय अछि, मुदा जटिल वित्तीय अभिलेखक व्यावहारिक सत्यापन कतेको ठाम भविष्यक अनुसंधानपर निर्भर रहैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १७५–१७९

## दीनबंधुक थैलीसँ शहरक बैंक धरि: कारण-क्रम

अध्याय १७५मे दीनबंधुक नाम आ निजी मोहर भेटैत अछि; १७६मे ओकर डायरीक ‘अन्तिम सूची’ समारोहक मंचक भूमिका प्रश्न करैत अछि; १७७मे घर-घरक दस्तावेज मूल सूचीसँ तुलना पबैत अछि; १७८मे ऊपरक कोठरी संस्थागत संरक्षणक रहस्य खोलैत अछि; १७९मे मोहरक मार्ग तहसील, निबंधन आ बैंक धरि पसरैत अछि। ई पाँचू अध्याय मात्र पाँच स्वतन्त्र खुलासा नहि, प्रमाण जुटेबाक क्रमिक पद्धति रचैत छथि। प्रत्येक नब खोज पुरान स्रोतक सीमाकेँ आरो स्पष्ट करैत अछि।

कथाक आख्यान-समय अनेक स्थान पर स्मरण, पुरान फोटो, वर्तमान साक्षात्कार आ दस्तावेजक तिथिक बीच आवत-जावत करैत अछि। जेनेतक आवृत्ति-विवेचनक दृष्टिसँ एक सेवा-समारोह फेर-फेर अलग कथावाचकक दृष्टिमे उपस्थित होइत अछि; पुनरावर्तन आरोपक यान्त्रिक दुहराव नहि, फरक ज्ञान-स्तरक परीक्षण थिक।

## चारि प्रकारक अभिलेख आ प्रमाण-विवेक

पहिल स्तर मोहर, कपड़ा, मोम-दाग आ फोटो सन भौतिक वस्तु अछि; दोसर डायरी, पत्र आ सार्वजनिक सूची सन लिखित कथन; तेसर शान्ति, रामबल्लभ, रागिनी आ अन्यक व्यक्तिगत स्मरण; चारिम सरकारी पञ्जी, रसीद आ बैंकक अभिलेख। एहि चारू स्तरक प्रमाण-मूल्य आ सीमाक अन्तर निरन्तर राखल आवश्यक अछि। गवाहक स्थिति, कागजक प्रमाणिकता आ कथित घटना बीच एही अन्तरसँ आलोचनाक कठोरता बनैत अछि।

उपन्यासमे प्रेत, गोहि, पाथरक चमक आ धूलिक उभरल संकेत तथ्य-परीक्षणक तुलनामे प्रतीकात्मक आ लोकमिथकीय भूमिका निर्वाह करैत अछि। नव्य न्यायक प्रमाण-विवेक एही

ठाम कलात्मक पद्धति बनैत अछि: उपस्थिति, सम्बन्ध, हेतु आ अपूर्ण ज्ञानकेँ अलग-अलग देखल जाए।

## स्त्री, दलित आ गरीबक नाम पर अभिलेखीय नियन्त्रण

‘महिला सहायता’क अलग पाँति, स्त्रीक बिना पढ़ल औंठा, विधवा समूहक कोड, चमरू महतोक नामक चारि रूप, आ कमला-उज्ज्वलाक भूमि अभिलेख एक साझा प्रश्न उठबैत अछि—कागज लिखनिहार ककर भाषा सुनैत अछि? समारोहक मंच पर गरीबक नाम प्रतिष्ठा पबैत अछि, मुदा कागजक पाछाँ ओही नाम अधिकार-त्यागक आधार बनि सकैत अछि। नामक सार्वजनिक सम्मान आ व्यक्तिक वास्तविक निर्णय-सामर्थ्य बीचक ई विरोध पाँच अध्यायक सामाजिक केन्द्र अछि।

आरुणि, अनन्या, सोना, नीलमणि, मीरा, शान्ति आ भिखारी लाल सभ अपन-अपन अलग काज करैत छथि। विशेषतः जखन बच्चासभ प्रमाणक प्रति संग पिता-मायकेँ प्रश्न करब सिखैत अछि, तखन पुस्तकीय अथवा प्रशासनिक विशेषज्ञताक एकाधिकार चुनौती पबैत अछि। मुदा पीड़ित समुदायकेँ केवल नैतिक प्रतीक बना देबाक जोखिम सेहो अछि; व्यक्तिगत आवाजक विशिष्टता बचाएब समीक्षा लेल अनिवार्य अछि।

## उपलब्धि आ अधूरा प्रश्न

एहि बैचक कलात्मक उपलब्धि वस्तुक रूपान्तरणमे अछि—माला-पहिराओल चादर साक्ष्यक वस्तु बनैत अछि, सम्मानक फोटो सहमतिक प्रश्न उठबैत अछि, पिताक मोहर पुत्रक नैतिक निर्णय बनैत अछि, आ कार्यालयक रस्ता चन्ना गाछी लग दीपक नक्शामे परिणत होइत अछि। ई सामूहिक अन्वेषणक नाटक एकल उद्धारकक कथासँ भिन्न अछि।

तथापि ‘बी. ह.’ आ ‘च. पा.’क सही पहिचान, रजिस्टरक मूलत्व, पिताक वास्तविक आदेश-स्वातन्त्र्य, चमरू नामक चारि पाठक व्यक्तिसम्बन्ध, शान्तिक उपस्थितिक विरोध, वित्तीय खाताक लाभार्थी आ अभिलेखक अधिकृत अभिरक्षा अनेक प्रश्न खुलल रखैत

अछि। समीक्षा एतय दोषसिद्धि सुनाबय नहि, पाठक समक्ष संरचनागत अन्याय आ प्रमाणक अपूर्णता एक संग बुझाबय चाहैत अछि।

# अध्याय १८० — शहरक खाता

## दानक पोशाक आ आर्थिक प्रवाहक यथार्थ

‘मुहरक पगचिन्ह’क बाद ई अध्याय गामक स्मृति-विवादकेँ शहरक लेखा-कार्यालय धरि लऽ जाइत अछि। सेवा-समारोह, तहसील, निबंधन, बैंक आ हरिहर कल्याण ट्रस्टक क्रम एहि कथा-खंडक संरचनात्मक आधार बनैत अछि। आरुणिक रेखा-अङ्कनक संग शान्तिक पुरान चादरक उपस्थितिसँ गणना आ मनुष्यक अनुभव एकहि दृश्य-पटलपर आबि जाइत अछि। ‘सिद्धि परामर्श सेवा’क स्वच्छ काँचक कार्यालय आ गामक धूरि-भरल अभिलेख-घरक विरोध केवल दृश्य-वैचित्र्य नहि; स्वच्छ प्रशासनिक भाषा भीतर अधिकारक सम्भावित हरण देखेबाक आख्यान-युक्ति अछि।

गोवर्धन सहाय अपन भूमिका ‘केवल कागच व्यवस्थित करब’ धरि सीमित करबाक प्रयास करैत अछि। एतय ‘केवल’ उत्तरदायित्व छोट करबाक व्याकरणिक औजार बनैत अछि। लिफाफामे कमला, उज्ज्वला आ ‘च-समूह’क रकम ‘सेवा-दान’मे मिलाएबाक लिखित निर्देश भेटनाइ आर्थिक प्रवाहक नव सूत्र दैत अछि, मुदा निर्देशपर हस्ताक्षर नहि अछि। तेँ खाता-साम्य, कागचक वास्तविक उत्पत्ति, हस्ताक्षर-अभाव आ लाभ पौनिहारक चिन्हारी अलग-अलग परीक्षण माँगैत अछि। कथाक आरोपक अर्थ बलिष्ठ अछि, तथापि आलोचनाक दृष्टिसँ ई एखन अनुसन्धानक आधार थिक, अन्तिम दोषसिद्धि नहि।

## मोबाइलक धमकी : पुरान गोहिक नव देह

लेखाकारक लिफाफामे लिखल नम्बर आ अनन्याक फोनपर आएल चेहरा सार्वजनिक करबाक धमकी एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। बैंकक बाहर खिंचल फोटो, संदेशक समय, मोबाइलक स्थिति आ साइबर शाखामे बनल रसीद—ई सभ कथानकमे अंकीय प्रमाणक प्रकार अलग करैत अछि। अधिकारीक ‘एहन धमकी आम अछि’ सन सामान्यीकरणक सामने अनन्याक प्रश्न वैयक्तिक क्षतिक विशिष्टता उजागर करैत अछि। मीरा मूल फोन आ

प्रतिलिपिक अभिरक्षा अलग राखबाक सलाह दैत छथि; ई दक्षता कथाक न्याय-संकल्पकेँ नारासँ पद्धतिमे बदलैत अछि।

गाम घुरबाक बाटमे मोटरसाइकिलपर ठाढ़ लोक द्वारा विडियो बनौनाइ प्रत्यक्ष डरक दृश्य बनैत अछि। मीरा प्रतिघातक बदला समय-स्थान दर्ज करबाक अनुशासन रखैत छथि। एहि घटनाक बल ई नहि जे प्रत्येक विडियो स्वयं अपराधक प्रमाण भऽ गेल; बल ई जे भयग्रस्त समुदाय फेर अपना अनुभवक समय-साक्षी बनबाक क्षमता पबैत अछि। पुरान पानि-गोहि, भूमि-कागजक गोहि आ अंकीय गोहिक रूपक एतय आधुनिक माध्यमसँ गूँथल अछि।

## शान्तिक चादर : निजी अपमानसँ सार्वजनिक प्रश्न धरि

शान्ति समारोहक ओही चादर पाथरपर बिछबैत छथि जाहिसँ पहिने सम्मानक नाँवपर अपमान ढाँकल गेल छल। आब ओ चादरपर प्रमाणक प्रति, खाता-रेखा आ साइबर रसीद सजबैत अछि। वस्तुक ई पुनर्नियोजन भारतीय ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ विशेष असरकारी अछि: चादरक साधारण उपयोगक भीतर स्त्री-स्मृति, आर्थिक छीनाझपटी आ प्रतिरोधक अनकहल अर्थ उभरैत अछि। मुदा आलोचनात्मक सीमा रहि जाइत अछि—जटिल वित्तीय विवरण बहुत शीघ्र एक समेकित मार्गचित्रमे बदलैत अछि, जकर प्रत्येक मध्यवर्ती कड़ी दस्तावेजी पुष्टिक अपेक्षा रखैत अछि। अध्यायक अन्त ‘खाता खोलयवाला हाथ’ दिस संकेत करैत अगिला प्रकरणक अनुसन्धान-गति बनौने रखैत अछि।

# अध्याय १८१ — सिमक छाया

## बदलैत नम्बर आ स्थिर पहिल संकेत

शहरक खातासँ निकलल फोन-नम्बरक अनुसन्धान गामक पुरान बस-ठाढ़ी धरि पहुँचैत अछि। साइबर शाखाक प्रारम्भिक विवरणमे तीन मासक भीतर सात बेर सिम बदलल आ प्रत्येकक पहिल सक्रियता एकहि बाजारक आसपास देखाओल गेल अछि। एतय समय आ स्थान अनजान नामसँ अधिक स्थिर सूत्र बनैत छथि। तथापि दूरसंचार-सूचना स्वतः फोन प्रयोग करनिहारक शारीरिक चिन्हारी नहि; उपकरण, ग्राहक-पञ्जी आ वास्तविक उपयोगकर्ताक बीच अन्तर बचल रहनाइ कथाक प्रमाण-विवेकक आवश्यक अंश अछि।

‘माधव संचार सेवा’क छोट दुकान, चार्जरक तार, पानक डिब्बा आ पुरान बही प्रशासनिक अनुसन्धानक ठोस भौतिक परिवेश रचैत अछि। दुकानदारक ‘हम केवल ग्राहकक कागच चढ़बैत छी’ कथन पहिल अध्यायक लेखाकारक भाषासँ प्रतिध्वनित होइत अछि। ई पुनरावर्तन कलात्मक रूपसँ उद्देश्यपूर्ण अछि: अलग-अलग संस्था अपना काजकेँ छोट बताकऽ निर्णयक पूरा श्रृंखलासँ अलग होएबाक प्रयास करैत अछि। तेँ अपराध-कथामे व्यक्ति पकड़बाक पहिने प्रक्रियाक भार बँटब आवश्यक बनैत अछि।

## मृत नामक जीवित उपयोग

अध्यायक नैतिक तीक्ष्णता ओहि स्थितिमे अछि जतय मृत व्यक्तिक पहचानक कागजसँ फोन चालू करबाक संकेत भेटैत अछि। मृतकक नाम परिवार लेल शोक, श्राद्ध आ स्मृतिक अवलम्बन अछि; सिम-विक्रेताक पञ्जीमे वैह नाम उपभोग्य सूचना बनि जाइत अछि। उपन्यास एहि विच्छेदकेँ देहक बादो व्यक्तिक अधिकार बाँचि रहबाक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। लोकगीत ‘नम्बरक पार लोक’ तकनीकी छाया-प्रसंगकेँ सम्बन्धक स्थायी नाँवसँ टकरबैत अछि।

माधवक बयान, पुरान कागज आ बस-ठाढ़ीक स्थिर स्थान-संकेत समान प्रमाणश्रेणीक नहि। स्रोतक पारस्परिक मिलान बिनु गलत व्यक्तिक नामपर आपराधिक अर्थ चढ़ेबाक जोखिम अछि। नव्य न्यायक अनुमान-विवेकक दृष्टिसँ धूमक दर्शन आगिक सर्वथा निश्चित स्थान-पहिचान नहि करैत; सहसम्बन्धक हेतु आ सम्भावित अपवाद पर विचार होअय चाही। ई सावधानी जँ कथामे कतहु पात्रक अत्यधिक आत्मविश्वाससँ टकराइत अछि तँ सएह एक वास्तविक आलोचनात्मक प्रश्न थिक।

## लोकस्मृति आ अंकीय शासनक मेल

गामक बूढ़ लोकक चेहरा-चिन्हारी, स्त्रीसभक कागज बचा रखबाक आदत आ बच्चासभक लेखा-नक्शा एक-दोसराक पूरक ज्ञान बनैत अछि। केवल सरकारी अभिलेख अथवा केवल मौखिक स्मृति पर्याप्त नहि। बाख्तिनक बहुकण्ठक दृष्टिसँ दुकानक रक्षात्मक बोली, पीड़ितक क्षतिग्रस्त भरोसा आ मीराक संयमित प्रश्न अपन-अपन सामाजिक स्थानसँ बाजैत छथि। अध्यायक उपलब्धि ई जे फोनक अनदेखल छायाकेँ माटिक बाजारमे वापस अनैत अछि; सीमा ई जे बारम्बार ‘बदलल नाम, स्थिर नीयत’ सन सूत्र अनुसन्धानक अनिश्चिततासँ कखनो बहुत सरल बना दैत अछि।

# अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

## ‘सेवा ही साधना’ आ देहरीक दोसर अर्थ

हरिहर सेवा केंद्रक देबालपर बटुकनाथक चित्र आ ‘सेवा ही साधना’क आदर्श वाक्य भेटैत अछि, मुदा भीतरक आधा-खुलल केवाड़ी आ पुरान मोहरक गन्ध पाठककेँ प्रचारित सेवा आ दस्तावेजी व्यवहारक बीच अन्तर देखबैत अछि। नरहरी काकाक पहरा आ ऊपरक अलमारीक उल्लेख पहिनुक ‘ऊपरक कोठरी’क स्थान-प्रतीक फेर सक्रिय करैत अछि। ‘ऊपर’ भौतिक स्थानो अछि आ उत्तरदायित्व ककरो आन पर छोड़बाक सामाजिक व्याकरणो।

अलमारीमे ‘लाभुक उपस्थिति’ आ ‘अंकीय सहायता’ नामक दू पञ्जी एक संग भेटैत अछि। पहिलमे नाम, औंठा आ लाभक प्रकार; दोसरमे मोबाइल नम्बर, सिम-क्रम आ फोन-वापसीक विवरण। ई दूहरी पञ्जी बिन्दु अध्यायक केन्द्र अछि: समाज-कल्याणक काज लेल जुटाओल पहचान-सूचना अन्ततः नियंत्रण वा छलक साधन बनि सकैत अछि। मुदा पञ्जीक अस्तित्व मात्रसँ प्रत्येक लाभक लेनदेन अनधिकृत सिद्ध नहि होइत; मान्यता, लाभार्थीक जानकारी आ वास्तविक उपयोगक इतिहास जरूरी अछि।

## वस्तुसभक क्रम आ स्त्री-अनुभवक प्रमाण

वृद्ध, मजदूर आ स्त्री-पात्रसभकेँ पेंशन, मोबाइल सहायता, फोटो आ औंठाक अलग-अलग बहाना याद पड़ैत अछि। एक पात्र कहैत अछि जे फोन देबाक फोटो खिंचल, फोन फेर जमा करा लेल गेल; दोसरक बैंक-सन्देश दोसर नम्बरपर पहुँचल। एहन गवाही पञ्जीक क्रमसँ मिलिते कथाक अन्तर्निहित संरचना खुलैत अछि—सूचना संग्रहक कारण आ सूचना उपयोगक फल एक नहि। स्त्री-स्मृतिक विशिष्ट स्थान एहि कारण महत्त्वपूर्ण अछि जे ‘सहमति’क प्रशासनिक चिह्न कागजपर रहलो परिवारक अनुभवमे ओ अर्थ उपस्थित नहि रहि सकैत अछि।

मीरा भीड़केँ शान्त रखैत छथि, देविका अपना प्रश्नकेँ धधकैत राखक भीतरक आगिसँ जोड़ैत छथि आ बच्चा सभ विवरण लिखैत अछि। लेखक सब पात्रकेँ एकहि प्रकारक न्याय-सूत्र नहि दैत, मुदा कतहु बच्चाक निष्कर्षक दार्शनिक स्फूर्ति ओहि उमेरक स्वाभाविक बोलचालसँ ऊपर उठि जाइत अछि। तेँ सामूहिक चेतनाक कलात्मक ऊँचाईक संग भाषिक व्यक्तिविशेषता बचल अछि कि नहि, ई प्रश्न बनेल रहैत अछि।

## दरबाजाक उद्घाटन, निष्कर्षक असम्पूर्णता

सील कएल पेन-ड्राइवक विवरण आ फोन-वापसी रसीदक प्रतिलिपि चन्ना गाछी लग राखल जाइत अछि। मृतकक नामसँ संचार चलबाक आशंका रमरतिया देवीक पोता दीपकक दृष्टिमे स्वाभाविक शोककेँ नब चोट दैत अछि। अभिलेखक क्रम कथा-संरचनाकेँ अगिला ‘फोनक भीतरक चेहरा’ दिस बढ़बैत अछि। भारतीय औचित्य-विवेचनमे दृश्य, वस्तु आ पात्रक अनुभूतिक सहकार्य असरकारी अछि; तथापि सेवा-केंद्रक आधा खुलल दरबाजासँ पूरा दायित्व-श्रृंखला स्पष्ट भऽ गेल एहन निष्कर्ष अतिशयोक्ति होयत। एखन अभिरक्षा, अधिकृत हस्ताक्षर, उपकरणक तिथि आ व्यक्तिक साक्षी-अधिकार जाँचबाक बाकी अछि।

# अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा

## पेन-ड्राइव, दादीक नाम आ दृश्य-दस्तावेजक मर्यादा

सील कएल पेन-ड्राइव खोलबाक दृश्य एहि अध्यायमे दस्तावेजक सार्वजनिक कौतूहल आ व्यक्तिगत गोपनीयताक संघर्ष बनैत अछि। विनीत झा उपकरणमे प्रति बनबैत छथि; ‘शिविर फोटो’, ‘दस्तावेज’, ‘लाभुक सूची’, ‘वापसी फोन’ आ ‘विशेष’ नामक वर्गसभ देखाइत अछि। लाभुकक हाथमे फोनक तस्वीर आ फेर उपकरण वापस लेबाक दृश्य सामाजिक सहायताक वास्तविक असरपर प्रश्न उठबैत अछि। मुदा चित्र मे फोन देखा पड़ब प्रमाणक एक पक्ष अछि; स्वामित्व, भुगतान आ करारक समग्र स्थिति अलग शोध चाहैत अछि।

रमरतिया देवीक नाति दीपकक अनुभूति एतय विशेष महत्त्व रखैत अछि। दादीक चेहरा ओ अपन परिवारक स्मृतिमे सुरक्षित रखय चाहैत अछि; भीड़क उत्सुकता ओकरा फेर तमाशा बना सकैत अछि। मीरा विडियो सार्वजनिक नहि करबाक, पीड़ितक स्वीकृति लेलाक बादे उपयोग करबाक आ भयभीत वृद्ध स्त्री लग भीड़ नहि पठेबाक निर्देश दैत छथि। आक्रोशकेँ संयममे बदलनाइ एहि अध्यायक वास्तविक नैतिक घटना अछि।

## हँसी, पंखा आ हाथ : भिन्न संवेदनक मिलान

एक चित्रमे चेहरा धुँधला रहैत अछि, मुदा हाथपर कारी धागा आ जख्मक सम्भावित निशान नजरि पड़ैत अछि; ध्वनिमे पंखाक चरमराहट आ हलुक हँसी अछि। नरहरी काकाक स्मरण ई ध्वनि शहरसँ आएल व्यक्तिसँ जोड़ैत अछि। लेखक दृश्य-प्रमाण, श्रव्य-संकेत आ व्यक्तिगत पहचान-अनुमान एक संग रखैत छथि, मुदा ई तीनू समान बलक साक्ष्य नहि। फोटोमे हाथक चिन्ह एक वस्तुगत संकेत थिक; ‘ई अमुक व्यक्तिक हँसी’ स्मरणाधारित दावा थिक; पंखाक ध्वनि स्थानक सम्भावित सम्बन्धमात्र खोलैत अछि।

एहि बहुस्तरीय परीक्षणमे जेनेतक आख्यान-काल उल्लेखनीय अछि। समारोहक पुरान विडियो वर्तमान चौपालमे फेर चलैत अछि; अतीतक क्षणक नव व्याख्या वर्तमान पीड़ितक

स्मृतिसँ जन्मैत अछि। एक घटना दोसर प्रेक्षकक दृश्यमे भिन्न अर्थ ग्रहण करैत अछि। मुदा उपन्यास जखन प्रत्येक संकेतकेँ क्रमशः एक नब व्यक्ति दिस लऽ जाइत अछि, तँ वैकल्पिक व्याख्या पूछबाक स्थान संकुचित होएबाक जोखिम अछि।

## अनुपस्थित चेहरा आ उपस्थित व्यक्ति

फोनक भीतर चोरायल स्वर पाबि लेलो दोषीक पूर्ण चेहरा सामने नहि आएल अछि। ई अपूर्णता रहस्य-साहित्यक औजार मात्र नहि, नैतिक संयमक रूप सेहो बनैत अछि। दीपक द्वारा ‘दादीक चेहरा’क बदला ‘दादीक नामक चोरी’क प्रश्न उठेनाइ कृतिक मुख्य विचारकेँ धार दैत अछि। गोहि, भूत आ पातक लोकमिथकीय छवि मानवीय चेतनाक रूपक छथि; ओ तकनीकी उपकरणक प्रमाणिकता स्वयं प्रमाणित नहि करैत छथि। अध्याय १८४मे स्वर-नकलक विश्लेषण लेल ई खुलल प्रश्न आधार बनैत अछि।

# अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

## नकलक तकनीक आ कानक अस्थिर विश्वास

धमकीक ध्वनि-संदेश, सेवा-समारोहक पुरान विडियो आ पंखाक घरघराहटकेँ विनीत झा मिलाबैत छथि। ‘पहिने’ शब्दक उच्चारण, ‘सर’क दबाओल स्वर आ ध्वनिक पाछाँ रहि गेल हँसी पात्रसभक लेल पहचानक सूत्र बनैत अछि। मुदा विनीत स्वयं कहैत छथि जे आवाजक मिलान अदालतमे अन्तिम प्रमाण नहि। मीराक ‘कानक न्याय भीड़ नहि करत’ सन अनुशासन एहि अध्यायक मुख्य तर्क अछि—श्रवणक अनुभव सहायक भऽ सकैत अछि, मुदा तकनीकी मिलान, समय, स्थान आ सहमति एक संग जाँचल जाए।

सोमरी काकीकेँ गिरफ्तारीक धमकी देल गेल छल; सेवा-समारोहमे ‘हम प्रसन्न छी’ कइ बेर बजबेबाक आग्रह छल। ई प्रसंग आवाजक दू प्रकारक हरण देखबैत अछि: एकमे भय उत्पन्न करबाक लेल नकली आदेश, दोसरमे जीवित व्यक्तिक अनिच्छित सहमतिक रिकॉर्ड। समाजमे आवाजकेँ व्यक्तिक अभिन्न उपस्थिति मानबाक सहज आदत तकनीकी अनुकरणक युगमे कमजोर पड़ैत अछि। कथाक नैतिक गाम्भीर्य अहिठाम अछि।

## बिशम्भरक हाथ आ ‘मास्टर’क अधूर परिचय

कारी धागा आ हाथक जख्मक संकेत बिशम्भरकेँ जाँचक केन्द्रमे आनैत अछि। कथामे ओकर फोन बजैत अछि आ ‘सर’ शब्द निसरैत अछि; ई घटना शंका बढ़बैत अछि, मुदा फोन करनिहारक नाम नहि खोलैत। बादमे बिशम्भर आवाजक अभ्यास, नम्बर जोड़बाक काज आ ‘मास्टर’ कहाएवला शहरिया व्यक्तिक उल्लेख करैत अछि। ध्रुवेश ओकरा ‘माधवेश बाबू’ कहैत छल, तथापि ओ नामक वास्तविकता एखन सत्यापित नहि। ई स्पष्ट अपूर्णता लेखककेँ सनसनीपूर्ण तत्क्षण समाधानसँ बचबैत अछि।

पंखा सेवा केंद्रसँ शहर पठाओल गेलाक नरहरीक स्मरण श्रव्य संकेतक भौतिक स्थानान्तरणक परिकल्पना दैत अछि। मुदा दू स्थानक चरमराहट मिलनाइ स्वयं एकहि

पंखाक यात्रा प्रमाणित नहि करैत। वस्तुक स्थानान्तर, मरम्मतक कागज अथवा प्रत्यक्ष साक्षी होएब अपेक्षित अछि। एहि सावधानीसँ नैतिक प्रतिक्रिया आ प्रमाणित निर्णयक बीच अन्तर बनल रहैत अछि।

## कण्ठ-चोरीक करुणा आ आख्यानिक सीमा

सोमरी, कमला आ रामसागरक स्वर-गवाही अंकीय छलकेँ आर्थिक अपराधसँ आगू पारिवारिक संबंधक विनाश धरि लऽ जाइत अछि। जखन बेटा अपन पिताक नकली आवाजपर भरोसा करैत अछि, तखन ठगी सत्यापन-प्रक्रियाक समस्या मात्र नहि, आत्मीयताक संकट बनैत अछि। बूढ़बा भूतक ‘मशीनक डाइन’ रूपक लोकविश्वास आ आधुनिक छलक तुलनात्मक बिम्ब होइत अछि; एकरा वास्तविक अलौकिक अपराधक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि मानल जाए। अध्यायक बल ई जे भीड़क प्रतिशोधक स्थानपर लिखित गवाही आ साक्षी-सुरक्षा राखैत अछि; सीमा ई जे स्वर-अनुसन्धानक अनेक सूक्ष्म संकेत असाधारण सहजतासँ एक संग मिलैत छथि। अन्तमे ‘मास्टरक कमरा’ अगिला कथाक अनिवार्य प्रश्न बनैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १८०–१८४

## मोहरसँ सिम धरि : संस्थागत रूपान्तरण

१८०मे लेखा-कार्यालय गरीबक भूमि आ ‘दान’क आर्थिक मार्ग खोलैत अछि; १८१मे ओहि मार्गसँ धमकी पठौनिहार सिमक स्थिर प्रारम्भिक स्थान भेटैत अछि; १८२मे सेवा केंद्रक दू पञ्जी नाम आ फोनकेँ एकहि नियन्त्रण-संरचनामे देखबैत अछि; १८३मे उपकरणक दृश्य-प्रतिलिपि हाथ, हँसी आ पंखाक नब संकेत दैत अछि; १८४मे स्वर-नकलक अभ्यास आ ‘मास्टर’क अधूर परिचय तक अनुसन्धान पहुँचैत अछि। एहन रचनाक कारण अपराधक जाल एक व्यक्ति मात्र नहि, कागज, संस्था, उपकरण आ जनविश्वासक परस्पर बन्हल संरचना बनैत अछि।

## प्रमाण, आवाज आ निजताक चारि स्तर

लेखा-लिफाफा, दूरसंचारक प्रारम्भिक जानकारी, लाभुक-पञ्जी, पेन-ड्राइवक चित्र आ मुखसँ देल गवाही अलग-अलग प्रमाणजाति छथि। भौतिक वस्तुक उपस्थिति, ओकर अर्थ, व्यक्तिक चिन्हारी आ आरोपित कृत्यक सम्बन्ध स्थापित करब चारि भिन्न काज छथि। अनन्या, मीरा, विनीत आ सत्यव्रतक संवाद जखन ई भेद रखैत अछि, तखन नव्य न्यायक हेतु-परीक्षा आ आधुनिक साक्ष्य-विवेकक संगति उभरैत अछि। जखन कोनो पात्र ध्वनि वा फोटो मात्रसँ तुरन्त दोषी मानबाक झुकाव देखबैत अछि, ओहि ठाम ई अनुशासन अपनहि कसौटीपर परखल जाइत अछि।

## स्मृति आ कण्ठक अस्मिता

शान्तिक चादर, रमरतिया देवीक छवि आ सोमरीक चोरायल आवाज—तीनू निजी वस्तु सार्वजनिक विवादक आधार बनैत छथि। मुदा वस्तु सार्वजनिक भेलासँ व्यक्तिक स्वीकृतिक

आवश्यकता समाप्त नहि होइत। स्त्रीसभक अनुमति, अभिलेखक अलग अभिरक्षा, भयभीत वृद्ध लग भीड़ नहि पठेबाक नियम आ जाँचमे बालपात्रक सहभागिता प्रश्न करैत अछि जे न्याय केकरा लेल आ केकर भाषामे बनत। कथा एहि स्तरपर मात्र रहस्योद्घाटन नहि, स्मृति आ नागरिक स्वायत्तताक विश्लेषण अछि।

## कलात्मक उपलब्धि आ बचल जाँच

पाँचू अध्यायमे वस्तुक अर्थ बदलब कथा-विधानक बल अछि: चादर साक्ष्यक आसन, सिम मृत नामक दूसरा देह, सेवा-पञ्जी नियन्त्रणक रेखा, पंखा ध्वनिक सम्भावित चिन्ह आ स्वर पारिवारिक विश्वासक अपहरण बनैत अछि। पर ‘मास्टर’क वास्तविक परिचय, निर्दिष्ट सिमक प्रयोगकर्ता, लेखाक निर्देश-पत्रक उत्पत्ति, पेन-ड्राइवक मूलत्व आ पंखाक स्थानान्तरण एखन खुलल प्रश्न छथि। ई अपूर्णता बचा राखब आलोचनाक वैज्ञानिकता आ कृतिक नैतिक विश्वसनीयताक शर्त अछि।

# अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

## श्रव्य चिन्हक भौतिक घर

‘आवाजक नकाब’मे भेटल पंखाक ‘घुर्र–घुर्र–खट’ ध्वनि एहि अध्यायमे शहरक स्टेशन-पाछाँक गली धरि अनुसन्धान लऽ जाइत अछि। रेलक सीटी, टाँगल तार, मरम्मतक दोकान आ कोचिंगक फाटल पोस्टरक परिवेश अंकीय ठगीक कोनो अमूर्त अन्तरजाल नहि, स्थानीय श्रम-बाजारक ठोस स्थान देखबैत अछि। बिशम्भर स्वयं संग जाएबाक जिद्द करैत अछि, मुदा मीरा सम्भावित साक्षीक उपस्थितिसँ वस्तु-परीक्षण प्रभावित होएबाक जोखिम देखबैत छथि। अपराध-कथा एतय उत्साही प्रतिशोधक बदला प्रमाणक शुद्धताकेँ प्रधानता दैत अछि।

कोठली खुललापर ‘हरि-२’ लिखल पंखा, ओकर टेढ़ पंखुरी आ कारी पट्टी नरहरी काकाक स्मरणसँ मिलैत अछि। पहिनुक ध्वनि-साम्य आब वस्तुगत संकेतसँ बल पबैत अछि। तथापि ‘हरि-२’क पंखा भेटनाइ मात्रसँ सभ धमकी एहि कोठलीमे रिकॉर्ड भेल निश्चित नहि; स्थानान्तरणक क्रम, मूल यन्त्र आ ध्वनि-परीक्षण आवश्यक अछि। यथार्थवादी साहित्यिक शक्ति एहि अन्तरमे अछि—एक जङ लागल पंखा अपराधक व्यवस्थाक सम्भावित इतिहास कहैत अछि, मुदा अन्तिम निर्णय नहि सुनबैत।

## ध्वनि-सूची, पीड़ितक स्वीकृति आ जाँचक मर्यादा

कोठलीमे ‘सोमरी लाभ’, ‘कमला पुष्टि’, ‘रामसागर भरोसा’, ‘दादी-तीन’ आ ‘मास्टर-पुलिस-अभ्यास’ सन ध्वनि-संचिकाक सूची भेटैत अछि। ‘दादी-तीन’क सम्भावित संकेत दीपकक शोककेँ नव चोट पहुँचबैत अछि। मीरा ओकरा कानबाक स्वतन्त्रता दैत छथि, मुदा प्रमाणक कागज छूबासँ रोकैत छथि। संवेदनशील मनोभाव आ वस्तु-अभिरक्षाक साथ-साथ उपस्थिति अध्यायक नैतिक केन्द्र बनैत अछि। मूल सामग्रीक प्रतिलिपि, प्रयोगशाला परीक्षण आ अनुमतिक आवश्यकता ओहि सूचीकेँ परिकल्पनासँ आगे अनबाक मार्ग छथि।

बन्द कोठलीक गरम तार, तेल, पुरान इत्र आ धूरिक गन्ध जेनाक लेखनमे वस्तु-रहस्यकेँ देहगत अनुभूति बनबैत अछि। मुदा ‘डरक गन्ध’ सन भाषिक बिम्ब अपेक्षाकृत परिचित पुनरावृत्ति बनैत अछि; कोठलीक विशिष्ट ध्वनि आ सूची ओकरा अधिक ठोस अर्थ दैत अछि। एतय समीक्षा भावप्रवण बिम्बक तुलना वस्तुगत प्रमाण-सूत्रकेँ अधिक विश्वासयोग्य मानैत अछि।

## छूटल ‘मास्टर’ आ नब नामक छाया

कोठली भेटल, मुदा ‘मास्टर’ नहि। आधा नाम, रेलक बाट, लाल सूत आ प्रतिलिपिक सूची अगिला अनुसन्धानक दिशा बनैत छथि। लेखक नामकेँ केवल चिन्हारी नहि, सामाजिक पृष्ठभूमि आ दायित्वसँ बचबाक युक्तिक रूपमे रखैत छथि। अलौकिक गोहि आ भूतक उपस्थितिमे कथा स्वयं अपराधीक पगचिन्हक रूपक रचैत अछि, तथ्यक प्रमाण नहि। अध्यायक संरचनात्मक उपलब्धि—श्रव्य शंका केँ निरीक्षणयोग्य भौतिक स्थान धरि अनब; बचल प्रश्न—कोठलीक उपयोगकर्ता, उपकरणक मूल अभिरक्षा आ ध्वनिक निष्पक्ष मिलान।

# अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

## वर्तनीक रूपान्तर आ अपराधक परिचय

मधवेश, माधवेश, ‘एम’, ‘मास्टर’ आ ‘मधुकर’ सन रूपक अनुक्रम कथामे पहचान-निर्माणक समस्या बनैत अछि। स्टेशनक चौकीदारक बही, दोकानदारक कथन आ विद्यालयक पुरान रजिस्टर मिलिते ‘मधुकर माधव मिश्र’क नाम उभरैत अछि; पिता महेश्वर मिश्रक उल्लेख कथाकेँ आन संस्थागत सूत्रसँ जोड़ैत अछि। विद्यालयक बहीमे क्रमशः माधवेश आ मधवेश रूप देखेबाक प्रयोजन महत्वपूर्ण अछि: बचपनक एक वास्तविक नामकेँ शहरक उपयोगी पेशागत नाममे बदलनाइ ककर निर्णय छल, ई केवल वर्तनीक प्रश्न नहि।

विद्यालयक प्रधानाध्यापक नाम बदलएबाक पितृनिर्णय स्मरण करैत छथि। सत्यव्रत आ मीरा बचपनक निजी विवरण अनावश्यक सार्वजनिक नहि करबाक आग्रह करैत छथि। अभियुक्तक इतिहास जानब आ ओकर बचपनकेँ अपमानजनक तमाशा बनायब एक बात नहि। उपन्यास जखन अपराधी मानल जा रहल व्यक्तिक गोपनीयता पर सेहो बल दैत अछि, तखन न्यायकेँ प्रतिशोधसँ अलग करबाक नैतिक साहस प्राप्त करैत अछि।

## मधुकरसँ मधवेश : सामाजिक आरोहणक विडम्बना

बरियारपुरक पुरान घर आ एक वृद्ध स्त्रीक स्मरण मधुकरक लोकजीवन, गायन आ गरीबीक चित्र दैत अछि। बिशम्भरक अनुसार ‘मधुकर मरि गेल, मधवेश कमाइत अछि’क कथन भावात्मक विच्छेदक नाटकीय संकेत अछि। पर ओकरा शाब्दिक आत्मकथा वा निश्चित अपराध-प्रेरणा नहि मानल जा सकैत। नामक शहरमुखी रूप अपन सामाजिक पृष्ठभूमिसँ दूरी साधबाक चिन्ह भऽ सकैत अछि; ई अर्थ पाठक साक्ष्यसँ निकसल सम्भावना थिक, मनोवैज्ञानिक दोषसिद्धि नहि।

अध्यायारम्भक मधुमक्खी-गीतक मधु-संग्रहक रूपक एहि रूपान्तरणमे दोसर अर्थ लैत अछि। बाल्यकालक ‘मधुकर’ गीत आ भरोसासँ जुड़ल अछि, वर्तमान ‘मास्टर’ लोकक

आवाज चोरि बाजारक वस्तु बनबैत अछि। एहिमे व्यक्तिक सामाजिक परिवर्तनक नैतिक विफलता देखाइत अछि। मुदा अपराधक हेतु गरीबी वा नाम-परिवर्तन नहि, ठोस कृत्य आ नियन्त्रकक भूमिका आधारपर तय करबाक चाही।

## पिताक नाम, संस्था आ अधूरा कारण-क्रम

महेश्वर मिश्रक उल्लेख पहिनुक ‘महेश्वर’ संकेतसँ जोड़ा जा सकैत अछि, मुदा एकहि व्यक्ति होएबाक सावधानी राखल आवश्यक अछि। विद्यालयक रजिस्टर, स्टेशनक स्मरण आ बिशम्भरक कथन भिन्न स्रोत छथि। नव्य न्यायक दृष्टिसँ एक नामक समानता अविनाभावी सम्बन्धक हेतु नहि। अध्यायक विशिष्ट उपलब्धि अपराध-रहस्यकेँ व्यक्ति-इतिहासमे गहिर करब अछि; सीमा ई जे अनेक रजिस्टरक मिलान अपेक्षाकृत शीघ्र परिचयक एक रेखा बना दैत अछि। अगिला छत्ता-प्रसंग वैयक्तिक अभ्यासक पाछाँ संस्थागत नियंत्रण खोजैत अछि।

# अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

## ‘रानी’क रूपक आ खाताक वास्तविक स्त्री

धनक विभिन्न प्रवाह ‘रानी’ नामक खण्डमे जमा भेला पर अपराध-जालक मधुमक्खी-छत्ता रूपक जन्मैत अछि। मुदा पहिल रानी-खाता बहत्तर बरखक रानी देवी नामक वृद्धाक निकलैत अछि। एहि क्षणमे पाठकक सम्भावित गलत निर्णय मीरा तुरन्त रोकैत छथि: खातामे स्त्रीक नाम रहनाइ स्त्रीकेँ अपराधी नहि बनबैत। वृद्धाक असल चिन्हारी आ खाताक वास्तविक नियन्त्रक बीच अन्तर राखब एकदम जरूरी अछि। ई मोड़ लिंग-आधारित नैतिक आलोचनाक सर्वाधिक प्रभावकारी क्षण अछि।

रानी देवीक पोता मशीन ‘खराब’ बताकऽ दादीक औंठा तीन बेर लगबेबाक अनुभव सुनबैत अछि। अंकीय औंठा-पुनरावृत्तिक संकेत एतय तकनीकी शोषणक सजीव दृश्य बनैत अछि। पात्रसभ कागजक नियमित छाप आ वृद्धाक वास्तविक स्वीकृतिक अन्तर चिन्हैत छथि। मुदा औंठा जाली अछि कि पुरान सही छापक पुनः उपयोग, तकर निष्कर्ष विशेषज्ञ परीक्षणसँ पुष्ट होअय चाही; केवल गोलाइ आ दबाव देखिकऽ अन्तिम प्रामाणिकता तय नहि होइत।

## नामक तिजोरी आ संस्थागत गोटबन्दी

‘रानी’ खण्डक भीतर भिन्न स्त्रीक नाम, अनुपस्थित खाताधारी, स्त्री-समिति आ दस्तावेजी आवरणक परत उभरैत अछि। बिशम्भर ‘महेश्वर’क निर्देश आ ध्रुवेशक भूमिका बतबैत अछि, मुदा ओकर कथन अभी स्वतंत्र मिलान चाहैत अछि। मधुकर आवाज तैयार करैत छल, ध्रुवेश जोड़ैत छल आ महेश्वरक मोहर कागजक विधान बनबैत देखाइत अछि—ई कथा भीतर प्रस्तुत सम्भावित कार्य-विभाजन अछि। अनन्याक ‘देखाइत’ शब्द बचाएब एही लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे ई रूपरेखा एखन सिद्ध संस्थागत अनुबंध नहि।

स्त्री-नामकेँ निष्क्रिय खाता-शीर्षकमे बदलि देब प्रशासनिक हिंसाक एक रूप होइत अछि। मिरान्डा फ्रिकरक ज्ञानगत अन्यायक विचारसँ एतय महिलाक वचनक विश्वास-मूल्य आ

संस्थाक लिखित घोषणा बीच असमानता बुझल जा सकैत अछि। पर साहित्यिक सिद्धान्त तखने सार्थक होइत अछि जखन रानी देवीक ठोस अनुभव आ पोताक कथनसँ ओकर सम्बन्ध देखाओल जाए।

## मधु-गीतक उलट अर्थ आ कथाक सीमा

लोकगीत रानीक नाम उज्जर करबाक आग्रह करैत अछि। ई ‘रानी’ शब्दकेँ व्यक्तिक सम्मान रूपमे फेर स्थापित करब अछि, खाता-प्रणालीक काल्पनिक अपराधी-स्त्री रूपमे नहि। छत्ताक रूपक प्रभावकारी होइतहुँ कोनो एक ‘रानी’ नायक-खलनायिका ताकबाक लालच जगबैत अछि; पाठ एहि प्रलोभनकेँ स्वतः चुनौती दैत अछि। अध्यायक उपलब्धि अभियोगक दिशा बदलि पीड़ित स्त्रीक मान-प्रतिष्ठा बचाएब अछि, आ अधूर प्रश्न वास्तविक खाता-नियन्त्रण तथा मोहर-सम्बन्ध अछि।

# अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

## नामक विस्तार आ नील मोहरक सत्ता

‘महेसर’, ‘महेश्वर’, ‘महेश्वरनाथ’ आ ‘म. न. सेवक’क रूपक मिलान कथामे धार्मिक नम्रताक आवरण आ संस्थागत प्रभावक बीच तनाव पैदा करैत अछि। नरहरीक स्मरण महेश्वरक बाल्यकालक सेवा-केंद्रसँ सम्बन्ध देखबैत अछि। बजरंग मुद्राकार मोहर बनबएबाक ऑर्डर आ ध्रुवेश-जेकाँ युवकक अस्पष्ट स्मरण रखैत अछि। एहि भिन्न स्रोतसँ एक संभावित परिपथ उभरैत अछि, मुदा नामक समानता अथवा ककरो मोहर-जेकाँ आकार एखन दस्तावेजी उपयोगक पूर्ण प्रमाण नहि।

नील मुहरक गोल आकृति श्रद्धा-पत्र, सेवा-समिति आ धमकीक सरकारी-जेकाँ आदेशमे अलग भूमिकासँ देखाइत अछि। कथाक केन्द्र मोहरक दोहरा सामाजिक प्रभाव अछि—कागजकेँ विश्वसनीय बनायब आ अनपढ़ व्यक्तिमे शासनक भय जगायब। नकली आधिकारिकताक भाषा लोकक ‘ऊपरसँ आदेश’ पर निर्भर पुरान अनुभवक लाभ उठबैत अछि। अनन्याक पञ्जीमे ‘मिलान शेष’ लिखब अनिश्चित संकेतकेँ यथार्थ तथ्यसँ अलग राखबाक उचित काज अछि।

## स्त्रीक बयान आ मोहरक नकारात्मक साक्ष्य

तीन गामक स्त्रीसभ राशन, पेंशन-सुधार आ छात्रवृत्तिक नामपर फोटो अथवा औंठा देबाक अनुभव सुनबैत छथि। हुनका सभमे कियो महेश्वरकेँ देखने नहि, कियो मंचपर दूरसँ देखने, कियो केवल नाम सुनने अछि। ई भिन्नता अभिलेखीय-आलोचनामे निर्णायक अछि। ‘हम देखलहुँ नहि’ कथन साक्षीक विफलता नहि; प्रत्यक्ष अनुभूतिक सीमा होइत अछि। साक्षीक मर्यादा बचनाइ कथाक ईमानदारी बढ़बैत अछि।

पुरान दान-पुस्तिकामे ‘कुंजी-रक्षक’क पद, खाली प्रमाणपत्रक उपयोग आ भण्डार-घरक लोहेक पेटी अगिला कथासूत्र बनैत छथि। सेवा-संस्थाक ऊर्जाक केन्द्र केवल अध्यक्षक

भाषण नहि, मुहर, चाबी आ खाली पत्रक नियन्त्रण सेहो अछि। सत्ता-जाँच एहि तरहें दृष्यमान प्रशासनिक चिन्हक माध्यमसँ खुलैत अछि।

## पनिडुब्बी, हुलासी आ दस्तावेजी सीमारेखा

पनिडुब्बी आ हुलासीक उपस्थिति नील स्याहीक दागकेँ डूबल लोकक करुण स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। लोहेक पेटीमे पानि नहि, तैयो ‘डूबल आवाज’क रूपक एहि उपन्यासक शीर्षक-संरचनाकेँ पुनः अर्थ दैत अछि। अलौकिक पात्रक कथन लोकमिथकीय नैतिक आलोचना थिक; मुहरक वास्तविक निर्माता, प्रयोग-काल आ दायित्वक इतिहास फेर भौतिक स्रोतसँ जाँचल जाए। अध्यायक बल संस्थाक नियंत्रण-वस्तुसभकेँ नाटकक केन्द्रमे अनब, सीमा खुलासा-दर-खुलासाक तीव्र गति अछि।

# अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

## भण्डार-घर खोलबाक सामूहिक साक्षित्व

गदाधरक जङ लागल चाबी आ भण्डार-घरक ताला खोलबाक दृश्य अपराध-कथाक अपेक्षित उत्कर्ष रहितो लेखक ओकरा धीमा करैत छथि। कुंजी पहिल बेर नहि घूमैत; मीरा ताला बलपूर्वक नहि तोड़ि पहिने निष्फल प्रयास दर्ज करबाक आग्रह करैत छथि। अधिकारी, बैंक प्रतिनिधि, स्त्रीसभ आ लोकक साक्षित्वक व्यवस्था रचना-कालकेँ एहन विस्तारित क्षण दैत अछि जतय सत्य उद्घाटनक रोमांच पद्धतिक सावधानीसँ नियंत्रित रहैत अछि।

पेटी भीतर पहिल वस्तु सूखल नारिकेल पात भेटनाइ प्रतीकात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि। नारिकेलक पात लोक-स्मृतिमे जीवन आ नाम लिखबाक माध्यम रहल अछि; एहि भण्डारमे ओ कागजक दुरुपयोगसँ बेढ़ल अछि। कथा एहि वस्तुक कारण संस्थागत हरणक बीच संस्कृतिक बचल अंश देखबैत अछि। मुदा पातक उपस्थितिसँ सीधा कोनो आरोप प्रमाणित नहि होइत।

## चारि तह : स्त्री-नाम, बैंक, मुहर आ भयक पञ्जी

लाल थैलीमे रानी देवी, रानी कुमारी, सोमरी, कमला आ अन्य स्त्रीक फोटो, औंठाक प्रतिलिपि आ खाली सहमति-पत्र भेटैत अछि। नील थैलीमे बैंकक परिचय-पत्रक प्रति आ अधूर अंक छथि। आन तहमे गोल, चौकोर आ छोट नाम-पट्टी बला मुहर भेटैत अछि। अध्यायक गहनतम वस्तु एक टिप्पणी-पुस्तिका अछि, जाहिमे नाम, असल अंक, कार्य-अंक, आवाज, खाता आ डरक स्तम्भ बनल अछि। व्यक्ति-विशेषक आत्मीय सम्बन्ध आ असुरक्षा अपराध-जालक उपयोगी सूचनामे बदलैत अछि।

रमरतिया देवीक अकेलापन अथवा सोमरीक पेंशनक आशाकेँ ‘डर’क वर्गमे राखनाइ तंत्रक नैतिक हिंसा स्पष्ट करैत अछि। दीपकक प्रश्न—की अकेलापनो चोरल जा सकैत अछि—पाठककेँ वित्तीय ठगीसँ बेसी गहिर अनुभव धरि लऽ जाइत अछि। जकरा मनोवैज्ञानिक

निर्बलता कहिकऽ अपमानित कएल जा सकैत छल, ओहिकेँ कथा समुदायपर आरोपित असमान संरक्षणक प्रश्न बनबैत अछि।

## पेटी खुलल, लोक एखन बन्द

मीरा कागज बाहर बांटबासँ रोकैत छथि; सामग्रीक सूची बनैत अछि, मूल सुरक्षित रहैत अछि। सत्यव्रत वस्तुक विभिन्न श्रेणी, सम्भावित संबंध आ पुष्टि शेष चिन्हित करैत छथि। ‘बिसेसर’ सन मजदूरक अधूरा मृत्यु-दावाक उल्लेख आर्थिक दुरुपयोगक पाछाँ श्रमक देह पुनः दृश्य बनबैत अछि। मुदा संयुक्त संग्रहमे दस्तावेज भेटनाइ हर आरोपक यांत्रिक पुष्टि नहि; हस्ताक्षर, समय, अभिरक्षा आ लाभप्रवाह अलग जाँचनीय छथि।

लोकगीतमे पेटीक ढक्कन ‘नामक नव जनम’ बनैत अछि। अन्तिम बिम्ब सफल अछि कारण खोजक वस्तु स्वयम् अन्तिम न्याय नहि: पेटी खुलि सकैत अछि, लेकिन भयमे बन्द परिवारक आवाज खुलबाक प्रक्रिया एखन बाकी रहैत अछि। लेखकक अलौकिक छवि कोनो कागजक प्रमाणीकरण नहि करैत; ओ सामान्य लोकक मौन आ विस्मृतिक सौन्दर्यात्मक रूपरेखा दैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १८५–१८९

## शहरक कोठली सँ लोहाक पेटी धरि

१८५मे आवाजक कमरा, १८६मे मास्टरक बदलल नाम, १८७मे ‘रानी’ कहाओल धनक आवरण, १८८मे महेश्वरक नील मोहर आ १८९मे भण्डार-घरक पेटी क्रमशः साक्ष्यक स्वरूप बदलैत छथि। पहिने ध्वनि एक स्थानपर टिकैत अछि; फेर व्यक्ति-इतिहास, खाताक चिन्हारी, प्रशासनिक आधिकारिकता आ अन्ततः संग्रहित साधन देखाइत अछि। ई गति रहस्यक समाधान मात्र नहि, व्यक्तिक अपराधसँ प्रणालीक संरचनातक कारण-क्रम विस्तार अछि।

## चारि प्रश्नक अनुसन्धान-पद्धति

‘केकर स्वर?’, ‘कोन नाम?’, ‘ककर खाता?’, ‘ककर मोहर?’—ई प्रश्न प्रत्येक अध्यायक विषय-द्वार अछि। जखन एउटा उत्तर भेटैत अछि, ओ फेर नब प्रश्न पैदा करैत अछि। नव्य न्यायक प्रमाण-विवेककेँ एतय स्थिर सूत्र नहि, संशयक अनुशासित विस्तार मानब उचित अछि। मधुकरक विद्यालय-पञ्जी, रानी देवीक औंठा, बजरंगक स्मरण आ भण्डार-घरक वस्तुसभ समान स्तरक प्रमाण नहि छथि। भिन्नता अक्षुण्ण रखिते जाँचक बौद्धिक सुदृढ़ता बढ़ैत अछि।

## स्त्रीक नाम आ पीड़ितक स्वायत्तता

रानी खाताक नामसँ स्त्रीकेँ तत्काल अपराधी मानबाक अस्वीकार, पीड़ितक विवरणक गोपनीयता, अपराधी मानल व्यक्तिक बचपनक मर्यादा आ भण्डारक सामग्री सार्वजनिक नहि करबाक निर्णय एक नैतिक रेखा बनबैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ कृतिक उपलब्धि एतय अछि जे सत्य-खोज आत्मीयता आ निजताक नष्ट करबाक अनुमति नहि। कमला,

सोमरी, रानी, रमरतिया, शान्ति आ हुनका सभक परिवारक व्यक्तिगत भिन्नता सुरक्षित रहनाइ एकर कसौटी अछि।

## सौन्दर्य-रचना आ अपूर्णता

चरमर पंखा, विद्यालयक बही, मधुमक्खीक छत्ता, नील मुहर आ जङ लागल पेटी—पाँच भौतिक बिम्ब पाँच तरहक नियन्त्रण देखबैत अछि। लोकगीतसभ घटना-समाप्तिक भाव-विस्तार दैत छथि; तथापि बहुते अध्यायक आरम्भ आ अन्तमे समान नैतिक निष्कर्ष दुहरबाक शिल्पगत जोखिम अछि। महेश्वरक परिचय, ध्रुवेशक वास्तविक आदेश, बदलल नामक वैध दस्तावेज, जाली औंठाक विशेषज्ञ परीक्षण आ पेटीक वस्तुसभक सतत अभिरक्षा एखन अधूरा प्रश्न रहैत छथि। हुनका सभकेँ अधूरा लिखब समीक्षा लेल अनिवार्य अछि।

# अध्याय १९० — नील पंजी

## सहायताक बहीसँ भयक अभिलेख धरि

अध्यायक नील पंजी देखाबैत अछि जे संस्थागत हिंसा सदिखन खुलल धमकीक सहारा नहि लैत अछि; ओ कखनो सहायता आ विश्वासक परिचित भाषामे अपन संरचना बनबैत अछि। महेश्वरनाथ सेवकक पुरान आधा मोहर आ नव तिथिक नील मोहर एकहि पन्नापर रहब संस्था आ कालक दू तहकेँ जोड़ैत अछि। नाम, सम्बन्ध, भय, आवाज, खाता, हिस्सा आ स्थिति—एहि स्तम्भसभमे व्यक्ति पूर्ण मनुष्य नहि, नियन्त्रणयोग्य प्रविष्टि बनि जाइत अछि। गदाधरक स्मरणानुसार नील स्याहीक प्रयोग विश्वास जगयबाक लेल चुनल गेल छल। रंगक ई अर्थ कथा भीतर पात्रक कथनपर आधारित अछि; वस्तुगत सत्यापनक बदला केवल रंगक अनुमान नहि लगाओल जा सकैत।

एहि पंजीमे मधुकर माधव मिश्रक लग ‘स्वर’, ध्रुवेशक लग ‘निर्देश’, महेश्वरक लग ‘आशीर्वाद/मुहर’, आ बटुकनाथक स्मृति-कोषक लग प्रश्नचिह्न अछि। ई पूरा अभियोग-पत्र नहि, कथाक भीतर प्रारम्भिक भूमिका-मानचित्र अछि। विशेषतः प्रश्नचिह्न हटाएब लेखकक जाँच-पद्धतिक क्षति होएत; उपन्यास ओकरा सम्भावित सम्बन्धक अपूर्ण चिह्न रूपमे राखैत अछि। अभिलेखक श्रेणीसभ व्यवसायीकरणक साझा भाषा बनबैत छथि, मुदा प्रत्येक श्रेणीक दायित्व स्वतंत्र साक्ष्यसँ स्थापित हेबाक चाही।

## प्रत्यक्ष, श्रुत आ लिखितक पृथक्करण

आरुणि ‘जाल पूरा नील’ कहैत अछि, मुदा मीरा निष्कर्षक जल्दीसँ बचैत छथि। गदाधरक स्वीकार सुनि ओ स्पष्ट कऽ दैत छथि जे स्वयं देखल बात आ सुनल बात अलग लिखल जाए। ई छोट हस्तक्षेप नव्य न्यायक प्रमाण-विवेकक व्यावहारिक विन्यास थिक: स्रोतक प्रकृति, कथनक अधिकार आ अनुमानक सीमा अलग-अलग बुझल जाए। अनन्याक टिप्पणी—मौनक कारण आ मौनसँ लाभान्वित व्यक्तिक जाँच—व्यक्तिक चुप्पीकेँ

एकरेखीय अपराध-स्वीकार नहि मानैत। पहिनुक अध्यायसभमे सत्यव्रतक दू प्रकारक मौनक विवेचन जे प्रश्न उठौने छल, से एतय संस्था-विस्तार प्राप्त करैत अछि।

नील पंजीमे नन्दक नामक संग दैनन्दिनी, गमछा आ बाक संकेत भेटनाइ पूर्वकथाक जलसमाधि कैं वर्तमान अन्वेषणसँ गाँथि दैत अछि। जेनेतक दृष्टिसँ दीर्घ कथा अपन पुरान वस्तु-चिह्नक नव सन्दर्भमे पुनरावृत्ति करैत अछि। एहि पुनरावृत्तिक बल नामक सम्बन्धमे अछि, नहि केवल रहस्यक नब खुलासामे।

## खाली कुर्सीक सङ्केत आ कथात्मक सीमा

आवरणक भीतरक पीयर कागज—पंजी सुरक्षित, आदेश मौखिक, कुर्सीसँ पूछने बिना पन्ना नहि खोलबाक निर्देश—सत्ताकैं व्यक्तिसँ हटाकऽ आसन आ आदेश-पद्धतिक रूपमे देखबैत अछि। पंजीमे नव नाम नहि लिखि अलग पंजीमे राखबाक निर्देश जालक सम्भावित निरन्तरता सूचित करैत अछि। तथापि हस्ताक्षररहित चिह्न आ तिरछी रेखाकैं ककरो निश्चित हस्ताक्षर मानब अनुचित होएत। पनिडुब्बीक पारदर्शी पानिक बून्द आ हुलासीक कथन एहि प्रमाण-अपूर्णताक लोकमिथकीय प्रतिविम्ब थिक; पानीक रूपक भौतिक परीक्षणक विकल्प नहि। अध्यायक प्रमुख उपलब्धि विश्वसनीयता उत्पन्न करएबला रंगकैं भय-व्यवस्थाक संरचनामे बदलल देखाएब अछि। ओकर सम्भावित सीमा ई जे रंगक विस्तारित रूपक पाठककैं भौतिक दस्तावेजक कठोर परीक्षणसँ किछु बेर दूर लऽ जा सकैत अछि।

# अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

## अनुपस्थित देह आ उपस्थित आदेश

पिछिला अध्यायक पीयर पर्चीक ‘कुर्सी’ एहि अध्यायमे सजीव राजनीतिक वस्तु बनैत अछि। हरिहर सेवा केन्द्रक ऊपरक कक्षमे सूखल माला, धूपक राख, सेवा-चित्र आ विकास-नक्शा एकटा एहन पदाधिकारी-परिवेश बनबैत अछि जाहिमे प्राधिकार स्वाभाविक आ पवित्र बुझाइत अछि। मुदा गद्दाक नीचाँ नन्दक फाटल प्रतिवेदन आ कुर्सीक पहियाक चन्ना गाछीक माटि एहि वैधताक सजावटकेँ अस्थिर करैत अछि। कुर्सी खाली रहितो आदेश देबैत अछि—ई वाक्य संस्थागत शक्तिक व्यक्ति-बिनु चलैत रहबाक प्रभावी रूपक अछि, ध्रुवेशक वास्तविक अनुपस्थितिक प्रमाणमात्र नहि।

घण्टी, टूटल चार्जर आ रबर-मुहरक डिबिया कक्षक वस्तुसभ छथि, मुदा यैह वस्तु अधीनस्थ लोकक गति नियन्त्रण करबैत छल। गदाधरक अनुसार घण्टी बजिते चाह, पानि, संचिका अथवा लोक पहुँचाओल जाइत छल। एहि स्मरणमे सेवा-व्यवस्था आ डरक श्रम-इतिहास संयुक्त अछि। बाख्तिनक दृष्टिसँ एकहि कमरामे अधिकारीक आदेश आ सेवकक अनुभव समान अर्थ नहि रखैत; उपन्यास जखन गदाधरकेँ सुनैत अछि तखन सत्ता-भाषाक एकाधिकार टूटैत अछि।

## पर्ची, स्वर-अभिरक्षा आ गोपनीयता

कक्षमे बैंक-खाताक अन्तिम अंक, आधा फोन-सङ्केत, ‘भय-स्तम्भ’ लिखल पुर्जा आ ‘माय असगर—आवाज नरम’ सन निर्देश भेटैत छथि। एकटा पीड़ितक असुरक्षा दोसराक लेल निर्देशन-पुस्तिका बनि गेल अछि। एतय व्यक्ति-विरोधी अपराधक उपकरण केवल चोरायल धन नहि, लोकक सम्बन्ध आ करुण आवाजक नकल अछि। मीरा पीड़ितक ध्वनि सार्वजनिक रूपमे बजाएबासँ रोकैत छथि। एहि रोकमे निजता केवल आधुनिक विधिक अधिकार नहि, कथाक नैतिक रूपक बनैत अछि—आवाजक रक्षा नामक रक्षाक बराबर।

तेसर दराजक छिपल तहमे बिनु छपल कागज, नील बिन्दु, माटिक सङ्केत आ किछु पर्ची जाँचक सम्भावित सूत्र प्रदान करैत अछि। मुदा चन्ना गाछीक माटि-जेकाँ देखनिहार कणक उत्पत्ति बिना परीक्षण निश्चित नहि। सत्यव्रतक ‘स्रोत-परीक्षण अपेक्षित’ लिखबाक प्रवृत्ति कृतिक अनुसन्धानात्मक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। ई सावधानी रहस्यक गतिकेँ जानि-बूझि धीमा करैत अछि।

## कुर्सीक विरुद्ध गोल घेरा

लोकगीतक खाली कुर्सीक बदला जनक गोल घेरा प्रस्तावित अछि। एक व्यक्तिक आसनक विरुद्ध सामूहिक सुनवाईक चक्र उपन्यासक समूचा न्याय-दर्शन पुनः दृश्य करैत अछि। पर गीतमे संविधानक फूल आ नैतिक उपदेशक सीधा उच्चार कथा-दृश्यक सूक्ष्मता किछु कम करैत अछि; घण्टीक आवाज, गदाधरक संकोच आ माटिक अनिश्चित चिह्न अधिक प्रभावी दृश्य-साक्ष्य बनैत अछि। अध्याय ध्रुवेशक अनुपस्थितिसँ अन्तिम अपराध-दोष नहि निकालैत; ओ प्रश्न उठबैत अछि जे आदेश ककर माध्यमसँ आ कोन कार्य-विभाजनमे चलैत छल।

# अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर

## ध्वनि-अभिलेखकक दोसर जीवन

पिछिला अध्यायमे भेटल पर्चीक बाद बन्द रेकॉर्डर नब कथात्मक केन्द्र बनैत अछि। उपकरण बन्द रहितो ओकर भीतर सुरक्षित आवाज संस्थागत मौनकेँ चुनौती दैत अछि। पोखरिक राति, मेढ़कक ध्वनि आ पनिडुब्बीक लोककल्पना कथा-स्थानकेँ सुनबाक विस्तारित कान बनबैत अछि। तथापि लेखक केवल जादुई श्रवणसँ अपराधी नहि चिन्हबैत; मीरा ध्वनि-अभिलेखकक प्रतिलिपि, नमूना, समय-सूत्र आ सम्भावित वक्ताक पहचान पृथक राखैत छथि। एहि भेदसँ अलौकिक आख्यान आ अनुसन्धान-कर्म एकसंग चलि सकैत अछि।

गदाधर स्वर मधुकर सन चिन्हैत छथि, किन्तु ध्रुवेश द्वारा वाक्य लिखाओल जाएबाक सम्भावना सेहो बतबैत छथि। के बोलल आ के बोलबेलक—ई दू प्रश्न अपराधक तकनीकी आ नैतिक परत खोलैत अछि। आवाज सुनि व्यक्ति मानि लेब पर्याप्त नहि; ध्वनिक मूल, प्रतिलिपिक अभिरक्षा आ निर्देश देनिहारक साक्ष्य अलग चाही। उपन्यास जखन ‘जेना’क सीमारेखा राखैत अछि तखन प्रमाणक कल्पित पूर्णता थोपबाक प्रलोभनसँ बचैत अछि।

## कटोरीक रिक्त स्थान आ शोकक स्वायत्तता

गाछी लग माटिक खाली कटोरी राखबाक दृश्य एहि खण्डक सर्वाधिक अर्थवान रचनात्मक वस्तु अछि। कटोरी पहिले भूख, पानि आ अभावक वस्तु छल; एतय ओ अनसुन्न कण्ठक लेल स्थान बनैत अछि। रिक्तता दुर्बलता नहि, स्वागतक नैतिक रूप ग्रहण करैत अछि। मीरा आ सत्यव्रतक अध्ययनमे सुनवाईक स्थान एतय ध्वनिमय रूप पबैत अछि। पीड़ितक दुःखकेँ बारम्बार सभाक सोझाँ बजाएब सत्य-अन्वेषण नहि; सामूहिक स्मरण लेल सुरक्षित स्थान बनब आवश्यक अछि।

अनन्या जखन निर्भीकताकेँ तात्कालिक प्रकाशनक अधिकार मानि आगाँ बढ़ैत छथि, मीरा हुनका बुझबैत छथि जे नहि डरब आ बेपरवाह रहब अलग बात अछि। नामक पहरुआ जीवित रहत तखने नाम बचत—ई कथन बालपात्रक नैतिक परिपक्वताक चिन्ह अछि।

## स्वर भेटल, चेहरा बाकी

अध्यायक अन्तिम चिन्ह एक प्रासंगिक अपूर्णता अछि: ध्वनि भेटल मुदा वक्ताक वास्तविक चिन्हारी शेष अछि। नन्दक फाटल प्रतिवेदन आ पुरान अभिलेखक सम्भावित स्वर एक दोसराक निकट अबैत छथि; मुदा सांकेतिक मिलानकेँ अन्तिम निष्कर्ष नहि घोषित कएल गेल अछि। लोकगीतक कटोरी-बिम्ब कार्यशील अछि, यद्यपि प्रत्येक पद्यक स्पष्ट नैतिक अर्थ गद्यक पाठक लेल पुनरुक्ति सेहो बनि सकैत अछि। अध्यायक उपलब्धि अभिलेखीय उपकरणकेँ मानवीय श्रवणक अधीन करब, आ सीमा तकनीकी ध्वनि-परीक्षणक परिणाम एखन प्रतीक्षारत रहब अछि।

# अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

## ध्वनिक रेखासँ व्यक्तिक जिम्मेदारी

‘स्वर भेटल, पर चेहरा बाकी’क पिछिला निष्कर्ष आब विधिवत् परीक्षणमे बदलैत अछि। अभय ध्वनिक रेखा, पृष्ठभूमिक आवाज, साँसक अन्तर आ ज्ञात नमूनाक तुलना सँ परीक्षणक प्रक्रिया स्पष्ट करैत अछि। मधुकरकेँ नमूना पढ़ाओल जाएबाक दृश्य मुख्यतः ओकर झिझकक कारण प्रभावकारी अछि। परिचित स्वरक पुनरुत्पादन आ निर्दिष्ट वाक्यक उच्चारण अपराधक यान्त्रिक पहचान नहि; पाठ ओकरा मानवीय भय आ अनुशासनक बीच रखैत अछि।

ध्रुवेशक ज्ञात नमूना प्राप्त करब कठिन भेला पर उद्घाटन-समारोह, बैंक-सभा आ पुरान भाषणक अभिलेख तकबाक प्रस्ताव उठैत अछि। सेवा-केन्द्रक सार्वजनिक मर्यादा आब ओकर अपन आवाजक कारण प्रश्नाधीन होइत अछि। कथामे ‘आवाजक चाल’क बिम्ब आकर्षक अछि; मुदा वैज्ञानिक दृष्टिसँ साँसक साम्य मात्र निर्णायक व्यक्तिगत पहचान नहि। अभिलेखक गुणवत्ता, सम्पादन, परिवेश आ सम्भावित नकलबाजी समुचित प्रतिपरीक्षण माँगैत अछि। एहन सीमा स्पष्ट करब कृतिक बौद्धिक विश्वसनीयताक संग न्याय करब अछि।

## मधुकरक बयान आ वृद्धाक डगमग साँस

मधुकर आखिरकार ध्रुवेशक फोनपर निर्देश भेटबाक बात बयानमे लिखबैत अछि। ई कथन कथानककेँ श्रव्य समानतासँ आदेशक सम्भावित कड़ी धरि लऽ जाइत अछि। मुदा बयानक स्वायत्तता, परिस्थितिक दबाव आ आन स्रोतसँ मिलान आवश्यक अछि। कागचक आगाँ काँपैत हाथ आ पानिक गिलासक बारम्बार बजैत किनार जेनाक सूक्ष्म वर्णन चरित्रक मानसिक स्थिति शरीरक व्यवहारसँ देखबैत अछि।

एक वृद्धा ‘पहिने विश्वास’क आधा वाक्य कहि रुकि जाइत छथि। मीरा प्रश्न दोहराएबाक बदला हुनकर साँस अपन गति फेर पबय दैत छथि। एतय जाँच-अनुशासन आ पीड़ितक

आत्मनिर्णय एकहि दृश्य बनैत अछि। वृद्धाक नाम तत्काल रजिस्टरमे नहि लिखि अनन्याक द्वारा दीपक बनायब गूढ़ अर्थ रखैत अछि: अभिलेखमे अनुपस्थित नाम सभ बेर अपमान नहि, कखनो सुरक्षा-आधारित स्थगन होइत अछि।

## सोहर, अदृश्य चेहरा आ व्याख्याक मर्यादा

जन्मक सोहरक लयमे ‘आवाजक चेहरा’क खोज रचना-कौशलक साहसिक समागम अछि। आवाज चोरबाक प्रयासक विरुद्ध प्रत्येक जीवनक स्वतन्त्र स्वरकेँ मान्यता भेटैत अछि। पनिडुब्बीक लोकमिथकीय उपस्थिति पहचानकेँ पानिक प्रतिबिम्ब नहि, लोकक बयानमे टिकेबाक ओर ध्यान फेरबैत अछि। कथामे पहचानक पुनर्स्थापना आ अभियुक्तक सार्वजनिक अपमानक बीचक सीमा सुरक्षित रहनाइ आवश्यक अछि। उपन्यासक बल पात्रक धीमा कथन अछि; कमजोरी कखनो-कखनो आवाजक नकाब खसबाक अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा, जखन अनुसन्धान एखन पूर्ण नहि भेल अछि।

# अध्याय १९४ — साँसक समन

## अभिलेखसँ विधिक उपस्थितिक माँग

अध्याय १९३क ‘साँसक समन’ शीर्षक एहि खण्डमे ठोस कार्यवाही बनैत अछि। विनीत झा ध्रुवेशक पहचान, पंजी-सूत्र, अभिलेखक, बैंक-सभा आ मधुकरक बयानक आधारपर विधिक सम्पर्कक कागज तैयार करैत छथि। कथाक ‘साँस’ जैविक अस्तित्व मात्र नहि, व्यक्तिक अनुस्थितियोमे बचि रहल क्रिया, निर्णय आ आदेशक चिन्ह अछि। मुदा साँसकेँ समन कऽ सकब साहित्यिक रूपक थिक; वास्तविक समन निर्धारित व्यक्तिक वैधानिक उपस्थिति आ दस्तावेजी प्रक्रिया सँ सम्बन्धित अछि। एहि दुनू अर्थक भेद आलोचनात्मक पाठमे निरन्तर जरूरी अछि।

मीरा अनन्याकेँ सर्वत्र संग नहि पठबैत छथि; आरुणि सीमित दलक संग जाइत अछि। ई बालपात्रक भूमिकाक प्रभावी विभाजन अछि। जे लिखैत अछि, ओकरा प्रतीक्षा लिखबो पड़ैत अछि—एहि वाक्यसँ कथा साक्ष्य-संग्रह आ साक्ष्य-लेखनक भिन्न श्रम देखबैत अछि। पाठमे घरक घण्टी, फोन, वकीलक पत्र आ बैंक-सूत्र क्रमशः अनुपस्थित व्यक्तिक परिधि बनबैत छथि, मुदा एको संकेत स्वतः दोषसिद्धि नहि।

## ध्वनि-नमूना, आदेश आ अनुत्तरित घंटी

अभयक पाँच नियन्त्रित वाक्य तैयार करबाक प्रस्ताव ध्वनिक तुलना लेल मानक सामग्रीक प्रश्न खोलैत अछि। पीड़ितक फोनक धमकी, मधुकरक पढ़ल वाक्य आ उद्घाटनक सार्वजनिक आवाज एकहि भावनात्मक स्तरपर नहि राखल जा सकैत; हुनका सभक स्रोत अलग अछि। विधिक उपस्थितिक असमर्थताक सम्भावित कारण, फोनक कम्पनी आ व्यक्तिक अनुपस्थिति कथामे बहु-स्रोत जाँचक काज बढ़बैत अछि। पात्रसभ जँ ‘समन देल गेल’ आ ‘समन प्रभावी’ एकहि अर्थमे लिखितथि, तँ दस्तावेजी शुद्धता बिगड़त; पाठ स्वयं एहि विभेदक प्रति सजग रहबाक अवसर दैत अछि।

मोहनक लिफाफा पहुँचाओल अनुभव, डिजलक गन्ध आ डराइत स्मरण कथाक आरम्भक छोट आवाज-सूत्रकेँ एक सामाजिक श्रम-जीवनसँ जोड़ैत अछि। ‘रसीद नहि, मोन नहि’क निर्देश दस्तावेजी अनुपस्थितिक नियोजित उत्पादनक सम्भावना देखबैत अछि। मुदा दू स्थानक लिफाफा-मार्गक पुष्टि बिना मोहनकेँ अपराधक सह-अभियुक्त बना देब नैतिक त्रुटि होएत।

## न्यायमे प्रतीक्षाक सौन्दर्य

अध्यायक गति जानि-बूझि स्थगित अछि: व्यक्तिक उपस्थितिक अपेक्षा बनैत अछि, मुदा तत्काल उपस्थित नहि होइत अछि। ई स्थगन रहस्य साहित्यक स्वाभाविक तकनीक होइतहुँ एतय साक्षी आ प्रक्रिया बचयबाक साधन अछि। अनुत्तरित फोन-घंटी काव्यात्मक रूपसँ ध्रुवेशक पहुँचसँ बचैत आदेशक स्थिति बनबैत अछि। लोकगीतक मोनक रसीद पंजीक ठोस रसीदसँ प्रतीकात्मक तुलना दैत अछि; तथापि व्यक्तिगत स्मृतिक सत्य मूल्यवान रहितो परीक्षण-योग्य दस्तावेजक विकल्प नहि। एहि पाँच-अध्याय क्रमक अन्तमे कथाक केन्द्र अपराधीक अनुमानसँ अधिकार-सम्मत उपस्थितिक माँगपर आइ पहुँचल अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १९०–१९४

## रंग, आसन, उपकरण, मुखाकृति आ साँस

१९०क नील पंजी व्यक्तिक असुरक्षाकेँ स्तम्भमे राखैत अछि; १९१क खाली कुर्सी आदेशकेँ व्यक्तिक देहसँ अलग करैत अछि; १९२क बन्द रेकॉर्डर चोरायल आवाजकेँ फेर सुनबैत अछि; १९३ ध्वनिक सम्भावित स्वामीक खोज बढ़बैत अछि; १९४ अनुपस्थित व्यक्तिक विधिक उपस्थितिक प्रश्न उठबैत अछि। क्रम स्मृतिसँ पहचान धरि मात्र नहि, संस्थागत शक्ति जकाँ छितरायल चीजकेँ जाँचल जा सकय एहन स्रोतमे बदलबाक प्रक्रिया अछि। एहि पाँच वस्तु-बिम्बक संग उपन्यासक दीर्घ कथा नया दार्शनिक घनत्व प्राप्त करैत अछि।

## प्रमाणक भिन्न वर्ग आ मिथकीय प्रतिमान

गदाधरक देखल-सुनल बात, पंजीक मूल, दराजक पर्ची, ध्वनिक प्रतिलिपि, मधुकरक बयान, बैंक-सभाक सार्वजनिक अभिलेख आ मोहनक स्मरण समान प्रमाण नहि। नव्य न्यायक हेतु आ व्याप्तिक कठोरता जकाँ एतय प्रत्येक दाबीक सीमित स्रोत-आधार पहचानब मुख्य काज अछि। पनिडुब्बीक बून्द, भूतक कण्ठ आ कटोरीक लोकमिथकीय विधान नैतिक अनुभूति उभारैत अछि; ओ सामग्रीक वैज्ञानिक प्रमाणीकरण नहि करैत। ई द्विस्तरीयता कृतिक सामर्थ्य अछि जाधरि कथा स्वयम् स्रोतक सीमा सम्मान करैत रहय।

## निजी नाम बचबैत सार्वजनिक न्याय

नील पंजी निजी भय चोरैत अछि; मीरा पीड़ितक आवाज रोकि ओकरा सार्वजनिक तमाशासँ बचबैत छथि; अनन्या स्थगित नामक ठाम दीपक बनबैत छथि; आरुणि सीमित जाँच-दलमे सम्मिलित अछि। एहि वितरित भूमिकासँ नैतिक स्वायत्तता, बालपात्रक शिक्षण आ न्यायिक सावधानी एकहि कथा-शिल्पमे आउति अछि। विस्तृत रूपकक पुनरावृत्ति, विधिक शब्दक

सहज प्रयोग आ गीतक प्रत्यक्ष उपदेश किछु ठाम सूक्ष्म वर्णनपर भारी पड़ैत अछि। तथापि साक्ष्यक संरक्षित अनिश्चितता पाँचू अध्यायकेँ अखण्ड आलोचनात्मक महत्त्व दैत अछि।

# अध्याय १९५ — रोकल खाता

## धनक प्रवाह आ प्रमाणक अनुशासन

एहि अध्यायमे जाँचक केन्द्र व्यक्ति-स्वरक पहचानसँ बैंकक धन-मार्ग दिस बढ़ैत अछि। एकटा खाता रोकब केवल कार्यालयी कागजक काज नहि; अनेक परिवारक रोजीरोटी, वृद्धाक पेंशन आ विद्यार्थीसभक सहायतापर ओकर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ि सकैत अछि। कथाक प्रारम्भे ई द्विविधा स्पष्ट करैत अछि जे अपराधक प्रवाह रोकबाक निर्णय गरीबक चूल्हि बुझाबयबला दण्ड नहि बनि जाए। नाम, फोन, औंठा, मोहर, निकासी-तिथि आ ध्वनि-आदेश मिलिते जाँचक सम्भावित परिपथ तैयार होइत अछि, मुदा एको संकेत स्वतन्त्र रूपेँ पूरा दायित्व स्थापित नहि करैत।

दुपहरिया धरि पाँच खाता रोकल गेल, दू खाता आंशिक परीक्षणमे रहल, तीन खाता निगरानीमे गेल आ ध्रुवेशक निजी शोध-न्यासक खातापर विवाद उठल—ई भिन्न स्थितिसभ साहित्यिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण छथि। लेखक सभ खाताकेँ एकहि रंगमे नहिएँ देखबैत; जाँचक प्रशासनिक स्तर आ अपर्याप्त प्रमाणक बीचक अन्तर कथाक भीतर सुरक्षित रहैत अछि। न्यासक वकील ओकर स्वतन्त्रता बतबैत छथि। ई दाबी जाँच योग्य अछि, स्वतः सत्य अथवा असत्य नहि। एतय नव्य न्यायक हेतु-विवेक स्मरणीय अछि: खाता-साम्य, लाभधाराक सम्भावित संयोग आ वास्तविक नियन्त्रण अलग-अलग निरीक्षण माँगैत अछि।

## नन्दक नामक दोसर चोरी

एक भुगतान-पत्रमे ‘नन्द आरुणि प्रतिवेदन-सहायता’ सन शीर्षक भेटैत अछि। गदाधरक कथन अनुसार पुरान पुल-पीड़ितक दस्तावेज जुटेबाक नामपर धन ऊपर पठाओल गेल छल। आरुणिक हाथ काँपि उठनाइ प्रासंगिक अछि, कारण एहि बिन्दुपर आर्थिक अनियमितता व्यक्तिगत वंश-स्मृतिक अपमान बनि जाइत अछि। मृतक साक्षीक नाम फेर एक बेर उपयोग कएल गेल—कथा एहि सम्भावनाकेँ वित्तीय भ्रष्टाचारक अतिरिक्त नैतिक हिंसा रूपमे देखैत

अछि। मुदा कागजक शीर्षक आ गदाधरक व्याख्या भुगतानक वास्तविक लाभार्थी, बैंक-अभिलेख आ अधिकृत स्वीकृतिक विकल्प नहि; एहि विवादक स्वतन्त्र छानबीन शेष रहैत अछि।

अनन्याक पर्ची लिफाफामे राखब ओकर सदिखनक लेखकीय भूमिका बदलैत अछि। ओ नामक सम्मानक लेल केवल नारा नहि दैत, मूल वस्तुक संरक्षण करैत अछि। एतय नन्दक स्मृति आ चालू जाँचक बीच कथा-समयक दीर्घ चक्र जेनाक आवृत्ति रचैत अछि: आरम्भक मृतकक दैनन्दिनी वर्तमान खाताक माध्यमसँ नव अपराध-प्रयोगक आशंका बनि घुरैत अछि।

## रोकेल खाता आ खुलल नैतिक प्रश्न

अध्यायक शीर्षक धनक स्थगन दर्शबैत अछि, मुदा कथा जोर दैत अछि जे अभिलेख-रक्षा संग निर्दोष व्यक्ति पर गलत रोक नहि लागय। ई दुविधा कृतिक न्याय-विचारक सबल पक्ष अछि। लोकगीतमे धनक डर आ जनक साहसक विडम्बना रूपक बनैत अछि; तथापि धन निर्जीव अछि आ दोष व्यक्तिक कृत्यक होइत अछि—संगीतक मानवोपमाक अर्थ प्रतीकात्मक मात्र। अध्याय बैंकसँ फेर जल दिस मुड़ैत अछि, जनु वित्तीय दस्तावेजक अन्तिम उत्तर केवल धन-वसूली नहि, चोरायल नामक वापसी हो। एहि रूपान्तरणमे कथाक मूल शीर्षक नव अर्थक तैयारी करैत अछि।

# अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

## देहक डूबनाइसँ नामक लोप धरि

एहि अध्यायमे ‘जलसमाधि’ शीर्षकक सम्पूर्ण त्रयीमे फैलल अर्थ स्पष्ट होइत अछि। पानि स्वयं अपराधी नहि; देहक मृत्युकेँ अनुपस्थितिक कागजमे बदलि देब, मजदूरक नाम काटब, स्त्रीक रोदनकेँ कुलक लाज मानब आ वृद्धाक भरोसाकेँ अङ्कमे समेटब—ई सामाजिक प्रक्रियासभ असल डुबेनिहार रूपमे प्रस्तुत छथि। ई विस्तारित अर्थ आरम्भक पुलक छपाक, नन्दक दैनन्दिनी, चन्ना गाछीक भूत, अंकीय ठगी आ राघवक कोडकेँ एक वैचारिक धरातलपर आनैत अछि। पाठ केवल पर्यावरणीय दुर्घटनाक कथा नहि रहल; ओ प्रतिष्ठा, निजता, श्रम आ सामूहिक स्मृतिपर चलैत अदृश्य हिंसाक दीर्घ आख्यान बनैत अछि।

फाटल गमछा आ काँसक कटोरी वस्तुगत केन्द्र बनैत अछि। इनार, कमला-बलान आ गंगाक जल एक पात्रमे मिलब अनेक स्थानक दुःख आ स्मृतिक संगमक काव्य-रचना अछि; एकरा वास्तविक फोरेंसिक नमूनाक समरूप ठहरायब नहि चाही। कटोरीमे रखल जलकेँ पात्रसभ ‘प्रमाण’ कहैत छथि—ई लोक-स्मृतिमे नैतिक साक्षित्वक अर्थमे सार्थक, विधिक नमूनाक स्वतंत्र प्रमाणीकरण नहि।

## उपस्थित नाम, रिक्त पाँति आ स्वीकृतिक मर्यादा

नाम-पाठमे बिसेसर पासवान, सलामत अंसारी, गोपी महतो आ रजनू मंडलक उल्लेखक बाद पाँचम स्थानपर ‘छोटू’क पूर्ण पहिचान नहि भेटैत। मीरा खाली ठाम राखबाक निर्देश दैत छथि। ई रिक्त पाँति कथाक रचनात्मक उपलब्धि अछि: अपूर्ण ज्ञानकेँ अधूरा रूपमे सुरक्षित रखब मिथ्या सम्पूर्णताक अपेक्षा अधिक न्यायपूर्ण होइत अछि। अलग-अलग पीड़ित लेल पूरा नाम, उलटल पात आ बिन्दुक रूपमे निजता-सम्मत प्रस्तुति अपनाओल जाइत अछि। जे स्त्री बजय नहि चाहैत छथि, हुनकर अनिच्छाकेँ दोष अथवा अनिवार्य सार्वजनिक गवाही नहि मानल जाइत।

एक बूढ़ स्त्री डिबियामे बेटाक राख नहि, डरक कारण जरा देल नोटक राख लऽ कऽ अबैत छथि। फोनपर बेटा जेल जाएबाक धमकीक कारण गहना बेचबाक स्मरण डिजिटल ठगीक आर्थिक परिणामकेँ विश्वासक मृत्यु रूपमे विस्तारित करैत अछि। ई स्वरक छोट प्रसंग आ कटोरीक दीर्घ मौन मिलि अध्यायकेँ आँकड़ासँ मानवीय अनुभवक ओर घुराबैत अछि।

## आरम्भक छपाकक उत्तर

अनन्या ‘कथा आरम्भ धरि घुरल’ कहैत छथि; सत्यव्रत जवाब दैत छथि जे आरम्भ न्याय धरि आनल गेल अछि। एतय आख्यान-काल गोलाकार नहि, रूपान्तरकारी बनैत अछि। मीराक पहिल खुलल रोदन आ जलसँ उभरल फाटल गमछाक दृश्य लोकमिथकीय करुण-उत्कर्ष अछि। एहि दृश्यकेँ चमत्कारक प्रमाण नहि, सामूहिक शोकक कलात्मक सघनीकरण मानब उचित। अध्यायक अन्त एक विचारधारात्मक घोषणा-कर्म बनि सकैत छल, मुदा रिक्त पाँति, जरा देल नोटक राख आ मीराक बून्दक वस्तुगत सूक्ष्मता ओकर अर्थकेँ वास्तविक गहिराइ दैत अछि।

# अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

## अभिलेखक कागज आ मायक स्मृति

अध्याय १९६मे ऊपर अनल नामसभ एहि अध्यायमे सत्यापनक कठिन क्रममे प्रवेश करैत छथि। लेखक उपयुक्त प्रकारसँ ‘नाम पुनर्स्थापन’ कैँ सुलभ उत्सव नहि बनबैत। बिसेसर पासवानक नाम, घरमे कहल रूप आ श्रम-पञ्जीक भिन्न वर्तनीक मिलान करबाक प्रसंगमे मातृ-स्मृति नब स्थान प्राप्त करैत अछि। मायक जीवित स्मरण कागजकैँ यान्त्रिक रूपसँ उनटा देबाक छूट नहि; मीरा कागज, समय, स्थान आ साक्षीक संग ओकर परीक्षणक बात कहैत छथि। विनीत तीन स्तम्भ प्रस्तावित करैत छथि—कागजक नाम, घरक नाम आ स्थिर नाम। ई सूक्ष्म वर्गीकरण समकालीन अभिलेख-अध्ययनक उपयोगी साहित्यिक प्रतिरूप बनैत अछि।

फूलकलीक उपस्थितिसँ अनुपस्थित मजदूरक घर फेर दृश्य होइत अछि। जखन परिवारसँ औंठा लेल गेल नहि, तखन फाइलमे स्वीकृतिक खाली ठाम स्वयं ऐतिहासिक बहिष्कारक संकेत बनैत अछि। मुदा प्रत्येक खाली हस्ताक्षर स्वतः षड्यन्त्रक निर्णायक प्रमाण नहि; पाठ एहि रिक्तिक सामाजिक कारण खोजबाक नैतिक आग्रह दैत अछि।

## पुष्ट नामक थारी आ प्रतीक्षा-टोकरी

कथाक अत्यन्त प्रभावी दृश्य पुष्टि-प्राप्त नामक पातकैँ थारीमे आ अपुष्ट नामक पातकैँ लाल सूत बान्हल बाँसक टोकरीमे राखब अछि। ‘अज्ञात’कैँ अन्तिम पहिचान मानि खारिज करबाक बदला ‘नाम-अपूर्ण, खोज जारी’ लिखबाक निर्णय मृत्यु-लेखाक कठोरता बदलैत अछि। ई केवल शब्द-सुधार नहि, ज्ञानक अवस्थाक सत्य-स्वीकार थिक। नव्य न्यायक अभाव आ अज्ञानक भेद एतय पाठ-व्यवहारमे उतरत अछि: उपलब्ध प्रमाण न भेटब आ व्यक्तिक नाम कहियो नहि छल—ई दुनू अलग दावा छथि।

सुरजमुखी देवी अपन धन, बकरी आ ठगीक अनुभवक कारण नाम पुनर्स्थापन चाहैत छथि; हुनकर मामिला मृत्यु नहि। एहि प्रसंगसँ पुनरुद्धारक भाषा मृतक-परिवार धरि सीमित नहि रहैत, सामाजिक प्रतिष्ठाक चोरी भोगल जीवित व्यक्तिक लेल सेहो खुलैत अछि। कटोरीक जलक समानान्तर थारी आ टोकरी वस्तु-प्रतीक कथा-दृष्टिक सामुदायिक विस्तार करैत अछि।

## सहमति, अधूरापन आ आगामी धरती

एक बच्चाक प्रश्न—जँ कोनो नाम पूरा कहियो नहि भेटत—सत्यव्रतकेँ कठिन नैतिक उत्तर धरि लऽ जाइत अछि: झूठा पूरा नाम बनएबाक बदला अधूरा नाम सुरक्षित रहय। एहि उत्तरमे कथा-निष्पत्तिक उत्साहपर प्रमाणक अनुशासनक विजय अछि। नामक पुनरुद्धार भीड़क रोदन-प्रदर्शन नहि बनय, एहिमे मीराक निरन्तर भूमिका अछि। लोकगीतक अर्घ्य-बिम्ब धार्मिक-सांस्कृतिक संकेत दैत अछि, मुदा आराधना आ दस्तावेजक सत्य एकहि चीज नहि। अन्तमे अपराधीक धरतीक ओर मुड़बाक निर्देश कथाक नब मोड़: नैतिक मान्यता प्राप्त भेला बाद भौतिक जवाबदेहीक परीक्षण आवश्यक बनैत अछि।

# अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

## पगचिन्हक वस्तुगत भाषा

माटि एहि अध्यायमे उन्माद नहि, परीक्षणक धरातल बनैत अछि। भागैत वाहनक चक्का पुरान खरिहानी धारक कच्चा माटिमे धँसि जाइत अछि; नंग पएरक निशान आ अटकल जूता भौतिक साक्ष्यक सम्भावित सूत्र बनैत छथि। लेखकक जूता-बिम्ब चतुर अछि: वस्तु बदलि सकैत अछि, मुदा देहक चाल आ परिस्थितिजन्य निशान सामाजिक क्रियाक अवशेष छोड़ैत अछि। तथापि पगचिन्हकेँ व्यक्तिक निश्चित पहचान कहबाक लेल नाप, नमूनाक गुणवत्ता, दूषित नहि भेल स्थल आ स्वतंत्र तुलना अनिवार्य अछि। दृश्य केवल ‘धरती स्वयं दोषसिद्धि कऽ देलक’क रोमानी सरलीकरण नहि बनय।

मीरा भीड़केँ दूर रोकैत छथि। जाँचमे उपस्थित लोकसभक क्रोध सहज बुझाइत अछि, मुदा अव्यवस्थित पकड़, मारपीट अथवा निशान कुचलि देब दोषी मानल व्यक्तिक विरुद्ध प्रमाण नष्ट कऽ सकैत अछि। लेखक एहि द्वन्द्वकेँ कथानकक तात्कालिक रोमांचक विपरीत न्यायिक संयमक रूपमे राखैत छथि।

## ध्रुवेशक दृश्य आ अपमानक निषेध

गाड़ीक प्रकाशमे ध्रुवेशक देह बिना पदाधिकारीक शालक देखाइ देब पदक आभासक विघटन अछि। ओकरा संग रहल लोकसभक क्रिया, गाड़ीक स्थिति आ एक व्यक्ति द्वारा जूता छोड़ि भागबाक दृश्य तत्काल जाँचक स्थिति बदलैत अछि। जूता माटिमे अटकि गेला पर उठल हँसीकेँ मीरा रोकैत छथि। ‘नंग पएर लोककेँ अपमानित नहि करब’क आग्रह अपराधी मानल व्यक्तिक मानवीय मर्यादाकेँ नष्ट किए बिना जवाबदेही माँगबाक दुर्लभ नैतिक क्षण अछि।

कथा वास्तविक चौकीक कर्मचारी आ पंचायतक लिखित प्रतिनिधि उपस्थित करबैत अछि; प्रक्रिया कतेक कठिन अछि से फोनपर प्रतीक्षा आ आपात निर्णयसँ बुझाइत अछि। विधि देर करैत अछि तखनो साक्ष्य बचब जरूरी, मुदा एहि कारण लोक-अदालत द्वारा तत्काल दण्डक

अधिकार नहि उत्पन्न होइत। ई भेद कृतिक न्याय-पक्षकेँ प्रतिशोधक रोमांचसँ अलग करैत अछि।

## माटिक मिथक आ साक्ष्यक मर्यादा

लोकगीतमे जूता आ माटिक माध्यमसँ सत्य स्वयं बोलबाक आह्वान अछि। साहित्यिक रूपेँ ई चन्ना गाछीक जड़ि, पानि, धूरि आ नामक पहिनुक बिम्बसँ जोड़ैत अछि। पॉल रिकरक आख्यान-समयक दृष्टिसँ आरम्भक पानिमे डूबल देहक कथा अन्तमे माटिपर टिकैत पदचिह्न धरि अबैत अछि; स्मृतिक दिशा आगाँक कारबाइक कारण बनैत अछि। सीमा ई जे माटि ‘देखल’ बातक मानवोपमा प्रमाणक शृंखला पूर्ण करबाक अपेक्षा जगाबैत अछि। लेखक स्वयं भीड़क हटब आ जाँचक नाप-जोख जकाँ दृश्य द्वारा एहि अपेक्षाकेँ यथार्थमे सीमित करैत छथि।

# अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

## शिवनाथक नाम आ तीस बरखक प्रतीक्षा

एहि अध्यायक आरम्भमे लोहेक संदूक केवल दुराचारक खजाना नहि, नामक पुनर्जन्मक माध्यम बनैत अछि। शिवनाथ सदाक नामक अभिलेखीय उपस्थितिसँ लम्बा पारिवारिक प्रतीक्षाकेँ ठोस आधार भेटैत अछि। मुदा कागजपर नाम घुरब मृतकक देह वा सम्पूर्ण न्याय घुरब नहि; कथा ई दुखद अन्तर सुरक्षित राखैत अछि। नन्दक दैनन्दिनी, रानी-खाताक सूची, औंठाक प्रतिलिपि, मोहर आ पञ्जी—एहि सभ चिह्नक एक स्थानपर आबनाइ पात्रसभक अनुभवकेँ जोड़ैत अछि, किन्तु प्रत्येक दस्तावेजक स्रोत आ विधिक मूल्य अलग रहत।

फूलकलीक अँचरासँ शिवनाथक पन्ना ढाँकब स्मृतिक निजीत्वक अति सूक्ष्म अभिव्यक्ति अछि। दस्तावेज राज्यक अभिरक्षामे जा सकैत अछि, मुदा शोकपर राज्यक सर्वाधिकार नहि होइत। एतय मीराक स्पष्ट आग्रह—कानब, औंठा आ लाज लोक-प्रदर्शनक वस्तु नहि—पिछिला समूचा अनुसन्धानक नैतिक मर्यादा संक्षेपित करैत अछि।

## मूल वस्तु, अनुमति आ तीन प्रकारक प्रति

संदूकक प्रत्येक वस्तु सूचीबद्ध कएल जाइत अछि, मूल सरकारी मुहरबन्द पैकेटमे आ प्रतिलिपि परिवारक अनुमतिसँ विधिक, लोक-स्मृति आ निजी तीन प्रकारमे बनेबाक प्रस्ताव अछि। ई उपन्यासक अभिलेख-धारणाक परिपक्व क्षण अछि। सार्वजनिक सत्यक आवश्यकता आ निजी जानकारीक असुरक्षा एक दोसराकेँ समाप्त नहि करैत; नियंत्रित प्रवेश आ संलग्न परिवारक निर्णय दुनूक मध्यस्थ बनैत अछि। लाल, नील आ कारी कागजक पहिनुक रंग-रूपक आब दस्तावेजक अधिकार-वितरणक व्यवहारमे बदलैत अछि।

अनन्या ‘रिक्त ठाम लोकसमक्ष’ चिन्हित करैत छथि। एहि वाक्यक अर्थ गोपनीय सामग्रीक निर्बाध प्रकाशन नहि, उत्तरदायित्वक अपूर्ण स्थानक सार्वजनिक पहिचान थिक। रहस्य नुका देल गेल तखन नव शोषणक बाट पुनः खुलि सकैत अछि; मुदा पीड़ितक व्यक्तिगत

संवेदनशील विवरण फैलाएब सेहो हिंसा बनि सकैत अछि। ई द्वन्द्व कृतिक बौद्धिक उपलब्धि अछि।

## रिक्त पेटी आ जीवितक निर्णय

संदूक खाली भेलापर ओकर प्रतिध्वनि समाप्त नहि होइत। चन्ना गाछीमे जखन भूत, हुलासी, पनिडुब्बी, अनन्या, मीरा आ आरुणिक स्वर जुटैत अछि, तखन लोकमिथकीय संसार अपन न्यायिक सत्ता जीवित समुदायक हाथ सौंपबाक तैयारी करैत अछि। स्मारक आ पहरुआक अन्तर निर्णायक अछि: फूल चढ़ाएब एक बेरक अनुष्ठान भऽ सकैत अछि, मुदा पहरा रोजक अभ्यास चाहैत अछि। फूलकलीक सूखल पात उठायब एहि नैतिक परिवर्तनक सघन बिम्ब अछि। कथात्मक सीमा ई अछि जे संदूकक भीतर एकत्र भिन्न-भिन्न युगक चिह्नक कारण-सम्बन्ध अतिशय सुविधाजनक प्रतीत भऽ सकैत अछि; तथापि मूल वस्तु सुरक्षित रखबाक दृश्य ई संयोगकेँ पूर्ण दैवी प्रमाण बनबासँ रोकैत अछि।

# अन्तराध्यायिक तुलनात्मक समीक्षा : अध्याय १९५–१९९

## वित्तीय रोकसँ लोक-स्मृतिक पुनर्स्थापन

१९५मे धनक प्रवाह रोकल जाइत अछि; १९६ ‘जलसमाधि’क सामाजिक अर्थ पुनः परिभाषित करैत अछि; १९७ अपूर्ण नामक सत्यापनक पद्धति बनबैत अछि; १९८ माटिक पदचिह्नक ठोस जाँच सम्भावना खोलैत अछि; १९९ संदूकक भीतरक वस्तुसभकेँ सुरक्षित अभिलेख आ उत्तरदायित्वमे बदलैत अछि। एहि क्रममे अपराध-कथाक ‘ककरा पकड़ल गेल’ बला प्रश्न ‘ककर नाम, ककर अधिकार आ ककर स्मृति बचल’क व्यापक प्रश्न बनैत अछि। वित्तीय, लोकमिथकीय, पारिवारिक आ प्रशासनिक स्तरसभ एक-दोसराकेँ स्पर्श करैत अछि, मुदा एकर प्रमाण-मूल्य समान नहि।

## रिक्तताक पाँच रूप

रोकल खाताक अवरुद्ध निकासी; छोटूक नामक रिक्त पाँति; प्रतीक्षा-टोकरीक अपूर्ण नाम; जूतासँ खाली भेल पएर; अन्तमे रिक्त संदूक—पाँचू रिक्तता अलग अर्थ रखैत अछि। कोनो रिक्तता दोषक साक्ष्य नहि होएत, कोनो दमनक चिन्ह, कोनो नैतिक सावधानी आ कोनो लोक-चेतनाक आरम्भ। उपन्यासक सर्वाधिक नव्य सौन्दर्य ई अछि जे रिक्त स्थानकेँ समापनक विफलता नहि, स्वीकृत ज्ञान-सीमा बनबैत अछि। नव्य न्यायक अभाव-विचार आ विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि एतय जन-जीवनक उपेक्षित अभिलेखकेँ पुनः पढ़बाक अवसर पबैत अछि।

## मीराक न्याय-विवेक आ बाल-पात्रक उत्तराधिकार

मीरा बराबर भीड़क आवेग, पीड़ितक सार्वजनिक प्रदर्शन आ संस्थाक मनमाना दण्ड रोकैत छथि। अनन्या वर्गीकृत पञ्जी, बिन्दु, थारी आ टोकरीक माध्यमसँ नब अभिलेख पद्धति

सिखैत छथि; आरुणि नन्दक नामक दोसर चोरीक व्यक्तिगत क्षति सँ गुजैर सामूहिक अधिकारक उत्तरदायित्व बुझैत अछि। सत्यव्रत लोक-स्मृतिक मानककेँ विधिसँ मिलायबाक कठिन भूमिका निभबैत छथि। ई वितरित नायकत्वक बल अछि। पात्रक नैतिक कथन किछु बेर अति स्पष्ट उपदेश बनैत अछि, मुदा फाटल गमछा, जरा देल नोटक राख, अटकल जूता आ फूलकलीक अँचरा एहि विचारक वास्तविक कलात्मक प्रमाण बनैत अछि।

# अध्याय २०० — नामक पहरुआ

## अन्तक भोर आ ३०१ अध्यायक स्मृति-पाठ

समापन-अध्याय चन्ना गाछीक भोरसँ आरम्भ होइत अछि। माटि, ओस, राख, कटोराक पानि, शिवनाथक पन्ना, नन्दक दैनन्दिनी, ध्रुवेशक जूता आ रिक्त संदूक—पहिनुक अनेक अध्यायक वस्तु एहि ठाम एक संग आबैत अछि। ई सामग्री केवल पछिलका घटनाक सूची नहि: प्रत्येक वस्तुक अर्थ बदलि चुकल अछि। जखन आरम्भमे कबड्डीक साँस नान्हि खेल छल, आब ओ सीमा पार कऽ नाम लऽ कऽ घुरबाक सामूहिक नियम बनैत अछि। जखन मृतकक नाम पञ्जीमे अनुपस्थित छल, आब ओ मृतकक परिजनक इच्छानुसार उच्चरित होइत अछि। उपन्यासक वृत्ताकार आख्यान एही परिवर्तनसँ पूर्णता पबैत अछि—जतएसँ कथा आरम्भ भेल, वैह ठाम घुरब; मुदा पहिल बेर जेकाँ नहि, अधिक जिम्मेदारीक संग।

मीरा पुष्पमाला नहि, वस्तुक प्रतिलिपि आ गवाहक व्यवस्था लैत छथि। अनन्या आरम्भक ‘चन्ना गाछीक कबड्डी’ सँ अध्याय-शीर्षक फेर पढ़ैत अछि; आरुणि ‘दहिन कातक गाम’ लिखैत अछि। एतय शीर्षक-पाठ स्वयं सामूहिक इतिहासक अभ्यास अछि। मुदा एहन क्रमिक पुनर्पाठकेँ केवल महाकाव्यात्मक विजय मानब उचित नहि: अनेक तथ्य, अदालतक निर्णय आ सामाजिक संघर्ष एखन भविष्यक काज छथि। उपन्यास स्वयं एहि अधूरापनकेँ स्वीकारैत अछि।

## कानूनक आधा आ स्मृतिक आधा

सत्यव्रत कहैत छथि जे कागज अदालत पहुँचि गाममे नाम नहि बचल तँ न्याय आधा; गाम नाम बचा लेलो अपराधक वैधानिक निर्णय नहि भेल तँ सेहो आधा। ई कथन उपन्यासक दीर्घकालिक नैतिक तर्कक परिपक्व रूप अछि। पूर्व मौनक अपराध आ दोसर मौनक श्रवण-दायित्वक बाद सत्यव्रत अपन विशेषज्ञताकेँ समुदायसँ अलग सर्वोच्च सत्ता नहि मानैत छथि।

मीराक अभिलेखीय सावधानी, फूलकलीक निर्णयाधिकार, स्त्रीसभक मान-शुद्धि आ बालपात्रक अनुसंधानक अभ्यास एकहि सामाजिक संरचनाक सहयोगी काज बनैत छथि।

‘मौनक नामावली’मे डर, लाभ, दिखावा, जाति, नौकरी, दानक प्रपंच, प्रतिष्ठा आ पीड़ाक बाजार सन शब्द लिखल जाएब एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। बाहरी आरोपीक नाम पढ़लाक संग गाम अपनहि सहमति, निष्क्रियता आ सुविधाक भूमिका पर प्रश्न करैत अछि। सामाजिक आलोचना यहीं व्यक्तिगत खलनायकक कथा सँ बेसी पैघ बनैत अछि। तथापि सभ दर्शकक मौनकेँ एक समान नैतिक दोष नहि कहब चाही; आर्थिक निर्भरता आ हिंसाक भय सामाजिक स्वायत्तताकेँ भिन्न प्रकारसँ सीमित करैत अछि। ई अन्तिम समेकित विमर्शक आवश्यक आलोचनात्मक शर्त अछि।

## रिक्त नाम, छोट माटिक पट्टिका आ अनाम उत्तराधिकारी

गाछीक चारूकात पैघ स्मारक वा रंगीन फाटकक बदला नान्हि माटिक पट्टिका रखबाक निर्णय सार्वजनिक स्मृतिक लोकतन्त्रीकरण अछि। नामक आकार बराबर राखब, अधूरा नामक लेल रिक्त ठाम राखब आ पीड़ितक अनुमतिक बिना फोटो-तमाशा नहि करब—ई सभ क्रियासँ स्मारकक बनावट सामाजिक सत्ता विरुद्ध प्रश्न बनैत अछि। खण्डमे छोटूक अधूरा खोज आ शिवनाथक अभिलेख-दुविधा समापनक बादो पाठगत जाँच चाहैत अछि; रिक्तता स्वीकारब एहि दृष्टिसँ औचित्यपूर्ण अछि।

गोहि पानिमे उभरि अक्षर छोड़ैत अछि, बूढ़बा भूत निर्णायकक डण्डा जीवितसभकेँ सौंपैत छथि, हुलासी आ पनिडुब्बी छाहमे घुलैत छथि। लोकमिथकीय अन्तःस्तरक ई रूपान्तरण अलौकिक पात्रक विधिक साक्ष्य नहि; ‘मृतकक स्थानपर जीवितक जिम्मेदारी’क सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति अछि। ठूँठक नव हरियर बिन्दु एही उत्तरदायित्वक वनस्पतिक बिम्ब बनैत अछि।

## कटोराक उत्तराधिकार आ आख्यानक खुलल अन्त

मीरा कटोरा अनन्याकेँ, अनन्या आरुणिकेँ आ आरुणि एक छोट बच्चाकेँ सौंपैत अछि। बच्चा डेराइत अछि जे कटोरा खसि जाएत; तखन नाम नहि खसबाक शिक्षा भेटैत अछि। ई प्रतीकात्मक हस्तान्तरण उपन्यासक एकल नायक-विहीन रचना सफल बनबैत अछि। जेनेतक कथाक समयदृष्टिसँ अन्तिम खेल आरम्भक खेलक पुनरावृत्ति अछि, मुदा अर्थक आवृत्ति नहि: पहिल साँस शारीरिक सीमा जाँचैत छल, अन्तिम साँस नैतिक सीमा पहरैत अछि।

समापनक उपलब्धि पूर्ण दण्डादेश प्रस्तुत करब नहि, नित्यक लोक-कर्तव्य रचब अछि। कथाक सीमा ई जे सभी पात्रक नैतिक वचन कखनो अत्यधिक एकरूप भऽ जाइत अछि आ अन्तिम गोहि-प्रतीकक अर्थ पाठक लेल स्पष्ट कहि देल जाइत अछि; आरक्षित मौन अधिक कलात्मक प्रभाव छोड़ि सकैत छल। तथापि ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नै’क आवर्तन, फूलकलीक मुक्त कानब आ हाथ-दर-हाथ कटोराक पहुँचनाइ कृतिक करुणा आ उत्तरदायित्वकेँ एकहि रूपमे जोड़ैत अछि। कथा समाप्त भेलाक बादो पहरा समाप्त नहि होइत—ई समापनक रचनात्मक उपलब्धि अछि।

# सम्पूर्ण त्रयीक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

## तीन खण्ड, एक दीर्घ आख्यान : संरचनाक मूल विशेषता

‘गोहि सभक बीच जलसमाधि — सम्पूर्ण त्रयी’क खण्ड-०मे ऋण क्रमाङ्क −१०० सँ −१ धरि १०० अध्याय, खण्ड-१मे ० सँ १०० धरि १०१ अध्याय आ खण्ड-२मे १०१ सँ २०० धरि १०० अध्याय अछि। ई कुल ३०१ अध्यायक क्रम केवल परिमाणक विस्तार नहि; ऋण क्रमाङ्कक पूर्वकथा वर्तमानक जीवनपर एहन इतिहासक भार राखैत अछि जे वर्तमान चरित्रसभक आगमनसँ बहुत पहिने आरम्भ भेल छल। तीनू खण्डक आत्मीय सूत्र गढ़ नारिकेल, चन्ना गाछी, नदीक जल, श्रमिक मृत्यु, नामक अभिलेख, सत्ताक प्रक्रिया, डिजिटल छल आ पिढ़ी-दर-पिढ़ी स्मृति-उत्तराधिकार अछि।

खण्ड-०क दीर्घ ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे लोकश्रुति, पञ्जी, बाढ़ि, जातिगत बहिष्कार, श्रम, प्रादेशिक परिवर्तन आ न्याय-दर्शनक अनेक रेखा निर्मित होइत अछि। खण्ड-१मे ओकरा वर्तमान पात्र, आपदा, मुकदमा, डिजिटल जाल, संस्थागत शक्ति आ निजताक टकरावसँ नब संघर्ष भेटैत अछि। खण्ड-२मे स्मृतिसँ अध्ययन, अध्ययनसँ जनसुनवाई, जनसुनवाईसँ अभिलेखीय अनुसन्धान आ अन्ततः पुनर्नामकरण तथा पहराक व्यवस्था धरि गति विकसित होइत अछि। ई क्रम सामाजिक महाआख्यानक आकांक्षा रखैत अछि; किछु अध्यायसमूह उपन्यासक मुख्य धड़कनसँ दूर जा कऽ स्वतन्त्र दार्शनिक आख्यानक समान सेहो प्रतीत होइत अछि। एहि आवधिक विचलनकेँ गुण मात्र कहब उचित नहि; ई व्यापक बौद्धिक प्रयोग आ कथात्मक सघनताक बीच तनाव अछि।

## कथाकाल, आवृत्ति आ दृष्टिबिन्दु

जेनेतक कथा-समयक दृष्टिसँ आरम्भ, पूर्वस्मृति, पुनर्वर्णन आ उत्तराध्यायिक प्रतिपरीक्षण तीनू खण्डमे अलग तरहें उपस्थित अछि। एकहि पुल-दुर्घटना, सरकारी रजिस्टर, सेवा-समारोह अथवा चन्ना गाछीक घटना विभिन्न पात्रक कथनमे फेर अर्थ ग्रहण करैत अछि।

आवृत्ति एतय न्यूनतम दू भूमिका निर्वाह करैत अछि: पहिल दबल इतिहासकेँ स्मरणमे जीवित रखब; दोसर पुरान साक्षीक नव अर्थ जाँचब। जहाँ नव साक्ष्य जुड़ैत अछि, पुनरावृत्ति प्रामाणिकता दैत अछि। जहाँ पात्र केवल ओही नैतिक सूत्र फेर बजैत अछि, कथाक गति ठमकि सकैत अछि।

आख्यानक दृष्टिबिन्दु एकल आत्मवृत्तान्त नहि; वृद्ध, बच्चा, स्त्री, मजदूर, कर्मचारी, पीड़ित आ अपराध-जालसँ सम्बद्ध लोक अपन-अपन स्थिति सँ जीवन देखैत छथि। कथावाचकक काव्यमय बाह्य स्वर कतेको बेर समस्त अनुभवकेँ एक कथनमे जोड़ि दैत अछि। बाख्तिनीय बहुध्वन्यता एहिठाम उपलब्धि सेहो अछि आ परीक्षणक कसौटी सेहो: पात्रक वर्गगत आ भाषिक भिन्नता बचल अछि कि केवल प्रश्नक शब्द-रचना सबकेँ एक बना देलक? पैघ गद्य-रचनामे एहन आलोचनात्मक सावधानी आवश्यक अछि।

## रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य

कृतिक प्रमुख भावभूमि करुणा अछि, मुदा पीड़ितक दुःख केवल निष्क्रिय विलापमे नहि रुकैत। लोकगीत, नाम-पाठ, स्त्रीसभक प्रतिवाद आ बच्चाक प्रश्न करुणाकेँ उत्साह, संकल्प आ सामूहिक साहस दिस रूपान्तरित करैत अछि। गोहि, पानी, खाली कटोरा, पाथर, गमछा, मुहर, औंठा, सिम आ हरियर बिन्दु बारम्बार रूपान्तरित होइत वस्तु-ध्वनि रचैत अछि। एक वस्तुक सामान्य अर्थक पाछाँ अतिरिक्त सामाजिक अर्थ उभरब ध्वनिक शक्ति अछि; जखन प्रतीकक अर्थ पात्र स्वयं विस्तारसँ कहि दैत अछि, तखन पाठकक व्याख्यात्मक स्वतन्त्रता कम होएबाक जोखिम अछि।

वक्रोक्तिक प्रभाव ‘सेवा’क नामपर हरण, ‘अनुपस्थित’ लिखल जीवित साक्षी, ‘स्वेच्छा’ लिखल अधपढ़ल कागज, ‘कुर्सी’मे लुकायल अधिकारी आ ‘कानून’क स्वरमे धमकी सन उलटावमे स्पष्ट अछि। भारतीय औचित्यक कसौटीपर सबसे प्रभावी दृश्य ओ छथि जतय रूपक विशिष्ट घटना, वस्तु आ पात्रक मनोस्थितिसँ स्वाभाविक रूपेँ निकलैत अछि। कई ठाम गीतक अत्यधिक विस्तार अथवा सूत्रात्मक टिप्पणी दृश्य पर अतिरिक्त विवेचन थोपि दैत अछि; सम्पादकीय परिष्कारक आवश्यकता सम्भव अछि।

## नव्य न्याय : संशय, प्रमाण आ अभावक साहित्यिक प्रयोग

उपन्यासमे प्रमाण-विवेक केवल दार्शनिक नामोल्लेख नहि रहैत जखन आरुणि, अनन्या, मीरा आ सत्यव्रत ‘देखल’, ‘सुनेल’, ‘जाँचल’ आ ‘नाम-अपूर्ण’क अलग पञ्जी बनबैत छथि। प्रत्यक्ष देखल कागज, मौखिक स्मरण, डिजिटलक ध्वनि, चित्रक संकेत, कार्यालयक अधिकृत प्रति आ लोकक मिथकीय अनुभूति भिन्न श्रेणी छथि। प्रामाण्यक प्रश्न ककर कथन अछि, कोन माध्यमसँ भेटल, कतेक अवधि बीतल, ओकर अभिरक्षा ककरा लग छल आ अनिश्चितताक सीमा की अछि—एहि सबकेँ उपन्यास कथात्मक रूप देबाक प्रयास करैत अछि।

रंगक गिट्ठऽ, खाली पन्ना आ अधूर नामक साहित्यिक उदाहरण नव्य न्यायक अवच्छेद, सम्बन्ध, अभाव आ हेतुजाँचक व्यवहारिक सन्दर्भ बनि सकैत छथि। तथापि पात्रक प्रत्येक आशंका उच्चस्तरीय शास्त्रीय प्रमेय नहि; दार्शनिक तत्त्वक तकनीकी परिभाषा आ कथामे ओकर रूपकात्मक उपयोग अलग राखब आवश्यक अछि। गंगेशक जीवन-विषयक लोककथा, जाति-सम्बन्धी जनश्रुति आ असाधारण अलौकिक दृश्यकेँ प्रामाणिक इतिहास मानबाक लोभसँ बचनाइ एहि अध्ययनक मूल शर्त अछि।

## विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति : एकल अधिकारक स्थानपर बहु-अभिलेख

संस्थाक सरकारी कागज मात्र इतिहास नहि; श्रमिकक गमछा, मायक स्मरण, नदीक स्थानीय नाम, स्त्रीक पंजी-बाह्य अनुभव, बालकक खेल आ मृत्यु-दावा सेहो सामाजिक इतिहासक महत्त्वपूर्ण स्रोत छथि। कृतिक ‘समानान्तर’ दृष्टि शासनक केन्द्रित अभिलेखक विरुद्ध सामान्य समुदायक अनुभवकेँ आवाज दैत अछि। मुदा ई वैकल्पिक स्रोतसभसँ निकसल कथन सेहो परीक्षण योग्य अछि। राज्यीय स्रोतकेँ सदिखन झूठ आ लोक-स्मृतिमे सभकिछु सत्य मानि लेब ओकरहि उलटा आधिकारिकता होयत। इतिहास-लेखनक उचित विधि भिन्न स्रोतक परस्पर प्रश्न, तिथि-साम्य आ असंगतिक खुलल नोंद अछि।

पुलक छपाक, मजदूरक नाम, अदालतक लम्बा समय, बैंकक खाते, पञ्जीक नाम-परिवर्तन आ डिजिटल धमकीक संग सामाजिक अन्यायक दीर्घ कालक्रम देखाएब उपन्यासक सामर्थ्य अछि। सेवा-समारोहसँ स्त्रीक सहमति, मृत व्यक्तिक नामसँ खाते आ फोनक उपयोग सन जटिल प्रसंग काल्पनिक कृतिमे उपस्थित छथि; एतेक मात्रसँ वास्तविक लोकक कानूनी दोषसिद्धि नहि होइत। साहित्यिक विश्लेषण एहि सीमाक भीतर रहि कऽ सेहो संस्थागत अनैतिकताक तीक्ष्ण विवेचन कऽ सकैत अछि।

## पात्र-पञ्जीक प्रमुख शक्ति आ निरन्तरताक प्रश्न

मीरा कृतिक विवेकशील प्रतिरोधक केन्द्र छथि: प्रतिशोधक भीड़ रोकब, स्वीकृति लेब, दस्तावेजक मूल सुरक्षित राखब आ आरोपित व्यक्तिक पक्ष सुनबाक अधिकार मानब—ई निर्णय हुनकर नैतिक स्वर निर्धारित करैत अछि। सत्यव्रत अपन पहिल मौनक अपराधपर चिन्तन करैत वकीलक एकाधिकार छोड़ि समुदायकेँ सुनबाक अभ्यास करैत छथि। अनन्या आ आरुणि लिखबाक, अभाव स्वीकारबाक, प्रश्न करबाक आ जोखिमक सीमारेखा सीखबाक द्वारा उत्तराधिकारी बनैत छथि। देविका, शान्ति, फूलकली, रानी आ सोमरी सन स्त्री-पात्र प्रशासनिक ‘लाभार्थी’सँ अलग अनुभवक साक्षी बनैत छथि।

राघवक पत्नीक कालक्रम, सरयू महतो/सरयू देवीक सम्भावित नाम-संबंध, लाउ परिवारमे पोसल मेइ-लता तथा आन सन्तानक स्थिति, बटुकनाथक यात्राक क्रम आ शिवलाल/शिवनाथ/छोटूक पहचान सन प्रश्न मूल पाठक पात्र-पञ्जी आ कालक्रम-संगतिक पृथक विस्तृत परीक्षण माँगैत अछि। अंतिम अध्याय २००मे शिवनाथक नाम आ छोटूक खोज दुनू अलग उल्लेख भेल अछि; एहि आधारपर १९७क ‘शिवलाल उर्फ छोटू’ तथा १९९क ‘शिवनाथ सदा’ केँ एकहि व्यक्ति निश्चित मानब उचित नहि। ई प्रश्न प्रकाशन-पाठमे आलोचनात्मक टिप्पणीक रूपमे रहबाक चाही, मनगढ़न्त समाधान रूपमे नहि।

## उपलब्धि, सीमा आ अन्तिम साहित्यिक निर्णय

त्रयीक प्रमुख उपलब्धि असीमित दृश्य-सम्पदा नहि, स्मृति, न्याय आ नामक अधिकारकेँ एक व्यापक नैतिक आख्यानमे रूपान्तरित करब अछि। नदीक जैविक गोहि, वित्तीय खाताक गोहि, फोनक छलक गोहि आ विस्मृतिक गोहि सभ सामाजिक हिंसाक अलग स्तर देखबैत छथि। बच्चाक कबड्डी अन्ततः पीढ़ीक जीवित पहरा बनैत अछि। ई अन्तिम हस्तान्तरण मौलिक रूपसँ प्रभावकारी अछि कारण लेखक अदालतक निर्णयक प्रतीक्षाकेँ समुदायक असहायता नहि बनबैत छथि; निजी न्याय-साधन आ विधिक प्रक्रिया दुनू आवश्यक कहैत छथि।

मुख्य सीमा कतेको अध्यायक परिचित गीत-रचना, समान प्रतीकक पुनरागमन, अत्यधिक स्पष्ट नैतिक टिप्पणी, जाँच-पद्धतिक तीव्र सफलतासँ उत्पन्न अविश्वसनीय सहजता आ विविध पात्रक वचनमे एकरूपता अछि। बौद्धिक विस्तारक बीच कथा-कौशलक लय बनौने रखब कठिन चुनौती रहैत अछि। एहि सीमा स्वीकारलाक बादो कृतिक समापनक ‘नामक पहरुआ’क बिम्ब पाठककेँ स्मृति-विहीन विजयक बदला प्रतिदिनक उत्तरदायित्व सौँपैत अछि। एहिमे कृतिक स्थायी साहित्यिक सम्भावना निहित अछि: नाम उच्चारब, प्रमाण परखब, पीड़ितक इच्छा मानब आ सामाजिक सुविधा द्वारा उत्पन्न मौन पर फेर-फेर प्रश्न करब।

# परिशिष्टसभक मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा

## परिशिष्टक स्थान : कथा समाप्त भेलाक बादो अर्थक यात्रा

‘नामक पहरुआ’ पर मूल ३०१-अध्यायवला आख्यानक क्रम समाप्त होइत अछि, मुदा संयुक्त पाण्डुलिपिक सामग्री ओतहि नहि रुकैत। खण्ड-०क अन्तमे फकरा-अनुक्रम आ खण्ड-२क अन्तमे लोककोश, अनाम ग्रहक गीत तथा न्याय-दर्शनक अन्तःकथा सुरक्षित अछि। तेसर परिशिष्टक पश्चात् ‘विदेह नाट्य उत्सव’क दोसर, स्वयं अपूर्ण कहल गेल प्रारूप सेहो उपस्थित अछि। एहि सभकेँ ३०२, ३०३ सन नव अध्याय बना देब पाठ-संरचनाक भूल होयत। मुख्य कथा निर्णय, उत्तराधिकार आ नामक सामूहिक पहरापर रुकैत अछि; परिशिष्टसभ ओहि निर्णयक भाषिक, लोकसांस्कृतिक, गीतात्मक, दार्शनिक आ नाटकीय आधार खोलैत अछि। अतएव एकर समीक्षा स्वतंत्र रहैतहुँ उपन्यासक अन्तर्गत प्रतीक आ घटनासँ लगातार सम्बद्ध रहबाक चाही।

# परिशिष्ट १ — गढ़ नारिकेल लोककोश : सामाजिक स्मृति, श्रम आ जीवित परम्पराक आलोचना

## शब्दकोश नहि, गामक अनुभवक बहुध्वनिक अभिलेख

शीर्षकमे ‘लोककोश’ अछि, मुदा स्रोत-पाठ शब्दक वर्णानुक्रमिक सूची अथवा केवल परिभाषा-संग्रह नहि। आरम्भहि माटि, मेघ, माछक चालि, कारीगरक हाथ, गीतक लय आ पुरखा-नेनाक मुँहजबानी सम्बन्ध द्वारा ज्ञानक अनेक पद्धति स्पष्ट कएल गेल अछि। परिशिष्ट मुँहजबानी संचरण, सामूहिक स्वामित्व, स्थानिक चिन्हारि आ परिवर्तनशीलताकेँ लोकसंस्कृतिक आधार मानैत अछि। एहि आधारपर ओ अलग-अलग जीविका, पाबनि, स्त्रीक घरेलू श्रम, खेती, नदी, औजार, हाट आ लोकगानक वर्णनसँ आगाँ बढ़ि खिस्सा आ गीतक शृंखला बनैत अछि। एकरा पुस्तकालयक कोशसँ बेसी अनुभवक सांस्कृतिक मानचित्र कहब उचित होयत। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई विधागत मिश्रण ताकत सेहो अछि: पाठककेँ केवल शब्द नहि, ओकर उपयोगक देह, स्थान आ सामाजिक मूल्य देखाइत अछि। सीमा ई जे ‘कोश’ शीर्षक सँ जे वर्णानुक्रम, स्रोत-चिन्हांकन आ सन्दर्भ-संगतिक अपेक्षा जागैत अछि, से एहि काव्यात्मक संरचनामे व्यवस्थित रूपेँ पूरा नहि होइत।

## भूगोल स्वयं कथाकार : धारा, गाद, पाँक आ छपाकक ध्वनि

गढ़ नारिकेलक भूगोल स्थिर नक्शा नहि। बाढ़ि मेड़ काटैत अछि, गाद नव उपजाउ माटि दैत अछि, पोखरि उराहल जाइत अछि, गाछी कटैत अछि आ फेर रोपल जाइत अछि। स्रोतमे ‘छपाक’क ध्वनि दुर्घटना, माछ, खेल आ बाढ़िक संयुक्त संकेत बनैत अछि; इनारक डोल, नावपर लहरि, छप्परपर बून्द आ पोखरिक ध्वनि लोकलयक प्राकृतिक आधार बनैत अछि। एहि स्थलविशेषक अनुभवसँ ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’क मूल प्रतीक विस्तार पबैत

अछि। जलकेँ मात्र मृत्यु अथवा भयक एकरंगी रूपमे नहि देखाओल गेल; पानि श्रम, सम्बन्ध, जीवन-निर्वाह, आपदा आ अभिलेखक परिवर्ती माध्यमो अछि। स्थल-विशिष्ट गन्ध आ ध्वनि गीतक अभौतिक स्मृतिकेँ वस्तुगत आधार दैत अछि। तथापि नदीक प्राकृतिक स्वर आ ओकरा सुनि लिखल मनुष्यक अर्थ एक नहि; समीक्षाकेँ ई भेद सुरक्षित राखय पड़ैत अछि, नहि तँ काव्यात्मक रूपक स्वतः ऐतिहासिक प्रमाण बुझाए लगत।

## कारीगरक अपरिहार्यता आ जातिगत अपमानक विरोधाभास

परिशिष्ट बढ़ही, कमार, कुम्हार, चर्मकारी, डोम, नाई, धोबी, दगरिन, कहार, मलाह आ अनेक काजक विवरण दैत अछि। विवाह, जन्म, मृत्यु, खेती आ पाबनिमे हुनकर श्रम अनिवार्य अछि; मुदा सामाजिक प्रतिष्ठा ओहि अनुपातमे बाँटल नहि गेल। पाठक एक तेज प्रश्न भेटैत अछि: जकर बिना ढोलकक चाम, बाँसक सामग्री अथवा नावक सेवा सम्भव नहि, ओकर स्पर्श अथवा स्थानकेँ अपमानित किएक कएल जाइत अछि? एहि आलोचनासँ लोकसंस्कृति केवल उत्सवधर्मी रंग-सज्जा नहि रहैत; ओ जाति आ श्रमक असमान सत्ता-संरचनाक अभिलेख बनैत अछि। मुख्य उपन्यासमे नाम मिटेबाक संस्थागत अपराध आ परिशिष्टमे पेशाक योगदान अदृश्य करबाक सामाजिक अभ्यास एक दोसराक समानान्तर अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ ई उपयोगी जोड़ अछि: राजकीय पञ्जीक बाहर कारीगरक औजार आ रोजी सामाजिक इतिहासक वैकल्पिक सामग्री बनैत अछि। मुदा विशिष्ट जाति-विवरणक ऐतिहासिक सत्यापन लेल स्वतन्त्र स्रोत चाही; उपन्यासक भीतरक प्रस्तुति अपनहि मेदान-अनुसन्धानक प्रमाणपत्र नहि अछि।

## स्त्रीक श्रम, गीतक उत्तर-पाँति आ सामूहिक लेखन

गोबरसँ नीपल आँगन, माटिसँ पोतल देबाल, चूल्हि, रोपनीक पाँति, सोहर, समदाउन आ विवाह-गीत स्त्रीक निरन्तर श्रमक सौन्दर्यबोध खोलैत अछि। बाहरी अभिलेख जकरा घरेलू, पुनरावृत्त अथवा स्वाभाविक काज मानि नजरि सँ हटबैत अछि, परिशिष्ट ओकरा जीवनक पुनर्निर्माणक क्रिया बनबैत अछि। नाविकक पुकार-उत्तर आ रोपनी-गीतमे एक स्वर आरम्भ

करैत अछि आ समूह दोसर पाँति उठबैत अछि; एतय गायन केवल मनोरञ्जन नहि, कामक गति, सुनबाक उत्तरदायित्व आ साथी उपस्थित हेबाक संकेत अछि। ई सामूहिक वाक्-रचना अनन्याक नाम-पाठ आ सत्यव्रतक ‘पहिने सुनबाक’ रूपान्तरण सँ प्रतिध्वनित होइत अछि। तथापि ‘लोकगीतक कोनो एक लेखक नहि’ सन व्यापक सामान्यीकरण सावधानी माँगैत अछि। अनेक गीत सामूहिक रूपेँ बदलैत छथि, मुदा विशिष्ट रचनाकार, गायक वा स्त्री-परम्पराक योगदान बिसरब सेहो अन्याय भऽ सकैत अछि। रचनाक सामूहिक प्रसार आ मूल सर्जनाक श्रेय अलग-अलग प्रश्न छथि।

## खिस्सा सँ गीत : लोककथा रचबाक दृश्य प्रक्रिया

परिशिष्टक पछिला हिस्सामे अनेक छोट खिस्सा सभक पाछाँ शीर्षकयुक्त गीत, लोकधुन आ टेक आबैत अछि। खण्डहरक ईंट, गहबरक दीप, इनारमे पुकारल नाम, सूखल डबरा, नदीक घाट, सरकारी भाषा नकल करैत बच्चा, हाटमे अचानक बरखाक बीच उपजल तुक—एहन उदाहरण देखबैत अछि जे दैनिक घटना कोना सामूहिक गायनक बीया बनैत अछि। ‘खिस्सा’ कारण-दृश्य दैत अछि, ‘गीत’ ओहि दृश्यक सामुदायिक पुनरुच्चारण बनैत अछि। रचनात्मक स्तरपर ई शिल्प मूल उपन्यासक अध्यायारम्भ गीत आ अध्यायान्त पुनरावृत्ति बुझबाक महत्त्वपूर्ण कुञ्जी अछि। हाटक बरखामे एक स्त्रीक पहिल टुकड़ा दोसर स्त्रीक उत्तरसँ गीत बनैत अछि: ई खिस्सा लोकसर्जनाक समयगत गति दृश्य रूपमे उपस्थित करैत अछि। सीमा पुनरावृत्त संरचना अछि—प्रत्येक खिस्साक पाछाँ अवश्य गीत राखलापर कखनो गीत स्वतंत्र अनिवार्य रचना नहि, निर्धारित उपसंहार बुझाइत अछि। अपेक्षाकृत असमान, स्वतःफूटल स्वर कतेको दृश्यकेँ बेसी जीवन्त बना सकैत छल।

## सामूहिक परम्पराक भीतर आलोचनाक अधिकार

स्रोत स्पष्ट बुझबैत अछि जे सभ पुरान कहबी स्वतः न्यायपूर्ण नहि। स्त्री, जाति आ गरीबक अपमान रखनिहार कथनक आलोचना, उलटबाँसी आ नव रूप आवश्यक अछि। ई वाक्य पूरे लोककोशक नैतिक कसौटी अछि। लोकसंस्कृतिक संरक्षणक अर्थ यथास्थिति केँ पूज्य

मानब नहि; स्मृति बचबैत अन्याय सेहो चिन्हब आवश्यक अछि। मुख्य कथामे पीड़ितक नामपर स्मारक अथवा दान-व्यवसाय चलाबयवला शक्ति जकाँ, सांस्कृतिक प्रस्तुति सेहो लोकक अधिकार छीनि प्रदर्शनक सामग्री बना सकैत अछि। परिशिष्ट जखन संरक्षणकेँ रचनात्मक परिवर्तनसँ जोड़ैत अछि तखन अभिलेख मृत संग्रह नहि, प्रतिवादक साधन बनैत अछि। ई ओकर मौलिक साहित्यिक उपलब्धि अछि।

## रचनात्मक लोकसंसार आ ऐतिहासिक लोक-अभिलेखक भेद

एहि परिशिष्टमे गढ़ नारिकेल उपन्यास-जगतक रचल गाम अछि; ओहिक खिस्सा, लोकधुन आ फकरा कृतिक साहित्यिक सामग्री छथि। कोनो गीतकेँ स्वयंसिद्ध प्राचीन परम्पराक अप्रकाशित वास्तविक संकलन मानब उचित नहि। वैज्ञानिक लोकसाहित्य-अध्ययनमे गायनकर्ता, प्रदर्शनक अवसर, स्थल, पाठान्तर आ संकलनक तिथि चाही; एहि परिशिष्टमे ओहन बाह्य सत्यापनक पूर्ण पञ्जी नहि अछि। तेँ एकर सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक उपयोग ई अछि जे हम काल्पनिक गामक ‘भीतरसँ’ बनैत सामूहिक स्मृतिक रचना-प्रक्रिया बुझी। एहि सीमाक स्वीकार लोककोशक काव्यमूल्य घटबैत नहि; उलटे कल्पित अनुभव आ प्रमाणित समाज-विज्ञानक सीमा ईमानदारीसँ निर्धारित करैत अछि।

# परिशिष्ट २ — अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत : स्वप्न, नाम आ पृथ्वी चुनबाक काव्य

## चारि अध्याय, आठ गीत आ नाटकीय आरोह

ई परिशिष्ट अध्याय १०१ सँ १०४ धरि चारि प्रसंगसँ सम्बद्ध आठ गीत समेटैत अछि: प्रत्येक अध्याय लेल अध्यायारम्भक एक गीत आ सम्बन्धित प्रसंगक दोसर गीत। ‘अनाम ग्रहक आमन्त्रण’, ‘ग्रहक बीच कबड्डी’, ‘अनाम ग्रह पर नाम-पाठ’ आ ‘गढ़ नारिकेल फेर पृथ्वी चुनैत अछि’क क्रममे आमन्त्रण, खेल, स्मरण आ निर्णयक चारि अवस्थासभ बनैत अछि। गीतक संकलन मुख्य कथामे छोट-छोट भागमे बाँटल स्वरकेँ एक संग सुनबाक अवसर दैत अछि। गीतसभक समाहारसँ स्पष्ट होइत अछि जे दूर ग्रह केवल वैज्ञानिक यात्राक लक्ष्य नहि; ओ नामहीन, सुविधा-प्रधान आ निजत्व-विहीन जीवनक कल्पित प्रतिरूप अछि। उपन्यास एहि दृश्यकेँ स्वप्न-दृष्टान्त रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, अतएव ओकर आलोचना वास्तविक अन्तरिक्ष-अन्वेषणक तथ्य-विवरण जकाँ नहि कएल जाए।

## झोरा, माटिक गन्ध आ स्मृतिक पोर्टेबल घर

‘पृथ्वीक उपहार लिअ’क झोरा धन अथवा हथियारसँ नहि, माटिक गन्ध, मायक गीत आ नामक दीपसँ भरैत अछि। एतय ‘उपहार’ वस्तु नहि, सह-अस्तित्वक नैतिक स्मृति अछि। जखन गीत तारासँ मूल पूछबाक कल्पना करैत अछि, तखन ग्रहक सीमा आधुनिक पासपोर्ट, देश आ चिन्हारिक प्रश्नक रूपक बनैत अछि। ई बिम्ब गढ़ नारिकेलक नदीक कात बनल गामक सीमाकेँ ब्रह्माण्डीय दूरिमे रखि पुनः देखबैत अछि। तथापि झोरामे गामक समग्र अतीत भरि लेब सम्भव नहि; गीत जानि-बुझि जीवनक असंख्य अन्तरालकेँ किछु पहचानयोग्य वस्तुमे संकुचित करैत अछि। एहि संकोचक सफलतासँ काव्यक गतिशीलता बनैत अछि, मुदा तर्कक स्थानपर भावुक प्रतीकक अति प्रयोग हेबाक खतरा सेहो रहैत अछि।

## कबड्डीक साँस आ ‘उपस्थित’क उद्घोष

‘ग्रहक पारी’मे बालक कबड्डीक पारम्परिक पुकारक स्थानपर ‘उपस्थित’ कहैत अछि। ई छोट परिवर्तन पूरा त्रयीक रचनात्मक धुरी खोलैत अछि: खेलक साँस केवल शारीरिक समय नहि, जेकर नाम दबाओल गेल ओकर अस्तित्वक सार्वजनिक घोषणा बनैत अछि। चन्ना गाछीक कबड्डी जब दूर ग्रहपर पुनरावृत्त होइत अछि, तखन जेनेतक आख्यान-आवृत्तिक कसौटीपर एकहि क्रियाक अर्थ बदलैत अछि। पहिने साँस रोकबाक चुनौती छल; आब निर्जीव अङ्कीकृत व्यवस्था विरुद्ध जीवित व्यक्तिक आवाज बनैत अछि। ‘ताराक पारीमे नाम’ गीतक पृथ्वी, मानवता, न्याय आ सह-अस्तित्वक चरण एही काव्यगत विस्तारकेँ ठोस क्रम दैत अछि। ई वैज्ञानिक उपनिवेशीकरणक प्रमाण नहि, साहित्यिक आत्मपरिचयक विधि अछि।

## पुरखा-नेनाक धागा आ नामहीन आवासक प्रश्न

‘नामक धागा आकाशमे’ आ ‘तारामे तनल नाम’ पीढ़ीसभकेँ झूलनक दू छोर जकाँ जोड़ैत अछि। पुरखाक हाथ, नेनाक हाथ आ तारामे तनल डोरि समयक गहिराइकेँ एकहि दृश्य बनबैत अछि। नामहीन, क्रमाङ्कित घरक विरुद्ध ई सम्बन्धक प्रस्ताव अछि। मुख्य कथाक मेटल नाम, रिक्त कागज आ स्मारक-अनुप्रयोगक प्रविष्टि एतय स्मृतिक अपहरणक व्यापक रूप ग्रहण करैत अछि। मुदा नामक घोषणा मात्रसँ सभ व्यक्तिक गरिमा सुरक्षित नहि भऽ जाइत; गीतक आशा तखन नैतिक रूपेँ पुष्ट होइत अछि जखन ओकरा संग सहमति, सुरक्षा आ सामाजिक संसाधनक न्याय सेहो जोड़ल जाए।

## पृथ्वीकेँ आदर्श नहि, सुधारयोग्य उत्तरदायित्व मानब

समापनक दुनू गीत दूरक स्मृतिहीन गुम्बदक बदला अपन कादो, फाटल मेड़, पानि आ श्रम चुनैत अछि। ‘पृथ्वी चुनब’ केवल घर-प्रेम नहि; पृथ्वी छोड़ि भागबाक बदला ओकर घावक उपचारक संकल्प अछि। ई निर्णायक अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि—कारण मुख्य उपन्यास धरतीक भीतर जातिगत अपमान, संस्थागत ठगी, लूट, बाढ़ि आ हिंसाक विस्तृत संसार रचने

अछि। जँ गीत पृथ्वीकेँ निष्कलुष स्वर्ग मानि लेत, तँ कृतिक मुख्य सामाजिक आलोचना कमजोर पड़त। सौभाग्यसँ गीत घाव स्वीकारि ओकर मरम्मतिक आग्रह करैत अछि। कलात्मक सीमा ओकर बारम्बार दोहरायल नारा आ समान पंक्तिक पुनरावृत्ति अछि; किछु ठाम परिवर्तित लय अथवा विरामक उपयोग दृश्यकेँ बेसी गहिर बना सकैत छल। लोकधुनक उल्लेख संगीतात्मक प्रस्ताव अछि, स्वतः प्रमाणित क्षेत्रीय गायन-परम्पराक प्रमाण नहि।

# परिशिष्ट ३ — न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा : तर्कशास्त्रक कथात्मक प्रयोग

## अध्याय ५७–२००क पूरक दार्शनिक पञ्जी

एहि परिशिष्टमे अध्याय ५७ सँ २०० धरि क्रमवार शीर्षकक अन्तर्गत न्याय आ नव्य न्यायक दृष्टान्त, प्रत्यक्ष, अनुमान, व्याप्ति, हेतु, उपाधि, अभाव, शब्दबोध तथा अन्य दार्शनिक-व्याकरणिक प्रसंग जुटल अछि। एकर स्थान मूल उपन्यासक कथा-क्रमक बाद अछि, मुदा एकर आरम्भ मुख्य घटनाक मध्यवर्ती अध्याय ५७ सँ होइत अछि। अतएव ई पूर्ण कथाक अगिला घटना नहि; पहिनेसँ बीजल दार्शनिक अन्तर्ध्वनिक पृथक पाठ-संग्रह अछि। अध्यायानुसार संगृहीत होएब शोध-पाठक लेल उपयोगी अछि, कारण ककरा कोन सिद्धान्तक संग राखल गेल, से एक नजरिमे जाँचल जा सकैत अछि। ई स्रोतक भीतरक दार्शनिक पञ्जी अछि; प्रमाणित प्राचीन ग्रन्थक प्रत्यक्ष अनुवाद अथवा टीकाक स्थापनाक रूपमे एकरा नहि पढ़बाक चाही।

## ग्रन्थक अपूर्णता आ मङ्गलाचरण : अवधारणासँ कथा धरि

आरम्भमे बाणभट्टक ‘कादम्बरी’क अधूर पन्नाक प्रसंग लऽ मङ्गलाचरण कएने सेहो ग्रन्थ पूरा होएबाक निश्चित गारंटी नहि, से प्रश्न उठाओल गेल अछि। उदयनाचार्य आ ‘किरणावली’क प्रसंग सेहो रचनाक सफलताक लौकिक कारण, श्रम, सामग्री आ विघ्नक भेदपर केन्द्रित अछि। एतय लेखक शास्त्रीय पदकेँ एक दृश्य बनबैत छथि: विद्यार्थी पाण्डुलिपि देखैत छथि, प्रश्न पूछैत छथि, गुरु कारणसभ अलग करैत छथि। ई पद्धति शिक्षणमे प्रभावी अछि, कारण अमूर्त विवाद वस्तुगत प्रसंग प्राप्त करैत अछि। मुदा साहित्यिक ‘गुरु’क मुखसँ निकलल ऐतिहासिक-सूचक कथनकेँ प्रामाणिक ग्रन्थ-साक्ष्यसँ अलग राखब अनिवार्य अछि। कथाक दृष्टान्त शास्त्रक इतिहास नहि; ओ शास्त्रीय प्रश्नक रूपान्तरित कथा अछि।

## प्रत्यक्ष, भ्रान्ति आ अनुभवक सीमा

चमकैत सीपकेँ चानी बुझबाक प्रसंगमे प्रत्यक्ष आ स्मृति, अख्याति आ अन्यथाख्याति सन भिन्न व्याख्याक संघर्ष दृश्य रूपमे उठैत अछि। पीयर देखाइत उज्जर शङ्खक कथामे आँखिक दोष, वस्तुक वास्तविक रूप आ अनुभवक प्रबलताक अन्तर बुझाओल गेल अछि। एहि उदाहरणसभमे नव्य न्यायक उपयोग केवल दार्शनिक बड़ाई नहि, मूल उपन्यासक प्रमाण-विवेकक अभ्यास बनैत अछि: राघवक आवाज-नकल, अभिलेखक बनावटी मुहर आ फोनक भ्रामक सन्देश सेहो ‘जे देखल-सुनल, से कतेक सही’ पूछबाक आग्रह उत्पन्न करैत अछि। अन्तर एतेक जे सीप-रजत भ्रान्ति इन्द्रिय-अनुभवक दार्शनिक समस्या अछि; अपराधी द्वारा बनाओल ध्वनि वा कागज जाँच-पद्धति आ मानव-क्रियाक प्रश्न अछि। दुनूकेँ पूर्णतः एकहि सिद्धान्तसँ सिद्ध मानब तर्कगत अतिशयोक्ति होयत।

## व्याप्ति, हेतु आ उपाधिक जटिलता

धूमसँ अग्निक अनुमानक उदाहरण अनेक रूपमे घुरैत अछि। कखनो पर्वत, कखनो भानसघर, कखनो तप्त लौह-पिण्ड, कखनो भीजल काठ वा प्रतिबन्धकक प्रश्न जुड़ैत अछि। एहि विविधतामे मूल दार्शनिक कठिनाई स्पष्ट होइत अछि: केवल दुई घटनाक संग देखब पर्याप्त नहि; व्यापक सम्बन्ध, हेतु-दोष, उपाधि आ पक्षधर्मता जाँचना आवश्यक अछि। कथाक जाँच-आख्यान लेल ई अत्यन्त उपयोगी आधार अछि—एकटा नामक लग भेटल दस्तावेजसँ मात्र पूरा अपराध-क्रम सिद्ध नहि होइत। मुदा परिशिष्टक किछु पुनर्लिखित उदाहरणमे हेतुक दिशा आ साध्यक पद, प्रतिबन्धकक शर्त वा निष्कर्षक उपयुक्तता फेर तकनीकी जाँच माँगैत अछि। ‘धूम अछि तेँ अग्नि’ आ उलटा ‘अग्नि अछि तेँ धूम’ समान रूपसँ सर्वत्र विश्वसनीय नहि। पाठककेँ सिद्धान्त-परीक्षणक स्वतंत्र कसौटी चाही; प्रवाहपूर्ण उपाख्यान तकनीकी त्रुटिक स्वतः समाधान नहि।

## संस्कृत परिभाषा, कथोपकथन आ सूत्रक बारम्बार पुनरागमन

परिशिष्टक अनेक मध्यवर्ती प्रविष्टिमे ‘शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल’, ‘गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल’ अथवा ‘कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि’ सन आवर्तित रचना-साँचा भेटैत अछि। एकर शिक्षण-सुविधा अछि—पाठक पहिले परिस्थिति, फेर तर्क, अन्तमे सिद्धान्तक नाम पबैत अछि। मुदा जखन अनेक विशिष्ट सिद्धान्त एकहि कथात्मक मुद्रा ग्रहण करैत अछि, तखन पात्रसभक स्वर आ दृश्यक सौन्दर्य एकरूप हेबाक जोखिम बढ़ैत अछि। एहि पुनरावृत्तिक सूक्ष्म सम्पादन आवश्यक अछि: जतय आक्षेप अछि ओतय स्पष्ट पूर्वपक्ष, जतय प्रत्युत्तर अछि ओतय समाधान, जतय सिद्धान्तक नाम अछि ओतय ओकर प्रत्यक्ष औचित्य। शास्त्रीय शब्दक मात्र उपस्थितिसँ उदाहरणक प्रामाणिकता सुनिश्चित नहि होइत।

## दार्शनिक कथाक प्रमाण-मर्यादा आ ऐतिहासिक गंगेश

गंगेश उपाध्यायक जीवनसँ सम्बन्धित जाति, परिवार, विवाह, शिष्यत्व, श्मशानक अनुभव आ देवीक वरदानक कथासभ लोकश्रुति, साहित्यिक कल्पना आ ऐतिहासिक जीवनीक फरक स्तरपर उपस्थित अछि। परिशिष्टक कतिपय दृश्य स्वयं लोककथाक सीमाक स्वीकार करैत अछि। ई ईमानदार संकेत जतेक महत्त्वपूर्ण अछि, ततेकहि आवश्यक अछि जे समीक्षक कथामे प्रस्तुत कोणो दृश्यकेँ प्रमाणित इतिहास बना कऽ नहि लिखय। नव्य न्यायक तकनीकी चर्चामे ‘तत्त्वचिन्तामणि’क परम्परा आ गंगेशक साहित्यिक पात्ररूप अलग-अलग पहिचान चाहैत अछि। उपन्यास एहन भेदक ऊपर आलोचनात्मक प्रश्न उठाबैत अछि, मुदा इतिहासकारक काज मूल स्रोत, परम्परा आ कालक्रमक स्वतंत्र परीक्षण होयत।

## शब्दबोध, षष्ठ्यर्थ आ दार्शनिक परिशिष्टक विधागत फैलाव

परिशिष्टक उत्तरवर्ती हिस्सामे ‘नीलोत्पलम्’, ‘दण्डी पुरुष’, पाकक्रियाक वाक्य, कर्मधारय, लक्षणा, आकाङ्क्षा, समुच्चय आ मण्डन मत सन प्रश्न आबैत अछि। एहि सँ लेखकक अभिलाषा केवल न्यायानुमान नहि, सम्पूर्ण अर्थग्रहणक प्रक्रिया धरि फैलैत अछि। मुख्य

उपन्यासमे नाम, पद, मुहर आ लोक-अभिलेखक अर्थक विवादक संग एहि भाषिक तत्त्वसभक आन्तरिक सम्बन्ध बनैत अछि। परन्तु किछु स्थानपर विशिष्ट शास्त्रीय वाद छोट किस्सा बनिते तकर पक्षान्तर-संगति स्पष्ट नहि रहैत; एहि ठाम विधागत विस्तार गहनताक स्थान नहि लऽ सकैत। परिशिष्टकेँ शोध-उपयोगी बनएबाक लेल सिद्धान्त-नाम, स्रोतग्रन्थ, विवादित परिभाषा आ कथात्मक रूपान्तरक अलग सूची आवश्यक होयत।

## १४४ अध्यायक दार्शनिक अनुक्रमक वास्तविक उपलब्धि आ सीमा

अध्याय ५७–२००क १४४ शीर्षक-दृष्टान्त मूल त्रयीक दार्शनिक सामग्रीकेँ खोजयोग्य अनुक्रम प्रदान करैत अछि। एहि कारण अध्याय ५७क गंगेश-प्रश्नसँ अध्याय २००क ‘मण्डनक मत’ धरि लेखक ज्ञान, श्रम, सत्ता आ भाषा बीच अन्तर्सम्बन्धक निरन्तर अभ्यास रचैत छथि। किन्तु परिशिष्टमे शास्त्रीय विषयक संख्या आ कथात्मक उदाहरणक संख्या अधिक होयब अपने-आप गहनता नहि। सतही पुनरावृत्ति, शास्त्र-परम्पराक कालभेद, आ दार्शनिक सूत्रक तकनीकी सटीकता पर पृथक सम्पादकीय परीक्षण आवश्यक अछि। एहि सीमा सहित ई परिशिष्ट उपन्यासक न्याय-चिन्तनक दस्तावेजी ‘पृष्ठभूमि’ अछि; स्वतंत्र प्रमाणित दर्शन-ग्रन्थक विकल्प नहि।

# खण्ड-०क परिशिष्ट — गढ़ नारिकेलक फकरा-अनुक्रम : पूर्वकथाक सूक्तिमय पुनर्पाठ

## एक सय अध्याय, एक सय आरम्भ-संकेत

पूर्वकथा अध्याय −१०० सँ −१ धरि प्रत्येक अध्यायसँ सम्बद्ध एक फकराकेँ अलग संकलित कएल गेल अछि। एहि कारण परिशिष्ट नवीन कथा जोड़ैत नहि; पहिने पढ़ल कथा-प्रसंगक संक्षिप्त उच्चारणक क्रम बनबैत अछि। आरम्भक ‘शंख आ रजत’मे चानीक भ्रम आ नामक सत्य, बीचक बाढ़ि, पञ्जी, श्रम, यात्रा आ अन्तिम ‘अन्तिम साक्षी’क नाम-संरक्षण धरि सूक्तिसभ क्रमशः बदलैत छथि। ई शिल्प कथाक विस्तारकेँ छोट नैतिक चिन्हमे संकुचित करैत अछि। स्रोतक एक सय क्रमाङ्कित इकाई स्वतंत्र समीक्षा-अध्याय नहि, पहिनुक एक सय अध्यायक सूक्तिमय सहचर छथि।

## उलटबाँसी, ध्वनि आ नामक आवर्तन

फकरामे गाछ, माटि, इनार, बाढ़ि, चाम, पाथर, शंख आ नाम बारम्बार मानवीय अर्थ ग्रहण करैत अछि। ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि’ सन अन्तिम विचार पूर्वकथाक आरम्भहि सँ बनैत नाम-स्मृतिक रेखाकेँ समेटैत अछि। भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ सघन वाक्य तत्काल कथनसँ अधिक संकेत करैत अछि; वक्रोक्ति उलटबाँसीक माध्यमसँ सत्ता-समर्थित सामान्य ज्ञानकेँ उलटि दैत अछि। पाठक बिना पूरा घटना दोहरौने ओकर नैतिक तनाव स्मरण कऽ सकैत अछि। यद्यपि बारम्बार नाम, स्मृति आ सत्यक समान सूत्र फेर-फेर आबैत अछि, ताहिसँ सब सूक्तिक स्वर अलग रहब कठिन होइत अछि।

## फकरा आ क्षेत्रीय लोकोक्ति बीच प्रामाणिकताक अन्तर

‘फकरा’ शब्द लोकपरम्पराक सूचक अछि, मुदा एहि संकलनमे कथानक-विशेषक लेल रचल कथन सभ शामिल अछि। एतए वास्तविक लोककण्ठसँ संकलित पुरान लोकोक्तिक

बाह्य स्रोत, वक्ता अथवा पाठान्तर स्वतः उपलब्ध नहि अछि। तेँ कृतिक आन्तरिक फकराकेँ ऐतिहासिक लोककथन रूपमे उद्धृत करबाक पहिने जाँच आवश्यक अछि। एहन सावधानी परिशिष्टक साहित्यिक योगदान कमजोर नहि करैत; बल्कि मौलिक उपन्यासक सूक्तिसर्जना आ परम्परागत लोकसाहित्यक अलग पहिचान बनबैत अछि।

## सामूहिक स्मरणक शिक्षण-अभ्यास

फकरा-अनुक्रम मौखिक पाठ, पाठशाला, पुस्तक-चर्चा आ अध्यायवार पुनरावलोकनमे उपयोगी भऽ सकैत अछि। नान्हि वाक्य पाठककेँ पृष्ठ-पृष्ठ धरि स्मृतिक सूत्र पकड़बैत अछि; ई उपन्यासक ‘कथा समाप्त नहि, पहरा चलैत रहय’ बला विचारक औपचारिक प्रतिरूप अछि। सीमा ई जे सूत्र यदि प्रत्येक दृश्य पर अंतिम नैतिक निर्णय थोपि दे, तँ कथा अपन बहुअर्थी मौन हेराय सकैत अछि। श्रेष्ठ प्रयोग ओ होयत जतय फकरा प्रश्न जगाए, निष्कर्ष सदिखन बन्द नहि करय।

# तेसर परिशिष्टक पश्चात् नाट्यांश — विदेह नाट्य उत्सव : दोसर प्रारूप (अपूर्ण)

## ‘अपूर्ण’ नाटक आ पूर्ण उपन्यासक भेद

न्याय-दर्शनक अन्त:कथाक उत्तरभागमे ‘विदेह नाट्य उत्सव’क दोसर प्रारूप स्पष्ट रूपसँ ‘अपूर्ण’ कहल गेल अछि। ई अलग नाट्य-लेखनक आत्मस्वीकृत स्थिति अछि; एकरा मूल ३०१ अध्यायक कथानक अधूरा रहलाक प्रमाण नहि मानबाक चाही। एतय बिज्जी, सूत्रधार बूढ़बा, मंच-निर्देशक, हिमपुरुष, भुखायल प्रोग्रामर, उज्जर टोपी आ जाल-जनक कोरसक माध्यमसँ पहिल नाटकसँ दोसर, खुलल प्रारूपक यात्रा शुरू होइत अछि। पहिल गोहि पानिमे, दोसर वर्दीमे आ नव गोहि तार आ संख्यामे होएबाक भिन्न स्तर नाट्यांशक मुख्य कथ्य अछि। ‘हिमपुरुष’क पक्का वास्तविक परिचय स्रोत नहि दैत; ओकर अनामता स्वयं डिजिटल अन्हारक रूपक अछि।

## दीया, नीला बिन्दु-जाल आ दृश्य भाषाक परिवर्तन

मंचपर कमला-बलानक ठोस पानि हटि नीलाभ पर्दापर काँपैत बिन्दुक जाल उपस्थित होइत अछि। बीचमे एक दीया रहैत अछि; बिज्जी गन्ध सूँघि दिशा ताकैत अछि, मुदा आब गन्ध माटिसँ नहि, संख्या सँ उठबाक असम्भवता बनि गेल अछि। ई दृश्य नाट्य-शिल्पक प्रभावी उलटाव अछि। दृश्ये माध्यमक परिवर्तन कहि दैत अछि: पहिनुक गोहि घाट पर भेटैत छल, आब ओकर शरीरहीनता मंचक सीमा तोड़ैत अछि। नाट्य-पाठक सफलतम क्षण कोरसक ‘के अछि’ प्रश्न, अदृश्य छायाक सरकन आ दीयाक इजोतसँ बाहर निर्देशकक प्रस्थान अछि। मंचीय क्रियासँ डिजिटल अविश्वासक रूपक स्पर्शनीय बनैत अछि।

## अधूरा वाक्य आ श्रमक नैतिक प्रश्न

भुखायल प्रोग्रामर कहैत अछि जे ओ कोड लिखलक, ओकरा नहि बुझल जे कोड ककर घर खोलत अथवा ककर पाइ उठाओत; ओकर वाक्य भोजनक निर्भरता उल्लेख करिते कटि जाइत अछि। एहि कटावमे आर्थिक विवशता, तकनीकी उत्पादनक जिम्मेवारी आ शोषणक सम्बन्ध आभासित अछि। मुदा पात्र तुरन्त बिला जाइत अछि; ताहिसँ ओकर आवाजकेँ अन्य पक्ष सँ परखबाक अवसर नहि भेटैत। उज्जर टोपी सेहो पूरा पहिचान बिनु छायाक रूपमे देखाइत अछि। ई अधूरापन विषयगत रूपेँ अर्थवान भऽ सकैत अछि, तथापि चरित्रगत जटिलता कम रहैत अछि। ‘प्रोग्रामर भुखायल अछि’ कहने मात्र अपराधसँ मुक्ति वा दोषसिद्धि दुनू नहि होइत; ई नाटकीय प्रश्नक आरम्भ अछि, अन्तिम निर्णय नहि।

## मंचक बाहर जेनिहार निर्देशक : अनिश्चित अन्तक सौन्दर्य

आखिरमे बिज्जी आ निर्देशक जलैत दीयाक इजोतसँ बाहर छायाक पाछाँ जाइत छथि; डायरी खुलल छूटैत अछि, पर्दा नहि खसैत। एहि दृश्यसँ स्रोत ‘अपूर्ण’ शब्दक कलात्मक उपयोग करैत अछि—जब डिजिटल गोहि निरन्तर रूप बदलैत अछि, तखन ओकर विरुद्ध पहरा सेहो नित्यक अभ्यास होयत। मुख्य उपन्यासक ‘नामक पहरुआ’क कटोरा-हस्तान्तरणक संग ई नाट्यांश बौद्धिक रूपेँ जुड़ैत अछि: पहरा उत्तराधिकारी बदलैत चलैत अछि, कोनो अन्तिम वीर अकेले सभ अन्हार समाप्त नहि करैत। मुदा रंगमंचपर अनवरत अन्हार आ असमाप्त पर्दाक प्रयोग बारम्बार भेल तँ रहस्यक तीव्रता घटि सकैत अछि। ई खण्ड प्रकाशित स्वतंत्र नाटक मानबाक पहिने अपूर्ण प्रारूपक स्वाभाविक सीमा स्वीकृत राखब उचित अछि।

# परिशिष्टसमेत समग्र मूल्याङ्कन : पाँच माध्यम, एक नैतिक प्रश्न

## फकरा, लोककोश, स्वप्नगीत, दर्शन आ नाट्यक परस्परता

पूर्वकथाक एक सय फकरा कथाक सूक्ष्म स्मरण बनबैत अछि; लोककोश गामक जीवनक बहुआयामी देह दैत अछि; अनाम ग्रहक गीत ओहि गामक नामक अधिकारकेँ असम्भव दूरीमे जाँचैत अछि; दार्शनिक अन्तःकथा देखल, कहल आ सिद्ध करबाक अन्तर स्पष्ट करबाक प्रयत्न करैत अछि; अपूर्ण नाट्यांश डिजिटल अन्हारक निरन्तर रूप-परिवर्तनकेँ मंचपर रखैत अछि। पाँचू माध्यम अलग, मुदा केन्द्रक प्रश्न एक: जेकर जीवन, श्रम अथवा नाम सार्वजनिक भाषामे परिवर्तित भेल, ओहि व्यक्तिक गरिमा, सहमति आ प्रमाणक अधिकार कोना बचत? मूल उपन्यासक सामुदायिक पहरा एहि सभ परिशिष्टमे विविध कला-पद्धतिक रूपमे विस्तार पबैत अछि।

## उपन्यासक नैतिक निर्माणक बाह्य सीमासभ

एकर खूब ताकत ई अछि जे जाल, अभिलेख, नदी, जाति, लोकगीत आ न्याय-दर्शन अलग-अलग संसार नहि रहि एक-दोसराकेँ चुनौती दैत छथि। मुदा गीतक बारम्बार टेक, शास्त्रीय उदाहरणक साँचा, पात्रक नैतिक वक्तव्यक अतिस्पष्टता आ लोककथनक ऐतिहासिक स्वरूपबारे अपर्याप्त अभिलेखीय सूचना स्वतंत्र परीक्षण माँगैत अछि। कलात्मक रूपक सफल होइतहुँ ओकरा वास्तविक दस्तावेज, इतिहास अथवा विधिक दोषसिद्धि नहियो मानल जा सकैत अछि। परिशिष्टक लेखकनिर्मित लोकगीत वास्तविक गायकक प्रमाणित परम्परा नहियो छी; शास्त्रीय कथादृष्टान्त मूल दार्शनिक ग्रन्थक अक्षरशः उद्धरण नहियो छी; डिजिटल छाया वास्तविक अभियुक्तक पहिचान नहियो छी। सीमाक एहि सम्मानमे कृतिक बौद्धिक विश्वास अर्जित होइत अछि।

सन्दर्भ-पोथी

गजेन्द्र ठाकुर। गोहि सभक बीच जलसमाधि — सम्पूर्ण त्रयी।

जेरार जेनेत। नैरे टिव डिस्कोर्स : एन एसे इन मेथड (Narrative Discourse: An Essay in Method)।

मिखाइल बाख्तिन। द डायलॉजिक इमेजिनेशन (The Dialogic Imagination)।

पॉल रिकर। टाइम ऐंड नैरे टिव (Time and Narrative)।

वेयन सी. बूथ। द रे टरिक ऑफ फिक्शन (The Rhetoric of Fiction)।

मिरान्डा फ्रिकर। एपिस्टेमिक इनजस्टिस (Epistemic Injustice)।

मॉरिस हाल्बवाक्स। ऑन कलेक्टिव मेमरी (On Collective Memory)।

मिशेल फू को। पावर/नॉलेज (Power/Knowledge)।

रॉब निक्सन। स्लो वायलेंस ऐंड द एनवायरनमेंटलिज्म ऑफ द पुअर (Slow Violence and the Environmentalism of the Poor)।

त्स्वेतान तोदोरोव। द फै न्टैस्टिक : अ स्ट्रक्चरल एप्रोच टु अ लिटरे री जॉनर (The Fantastic: A Structural Approach to a Literary Genre)।

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड १३

# गोहि सभक बीच जलसमाधि

ई खण्ड ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’ क सम्पूर्ण त्रयी पर आधारित विस्तृत, मूल पाठाधारित साहित्यिक समीक्षा अछि। एहि मे अध्याय –१०० सँ २०० धरि कुल ३०१ अध्यायक क्रमिक विवेचन, संरचनात्मक विश्लेषण, पात्र-सम्बन्ध, शिल्पगत अध्ययन, लोक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, दार्शनिक अन्तर्ध्वनिसभक परीक्षण, तथा परिशिष्टसभक समेकित समीक्षा सम्मिलित अछि।

ई ग्रन्थ गजेन्द्र ठाकुरक रचनात्मक परिमण्डलक गहन आलोचनात्मक पाठ प्रस्तुत करैत अछि आ ‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’ श्रृंखलाक स्थापित विन्यास आ अनुशासनक अनुरूप तैयार कएल गेल अछि।

**मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर**

**सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार**

**विदेह**

Videha
https://www.videha.co.in/

GitHub Mirror
https://videha-ejournal.github.io/videha/